शिवाइन



शिवायन

साम्बशिव-चरित-समन्वित
भाषा-पद्य-ग्रन्थ

रचयिता—
अध्यात्म-विषयक विविध-ग्रन्थ-प्रणेता
पण्डित सत्यनारायण झा

दरभंगेकी काशीवासिनी
महारानी श्रीमती लक्ष्मीवती साहबाकी
आज्ञासे प्रकाशित

प्रथम वार]

सम्पादक तथा प्रकाशक

श्रीदिनेशदत्त झा

काशी

विज्ञप्ति

पुस्तकालयों, देवालयों, एवं अधिकारी भक्तजनोंको इस ग्रन्थकी एक हजार प्रतियाँ धर्मार्थ बाँटी जायँगी। आशा की जाती है कि जिन सज्जनोंको यह पुस्तक प्राप्त होंगी वे कृपया अधिकसे अधिक लोगोंको इसके पाठ वा श्रवणका सुयोग देकर पुण्यके भागी बननेका प्रयत्न करेंगे। प्रकाशकको लिखनेसे यह ग्रन्थ मिल सकता है।

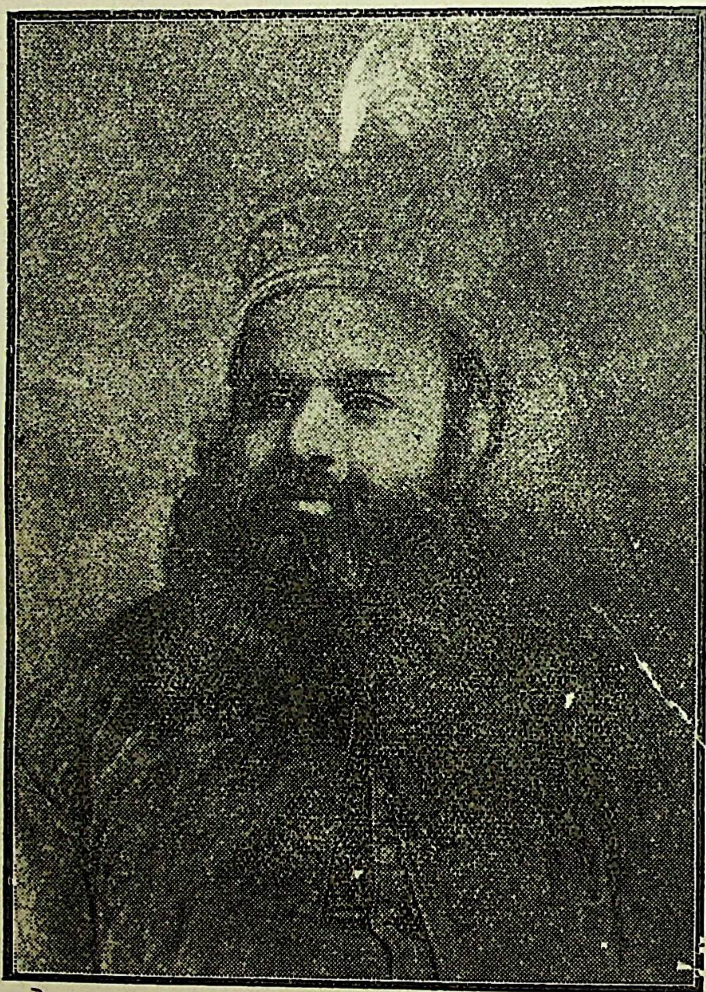
मुद्रक

महताबराय,

ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशी।२००२

दिवंगत मिथिलेश महाराज श्री ५ लक्ष्मीश्वरसिंह बहादुर,

जी० सी० आइ० ई०



जन्म-तिथि—आश्विन कृष्ण तृतीया; सन् १२६५ फसली साल तदनुसार संवत् १९१५ विक्रमाब्द एवं सन् १८५८ ईस्वी।

सिंहासनारोहण—२५ सितम्बर, सन् १८८५ ई०।

निधन-तिथि—अग्रहण शुक्ल चतुर्थी; १६ दिसम्बर, सन् १८९९ ई०।

प्रस्तावना

सर्वश्रीसम्पन्न महादेव श्रीविश्वनाथकी कृपासे दिवङ्गत, मिथिलेश महाराज श्रीमान् श्री ५ लक्ष्मीश्वर सिंह बहादुरकी काशीवासिनी लोकोपकारनिरता ज्येष्ठा धर्मपत्नी श्रीमती श्री ५ लक्ष्मीवती साहबाके हृदयमें प्रेरणा हुई कि साधारण लोगोंके उपकारके लिए गौरीशङ्कर-चरित-समन्वित भाषा ग्रन्थका प्रणयन कराया जाता तो बहुत बड़ा कार्य होता। श्रीमतीने अपने कनिष्ठ सहोदर और मेरे स्नेहभाजन अनुयायी बाबू श्रीत्रिलोकनाथ मिश्रके द्वारा इस विषयमें मुझे पत्र लिखवाया।

श्रीविश्वनाथकी कृपाके लवलेशसे मुझ जैसे अल्पज्ञसे भी यह कार्य सम्पन्न हुआ एतदर्थ उक्त प्रभुके पादपङ्कजोंमें अनन्त प्रणाम समर्पण करता हूँ और सानुज उक्त श्रीमतीको शतशः आशीर्वाद करता हूँ।

यह ग्रन्थ मुझसे टूटे फूटे अक्षरोंमें लिखा गया। इसके पुनर्लेखनका भार श्रीदिनेशदत्त झाने सहर्ष तथा सोत्साह ग्रहण किया। उस समय वे काशीके दैनिक 'आज' के सहायक सम्पादक थे और पश्चात् पटनेके दैनिक 'आर्यावर्त'के सम्पादक हुए। अस्वास्थ्यवशंगत होनेपर भी वे यह कार्य करने लगे। परन्तु अपने कार्यभारसे व्यग्र होनेके कारण कभी कभी इस ग्रन्थके पुनर्लेखनमें वे अक्षम हो जाया करते थे। अतएव यदा कदा व्रत एवं मौनका अवलम्बनकर उन्हें इसके कतिपय अंशोंके पुनर्लेखनका कार्य समाप्त करना पड़ता था।

इसके प्रूफोंके संशोधनका परिश्रम भी उन्हें ही स्वीकार करना पड़ा। उनके इस उपकारसे ऋणी हो उन्हें बहुशः आशीर्वाद करता हूँ।

इस ग्रन्थके विषयमें मुझे इतना ही कहना है कि—

हृद्यं स्वरूप निष्ठानां कैवल्यस्थिति दर्शनात्
हृद्यं मुमुक्षु जीवानां साध्यसाधन दर्शनात्
हृद्यं संसारिणां चापि क्वचित्साहित्य दर्शनात्
ग्रन्थेऽस्मिन् यस्य न प्रीतिः केऽवस्य गणनाभवेत्।

काशी।
२६ जनवरी, १९४५ ई०

श्रीसत्यनारायण झा

शिवायनके रचयिताका परिचय

शिवायनके रचयिता श्रद्धास्पद पण्डित श्रीसत्यनारायण झाजी उच्च वंशोद्भव मैथिल ब्राह्मण हैं। सम्प्रति आपका वयस पचहत्तर वर्ष है। आपके पिताका नाम था पण्डित मार्कण्डेय झा और पितामहका पण्डित चन्द्रदत्त झा। दोनों कर्मनिष्ठ और विद्वान थे। आपका जन्म तिरहुत कमिश्नरीके दरभंगा जिलेमें १२७७ सालमें (तदनुसार संवत् १९२७ विक्रमाब्द और सन् १८७० ईसवीमें) हुआ। माघ मास था। पक्ष और तिथि ज्ञात नहीं। निवासी तो आप उजान ग्रामके हैं परन्तु आपका जन्मस्थान होनेका गौरव प्राप्त है राजग्रामको। वहीं परलोकगत प्रसिद्ध महामहोपाध्याय पंडित कृष्ण सिंह ठाकुरजीके घर आपका जन्म हुआ। महामहोपाध्याय मातृ पक्षसे आपके सम्बन्धी थे।

उपनयनके उपरान्त कुछ दिनोंतक आपको अपने घरपर ही यथायोग्य शिक्षा दी गयी। पश्चात् आप दरभंगा राज हाइ स्कूलमें अंगरेजी पढ़नेको भेजे गये। वहां जब आप सेकण्ड क्लासमें (इस समयकी मैट्रिकुलेशनसे नीचेवाली कक्षामें) पढ़ते थे तब वार्षिक परीक्षाके समय अस्वस्थ हो गये इस लिए परीक्षा न दे सके। स्वस्थ होनेपर जब आप स्कूल पहुंचे तो देखा कि आपके वे सहपाठी भी परीक्षोत्तीर्ण होकर फर्स्ट क्लासमें पहुंच गये हैं, जो पढ़नेमें कभी आपकी बराबरी क्लासमें नहीं कर पाते थे।

आपने तत्कालीन हेडमास्टर मिस्टर वाटलिङसे प्रार्थना की कि मुझे भी फर्स्ट कलासमें पढ़नेकी अनुमति दें। हेडमास्टर साहबने

कहा कि तुमने तो वार्षिक परीक्षा दी ही नहीं, फर्स्ट क्लासमें पढ़नेकी अनुमति कैसे दूँ। इसपर आपने कहा कि मेरी भी परीक्षा ले लें। हेडमास्टरने कहा कि ऐसा नियम नहीं। इसपर आपने पढ़ना ही छोड़ दिया।

युवावस्थामें ही आपको गुरुका प्रसाद लाभ हुआ। आपके गुरु थे मीमांसक महात्मा योगदत्त झाजी जो आपके एक प्रकारके भाई भी थे। इन्हीं महात्माने कृपया आपको साधनाकी कोई विलक्षण विधि बतायी। उस साधनाके प्रभावसे ही आपमें असाधारण शक्तिका सञ्चार हुआ।

आप बहुत दिनोंसे साहित्यसेवा करते आये हैं। पहले आप संस्कृतमें ही रचना किया करते थे। रचना संस्कृतकी हो अथवा हिन्दीकी उसके हेतु आपको आयास नहीं करना पड़ता। अनायास अति शीघ्र आप रचना करते हैं। आपकी संस्कृत रचनाओंका उल्लेख नीचे किया जाता है—

(१) मीमांसक महात्मा योगदत्त झा कृत अमृतोपदेश नामक सूत्र कदम्बका विस्तृत भाष्य। (२) तारा स्तुति तरंगिणी। (३) आद्या स्तुति तिलक। (४) अम्बाष्टक (शब्द भाव विलासिनी अनेक पक्षावगाहिनी टीका सहित)। (५) उपदेश पञ्चदशी। (६) उपदेश शतक (अमुद्रित)। (७) बोध विंशतिका (इसमें समग्र शब्दावलि बकारादि अथवा वकारादि है। (८) भक्ति सूत्र। (९) विष्णु स्तुति (वेदान्तमत बोधिका)। (१०) सुधाधाराख्य स्तोत्र की अद्वैत मत स्थापिका भूमिका सहित अनेक पक्षावगाहिनी टीका (अमुद्रित)। (११) सत्य साहस्री (अमुद्रित)। (१२) श्रीकृष्ण दण्डक। (१३) श्रीभगवती दण्डक। (१४) अम्बास्तव। (१५) उच्छिष्ट गणेश स्तोत्र। (१६) भुवनेश्वरी स्तोत्र। (१७) सूर्यस्तव।

(१८) गंगास्तव। (१९) गंगाष्टक। (२०) मानसाष्टक (अमुद्रित)। (२१) प्रश्नोत्तर मालिका (अमुद्रित)।

हिन्दी रचनाएँ ये हैं—

(१) भजनामृत तरङ्गिणी। (२) प्रेम चन्द्रमा (अमुद्रित)।

(३) शिवायन।

सतत साधनानिरत रहना आपका स्वभाव है। समग्र देवी भागवत तथा श्रीमद्भागवतके तो न जाने कितने पारायण आपने किये हैं। माताके देहान्तके समय आपने केवल श्रीमद्भागवतके सप्ताह पारायणकी एक सौ आठ आवृत्तियोंका फल माताके लिए यथाविधि कृष्णार्पण कर दिया। नवरात्र व्रतके समय आप देवी भागवतके तीन तीन पारायण किया करते। इस वृद्धावस्थामें भी आपका साधनाक्रम युवकोंके लिए भी स्पृहणीय है। पाँच ही सात वर्ष हुए कि यहीं काशीमें आपने समग्र महाभारत संहिताका मास पारायण किया

आपने एक बार मासोपवास व्रत भी किया। परन्तु समाप्ति पर्यन्त कदापि आपमें शक्तिके ह्रासके लक्षण न देख पड़े। नित्यके मिलनेवालोंमें भी अधिकतरको यह ज्ञात न हो सका कि आप मासोपवास कर रहे हैं! आपके घरसे कोई आध कोसपर दुर्गाजीका मन्दिर है। मासोपवास करते समय भी आप पैदल ही नित्य देवीके दर्शनको जाया आया करते थे! आपकी गणना सिद्ध पुरुषोंमें की जा सकती है। आप जितने ही प्रबल साधक और गम्भीर विद्वान् हैं उतने ही निरभिमान और आडम्बररहित हैं। आपका स्वभाव और जीवनक्रम बड़ा ही सरल है।

५, नीचीब्रह्मपुरी,
काशी।
रामनवमी, २००२ विक्रमाब्द

श्रीदिनेशदत्त झा

शिवत्वका सुगम सोपान शिवायन

सर्वं खल्विदमेवाहं नान्यदस्ति सनातनम् ।

साम्बशिव रूपी जिस परम तत्त्वका वर्णन इस ग्रन्थमें है उसे ही सर्वतो भावेन वारंवार मैं भी प्रणाम करता हूँ ।

शिव ही समस्त सृष्टिका मूल है। केवल वही सब-कुछ है। जीव उससे भिन्न नहीं। भेद-भ्रान्तिका हेतु है स्वरूपका अज्ञान। शिव ही है जीवका स्वरूप। वह स्वभावतः अमर है।

स्वरूप तथा स्वभावका ज्ञान तदर्थ साधनामें निरन्तर निरत रहने से ही हो सकता है। इस साधना और ज्ञानका अधिकारी मनुष्य ही है। क्योंकि अध्यात्म-बुद्धि केवल उसीको है। इसीसे प्राणियोंमें वह सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। अन्य किसी भी प्राणीको देहके नश्वरत्व, आत्माके अमरत्व और आत्मा तथा देहके पृथक्त्वका ज्ञान नहीं।

मनुष्य जब आत्मज्ञान प्राप्त कर लेता है तभी उसके मनुष्यत्वकी सार्थकता होती है। इस यथार्थ मनुष्यत्वकी प्राप्तिमें सहायक होता है दैव भावका दृढ़ अवलम्बन और आसुर भावका सर्वथा त्याग। अध्यात्म-साधनासे मनुष्यमें दैवी गुणोंकी वृद्धि और आसुरी गुणोंका ह्रास होता है।

वासनायुक्त मन ही बद्ध होता है। चित्तवृत्तिका निरोधन ही जीवन्मुक्ति है। भगवल्लीला-समन्वित-वेदान्त-कथन-श्रवण-जनित

समाधिसे सामान्य परमार्थ-साधक को भी अनायास ही जीवन्मुक्ति प्राप्त होती है। ज्ञाननिष्ठा अति कठिन है। आत्मज्ञानका सरलतम और सुकर उपाय है भक्तिनिष्ठा। इसीलिए भक्तिकी इतनी महिमा गायी जाती है। सामान्य जनके लिए भक्तिनिष्ठा ही सर्वश्रेष्ठ है। दृढ़ भक्तिनिष्ठासे क्रमशः सर्व वासना क्षीण हो जाती है। वासनाहीन होने पर मन मुक्त हो जाता है।

यह ग्रन्थ शास्त्र भी है और पुराण भी। यह काव्य भी है और दर्शन भी। प्रवृत्ति-निवृत्ति विषयक विधि-निषेधके कारण यह शास्त्र है और पौराणिक आख्यानोपाख्यानके कारण पुराण। काव्यमय वर्णनके कारण यह काव्य है और अध्यात्म तथा वेदान्तके वर्णनके कारण दर्शन।

इस ग्रन्थमें चार काण्ड हैं। (१) विवाह काण्ड। (२) लीला काण्ड। (३) उपदेश काण्ड। (४) कैवल्य काण्ड।

विवाह काण्डमें सती-शिव-विवाह, दक्ष-यज्ञ-विध्वंस, पार्वतीकी उत्पत्ति, पार्वती-तपस्या, पार्वती-परिणय आदि विषयोंका वर्णन है।

लीलाकाण्डमें तारकासुर, त्रिपुरासुर आदिके अत्याचारसे देवताओं के उत्पीड़नका और उन असुरों के विनाशका वर्णन है। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों के आख्यानों के अंतर्गत काशी आदिके माहात्म्यके उपाख्यान हैं। रामकथा, प्रह्लाद-चरित, नलोपाख्यान, उपमन्यु-चरित आदिका भी वर्णन है।

उपदेश काण्डमें वर्ण-धर्म, आश्रम-धर्म, प्रायश्चित्त-विधान, व्रत-विधान, कर्त्तव्याकर्त्तव्य तथा भक्ष्याभक्ष्य निर्धारण आदि धर्म-शास्त्रीय विषयोंका वर्णन है।

कैवल्य काण्डमें माया, ब्रह्म, विरति, अभ्यास, भक्ति आदिका वर्णन है।

ग्रन्थमें आदिसे अंत पर्यंत अद्वैत सिद्धान्तका ही प्रतिपादन किया गया है।

गौरीशंकरके विवाहके उपलक्ष्यमें सभी लौकिक विधियोंका वर्णन उच्चतम श्रेणीके मैथिल-ब्राह्मण-समाजमें प्रचलित प्रथाके अनुसार ही किया गया है।

ग्रन्थकी भाषा संस्कृतमयी है। यत्र तत्र शुद्ध संस्कृतमें भी प्रार्थना-वंदनाके पद्योंकी रचनाकी गयी है। संस्कृतबहुल भाषाका प्रयोग शास्त्रीय ग्रन्थों में होना अनिवार्य है।

विवाहादि विषयक लौकिक विधियों, रूढ़िगत रीतियों और सामाजिक प्रथाओंका उल्लेख प्रान्तीय पारिभाषिक शब्दोंमें किया गया है। इसी दृष्टिसे आरम्भसे ही मेरे मनमें यह विचार उत्पन्न होता रहा है कि इस ग्रन्थकी टीका भी की जाय। परन्तु ग्रन्थके प्रकाशनमें विलम्ब हो जानेकी आशंकासे वह विचार त्याग देना पड़ा था। अब विश्वनाथकी कृपासे टीका विषयक कार्य भी आरम्भ हो गया है।

कोई ग्यारह वर्ष हुए होंगे कि शिवायनकी रचनाका कार्य आरम्भ हुआ था। कई वर्षोंमें इस महद् ग्रन्थकी रचना समाप्त हुई। ग्रंथका पुनर्लेखन सन् १९४० ई० के अंतमें समाप्त हुआ। सन् १९४१ के दिसम्बरमें इसके मुद्रणका कार्य प्रेसको सौंपा गया। सन् १९४३ के आरम्भमें इसका मुद्रण समाप्त हुआ।

मुद्रणके पश्चात् ग्रंथमें कितने ही स्थलोंपर त्रुटियाँ देख पड़ीं। इनमें वे स्थल भी हैं जहाँ छपाईके समय मात्राओंके टूट जानेसे त्रुटियाँ हो गयी हैं। पंक्तियाँ भी अनेक स्थलोंपर छूट गयीं। त्रुटियोंके शोधनके हेतु शुद्धिपत्र बनाने पड़े। तो भी कितनी ही त्रुटियोंके रह जानेकी आशंका बना ही है।

इस ग्रंथके प्रेमी पाठकोंको इसमें ऐसी जो भी त्रुटि देख पड़े जिसका उल्लेख शुद्धिपत्रमें न हो उसके विषयमें वे मुझे सूचना देनेकी कृपा करें तो बड़ा उपकार हो। उन त्रुटियोंके संशोधनपर भविष्यमें ध्यान दिया जायगा।

उपदेश काण्डमें यत्र तत्र विभिन्न मन्त्रोंका उल्लेख प्रतीक रूपमें किया गया है। पहले यह निर्धारित हुआ था कि पूर्णतः ये सभी मन्त्र परिशिष्टमें दिये जायँगे। इसीसे दो तीन स्थलोंपर पाद-टिप्पणी-में यह उल्लिखित भी है कि सभी मन्त्र परिशिष्टमें दिये गये हैं। परन्तु पश्चात् वह विचार त्याग दिया गया। सोचा गया कि प्रतीक रूपमें उल्लिखित मन्त्रोंका पूर्ण रूप तत्तत् विषयोंके मर्मज्ञों से जाननेसे ही जिज्ञासु जनोंका अधिक लाभ होगा।

कवि स्वयंभू होता है। ऐसे कविको कविताका स्फुरण स्वभावतः होता है। स्वयंभूके विमल मानससे निकली छन्दोमयी वाग्धारा ही लोगोंका मोह-मलिन मन निर्मल कर सकती है। स्वयंप्रकाश कविकी कविता रूपी आत्मज्योति ही मोहान्ध लोगोंका हृदय-तम दूर कर उनका अन्तस्तल आलोकित कर सकती है। इस दिव्य आलोकमें ही लोग स्वरूप देखकर मोहमुक्त हो सकते हैं। कविकी स्वतः स्फुरित कविता ही चिरस्थायिनी तथा चिरसमादृता हुआ करती है।

पद्यमें बड़ा आकर्षण होता है। पद्यका प्रभाव भी अधिक और स्थायी होता है। अल्प आयाससे पद्य कण्ठस्थ भी हो जाता है। छोटेसे पद्यमें भी बहुत भाव भरा रहता है। छन्दोबद्ध होनेसे पद्यका स्मरण भी स्थायी और सुकर होता है। पद्य-गान अन्तरात्माको स्पर्श करता है। जड़को भी द्रवित करता है। इसीलिए पद्य अधिक लोकप्रिय होता है।

याज्ञवल्क्य, जनक आदि ब्रह्मज्ञानियोंकी जननी महिमामयी मिथिला मही निसर्गतः ज्ञानमयी है। उपनिषदोंमें मिथिलाकी ज्ञान-गरिमाकी विविध गाथाएँ बहुधा वर्णित हैं। यहाँतक उल्लिखित है कि लोग कभी काशी छोड़ छोड़, जनक जनककी रट लगाते, अध्यात्म-विद्या प्राप्त करने मिथिलाको दौड़ते थे। स्वयं भगवान् कृष्ण भी जनकादि मैथिलों को ज्ञानियोंका आदर्श मानकर उनके अनुकरणका उपदेश लोगोंको गीता द्वारा कर गये हैं।

ग्रन्थकारके प्रति कृतज्ञता

अध्यात्म-विद्या ही सर्वश्रेष्ठ है। एकमात्र यही विद्या है परम-पद-प्राप्तिका हेतु। सामान्य जनके लिए भी यह अनुपम विद्या सुलभ करदेनेवाले ग्रन्थ-प्रणेताके प्रति श्रेयष्कामी जन कृतज्ञ होंगे ही। इस परम पावन ग्रन्थके प्रणेता श्रद्धास्पद पण्डित सत्यनारायण झा जी अब इस लोकमें न रहे! इसी वर्ष आषाढ़ शुक्ल (देवशयनी) एकादशी (२१ जुलाई सन् १९४५ ई०) के मध्याह्नमें दरभंगेमें आपका देहावसान हो गया। कुछ दिनों से आपने हिन्दीको भी अपनाया

था। अतएव हिन्दीकी भी हानि हुई। हिन्दीको अभी आप अध्यात्म-विषयक और ग्रन्थ भेंट कर सकते थे। परन्तु आपका यही एक ग्रन्थ—शिवायन—ऐसा है कि हिन्दीके नाते समस्त राष्ट्र आपका चिरकृतज्ञ रहेगा।

मनकी महिमा

मनपर ही मनुष्यका बन्धन तथा मोक्ष निर्भर है। मनके सम हुए विना मुक्तिकी अनुभूति हो नहीं सकती।

प्रवृत्ति-निवृत्ति का परस्पर सम्बन्ध है तराजूके दोनों पलड़ोंकी भाँति। मन है डाँड़ी। दोनों पलड़ोंमें जो भारी पड़ता है उसी ओर डाँड़ी झुक जाती है। मन जब सम हो जाता है तब किसी भी ओर नहीं झुकता। मनकी समताके लिए दीर्घ अभ्यास आवश्यक होता है। निर्विषय होनेपर ही मन सम होता है। प्रथमावस्थामें मन निर्विषय हो नहीं सकता। ऐसी स्थितिमें निषेधके विषयोंसे सर्वथा निवृत्ति एवं विधिके विषयोंमें सर्वदा प्रवृत्ति आवश्यक होती है।

जैसे सुप्रवृत्तिमें सतत निरत रहनेसे कुप्रवृत्ति घटती है वैसेही कुप्रवृत्तिसे सतत विरत रहनेसे भी सुप्रवृत्ति बढ़ती है। प्रथमावस्थामें केवल सुकर्ममें प्रगाढ़ रतिही नहीं, कुकर्मसे अति निवृत्ति भी आवश्यक होती है। इससे मन क्रमशः निर्मल होने लगता है। पश्चात् अभ्यास तथा संस्कार दृढ़ हो जानेसे सुकर्ममें प्रवृत्ति भी अनायास एवं अनासक्त भावसे होने लगती है और मन निर्विषय होकर सम हो जाता है। मन सम हो जानेपर किसी ओर नहीं झुकता अतएव मनुष्य सुकर्मके फलभोगके बन्धनसे भी मुक्त हो जाता है।

यथार्थ मानव बननेके लिए मनुष्यको आसुर भावका त्यागकर दैव

भावका अवलम्बन करना पड़ता है। देहके नश्वरत्व और आत्माके अमरत्वका ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है। ज्ञान होनेपर मनुष्यको सारा जगत् अपना ही रूप देख पड़ने लगता है। स्वयं शिव ही है उसका स्वरूप अतएव समस्त विश्व उसके लिए शिवमय हो जाता है।

साम्बशिव रूपी जिस परम तत्त्वका वर्णन इस समग्र शिवायन-में है स्वयं वही अपनेको जीव-जगत्के रूपमें सृष्टकर लीला करता और अन्तमें अपनेमें ही समस्त सृष्टिको लीन कर लेता है। उसी जगल्लीला-नाटक-सूत्रधार विश्वनाथको सर्वतो भावेन सतत प्रणाम है। उस आशुतोषसे यही प्रार्थना है कि शब्द-शिवमय यह शिवायन स्वभावतः समस्त संसारके शिवत्वका हेतु हो।

५, नीची ब्रह्मपुरी, काशी।
महाशिवरात्रि २००२ बिक्रमाब्द
शनिवार, २ मार्च, १९४६ ई०

श्रीदिनेशदत्त झा



ॐ

सत्यं शिवं सुन्दरम्

श्री गणेशाय नमः

शिवायन

विवाह काण्ड

दोहा

श्री गुरु चरण प्रणाम करि, भाषा पद विन्यास ।
करौं भवानी भव चरित, चरण तासु विश्वास ॥ १ ॥
नाम शिवायन ग्रन्थ शुचि, मुक्ति धाम सोपान ।
इहामुत्र सुख लहत जन, करि ग्रन्थामृत पान ॥ २ ॥

चौपाई

गुरु निरञ्जनहि शिष्य पुरञ्जन । प्रश्न कियउ सन्देह विभञ्जन
प्रकृति पुरुष कपिलादिक गावहिं भेद अभेद वेद दरसावहिं
गति विधि अति अद्भुत इव भासत यद्यपि बहु विधि श्रुति अनुशासत
प्रकृति अचेतन अखिल निकेता उपादान गुणगण समवेता
उतपति थिति हति हेतु प्रधाना विदित निराकृति मूल निदाना
उदासीन चेतन परवीना सांख्य योग सम्मत गुणहीना

पुरुष विशेष एक कह योगा पुरुष अनेक सांख्य आभोगा
अघटित घटना पटुतर माया पूर्ण ब्रह्म वेदान्त जनाया
शक्ति विशेष ईश्वरहिँ गाया गौतमादि तार्किक मुनिराया
देवी देव अनेक प्रकारा भजहिँ भक्त जन विविधाकारा
कोउ भजै लक्ष्मी नारायण कोऊ राधा कृष्ण परायण
सीता राम भजै जन कोऊ कोउ भजै रवि संज्ञा दोऊ
कोउ सिद्धि गणपति अनुरागी विविध सेव्य सेवक बड़भागी
निर्गुण सगुण उपासन नाना आगम निगम पुराण बखाना
मार्ग अनेक गम्य थल एका दुर्लभ निर्णय हेतु विवेका
दीन मलीन खिन्न मन मोरा राउर बल अभिलाष न थोरा

सोरठा

शरणागत निज जानि, करिय कृपा गुरुदेव द्रुत ।
महामोह तम ग्लानि, कवन हरै गुरुभानु बिनु ॥ १ ॥

दोहा

कारुणीक गुरुदेव वर, सजल सरोरुह नैन ।
भाषत भउ अनुभव जनित, विदित विवेचन बैन ॥ ३ ॥

चौपाई

कारुणीक गुरु सुस्थिर भयऊ वेद शास्त्र सम्मति मन दयऊ
वाणी बुद्धि अगोचर रूपा अजर अमर अज अलख अनूपा
सकल निषेधावधि निर्बाधा असम अनतिशय अगम अगाधा

लिंगविहीन अनंग असंगा जानिय जाहि पाइ सत्संगा
दर्शन गिरिवर मत्त मतंगा कुल पथ कानन कुंज विहंगा
जगत् युगान्त काल जामाहीँ सचराचर सविकास समाहीँ
काल दैव अरु कर्म प्रकारा द्रव्य क्षेत्र प्राणादि विकारा
माया जासु सकल संघाता पावहिँ जासु न पार विधाता
नास्तिक जाहि असत् करि मानत आस्तिक सदा सत्य करि जानत
भक्तवृन्द साकार बखानहिँ ज्ञानी निराकार करि जानहिँ
कोटि यतन जन जाहि न पावै गुरु प्रसाद सर्वत्र लखावै
शत सहस्र सहसानन गावहिँ महिमा थाह तदपि नहि पावहिँ
दर्शन निज निज मत अनुकूला सकल परस्पर अति प्रतिकूला
विविध उपासन विविध विचारा बहुविध वेष विविध आचारा
मति अनुरूप तदपि कछु गावा यादृश निगमागम गण भावा
स्वेच्छा रचित द्विधा तनु तासू निर्गुण विकसित सगुण विकासू
जगदम्बा जगदीश्वर नामा गौरी शंकर करुणाधामा
चण्डी सहित महेश्वर चरणा परिहरि कलियुग अन्य न शरणा
उमा महेश भक्ति रस लुब्धा सकल लोक आबालक वृद्धा
शत सहस्र महँ कोउ अभागा जाहि न गौरी हर अनुरागा
निगमागम सम्मत मत एहा करिय साम्ब शिव चरण सनेहा
भजहिँ गौरिपद सकल सुहागिनि जे न भजहिँ ते परम अभागिनि
रमा आदि सब उमा अराधहिँ कन्या भजहिँ मनोरथ साधहिँ
मूरुख मन्द अकर्मक लोका शिव शिव शिव कहि होहिँ विशोका

सन्ध्यादिक अवगति नहि जाहू पार्थिव शिव सेवन रुचि ताहू
सुचिरतोष सुर विष्णु विधाता आशुतोष शंकर विख्याता
सज्जन पालक त्रिदश अनेका आपामर पालक हर एका
अखिल असुर रिपु विदित अपशुपति केवल हर पशुपति अगतिक गति
मृत्यु भुजंग अमर गण गिलहीँ मृति मतंग मृत्युञ्जय दलहीँ
अमृताशन सुर स्वारथ हेतू विषभक्षक परहित वृषकेतू
शिष्य गुरुहिँ पुनि पूछन लागा अञ्जलिबद्ध विनय परि पागा

सोरठा

गौरी शंकर तत्त्व, कहिय कृपासागर गुरो ।
मोह मलीमस सत्त्व, शोधन गुरुवर वचन जल ॥ २ ॥

दोहा

शिष्य वचन सुनि मुदित मन, गुरुवर करुणासिन्धु ।
कहत भयउ तात्त्विक वचन, शरणागत जन बन्धु ॥ ४ ॥
युगल तत्त्व वर्णन करौँ, क्रमिक बुद्धि अनुसार ।
उमा महेश्वर रूप मय, नारी नर संसार ॥ ५ ॥

चौपाई

मात्रा अर्ध रहित उच्चारण जगदम्बा तनु भन द्वैपायन
प्रणव अन्तिमावयव स्वरूपा विश्वरूपिणी विरहित रूपा
हंसः मन्त्र जपहिँ सब प्राणी गावहिँ योग तन्त्र मुनि ज्ञानी
मन्त्र घटक सविसर्ग सकारा प्रकृति रूप कहि योग पुकारा
प्रकृति रूप जगदम्बहिँ जानहु उतपति थिति हति कारण मानहु

सर्वेश्वर श्रुति शिखर सुनावै तासु शक्ति बहु भाँति जनावै
शक्ति रूपिणी जगदवलम्बा लम्बोदर जननी जगदम्बा
जिमि नहि चन्द्र चन्द्रिका भिन्ना मानहु तिमि शिव शक्ति अभिन्ना
शिव अन्तरित इकार लखावै जासु विना शिव शवता पावै
कुण्डलिनीतनु उक्त इकारा कुण्डलिनी जगदम्बाकारा
विद्या नाम विदित जगदम्बा ज्ञान ब्रह्म भन वेद कदम्बा
विद्या ज्ञान धातु मत एका अम्बा ब्रह्म न होहिं अनेका
काय वचन मन कृति जग जेते रूप अम्बिका जानहु तेते

सोरठा

सुनि तात्त्विक प्रिय बैन, पुलकित तनु गद्गद् वचन ।
सजल चपल युग नैन, बहुरि पुरञ्जन कहत भउ ॥ ३ ॥

चौपाई

गौरी तत्त्व नाथ मैं जाना मुनिजन सम्मत शब्द प्रमाना
शंकर तत्त्व कहिय गुरु आजू जासु चरण भव सिन्धु जहाजू
गुरुवर करुणा पारावारा भाषत भउ श्रुति मत अनुसारा
प्रणव तृतीयावयव मकारा शंकर तनु श्रुति शिखर पुकारा
व्यस्त समस्त जगत लय धामा विदित प्राज्ञ अरु ईश्वर नामा
चेतन प्राज्ञ विदित जग जीवा चेतन ईश्वर श्यामलग्रीवा
प्रणव आदिमावयव अकारा चतुरानन तनु श्रुति अनुसारा
प्रणव द्वितीयावयव उकारा विष्णु रूप गावहिं श्रुति सारा

पूरब प्रति उत्तर उत्कर्षा इमि मकारगत परमोत्कर्षा
देव नाम ब्रह्मादिक ख्याता महादेव शंकर विख्याता
नाद अकार विदित चतुरानन बिन्दु उकार पक्षिपति वाहन
कला कलाधर कला विभूषण सर्वोत्कृष्ट ख्यात पुरदूषण
उत्तर क्रम उत्तमता जानहु सर्वोत्तम श्री शंकर मानहु
स्थूल देह चतुरानन जानहु सूक्ष्म देह लक्ष्मीपति मानहु
कारण देह विदित त्रिपुरारी निर्णय अस श्रुति शिखर मझारी
कारज ते कारण बड़ होई अति प्रसिद्ध जानत सब कोई
ह्रस्व एक मात्रिक चतुरानन दीर्घ द्विमात्रिक खगपति वाहन
विदित त्रिमात्रिक प्लुत गौरीशा विधि हरि व्याप्य व्यापि जगदीशा
जाग्रदवस्थ विदित चतुरानन स्वप्नावस्थ पक्षिपति वाहन
विदित सुषुप्त्यवस्थ श्री शंकर जहँ आनन्द भान जन गोचर
कल्प कोटि यदि भाषण करऊँ तदपि महातम पार न लहऊँ
सर्वेश्वर हर सर्वोत्कृष्टा विधि हरि आदि सकल उत्कृष्टा
पण्डित जन-निगमागम-सम्मत जानहु तात मोर मत अभिमत

सोरठा

शिष्य युगल कर जोरि, अति विनीत पूछत भयउ ।
संशय एक बहोरि, भंजिय गुरु करुणायतन ॥ ४ ॥

चौपाई

शिवहिँ तुरीयावस्थ बतावहिँ श्रुति कदम्ब सर्वोत्तम गावहिँ
नाथ तृतीयावस्थ महेश्वर भाषिय सकल श्रेष्ठ सर्वेश्वर

भासत विषय विरुद्ध परस्पर मत विरोध कस असमंजसकर
विहँसत श्री गुरु करुणा अयना भाषत भउ मृदु उत्तर वयना
गूढ़ तत्त्व अन्तर मन गयऊ धन्यवाद भाजन तुम भयऊ
विधि हरि अति प्रसिद्ध जग दोऊ बाल वृद्ध जानत सब कोऊ
ईशतत्त्व जानत जन सोई जापर कृपा ईशकी होई
रजोगुणी विधि जगत् विधाता सत्त्व गुणी लक्ष्मीपति त्राता
शंकर तमोगुणी संहर्ता खण्ड अखण्ड प्रलय शत कर्ता
प्रलय प्रसिद्ध विदित सब काहू अविदित प्रलय सुनहु तुम ताहू
जाग्रत इंद्रिय वृत्ति लखावै ब्रह्मा अधिपति तासु कहावै
स्वप्न मनोमय वृत्ति लखावै अधिपति श्री मुरमथन कहावै
कायिक वाचिक मानस वृत्ती सकल विलीन समाधि सुषुप्ती
वृत्ति अशेष समाधि निरुद्धा वृत्ति सशेष सुषुप्त्यवरुद्धा
वृत्ति निरोध प्रलय विधि जानहु दशा सुषुप्ति खण्ड लय मानहु
तामस गुण कृत वृत्ति अभावा अति अद्भुत शंकर अनुभावा
दशा सुषुप्ति जीव अरु ईशा होहिँ अभिन्न कहत श्रुति शीशा
पुनि प्रारब्ध कर्म वश प्रानी जाग्रत स्वप्न विवश अज्ञानी
कारण सत्त्व सुषुप्ति उपस्थित ताते तहाँ मुक्ति अनुपस्थित
जाग्रत विदित अन्नमय कोशा स्वप्न प्राण मन धीमय कोशा
तथाऽऽनन्दमय कोश प्रसिद्धा दशा सुषुप्ति वेद मत सिद्धा
तहँ आनन्दावरण स्वभावा माया ब्रह्म विकास दुरावा
किन्तु सुखस्थिति अनभव सिद्धा सुप्तोत्थित संस्मरण प्रसिद्धा

तात समाधि बतावौं तोही श्रुति सम्मत जस अवगत मोही
निर्विकल्प सविकल्प अवस्था युगल प्रकार समाधि व्यवस्था
अंगी अंग परस्पर मानहु सिद्धि स्थिति साधन थिति जानहु
प्रलय अखण्ड समाधिहिं जानहु तहँ प्रसिद्ध त्रिपुटी लय मानहु
जाहि समाधि कहहिं मुनि वृद्धा सोइ तुरीया दशा प्रसिद्धा
अधिपति तासु दक्ष मखभंगी महादेव गिरिजा अरधंगी
मन्मथ मथन सुषुप्ति अधीशा पञ्चानन समाधि पद ईशा
मुक्ति अर्थं अधिपति प्रभु सोई इहँ संशय अवसर नहि कोई

सोरठा

सुनि गुरु वचन प्रमाण, शिष्य सकल संशय रहित ।
बहुरि प्रश्न निर्माण, करत भयउ कर जोरि युग ॥ ८ ॥

चौपाई

चण्डी-सहित-महेश्वर-तत्त्वा भउ अवगत अतिशयित महत्त्वा
जन्म कृतारथ नाथ प्रसादा चिरकालीन निरस्त विषादा
नाथ प्राज्ञ अभिधान सुनावा प्रासंगिक पथक्रम समुझावा
कहहिं अभेद सनातन वेदा कस ईश्वर अरु प्राज्ञ विभेदा
संशय मोर दुराइय साईँ अन्धकार सूरज की नाईँ
सुनि प्रसन्न गुरु उत्तर दयऊ अद्वयवाद सुनावत भयऊ
चेतन ब्रह्म अखण्ड अभिन्ना होहिं तासु प्रतिबिम्ब विभिन्ना
व्यष्टि समष्टि उपाधि प्रसिद्धा त्रिविध प्रकार तासु श्रुति सिद्धा
स्थूल सूक्ष्म अरु कारण नामा भन पुराण निगमागम ग्रामा

पंचीकृत क्षित्यादि भूतमय स्थूल देह जनि मृति युत सामय
षोड़श कल मत सूक्ष्म शरीरा विवरण तासु सुनहु मतिधीरा
पञ्च प्राण अरु दस इंद्रियगण अन्तःकरण एक अस विवरण
कारण देह अविद्या माया भाषहिँ श्रुति कदम्ब मुनिराया
व्यष्टि समष्टि भेद प्रति देहा ताते षड्विध चेतन एहा
चेतन विश्व थूल व्यष्टिस्था वैश्वानर समष्टि तनु संस्था
सूक्ष्म व्यष्टि उपहित तैजस चित अरु समष्टिगत हिरणगर्भ नित
कारण व्यष्टिग प्राण कहावै गत समष्टि ईश्वर कहलावै
पूरन ब्रह्म एकरस बिम्बा अखिल जीव उपहित प्रतिबिम्बा
फूटत घट घटगत प्रतिबिम्बा जाय मिलत जिमि सूरज बिम्बा
भग्नोपाधि जीव प्रतिबिम्बा मिलत ब्रह्म मंगलमय बिम्बा
गावहिँ वेद उपाधि असत्ता भासित तासु मोह कृत सत्ता
सकल उपाधि असत जब भासै एक ब्रह्म सर्वत्र प्रकासै
अद्वयवाद वेदमत सिद्धा सकल द्वैत मत असत् असिद्धा
नाना चेतन नाना देहा जानहु ब्रह्म विगत सन्देहा
शुक्ति अबोध रजत दरसावै। ब्रह्म अबोध विश्व उपजावै
शुक्ति बोध हत रजताभासा ब्रह्म बोध हत विश्व विलासा
तत्त्वबोध यह जो जन गावै प्रभु करुणया ज्ञान पद पावै

सोरठा

गौरी शंकर तत्त्व, परिचय प्राप्त प्रसन्न चित।
शिष्य सुशोधित तत्त्व, करि प्रणाम भाषत भयउ ॥ ६ ॥

छन्द

गुरु कृपा महिमा जदपि जन कोटि जन्महुँ गावहीँ ।
सहस शत मुख विबुध आयुष तदपि पार न पावहीँ ॥
करहिँ जप तप दान संयम सकल तीरथ धावहीँ ।
तदपि तासु न लहहिँ तुलना जे गुरुहिँ नित ध्यावहीँ ॥१॥

दोहा

जन्म कर्म सब सुफल भउ, राउर कृपा प्रसाद ।
सुनन चहौँ अब साम्ब शिव, पावन गुणानुवाद ॥ ६ ॥

चौपाई

श्रवण मनोरम कथा सुनाइय आपुन दास जानि अपनाइय
गूढ़ रहस नहि दूर दुराइय दास मनोरथ नाथ पुराइय
गुरु प्रसन्न मन परम सुजाना भयउ सुनावत कथा पुराना
धनि माता अस सुत जनमावा कथा प्रेम जाके उर आवा
गंगा द्विविध पुराण बतावा जलमय अपर वचनमय गावा
सुर सरिता जन मज्जन करहीँ आधि व्याधि संकट निस्तरहीँ
वाणी सुरधुनि सेवन करहीँ अनायास भव सागर तरहीँ
सावधि समय त्रिपथगा बहहीँ गिरा गंग निरवधि श्रुति कहहीँ
परस पान सेवन अवगाहन विना न होइ गंगजल पावन
श्रावण श्रवण मात्र जे करहीँ गिरागंग तिनकहँ उद्धरहीँ
अनाद्यन्त गौरी हर जोड़ी चरित अनन्त बुद्धि अति थोड़ी

मति अनुरूप तदपि कछु गावौं संक्षेपित क्रम तुमहिं सुनावौं
ब्रह्म सच्चिदानन्द अखण्डा रोम रोम जाकर ब्रह्मण्डा
स्वेच्छा रचित द्विधा तनु जासू कियउँ कथन प्रथमहिं हम तासू
जा कहँ प्रकृति पुरुष कह कोई कहौं भवानी भव हम सोई
सती नाम अवतार भवानी सुनहु तात तुम तासु कहानी
पावन चरित सुनहु मन लाई कहत सुनत अभिमत सुखदाई
दक्ष प्रजापति अति तप कियऊ देवी तव प्रसन्न मन भयऊ
माँगु माँगु वर भाषण लागी भउ कृतकृत्य दक्ष बड़भागी
लगे दक्ष तव विनय करन बहु कही भवानी वर अभिमत लहु
हर्षित हृदय प्रजापति बोले भयउ सजल युग लोचन लोले
पावन वंश करिय मम माता लै अवतार विश्व विख्याता
तव जगदम्बा भाषण लागी आर्द्र हृदय करुणा परिपागी
द्विगुण तीस तनु धरि अवतरिहौं वंशवृद्धि पुत्री ह्वै करिहौं
मुख्य अंश तहँ सती प्रसिद्धा शंकर आदिशक्ति श्रुति सिद्धा
सुर मुनि नाग विहंगम मानव तव संतान दैत्य अरु दानव
उक्त अनुक्त अमित संताना वंशवृद्धि करिहौं तव नाना
अस कहि अंतर्हित भइ अम्बा अनुकम्पानिधि जगदवलम्बा
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड निकाया जासु उदर सविकास समाया
सोइ भवानी जगदवलम्बा दक्षसुता भइ श्रीजगदम्बा
जय-जयकार करहिं सुरवृन्दा नति नुति तत्पर विविध मुनिन्दा
गावहिं गान विविध गन्धर्वा नाचहिं रम्भादिक गण सर्वा

दोहा

ब्रह्मादिक जगदम्ब पद, दर्शन करि कृतकृत्य ।
भुवन चतुर्दश दिवस निशि, मंगल मुदमय नित्य ॥ ७ ॥

चौपाई

दक्ष सुता मुख देखत भयऊ दान असंख्य याचकहिं दयऊ
वचन अगोचर रूप निकाई देखत बनै बरनि नहि जाई
उपमा प्रति कविता गति हारी जोहि थकी तिहुँ भुवन मझारी
चन्द्र कलंकित कला विहीना क्षणदा क्षण अवसान मलीना
मुख उपमा कहँ सो कस लहई मणि कहँ काच सरिस को कहई
पंकज दिन अवसान मलीना गतलावण्य शुष्क जलहीना
सो लोचन उपमा कस लहई शशि खद्योत सरिस को कहई
पिक केवल पञ्चम सुर बोलै बिनु ऋतुराज मूक इव डोलै
सो भाषण उपमा कस लहई मुक्ता सम गुंजा को कहई
उपमा सकल विकल इहि भाँती निरुपम कहि निरस्त कविपाँती
दिन दिन बाढ़त भइ वर्धिष्णू शुक्ल चन्द्र इव सती भविष्णू
परिणय समय दक्ष अवलोकी जोहत भउ वर रत्न त्रिलोकी
अभिमत वर शंकर कहँ देखी जासु महातम सक्रिय न लेखी
ताहि सुता निज अर्पित कीन्ही जौतुक सामग्री बहु दीन्ही
होमादिक अरु सिन्दुरदाना भयउ वधूगण गावहिं गाना
नृत्य गीत अरु बाजु बधावा दान भूयसी ब्राह्मण पावा
वरयात्रिक कहँ दक्ष बुलावा सादर षटरस अशन करावा

विनय वचन बहु भाँति सुनाये गालि-गान गायिनि गण गाये
कन्या वर कौतुक गृह गयऊ नगर नारि गण प्रमुदित भयऊ
कियउ चतुर्थी विधि त्रिपुरारी तृणछेदन आदिक विधि सारी
दक्षहिँ गमन समय कहलावा सुता सनेह दक्ष उर आवा
रोदन विह्वल प्रिया समेता मोह विवश दक्षहु कर चेता
कियउ मातु पितु बहु उपदेशा पतिव्रत विधि जस शास्त्र निदेशा

छन्द

समय यात्रिक विहित गायिनि गान बहुविध गावहीँ ।
दक्ष गृहिणी युगल कर गहि आत्मजा उर लावहीँ ॥
दैव चिन्तक गमन कालिक सगुन समुचित पावहीँ ।
जय गणेश महेश कहि कहि लोकरीति दिखावहीँ ॥२॥

दोहा

पूर्ण कलस दधि मीन द्विज, मंगल विविध विलोकि ।
गमन कियउ हर अनुगमन, दक्षादिक कर रोकि ॥ ८ ॥

सोरठा

दक्ष गयउ निज गेह, नेह विवश परिजन सहित ।
सती निमग्न सनेह, सम्बोधित हर करत भउ ॥ ७ ॥

चौपाई

शंकर पुरी रम्य चहुँ ओरा निरखि सती उर हर्ष न थोरा
सर सरसिज वन उपवन नाना देव वधू गण गावहिँ गाना

कुसुमित जल थल गुंजहिँ भृंगा तरु तरु कूजहिँ मत्त विहंगा
कतहुँ योगिजन धरहिँ समाधी कतहुँ भक्त शिवलिंग अराधी
गौरी शंकर गृह परवेसा भयउ साधि शुभ समय विशेसा
आश्रम धर्म सती आधारा यथा विहित गृह कार्य सम्हारा
गृहिणी सहित गृहस्थ महेशू लोकरीति रत विगत कलेशू
अस बहु दिवस बीति जब गयऊ अद्भुत एक चरित तब भयऊ
सती निरखि शंकर अपमाना कियउ क्रोधवश योग विधाना
योगानल तब प्रकटित भयऊ तामहँ निज तनु आहुति दयऊ

दोहा

शिष्य विचित्र चरित्र सुनि, संशय सिन्धु निमग्न।
कहत भयउ गुरु चरित यह, भासत युक्ति अलग्न ॥ ९ ॥

सोरठा

गुरु ज्ञानी सर्वज्ञ, शिष्य वचन सुनि कहत भउ।
होहिँ विज्ञ अनभिज्ञ, कालवेग पड़ि तात सुनु ॥ ८ ॥

चौपाई

काल वायु नहिँ काहि उड़ावा काहि न आशा नदी बुड़ावा
माया काहि न नाच नचावा गुरुसेवा नहिँ काहि बचावा
सुनहु तात प्राचीन कहानी गावहिँ जस पुराणगत बानी
मुनिवर अति प्रसिद्ध दुर्वासा भक्ति रसिक विगलित विषयासा
जाम्बूनदेश्वरी अस्थाना जाय कियउ पूजन विधि नाना
गमन कियउ लै सुमन प्रसादा अम्ब अम्ब कहि विगत विषादा

मारग सती पिता मिलि गयऊ प्रणति असीस परस्पर भयऊ
दक्ष प्रसादहिं याचत भयऊ देत दयामय देर न लयऊ
साधु भाव आदर्श दयालू शिवि दधीचि हरिचन्द भुआलू
परहित साधु तजहिं निज देहा दीन दयालु अकारण नेहा
पुनि प्रसाद महिमा मुनि गावा दक्षहिं बहु प्रकार समुझावा
जे प्रसाद आदर करि राखहिं अनायास अभिमत फल चाखहिं
जे परसाद अनादर करहीं नाना विध संकट महँ परहीं
सानुग दक्ष गयउ निज गेहा मुनि सुरपुर विगलित विषयेहा
भावी विवश मोहवश ताता दक्षहिं भूलि गयी सब बाता
कालवेग जब उन्मुख होई ता कहँ टारि सकै नहिं कोई
शयनागार प्रजापति गयऊ मोदमत्त वनितायुत भयऊ
तहाँ दक्ष सौरभ अनुरक्ता राखत भउ प्रसाद आसक्ता
जब ते भउ प्रसाद अपमाना दक्ष हृदय दुर्भाव समाना
ताते कियउ दक्ष मख भंगा वीरभद्र आदिक रणरंगा
हरँ दीपानल दक्ष पतंगा कहिहौं सो सब कथा प्रसंगा

दोहा

शङ्कर द्वेषी दक्ष भउ, उक्त हेतु परभाव।
अनुषंगिक कारण अपर, कहउँ सविस्तर भाव ॥१०॥

चौपाई

एक समय चतुरानन लोका गयउ सदा शिव विगलित शोका
सभा मध्यगत सुर मुनि नाना बहुविधि वेद पुराण बखाना

पूर्व पक्ष अरु उत्तर पक्षा होहिँ ब्रह्म मध्यस्थ समक्षा
निर्गुण सगुण प्रसंग विचारा प्रस्तुत निज निज मति अनुसारा
निर्मल आतम ज्ञान प्रसंगा अविकल सकल द्वैत मत भंगा
कर्म कलाप सराहै कोई इहामुत्र सुख जाते होई
कोउ कर्म अरु ज्ञान समुच्चय भाषै मोक्ष मार्ग करि निश्चय
जे जन इष्ट उपासन करहीँ अनायास भवसागर तरहीँ
यह कह कोउ भक्ति अनुरागी जननी जनक जासु बड़भागी
साधु संग महिमा कह कोऊ पाप ताप दुर्गति हर जोऊ
तीरथ व्रत तप संयम नेमा साधन सब उपजावहिँ क्षेमा
इहि विधि कथा विविध विध जहँमा शङ्कर पुरहर पहुँचे तहँमा
शंभु समागम विधि हरषाये पुलक गात लोचन जल छाये
प्रणति असीस आदि व्यवहारा कीन्ह परस्पर जगदाधारा
सिंहासन आसीन महेशू जासु दरस सब कटै कलेशू
सकल सभासद अति सुख पाये जय जय कहत सुमन बरसाये
नति नुति करि मुख देखन लागे त्राटक साधि प्रेम परि पागे
जगदीश्वर हर करुणागारा कीन्ह सबहिँ समुचित सत्कारा
गावन लगे साम श्रुति नारद 'स्वर सुन्दर संगीत विशारद
एकतान शङ्कर मन भयऊ सहज समाधि लीन ह्वै गयऊ

सोरठा

ताहि समय तहँ दक्ष, आवत भउ विधि दरस हित ।
सुखासीन प्रभु त्र्यक्ष, अभ्युत्थानादिक रहित ॥ ९ ॥

चौपाई

दक्ष प्रजापति लोहित नयना भाषत भउ अति कुत्सित वयना
जामाता मम त्र्यम्बक एहू अति अभिमानी विमत सनेहू
अभ्युत्थान प्रणाम न कियऊ धर्मशास्त्रविधि लंघन भयऊ
गुरुजन आदर जे नहि करहीँ धर्म लोप डर जे नहि डरहीँ
ते अनिष्ट फल निश्चय पावहिँ दंभी धर्मध्वजा फहरावहिँ
चिता भस्म अनुलिप्त अपावन जानहिँ ताहि मूढ़जन पावन
अस्थिमालिका कर महँ धरई नर कपाल लै भिक्षा करई
भंग धतूर अशन नित करई अनाचार भय हिय नहि धरई
जाहि न गोत्र जाति अरु पाँती सो सुशीलता लह केहि भाँती
भयउ दैव मोकहँ प्रतिकूला हर सम्बन्ध हृदय अति शूला
बसै मसान प्रेतगण संगा विवसन भूषण काल भुजंगा
अस कहि शिवहिँ शाप तब दीन्हा अनुचित उचित विचार न कीन्हा
अद्यारम्भ न हर कहँ भागा दैहैँ कोउ जो करिहैँ जागा
शापि सुनत सुर मुनि अकुलाने दैव विवश दक्षहिँ सब जाने
सुनि कटु वचन शाप पर्यन्ता कुपित प्रमथगण अति बलवन्ता

दोहा

नन्दीश्वर अति रुष्ट है, शाप दक्ष कहँ दीन्ह ।
द्विज मण्डल शापित कियउ, जे अनुमोदन कीन्ह ॥११॥

चौपाई

दक्ष वस्तमुख तिय अनुरागी कर्म कलाप निरत अविरागी

तत्त्व विमुख शंकर अपकारी हैहैं अवितथ गिरा हमारी
विस्मृतात्मगति संसृति मग्ना विद्या रहित अविद्या लग्ना
दक्ष वचन अनुमोदनकारी भृगु आदिक कल्पित मतधारी
पुष्पित श्रुति भारती विमुग्धा याचक वृत्ति निरत अति लुब्धा
इन्द्रिय पराधीन अति दीना भक्ष्याभक्ष्य विचार विहीना
हैहैं विगलित चित्त प्रसादा सदा मोहवश विपुल विषादा

दोहा

उक्त प्रमथ कृत शाप सुनि, भृगु मुनिअतिहि रिसाय ।
क्रोध सफल निज करत भउ, शैवहिँ शाप सुनाय ॥१२॥

चौपाई

कापालिक मत निरत प्रमत्ता हैहैं शैव सुरासव सत्का
गतलज्जा शौचादिक हीना अति पाखंडी वेद विहीना
शाप सुनत भृगु दत्त महेशू सानुग गमने नहि आमरशू
सुनत शिष्य यह शाप कहानी अति आश्चर्य हृदय महँ मानी
श्रीगुरुदेवहिँ पूछन लागा संशय मग्न विनय परिपागा
दक्ष प्रजापति भृगु मुनि आदी नन्दीश्वर कस भयउ प्रमादी
क्रोधावेश विवश कस भयऊ आतमज्ञान ध्यान कहँ गयऊ
एकरूप प्रभु घट घटवासी समरथ समदरसी अविनासी
शत्रु मित्र विरहित सुखरासी निलख निरञ्जन सदा उदासी
ज्ञान क्रोध सहभाव न लहई ज्ञानी हृदय क्रोध कस रहई
अति असमञ्जस भासत एहू गुरु बिनु कौन हरै सन्देहू

ब्राह्मण सत्त्वस्वभाव प्रसिद्धा शिवसेवक निर्गुण भन सिद्धा
शिवहिँ तुरीय ब्रह्म कह वेदा तासु भक्त कस मानहिँ भेदा
देश काल अरु वस्तु विभेदा नहि ज्ञानी मानहिँ गतखेदा
दिनमणि अरु रजनीमणि दोऊ समुदित संग लखै कस कोऊ

दोहा

सुनत शिष्य कर वचन यह, गुरुवर करुणा सिन्धु ।
ह्वै प्रसन्न भाषत भयउ, शरणागत जन बन्धु ॥१३॥

चौपाई

शत सहस्र महँ विरल विवेकी जासु हृदय माया नहि छेकी
आतमज्ञान जासु हिय होई पूरण ब्रह्म रूप जग सोई
नाना जतन करहिँ मुनि योगी साधहिँ इन्द्रिय बनहिँ वियोगी
द्वैत भान नहि दुरै दुराये आशापाश न छुटै छुटाये
विविध वासना वेग निरन्तर अहंकार ममता अभ्यन्तर
संशय असंभावना आदी साधक जन कहँ करहिँ प्रमादी
पुनि पुनि हिय उपजै अवसादा तहाँ असंभव सत्त्व प्रसादा
विविध वासना काम विकासा उपजावै पुनि भोग विलासा
पुनि पुनि भोग वासना देहा चक्रक घटी यन्त्र सम एहा
घूमहिँ चौदह भुवन मझारी कर्मनिबद्ध जीव संसारी
अति बलवती विदित यह माया कहहु काहि नहि नाच नचाया
ब्रह्मा विष्णु महेश सुरेशा दनुज दैत्य नर नाग नरेशा
मायाजाल बझै सब कोई जब लगि आतमज्ञान न होई

सज्जन संग न जब लगि होई तब लगि ज्ञान लहै नहि कोई
पुण्य पुञ्ज बिनु मिलहिँ न साधू करुणासागर परम अगाधू

छन्द

होइ जब अनुकूल जनपर दैव तब सज्जन मिलै ।
अन्तराय अनेक आवत रोम राजी नहि हिलै ॥
ज्ञान अरु विज्ञान करगत हृदय सरसीरुह खिलै ।
काल-काल प्रसाद महिमा ताहि कालहु नहि गिलै ॥ ३ ॥

चौपाई

शंकर निराकार साकारा लीला करहिँ अनेक प्रकारा
शंकरकी गति शंकर जानहिँ ज्ञानी जन अगम्य करि मानहिँ
अग्रिम कृति सम्पादन हेतू चरित कीन्ह यह श्रीवृषकेतू
तारक असुर विजय गरुआई कथा सकल कहिहौँ मैँ गाई
प्रकृत कथा अब तोहि सुनावौँ तात यथामति प्रभु गुण गावौँ
बहुत काल बीतन जब आयउ दक्ष प्रजापति-पति पद पायउ
अधिपति पदवी दीन्ह विधाता अहमिति मति नहि हृदय समाता
वाजपेय मख करि बहु दंभा कियउ बृहस्पति सब आरम्भा
सुर मुनि नर नागादिक सर्वा भयउ निमन्त्रित गर्व अखर्वा
पति पत्नी खेचर गण नाना जात भयउ तहँ चढ़े विमाना
पितु मख कथा सुनत जगदम्बा गमन विचार कियउ अविलम्बा
नैहर मोर याग अति भारी होत जहाँ जनता गत सारी

तहाँ गमन उत्कण्ठा मोरी जाचिय प्रभु अनुमोदन तोरी
करौं विनय प्रभु कर युग जोरी स्वजन दरस लालसा न थोरी
पति समेत भगिनी सब तहँमा गईं नाथ यह उत्सव जहँमा
नाथ समेत जाउँ तहँ स्वामी नन्दी आदि होहिं अनुगामी
देव यही याचना हमारी कही शंभु कहँ दक्षकुमारी
मन वच काय देव पद पूजा व्रत हमार प्रभु और न दूजा
विश्व विदित प्रभु नारि सुभाऊ जहाँ प्रबल अविवेक प्रभाऊ
उष्ण अनल जल शीतल होई ताहि अन्यथा करै न कोई
सब अपराध क्षमा प्रभु कीजै गमन हेतु आयसु शिव दीजै
प्रिय जननी भगिनी मुख दर्शन हेतु हृदय उद्विग्न छनहिं छन
पिता भवन उत्सव सुनि आजू प्रभु अनुमति साजिय सब साजू
गुरु अरु मित्र जनक गृह माहीं गमन अनाहुत अनुचित नाहीं
सकल चराचर अन्तर्यामी नाथ अधाम अकाम अनामी
अस्मदादि योषित अनभिज्ञा सुनि उत्सव उत्कण्ठित प्रज्ञा

दोहा

प्रिया वचन सुनि त्रिपुरहर, दिव्य दृष्टि भगवान ।
करत भावना कहत भउ, काल वेग बलवान ॥१४॥

चौपाई

प्रिया कही सब समुचित बानी लावहु नेकु न हृदय गलानी
अनिमन्त्रित बांधव गृह जाहीं हृदय भाव जहँ कलुषित नाहीं

तुअ पितु देवि सदा मम द्रोही चाहत अपमानित नित मोही
ब्रह्मसत्र जब कोपित भयऊ मोहि प्रजापति शापित कियऊ
सो सब कथा न अविदित तोहू अति अभिमानी दुर्मति ओहू
तहाँ गये असमञ्जस भारी अनुमानत अस बुद्धि हमारी
विद्या धन अभिजन मदमाता अन्ध हृदय नहि मानत नाता
मानी पर महत्त्व नहि मानत कृत्य अकृत्य नेक नहि जानत
भेदै हृदय स्वजन कटु वचना अफल सकल जहँ औषध रचना
निरखि देवि तहँ मम अपमाना अवश लुप्त होइहि तव ज्ञाना
दक्ष न पुत्रि मानि अनुसरिहैँ मम सम्बन्ध अनादर करिहैँ
मोर विचार देवि यदि मानहु नैहर गमन हृदय नहि आनहु
सती न सुनि कछु उत्तर दयऊ नखमणि लिखत धरणितल भयऊ
वदन अधोमुख प्रभा विहीना जनु विधु बिम्ब कला भइ छीना
सजल नयन सरसीरुह दोऊ विस्मित हर लखि आकृति सोऊ
हृदय विषाद दशा अति दीना ग्रहावेश जनु बुद्धि मलीना
भई क्रोधवश सती सयानी भावी विवश होहिँ मुनि ज्ञानी
प्रभु अनुमति बिनु सती पयाना करत भई है अपहृत ज्ञाना
प्रमथ सहस शत अनुगत भयऊ उदासीनता शंकर लयऊ
सदा एकरस अद्वय रूपा माया भासित विविध सरूपा
यहाँ न किञ्चन नाना अहई श्रुतिगण अस अद्वय मत कहई
दुंदुभि शंख वेणु व्यजनादी दर्पण अम्बुज कंदुक आदी
शुक सारिका प्रभृति भगवन्ता सती संग करि दियउ तुरन्ता

यज्ञभूमि पहुँचे सब जाई पुनि पुनि स्वाहा शब्द सुनाई
ब्रह्मघोषमय दश दिश भयऊ दान प्रजापति बहु विध दयऊ
सती विलोकि दक्ष मुख फेरा कोउ न तहाँ सती मुख हेरा
आसन अर्घ दियउ नहि कोई राजा यथा प्रजा तस होई
रुद्र भाग विरहित मख देखी सती हृदय महँ ताप विशेखी
माता सजल विलोचन भयऊ पुत्री आलिंगन तन कियऊ
आसनादि सब अर्पित कियऊ रुष्टा सती सकल तजि दियऊ
सती सती आदर्श समाना निरखि यज्ञ महँ पति अपमाना
क्रोधाविष्ट हृदय ह्वै गयऊ नयन अरुणिमा अद्भुत् छयऊ
भृगु आदिक शिव निन्दा करहीं काल भुजंगम शिर पग धरहीं
कहै कोउ हर विगत अचारा कोउ कहै हर विगत विचारा
नष्ट भ्रष्ट शंकर कहँ कहहीं सज्जन सकल मौन गहि रहहीं
तहाँ प्रमथ गण अति विकराला प्रलय करन चाहहिं मखशाला
कोपित निजगण सती विलोकी जानि अनवसर कथमपि रोकी
देवी समुचित वचन सुनाई मन दै सुनहु तनिक सब भाई
सकल चराचर अन्तर्यामी सदा एकरस शंकर स्वामी
शत्रु मित्र त्रिभुवन नहि कोई आतम भाव लखहिं जन जोई
निज-निज रुचि भाषहु सब कोई होनी अनहोनी नहि होई
सूरजपर जे धूलि उड़ावत सो पुनि उलटि तासु शिर आवत
शिव शिव कथमपि कह जग जोई निर्मल मन पावन जन सोई
होहिं अपावन सो शिव कैसे कुत्सित धातु परशमणि जैसे

सोरठा

जासु चरण जलजात, भ्रमर सरिस सुर मुनि भजहिँ ।
कीरति जग विख्यात, गरलपान परहित कियउ ॥१०॥

छन्द

तासु द्रोह विमोहवश जे करहिँ ते दुख पावहीँ ।
अघनघन करुणायतन प्रभु वेद गुणगण गावहीँ ॥
राम पूरणकाम प्रमुदित जाहि नित हिय ध्यावहीँ ।
धन्य होहिँ जघन्य क्षण महँ जाहि शिव अपनावहीँ ॥ ४ ॥

चौपाई

गुरुजन निन्दा सुनिय न काना सहिय हानि निकसै बरु प्राना
निन्दक रसना छेदन कीजिय यदि अशक्ति आपुहि उठि दीजिय
नीलकण्ठ निन्दक पितु-जाता त्यागौँ तुरत अपावन गाता
त्रिभुवनपति हर दक्षजमाता अति अकीर्तिकारक यह नाता
नित्य मुक्त शंकर गुणहीना अवगुण कथन स्वभाव मलीना
दाक्षायणी नाम अब एहू अति अकीर्तिकर नहि सन्देहू
यदि मन वच क्रम शंकर नेहा ताहि मिलव पुनि नहि सन्देहा
अस कहि देवी वचन प्रमानू कोपमयी जिमि ज्वलित कृशानू
भूतल उत्तराभिमुख बैसी सम शरीर थिर प्रतिमा जैसी
एकतान मन अनिमिष लोचन सिद्धासन भ्रूमध्य विलोकन
योग धारणा धारण कियऊ प्राण अपान तुल्य गति भयऊ
नाभि हृदय गल भ्रू पर्यन्ता दीन्ह चढ़ाय उदान तुरन्ता

योग अनल तन प्रकटित कियऊ प्रभु पद पंकज ध्यावत भयऊ
जो तन शंकर प्रेमाधारा सो छन भयउ आज जरि छारा
क्षणभंगुर यह अधम शरीरा भ्रममय जानहिँ जे मतिधीरा
मोर मोर भाषहिँ अविवेकी जाकी बुद्धि अविद्या छेकी
हाहाकार भयउ नभ माहीँ वरनि जाय सो घटना नाहीँ
त्रिभुवन शोक वरनि नहि जाई निन्दहिँ सकल दैव दुखदाई
सिर पटकहिँ अरु पीटहिँ छाती नयन बरस जस भाद्व राती
निन्दहिँ दक्ष प्रजापति लोका सती सुता जे मरत न रोका
भय व्याकुल दिग्गज दिग्पाला थर थर काँपत महि महिपाला
होन चहत अब प्रलय अकाला महाकाल कोपानल ज्वाला
अस्त्र शस्त्र गहि प्रमथ प्रचण्डा दक्ष हनन धायउ उद्दण्डा
भृगु मुनि पावक आहुति दयऊ हवन कुण्ड ते प्रकटित भयऊ
ऋभुगण मुनि निर्मित विकराला भउ प्रमथादि जयी तत्काला
ऋभुगण जयी प्रमथ गण भागे भृगु बल सकल सराहन लागे
विजेय पराजय विधि कर हाथा थापहिँ अविवेकी निज माथा

सोरठा

नारद मुनि तब जाय, हरहिँ सुनाई सब कथा।
प्रिया मरण सुनि हाय, शंकर शोकाकुल भयउ ॥

छन्द

सुनि प्रजापति कृत अनादर सती तनु त्यागत भई।
प्रमथ सेना ऋभु पराजित दशहुँ दिशि जहँ तहँ गई ॥

भयउ हर विकराल मूरति अरुणिमा लोचन छई ।
दन्त अवली अधर दावहिँ वीररस सुषमा नई ॥ ५ ॥

चौपाई

जटा नोचि हर भूपर पटके अन्तक अन्धक आदिक भटके
करि गंभीर नाद अति घोरा सकल विश्व व्यापक चहुँ ओरा
वीरभद्र प्रकटे वर वीरा द्यावा पृथिवी व्यापि शरीरा
लोचन कूप सरिस अनुमानिय नासा गिरि कन्दर सम जानिय
ऐरावत सुंडाकृति बाहू दक्ष पराभव कारण राहू
लम्ब दन्त गिरिशृंग समाना मेरुगुहा आनन परिमाना
जंघा महा ताल अनुरूपा प्रमथ यूथपति विकट सरूपा
प्रभु संमुख उत्थित कर जोरे भाषत भयउ विनय रस बोरे
किंकर जानि अनुग्रह कीजिय सम्प्रति कृति आयसु प्रभु दीजिय
सुनि अस कहत भयउ त्रिपुरारी सुनहु तात तुम कथा हमारी
अंश हमार तात तुम जाये तनु अनुरूप अतुल बल पाये
कियउ दक्ष अपमान हमारा सती योगपावक तनु जीरा
क्रोध कृशानु दहत हिय मोरे निर्वापन तसु करतल तोरे
तुरित दक्ष मख शाला जाहू समुचित दण्ड देहु सब काहू
नन्दीश्वर चण्डीश्वर नामा भृंगी भृंगी अति बलधामा
वीर बली मणिमान अमाना सबहिँ संग लै करहु पयाना
अति बल प्रमथ वाहिनी लेहू पहुँचहु जाय दक्ष मखगेहू
हनहु दक्ष मख भञ्जहु जाई गञ्जहु भृगु नहि जाय पराई

छन्द

वीरभद्र अभद्रनाशन ईश आयसु सुनि चले ।
शूरवर कर शूल गहि गहि चलहिँ भूतल दलमले ॥
भूमिधर गिरि हिलहिँ डोलहिँ करहिँ दिग्गज कलमले ।
जयति जय महेश कहि कहि चले दल बल अति भले ॥ ६ ॥

दोहा

शंभु प्रदक्षिण प्रणति करि, पुनि पुनि कियउ पयान ।
वीरभद्र आदिक सुभट, महा महा बलवान ॥१५॥

चौपाई

जयजयकार वीरगण करहीँ घन गंभीर शब्द अनुसरहीँ
प्लवन प्लवंगम सम सब करहीँ हँसहिँ हरषि कालहुँ नहि डरहीँ
आगे चले महा रणधीरा वीरभद्र अति विकट शरीरा
नाना अस्त्र शस्त्र गहि धाये शंकरगण अद्भुत छवि छाये
धूलीमय उत्तर दिशि देखी भृगु आदिक हिय त्रास विशेखी
द्विज द्विजपत्नी भयउ सतर्का किमिदं किमिदं करहिँ वितर्का
नहि पशु चलै बहै नहि बाता दस्युवृन्दहू नहि दरसाता
मानहु प्रलयकाल नियरावा भावी काह जानि नहि जावा

दोहा

अति आतुर जनता सकल, होत भई भयभीत ।
सुमिरत निज निज देवता, निरखि दैव विपरीत ॥१६॥

चौपाई

करत तर्क अति विस्मित भयऊ वीरभद्र तरसा तहँ गयऊ
कर विकराल त्रिशूल उठाये जगदन्तक जिमि आपुहि आये
अमित प्रमथगण जय जय करहीँ सिंहनाद सुनि सुर मुनि डरहीँ
दक्ष सकोप कहन तब लागे वीरभद्र सेना लखि आगे
सुरगण अस्त्र शस्त्र अब धरहू प्रमथवाहिनी मर्दन करहू
दक्ष वचन सुनि सुरगण धाये मारहु मारहु वचन सुनाये
बारह भानु आठ वसुदेवा चले साध्य आदिक सब येवा
किन्नर गुह्यक अरु गन्धर्वा उरग विहंगम आदिक सर्वा
ऐरावत आरूढ़ सुरेसा नाना भूषण भूषित भेसा
दक्ष पक्ष धर प्रमथ विरोधी सुर नर असुर गगन अवरोधी
छिंधि भिंधि भाषै भट कोऊ तिष्ठ तिष्ठ कहि दौड़ै कोऊ
धरु धरु मारु मारु उच्चरहीँ वीर रोमहर्षण रण करहीँ
धावहिँ तिष्ठ तिष्ठ कहि पुनि पुनि थर थर काँपहिँ कायर सुनि सुनि
लड़ै कोउ पर्वत लै वीरा कोउ शिलाधारी रणधीरा
पट्टिश खड्ग त्रिशूल प्रहारा कोउ शक्ति तोमर गहि मारा
छिन्न भिन्न शोणितमय वीरा कुसुमित किंशुक सरिस शरीरा
अतुलित तुमुल युद्ध अति घोरा अस्त्र शस्त्र चमकत चहुँ ओरा
बाजत शंख दुंदुभी बाजा गर्जत प्रमथराज सुरराजा
पावकास्त्र वरुणास्त्र हटावहिँ पर्वतास्त्र पवनास्त्र दुरावहिँ
नागअस्त्र गरुड़ास्त्र नसावा मोहनास्त्र संज्ञास्त्र दुरावा

ब्रह्मअस्त्र ब्रह्मास्त्र निवारा अस्त्र नरायण प्रणति प्रकारा
दिव्यअस्त्र बहु वारंवारा वीर परस्पर करहिँ प्रहारा
अस्त्र शस्त्र विरहित वर वीरा मल्लयुद्ध करि तजहिँ शरीरा
शत शत रुंड मुंड बिनु धावै वायु धनञ्जय नाच नचावै
उपरि उपरि गत मृत तनुराशी गिरि अनुहर रण विश्वविनाशी

दोहा

समारोह अद्भुत भयउ, एकत्रित तिहु लोक।
सकल कुलाचल डगमगे, डोलत लोकालोक॥
केवल देवासुर जुटे, देवासुर संग्राम।
जुटे यहाँ चौदह भुवन, दक्ष यज्ञ कर धाम॥१८॥

चौपाई

बहत रुधिर गजगणते कैसे वारि गेरुमय गिरिते जैसे
रुधिर प्रवाह नदी अनुहारी तहँ करिवर कच्छप अनुकारी
अस्थि पषाण अलक जम्बाला मज्जा पंक सरिस तेहि काला
चमचम चमकत निशित कृपाना कवि तहँ कहहिँ तरंग समाना
चक्र कहिय आवर्त समाना अस उपमा जानिय तहँ नाना
सुभट युगल दल आहत भयऊ निज निज विजय वीर मन दयऊ
लहत न रण क्षण भरि विश्रामा लड़त वीरवर लै लै नामा
बरसहिँ बाण वीरवर कैसे वारि बिन्दु सावन घन जैसे
नासहिँ बीर वाहिनी कैसे दावानल कानन कहँ जैसे
होत भुशुंडीधुनि रण कैसे गिरत वज्र घनगर्जन जैसे

हत गज तुरग वीर शत कोटी ढेर निरखि गिरि उपमा छोटी

दोहा

निशि वासर सन्ध्या युगल, समय जानि नहि जाय ।
अन्धकारमय दिशि विदिशि, कायर चले पलाय ॥१९॥

छन्द

प्रमथगण नाचहिँ प्रहर्षित भूमि संशयवश भई ।
प्रबल पादाघात अविरल लगत जहँ तहँ धँसि गई ॥
अमरसेना भागि डरते शरण गिरिकन्दर लई ।
वीरपत्नी करहिँ रोदन कहहिँ दैवहिँ निर्दई ॥ ७ ॥

चौपाई

तब सुरपति आये बढ़ि आगे चलित चमू ललकारन लागे
भागहु समर छाड़ि भट जो जो शरण स्वकीय कन्दरा खोजो
जीवन मरण दैवके हाथा मूढ़ अयश थापै निज माथा
जासु सुयश जग जीवत सोई अपयश जासु मृतक सम होई
आजु सहस वत्सर वा बीते ग्रसित होय सब काल बलीते
अपयश सुयश छाड़ि जग माहीँ धन जन तन क्षण भरि थिर नाहीँ
तनु तजि यती परम सुख पावहिँ वीर समर हत सुरपुर धावहिँ
जीते सुयश मरे सुरधामा अपयश हत जीवन केहि कामा
फिरहु फिरहु भय त्यागहु भाई करहु प्राण पण आजु लड़ाई
भूत प्रेत कर अस प्रभुताई देव दनुज पर करै चढ़ाई

देखौं आजु प्रमथ प्रभुताई निर्भय ह्वै सब लखहु लड़ाई
यदि न प्रमथ गण जीतौं आजू नाम न होय मोर सुरराजू
सुनत देवसेना हरषाई जयजयकार करत पुनि धाई
बाजन लगे विविध बहु बाजा आशीर्वाद देहिं मुनिराजा
वन्दीजन विरुदावलि गावहिं नभ विमानसंकुल दरसावहिं
कायर इष्टदेवता ध्यावहिं ऊपर पौरुषवाद सुनावहिं
मातलि रथ सुसज्ज करि लावा देवराज कहि शीश नवावा
सुरवर गुरु प्रणाम तब कियऊ रथ आरूढ़ चाप कर लियऊ

छन्द (भुजंग प्रयात)

भिरे इन्द्रवाणी पड़ी कान जाके
भई वाणवर्षा झड़ी ज्यों घटाके ।
गिरे वाहनारूढ़ योधा धमाके
छटा आजु फौजी अगम्या कथाके ॥
हनैं अस्त्र शस्त्रावली वीर बाँके
कहीँ ना धरै धीर वाजी इराके ।
डिगी शांभवी बाहिनी दम्म नाके
भगी वेगसे कोउ पाछे न झाँके ॥ ८ ॥

दोहा

वीरभद्र अपनी चमू, लखि विचलित बलवान ।
ललकारत रोकत भये, भाषत वचन प्रमान ॥२०॥

सोरठा

विधि हरि हर तनु धारि, जगत रचत पालत हरत ।
प्रभुता तासु बिसारि, भाजत लाज न कस लगत ॥१२॥

चौपाई

निर्भय होइ फिरहु सब भाई विजय पराजय ईश रजाई
सुख दुख आदि द्वंद्व जग जेते ईश्वर विहित विचारहु तेते
कर्मसूत्र कर लिये विधाता दारु पुत्तली जीव नचाता
कर्मबद्ध यह जीव दुखारी इत उत फिरत भ्रमत संसारी
धैरज धरि निज कृत फल भोगी हर्ष विषाद रहित मुनि योगी
प्रभु प्रताप सुमिरहु मन माहीँ इन्द्र पराजय दुर्घट नाहीँ
दारुण समर कमर कसि देखहु प्रतिभट सकल पराजित लेखहु
सेना छिन्न भिन्न करि डारूँ झपटि वीरवर लपटि पछारूँ
अगणित शोणित धार बहाऊँ गिरि उपमित गज मारि दहाऊँ
गगन विजय झंडा फहराऊँ हर उर विजय माल पहिराऊँ
तौ मैँ शंकर दास कहाऊँ यदि न करौँ पावक जरि जाऊँ

सोरठा

वीरभद्र बरवीर, करी प्रतिज्ञा अतुलबल ।
देव दनुज रणधीर, थर थर काँपहिँ सुनि वचन ॥१३॥

चौपाई

बाज सरिस झपटे तेहि काला गर्जत वीर बली विकराला
सहस सहस भट मारि गिरावहिँ वीरभद्र अन्तक इव धावहिँ

गिरिवर तरुवर शिला प्रहारा करहिँ प्रमथगण सुरसंहारा
अट्टहास भैरवगण करहीँ नाचत प्रलय काल अनुहरहीँ
सहस सहस योगिनी कराला कर कपाल उर मुंड सुमाला
लह लह रसना खल खल हँसहीँ गहि त्रिशूल दल भीतर धँसहीँ
नन्दीश्वर चण्डीश्वर कैसे गर्जहिँ संवर्तक घन जैसे
चमचम चमकत असिगण कैसे विद्युल्लता सघन घन जैसे
टरै न धीर वीरवर कैसे एकतान योगी मन जैसे
आहत गिरहिँ भूमितल कैसे छिन्न मूल तरुवर वन जैसे
हरगण द्विगुण पराक्रम करहीँ प्रभु प्रताप कालहुँ नहि डरहीँ
खेलहिँ खाय अघाय सियारा काक कंक निश्शंक हजारा
चमू हताश त्रासवश भयऊ हाहाकार घोर मचि गयऊ
धीर वीरवर भागहिँ कैसे सेतु भंग सरिता जल जैसे
इन्द्रादिक बढ़ि सके न आगे विहत पराक्रम संगर त्यागे
प्रमथ बली जय जय करि धावहिँ सुर विमान धरि धरणि गिरावहिँ

दोहा

देव दनुज आदिक चमू, भागी भई अधीर ।
करि कर विदलित कमल जिमि, प्रमथ प्रमर्दित वीर ॥२१॥

छन्द

त्रिपुर हर गण विजय घोषण करि गगन अनुधावहीँ ।
प्रमथसंकुल गगन तिल तिल दक्ष भय उपजावहीँ ॥

प्रमथदल पुनि यज्ञथलगत यज्ञ सदन ढहावहीं।
तोड़ि फोड़ि अनेक याज्ञिक पात्र धूलि मिलावहीं ॥ ९ ॥

चौपाई

यज्ञहुताशन कोउ बुतावा कोउ यज्ञवेदिका ढहावा
कोउ कुंड मलमूत्रित कियऊ ध्वस्त यज्ञ नाना विधि भयऊ
मुनिपत्नी तर्जन कर कोऊ धावि धरहिं सुर भागहिं जोऊ
भृगु कहँ बान्हि लीन्ह मणिमाना दक्षहिं तथा महाबलवाना
वीरभद्र दृढ़ बन्धन दीन्हा शंभु अनादर बदला लीन्हा
बान्हे मुसुक चढ़ाय तुरन्ता पूषण चण्डीश्वर बलवन्ता
भगहिं दौरि दुर्भग इव पकरे नन्दीश्वर बालक जिमि बकरे
बान्हे अट्टहास करि वीरा बली बर्द कहँ यथा अहीरा
सकल सभ्य ऋत्विज द्विज देवा पराभूत नर किन्नर ये वा
प्रमथ काहु पत्थर गहि मारहिं काहु मुष्टि आहत करि डारहिं

दोहा

महादेव निन्दा समय, दाढ़ी मूँछ हिलाय।
हास कियउ भृगु मुनि निदरि, प्रभु अनुभाव भुलाय ॥२२॥

सोरठा

तासु वीर मणिमान, कृत प्रतिकृत समुचित समुझि।
नोचे सहित गुमान, मूँछ सहित दाढ़ी सघन ॥१४॥

चौपाई

भूमि गिराय नयन पुनि तासू लीन्ह निकासि विहित बहु हासू
नन्दीश्वर जगदीश्वर दासा विमन देवगण लखहिं तमासा

हर निन्दा अवसर करि हासा पूषा दन्तावली विकासा
कुपित तासु चण्डीश्वर वीरा दाँत उपारि दियउ अति पीरा
मारे शस्त्र दक्षकर छाती वीरभद्र गर्जत बहु भाँती
त्वच भेदनहूँ भयउ न ताके विस्मित भयउ वीरवर बाँके
दक्षहिं मखपशु कल्पित कियऊ वीरभद्र कर असिवर लियऊ
काटत भयउ तुरत शिर तासू पायउ प्रभु विरोध फल आसू
साधुवाद शिवगण उच्चरहीं हाहाकार इतरगण करहीं
वीरभद्र करि क्रोध अपारा सो शिर प्रबल अनल महँ डारा

दोहा

सकल प्रजापतिपति विदित, विद्या बुद्धि निधान ।
भई तासु अस दुर्दशा, पतन हेतु अभिमान ॥२३॥

चौपाई

चौदह भुवन जीवगण जेते यथाकर्म फल भोगहिं तेते
सकल शुभाशुभ कर्म अधीना भोगहिं जन अभिमान मलीना
ताहि न रोकि सकै जग कोई यद्यपि परम योग्यता होई
लख चौरासी योनि जन्तु जो झूलहिं कर्म हिंडोल अवश सो
चतुरानन आनन कटि गयऊ विश्वम्भर वामन वपु भयऊ
आपुहुँ प्रभु लहि सती वियोगा इत उत भ्रमित त्यागि सब योगा
तनु धरि नित्य मुक्त व्यवहारी होहिं यथा यह जन संसारी
माया अनुशासनवश जासू बान्हहिं सब कहँ विभ्रम पासू

सो कस लहहिँ हर्ष अरु शोका लीला करहिँ यथा सब लोका
प्रस्तुत चरित सुनहु मन लाई सुनत सुनावत अति सुखदाई
होय पूर्व पुण्योदय जासू शंकर सुयश श्रवण रुचि तासू
नवधा भक्ति कहहिँ मुनि नाना ता महँ श्रवणहिँ प्रथम बखाना
श्रवणादिक साधन श्रुति भाखी श्रवण तहाँ हूँ प्रथमहिँ राखी

दोहा

वीरभद्र विजयी बली, इन्द्रादिक रिपु जीति।
प्रभु आयसु सम्पन्न करि, चले हृदय अति प्रीति ॥२४॥

चौपाई

शंकर गिरिवर शिखर देखावा प्रमथ प्रहर्षित शीश नवावा
सजल नयन रोमावलि ठाढ़ी शंकर प्रीति प्रमथ उर बाढ़ी
परम रम्य गिरिवर नियराये जयजयकार करत सब धाये
अनुपम सुषमा वरणि न जाई वेद पुराण जासु गुण गाई
अति पावन अतुलित गुणखानी जहाँ बसहिँ भव सहित भवानी
सफलफूल वन उपवन सोहै छबि निरखत मुनिजन मन मोहै
करहिँ विहंगम कलरव नाना सुनि योगीजन योग भुलाना
नीरजशोभि सरोवर शोभा अवलोकत मुनिजन मन मोहा
देववधूगण गावहिँ गाना श्रवण मनोहर सुर लय ताना
संगीतकगत भेद अपारा नारद आदिक करहिँ विचारा
सिद्धवृन्द तहँ धरहिँ समाधी जहाँ न ग्रसै आधि अरु व्याधी
सुनहिँ सुनावहिँ प्रभुगुणगाथा भक्तशिरोमणि होहिँ सनाथा

दोहा

वट तरुवर तर प्रभु निरखि, प्रमथवृन्द हरषाय।
धावत भउ जय जय करत, तन मन सुधि बिसराय॥२८॥

चौपाई

सकल दण्डवत कियउ प्रणामा सजल नयन लै लै निज नामा
गद् गद् स्वर मुख वचन न आवा प्रभुपद निरखत हृदय जुड़ावा
कर जोरे संमुख सब ठाढ़े बूड़त भयउ प्रेम रस गाढ़े
दयासिन्धु जनबन्धु महेशू लखि शरणागत हरहिँ कलेशू
दयादृष्टि देखे सब काहू लहे प्रमथगण जीवनलाहू
आशीर्वाद नाथ पुनि दीन्हा आदरभाव यथोचित कीन्हा
पुनि पुनि प्रभु पूछी कुशलाता प्रणतपाल सेवक सुखदाता
समरभूमि बहु क्लेश उठाये कहहु कहहु किमु सकुशल आये
संगरकथा सुनावहु भाई इन्द्रादिकते पड़ी लड़ाई
दक्ष पक्षपाती जे आये कहहु यथोचित उत्तर पाये
तनया दहन हेतु अभिमानी कही हमहिँ जे अनुचित बानी
सो किमु तासु उचित फल पावा तुमहिँ दैव किमु जयी बनावा
भृगुमुनि गौरव उदधि सरोषा महाप्रलय रवि इव को शोषा
अस कहि प्रभु अति मंजुल वयना गण अवलोके अनिमिष नयना
हर वारिद वर्षा मृदुबानी प्रमथ प्रीति सरिता बढ़ियानी

सोरठा

प्रेम मगन वरवीर, वीरभद्र पुलकित तनू।
हर उर हरष अधीर, विजयमाल अर्पित कियउ॥१८॥

भाषत भउ सिर नाय, जोरि युगल कर विनयमय।
प्रभु अनुकम्पा पाय, दुर्घट कारज नहिं कछू ॥१६॥
प्रभुप्रताप लवलेश, लेश पाय सर्षप सरिस।
धरणि धरहिँ उरगेश, एक फणोपरि सहसफणि ॥१७॥

दोहा

प्रभु मध्यम लोचन अनल, प्रलयकाल विकरार।
जारत सचराचर सकल, यह प्रपञ्च विस्तार ॥२६॥

छन्द

राउर अनुभावा निगम सुनावा
सुर नर मुनि बहुविध गावा।
जाकर उर आवा मोह दुरावा
अति अप्राप्य पद सो पावा॥
अणिमादिक भावा सुलभ स्वभावा
तासु निकट आपुहि आवा।
अस कहि सिरनावा भोला बाबा
चरणधूलि शिर उर लावा ॥१०॥

सोरठा

शंकर अति हर्षाय, वीरभद्रकर वचन सुनि।
सैनहिँ ताहि बुलाय, बैठाये निज पास प्रभु ॥१८॥

चौपाई

सकल प्रमथ जोरे युग पानी बोले वचन प्रेमरस सानी
नाथ सकल जग अन्तर्यामी अलख अरूप अनाम अकामी

गमनादान चरण कर हीना करहु देव कह वेद प्रवीना
लोचन श्रवण रहित त्रिपुरारी देखहु सुनहु चरित संसारी
सहज शक्ति शत प्रभु कर अहई ज्ञान क्रिया बलमय श्रुति कहई
नाथहिँ अविदित चरित न कोई चौदह भुवनमध्य जो होई
तदपि नाथ अनुशासन पाई कथन उचित जस भई लड़ाई
प्रभु आज्ञा प्रेरित सब कोई वीरभद्र अनुगामी होई
यज्ञभूमि पहुँचे हम जाई समारम्भ अद्भुत दरसाई
सुर मुनि गण यजमान समेता एकत्रित सब कुण्ड निकेता
आहुत दीप्त हुताशन ज्वाला नभ मण्डल व्यापिनी विशाला
वेद विचार विप्र गण करहीँ रम्भादिक गायन मन हरहीँ
बाजहिँ वीणा वेणु मृदंगा होहिँ मधुर धुनि तरल तरंगा
लहहिँ दान भोजन सम्माना आमंत्रित अनिमंत्रित नाना
प्रमथ चमू सागर लखि आगे दक्षादिक हिय धड़कन लागे
रक्षण हेतु दक्ष अकुलाये पक्षपात मति सबहिँ बुलाये
देव दनुज आदिक सब आये दक्षपक्ष धरि शस्त्र उठाये
चतुरंगिनी अनी बढ़ि आई अगम व्यूह रचना दरसाई

दोहा

भिरे डपटि जोरी युगल, द्वंद्वयुद्ध अति घोर।
शंख दुंदुभी आदि धुनि, छाइ रही चहुँ ओर ॥२७॥

चौपाई

भयउ उभय दल विजय परायण घोर समर घटना कहि जाय न

भूमि भूमिधर डगमग डोले　सहसाननहु नयन निज खोले
कच्छप कोल चकितमति भयऊ　प्रलय अनवसर किमु नियरयऊ
अगणित अस्त्र शस्त्र कर धारा　हत आहत को लेखनहारा
शैल शिला तरुवर कत छूटे　महा मत्त गज मस्तक फूटे
भई तहाँ शोणितमय धरणी　करी वीरगण अद्भुत करणी
रुंड मुंड मंडित रण सोहै　हत आहत जन परिजन जोहैं
वीरभद्र कर अति प्रभुताई　नदी समर पावस बढ़ि आई
सुरपति परम पराक्रम नावा　चढ़े सकल रिपु पार न पावा
प्रभु कुदृष्टि प्रतिकूल बयारा　बूड़े सकल यदपि बरियारा
त्रिभुवन उत्पति थिति हति होई　प्रभु इच्छा कृत श्रुतिमत सोई
हम सब देव समर जय पाये　रिपुगण प्राण बचाय पलाये
वीरभद्र असि गहि जगदीशा　काटे दक्ष प्रजापति शीशा

सोरठा

आहुति पावक कुण्ड, वीरभद्र अर्पित कियउ ।
दक्ष प्रजापति मुण्ड, हा हा धुनि रिपु महँ भयउ ॥१९॥

चौपाई

भृगुमुनि दाढ़ी मूँछ तुरन्ता　भट मणिमान महा बलवन्ता
काटे नाथ अनाथ समाना　देखहिं सुर असुरादिक नाना
नयन युगल नन्दीश्वर वीरा　तासु निकासि लियउ रणधीरा
दाँत उपारि दीन्ह अति पीरा　पूषाकहँ चण्डीश्वर वीरा
हम सब मख विध्वंसन कियऊ　समुचित दण्ड रिपुन कहँ दियऊ

समाचार सब सुनि जगदीसा दीन्ह दयानिधि सबहिँ असीसा
माँगहु वर प्रमथहिँ प्रभु भाखी महादेव सचराचर साखी
पूरण ब्रह्म सकल घट वासी अविनाशी अतुलित सुख रासी
भक्तहेतु नाना तनुधारी चतुरानन मुरमथन पुरारी
विदित त्रिगुण क्रम तीन शरीरा एकरूप जानहिँ मतिधीरा
द्वैत भाव मानहिँ अज्ञानी पावहिँ भ्रममय भय अभिमानी
चर अरु अचर रूप बहुतेरे कोटि कोटि ब्रह्माण्ड घनेरे
सकल एक अद्वैत अनन्ता भान अनेक असत कह सन्ता
एक कनक कटकादि अनेका जानहिँ अज्ञ सहित अविवेका
अद्वय एक द्वैत शत कोटी ते मानहिँ जिनकी मति खोटी
रज्जू सर्प शुक्तिका चानी ब्रह्म प्रपञ्च सरिस कह ज्ञानी
प्रथम सत्य अरु अपर अलीका आतम रस विनु सब रस फीका

दोहा

निराकार साकार तनु, होहिँ धर्मकर सेतु ।
माया भासित भान तसु, ब्रह्मरूप वृषकेतु ॥२८॥
गायउँ प्रभुगुण गान कछु, पड़ि उमंगकर वेग ।
प्रस्तुत घटना सुनहु पुनि, तजि लौकिक उद्वेग ॥२९॥

चौपाई

वर वितरणरुचि प्रभुकर देखी प्रमथवृन्द हिय मोद विसेखी
भाषे सकल जोरि युग पानी वानी विनय प्रेमरस सानी
जासु दरश कारण मुनि योगी यतन करहिँ बहु बनहिँ वियोगी

सो प्रभु मंगलमय सुखराशी हमहिँ नयनगोचर अविनाशी
हमहिँ सरिस जग को बड़भागी जापर विश्वनाथ अनुरागी
दीनबन्धु अभिमत वर एहा प्रभु पद पंकज विमल सनेहा
विषमय सकल विषय जगमाहीँ प्रभु सुख लेश लवहु तहँ नाहीँ
लाभ जनित बाढ़त पुनि लोभा सदा बढ़ावत मानस क्षोभा
नहि विषयी सपनहुँ सुख पावै दुखमय जीवन वृथा गमावै
जो प्रभु चरण प्रेम रस पियई त्रिभुवन विभव विरस सो कहई

छन्द

नाथ मंगलमय सुमूरति हृदय सरसीरुह रहै ।
नाम राउर परम पावन दिवस निशि रसना कहै ॥
तव मनोहर चरण पंकज युगल रज मस्तक लहै ।
हम सबहिँ वर इहै चाहिय प्रेम लहरी नित बहै ॥११॥

दोहा

प्रमथहिँ करुणायतन प्रभु, कहे करहु विश्राम ।
भक्ति तुमहिँ अनपायिनी, पूरै सब मन काम ॥३०॥

सोरठा

कर उठाय करि सोर, कहहुँ सुनहु मनलाय सब ।
काल खाय नहि मोर, निदरि काम जे भक्त मम ॥२०॥

चौपाई

रहउँ सदा मैँ भक्त अधीना द्रवउँ तुरत निरखत जन दीना
योग क्षेम शिरपर मम तासू निर्भय उर भरोस मम जासू

सब तजि शरणागत जे मोरा तोड़ि अहंकृति बन्धन डोरा
हमहिँ ताहि अन्तर कछु नाहीँ अस विश्वास करहु मनमाहीँ
एक रहस्य सुनहु मनलाई अति सनेह वश कहौँ बुझाई
एक रूप हम दुइ तनुधारी शासन अरु पालन अधिकारी
शासन करउँ कर्म अनुगामी पालहिँ तथा इन्दिरा स्वामी
उभय बीच कछु अन्तर नाहीँ गिरहिँ भेदमति रौरव माहीँ

सोरठा

बहुरि एक मम बात, सावधान चित सुनहु सब ।
सकल चराचर तात, परमातम अद्वैत तनु ॥२१॥

चौपाई

वैष्णव शैव आदि मतधारी लरहिँ देवता निन्दा कारी
अधम विमोह अंध अति पापी दैव दग्ध संतत संतापी
अब सुभक्त लक्षण कछु गावौँ अति प्रसन्न मति तुम्हहिँ सुनावौँ
अनासक्त विचरै नहि संगा नहि चंचल चित पाइ प्रसंगा
हानिलाभ दुखसुख नहि जाही उत्तम भक्त जानिये ताही
सकल भूत आतम महँ देखै आतम सकल भूत महँ पेखै
आतम भेद भान नहि जाही उत्तम भक्त जानिये ताही
निज प्रारब्ध भोग संतुष्टा कतउ बिगाड़िय तदपि न रुष्टा
नहि कामनागंध हिय जाही उत्तम भक्त जानिये ताही
प्रभु पद पद्म प्रेम मकरन्दा पिवत जासु मन भ्रमर अनंदा
लागत विरस विषयरस जाही उत्तम भक्त जानिये ताही

जाहि मान अपमान समाना सम निन्दा अरु गुण गण गाना
लौकिक ज्ञान ध्यान नहि जाही उत्तम भक्त जानिये ताही

दोहा

प्रेमबंध आबद्ध पद, जासु हृदय जलजात ।
रहौं सदा अति अचल ह्वै, सो सुभक्त मम तात ॥३१॥
जहँ तहँ पसरी प्रेमकर, डोरी धन जन ओर ।
खींचि बाँटि दृढ़ घन हमहिं, बान्हहिं निज चितचोर ॥३२॥
जानहिं जननी जनक अरु, मित्र बन्धु धन धाम ।
हमहिं एक विद्यादि सब, नहि दूसर ते काम ॥३३॥

चौपाई

उत्तम भक्त सुलक्षण नाना दिग्दर्शन करि कछुक बखाना
बहुरि बखानौं चारि प्रकारा होहिं भक्त गावत श्रुतिसारा
आरत जिज्ञासू विषयेच्छू ज्ञानी भक्तिपदारथ इच्छू
यद्यपि चारिहु अहहिं उदारा तदपि चरम मम प्राण पियारा
दयापात्र आरत जन मोरा जाहि न आन शरण चहुँ ओरा
दीन दयालु हमहिं सब कहई हमहिं दया छाया इव रहई
दीन दुखी लखि ममहिय भाई हिम सम तुरत द्रवित ह्वै जाई
दीन देखि नहि करुणा जासू पाहन अधिक कठिन हिय तासू
चन्द्रकान्त मणि द्रव तत्काला चिन्तामणि करि देत निहाला
कामधेनु पशु जाति प्रसिद्धा करइ समस्त मनोरथ सिद्धा

दोहा

शरणागत आरत निरखि, होय दया नहि जाहि ।
पशुहू ते जड़मति अधिक, नरपशु जानिय ताहि ॥३४॥

चौपाई

शरणागत आरत जन देखी जासु हृदय नहि दया विसेखी
जानिय ताहि पातकी भारी होइ दनुज मानव तनु धारी
सुनहु तात अनुशासन मोरे ताकर संग करिय नहि भोरे
सन्तनकर यह सहज सुभाऊ शरणागत पर करहिँ पसाऊ
पर दुख देखि साधु अकुलावहिँ पर सुख पेखि परम सुख पावहिँ
परहित हेतु यतन बहुभाँती करहिँ साधु सज्जन दिन राती
प्रेरक दयाभाव तहँ जानहु दया धर्मकर कारण मानहु
दया बीज तरु धर्म बखानिय सुख संपति नाना फल मानिय
यद्यपि दया सत्त्वगुण सिद्धा गुण सबही बन्धन परसिद्धा
तदपि अकारण करुणाकारी हमहिँ परम प्रिय कहउँ पुकारी
करुणापात्र मोर जो कोई दुर्गति भाजन कस सो होई
सात्त्विक दया ज्ञान उपजावै ज्ञान निमित्त सत्त्व श्रुति गावै
विष्णु दया प्रेरित अवतारी दयाविवश हम हनिय सुरारी

दोहा

बन्धनता तसु तबहिँ हिय, पर दुख असहन रूप ।
प्रतीकार सामर्थ्य भरि, असहन शमन अनूप ॥३५॥

चौपाई

रसना कहै न मम गुणनामा जानिय भेकी सरिस निकामा
मम गुण श्रवण सुनै नहि जोई मूषक बिल अनुमानिय सोई
लोचन मूरति दरस विहीना मोरपिच्छ सम विषय अधीना
मानस द्रवै न सुनि यश जोई पाथर सरिस बखानिय सोई
कर नहि करै सपर्या मोरी तरुशाखा उपमा तहँ थोरी
मम आलय पद जो नहि जावै मृतक चरण सम विफल कहावै
कनककिरीट सहित शिरओही भार सरिस जो नमत न मोही
साँस लेत भाथी जड़ जैसे भजन हीन जन जीवन तैसे
जननी यौवन कठिन कुठारा जाये अधम वृथा संसारा
शरणागत जे मम पद छाया व्यापै ताहि न मोरी माया
निर्गुण सगुण प्रबल मत दोऊ तहँ लघु बड़ कहि सकै न कोऊ
निर्गुण गति प्रयास दुख रूपा सगुण सुकर निज रुचि अनुरूपा
निर्गुणपथ उपसर्ग अनेका साधन कठिन एक ते एका
यदि उपसर्ग सगुण पथ आवै कृपा दृष्टि मम दूर दुरावै
रूप मनोहर चिन्तन जहँमा श्रवण सुयश जप नाम रटनमा

दोहा

सुनहु तात मन श्रवण दै, पुनि अब मध्यम भक्त ।
तुम्हहिँ सुनाऊँ प्रेमवश, जानि भजन अनुरक्त ॥३६॥
लक्षण संक्षेपहिँ कहउँ, करि दिग्दर्शन मात्र ।
ऊहापोह विचार पटु, जानि श्रवण कर पात्र ॥३७॥

चौपाई

लखि समान जन मैत्री करहीँ असपरधा पावक नहि जरहीँ
लखि बड़ जन मुदिता मन भरहीँ नहि अघ ओघ असूया करहीँ
लखि लघुता करुणारस धारी तजि अभिमान मोह मद कारी
दुर्जन ते नित रहहिँ दुराये मनमहँ वृत्ति उपेक्षा लाये
चारिहु लक्षण देखिय जाही मध्यम भक्त परेखिय ताही
विषम भाव लक्षण महँ आवा ताते मध्यमता यह पावा
प्राकृत अधम भक्त अब भाखौँ प्रेम विवश कछु गोइ न राखौँ
प्रतिमा लिंग पीठ महँ पूजा करहिँ सदा साधन नहि दूजा
श्रद्धा सहित अराधन करहीँ भेद न कछुक हृदय महँ धरहीँ
लिंग और प्रतिमादिक नाना सब कहँ मानहिँ देव समाना
मध्यम प्राकृत भक्त कहावा स्थूल विषय केवल मन लावा

दोहा

कहि अस करुणायतन प्रभु, भक्त प्रकार अनेक ।
मौन गहेउ कृतकृत्य चित, पायउ प्रमथ विवेक ॥३८॥
प्रभु सेवन अनुरत भयउ, प्रमथ वृन्द सुख पाय ।
योगासन आसीन शिव, शुद्ध समाधि लगाय ॥३९॥

छन्द

दक्ष याग विभंग लीला सुनहिँ जे जन गावहीँ ।
पुरमथन पदपद्म अनुरति विजय कीरति पावहीँ ॥

हृदय विषय विराग उपजै भेद भाव दुरावहीँ ।
भक्तिभाव प्रभाव तनुतजि मातु उदर न जावहीँ ॥१२॥

दोहा

बहुरि पुरञ्जन कहत भउ, करि प्रणाम करजोरि ।
दक्षसहित भृगु आदिकर, का गति भई बहोरि ॥४०॥

सोरठा

पुनि पुनि बढ़त पियास, कथा अमियरस पान करि ।
छाड़ि सकल आयास, सुनन चहौँ शंकर सुयश ॥२॥

चौपाई

सुनत वचन गुरु अति हरषाये तन पुलकित जल नयन बहाये
धन्य जनक जननी कुल तासू शंकर कथा श्रवण रुचि जासू
जानहु शंभुकथा अति पावनि महामोह अघओघ नशावनि
कथा सुनत उपजै उर प्रेमू उभयलोक करतल तसु क्षेमू
बिसरहिँ विषय कथा अनुरागी जाय अहं ममता तहँ भागी
दीपशिखा जस थल निर्वाता तथा तासु मन निश्चल ताता
एकतान मन थिर जब होई उपजै तबहिँ सहज सुख सोई
हरष प्रवाह नयन जल बाढ़े गद्गद कण्ठ पुलक तनु गाढ़े
प्रेम पयोधि अगाध अपारा तहाँ मगन मन विश्व बिसारा
लवणखण्ड जिमि जल गलिजाई मानस प्रेम निमग्न बिलाई
मारग योग क्लेश अधिकाई विघ्न अनेक तहाँ दरसाई
जन्म जन्म करि यतन अनेका करतल होय समाधि विवेका

दोहा

योगीजन जो पद लहहिँ, रोकि चित्तकर वृत्ति ।
अनायास सो पद लहहिँ, प्रेमी श्रवणप्रवृत्ति ॥४१॥

चौपाई

सुनत कथा गुण अवगति होई शील सनेह वछलता जोई
अनुपम सुन्दरता मनहरनी प्रबल वीरता अद्भुत करनी
निष्कारण करुणारस नीका गुणगण सकल शिरोमणि टीका
तपत त्रास नित आतप ताके च्यवत चन्द्रिका अधिप कलाके
पञ्चभूत निज निज कृति करई नहि तिलभरि शासन ते टरई
धर्मसेतु कहि श्रुति गुण गावा ताते प्रभु वृषकेतु कहावा
धर्मरूप वृष वाहन धारी सदा धर्म रक्षा व्रतचारी
उत्पति आदि हेतु भगवन्ता वरणत लहिय न गुणगण अन्ता
परम उदार ज्ञान पद दाता इहामुत्र सुख सकल विधाता
सुनिय तासु गुण ध्याविय ताही सेविय दास परम प्रिय जाही
सेवत परा भक्ति उर आवै अजर अमर पद सहजहिँ पावै

दोहा

अजर अमर नहि सुरनिकर, जरा मरण आधीन ।
प्रभु पद पंकज भ्रमर जन, जरा मरण ते हीन ॥४२॥

चौपाई

प्रस्तुत कथा सुनावउँ सोऊ प्रभु पावनगुण रञ्जित जोऊ
सुर अरु विप्रवृन्द अति दीना निरुत्साह मति साहस हीना

छिन्न भिन्न तनु गत अभिमाना शंकर शरण गमन मन आना
निज अपराध बूझि सकुचाहीं पग पाछे मग चलत खिचाहीं
मग बतकही परस्पर करहीं प्रभु गुण सुमिरि मोद मन भरहीं
प्रणत पाल शंकर त्रिपुरारी शरणागत पालन व्रतधारी
त्राहि त्राहि सुनि आरत नादा करिहहिं अवश महेश प्रसादा
आरत अवगुण गनहिं न काऊ करुणा सागर अमित प्रभाऊ

दोहा

रुचिर मनोहर रजत गिरि, नयनन सबहिं निहारि।
सुर मुनि अति प्रमुदित भयउ, सकल गलानि बिसारि ॥४३

छन्द

रजत गिरिवर रुचिर सुषमा सहसमुख नहि कहि सकै।
श्रुति विशारद शारदा मति जासु वर्णन महँ थकै ॥
त्रिपुरहर आवास महिमा निरखि ब्रह्मादिक छकैं।
तहाँ लघुमति विगत अवगति सत्य कवि कछु कस बकै ॥१३

चौपाई

कलि कलुषित रसना मल कर्षी भाषौं तदपि कछुक हिय हर्षी
निरखि शंभुगिरि सुन्दरताई सकुचित चतुरानन चतुराई
वन उपवन सर सरित अनूपा निर्झर रुचिर वापिका कूपा
सफल फूल तरुवर लखि नीका सुरतरु आपुहिं मानत फीका
छायातल तसु शंभु विराजा जासु चरण सेवक सुरराजा

पशु पक्षी जहँ वैर विहीना विचरहिं शंभु प्रेम रसलीना
पंकज बन मधुकर गण गुंजहिं जनु मुनि गावहिं श्रुतिपद पुंजहिं
कूकत कोकिल कूजत मोरा जनु संगीत गान चितचोरा
शीतल मन्द सुगन्ध सुपावन बहत पवन मुनिजन मन भावन
शोषहिं योग जनित श्रमवारी साधहिं साधक कुंभक चारी

दोहा

सरित सरोवर घाट शुचि, रुचिर मनोहर रूप ।
कनक रचित मणि खचित पुनि, रंग विरङ्ग अनूप ॥४४॥
संध्या ललिमा घाट जनु, नील गगन जनु वारि ।
खचित श्वेत मनि नखत गन, कछु उपमा अनुहारि ॥४५॥

चौपाई

कहुँ किन्नर गन गावहिं गाना कहूँ किन्नरी नाचहिं नाना
ध्यान समाधि धरहिं मुनिराजा भक्त बजावहिं कहुँ गलबाजा
आगम निगम विहित प्रभु पूजा करहिं शैवगण गति नहि दूजा
कहुँ षडंग शतरुद्रिय जापा कहुँ पञ्चाक्षर मन्त्र प्रजापा
कबहुँ गरुड़ असवार रमेशा आवि नमहिं पद पद्म महेशा
आवहिं कबहुँ चतुर्मुख देवा करहिं पञ्चमुख पदरज सेवा
देव दनुज अहि आदि घनेरे प्रभु मुख रुख पेखहिं जस चेरे
श्रुति गण धरि मूरति कर जोरे नुति नति करहिं विनय रस बोरे
कबहुँ होय खल दलन विचारा नीति प्रदर्शन विविध प्रकारा
अष्ट सिद्धि नव निधि धरि रूपा बसहिं सदा अनुमति अनुरूपा

दोहा

वेद विरोधी कुटिल मति, अनाचार मतिमन्द ।
सपनहुँ लहहिँ न बसहिँ जहँ, भाल विभूषित चन्द ॥४६॥

चौपाई

घन घमण्ड वट वृक्ष विशाला जहाँ शान्ति अचला सब काला
पल्लव सघन मनोहर छाया प्रविशहिँ जहाँ अकाम अमाया
तहाँ रुचिर वेदिका विराजै लखि रचना विसुकर्मा लाजै
तदुपरि मणिमय मण्डप सोहै ताहि वरनि सक अस कवि को है
पद्मराग मणि कुट्टिम सोहै खंभ मारकत मानस मोहै
इन्द्रनील मणि निर्मित छाता चकित जाहि लखि विश्व विधाता
मुक्तालम्बित रुचिर विताना शीशक रंग विरंगी नाना
चित्र-विचित्र चित्र बहुतेरे निरखि शान्ति रस मगन चितेरे
मण्डप मध्यदेश बघछाला सुखासीन प्रभु दीनदयाला
ज्योतीरूप पञ्चमुख देवा करहिँ वामदेवादिक सेवा
नयन पञ्चदश दश भुज धारी भाल बाल शशि शशिद्युति हारी

दोहा

व्याघ्र चर्म उत्तरीय पट, द्विरद चर्म परिधान ।
नाग यज्ञ उपवीत शुचि, कर तिरशूल कृपान ॥४७॥

सोरठा

अभय कमंडलुवान, अक्ष सूत्र डमरू सहित ।
धरे पिनाक कमान, कर कपाल सित भसित तनु ॥२३॥

मुंडमाल विकराल, लसित उरग कुंडल चपल ।
मिटै दुसह दुखजाल, अस मूरति जसु हिय बसै ॥२४॥

छन्द

शीश सोहत त्रिपथ गामिनि सिंधु कामिनि सुरसरी ।
नृप भगीरथ धवल कीरति धरम मूरति जलभरी ॥
इन्द्रपुर सोपान रूपा पापरूपामय हरी ।
भक्ति मुक्ति विमुक्ति दायिनि महाभवसागर तरी ॥१४॥

चौपाई

त्राहि त्राहि भाषत सुरवृन्दा अति आरत भृगु आदि मुनिन्दा
आगे करि चतुरानन स्वामी सुर मुनि सकल भयउ अनुगामी
जब कैलासपुरी सब आये अति विनीत ह्वै शीश नवाये
पड़ि संकोच भयउ सब दीना हिय अति भय अरु वदन मलीना
कथमपि अचल शिखरपर गयऊ महादेव मण्डप नियरयऊ
भयवश पग आगे नहि पड़ई सुमिरत प्रभु महिमा उत्सहई
त्राहि त्राहि जय जय धुनि करहीँ करत दण्डवत् पुनि पुनि गिरहीँ
निरखि सदाशिव पद सुखराशी मोह मान अभिमान विनाशी
भय विहीन भउ सुर मुनि वृन्दा प्रभु पद पद्म पराग मिलिन्दा
चतुरानन तब सम्मुख भयऊ प्रभु आगत-स्वागत विधि कियऊ
भयउ यथाविधि प्रणति अशीशा क्षेम कुशल पूछे जगदीशा

सोरठा

सुर मुनि निकर निहारि, विधिमुख देखत भयउ प्रभु ।
जय जय वचन उचारि, हाथ जोरि विधि कहत भउ ॥२५॥

पायउ परम गलानि, जस करनी सुर मुनि कियउ ।
शरणागत जन जानि, त्राहि त्राहि करुणायतन ॥२६॥

चौपाई

महापुरुष महिमा बल जानै नहि शरणागत अवगुन मानै
सहज दया अनपायिनि रहई क्षमा सारता भूषण अहई
बड़पन धर्म क्षमा प्रभु होई कुटिल कुचालि क्षुद्र जग जोई
प्रभु मायावश विस्मृत ज्ञाना भोर पड़त सब वेद पुराना
भई हमार नाथ जस करनी समुचित कहिय बूड़ि जल मरनी
चन्द्र इन्द्र सुर पदवी पाई अयश पोटली माथ चढ़ाई
योगी जपी तपी अरु ध्यानी वेदव्रती संन्यासी ज्ञानी
प्रभु माया बाझे सब कोई जब लगि राउर दया न होई

छन्द

जय दीनबन्धु अगाध करुणा सिन्धु उरप्रेरक प्रभो ।
दारुपुतरी सदृश जनता कर्म गुण विनिबद्ध भो ॥
सूत्र कर गहि प्रभु नचावत अहि विभूषण नाथ हे ।
शरण सुर मुनि नाथ आये हाथ जोरि अनाथ हे ॥१५॥
जय अमाय अकाय गिरिशाय अजय अभयसरूप हे ।
सृष्टि पालन प्रलय कारण ब्रह्म हरि हर रूप हे ॥
दोषवश तव सकल सुर मुनि अंगहीन विरूप हे ।
ईश शीश विहीन असि कृत भउ प्रजापति भूप हे ॥१६॥

देव देव नमोस्तुते पुनि देव देव नमोस्तुते।
महादेव विचारि आपुन जन अवनव्रत पशुपते॥
क्षमहु सब अपराध दीन दयालु प्रभु अगतिकगते।
देव द्विज करुणा विवश प्रभु देव दानव कृति हते॥१७॥

योगिजन ध्यावहिँ दिवसनिशि ज्ञानिजन लयलावहीँ।
भगत जन पद प्रेम अमरित पिवहिँ शिवशिव गावहीँ॥
करइ कर्मठ याग बहुविधि काम अभिमत पावहीँ।
सकल साधन हीन सुर मुनि त्राहि त्राहि सुनावहीँ॥१८॥

आदि अन्त विहीन नाथहिँ सकल कारण श्रुति कहै।
नाथ रुचि अनुरूप संसृति सरित व्यवहृति जल बहै॥
प्रभुहि कर्ता सकल कृतिकर प्रभुहि कारयिता अहै।
विविध सुख दुख अयश यश जन द्वंद्व तव परवश लहै॥१९॥

दोहा

गुनहिँ न पामर अवगुनहिँ, महापुरुष जगदीस।
शरणागत आरत निरखि, नाथ तजिय अब खीस॥४८॥

पुनि मुनि गण पगि विनय रस, पद पंकज शिर नाय।
करन लगे अस्तुति अतिहि, जय जय गिरा सुनाय॥४९॥

छन्द

हे नाथ हे पशुपते हर हे पुरारे।
हे भक्तवत्सल विभोऽवगता न पारे॥१

संसार सागर उमेश विमुग्धचित्तान् ।
माया झषी कवलितानभिमान मत्तान् ॥२०॥

कृतोऽपराधस्तव भागनाशनं क्षमस्व तं देव विमोहकारणम् ।
नमो महेशाय शिवाय शंभवे कैलासवासाय नमो विबाहवे ॥
नमोस्तु वेदोदितधर्मसेतवे युगान्तकालीनकरालकेतवे ।
नमोस्तुते देव पिनाकपाणिने नमोस्तुते देव त्रिशूलधारिणे ॥
नमोस्तुते शंकर सर्पमालिने पुनः पुनस्तेऽस्तु नमः कपालिने ।
त्वत्तो महत्तां मुनयोऽभिलेभिरे महत्त्वमत्तानमतिं प्रपेदिरे ॥
महत्त्वमीशानमनो वचोऽतिगं न वर्णनीयं तव विश्वयोनिगं ।
अवस्तुभूतंसचराचरंजगत्विभातिशक्त्यापरयासदप्यसत्॥

नमामहे कामद कामनाशनं ।
नमामहे मानद माननाशनं ॥२५॥
नमामहे राम मनोऽभिराम हे ।
भवन्तमानन्दमधाम नाम हे ॥२६॥

दोहा

पुनि सुरपति अति संकुचित, त्रासग्रसित अति दीन ।
पुनि पुनि प्रणमत करत नुति, विनय भाव लवलीन ॥५०॥

छन्द

जय शंकर शर्व दयाम्बुनिधे कृतदीन जनार्तिविनाशविधे ।
प्रणमामि पदाम्बुजमीश्वरते कुरुते करुणा मति यत्प्रणते ॥

भवसि स्वयमेव हि यज्ञतनुर्भवसी स्वयमेव फलत्वजनुः ।
भवसि स्वयमीश तदिज्यसुरा भवतैव नियोजनमस्य पुरा ॥
विहितं यदकृत्यमनंत मया तदवेहि शिशोरनभिज्ञतया ।
क्षमयासमलंकृत भूतपते कृपया परिपालय पूतमते ॥
तव संततिरस्ति न किं सुरता बहु दुर्गतिमध्यगताऽमरता ।
हर संस्मर स्वस्य सदा चरणं विगुणं परिहृत्य गुणग्रहणं ॥

दोहा

करन लगे अस्तुति बहुरि, अपर देव समुदाय ।
अधोवदन लज्जा विवश, कहि कहि होहु सहाय ॥५१॥
हौँ शरणागत हम सबहि, आरति हरण महेश ।
क्षमा सिन्धु करुणायतन, काटिय सकल कलेश ॥५२॥

छन्द

क्षमापयामहे प्रभुं नमामहे नमामहे ।
प्रपाहि दुर्गतिं गतान् सुतानिमान कामहे ॥३१॥
त्वदीय वैभवं परं न बुद्धयतेऽत्र पामरैः ।
कृतोऽपराध ईश ते प्रभो विमोहिताऽमरैः ॥३२॥
त्वमेव कार्यमीश्वरोऽस्यऽशेष कारणं तथा ।
कथं कृतागसं प्रतिप्रकोप एष ते वृथा ॥३३॥

सोरठा

आरत सुरमुनि वृन्द, लखि शंकर करुणायतन ।
भाल विभूषित चन्द, ह्वै प्रसन्न भाषत भयेउ ॥२७॥

जानहु मोहि प्रसन्न, माँगहु वर सुर मुनि निकर ।
जे मम शरणापन्न, नहि अदेय ताकहँ कछु ॥२८॥

चौपाई

पुनि अस कर्म करहु जनि कोई नहि कृत कर्म विफल जग होई
जीव मात्र द्रोही दुख लहई हरि हर ब्रह्म-द्रोह का करई
पाप किये दुख पावहिँ लोका पुण्य किये सुख ज्ञान विशोका
प्रभु प्रसन्न लखि सुर मुनि वृन्दा पुलकावलि तनु परम अनन्दा
देखहिँ प्रभुमुख अनिमिष नयना प्रेम विवश मुख आव न वयना
तब चतुरानन आयउ आगे जोरि युगल कर भाषण लागे
भयउ दक्ष प्रभु मुण्ड विहीना यज्ञ भूमि गत रुंड मलीना
भृगुमुनि मूछ विहीन विखिन्ना करिय दया करि ताहि अखिन्ना
कृपा दृष्टि अवलोकहु ताहू परै जीवि निज यज्ञ निवाहू
भगहिँ सलोचन करिय महेशा रदन दान पूषहिँ अकलेशा
बाहु दान अश्विनियुग दीजिय निर्भय अमर निकर कहँ कीजिय
भयउ अमरगण वचन विहीना सवचन करिय जानि अति हीना
जब जब विपति लहहिँ सुर विप्रा प्रभु कृपया सुख पावहिँ क्षिप्रा

सोरठा

सुनि ब्रह्मादिक वैन, कहत भयउ प्रभु त्रिपुर हर ।
दया नीर भरि नैन, करुणा वरुणालय अलय ॥२९॥
सब माया अभिभूत, जीव स्ववश नहि कराहिँ कछु ।
नहि अनुचित करतूत, सुर मुनिकर मन महँ धरउँ ॥३०॥

दण्डनीय जन दण्ड, उचित जानि दण्डित कियउँ ।
लक्ष कोटि ब्रह्मण्ड, ईशान नियमन हाथ मम ॥३१॥

चौपाई

शीश रहित यह दक्ष प्रजेशा अजमुख होय विहीन कलेशा
अंग विहीन सकल मुनि देवा लहैं अंग निज पुनि जस जेवा
होय अमरगण वचन समेता ह्वै निर्भय बसु अपुन निकेता
लहैं मूँछ निज भृगु मुनि राया होय अदंभ अदर्प अमाया
सुनि प्रभु वचन सकल हरखाने साधु साधु कहि सुयश बखाने
शंकर सहित सकल सुर वृन्दा गये यज्ञ थल परम अनन्दा
दक्ष कलेवर अजमुख दियऊ तुरत दक्ष उठि बैठत भयऊ
सती सुता सुमिरत अकुलाने विह्वल मन तन सुधि बिसराने
कथमपि करि विचार धरि धीरा भाषण लगे नयन भरि नीरा

छन्द

जय जय जगदीशा रजत गिरीशा सब सुखराशीअविनासी।
सेवक गति दाता भर्ता कर्ता संहर्ता काशीवासी ॥
दियउ जु दण्डा जानि उदण्डा भउ अति हितकर वरदाना ।
मद मोह नशाना भयउँ अमाना राउर महिमा पहिचाना ॥
अगणित ब्रह्मण्डा ब्रह्म अखण्डा रोम रोम प्रभुकर डोलै ।
आरतहितकारी हर संसारी बन्धन को प्रभु बिनु खोलै ॥
देवी जगदम्बा निगम कदम्बा जासु पार नहि कहि पावै ।
जाता मम तनया प्रभु तव अजया माया काहि न भरमावै ॥

करु अब दाया हरु निज माया राखिय पदपंकज छाया।
प्रभु अपनाइय किंकर जानिय जाउँ कहाँ अब तजि राया॥
प्रणमामि भजामि जपामि विभो सततं तव पाद सरोजवरम्।
मन एतदकाममकामगते नहि वाञ्छति किंचिदपीह परम्॥
करुणाकर कारण कारण हे परिपाहि शरण्य जघन्य जनम्।
नहि यस्य गतिःक्वचिदस्य गतिर्भवतीह भवानधनस्य धनम्॥

सोरठा

सकल चराचर रूप, उत्पति थिति पालन करण।
नाना रूप अरूप, उरप्रेरक कीजिय कृपा ॥३२॥

दोहा

करि अस्तुति अस विविध विध, दीन दक्ष अकुलाय।
दण्ड सरिस प्रणमत भयउ, आठहु अंग लगाय ॥९३॥
सुनि अस्तुति अघरन हरन, भयउ प्रसन्न महेश।
मधुर वचन भाषत भयउ, विपतिनिशादिवसेश ॥९४॥

चौपाई

जानि प्रसन्न मोहि मनमाना प्रजानाथ माँगहु वरदाना
मोर अनुग्रह ऊपर जाके चारि पदारथ करतल ताके
नहि शंका कुतर्क कछु करहू पाछिल बात न मनमहँ धरहू
आशुतोष हम कहँ जगजानत आगम निगम पुराण बखानत
दक्ष प्रजापति सुनि मृदु वयना भाषत भयउ वारि भरि नयना
प्रभ पद पंकज प्रेम पियासा करौं न चारि पदारथ आसा

अनपायिनी भक्ति प्रभु पावउँ जनमि कर्मवश जहँ जहँ जावउँ
याग भूमि यह पावन कीजै लिंगरूप नित दर्शन दीजै
तीरथ भूमि होय प्रभु एहू महिमा अमित कृपाकरि देहू
ब्रह्मघात आदिक अतिघोरा महापाप श्रुति कह करि सोरा
उपपातक गोहत्या आदी निगम विदित भाषत सनकादी
लखि तीरथ अघओघ नसावै लिंग पूजि पावन गति पावै
वेगहि होय सती अवतारा पूरिय प्रभु अभिलाष हमारा
शोक अनल जारइ दिन राती देवी निरखि जुड़ावउँ छाती
पाणि ग्रहण कीजै प्रभु तासू सुर मुनि कर विषाद हरु आसू

दोहा

एवमस्तु कहि कहत भउ, शंकर करुणा धाम ।
प्रजानाथ होइहि सकल, परिपूरित मनकाम ॥५५॥
भक्ति मोरि अनपायिनी, तवउर करिहि निवास ।
क्षेत्र परम पावन इहाँ, कटै सकल भवपास ॥५६॥

सोरठा

होइयहि माया नाम, क्षेत्र परम विख्यात यह ।
दक्षेश्वर अभिराम, लिंग विमोचन लिंग मम ॥३३॥

चौपाई

सकृदपि तीरथ दर्शन करिहैं कोटिजन्म अघओघ उवरिहैं
धनि धनि माया क्षेत्र निवासी धरमराज किंकर उपहासी
लिंग महातम अनुपम जानहु नहि मम वचन असंभव मानहु

दक्षेश्वर दर्शक सुखराशी होहिँ तासु अणिमादिक दासी
विदित गिरीश हिमालय नामा तहाँ सती अवतार ललामा
गिरि तनया प्राणेश्वरि मोरी वरिहइ मोहि प्रेमरस बोरी
माया जन्मभूमि यह माया नाम अर्थ अनुगुण मैं गाया
ज्ञान भानु यहँ हृदय विकासै माया दरस अमाया भासै
अर्धमास यहँ शंकर ध्याना करि पावहिँ नर पद निर्वाना
दक्षेश्वर कहँ प्रणमइ जोई नन्दी भृंगी सम सो होई
मन्त्र पंच अक्षर जे जपिहैँ किंवा षट अक्षर जप करिहैँ
लहिहैँ तीन दिवस महँ सिद्धी यथा मनोरथ नाना ऋद्धी
असकहि कियउ अनुग्रह नाथा सुर मुनि निकरहिँ कीन्ह सनाथा
हृष्टपुष्ट सब सुर मुनि भयऊ यज्ञकुंड पूर्णाहुति दयऊ
यज्ञ पुरुषतनु आविर्भावा भयउ कुण्ड ते परम प्रभावा
अस्तुति प्रणति करन सब लागे पुनि वरदान यथा रुचि माँगे
यजमानादिक निज वर पाये हरषित जय जयकार सुनाये
महादेव अन्तर्हित भयऊ निज निज धाम सबहि तब गयऊ
कहत सुनत यह कथा महेशू ह्वै प्रसन्न सब हरहिँ कलेशू
माया नदी कर्मजल वहई अहंकार गोधा जहँ अहई
वृत्ति मानसी चपल तरंगा षट्विकार जहँ विविध विहंगा
शंकर चरित श्रवण रति तरणी करै पार यह भवभय हरणी
उक्ति युक्ति युत वाचक जोई जानिय कर्णधार तहँ सोई
कथा प्रेम अनुकूल बयारा विना परिश्रम लागइ पारा

दोहा

शिष्य पुरञ्जन पुलकतनु, सुनि त्रिपुरारि चरित्र ।
गुरु पद पंकज प्रणम्मि पुनि, भाषे वचन पवित्र ॥५७॥

चौपाई

शिव चरितामृत सुनत न तृप्ती पुनि पुनि बाढ़त श्रवण प्रवृत्ती
पुनि जस भयउ सती अवतारा सुनन चहउँ सो कथा उदारा
दुर्लभ शिष्य मनोरथ जोऊ गुरु प्रसाद बल करतल सोऊ
गौरी शंकर परिणय रूपा सुनन चहउँ प्रभु कथा अनूपा
जस गौरी गिरि तनया भयऊ तप कारण कानन जस गयऊ
तप अति घोर कीन्ह जेहि भाँती तत्पर होइ दिवस अरु राती
शंभु समागम भउ पुनि तासू नाम अपर्णा पावन जासू
प्रासंगिक पुनि चरित अनेका सुनि सुनि उपजइ विमल विवेका

दोहा

शिष्यवचन सुनि कहत भउ, गुरुवर अति अनुकूल ।
कथा श्रवण रुचि जासु हिय, मिटइ अविद्या शूल ॥५८॥
धनि जननी अरु जनक तव, धनि धनि प्रेम प्रवाह ।
कहउँ यथामति त्रिपुर हर, गिरिनन्दिनी विवाह ॥५९॥

चौपाई

प्रासंगिक बहु चरित बखानउँ पाछिल पुण्य उदय अनुमानउँ
हर गुण कथन श्रवण जो करई अनायास भवसागर तरई
श्रवण महातम सुनु मनलाई गावहिं नारदादि मुनिराई

पुण्य विना नहि श्रवण समीहा विना पुण्य नहि कीर्तन ईहा
नवधा भक्ति साधु गण गावहिँ श्रवणहिँ सवते प्रथम सुनावहिँ
वन्दन दासभाव पुनि कहई अष्टम सख्यभाव तहँ अहई
आत्मसमर्पण अन्तिम भक्ती द्वैत भाव जहँ लहइ अशक्ती
कीर्तन आदिक आठ प्रकारा उक्त भक्ति कर श्रवण अधारा
अंकुर होइ बीज ते जैसे कीर्तन आदि श्रवण ते तैसे
प्रथम बीज अन्तिम फल जानिय तरुशाखादिक मध्यम मानिय
श्रवण कृतारथ श्रोता वक्ता और अपर अनुमोदन कर्ता
अश्रु पुलक अरु गद्गद वानी सात्त्विक भाव कहहिँ मुनि ज्ञानी
निकसत पातक अश्रु प्रवाहा परमानन्द प्रेम अवगाहा
प्रेमासव जव पियहिँ अघाई मन इन्द्रिय पावै शिथिलाई
गद्गद गल प्रेमीजन कैसे आगल पान सुरापी जैसे
संकुल पुलक प्रेम संदोहा पनस फलोपरि कंटक सोहा
योगज सुख जहँ अति कठिनाई सहजहिँ लहहिँ श्रवणकरि भाई
अद्वय सुख जो श्रुति शिर गावा सहजहिँ पावहिँ श्रवण प्रभावा

दोहा

भाषत भउ गुरुवर सुमिरि, शंकर ज्ञान निधान।
गिरिजा परिणय हेतु कृत, तारक हनन विधान ॥९०॥

चौपाई

असुर एक भउ तारक नामा देवविजय जाकर मनकामा
एक समय अस कियउ विचारा तप वल चलत सकल संसारा

तप बल ब्रह्मा वेद बखाना सिरजहिँ जगत् चराचर नाना
तप बल पालहिँ जगत् मुरारी संहारहिँ तप बल त्रिपुरारी
तप बल अमर अमर पद पावा तप महिमा निगमागम गावा
तप बल इन्द्र आदि कहँ जीती रहउँ अशंक यही भल नीती
मधुवन जाइ कियउ तप भारी तार पुत्र तारक त्रिदशारी
वर्षा हिम अरु आतप वाता सहत भयउ तपकरि कसि गाता
हिम अरु शिशिर काल जलशायी पावस अविचल थंडिल थाई
ग्रीषम पंचानल संतापा तपइ मध्य गत कर तहँ जापा
एक पाद गत देह विकारा ऊरध भुज थित गत व्यवहारा
ऊर्ध्व दृष्टि आदित्य सहारा विगत नयन अरु मन संचारा

दोहा

शत वत्सर अस कियउ तप, दुष्कर गत उद्वेग ।
शत वत्सर अंगुष्ठ थित, उत्पथ उठै न डेग ॥६१॥

चौपाई

तरु शाखा अवलम्बन कारी भउ शत बरस अधोमुख धारी
करतल केवल परसत धरनी रहा बरस शत अद्भुत करनी
शत वत्सर भउ वारि अहारा पुनि शत वत्सर पवनाहारा
अति कठोर दुस्सह तप कियऊ निरखि सुरासुर विस्मित भयऊ
तासु भालतल पावक ज्वाला निकसत भई परम विकराला
करन लगी सो सुरपुर दाहा सुर समेत व्याकुल सुर नाहा
सुरगण चकित विकलमति कहहीँ काल अकाल जगत् किमु हरहीँ

सुरपति कारण जानत भयऊ आश्वासन सुरगण कहँ दयऊ
तारक असुर करत तप घोरा तासु तेज यह परम कठोरा
विरचित जासु सकल संसारा सो प्रभु करिहहिं त्राण हमारा
ब्रह्माराधक सुर रिपु एहा करत घोर तप नहि संदेहा
शरणापन्न होहु सब तासू करिहहिं प्रभु सब संकट नासू

दोहा

ब्रह्मलोक सुरगण गयउ, चतुरानन कर पास।
जयजय कहि प्रणमत भयउ, हिय अतिसय संत्रास ॥६२॥

सोरठा

भाषत भउ अति दीन, शरणागत जानिय हमहिँ।
प्रभु तव कृपा अधीन, जीवन धन सुर निकर कर ॥३४॥

छन्द

जय जय चतुरानन तिहुँपुर कारन विकल देवगण शरणअहे।
वैदिक पथ धारण विपति विदारण क्षार अमरपुर होइ रहे॥
अतुलित बल धामा तारक नामा तासु तेज प्रभु सबहिँ दहे।
सुरगण जयकामा तप तन क्षामा तपबल अतुलित तेज लहे॥

सोरठा

अमर सहित सुरराज, होहु धीर धैरज धरहु।
करहु वेगि सो काज, किये जाहि संकट कटै ॥३५॥

चौपाई

अस कहि भाषत भयउ विधाता उभयपक्ष असमंजस ताता
किंकर्तव्य भाव अति गूढ़ा निर्णय करत होत मन मूढ़ा

यदि वरदान लहै शठ एहू करै उपद्रव नहि संदेहू
पुनि अन्यथा तेज तप तासू दगध करइ अमरावति आसू
उभय प्रकार पराभव भारी तदपि नीति अस सुनु असुरारी
दुख आगत आगन्तुक जहँमा प्रथम निवारण समुचित तहँमा
आगन्तुक आगत जब होई यथाशक्ति वारिय पुनि सोई
यदि केवल आगन्तुक एका पूरव ही समुचित तसु छेका
सुख दुख अवनति उन्नति आदी कारक सबकर दैव अनादी
पौरुष तदपि करिय अस नीती यथाशक्ति-मति आलस जीती
देइहौं ताहि जाइ वरदाना प्रतीकार संप्रति नहि आना
शिर पर अपर पराभव देखी करिहौं समुचित यतन विसेखी
मत अभिमत सबकर यह भयऊ तारक निकट विधाता गयऊ
भाषत भयउ ताहि चतुरानन कियउ महातप तुम अति दारुन
जानि प्रसन्न मोहि वर माँगहु लहि वरदान परिश्रम त्यागहु
नहि अदेय तुअ प्रति कछु मोही यद्यपि असुर जाति सुर द्रोही

सोरठा

तप अधीन हम तात, जाति पाँति अनुरोध तजि ।
तदपि सिद्ध यह बात, श्रद्धा कारण सिद्धि कर ॥३६॥
निज निज वर्णाश्रम विहित, तप अधिकार प्रसिद्ध ।
काल देश अनुगत तहाँ, करइ तपस्या सिद्ध ॥३७॥

चौपाई

सुनि अस ब्रह्म वचन त्रिदशारी भाषत भयउ महाव्रतधारी

प्रभु महिमा अलभ्य कछु नाहीं   वर युग अभिमत मानस माहीं
जीव जन्तु प्रभु निर्मित जेते   होहिं न्यून बल हमसे तेते
शिव औरस सुत सेनप जोई   मो कहँ जीति सकइ जग सोई
तासु शस्त्र हत तजउँ पराना   और न जीति सकइ जग आना
एवमस्तु विधि भाषत भयऊ   तदनु हंस चढ़ि निज पुर गयऊ
प्रशमित भयउ तपोभव दाहा   सामर स्वर्ग गयउ सुर नाहा
तप तजि तारक असुर कराला   शोणितपुर पहुँचा तत्काला
दैत्य निकर इत उत ते आये   तारक असुरहिं शीश नवाये
अंगीकार करहु अब स्वामी   असुर राज्य हम सब अनुगामी
असुर निकर अस भाषत भयऊ   अंगीकृत तारक तब कियऊ
कियउ तासु सब मिलि अभिषेका   तिहु पुर शासक तारक एका
अस दितिजाधम गण उद्घोषा   कियउ दाप दर्पित निरघोषा
चारिहु वरण पराभव दियऊ   साधु सन्त सन्तापित कियऊ
निगमागम मारग प्रतिरोधा   करत भयउ तारक दुर्बोधा
काल कठिन गति लखु न अभागा   हठि शठ धरम करम सिर लागा

दोहा

अन्धकार तारक असुर, श्रुतिपथ गयउ भुलाय।
चलत भयउ पाखंड पथ, रजनीचर समुदाय ॥६३॥

चौपाई

सदाचार पथ पाकरि नाना   काटे निशिचर परशु समाना
ज्ञान भक्ति नव रतन समाना   लूटे दनुज लुटेरा नाना

वर्णाश्रम कर्तव्य विशेषा पथिक वास थल नियत अशेषा
आततायि दिति दनुज हजारा महा हुताशन अत्याचारा
लहि संयोग भयउ जरि छारा प्रचलित घर घर पशु आचारा
सदाचार शीतल जल कूपा ग्रीषम रवि रजनीचर भूपा
सोखत भयउ प्रचंड प्रतापा सुचिर अवर्षण बहुविध पापा

सोरठा

भय व्याकुल सब लोक, अति आरत नहि शरण कछु।
तारक असुर अशोक, राज अकंटक करत भउ ॥३८

दोहा

चौदह भुवन समृद्धि जत, निधि अरु सिद्धि अनेक।
सेवहिँ सब तारक असुर, तप महिमा उद्रेक ॥६४॥

चौपाई

स्वाहा स्वधा वषट् भउ लुप्ता हन्तकार भउ सब थल गुप्ता
देव पितर नहि पावहिँ भागा लहहिँ अनादर अतिथि अभागा
मनुज देव किन्नर गंधर्वा गुह्यक आदि जहाँ लौँ सर्वा
पीड़ित कियउ सबहिँ अभिमानी अति अपमानित ज्ञानी ध्यानी
लोकपाल इन्द्रादिक डरहीँ निज निज रत्न समर्पित करहीँ
उच्चैःश्रवा अमरपति दियऊ दण्डरत्न यम अर्पित कियऊ
दियउ गदा निज गुह्यक नाथा त्रास हताश जोरि युग हाथा
वरुण लोकपति तजि अभिमाना अर्पित कियउ शुद्ध हय नाना
रत्न अनेक पयोदधि दीन्हा भाँति अनेक विनय बहु कीन्हा

रत्न नाम जहँ त्रिभुवन माहीँ हरे तुरत गति रोकि न जाहीँ
तपइ सूर्य इच्छा अनुकूला होइ न चन्द्र कबहुँ प्रतिकूला
शीतल मन्द सुगन्धित वाता बहइ यथारुचि सकुचित गाता
जहँ तहँ हव्य कव्य आदाना करत भयउ गरवी मनमाना
ऋषिगण तसु आज्ञा अनुसरहीँ समुचित अनुचित हामी भरहीँ
होय अवर्षण बारहि बारा रोग पराभव विविध प्रकारा
दिन दिन क्षीण भयउ सब प्रानी जहँ तहँ दीख धर्मकर हानी
अति दरिद्रता जहँ तहँ छाई दीन दुखी गति वरणि न जाई
उदर अन्न नहि वसन शरीरा अति व्याकुल सब भयउ अधीरा
बिनु वेतन करवावहिँ काजा निर्दय हृदय सचिव अरु राजा
प्रजादीनता सुनत न कोई थाकय नर नारी सब रोई
पावहिँ दण्ड निवेदन कर्ता निर्भय हिय धन सम्पति हर्ता

दोहा

व्यापि रहे जहँ तहँ सतत, अत्याचार प्रचार ।
चोर कुकरमी सुख लहहिँ, सज्जन शिर दुखभार ॥६५॥
पर निन्दक वञ्चक पिशुन, कपटीके सत्कार ।
सरलभाव मृदुभाव जन, लह शशि अधीकार ॥६६॥

चौपाई

फरै न तरु नहि उपज अनाजा दिवि भुवि नभ उत्पात समाजा
कृतयुग कलियुग सम व्यवहारा नृपति कलुष कलुषित संसारा

छन्द

अति कुरीति अनीति जनता सकल अवनतिमय भई ।
हाय हाय पुकारि रोवत कहत दैवहिँ निरदई ॥
भयउ इन्द्र अनिन्द्र आरतिमती अमरावति पुरी ।
भयउ नन्दनवन अनन्दन करहिँ क्रन्दन जहँ सुरी ॥

चौपाई

इन्द्रादिक सुर गुरु पहँ गयऊ विपति उपस्थित भाषत भयऊ
गुरू बृहस्पति परम सुजाना कहन लगे तब वचन प्रमाना
पावि विपति जो धैरज धरहीँ सम्पति पाइ न गौरव करहीँ
सुखदुख उभय कर्म फल जानहिँ विना भोग क्षय तासु न मानहिँ
करहिँ यथामति नाना यतना नहि उत्साह घटावहिँ अपना
सोइ जगत सतपुरुष कहावहिँ काल पावि अभिमत सुख पावहिँ
सुमिरहु हर पद पंकज रेनू अधरीकृत सुरतरु सुरधेनू
शिवशिव सुमिरत चिपतिविनाशा किमु वक्तव्य गये तसु पासा
पुण्य पुञ्ज समुदित अति जाके शिव शिव भाषत आनन ताके

दोहा

करौँ अगम शिव नामकर, वर्णन कछुक अनूप ।
उड़हिँ विहंगम गगन जस, आपुन गति अनुरूप ॥६७॥

चौपाई

शिव इति वरण युगल शुभवाची अरु सुखमय शाखा श्रुति साँची
शिवपद वाच्य शंभु कैलासी वाचक शिवपद घट घट वासी

अधिष्ठान अद्वय शिव रूपा नाना रूप अरूप विरूपा
प्रथम वर्ण कहि तालु कपाटा खूलत अघ निकसत तिहि बाटा
वेति सुवर्ण रुद्ध दरवाजा लहत प्रवेश न पाप समाजा
जब हल युगल अदर्शन लहई इ अ इति स्वर युग तब रहई
यण परिणत अन्तस्थ यकारा प्राण रूप जीवन आधारा
प्राणहुँ के पुनि प्राण सरूपा श्रुतिपद लक्षित लक्ष्य अरूपा
तन्मयता साधक जब पावा छूटत पञ्चकोश भय भावा

दोहा

नाम महातम अगम अति, कहि न सकहिँ सनकादि ।
तहाँ इतर कवि निकर कर, वर्णन साहस वादि ।।६८

चौपाई

सुर तरुवर सुर सुरभी नाना देहिँ विषय सुख स्वप्न समाना
सुख नीरधि निरवधि रस मूली श्रीशंकर पद पंकज धूली
काल करम गति टरै न टारे दूर होइ यदि ईश उबारे
काल टारि उपमन्यु जियावा सुत मृकण्ड चिरजीवि बनावा
ब्रह्मलोक सब सुर मिलि जाहू संकट सकल सुनावहु ताहू
ब्रह्मा सहित भूतपति चरणा गहहु जाइ दूसर नहि शरणा
होइहि अवश क्लेश निर्मूला होइहहिँ शूलपाणि अनुकूला

दोहा

इन्द्रादिक गुरु वचन सुनि, गुनि पूरन मन काम ।
जात भयउ सब सुमिरि हर, चतुरानन कर धाम ।।६९।।

चौपाई

सुर मुनि गयउ ब्रह्मकर धामा साधि योग जहँ लह विश्रामा
जहँ गत काम उपासक वृन्दा वसहिं देव पद पदुम मिलिन्दा
संतत परमानन्द प्रवाहा करहिं प्रजेश आदि अवगाहा
दिव्य भोग जहँ अनुपम नाना नर्तन रुचिर मधुर सुर गाना
सुमन सुगन्ध अमियरस आदी पावि कृती नहि बनहिं प्रमादी
जहाँ षडङ्ग वेद तनुधारी विधिसम्मुख थित जयजय कारी
सिद्धि रूपधरि अस्तुति करहीं चतुरानन पद रज शिर धरहीं
सुरमुनि विधि पद वन्दन कियऊ नाम धाम निज परिचय दियऊ
आशिर्वाद सवहिं विधि दीन्हा कुशल प्रश्न पुनि सादर कीन्हा

दोहा

बहुरि पितामह सदय हिय, कहत भयउ कहु तात ।
कवन हेतु आरत सबहि, मुख मलीन कृश गात ॥७०॥
जोरि युगल कर अमरपति, सहस नयन भरि नीर ।
अति विनीत ह्वै कहत भउ, आरत वचन अधीर ॥७१॥

चौपाई

प्रभु सर्वज्ञ चराचर साखी आगम निगम जासु यश भाखी
हस्तामलक सरिस जग एहू जानिय नाथ न कछु सन्देहू
तदपि नाथ अनुशासन पाई विपति विशेष कहौं मैं गाई
तारक निशिचर अत्याचारा पीड़ित भयउ सकल संसारा
विप्र-धेनु-सुर-शिर सो लागा परम पराभव दैत अभागा

बाढ़े परपीड़क अभिमानी धर्म धुरंधर लहे गलानी
यदि न कृपा करि देखब आजू अवश नशहिँ सुर विप्र समाजू
नाथ प्रजा पालन व्रतधारी नाशिय असुर प्रजा संहारी
जब जब सुरमुनि संकट पाये अनुकम्पा निज प्रभु दरसाये
अशरण शरण दीन दुखहारी शरणागत सुर विप्र दुखारी

दोहा

सुर मुनिकर आरत वचन, सुनि चतुरानन देव ।
कहे वचन तारक असुर, नाशन हेतु यदेव ॥७२॥
मोर हाथ वध तासु नहि, संभव सुनहु सुरेश ।
लहि हमार वर अति बली, सब कहँ देत कलेश ॥७३॥

चौपाई

शंकर औरस सुत जो होई पावै सेनापति पद सोई
तासु शस्त्र आहत शठ मरई अस वरदान कहहु कस टरई
सती विरह हर भयउ विरागी योग निमग्न भोग सब त्यागी
जब लगि शंकर तनय न होई तब लगि अजय अभय शठ सोई
सूझत मोहि एक यह युक्ती जाते होइ पराभव मुक्ती
शिखर हिमाचल हर तप करहीँ शम दमादि साधन अनुसरहीँ
गिरिजा युगल सखी लै संगा सेवहिँ शंकर प्रेम अभंगा
बार बार पद वन्दन करहीँ परिचर्या बहुविध अनुसरहीँ
शिक्षा जस नारद मुनि दीन्हा जस अनुशासन गिरिवर कीन्हा
अर्चनादि कृति तस बहु भाँती करहिँ चरण सुमिरहिँ दिन राती

सोरठा

त्यागि देह कर नेह, तप अद्‍भुत गिरिजा करहिँ ।
मानहु भई विदेह, अन्न पान वसनादि तजि ॥३९॥
विदित शाश्वती शक्ति, गिरिकन्या पुर मथन कर ।
लहि अनुकूल प्रशक्ति, भासत संभव सुत जनम ॥४०॥

चौपाई

गौरी उदर वीर्य आधाना यदि करिहहिँ शंकर भगवाना
सो सुत होय अमर-सेनानी हति रिपु करहिँ सुखी सब प्रानी
गिरि तनया बिनु शंकर रेता धारि न सकहिँ नारि जग जेता
सुनि सुर मुनि चतुरानन वयना सोचि अपर कृति अनिमिषनयना
करि विधि वन्दन सुरपुर गयऊ दूत काम पहँ भेजत भयऊ
दूतहिँ भाषत भउ सुरराजा पंचबाण कर गत सब काजा
वेगि मित्र लावहु तुम ताहू चढ़ि विमान मारुत गति जाहू
आयउ पंचबाण अति वीरा कुसुम शरासन रुचिर शरीरा
पलमहँ सकल लोक जय कारी जासु वसन्तादिक अनुचारी
रति रतिपति आयउ दुहु प्राणी बरनि न जाहि सकै कवि वाणी
सहस विलोचन अनुमति कारी जिमि शोभा सौभग तनुधारी

दोहा

करि प्रणाम भाषत भयउ, रति रतिपति करजोरि ।
कहिय देव कारण कवन, भई बुलाहट मोरि ॥७४॥

नहि अजेय चौदह भुवन, चेतन जन प्रभु मोर।
शर आहत कहु काहि करि, करौं हस्तगत तोर ॥७५॥

चौपाई

सुनत वचन सुरपति हरषाये है सहास पुनि वचन सुनाये
अस्त्र अमोघ मोर तुम अहहू वज्राधिक कीरति तुम लहहू
वज्रहु कर गति होइ न जहँमा कारज संसाधक तुम तहँमा
तुम अरु वज्र अस्त्र मम दोऊ करि अमोघ सुर विरचे जोऊ
हिंसा हेतु वज्र विख्याता तुम सुखमय त्रिभुवन सुखदाता
मोहि कलेश उपस्थित भारी तुम बिनु अपर सकै नहि टारी
पाय अकाल परेखिय दाता आपतिकाल मित्रता नाता
शूर परेखिय संगर धामा धन बल विरह परेखिय वामा
लोचन ओट परेखिय नेहू वाणी सत्य प्राण संदेहू
विपति पयोदधि देव समाजू बूड़त मित्र उबारहु आजू

दोहा

आजु परीक्षा मित्र तव, परम विपत्ति प्रवाह।
बहत जात सुर मुनि निकर, जहँ तहँ अगम अगाह ॥७६॥
विप्र धेनु सुर साधु जन, सबहि पराभव ग्रस्त।
होय विकल जाचहिँ तुमहिँ, सकल प्रकार निरस्त ॥७७॥

चौपाई

सुरपति वचन सुनत कंदर्पा भउ भाषत करि अतिशय दर्पा
हम किंकर आज्ञा अनुगामी तहाँ कथन अस उचित न स्वामी

कहिय न कस प्रभु कारज काहा यथा शक्ति मति करब निबाहा
अथवा कौन जीव जग जाया मम शर जाहि न अन्ध बनाया
विधि हरि हर अपि चंचल करिहौं कहौं सत्य नहि तिलभरि डरिहौं
गुरू निरञ्जन परम सुबुद्धी कहे शिष्यकर करि समबुद्धी
अभिमानी जग लघु करि लखई मनमानी वानी बहु बकई
संभव और असंभव दोऊ लखै मन्दमति सम करि सोऊ
जे पाथर पर पटकु कपाला फुटय कपाल तासु तत्काला
पर भावीवश सूझि न परई ज्ञानी अपि अज्ञानी बनई
अग्रिम कथा सुनहु अब ताता जाहि सुनत अघ ओघ नसाता
सुनत वचन सुरपति हरखाने साधु साधु कहि सुयश बखाने

दोहा

तब सुरपति भाषत भयउ, सकल पराभव हेतु ।
समाचार सब सुनहु तुम, कहउँ मित्र झषकेतु ॥७८॥

चौपाई

तारक असुर अमर अपकारी चतुरानन तप करि अति भारी
लहि वरदान महा बलवाना जहँ तहँ करत उपद्रव नाना
सुर मुनि आदि परम दुख पाये भय व्याकुल कहँ कहँ नहि धाये
प्रतीकार सूझत कछु नाहीं अजय अभय शठ त्रिभुवन माहीं
अस्त्र शस्त्र कछु करै न काजा सकल अवध्य निशाचर राजा
हर औरस सुत कर सो मरई वर प्रदान अस सो कस टरई
सुर जीवन रजनीचर मरना तव अधीन दूसर नहि शरना

तारक त्रिभुवन पीड़न हेतू पीड़क तासु होहु झषकेतू
हिम गिरि ऊपर हर तप करहीँ गिरिजा सेवन विधि अनुसरहीँ
सखी सहित पितु आज्ञा पाई गिरि नन्दिनी रहहिँ तहँ जाई
सायम्प्रात मध्यदिन माहीँ करहिँ अराधन आलस नाहीँ
यदि गिरिजा प्रति शंकर केरी अभिरुचि होइ सखा तव प्रेरी
कारज सकल सिद्ध तव जानहु तारक असुर मरण अनुमानहु
अस संयोग चतुर्दश लोका पावहिँ त्राण तजहिँ सब शोका
करिहहिँ सब तव कीरति गाना सुर मुनि नर उरगादिक नाना

सोरठा

इन्द्र वचन सुनि काम, बोले विकसित कमल मुख ।
करिहौँ हरहिँ सकाम, यदपि समाहित मति अचल ॥४१॥
जौँ न करौँ अस आज, नहि दरसावउँ मुख बहुरि ।
अस प्रणकरि ऋतुराज, सहित सरति प्रस्थित भयउ ॥४२॥

दोहा

तब शंकर आश्रम निकट, पहुँचे सबही जाय ।
निज महिमा विस्तार तहँ, कियउ वसन्त अघाय ॥७९॥

छन्द

काम उद्दीपक जगत जत भाव तत प्रगटित भये ।
भउ प्रफुल्लित मल्लिकादिक सुरभि शुचि जहँ तहँ छये ॥
वकुल किंशुक तिलक फूले अरु अशोकादिक खिले ।
अलि अवलि गुंजन मनोहर करत सुमनाली मिले ॥

चौपाई

मञ्जरिका सहकार सुहाई तहँ परभृत पञ्चम सुर गाई
रुचिर अमियकर जगमग राती मानिनि प्रति दूती इव भाती
चहुँ दिशि रुचिर चन्द्रिका सोहै कविजन निरखत उपमा जोहै
भासत रुचिर सरोवर शोभा उपजावत विरही मन क्षोभा
हिमकर कर तहँ जल अनुरूपा उडुगण कोक कुसुम शुभरूपा
शशि गुरु शुक्र हंस अनुहारी उपहित किरण मकर अनुकारी
मसिमा गगन कहिय जम्बाला रुचिर घाट जिमि निधुवन काला
युवती युवक करहिँ असनाना वेग मनोभव पंक समाना
आह्लादहिँ गोधा अनुमानिय दूती तहँ नागिनि सम जानिय
मदन मित्र मारुत चहुँ ओरा वहत सुखद मुनि मानस चोरा
लता विटप आलिंगन करहीँ मृगी कामवश मृग अनुसरहीँ
भयउ चराचर काम अधीना योगी यती तपी भउ दीना
तदपि न शंभु तपस्या त्यागा जाके अनुचर ज्ञान विरागा
निरखि अनवसर मधु परभावा शंकर हृदय क्षोभ नहि आवा

दोहा

शंभु वामदिशि काम तब, रति समेत है ठाढ़ ।
पंचबाण फेंकत भयउ, खैंचि कुसुम धनु गाढ़ ।।८०।।

चौपाई

समय ताहि गिरिराज दुलारी सुमन सुभूषण अति सुकुमारी
सखी समेत शंभु ढिग आई पूजन हेतु पुहुप बहु लाई

सुन्दरता तसु वरणि न जाई अङ्ग अङ्ग सुषमा अधिकाई
शर संधान गौरि आगमना एक समय भउ अद्भुत घटना
गिरिजा शंकर वन्दन कियऊ पूजन करि संमुख थित भयऊ
तहँ अन्योन्य निरीक्षण भयऊ प्रेम उभय उर अतुलित छयऊ
भई अचल तहँ अचलकुमारी बिसरी वसन देह सुधि सारी
प्रभुपद निरखत जगत भुलानी परा प्रेम पाथोधि समानी
अद्वय आतम भाव लखाना अपगत कारज कारण नाना
भेद निरास परम सुखसारा अवगत ब्रह्म अखण्डाकारा
गिरिजहिँ आदिशक्ति श्रुतिगावा तहाँ न यह कछु अचरज भावा
मायानाथ निरखि निज माया मायामय विनोद दरसाया
लखि हर गिरिजा सुन्दरताई निज मुख तासु प्रशंसा गाई
किमु आनन किमु गगनविहारी रजनीमणि मनमथ संचारी
किमु लोचन किमु पंकज एहू समता निरखि होत संदेहू
किमु भृकुटी किमु मनसिज चापा विदित जासु त्रिभुवन जयदापा
रद आवरण अधर यह किंवा अतिशय अरुण पक्कफल बिम्बा
किमु नासिका परम अभिरामा किमु शुकशावक चञ्चु ललामा
किमु यह भाषण किमु पिकगाना श्रवण मधुर पञ्चमसुर ताना
कृश कटि अस्ति नास्ति अवगाहा करत यहाँ उपमा गति काहा

दोहा

नखशिख छवि नहिं कहि सके, महादेव जगदीश ।
हारे उपमा जोहि जग, अचरज कम्पित शीश ॥८१॥

चौपाई

भाषत भउ शंकर अविनाशी सुख नीरधि चर अचर निवासी
निरुपमेय थल उपमा कैसी परम अधम सुख तुलना जैसी
परम सहज सुख स्वयम्प्रकाशा निरवधिनिरुपम विगलित आशा
अधम विषय सुख दुख परिपाका क्षय आदिक दूषित अपि नाका
नहि जानिय कछु कारण काहा होय हृदय सर राग प्रवाहा
गिरि तनया छवि निरखि बहोरी तजत निमेष नयन युग मोरी
गति लखि मत्त मतंगहु लाजै लखि दुति चम्पक कानन भाजै
भुज वल्ली अरु जंघा कदली लागत कहत भारती कजली
ग्रीषम ताप लता अति दीना रस विहीन बनि पुनि तनु क्षीणा
दल विदलित कदली गत सारा गहत वसन मल करि तन छारा
जत सुन्दरता त्रिभुवन माहीँ लखि गिरिजा ते सबहि लजाहीँ
अस कहि देव तपस्या त्यागे अञ्चल ग्रहण करन तसु लागे
सहज शील लज्जा गुण अयना वस्त्रावृत तनु भइ मृगनयना
जानि॰अनवसर गिरिवर तनया अरुचि प्रकाशितकियउ सुहृदया
अहह मोह महिमा अति भारी भाषत भउ पुनि पुनि त्रिपुरारी
योगाचार्य योगपथ चारी कहत मोहि निर्गुण श्रुति चारी
सोउ मोह परवश ह्वै गयऊ कुत्सित पथ पद राखत भयऊ
मोह विवश आपुन सुखरूपा देही बिसरि गिरहिँ भवकूपा
मोह बीज अंकुर यह देहा कर्म वारि तहँ नहि सन्देहा
व्यक्ताव्यक्त वासना नाना मोह समाश्रय भूमि समाना

कर्षणादि कृति नाना रूपा विविध विषय उपभोग सरूपा
फल कटु नाना बन्धन रूपा विरल मधुरफल मुक्ति सरूपा

दोहा

अहंकार कर्षक सरिस, भूमि वासनासक्त।
छूटत खेती राग यह, जब जन होय विरक्त ॥८२॥

चौपाई

यद्यपि विधि निषेध नहि मोहू तदपि न तजौं धर्मपथ ओहू
वेद विहित अनुशासन कारी सो यदि बनै धर्म संहारी
वर्ण धर्म आश्रम आचारा लुप्त होय बाढ़य व्यभिचारा
यदि ईश्वर है करै अधर्मा प्रजानाश कारण सो कर्मा
कारण अवश होय इहँ काहू जाते भयउ मोह परवाहू
अस कहि हर निरखे चहुँ ओरा भउ मनसिज मन भय नहि थोरा
मकरकेतु कर शर धनु धारी वाम भाग थित लखे पुरारी
प्रभु कोपानल अति सन्तापी धधकि उठे तब नखशिख व्यापी
मोह निमित्त काम करतूती जानि गयउ हर विश्वविभूती
भाषत भउ अरुणीकृत नयना रे रे अधम मन्दमति मयना
भय विरहित. विगलित संकोचा करत कुचालि तनिक नहि सोचा
तप आचरत सतायहु मोही कोप अनल आहुति अब होही
विषधर फणा चरण आरोपी बाँचि सकत कहु कबहुँकि कोऽपी
बरत , हुताशन मध्य प्रवेशा देइ न काहि प्राणहर क्लेशा
विप्र धेनु सज्जन अपकारी दुर्जन कबहुँ कि होय सुखारी

मातु पिता गुरुजन प्रतिकूला का नहि लहहिँ पराभव शूला
जस तानी भरनी तस होई निज करनी भोगत सब कोई
शीतल सूरज उगै अकाशा दाहक विधु वरु करै प्रकाशा
होय अनृत वरु सुपुरुष बानी वरु उन्नति पावै अभिमानी
जननी हिय निर्दय वरु होई वनिता मन्त्र राखु वरु गोई
नहि सुख लह विधि हरि हर द्रोही कोउ न राखि सकत अब तोही
अस कहि अनल नयन विकराला खोले हर कालहु कर काला
सकल चराचर जारत जोई प्रलयकाल नहि बाँचत कोई
ताके लक्ष्य पञ्चशर भयऊ उघरत पलक भसम ह्वै गयऊ
क्षमिय क्षमिय प्रभु अमर पुकारा तब लगि मनसिज भउ जरिछारा
मदन विनाश निरखि सुरलोका व्याकुल हृदय कियउ अतिशोका
गउ अन्यत्र देव त्रिपुरारी पिता भवन गइ अचल कुमारी

दोहा

पतिह्हि मरत रति भइ तुरत, मुरछा पाइ अचेत ।
कुररी इव रोवन लगी, जब पुनि भई सचेत ॥८३॥
करतल सिर उर ताड़ना, करत भई बहु बार ।
पुनि पुनि धरणीतल गिरत, बहत नयन जलधार ॥८४॥

सोरठा

पुनि पुनि करत विलाप, प्राणनाथ गुणगण सुमिरि ।
असह विरह सन्ताप, वचन अगोचर प्रगट भउ ॥४३॥

छन्द

रति दुख अवलोकी भउ बहुशोकी वनवासीतहँ जीवसभी ।
नाचहिँ नहि मोरा करि कल सोरा तरु पल्लव भउ अचल अभी॥
तजि भ्रमण कुरंगा गुंजन भृंगा उपरत मुनि व्रत धरत भये ।
गतिलखिनरनारीपरमदुखारीतनमनसुधिबुधिबिसरिगये ॥

चौपाई

पुनिपुनिरतिअतिकरति विलापा विगलित सुर जिमि करुण अलापा
प्राणनाथ तुउ बिनु दिन राती कल्प समान कटिहि किहि भाँती
अन्धकार भासत चहुँ ओरा आबि प्रबोध करहु प्रभु मोरा
जिमि छाया शरीर सहभावा तिमि पतनी पति योग सुहावा
मुरछा ज्ञान ध्यान हरि लयऊ प्रियतम संग गमन नहि भयऊ
क्षण महँ भयउ भस्म तनु तोरा चिता प्रवेश असंभव मोरा
कहँ मैँ जाउँ करौँ मैँ काहा असह दाहप्रद विरह प्रवाहा
कियउ शचीपति सब उत्पाता विपति समय संमुख नहि त्राता
जल बिनु दशा मीन की जैसी दशा विना पति रति की तैसी
धरणीतल पटकति कर चरणा नोचति कच चाहति निज मरणा
दैवहिँ देवहिँ दोष लगाती पुनि पुनि करतल पीटति छाती
निज प्राचीन कर्म अनुरूपा सुख दुख लहहि जीव भवकूपा
इन्द्रादिक कर नहि अपराधा भावी प्रबल करै को बाधा

दोहा

रति विलाप मन्मथ मरण, निरखि अमर अकुलाय ।
करुणाकर शंकर शरण, सबही पहुँचे धाय ॥८५॥

छन्द

जय जय पुरभंजन मन्मथगंजन सज्जनरंजन भूतपते ।
सुरगणअपराधामनसिजबाधाक्षमियदयानिधिअगतिगते ॥
तारक रिपु त्रासा अमर हतासा विकल जानि करुणा करिये ।
मानस सन्तापा वचन विलापा शरणागत रति दुख हरिये ॥

चौपाई

अस सुरनिकरकरत अति विनती गिरे जाय हर सम्मुख धरती
दण्ड प्रणाम करहिँ बहुबारा त्राहि त्राहि कहि सबहि पुकारा
असहायिनी रती जगदीशा कृपा करिय प्रभु जानि अनीशा
देही सकल मोह अनुगामी हितअनहितमति विरहित स्वामी
जानि अजान दया प्रभु कीजै अभयदान वृन्दारक दीजै
प्रभु इच्छावश अघटित घटना क्षण महँ सुघटित त्रिभुवन रचना
पालिय अनायास संसारा भृकुटि विलास करिय संहारा
करुणाकर करुणा करि हेरिय निदय हृदय ह्वै नहि मुख फेरिय
रति संताप समुद्र अगाहा सोखु घटज इव त्रिभुवन नाहा
अबला पति विरहामय छीना अति आरत शरणागत दीना

दोहा

इन्द्रादिककर वचन सुनि, कहत भयउ त्रिपुरारि ।
भूत अर्थ चिन्ता तजहु, भावी प्रबल विचारि ॥८६॥

चौपाई

अब अन्यथा होय नहि एहू भयउ भसम जरि मन्मथ देहू

सम्प्रति मन्मथ अङ्ग विहीना नाम अनङ्ग अदृष्ट अधीना
देवकि गर्भ कृष्ण अवतारा दुष्ट दलन सज्जन सुख सारा
कृष्ण पुत्र प्रद्युम्न कहाई काम जनम भावी अस भाई
जनमत ही प्रद्युम्न कुमारा शम्बर हरत सुगुप्त प्रकारा
तब लगि शम्बर निशिचर गेहा रती बसै धरि मानुष देहा
काम वधू तहँ पूरनकामा लहि निज पति संगम सुख धामा
शम्बरारि शम्बर वध करिहैं तासु बाहुबल बहु धन हरिहैं
वन्दन करि सुर रति पहँ गयऊ समाचार सब भाषत भयऊ
शम्बर असुर सदन रति गयऊ पाक अधिष्ठात्री तहँ भयऊ
समय प्रतीक्षा करि तहँ वासा करत भई पति संगम आसा
अपर कथा आगे मैं कहिहौं समय पावि संशय सब हरिहौं
तावत् सुनु गिरितनया चरिता परम पावनी जिमि सुरसरिता
हर लीला लखि श्रीजगदम्बा पिता गेह पहुँची अविलम्बा
धरहिं दिवस निशि शंकर ध्याना प्रेम सुधारस नित असनाना
शिवसरूप भासत तिहु लोका भान अनेक एक अवलोका
बैठत उठत चलत सब काला कुन्द धवल दीखत शशिभाला
जागत सपने और सुषुप्ती अभ्यन्तर नित शिव शिव उक्ती
कबहुँक लहि व्यवहार विकाशा पजरत शंकर विरह हुताशा
अति आकुल व्याकुल जगदम्बा शिव शिव रटन मात्र अवलम्बा
खान पान आदिक सब त्यागी केवल शंभु चरण लवलागी
प्रति दिन होत क्रमिक कृशगाता लखि विषाद व्यापित पितु माता

दोहा

प्रिया सखी थाकी सभी, करि उपदेश अनेक ।
मन मनसिज रिपु चरण गत, समुदित प्रेमोद्रेक ॥८७॥
वसन विभूषण आदि रुचि, विरहित वदन उदास ।
भारभूत निज देह भउ, जीवन आस निरास ॥८८॥

सोरठा

जल विहीन जिमि मीन, पुनि पुनि तलफत अति विकल ।
गिरितनया हर हीन, पुनि पुनि मूर्छा विवश तस ॥४४

चौपाई

तेहि अवसर नारद मुनिराजा आयउ धरि उर सुर मुनि काजा
निरखि हिमाचल वारंवारा प्रणमत भयउ सहित परिवारा
आसन अर्घादिक गिरि दयऊ हाथ जोरि सम्मुख थित भयऊ
तनया ताप निवेदन कीन्हा सुनि मुनि आश्वासन बहु दीन्हा
पठये बोलि गौरि मुनिराया परहित निरत अकारण दाया
भई बिदा मुनि आयसु पाई महिमा जासु वरणि नहि जाई
अम्बा निरवलम्ब-अवलम्बा प्रजा जासु चर-अचर-कदम्बा
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड निकाया जासु खेल श्रुति निकर सुनाया
लोकाचार करहिँ निरवाहा शिष्टाचार कहावत जाहा
तेजपुञ्ज निरखत हिय तर्का करत भई किमु आगत अर्का
नहि हिम घनीभाव परिहरहीँ नहि वनतृण तरुवल्ली जरहीँ
नहि प्रचण्ड आतप उत्पाता जीव जन्तु सन्तप्त लखाता

पुरुष परम तेजस्वी कोई अस अनुमान हृदय दृढ़ होई

सोरठा

तर्क वितर्क अनेक, तर्कागोचर करत भइ ।
लहइ न विना विवेक, जासु चरण करि यतन शत ॥४५॥

चौपाई

दीप शिखाकृति तिलक विराजै धृत उपवीत धवल छवि छाजै
तपसी वेष मृगाजिन वसना पियत शंभु नामामृत रसना
तन दुति कुन्द इन्दु मद हारी वीणा कर संगीत विहारी
तब गिरिजा अनुचरी सयानी भाषी निर्णय कारण वानी
नारद मुनि यह तव हित हेतू पहुँचे विरह पयोदधि सेतू
शुभ सूचन मुनिवर आगमना पूरन गुनिय मनोरथ अपना
सुनि गिरिजा वानी अति नीकी बिहँसि भाव गोई निज जीकी
चलहिं मन्दगति अचलकुमारी हंसवधू लखि गरव बिसारी
हिय महँ उठय भावना नाना प्राणनाथ विषयक नहि आना
कब देखब नयनन प्रभु चरणा त्रिविध ताप हर अशरण शरणा
भक्तवछल प्रभु दीनदयाला आरति देखि द्रवहिं तत्काला

दोहा

करत तर्क बहु गिरि सुता, पहुँची जहँ मुनिराय ।
लोक रीति पालन करत, प्रणमी शीश नवाय ॥८९॥

सोरठा

देखि अम्ब मुनिराय, अभिवन्दन मनमहँ कियउ ।
बाहर अति हरषाय, दीन्ह असीस अनेक विधि ॥४६॥

चौपाई

भाषत भउ नारदमुनि ज्ञानी सुनहु अचलतनया मम वानी
करु विश्वास देवि मनमाहीँ मिलिहहिँ प्रभु संशय कछु नाहीँ
तप अधीन शंकर कहँ जानी करहु तपस्या मन क्रमवानी
ब्रह्मा विष्णु महेश सुरेशा नर नागादिक अरु असुरेशा
तप प्रताप निज निज पद पाये भूसुर सब जग गुरु कहलाये
देव - विप्र - गुरु - पण्डित - पूजा शौच सरलता अचल तनूजा
हिंसा त्याग वेद व्रतचर्या शारीरिक तप कह बुधवर्या
अनुद्वेग कारण जो वानी प्रिय हित सत्य त्रिविध रस सानी
पाठ पवित्र और शुचि जापा वाचनीक तप प्रकट प्रतापा
तहाँ एक कौशल सुनु देवी थिर मन होहिँ पाठ जप सेवी
क्रिया योग जप पाठ प्रधाना कहि स्वाध्याय मुनीश बखाना
मानस सर कामादिक पंका अहंकार प्रावृष सातंका
तहँ स्वाध्याय शरदृतु तुल्या स्वच्छ बनावै मानस कुल्या
मिलहिँ देव मानस परसादा इहाँ न उचित कुतर्क विवादा
इहाँ पतञ्जलि वचन प्रमाना साखी योगपरायण नाना

सोरठा

अन्तःकरण प्रसाद, शान्तिभाव संतोष सुख।
मौन विगत अवसाद, कपट कुटिलता रहित हिय ॥४७॥
सो मानस तप शुद्ध, वेद विदित कल्याणकर।
होहिँ अबुद्ध प्रबुद्ध, तप महिमा जानहु उमा ॥४८॥

चौपाई

उक्त त्रिविध तप गुण अनुविद्धा एक एक पुनि त्रिविध प्रसिद्धा
सात्त्विक राजस तामस भेदा सुख दुख मोह रूप कह वेदा
फलकामना रहित तप जोई श्रद्धा संयुत सात्त्विक सोई
लोकादर कारण तप जोई दम्भ जनित राजस तप सोई
परपीड़ा हेतुक तप जोई निज दुखदायक तामस सोई
जहाँ दुराग्रह मोह निदाना अविधि क्लेशकर साधन नाना
कहिय ताहि तामस तप घोरा प्रेरक आसुर भाव कठोरा
आशुतोष हर मृदुल सुभाऊ द्रवहिं दयानिधि लखि सद्भाऊ
करि आश्वासन अरु उपदेशा गमने मुनिवर विगत कलेशा
गयउ गगन पथ पवन समाना सुमिरत इष्टदेव भगवाना
ब्रह्मलोक पहुँचे क्षण माहीं भाषे सकल चरित पितु पाहीं
अब गिरिसुता चरित सुनु ताता कहत सुनत अभिमत सुखदाता

दोहा

सुनि नारद मुनि वचन तब, गिरितनया मनमाहिं ।
भयउ सुनिश्चय प्रभुमिलन, बिना तपस्या नाहिं ॥९०॥

चौपाई

सखी आत्महित परम सयानी कही बोलि एकान्त भवानी
तपश्चरण उपदेश मुनीशा मोहि गयउ करि देइ अशीशा
करिहौं सखि तप कानन जाई जननी जनक कहहु समुझाई
गृह तप किये विघ्न बहु भाँती ममता मोह छोह दिन राती

विघ्नाहत तपसी गृहवासी जाय बसहिँ वन बनहिँ उदासी
कीरति द्युति पितु कुल उजियारा करब कहत वपु वाम हमारा
गुरुजन कृपा कटाक्ष प्रसादा मिटत तपोबल सकल विषादा
सखी सुमुखि पितु अन्तिक जाही उक्ति सयुक्ति सुनावहु ताही
लज्जा करत निवारण मोही आपुन प्रतिनिधि पठवउँ तोही
गई सखी जहँ भूधर भूपा बोली वचन समय अनुरूपा
करन चहौं कछु विनय गिरीशा दासी आयसु चहौँ अनीशा

दोहा

सुनत वचन हिमगिरि कहे, कहहु करहु जनि भीति ।
सेवक स्वामी हित निरत, लहइ अभय यह रीति ॥९१॥

चौपाई

सुनत वचन अस सखी सयानी भाषत भइ जस कही भवानी
युग कर जोरि कहन पुनि लागी वानी मधुर नीति रस पागी
रोध नदी रय सेतु प्रयतना रोध मनोरय करि थिर पवना
वामा कृत साग्रह आरम्भा प्रेरक जहाँ प्रेम संरम्भा
धाता ताहि सकहिँ नहि रोकी प्राणी अपर अगण्य त्रिलोकी
जब लगि होय न कारज सिद्धी पुनि पुनि उद्यम वृद्धि प्रसिद्धी
वारण किये तजै निज देहा वन रुचि मन भावत नहि गेहा
आयसु देहु हरषि हिय ईशा पुरय मनोरथ देहु अशीशा
जानिय सुता प्रकृति अवतारा गुण गावत श्रुति लहहिँ न पारा
धन्य धर्म तव वचन अगम्या सुता जासु सुर सिद्ध प्रणम्या

तव कुल कमल प्रभा रविकेरी जगदम्बिका सखी प्रभु मेरी
शब्द अर्थगत जिमि सम्पर्का तिमि गौरी हरगत अवितर्का
भेद अवैदिक दरशन गावा वैदिक मत अभेद दरसावा
सुनहु पुरञ्जन तात्त्विक वचना द्वैतमूल यह संसृति रचना
द्वैत मोहमय छूटत जबही लहत जीव आतमपद तबही
बिनु अद्वैत न छुटत कलेशा भाषत अस श्रुति शिखर अशेशा
ज्ञान विषय उपदेश अनूपा आगे कहब स्वमति अनुरूपा
सुनहु अचल चित प्रकृत चरित्रा गौरी विषयक परम पवित्रा

दोहा

सुनत शिष्य गुरुवर वचन, सम्मुख करयुग जोरि ।
आनत ह्वै भाषत भयउ, सुनु विनती गुरु मोरि ॥९२॥

सोरठा

द्वैताद्वैत विचार, उत्कण्ठित मानस अतिहि ।
अति संक्षिप्त प्रकार, कहिय कछुक प्रभु करि दया ॥४९॥

चौपाई

विदित उपास्य उपासक भेदा भन पुरान आगम अरु वेदा
सकल उपासक द्वैत अधारा कह श्रुति लह भवसागर पारा
द्वैताद्वैत प्रबल मत दोऊ भाषिय तदपि प्रबलतर कोऊ
गुरुवर समुचित उत्तर दयऊ निगमादिक मत अनुगत भयऊ
द्वैत मात्र पद भक्त समीहा जस स्वाती जल चहत पपीहा
विद्रावित चित प्रेम प्रभावा स्वयं समागत अद्वय भावा

जानहु अद्वय आतम रूपा द्वैतभाव अभिरुचि अनुरूपा
मारग सुगम सगुण कह वेदा दुर्गम निर्गुण पथ गत खेदा
जब लगि अगुण अगोचर अहई तब लगि गुणमय गोचर रहई
लहहिँ उपासक क्रमकृत मुक्ती ज्ञानी तत्कालहिँ इति उक्ती
आगे ज्ञान भक्ति उपदेशा करिहौँ यथाशास्त्र आदेशा
सम्प्रति प्रकृत कथा चित देहू आपहि छुटिहि सकल सन्देहू
ज्ञान भानु जब करय प्रकाशा होय सकल संशय तम नाशा

दोहा

भाषत भउ तब अचलपति, हरषि नीर भरि नैन ।
मम अनुमति गुनिकरहु जस, मानै मेना बैन ॥९३॥
सफल जन्म जीवन सफल, सफल वंश सब भाँति ।
अपनावहिँ यदि करि दया, हमहिँ त्रिपुर आराति ॥९४॥

सोरठा

कानन गमन विचार, परम असंभव मातु हिय ।
कवनिहुँ विधि स्वीकार, होय करहु सो यतन तुम ॥५०॥

चौपाई

गयी मातु ढिग सखी सयानी भाषत भई जोरि युग पानी
सुनिय मातु निज पुत्री वचना तदनु करिय अनुमोदन अपना
करन चहत तप कानन जाई आयसु दीन्ह पिता गिरिराई
बिनु तप दुर्लभ शंभु प्रसादा बाढ़त छन छन हृदय विषादा
दै आयसु गौरी दुख हरहू भूधरवंश कृतारथ करहू

ब्रह्मा विष्णु जासु अनुगामी महादेव सचराचर स्वामी
सो शंकर यदि होहिँ जमाता अमित पुण्यफल जानहु माता
किये निरोध सखी निज देहू तजय अवश नहि कछु सन्देहू
सुनत वचन माता अकुलानी सुता बोलि बोली मृदुवानी
सुता मोरि तुम प्राण अधारा तुअ बिनु अन्धकार संसारा
तप करि भई अचलपति कन्या रूप-शील-गुण-धाम सुधन्या
कवन न्यूनता कहु गृह माहीँ लखिय विघ्न कारण कछु नाहीँ
नाना देव बसहिँ मम गेहा सिद्ध समाज बिसरि निज देहा
तीरथमय गिरिराज प्रदेशा करहु घरहिँ तप मम उपदेशा

दोहा

व्याकुलता त्यागहु सुता, धरहु हृदयमहँ धीर।
सिद्धि हेतु वन भवन नहि, चाहिय मानस थीर ॥९५॥

चौपाई

कीन्हेहु तप प्रथमहु वन जाई वत्से कहहुं काह फल पाई
तप कठोर कोमल तनु तोरा सुमिरत हिय फाटन चह मोरा
नयन अगोचर होहु न मोरे मन वन गमन न आनहु भोरे
अस कहि सुता अंक भरि लीन्ही वरषा नयन नीर कै कीन्ही
गौरी हृदय प्रबोध न आवा यदपि मातु बहु भाँति बुझावा
वारि निम्न मारग अनुगामी संकल्पित पथ प्रस्थित कामी
हठ करि किये निरोध निकामा फल विपरीत अवश परिणामा
अति विह्वल भइ अचलकुमारी कृश तनु भोजन शयन बिसारी

शोचनीय थिति लखि महतारी पाहन हिय बनि वचन उचारी
सुता यथारुचि कानन जाहू लहहु धर्मपथ सेवन लाहू
माता पिता प्रणमि जगदम्बा कानन गमन कियउ अविलम्बा
अतिहित सखी युगल लै संगा प्लावित पावन प्रेम उमंगा
वस्त्राभूषण विविध प्रकारा तजि त्यागी लौकिक व्यवहारा
वल्कल धारण करी कुमारी रुचिर मनोहर हार उतारी
तापस वेष सुपावन मुञ्जी सोहत जटाजूट छविपुञ्जी
धवल सेज अति मृदुल बनाई जाहि कठिन इव प्रथम जनाई
सो करि बाहु लता उपधाना कठिन भूमि सोवत सुख माना

दोहा

मन भावन पावन परम, विजन तपस्या धाम ।
जाय वास गिरिजा कियउ, गौरी शिखर ललाम ॥९६॥
गौरी तप आश्रम भयउ, गौरी शिखर सुनाम ।
तीरथ भूमि प्रसिद्ध जहँ, पूरत सब मनकाम ॥९७॥

चौपाई

आश्रम रुचिर मनोहर सोहै निरखत छवि मुनिजन मन मोहै
जीव जन्तु सब वैर बिहीना जनु हिंसा वर्जन व्रत लीना
तरुवर फूलहिँ फलहिँ अनेका पर हित रत जस जन सविवेका
शीतल विमल जलाशय नाना जिमि सज्जन मन गत अभिमाना
विविध विहंगम कलरव करहीँ द्विज कृत सामगान अनुहरहीँ
पशुगण वैर भाव परिहरहीँ परम शान्ति सुख अनुभव करहीँ

तहँ अभ्यागत सकल सुखारी परम स्वादु फल कन्द अहारी
उटज उटज प्रति हवन विधाना श्रवण सुखद नाना अति गाना
आश्रम अचलसुता सम्बन्धी दर्शक परमानन्द प्रबन्धी
वचन अगोचर अम्ब तपस्या वहिरन्तर इन्द्रियकृत वश्या
आनन सुमनवलित कच शोभी सोहत जटा जटिल शिव लोभी
कमल कबहुँ अलि अवलि प्रकासी सोहत जस शैवाल विकासी
आपुहि तजि आलस जगदम्बा सीचहिँ लघुतर सुतरु कदम्बा
कलस पयोधर जल पयधारा पोषहिँ शिशु सम सलिल अहारा
नीवारादि समर्पण करहीँ उपगत हरिण क्षुधा अपहरहीँ
हृष्ट पुष्ट अति कृत विश्वासा अभय हरिण गण विचरहिँ पासा
कौतूहलवश अचल दुलारी नापहिँ मृगी नयन सुकुमारी
प्रियतम ध्यान निमीलित नयना तनु पुलकाकुल मन मुदअयना
स्रवित नयन सरसीरुह नीरा सिक्त पयोधर आदि शरीरा
पियत परम सुख अंक शयाना निर्भय वारि विहंगम नाना

दोहा

जगदम्बा अति मृदुल तनु, राजकुमरि सुकुमारि ।
अद्भुत तप तनु कसत भइ, जीवन मरण बिसारि ॥९८॥

चौपाई

कन्दुक लीला लही गलानी मृदुलगात सरसीरुह पानी
सोइ आजु दारुण तप करहीँ भोजन वसन शयन परिहरहीँ
ग्रीषम ऋतु चहुँ दिशि विकराला पावक वरत छुवत नभ ज्वाला

अम्बा तासु मध्य आसीना ऊरध दृष्टि दिवाकर लीना
दिनकर तप्त सरोरुह वदना नहि परिहरइ रुचिर छवि अपना
नयन अपांग कालिमा धारा केवल भयउ परम सुकुमारा
मृदुकर किरण अयाचित वारी कृत पारण विधि अचलकुमारी
पावक रवि परितापित गाता भूमि भूमिधर तनया ताता
वरषा ऋतु नव नीरद सिक्ता त्यागहिँ वाष्प परम श्रम रिक्ता

दोहा

वारि बिन्दु क्षण पलक गत, करि शुचि अंध अघात ।
वली परस चूर्णित गयउ, नाभि सरोवर तात ॥९९॥

चौपाई

शीत समय निशि नीर निवासा करहिँ तपस्या तजि विषयाशा
सहत निरन्तर वर्षण पवना वसि अनिकेत शिलातल शयना
तड़ित विलोचन उन्मिष रजनी जसि साक्षिणी लखत तप करनी
स्वयं पतित तरु पर्ण अहारा लखत परम चितिमय संसारा
परिहरि बहुरि अशन तरुपर्णा त्रिभुवन भई प्रसिद्ध अपर्णा
विस कोमल तनु अस दिनराती करत कठिन तप अद्भुत भाँती
तपी कठिन तनुकृत तप भारी जीता अचल सुता सुकुमारी
अम्बाकृत अतुलित तपचर्या सुनि अति विस्मित भउ मुनिवर्या
दर्शनार्थ आयउ सब तहँमा मुनिगण अम्ब तपोवन जहँमा
वयोवृद्ध जन शिष्ट अचारा पूजहिँ धर्मवृद्ध सुखसारा
धर्मवृद्ध पूजन जो करहीँ इहामुत्र नाना सुख लहहीँ

नहि वयवृद्ध जानिये वृद्धा धर्मवृद्ध अति वृद्ध प्रसिद्धा
लखि जगदम्ब तपस्या घोरा मुनिगण अचरज कियउ न थोरा
कठिन अंग नाना व्रत धारी जो तप करि न सकहिँ वनचारी
सो तप अनायास सुकुमारी कियउ मृदुल तनु अचल दुलारी
अम्ब तपोवन महिमा गाना कियउ प्रहर्षित चित मुनि नाना

छन्द

बाघ बकरी महिष वाजी संग मिलि विचरहिँ सुखी ।
सदा ऋतु अनुकूल सुखप्रद होहिँ नहि प्राणी दुखी ॥
सदा कृतयुग सत्त्वगुणमय रजस्तम प्रकटत नहीँ ।
ज्ञान भानु प्रकाश निशिदिन प्रेममय सुरसरि बही ॥४४॥

दोहा

गौरी तप तापित सकल, विस्मित सुरमुनि वृन्द ।
गयउ अचल कैलास जहँ, भाल विभूषित चन्द ॥१००॥
पद पंकज शंकर परसि, लखि नारद मुनिराय ।
अति विनीत सब कहत भउ, मुनिवर होहु सहाय ॥१०१॥

सोरठा

अति दयालु मुनिराय, नारद सुनि सुरमुनि वचन ।
सब मिलि शीश नवाय, शंकर संस्तुति करत भउ ॥५१॥

छन्द

जय जय शिव शंकर सकल शुभंकर परहिततत्पर पाहिप्रभो ।
सुरमुनि शरणागत संकट आगत काटहु करुणाजलधिविभो ॥

हिमअचल सुकन्या त्रिभुवन धन्या करत अनूपम तपचर्या ।
तप तेज प्रतापा त्रिभुवन व्यापा तापित भउ सुर मुनिवर्या ॥

दोहा

करुणाकर करुणायतन, करुणा करिय महेश ।
अम्ब मनोरथ करि सफल, काटिय सकल कलेश ॥१०२॥

सोरठा

सुनत विनयमय बैन, करुणापूरित हृदय प्रभु ।
सजल सरोरुह नैन, भाषत भउ कोमल वचन ॥५२॥

चौपाई

सुरमुनि निकर जाहु निज धामा परिपूरित जानहु निज कामा
आपुहिं किंकर्तव्य विचारा करि करिहौं समुचित उपचारा
सबहि निचिन्त होहु सुर विप्रा सबकर प्रिय करिहौं अति क्षिप्रा
हर्षित सब निज निज गृह गयऊ शंभु अम्बिकागत चित भयऊ
जटाजूट तापस तनु धारी अम्ब तपोवन गयउ पुरारी
वसन मृगाजिन दण्ड पलाशा पटु वाणी कृत मोह विनाशा
तेजस्वी जिमि ज्वलित हुताशा निज प्रकाश कृत गहन विकाशा
गौरी वृद्ध तपस्वी देखी आदरभाव कियउ सविसेखी
भेष विशेष निरखि सब कोई पूजहिं यद्यपि समता होई
विधि बोधित आगत सम्माना लहे अम्ब कृत तपसी नाना
करि तपसी क्षणभरि विश्रामा प्रथमाश्रमी तपस्याधामा
भाषत भउ निरखत ऋजु नयना परम मनोहर सुन्दर वयना

सुलभ देवि किमु समिध कुशादी स्नान विधान विहित जल आदी
तनु अविरोधी किमु तपचर्या साधसि करसि सुपूज्य सपर्या
धर्म प्रथम साधन यह देहा पालिय सतत वेदमत एहा
किमु परिपोषसि लता प्रवाला निज कर वारि दान कहु बाला
जो तुअ रक्तअधर अनुहारी जो अलक्त दुति अचल कुमारी
हरिण निकर करगत कुशहारी किमु प्रसन्न मन लखसि कुमारी
जो तुअ चपल नयन अनुहारी निज चञ्चल नयनन सुकुमारी
शयनाशन भूषण परिधाना विरहित तनु अति भयउ मलाना
निज तनु वा पर तनु अपकारी तामस कृति कहि कृष्ण पुकारी
यद्यपि तुअ तप त्रिभुवन पावन कहत सुनत अघ ओघ नशावन
विप्र प्रकृति चापल्य अधीना उत्सुकता प्रेरित छलहीना
पूछन चहउँ कछुक गिरिकन्ये मम सन्देह हरहु तुम धन्ये
गोपनीय यदि होय न एहू कहहु कृपाकरि सहित सनेहू
मोहि न अन्य व्यक्ति तुम मानहु साप्तपदी मैत्री यह जानहु
तुअ कृत यह सत्कार अशेषा उपजायउ सम्बन्ध विशेषा
चतुरानन कुल तव अवतारा तनु त्रिलोक सौन्दर्य अधारा
करतल अतुल विभव सुखसारा कवन हेतु यह तप विस्तारा
कोप गलानि अनादर हेतू नहि संभव गिरिराज निकेतू
नहि अनवाप्त अवाप्त पदारथ तव त्रिभुवन महँ वचन यथारथ
तुअ अभिरुचि विरुद्ध कछु काजा करि न सकत सुर असुर समाजा
गिरि नायक कर विदित प्रतापा भय व्याकुल रिपु थरथर काँपा

दोहा

स्वर्गहेतु यदि करसि तप, तदपि वृथा श्रमरूप ।
देवभूमि तुअ नाभिगृह, स्वर्गलोक अनुरूप ॥१०३॥

सोरठा

नहि समुचित वर हेतु, यह तपचर्या कठिन तव ।
पहुँचत रत्न निकेत, रत्नगृहीता आपुही ॥५३॥

चौपाई

वचन कछुक गिरिराज कुमारी करि प्रतीति तुम सुनहु हमारी
कियउ तपस्या करि व्रत नाना पायउ बहु प्रकार वरदाना
निज अभिलाष सुनावहु मोही मनवांछित वर देहहुँ तोही
नहि सन्देह करहु मनमाहीँ तप प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीँ
तप बल करहिँ सृष्टि चतुरानन पालहिँ जगत पक्षिपति वाहन
महाकाल त्रिभुवन संहारी इन्द्रादिक बहुविध व्यवहारी
भउ तपकरि गिरिसुते चिरायू मुनि मृकण्डसुत अपि अल्पायू
राजा रंक मनीषी मूरुख होत तपोबल महिला पूरुख
तप महिमा कहि सकै न वाणी गगन अन्त जिमि लहै न प्राणी
सुनि अस वचन गिरीश कुमारी लज्जानत मुख सखी निहारी
जानि सखी तसु अन्तर भावा ब्रह्मचारि प्रति शीश नवावा
करयुग जोरि कहन अस लागी शील-सनेह-विनय परिपागी
लखि राउर अनुकम्पा नाथा जानौँ गिरिजा भई सनाथा
उत्सुक मन यदि करुणागेहू कारण कवन तपस्या एहू

सुनिय कान दय अरु मन लाई कथा कहौं मैं सकल बुझाई
पितुगृह सुनि शंकर गुण बरनन प्रेममयी भइ सखी पूतमन
सकल विश्व शंकरमय भासत प्रभुपद इन्द्रिय वृत्ति प्रकाशत
नहि निशिनिन्द दिवस नहि चैना वारिद इव वरषत नित नैना
भोजनादि व्यवहार बिसारी भूषणादि परिहरी कुमारी
दुर्लभ शंभु मिलन मनमानी तप निमग्न नाना व्रत ठानी
नारद मुनि उपदेश सुनावा कानन गमन सखी मन लावा
पितु आज्ञा लहि कानन आयउ प्रभु आराधन महँ मन लायउ
कृशतनु भई करत व्रत नाना सन्तत प्रभु पद पंकज ध्याना
रसना त्यागि स्वादु रस नाना करत शंभु-नामामृत पाना
व्रत साखी तरु वृन्द लगायउ फूले फले सकल मन भायउ
फूले फले न अब लगि एहू सखी मनोरथ तरुवर जेहू
यदि प्रभु पद दरशन नहि पावउँ तजउँ न व्रत वरु प्राण गमावउँ

सोरठा

सखी परम सुकुमारि, करी प्रतिज्ञा अति कठिन ।
द्रवत न अबहुँ पुरारि, कवन यतन देखब सुदिन ॥५४॥
सुनि तपसी कहँ दृष्टि, हर्षभाव गोपन करत ।
गिरिजा प्रति निज दृष्टि, डारत अस पूछत भयउ ॥५५॥

छन्द

बिहँसि तपसी कहन लागे हर्ष प्रेमामृत पगे ।
देवि सुनि तुअ सखी भाषण मोहि अति अचरज लगे ॥

वचन यह परिहास किमु किमु तोहि नारद मुनि ठगे।
सकल मंगलमयी चाहसि कस अमंगलमय सगे॥

चौपाई

तपसी वचन सुनत गिरि कन्या कहन लगी अस त्रिभुवन धन्या
नहि परिहास वचन यह मानिय समुचित कथन यथारथ जानिय
संयम नियम ध्यान व्रत पूजा शंभु हेतु कारण नहि दूजा
निगमागम अस भाषण करहीँ घट घट व्यापक शंकर अहहीँ
अन्तर्यामी देव महेशा भउ अजान इव जानि कलेशा
यदपि कामना दुर्लभ मोरी रोधि न सकौँ प्रेम रस बोरी
प्राण जाय वरु तजौँ न टेका मोर प्राणपति शंकर एका
इन्द्रादिक सुर तृण सम मानौँ पूरण ब्रह्म सदाशिव जानौँ
जस चन्द्रिका चन्द्र अनुसरई जस प्रतिबिम्ब बिम्ब अनुहरई
तस विनु शंभु न जीवन मोरा प्रभु विनु अंधकार चहुँओरा
कोउ सहायक जगत न मोरे भयउ शंभु सर्वज्ञ विभोरे
वाम दैव भउ त्रिभुवन वामा उदासीन पुरमथन अकामा
अस कहि श्रीगिरिराज कुमारी धरी मौन नहि पलक उघारी
प्रभु पद पंकज ध्यान निमग्ना गत तन मन सुधि संसृति भग्ना
निरखि शंभु प्रेमामृत पागे भाव छिपाय कहन पुनि लागे
सुनहु सुनहु गिरिराज कुमारी भई बुद्धि विपरीत तुम्हारी
नहि जानहु तुम पुरहर करनी परम अमङ्गल जाय न बरनी
व्याघ्रचर्म परिधान कराला लेपन भस्म भुजंगम माला

अस्थि विभूषण अरु कर माला बसहिँ मसान बजावहिँ गाला
वर गुण कवन शंभु महँ कहहू जासु मिलन कारण व्रत करहू
किमु जानहु नहि हर करतूती मदन विमर्दन जासु विभूती
साधि समाधि तजे जो तोही पितु गृह गई विदित सब मोही
देह विरूप त्रिलोचन जासू नाम नकुल कुल जाति न तासू
वसन विहीन दरिद्र भिखारी वृद्ध वृषभ जसु सम्पति सारी
भोजन विष धतूर अरु भंगा भटकइ भूत प्रेत लै संगा
सकल अमंगलमय आचारा मद्यमत्त नहि कछुक विचारा
काच संग नहि कंचन सोहै तुअ-तसु-संग समर्थक कोहै
मणि मण्डित कोमल कर तोरा हर कर कर्कश फणिधर सोरा
युगल पाणि संगम लखि एहू असमञ्जस लागइ नहि केहू
मृदुल सुमनमय भूमि विहारी अलकांकित तुअ चरण कुमारी
मृतक चिकुरमय भूमि मसानी बिचरब कस तुम कहहु सयानी
स्वर्णमयी शिविका मणिमुक्ता खचितावरण मनोहर युक्ता
तदुपरि जो आरोहण करई वृषभोपरि कीदृश छवि लहई
वधू दुकूल गजाजिन योगा निरखि विषाद न कर को लोगा
चन्दन चर्चित हृदय प्रदेशा चिताभस्म धूली परवेशा
अस घटना समुचित को कहई सभ्य समाज अयश को लहई
मम उपदेश सुनहु यदि काना त्र्यम्बक त्यागि वरहु वर आना

दोहा

द्विज भाषण प्रतिकूल सुनि, गिरिजहिँ क्रोध अपार ।
बिम्बाधर फरकन लगे, नयन रक्त संचार ॥१०४॥

सोरठा

कहन लगी अस बैन, मति तुम्हार विपरीत अति ।
रवि शशि हुतभुक् नैन, त्रिभुवनपति निन्दक निडर॥५६॥

छन्द

जगत उतपति और थिति हति हेतु जाकहँ श्रुति कहै ।
जाति पाँति विचार कारक तासु पातक अति लहै ॥
सकल दिक्पति इन्द्र आदिक जासु अनुकम्पा चहै ।
ताहि निर्धन कहत जो जन ताहि दारिद दुख दहै ॥

चौपाई

भूषण वसन अशन जिज्ञासा विश्व मूर्ति प्रति मति व्यत्याशा
पूरण ब्रह्म निराकृति देवा ताहि अमङ्गल वक्ता केवा
चिता भस्म शंकर तनु परसी पावनतम परमामृत बरसी
ताहि अपावन भाषत जोई स्वयं पतित अधमाधम सोई
सुमिरत जाहि कटै भवपासा तारण तरण होहिं जसु दासा
विधि निषेध चर्चा कस तासू निर्गुण पथ विचरइ जन जासू
देव सच्चिदानन्द स्वरूपा लीलामय तसु नाना रूपा
कमलामयमय लोचन जाके भासत भुवन पीतमय ताके
पित्ताधिक्य होय यदि काहू तिक्त सितोपल लागत ताहू
सूर्य उदय पश्चिम दिशि भासत दिग्भ्रम दिशा ज्ञान जसु नासत
चन्द्र युगल देखत जन कोई काल निकटगत जाकहँ होई
छाया युग दर्शन दिन राती मोह निदर्शन अस बहु भाँती

अस तपसी तव वल्गन नाना यद्यपि जानौं मोह निदाना
क्रोधानल संभव परितापा जारत मोहि निरखि तव दापा
अवगुण सदन अस्तु त्रिपुरारी गुणागार वा सुरसरि धारी
मम उर सरवर सुस्थिर सोई हंस सरिस शशिशेखर जोई
तपो भंग भय शाप निवारत कौन अन्यथा तोहि उवारत
कही सखी प्रति अचल कुमारी दूर दुरावहु द्रुत व्रतचारी
पुनरपि निन्दा वचन विवक्षू भासत यह निज अहित समिच्छू
हर निन्दक अति पातक लहई तद्वत निन्दा श्रवण जो करई
यथाशक्ति शासन तसु कीजै यदि अशक्ति सत्वर चलि दीजै
अस कहि चलन लगी व्रत खिन्ना कटु रव बाण हृदय जसु भिन्ना

दोहा

प्रेम परीक्षा करि सुदृढ़, भक्तवछल भगवान ।
प्रगट भयउ निजरूपधरि, प्रभु कल्याण निधान ॥१०५॥

सोरठा

गमन उद्यता देखि, प्राण प्रेयसी प्रेमवश ।
संयम नियम परेखि, अति प्रसन्न कर गहि लियउ ॥५७॥

चौपाई

बिहँसि शंभु अस भाषण लागे प्रिया समक्ष विसारि विरागे
तुअ सनेह मम क्रयकरि लियऊ विधि मंगलमय अवसर दियऊ
निज अभिलाष सुनावहु आजू मोहि न अकर्तव्य कछु आजू

प्रकृति स्वकीय तोहि मैं भाखौं प्रेम विवश कछु गोइ न राखौं
शरणापन्न मोर जो होई लब्ध समस्त मनोरथ सोई
जो मम भक्त निरन्तर भूपर योग क्षेम ताके मम ऊपर
दुर्गति लहै न सेवक मोरा ताहि सुमंगलमय चहु ओरा
अति पातकी यदपि जन कोई मम शरणागत पावन होई
विधि निषेध तसु लागत नाहीं मम परभक्ति जासु मनमाहीं
जीतौं सकल चराचर झारी निज भक्तन सन मानउँ हारी
मोर अधीन सकल संसारा भक्तवश्यता विदित हमारा
भक्त महातम कहि को सकई यदपि सहसमुख बनि श्रम करई
मोर अनादि शक्ति तुम देवी इहामुत्र सुख लह तुअ सेवी
मोहि तोहि अन्तर कछु नाहीं अति प्रसिद्ध निगमागम माहीं
कारणवश कछु काल वियोगा भउ पुनि घटित निरन्तर योगा
मम अर्धाङ्ग भागिनी होहू प्रिये गृही तुम बनवहु मोहू
नहि गृह गृह गृहिणी गृह जानहु वेद पुराण प्रमाणित मानहु

छन्द

सखी मुख अवलोकि गिरिजा वचन मृदु भाषत भई ।
पितृदेया कन्यका विधिवचन यह त्रिभुवन छई ॥
करु निवेदन प्राणपति प्रति रीति सखि यह नहि नयी ।
निरखि प्रभुमुख भई नतमुख प्रिया प्रेमामृतमयी ॥

चौपाई

करि विनिवेदन सखिमुख द्वारा संस्थित भइ लै विटप सहारा

गिरिजा आनत मुख सुकुमारी भइ सुस्थिर प्रतिमा अनुहारी
भाषे तथा अस्तु त्रिपुरारी धर्म धुरंधर शिष्टाचारी
प्रिया हेतु धरणीधर नायक अवश याचिहौँ कन्यादायक
असकहि गिरिजा-सखिहिँ महेशू पायउ विछुरत विरह कलेशू
दम्पति प्रीति त्रिलोक प्रसिद्धा वश जाके सुर नर मुनि सिद्धा
अथवा नित्य मुक्त परमेशू करहिँ लीलया जग उपदेशू
दम्पति प्रेम प्रबल परभावा व्याप्त रसातल पृथिवी द्यावा
सीता विरह राम दुख पाये सती विरह शंकर अकुलाये
दमयन्ती आदिक विरहाकुल कत कत नलआदिकभउ व्याकुल
रोधि राग कथमपि वृषकेतू भयउ विदा रक्षक श्रुति सेतू
गिरिजा मुख पंकज अवलोकी कथमपि गौरि नयनजल रोकी
कैलासाचल प्रभु जब गयऊ ऋषि सप्तक तब सुमिरत भयऊ
सारुंधतिक सप्त मुनि राया ज्योती रूप अतुल छवि छाया
चले व्योम मारग मिलि सबहू धृत मारुत गति रुके न कबहू
सुवरन रचित यज्ञ उपवीता हस्त कमण्डलु त्रिभुवन मीता
अति पवित्र सित भसितत्रिपुण्डा जटिल अक्षमालाकृत मुण्डा
मंजुल मुञ्ज सूत्र कटि राजै ऐणाजिन परिधान विराजै
कुश वेणी आदिक कर सोहैं अनिमिष नयन मदनरिपु जोहैं
प्रेम मगन शिव शिव उच्चरहीँ निज निज जन्म कृतारथ करहीँ
जब मुनिगण शंकर गिरि देखा लहे अलौकिक हर्ष विसेखा
जय जयकार करत सब धाये प्रभु पद पंकज शीश नवाये

दोहा

पुनिपुनि दण्ड प्रणाम करि, पुनि पुनि करयुगजोरि ।
अस्तुति बहुविधि करत भउ, नमहिँ बहोरि बहोरि ॥१०६॥

छन्द

जय जय शिवशंकर दुष्ट भयंकर पुरहर हर हर पाहि प्रभो ।
तुअ यश विस्तारा अपरम्पारा कवन पार कहि लहत विभो ॥
ब्रह्माण्ड निकाया विरचहिँ माया रज्वहि इव तुअ महँ नाना ।
जिमिसर्प अदर्शन रज्जुज्ञान तिमि जगत अदर्शनतुअज्ञाना॥

दोहा

मुनिगण पुनि भाषत भयउ, सुमिरन कारण कौन ।
कहिय कृपालु महेश प्रभु, भक्तिपूत हिय भौन ॥१०७॥

सोरठा

बुद्धि अगोचर नाथ, हमहिँ देव सुमिरन कियउ ।
कियउ अनाथ सनाथ, लीला नाटक सूत्रधर ॥५८॥

चौपाई

जन्म कर्म सार्थक प्रभु कीन्हा जानि दास अति आदर दीन्हा
सिर धरि आज्ञा पालन करिहौँ नहि कदापि पग पाछे धरिहौँ
दासन कहँ आयसु प्रभु कीजे आशीर्वाद दयानिधि दीजै
बिहँसि चन्द्रशेखर तब बोले तजि चिन्तन लोचन पट खोले
ह्वै आसीन कहहु कुशलाता लौकिक वैदिक आदिक ताता
धर्म प्रचार कर्म अधिकारी तुमहिँ बनायउ विधि मुखचारी

निज निज धर्म निरत किमु लोका सदाचार रत होहिं विशोका
सुनि मुनिगण शंकर प्रियवाणी भाषण लगे जोरि युग पाणी
प्रभु प्रसाद सब कारज सिद्धी होत लोक महँ धर्म समृद्धी
तारक नाम असुर प्रभु एका धर्म कर्म मारग खल छेका
धेनु साधु द्विज देव विरोधी यज्ञ यजन जप तप अवरोधी
नहि अज्ञात विषय यह मोहू समयान्तर फल भोगत ओहू
अस कहि पुनि भाषे जगदीशा प्रकृत कथा तुम सुनहु मुनीशा
सामर इन्द्र एक दिन आयउ तारक कृत उत्पात सुनायउ
औरस पुत्र मोर यदि होई मारे तासु मरे खल सोई
अरणी विना अग्नि नहि जैसे पत्नी विना पुत्र नहि तैसे
तातें तात धराधर राजू मम सन्देश सुनावहु आजू
मुनिवर जानि तुमहिं आदरिहैं वचन अनादर कबहुँ न करिहैं
गिरिवर कन्या कियउ तपस्या आदिशक्ति मम विश्वनमस्या
ताहि जाय स्वीकृत हम कीन्हा मन वाञ्छित फल ताकहँ दीन्हा
कन्यादान पिता आधीना लोक वेद मत यह प्राचीना
आपुन जानि लेहु यह भारा नहि केवल यह काज हमारा
तारक वध कारण यह काजा किये सुखी सब होहिं समाजा
मुनिगण सुनत सुधासम वयना बोले हर्ष वारि भरि नयना
सृष्टि स्थिति लय लीला जाके स्वयंसिद्ध सब कारज ताके
सेवक धर्म सेव्य सेवकाई जस आयसु तस करिहौं जाई
श्रीगणेश कहि कियउ पयाना अति अगाध मति चतुर सयाना

दोहा

अति सुन्दर गिरिवर निरखि, मुनिगण पुलकित गात ।
दरस परस मज्जन कियउ, गंगाजल मुनि स्नात ॥१०८॥

छन्द

विष्णु पदपंकज विनिर्गत वारि हर शिरपर लये ।
नाम गंगा पतितपावनि परसि सगरज तरि गये ॥
पावि गंगालाभ अगणित भये हरिहर तन अये ।
त्रिपथगा महिमा बखानत सकल गद्‌गद गल भये ॥५०॥

चौपाई

रत्नराग रञ्जित गिरि सोहै जाहि निरखि मुनिजन मन मोहै
उच्च शिखर मुनिवर जब देखे अमरावती निसेनी लेखे
कहुँ तरुवर वल्ली छवि छाजै कहुँ सरवर अरु सरित विराजै
हंस मनोहर कलरव करहीँ कुहू कुहू धुनि पिक मन हरहीँ
चक्रवाक कारण्डव आदी मनहु मधुर धुनि साम विवादी
चित्रसेन आदिक गंधर्वा गावहिँ राग रागिणी सर्वा
तिल उत्तमा उर्वशी नाना नाचहिँ करहिँ साभिनय गाना
शीतल मन्द सुगन्ध बयारा बहहिँ चराचर जीव पियारा
फल अरु फूल भरे उद्याना रम्य परम पुष्करिणी नाना
योग भोग अरु राग विरागा अनुपम दृश्य अपूरव लागा
हिमआलय आलय नियराया उतरन लगे सकल मुनिराया
दिङ्मण्डल ज्वालामय भासा गिरि जनता पाई अति त्रासा

सूरज सप्त उगे नभ भाई अस कहि कहि जनता अकुलाई
लोहित राग गगनमहँ व्यापा प्रलय जानि सब थर थर काँपा
सुनत शब्द निकसे गिरि अयना लागे चितवन अनिमिष नयना
द्विजवर वेष निरखि हरखाये जानि सप्तऋषि शीश नवाये
जय जय करहिँ पाणि युग जोरे पुनि पुनि नवहिँ विनय रस बोरे
बहुरि दण्डवत् कियउ प्रणामा अर्पे अर्घ आदि लय नामा
भृंगारक जल चरण पखारे सुवरन सिंहासन बैठारे
सीँचि उदक सो सकल निकेता पान कियउ परिवार समेता
शिर धरि धरि सब भये कृतारथ जन्म कर्म फल लहे यथारथ
प्रिय उपहार विविध विध दीन्हा तदनन्तर आवेदन कीन्हा
जीवन जन्म सफल मम आजू दरस पावि राउर मुनिराजू
पूछे कुशल आदि मुनिराया पुनि शंकर सन्देश सुनाया
सुनत अद्रिपति अति सुख पाये लोचन अश्रु प्रवाह बहाये
पुलकित गात सके नहि बोली तनु कम्पित लागी जनु डोली
कथमपि सुस्थिर भै नयसानी बोले अद्रि अमिय सम बानी
जन वत्सल सेवक सुखदाई करुणाकर करुणा दरसाई
कहाँ अचल जड़ पाहन रूपा कहाँ सच्चिदानन्द सरूपा
जन अवगुन नहि गुनहिँ महेशू दीन जानि प्रभु हरहिँ कलेशू
नहि अनवाप्त आप्य कछु जाके नाटक सम व्यवहृति सब ताके
भक्त मनोरथ पूरण हेतू नाना चरित करहिँ वृषकेतू
भवसागर हरचरित जहाजू पार होइ चढ़ि भक्त समाजू

बिहँसि कहे पुनि गिरिवर वानी अति अनुराग सुधारस सानी
रीति परीति व्यवस्था कीजै वाक्यदानकी अनुमति दीजै
कन्या रत्न शुद्ध मम एहू प्रभु चरणारविन्द नित नेहू
गुणागार शंकर वर जाके भाग्य सराहि सके को ताके
वंश उजागर भयउ हमारा शंकर वर जसु लागहिँ द्वारा
कन्यारत्न समर्पण करिहौँ अनायास भवसागर तरिहौँ
कन्या कियउ विविध व्रतचर्या शंभु चरण जलजात सपर्या
सफलमनोरथ कियउ विधाता वर जाके त्रिभुवन वरदाता
प्रेम पूर गिरिवर मन बाढ़े मूक सरिस आगे भउ ठाढ़े

सोरठा

गिरिवर दशा निहारि, अति प्रसन्न मुनिगण भयउ ।
हृदय सरोज विहारि, सुमिरत भउ प्रभु पद जलज ॥५९॥

दोहा

गिरिवर प्रति बोलन लगे, करत तासु गुण गान ।
धन्य धन्य तुम धन्य तुम, विद्या बुद्धि निधान ॥१०९॥

चौपाई

जानौँ तोहि अचल बड़ भागी जो प्रभु पद पंकज अनुरागी
धन्य मातु पितु धनि कुल तासू शंकर चरण भक्ति उर जासू
दश दश पूर्वापर उद्धारहिँ इक विंशतितम आपुहिँ तारहिँ
शंकर आदि शक्ति जगदम्बा सुता भई तुअ जगदवलम्बा

वेद जाहि चिति शक्ति पुकारत प्रकृति जाहि कपिलादि उचारत
जो शंकर मानस सर हंसी दास जासु सुर नर मुनि वंशी
जो योगीजन हृदय प्रदीपा सोइ सुता तुअ गिरि कुल दीपा
विश्वाधार चराचर जननी सोइ सुता तुअ पुरहर रमणी
सुनि अस वचन हरषि हिम अयना विनय करत गहि पद प्रिय वयना
कवन वस्तु उपहार चढ़ावउँ रत्नादिक मन आनि लजावउँ
यह शरीर परिवार समेता करौं समर्पित सहित निकेता
जो धन धाम प्रभृति मम नाथा अङ्गीकृत करि करिय सनाथा
दास बनाय मोहि अपनाइय आज्ञाकारी मोकहँ जानिय
सुनत निवेदन मुनि सुख पाये पुनि पुनि आशीर्वचन सुनाये
सब लायक तुम परम प्रवीना हम तपसी वनवास अधीना
निस्पृह सकल कामना त्यागी तुअ आदर भाजन बड़ भागी
प्रकृति सुता जसु पुरुष जमाता तसु अचरज नहि कौनिहुँ बाता
यही बड़न कै सहज बड़ाई विप्र जाति आदर अधिकाई
जो तुम दियउ सबहि हम लीन्हा हृष्ट चित्त तुम कहँ पुनि दीन्हा
लै आयसु अन्तःपुर गयऊ सपरिवार गिरि आवत भयऊ
सब मिलि मुनि चरणन शिरनाये पुनि पुनि पुत्री प्रणति कराये
मुनि मनहीं मन कियउ प्रणामा सुमिरे दुर्गा आदिक नामा
प्रकट कहे मुनि शिर धरि पाणी भव सौभाग्यवती इति वाणी
आयुष्मती भवाचल कन्ये पुत्रवती भव त्रिभुवन धन्ये
पुनि गिरिवरहिं शुभाशिष दीन्हे आदर भाव यथाविधि कीन्हे

दोहा

चाहत करन पयान हम, भाखे सकल मुनीन्द्र ।
अवलोके मेना वदन, समयाभिज्ञ गिरीन्द्र ॥११०॥

चौपाई

गिरिवर हृदय भाव बुझि मैना बोली नारि सुलभ शुभ बैना
कन्या मोरि परम सुकुमारी वर बौराह दरिद्र भिखारी
विकट रूप त्र्यम्बक त्रिपुरारी अति सुन्दर तनु गौरि दुलारी
नकुल नाम कुल जाति न जाको कन्या मोरि वरिहि कस ताको
किये काज अस कौन प्रतिष्ठा अहह राउरो कैसी निष्ठा
नारद मुनि टोना करि गयऊ कुमरि गौरिके बुधि हरि लयऊ
यदि नारद मुनि पुनि फिरि ऐहैँ दाढ़ी मूँछ रहित ह्वै जैहैँ
यदि आग्रह प्रभु करब अकाजू डूबि मरब सरिता महँ आजू
लै कन्या करि नैहर गमना करिहौँ जीवन यापन अपना
वर गुण कवन नाथ वर माहीँ अस सम्बन्ध करब हम नाहीँ
सुनि अस वचन हँसे सब ही जन ऋषि सप्तक अरु भूधर परिजन
मेना प्रति बोले गिरिराई तत्त्व विषय मैँ कहौँ बुझाई
तुम मानसी पितृगण कन्या तासु बुद्धि कस भई जघन्या
संहर्ता कर्ता रक्षयिता काशीपति निःश्रेयस दाता
मंगलनिलय विश्व आधारा तासु शक्ति गिरिजा अवतारा
शब्द-अर्थगत अपृथक् सत्ता गौरी शंकर हू महँ तत्ता
जन्म जन्म कृत पुण्य प्रसादा हर गौरीवर तजहु विषादा

सुनि पति वचन मौन भइ मैना आनत वदन सजल युग नैना
साध्वी अरुन्धती पुनि भाखी रवि चन्द्रादिक साखी राखी
वचन हमार सत्य करि मानहु प्रकृति पुरुष गौरी हर जानहु
हर संगिनी सदा तुअ गिरिजा यथा मुरारि संगिनी अब्जा
कारण वश वियोग तत्कालिक पुनि संयोग सदा चिरकालिक
सन्तति नेह मातृगत जैसा नहि अन्यत्र होत कहुँ तैसा
तुअ निर्बन्ध मोहकृत एहा हेतु जासु निज सन्तति नेहा
ह्वै उल्लसित सजहु संभारा सुनहु शुभाशीर्वाद हमारा
सदा सुहागिनि सुता तुम्हारी पतिसेवा यदि सत्य हमारी
वीरप्रसू पुत्री निज जानहु आशीर्वाद सफल करि मानहु
वरगुण सकल सदाशिव माहीँ अविश्वास मन लावहु नाहीँ
सुन्दर तनु षोड़श वर्षीया भूषा भेष परम कमनीया
कन्या वर अनुपम अनुरूपा नहि वास्तविक महेश विरूपा
नहि सम्पति कर सीमा ताके धनद आदि सुर अनुचर जाके
अज अनादि अद्वय शिव जोई जन्म जाति कुल तसु कस होई
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माहीँ भेद वेद कछु भाखत नाहीँ

दोहा

सुनि अरुन्धती वचन शुभ, मेना मन हरखाय ।
कही वचन नहि टारिहौँ, मातु वचन मन काय ॥१११॥

सोरठा

लै कन्या निज कोर, मुनि पत्नी आशिष दई ।
सुता सुहागिनि तोर, पुत्रवती पति मानिता ॥६०॥

चौपाई

जिमि प्रतिबिम्ब बिम्ब अनुहरई तिमि पुत्री तुअ हर अनुसरई
एहि अहिबात अचल सब काला सुनि सुनि हिय हर्षित गिरिबाला
पुनि पुनि सुता प्रणाम कराई तासु चरण मेना हरषाई
सपत्नीक मुनिवर गिरि नाहा कीन्हे सब मिलि नियत विवाहा
मोद प्रमोद विनोद प्रवाहा बाढ़े निश्चित भये विवाहा
सगुन द्रव्य पाये दैवज्ञा कियउ अचलवर विविध अनुज्ञा
काञ्चन भूधर आदि निमन्त्रण कीन्हे इष्ट मित्र आमंत्रण
साजन लगे विविध संभारा और भयउ बहु भाँति विचारा
ऋषि मण्डली प्रयाण समुद्यत निरखि हिमालय भयउ सुसंयत
विनय प्रणामादिक व्यवहारा भयउ यथोचित शिष्टाचारा
व्योम मार्ग मुनिमण्डल गयऊ द्रुत कैलासाचल नियरयऊ
उतरे मुनि सप्तक हरषाई जय जय आदिक वचन सुनाई
मुनि मण्डल द्युति चहुँदिशि छाई सप्त शिखा जनु सम्मुख आई
दूरहिं ते सब कियउ प्रणामा पहुँचि चन्द्रशेखरके धामा
वट तरुतल आसीन कृपाला निरखि लहे सब हरष विशाला
अति प्रमुदित द्रुतगति सब धाये शंकर पद पंकज शिर नाये
शंकर सबहिं शुभाशिष दीन्हे अति प्रसन्न मुख आदर कीन्हे
निकट बुलाय पूछि कुशलाता कहे कहहु वैवाहिक बाता
उचित समादर तुम्हरे कियऊ गिरिवर जन्म सफल करि लियऊ
किमु पायउ शुभ आशिर्वादा लहे भाग्यबल विप्र प्रसादा

सुनि संदेश मोर गिरिराजा कहहु भयउ कृत स्वीकृति काजा
जुरे तहाँ किमु सकल समाजा भयउ सबहिँ अभिमत यह काजा
किमु कुटुम्बिनी सहित कुटुम्बा वयोवृद्ध नर नारि कदम्बा
कहु यह काज सबहिँ मन भाये स्वीकृति सूचक वचन सुनाये
किमु विवाह दिन निश्चित कीन्हा लग्नादिक मुहूर्त कहि दीन्हा
किमु निमन्त्रणामन्त्रण हेतू पठये दूत तुषार निकेतू
वैवाहिक उद्योग अनेका सो किमु करन लगे सविवेका

दोहा

सुनि शंकर प्रश्नावली, मुनिगण कहे विचार।
तव संकल्पाधीन सब, सृष्टि स्थिति संहार ॥११२॥

सोरठा

गिरिवर सुनि संदेश, जानि लाभ दुर्लभ सुलभ।
शिरोधार्य आदेश, राउर कियउ प्रसन्न मन ॥६१॥

छन्द

गिरिवर बड़भागी प्रभुअनुरागी आदरभाव बहुत कीन्हे
लखि तसु मर्यादा आशीर्वादा ताहि विविध विध हम दीन्हे
साधे शुभलग्ना हर्ष निमग्ना साजहिँ साजा गिरिराजा
जानिय सब सिद्धी मंगल वृद्धी जय जय जय त्रिभुवन राजा

चौपाई

वासर तीन ब्याह अब बाकी भउ मांगलिक रीति गिरिजाकी
ब्याह पूर्व दिन कुमरम तहँमा मंगलमय विधान बहु जहँमा

मज्जन पूजन दान विधाना वधू वृन्द मिलि गावहिँ गाना
कत कुमारिका-ब्राह्मण-भोजन गणना तासु सकै करि को जन
समाचार सब कहे मुनीशा भयउ सहास वदन जगदीशा
पुनि मुनि गण आगे भउ ठाढ़े परमानन्द प्रेमरस बाढ़े
बोले नाथ बहुत श्रम पाये करि सम्पन्न कार्य मम आये
करि विश्राम जाहु निज धामा बहुरि आय साधहु सब कामा
अनपायिनी भक्ति मम जोई हृदय तुम्हार बसिहि नित सोई
चले सप्तऋषि करत प्रणामा ब्रह्मलोक पहुँचे निज धामा
तदनन्तर प्रभु कियउ विचारा लोकाधिपति लौकिकाचारा
नन्दी आदि गणहिँ बुलवाये बोले ब्याह समय नियराये
लौकिक रीति उचित अनुसरहू वरयात्रिक आमन्त्रण करहू
वैवाहिक संभार जुटावहु अञ्जलि भरि भरि रत्न लुटावहु
संपादित जानिय सब काजू कहे प्रमथ सब करिहां आजू
सबहिँ विसर्जन कियउ तुरन्ता श्रीश्रीपति सुमिरे भगवन्ता
पहुँचे तुरत आय सुरमर्दन कियउ परस्पर प्रेमालिंगन
कुशलादिक प्रश्नादि अनन्तर हरि कर धरि बोले श्रीशंकर
तीजे दिन शुभ लगन विवाहा बोलि गये अबही ऋषिनाहा
सकल भार आपुन शिर लीजै सब संघटन यथोचित कीजै
सस्मित मुख बोले श्रीनाथा तव संकल्प सिद्ध सब नाथा
कियउ निमन्त्रित सब दिक्पाला मुनि मण्डली सकल ततकाला
नट नर्तकी किन्नरी जेते पठये बोलि चतुर्भुज तेते

स्वर्ग मर्त्य पाताल-निवासी किंयउ निमन्त्रित घट घट वासी
भई पुरारि वासना जैसी सब संभृति संभृत भइ तैसी
लिखि नहि सकै लेखनी शोभा रसना लहै बखानत क्षोभा
स्वयं विष्णु विधि लोक सिधाये चतुरानन कहँ संगहिं लाये
नमहिं परस्पर शिव चतुरानन तहाँ निरर्थक भेद विभावन
ब्रह्मा विष्णु महेश विभेदा जो जन करइ लहइ अति खेदा
निगमागम भाखत नहि अन्तर कहहिं न जासु शुद्ध अभ्यन्तर
जो अभेद जानहिं जन साधू तरहिं महा भवसिन्धु अगाधू
ब्रह्मा विष्णु महेश समेता लहेउ अतुल छवि शंभु निकेता
भयउ क्रमागत सकल बराती समारोह अतुलित दिन राती
अनुछन परमानन्द प्रवाहा जानि निकट अति शंभु विवाहा
सब सत्कार यथोचित पायउ यशोगान सब थल सब गायउ
नहीँ न्यूनता दीखत कोई जो जो चाहहिं पावहिं सोई
अशन वसन रत्नादिक वितरण प्रमथ वृन्द तहँ करहिं छनहिं छन
नाच गान अरु वाद्य विधाना करहिं मुदित मन जहँ तहँ नाना
विप्रवृन्द आशिष उच्चरहीं जय जय धुनि वन्दीजन करहीं
भयउ परम उत्सव हरधामा परिपूरित सबकर मनकामा

दोहा

विनत पुरञ्जन कहत भउ, करि करि दण्ड प्रणाम।
सुनन चहौं कीदृश गुरो, परिणयविधि गिरिधाम॥११॥

सोरठा

सुनत पुरञ्जन बैन, भयउ निरञ्जन हृष्ट अति।
ध्यान निमीलित नैन, सुमिरि शंभु भाखन लगे ॥६२॥

चौपाई

तात यथामति करौँ बखाना भउ गिरिगृह जस उत्सव नाना
यदपि यथावत् सकौँ न गाई कहौँ तथापि कछुक सकुचाई
जिमि बालक विधु छूअन चहई पंगु नगारोहण मन करई
मूक वेद अध्यापन इच्छू हमहुँ तथा यह कथा विवच्छू
तात चरित यह जलधि समाना मति हमार सफरी परिमाना
पावि सकौँ कस ताकर पारा प्रभु पद नौका मात्र सहारा
प्रकृत कथा सुस्थिर चित सुनहू अघटित घटना सुघटित गुनहू
अघटित घटना पटुता जासू सब कारज समर्थ पितु तासू
कुमरम दिन प्रातहिँ गिरिराई जाय प्रिया सन कहे बुझाई
करै आज गौरी व्रत पूजा संयम नियम कार्य नहि दूजा
सुनि मेना बोली हरषाई सब सम्पादन नाथ रजाई
व्रत विधान वत्से करु आजू कियउ अनुज्ञा भूधर राजू
अस कहि सकल पुरंध्री वर्गा पठये बोलि सुवासिनि गर्गा
शिविकारोहण करि सब आई मंगल गान करहिँ हरषाई
मधुर मनोहर धुनि पंचम सुर सुनि विमुग्ध नर नाग सुरासुर
वृद्धवधू उद्वर्तन करई गौरी परम मोद मन भरई
मंगलमय गायउ सब गीती कियउ यथोचित गिरि कुलरीती

गीत

करत वधूगण उद्वर्तन विधि याचक जन जय जय करिया
कलरव गान नृत्य अभिनयमय ढोल ढाक धुनि मन हरिया
करहिँ स्वस्तिवाचन पण्डितजन कुमरि प्राणपति उर धरिया
युगल वंश नामावलि गावहिँ पावहिँ भूषण पट सरिया
बढ़त प्रमोद विनोद लहरिया सुधि बुधि बिसरी नर नरिया

चौपाई

आमन्त्रित पुरयोषित नाना मेना तिनहिँ दियउ बहु दाना
मृद्भाजन भरि पृथुक सहस्रा सिंदुर तेल फुलेल अजस्रा
गिरिनायक भाखे तब आई कुमरम लग्न गयउ नियराई
अध पहरा बाधक नहि होई तथा प्रयत्न करहु सब कोई
गहगह बजन लगे सब बाजा करन लगे सब निज निज काजा
नट नर्तक सब भये तयारा सजे सुभट शत कोटि अपारा
नाद शतघ्नी पुनि पुनि भयऊ श्रोता मनहु बधिर है गयऊ
द्यावा पृथिवी व्यापित भयऊ महानाद नभमण्डल छयऊ
शंखनाद अरु तूर्य निनादा करहिँ विप्र शुभ लग्न विवादा
लम्बित मणिगण रुचिर लालकी रत्नजटित ओहार शालकी
शय्या सुभग फेनसम सोहै मेना लग्नयोग शुभ जोहै
जानि सुअवसर मेना आई इष्ट देवता पद शिर नाई
हरषि सुता नरयान चढ़ाई पुनि पालकी सहस सत आई

कत कत कुलकन्या कुलनारी सभी हृष्टमन चढ़ी सवारी
गिरिवरप्रिया चढ़ी निज याना मन मन सुमिरहिँ सुरगण नाना
कत जन अश्वारोहण कियऊ कत हाथी हौदा चढ़ि गयऊ
स्यन्दन साजि चढ़े वर वीरा कुमरि सहोदर सुभग शरीरा
निज पालकी चढ़े गिरि नाहा महा भीर सूझत नहि राहा
करि मंगल विधि गिरिवर नाना दियउ अनुज्ञा होय पयाना
गन गन शब्द होत चहुँओरा गज रव जिमि गर्जन घन घोरा
हेषित शब्द तुरंगम करहीँ भूषण झनत्कार मन हरहीँ
को कवि वरणि सकै छवि कैसी घटाटोप नभ मण्डल जैसी
चले अचलपति सहित निशाना डंका चोट भयउ घमसाना
जब देखे सुरसरित ललामा दूरहि ते सब कियउ प्रणामा

दोहा

पहुँचि त्रिपथगा तीर सब, उतरि दण्डवत कीन्ह ।
यथायोग्य नरनारि गण, स्नान दान मन दीन्ह ॥११४॥

सोरठा

कियउ प्रबन्ध फरास, परदा हेतुक विविध विधि ।
भयउ न कोइ हरास, सब कहँ अभिमत थल मिले ॥६३॥

चौपाई

पैठी सुरसरि पातकहर्त्री कन्या और परीक्षणकर्त्री
कुमरि-मातु बोली कर जोरी छमहु चूक सब सुरसरि मोरी

लहै अचल अहिवात कुमारी वीर पुत्र सुख सम्पति सारी
गावहिँ गान पुरन्ध्री नारी कर्ण सूर्पिका भरि भरि वारी

गीत

कुमरि नहावहिँ हरखि वधूगण कर्णसूर्पिका भरि वारी
गावहिँ गाइनि मृदु सुर मेना रत्नहार तसु उर डारी
होत उछाह विविध विध अनुपम अति उमंगमय नर नारी
बहु धन रत्न लुटावहिँ गिरिवर जाहिँ सकल मिलि बलिहारी
दान देखि भउ चकित धनाधिप अति हरषित मन महतारी

चौपाई

परिछन करी कुमरि नहवाई मेना विधि बहु विध करवाई
सुमन माल गिरिजा पहिराई गीत नृत्य भउ बजी बधाई
करी मनहिँ मन विनय कुमारी पूरहु मन कामना हमारी
पूजनादि करि कियउ पयाना भूधरवर अति ज्ञान निधाना
औषधप्रस्थ जुटे सब आई पायसान्न कुलवधू बनाई
कुलदेवी आराधन कियऊ विविध चढ़ौआ मणि धन दियऊ
पायसान्न अरु विविध मिठाई द्विज भोजन मेना करवाई
नियुतायुत कुमारिका भोजन भउ वर्णन तसु करि सक को जन
षटरस भोजन सबहिँ कराये नाना स्वादु पदारथ लाये
वस्त्रादिक सत्कृत सब लोगा पायउ सुखमय नाना भोगा
दान दक्षिणा बहु विध कीन्हीँ सुसंतुष्ट सब आशिष दीन्हीँ
आपुहिँ जहाँ लीन्ह अवतारा अन्नपूरणा करुणागारा

गौरी रूप अम्बिका जहँमा सकल मनोरथ करतल तहँमा
शिबिर जाय पायउ विश्रामा आगन्तुक पूरित मन कामा
लहहिँ न मित्र बन्धु अवकाशा घूमहिँ फिरहिँ निमन्त्रित वासा
गिरिवर करहिँ पुछारी पुनि पुनि आयउ सकल सुरासुर नर मुनि
किमु सब लहे यथोचित वासा होय समय पर किमु जिज्ञासा
भोजनादि महँ लहहिँ न क्लेशा अपयश होय न देश विदेशा
कहे कर्मचारी कर जोरी प्रभु राउर महिमा नहि थोरी
आये सकल निमन्त्रित इहँमा होउँ न अनवधान इक लहमा
सबहि यथोचित आदर पावहिँ यशोगान प्रभु राउर गावहिँ
अपन पराया सबहि सुखारी नाथ न दीखत कोउ दुखारी
आदि शक्ति जहँ लिय अवतारा तहाँ असंभव क्लेश विचारा
गिरिवर उठि अन्तःपुर गयऊ विधि विधान सब पूछत भयऊ
सौंपे वधू निकर विधि भारा कहे सँभारहु काज हमारा
सकल प्रबन्ध कियउ हिम अयना देखे हरषि सुता भरि नयना
गिरिवर निज शयनालय गयऊ किंकर्तव्य मग्न मन भयऊ
कथमपि कथमपि रजनी बीती जुटे कर्मचारी अति प्रीती
सावधान सबही रहु आजू होहु सहायक सकल समाजू
आभ्युदयिक आदिक सब काजा करि निश्चित गमने गिरिराजा
द्वार जाय एक विप्र बुलाये तिनहिँ स्वकीय कृत्य समझाये
आज्ञा लेहु शंभुसन जाई आभ्युदयिक आदिक कर भाई
श्रीगणेश कहि कियउ पयाना द्विजवर चतुर कृत्य विधि नाना

पहुँचि विप्र वृषकेतु निकेता अति सुस्थिर भउ विनय समेता
जय जयकार करन पुनि लागे ठाढ़ भयउ बद्धाञ्जलि आगे
प्रभु रुख लखि संवाद सुनाये चन्द्रमौलि सुनि अति सुख पाये
कियउ यथोचित प्रभु सत्कारा पूछे कुशलादिक बहु बारा
आभ्युदयिक आज्ञा प्रभु दीन्ही दै बहु दान विदा पुनि कीन्ही
आयउ विप्र हिमाचल धामा अति प्रसन्न परिपूरित कामा
राजद्वार पहुँचे तत्काला पहिरे हर अर्पित मणिमाला
सब कहँ सकल काज समझाई प्रतीहार पहुँचे तब आई
बोला द्वार विप्र इक आये दरस कामना मोहि जनाये
कहे तुरत भीतर लै आवहु सावधान नहि देर लगावहु
आशीर्वाद देत द्विज आये कैलासाचल खबरि सुनाये
कर्म अनुज्ञा दीन्ह महेशू कृपा जासु काटै सब क्लेशू
आदर भाव नाथ बहु कीन्हा पुरस्कार नाना विध दीन्हा
पूछे गिरिवर कहु कुशलाता किमु धन जन समृद्ध जामाता
जासु कृपा लवलेश प्रतापा मिटै सकल संसृति संतापा
तासु कुशल जानिय सब काला मंगल मूरति मृदुकर भाला
अष्ट सिद्धि नवनिधि धरि रूपा जासु अधीन रहहिं गिरिभूपा
चिन्तामणि जसु इच्छाचारी तसु कीदृश सम्पत्ति पुछारी
रत्नादिक धन कहौं कहाँ लौं वाणी पहुँचि न सकै तहाँ लौं
भुवन चतुर्दश सन्तति जासू परिजन अन्वेषण कस तासू
इन्द्रादिक तसु परिजन जानिय ब्रह्मा विष्णु रूप तसु मानिय

गिरिवर सुनि अस प्रमुदित भयऊ संभृति सम्पादन मन दयऊ
पुनि मैनाकहिँ तुरत बुलाये आनि निकट सो शीश नवाये
बोले तात जाहु कैलासा त्रिभुवनपति शिव शंकर पासा
पूगीफल समेत लै पाना एला आदि मसाला नाना
वरहिँ समर्पहु अतुलित प्रीती लोक प्रसिद्ध पुरातन रीती
सविनय वचन सुनावहु ताही भजहिँ सुरासुर नर मुनि जाही
लावहु निज पालकी चढ़ाई शरणागत सेवक सुखदाई
सुनि मैनाक गयउ कैलासा ह्वै सुसज्ज शशिशेखर पासा
गई सवेरहिँ कुँवर सवारी साज सकल सजि सब सहचारी
आभ्युदयिक संघटन सवेरे करन लगे तब विप्र घनेरे
भाखत भयऊ बहुरि गिरिराजा जाय हँकारहु सकल समाजा
जाय बहुरि रनिवास जनावहु सामग्री सब तुरत जुटावहु
कुलदेवी गृह मार्जन करहू पूजन सामग्री तहँ धरहू
प्रथम देवता पितर अराधन तासु कृपा सब कारज साधन
आभ्युदयिक मातृका समर्चा करिहौं आपुहि कुलगुरु अर्चा
कन्यादान स्वयं ही करिहौं कन्या कर वर कर पर धरिहौं
लौकिक रीति नीति अनुसरिहौं मुक्ति पदारथ करतल करिहौं
गह गह बजन लगे सब बाजा नट नर्तक नाचत लय साजा
गीत सुगायक गावन लागा अतिशय मधुर रागिनी रागा
वन्दी भाट विदूषक जेते औषधप्रस्थ इकत्रित तेते
द्विजगण जयजयकार सुनावहिँ हटो हटो कहि भटगण धावहिँ

उत्सव संकुल गिरिवर धामा वन्दी जन वरणहिँ गुणग्रामा
अति उत्सव जहँ तहँ दरसाई घर घर मंगलमोद बधाई
बन्दनवार पताका नाना जहँ तहँ सुन्दर तने विताना
द्वार द्वार मंगल घट राजै कदली तरु अवली छवि छाजै
मंगलमय फल फूल सुहावन शोभामय दर्शक मन भावन
मारग सुरभि वारि छिड़काई भट सुसज्ज दुहु दिश दरसाई
पंक्तिबद्ध भट भीर हटावहिँ राजकीय जन द्रव्य लुटावहिँ
बैठी वातायन ढिग नारी चढ़ि चढ़ि निज निज उच्च अटारी
गावहिँ गीत बजावहिँ वीना वर-आगमन प्रतीक्षा लीना
चले सकल आबालक वृद्धा कहत आजु जीवन फल सिद्धा
कन्या वर देखब भरि नयना बड़भागी गिरिवर अरु मयना
जामाता जसु त्रिभुवननाथा हमहुँ पौर नर नारि सनाथा

दोहा

देव पितर पूजन कियउ, गिरिवर अति हरषाय।
भयउ पुरोहित तृप्तमन, दान दक्षिणा पाय ॥११५॥

सोरठा

लागा निज निज काज, करन कर्मचारी निकर।
सारा संग समाज, भार स्वयं गहि गहि लियउ ॥६४॥

छन्द

सुनि उत्सव घटना अनुपम रचना जन्म कृतारथ मैं माना।
शंकर गुणगाना अमिय समाना अमित पुण्यफल मैं जाना॥

गुरुवर तव करुणा संसृति वरुणालय अपार नौका रूपा
शंकरचरितामृतअमितअनुपमितकहिसुनिगिरै न भवकूपा

चौपाई

कहे पुरञ्जन जब अस वयना निरखि निरञ्जन करुणा अयना।
कहे तात तव जन्म कृतारथ पाये प्रभुपद प्रेम पदारथ
सुनहु शंभु गाथा मन लाई ऐहिक आमुष्मिक सुखदाई
गिरिवर तनय चले हरषाई पहुँचे कैलासाचल जाई
चकित भयउ रजताचल देखी श्रीशंकर ऐश्वर्य विसेखी
सुनि आगमन तासु त्रिपुरारी सुख आसीन समेत मुरारी
भेजि प्रमथ वर निकट बुलाये करि स्वागत आसन बैठाये
अति रम्यता निरखि चहुँ ओरा मन प्रसन्न भउ अचल किशोरा
लै करंक भरि पान सुपारी प्रभु सम्मुख भै वचन उचारी
शरणागत जानिय जन एहू दीन जानि प्रभु करिय सनेहू
कुल हमार चलि करिय सनाथा गहु कृपया मम भगिनी हाथा
अस कहि कर करंक धरि दियऊ नाना भाँति विनय पुनि कियऊ
शंकर हँसि अङ्गीकृत कीन्हा धौत वस्त्र युग मुर रिपु दीन्हा
लौकिक रीति भयउ बहु भाँती कियउ हास हरि जलधर काँती
हम सब चलब राउरो गेहा देखब गिरि गृहिणी के नेहा
सुनि अस इन्द्रादिक सब विहँसे हर मीलित लोचन तब विकसे
भई वारता विविध प्रकारा लौकिक रीति-परीति विचारा
सो प्रसंग हम प्रथमहि गाई आगिल कथा सुनहु मनलाई

भयउ कुमार प्रेम आधीना भई प्रकट हिय भक्ति नवीना
रहे ठाढ़ सम्मुख कर जोरे मौनीभूत विनय रस बोरे
निरखि नाथ तसु प्रेम प्रसारा बरसाये वचनामृत धारा
भोजनादि करि करि विश्रामा खबरि जनायहु तब निज धामा
यथा समय हम सब तहँ आइब समाचार यह आप सुनाइब
अति प्रसन्न मन जानहु मोही दुर्लभ कछु न मनोरथ तोही
इन्द्रादिक गिरिसुतहिं जिमाई स्वादु पदारथ सकल मँगाई
लै मुख शुद्धि कुमार सिधाये पहुँचि शंभुपहँ शीश नवाये
करि अति विनय चले हरषाई करि अनुगमन फिरे सुरराई
मुरमर्दन शतमखहिं बुलाये पहुँचि सहस लोचन शिर नाये
शतमख कहे युगल कर जोरी सुनिय नाथ कछु विनती मोरी
शुभ अवसर वैवाहिक आजू आयसु होय सजौं सब साजू
स्वामिन् अब समुचित नहि देरी होय अनुज्ञा बाजै भेरी
शंकर रुख लखि कहे मुरारी करु सबही बरात तैयारी
बाजन लगे विविध विध बाजा जब आज्ञा दीन्ही सुरराजा
पौरोहित्य भार हर दियऊ विधि प्रसन्नमन स्वीकृत कियऊ
स्वीकृत कियउ भार सब कोई पृथक पृथक हर्षित मन होई
वैवाहिक सामग्री जेते चले भार वाहक लै तेते
ब्राह्मी प्रभृति मातृका सर्वा पहुँचि रजत गिरि हर्ष अखर्वा
अलंकार परिणय अनुरूपा शंभु समक्ष धरी शुभरूपा
सकल प्रसाधन परसि महेश्वर धरेउ वेश स्वयमेव मनोहर

भस्म सुरभि चन्दन ह्वै गयऊ अजिन रुचिर अंशुक छवि छयऊ
भाल कपाल भयो शिर भूषण मणिगण खचित मनोगति तूषण
सुन्दर तिलक ललाट विलोचन सुभग रूप मनसिज मद मोचन
कर भूषण अरु बाहु विभूषण अहिवर भयउ विगत सब दूषण
सर्पमाल मणिमाला भयऊ फणिमणि यथारूप रहि गयऊ
यह महिमा अचरज नहि तासू उत्पति थिति हति लीला जासू
नहि स्वीकृति सज्जन परिहरहीँ नहि नय मारग तिल भरि टरहीँ
नहि उरगादि तजे त्रिपुरारी केवल आकृति बदली सारी
शोभानिलय बाल रजनीमणि शोभमान जिमि मणि चूड़ामणि
प्रमथ वृन्द लाये करवाला जहँ प्रतिबिम्बित भउ शशिभाला
कियउ मातृगण दुलह चुमावन दूर्वाक्षत द्विजगण चतुरानन
सुर मुनि पत्नी मंगल गाना कीन्ह समय समुचित विधि नाना

गीत

मंगल देहु देवि करुणामयि सकल गुणालय जय मैया ॥
सब मंगल कारण करुणा तव तव पद भवसागर नैया ।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर महिमा तव प्रसाद बल श्रुति गैया ॥
चिन्तामणि सुरधेनु कल्पतरु तव बल सकल सिद्धि दैया ।
आजु अपूरब मंगल घटना करु असीस त्रिभुवन रैया ॥

चौपाई

यह प्रसिद्ध वरवीर अचारा कीन्ह महेश रीति अनुसारा

दोहा

कैलासोपम वृषभ वर, भउ आरूढ़ महेश ।
नन्दी भुज अवलम्बि प्रभु, बने मनोहर वेश ॥११६॥

सोरठा

अनुगमनी वृषकेतु, ब्राह्मी आदिक मातृका ।
उत्सव देखन हेतु, विधु सप्तक जनु उदित भउ ॥६५॥

चौपाई

काली चली कपालाभरणा जहँ कविवर कछु उपमा वरणा
नील पयोद घटा जिमि सोहैं सित बलाकिनी शिखि मन मोहैं
पाछे चले प्रमथ शत कोटी जहाँ शलभ संख्या अति छोटी
करन लगे मंगल धुनि पुनि पुनि चले अमरगण तुरही सुनि सुनि
भई शंभु यात्रा अस तबही करन लगे अनुमिति सुर सबही
आतपत्र सित गहे दिनेशा विश्वकर्म निर्मित शुचिवेशा
गंगा अरु यमुना है साथा चामर युग लै निज निज हाथा
वीजन लगीं हृदय हरषाई शिव सेवन अभिरुचि अधिकाई
अनुगमने ब्रह्मा अरु विष्णू त्रिभुवन धन्य असुर गण जिष्णू
मूरति तीनि न वस्तु अनेका जिमि बहुरूप इक्षु रस एका
निर्गुण एक सच्चिदानन्दा जानि न सकत जाहि मतिमन्दा
तासु अनुग्रह हेतु अरूपा भउ तनु त्रय विधि हरि हर रूपा
नमहिँ परस्पर देहिँ असीसा वस्तु अभिन्न एक जगदीसा
ज्ञानी जन मानहिँ नहि भेदा भेदवादि जन पावहिँ खेदा

लोकपाल इन्द्रादि अधीना राज चिह्न छत्रादि विहीना
ह्वै विनम्र नन्दी ढिग आये नन्दी तासु खबरि पहुँचाये
हर करि कृपा लखे सब काहू भउ कृतकृत्य रूप तब ताहू
बद्धाञ्जलि सब कियउ प्रणामा पुलकित तनु लै लै निज नामा
सबहिं यथोचित आदर कियऊ सब उपहार निरखि छुवि दियऊ
शिरकम्पन विधि आदर पाये वचनादर लहि हरि हरषाये
मृदु हासादर सुरपति पाये दया दृष्टि सुरगण हरषाये
जय जय करत सप्त ऋषि आये स्मित मुख शंकर पास बुलाये
ऋत्विज कर्म वरण हम कीन्हा पूर्वमेव किमु विसरि न दीन्हा
राउर कृपा यज्ञ सम्पादन आशा हमहिं और नहि साधन
भूसुर दया सृष्टि निर्वाहा आगम निगम पुराण प्रवाहा
ब्रह्मा हरि हम निज निज कारज करैं सदा राउर बल आरज
विप्र अवज्ञा जो जन करई रौरव नरक कल्प शत परई
निष्ठा किंवा होय अनिष्ठा विप्र वंश कर सदा प्रतिष्ठा
कर्मअनिष्ठ लहहिं नहि शक्ती कर्मनिष्ठगत सकल प्रशक्ती
पूज्य परन्तु सबहि कर दोऊ होहिं सशक्ति अशक्तिक जोऊ
ब्राह्मण और हुताशन मोरा आननभूत करत श्रुति सोरा
उभय मध्य धरणीसुर पूजा अति प्रिय मोहि तथा नहि दूजा
सुनि अस विप्र वर्ग सकुचाये हर पद सरसिज शीश नवाये
कहे यही प्रभु की प्रभुताई निज दासन कहँ देहिं बड़ाई
विश्वावसु आदिक गंधर्वा पहुँचे गावत गुणगण सर्वा

त्रिपुरदाह अन्धकवध गायउ गावि जलन्धर विजय सुनायउ
रंभा आदिक अमित उछाहा चली सकल सुनि शंभु विवाहा
नट नर्तकी बजनिया जेते पहुँचि गये कहि सकउँ न तेते
स्यन्दन मत्त मत्तंग विराजै अरु वाजी राजी छवि छाजै
अमित पदाति वृन्द अति सोहै लखि बरात दर्शक मन मोहै
गज़ घंटा रव घनरव मानिय वीची रव स्यन्दन रव जानिय
छन धरणी छन छुवत अकाशा तुरग वायुगति करत तमाशा
हय हेषित तुरही रव रूपा हैकल छटा तड़ित अनुरूपा

दोहा

अचल सचल डोलन लगे, धरणी भई अधीर ।
कच्छप कछमछ करत भउ, हर बरातके भीर ॥११७॥

सोरठा

करुणाकर त्रिपुरारि, कृपा दृष्टि करि लखत भउ ।
बिहँसे देव मुरारि, त्रिभुवन जन निर्भय भयउ ॥६६॥

चौपाई

वृषभारूढ़ बालविधु भाला पहुँचे औषधप्रस्थ कृपाला
नहि कछु हृदय हर्ष अधिकाई समता सदन शंभु श्रुति गाई
नहि सुख दुख नहि हर्ष विषादी सोइ साधु अस कह निगमादी
समता ईश ईशता लक्षण समता योग कहत सुविचक्षण
सुनहु तात कछु प्रकृत कहानी उत्सवादि गिरिवर रजधानी
सकल पुरन्ध्री अति हरषाई कौतुक लिपि गृह लिखी बनाई

अति व्यग्रा वैवाहिक काजू निज निज गृह साजहिँ सब साजू
गिरिवर गृह इव गृह गृह शोभा निरखि अमर वनिता मन मोहा
धन्य धन्य गिरिवर पुरवासी जहँ दूलह शंकर कैलासी
सुरतरु कुसुमाकीर्ण महापथ इत उत धावत वायुवेग रथ
पट्ट वस्त्र कृत विविध पताका काञ्चनमय तोरण जिमि नाका
आरोपहिँ सब निज निज अंका गिरि कन्यका प्रीति पर्यंका
पृथक् पृथक् भूषण पहिरावहिँ प्रेम त्रिपथगा सबहि नहावहिँ
पति गृह गन्त्री पुत्री जानी प्रेमाकुल गिरि उभय परानी
मातु पिता निज प्राण समाना कन्या विरह व्यथा अकुलाना
मैत्र मुहूर्त नखत बारहमा शशि संयोगी जब शुभ लहमा
पति पुत्रान्वित बान्धव नारी पहुँचि निकट गिरिराज कुमारी
देह करन लगि तासु प्रसाधन अभ्यङ्गाख्य प्रथम जसु साधन
सित सर्षप दूर्वादल डारी रुचिर सुगंधित तेल मझारी
गावत गान लगायउ देहा वाण धरायउ सहित सिनेहा
वाण ग्रहण लौकिक आचारा कीन्ह सुवासिनि विमल विचारा

गीत

जयजयदेविसकलसुखदायिनिभयभंजनिजयजगजननी ॥
दुलह दुलहिनी प्रीति परस्पर रहै सर्वदा अटल बनी ।
देह उगारहिँ कुलवनिता मिलि आज सुअवसर गौरिधनी ॥
मैना देहिँ जासु जैसी रुचि अति उदार गिरिवर रमणी ।
मोद प्रमोद नगर परिपूरित वरणि सकत नहि सहसफणी ॥

पुनि उद्वर्तन अङ्ग लगाई निर्मलता निर्मलता पाई
सहज विमल तनु गिरिवर कन्या लहि अभ्यङ्ग विमलतर धन्या
कन्या कर गहि गिरिवर कामिनि चली सुमज्जनगृह गज गामिनि
मरकत जटित कनकमय धामा दृढ़ मुक्ता फल चित्र ललामा
मंगल गान वधू गण गायउ कनक कलश जल गौरि नहायउ

गीत

हरखि वधूगण गौरि नहावहिँ कनककलश जल भरि भरिया
गावहिँ गीत मधुरधुनि सुन्दरि वीणा लय सुनिमन हरिया
करि मृदु हास देहिँ कर ताली आली अवली नागरिया
क्रीड़ा करहिँ परस्पर भिगवहिँ एक एक के पट सरिया
परमानन्द प्रवाह दिवस निशि छनछन भीतर बाहरिया

चौपाई

मणिमय रुचिर वेदिका जहँमा गई लिवाय कन्यका तहँमा
स्तम्भ चतुष्टय मणिमय राजै पाट वसन चँदवा छवि छाजै
रत्न जटित सुवरन सिंहासन अरुण तिलक अरुणीकृत आनन
साध्वी वधू वृन्द अति धन्या बैठारी गिरिनायक कन्या
विविध प्रसाधन साधन रूपा वस्तु जुटाये जहँ गिरिभूपा
निरखिनिरखि छविअचलकुमारी भई अचल प्रतिमा सब नारी
मण्डनहूँ कर मण्डन कारण गौरी तन मण्डन निःकारण
करत भावना अस सब नारी धरी मौन सुध सकल बिसारी

करि पुनि लोकाचार विचारा सांगोपांग रची श्रृंगारा
नख शिख सकल अंग समलंकृत कियउ अनंग वधू मद गंजित
कुसुम निबद्ध चिकुर अलि रूपा दृष्ट अर्थ विपरीत सरूपा
दीखत भ्रमर भ्रमत सुमनोपरि दृष्ट सुमन इह कच भ्रमरोपरि
सौधस्थित आदर्श मझारी समलंकृत मुख निरखि कुमारी
भइ पति दरश हेतु उद्विग्ना एकतान मन ध्यान निमग्ना
कुल देवता प्रणाम कराई मेना मण्डित तनया लाई
अगणित रत्नादिक चढ़वाई पूजक बोलि सकल दिलवाई
पुनि साध्वीगण प्रणति कराई सो सब आशीर्वाद सुनाई
लहहु पुत्रि पति प्रेम अलौकिक मानस वाचनीक अरु कायिक
लहहु पुत्र कुल युगल यशस्कर रिपुमर्दन सज्जन मन तस्कर
प्रेमवारि परिपूरित नयना बान्ही तसु कर कंकण मयना
मंगल तिलक कियउ हरषाई मैनशील हरताल मिलाई
कञ्ज नयन खञ्जन मद गञ्जन मंगलमय नीलम दुति अञ्जन
गिरिवर कौतुक कृत्य अशेषा करि सम्पन्न प्रसन्न विशेषा
वर आगमन प्रतीक्षाकारी भउ सुस्थिर निज सभा मझारी
लै निज अंक कन्यका मयना कहन लगी अनुशासन वयना
पतिव्रत धर्म सदा अनुसरिहौ कुल देवता अराधन करिहौ
गुरुजन आयसु कबहुँ न टारेहु करि वन्दन सेवन कुल तारेहु
शिशु जन लालन पालन करिहौ देवर आदि सदा आदरिहौ
कबहुँ न निजगृह कृत्य बिसरिहौ अतिथि विमुख कबहूँ नहि करिहौ

सामाजिक कौलिक आचारा सदा निबाहेहु करत विचारा
प्राणाधिक प्रिय अभिमत कारज धरेहु हृदय परिहरेहु अकारज
अस अनुशासन करि बहु भाँती मेना सुता लगायेउ छाती
वार वार मुख चुम्बन करहीं प्रेम अश्रु निज नयनन भरहीं
आनत मुख गिरिराज कुमारी रोदन करहिँ नयन भरि वारी
अन्तःपुर आयउ गिरिराई दशा विलोकि हृदय अकुलाई
धीरज धरि बहुविधि समुझाये लोकाचार विचार सुनाये
बसै स्वामि गृह कन्या जाई हर्ष विषय यह कस कदराई
सुता सती जाके कुल होई भाग्यवान तादृश नहि कोई
ह्वै प्रसन्न कारज सब देखहु जन्म कृतारथ आपुन लेखहु
गिरिवर मनहीँ मन अकुलाये सुता वियोग व्यथा मन लाये
गृहमेधी स्वभाव यह भाई हर्ष विषाद रोधि नहि जाई
ज्ञानी वा अज्ञानी वापी माया जीति न सकै कदापी
जो शंकर शरणागत होई माया जीति सकै जन सोई
गिरिनायक बाहर उठि आये सावधान पुनि सबहिँ कराये
होहिँ सकल प्रस्तुत सरियाती पहुँचन चहत नगर बरियाती

दोहा

पहुँची निकट बरात सब, खबरि जनाये आय।
नन्दीश्वर प्रभु प्रमथवर, सभामध्य गिरिराय ॥११८॥

सोरठा

पहुँचे सहित बरात, पुरहर गिरिवर नगर ढिग।
सुनि सो पुलकित गात, अभ्युत्थानादिक कियउ ॥६७॥

चौपाई

कुशल प्रश्न नाना विध कीन्हे प्रमुदित पुरस्कार बहु दीन्हे
करि बतकही परस्पर नाना नन्दीश्वर तब कियउ पयाना
प्रभु सकाश प्रमुदित मन गयऊ समाचार भाखत सब भयऊ
सचिव बोलि बोले गिरिराई करहु तुरित तैयारी जाई
पठये धावक मन्त्री सब थल मची अचल नायक पुर हलचल
करहिँ स्वस्तिवाचन बुधवृन्दा समयोचित पद पढ़हिँ कविन्दा
वन्दीजन विरुदावलि गावहिँ मंगल मीन मलाहिनि लावहिँ
द्वार द्वार पूरण घट नाना गावहिँ गाइनि मंगलगाना
कुल देवता प्रणमि गिरिराजा कहे सबहिँ साजन सब साजा
भेरी आदि शब्द घनघोरा जन कोलाहल भउ चहुँ ओरा
गायक वादक नर्तक जूटे महामेघ रव बन्दुक छूटे
सुवरन सगुन ज्योतिषी पाये आशीर्वाद देत बढ़ि आये
जय जय करन विप्र गण लागे चढ़ि गजवर गिरिवर भउ आगे
भये बन्धुगण द्विरदारूढ़ा चले सभी बालक अरु बूढ़ा
गिरिवर करत मनोरथ नाना प्रतिगमनार्थी कियउ पयाना
वरहिँ नयन भरि देखब आजू होउँ कृतारथ सहित समाजू
पत्नी पिता जानि आदरिहैँ पुनि बतकही मनोहर करिहैँ
चन्द्रशेखरहिँ करब प्रणामा जो मंगलमय महिमाधामा
श्वशुर बुद्धि यदि करिहैँ प्रणती हमहुँ प्रणाम करब करि विनती
प्रभु दरसन परसन आलापा कोटि कल्प कृत काटत पापा

निज गृह आनब वर बरियाती ह्वै कृतकृत्य जुड़ायब छाती
हरहिँ समर्पब जब निज कन्या होउब हम तब त्रिभुवन धन्या
मुक्त कपाट नगर दरवाजा मिले युगल दल बाजत बाजा
उभय दलीय अतुल कोलाहल भयउ भुवनभरि व्यापित नभ थल
विविध वाद्य धुनि गान मधुरसुर आशीर्वाद सुनावहिँ भूसुर
स्यन्दन करिवर तुरग तुमुल धुनि वधिर कर्ण श्रोता सब सुनि सुनि
वन्दी भाट आदि कत आये निज गुण गरिमा सबहि दिखाये
भिन्न सेतु जिमि वारि प्रवाहा बढ़े उभय दल निज निज राहा
निर्जर निकर कुसुम बरसावहिँ प्रभु पद पंकज प्रेम जनावहिँ

दोहा

मानि लौकिकाचार हर, अचलहिँ कीन्ह प्रणाम ।
सचल अचल संकुचित अति, अचल यथारथ नाम ॥११९॥

सोरठा

पुनि पुनि भूधरनाथ, प्रणमत भउ श्रीशंकरहिँ ।
बोले लक्ष्मीनाथ, करत हास गिरिनाथ सन ॥६८॥

चौपाई

प्रणमिय हरहिँ उचित नहि एहू राउ प्रणम्य न कछु सन्देहू
विद्याप्रद अरु जन्म प्रदाता कन्याप्रद अरु भोजन दाता
भय रक्षण कर्ता गिरिराई ये पाँचो गुरु श्रुति अस गाई
सुनि अस गिरिवर अति सकुचाये अति विनीत मति विनय सुनाये

छन्द

जय जय सुर मर्दन दुष्ट निकंदन सज्जन रञ्जन पाहि प्रभो
जयविधिहरिरूपात्रिभुवनभूपाजयनिगमागमअगम विभो
कृपया तव संभव होत असंभव मैं प्रस्तर कुल क्षुद्र महा
ता कहँ करुणाकर सकल शुभंकर शंकर देव प्रणम्य कहा

चौपाई

तव चतुरानन बोले वचना नहि गिरिवर यह अचरज घटना
आदि शक्ति पुत्री भइ जासू कवन अलभ्य पदारथ तासू
तुम गिरिवर अति कियउ तपस्या तनया भइ तव विश्व नमस्या
लोकाचार मानि गिरिराई देहु असीस शिवहिँ हरषाई
पूरण ब्रह्म लीन्ह अवतारा धरि गौरी शंकर आकारा
रूपभेद वास्तविक अभेदा द्वैतभाव नहि मानत वेदा
होत सकल कृति ईस रजाई निज अभिमान तजहु गिरिराई
लोकरीति पालन अब करहू सब वैवाहिक विधि अनुसरहू
गिरिवर कहे जोरि युग पाणी धरौं शीश प्रभु मंगल वाणी
वरहिँ असीस देइ बहु बारा गिरिवर पठये बोलि कुमारा
कुमर आय पितुपद शिर नाये पिता अनुज्ञा वचन सुनाये
अन्तःपुर तुम खबर जनावहु प्रस्तुत सब संभार करावहु
वरागमन तुम सबहिँ जनावहु खबर जनाय तुरत पुनि आवहु
करि मैनाक सकल तैयारी पहुँचहु जाय जहाँ त्रिपुरारी
पुत्र जाहु पुरमथन सकाशा विनय करहु पूरइ जिमि आशा

पान पूग लै गयउ कुमारा विनय करन लागे बहु बारा
जीवन जन्म सफल प्रभु कीजै पद पंकज हमरे गृह दीजै
गेह पवित्र करिय प्रभु मोरा देखिय सबहिं विलोचन कोरा
हँसि शंकर मुरमर्दन निरखे मनहु हर्ष जलधारा बरखे
उभयपक्ष अति हर्षित भयऊ गन गन शब्द गगन भरि गयऊ
मुरमर्दन शतमख मुख हेरे करहु कूच कहि शतमख टेरे
सुनत टेर गिरिवर हरषाये जिमि निर्धन जन निधिके पाये
सबहि यथाक्रम कियउ पयाना चढ़ि चढ़ि निज निज वाहन नाना
वृषारूढ़ भउ हर भगवाना लगे होन मंगल विधि नाना
अगवानी तहँ भूधर नायक लगे करन आपुहि जनु पायक
सुषमा सदन मनोहर ग्रामा समयोचित मंगलमय धामा
गये शिवाय हरहिँ हरषाई नहि प्रमोद तनु माहँ समाई
वन्दनवार पताका तोरन विरचित जहँ तहँ अति मनमोहन
कुसुमाकीर्ण राजपथ सोहै कविजन सचकित उपमा जोहै
कदलीथंभ पंक्ति छवि छाजै जहँ तहँ वृन्तक वृन्द विराजै
सदल सजल घट द्वार द्वार प्रति शिरधरि प्रमुदित पुर प्रमदा अति
वैणव वाड़ लसित दोबगली वरणत सुषमा कविमति पगली
जहँ तहँ चित्र रुचिरतर लटके छवि निरखत दरशक कत अटके
सस्मित मुख मुर मर्दन बोले मकराकृत कुण्डल युग डोले
कन्या वर जहँ उमा महेशू धनि गृह नगर धन्य वह देशू
वरणि सकै को धरणी महिमा वरणि सकै को याचक लघिमा

वरणि सकै को पर अणु अणिमा वरणि सकै को भूधर गरिमा
सुनि अस भूधरवर सकुचाये जोरि पाणि युग शीश नवाये
धन्यवाद भाजन जग सोई जापर कृपा राउरो होई
पंक्तिबद्ध दरशक दिखलाये दोबगली अति भीर जमाये
तुरगारूढ़ सुभट कत धावहिँ मार्ग मध्यगत भीर हटावहिँ
श्रीशंकरहिँ नगर लै गयऊ गिरिवर मोद मगन मन भयऊ
सकल सुसज्ज चले बरियाती और ससंभ्रम सब सरियाती

दोहा

प्रभु प्रवेश अवसर भईं, संभ्रमवश पुर नारि ।
चढ़ि निज निज अट्टालिका, निरखत नयन पसारि ॥१२०॥

सोरठा

लखब नयन भरि आज, श्रीगिरिजा वर सुभग तनु ।
सकल देव सिरताज, सफल जन्म जीवन करब ॥६९॥

छन्द

जहँ तहँ सब धाई अति हरषाई वातायन निकटस्थ भई
सुधिवुधि बिसराई कोउ कलाई भुज भूषणही पहिर लई
कृश कटि भूषण कंठ विभूषण कियउ कोउ मन मोद भरी
सिन्दुर तिलक और नकबेसरि कोउ नाक अरु कर्ण धरी

चौपाई

द्रुत गवाक्ष पथ धावन काला गलित बद्ध कच मल्ली माला
केवल कर गृहीत शुचि माला भूलि गई कच बन्धन बाला

आर्द्रालक्तक रञ्जित पादा चली तूर्ण गति सहित प्रमादा
शोणित रञ्जित इव भइ धरणी तत्कालिक थिति जाइ न वरणी
अञ्जन दक्षिण लोचन डारी भूली वाम नयन सुकुमारी
द्रुत गति हेतु मुक्त भइ नीवी नहि बान्ही त्वरया कलग्रीवी
भई पाणि अवलम्बित वसना सहसा गिरत भई तसु रसना
सूत्र शेष अंगुठ अवलम्बी करत भई तसु पीन नितम्बी
तोरणादि भूषित नृप मारग पहुँचे रिपु-दल-जलनिधि-पारग
मंगल वेष भाल विधु सुन्दर संग लिये विधि विष्णु पुरंदर
शोभमान दल उभय अनूपा लब्ध मनोरथ भूधर भूपा
सौध गंग भउ बहुल प्रकासा भालचन्द्र द्युति दीपित भासा
लखी अली विस्फारित नयना एकतान मन मर्दन मयना
श्रवणाघ्राण आदि यत वृत्ती भइ मनु लोचन वृत्ति प्रवृत्ती
केवल शंभु दरस आसक्ता पौर वधूगण अति अनुरक्ता
हर कारण दुष्कर तपचर्या समुचित कियउ महेश सपर्या
गौर गात भउ धूसर वर्णा पर्णाशन तजि भई अपर्णा
दासी मात्र बनै जो इनकर भाग्य सराहि सकै को तिनकर
प्राण प्रिया पत्नी पुनि जोई किमु तसु भाग्य वरणि सक कोई
गिरिजा धन्य शंभु अनुरागिनि लब्ध तपस्या फल बड़ भागिनि
अनुपम गिरिजा रूप मनोहर सुन्दर परम अतुल छवि सो हर
निज समस्त कौशल बल गाता सिरजे रूप युगल यह धाता
रूप युगल श्रुति वदन मिलाये निज कृत यत्न सफलता पाये

कुसुमशरासन शंकर जारे अस नहि मन विश्वास हमारे
निरखि महा प्रभु सुन्दरताई रति पति अतिशय गयउ लजाई
रति पति आपुहि निज तनु त्यागा अयश वृथा शंकर कहँ लागा
औषधग्रस्थ वधूगण वयना सुनत मनोहर मर्दन मयना
हिमालयालय पहुँचे आई वृन्द वृन्द गायिनि गण धाई
द्वार देश उतरे तजि वाहन बड़ी भीर भइ दीखत राह न
राजकुमार भीर हटवाई पहुँचे भगिनी पति ढिग आई
मन्द मन्द गति चले पुरारी लिये बाँह गहि देव मुरारी
लोकपाल आदिक अनुगमने प्रविशे सबहि हिमाचल भवने
माथ मौलि कर कंकण सोहै सो छवि लखि मेना मन मोहै
करत हास परिहास वधू गण मेना मोद भरी मनही मन
शंभु प्रवेश समय महिला गण करहिं लाज वर्षण प्रमुदित मन
गगन अमर दुंदुभी बजावहिँ अमरी वृन्द सुमन बरसावहिँ
ब्राह्मण आशीर्वाद सुनावहिँ जय जय करत भाट गण गावहिँ
वन्दीगण विरुदावलि बाँचहिँ नर्तक और नर्तकी नाचहिँ
भेरी ढोल नफीरी बाजत तुमुल कोलाहल गह गह गाजत
बाजत वीण मृदंग मधुर धुनि गान गवैया गावत चुनि चुनि
वरहिँ निरखि नर नारि प्रशंसहिँ अनुपम मुनि जन मानस हंसहिँ
यथा सुन्दरी अचल कुमारी सुन्दर तथा देव त्रिपुरारी
कन्या वर अनुपम छवि दोऊ प्रेमबद्ध चिरजीवी होऊ
करत पलक दरशन अवरोधा अनुपम सुख विच्छेद विरोधा

पुण्य प्रताप दरश हम पाये जड़मति विधि कस पलक बनाये
वृद्धा वधू परीक्षण कारिणि आवत भईं संग लै गायिनि
मंगल गान सकल मिलि गावहिँ सविनय कुलदेवता मनावहिँ

गीत

करुणामयि करुणा करु मैया देहु हमहिँ वर मनभाया॥
आजु परीक्षण विधि शंकर कर मंगल देहु महामाया।
कन्यावर महिषासुरमर्दिनि देवि कपर्दिनि तव छाया॥
पर्वत चढ़ै पंगुजन जननी कञ्जनयनि लहि तव दाया।
पायउ निजनिज सकलमनोरथ जोजो जन तव गुण गाया॥

दोहा

कज्जल वर लोचन कियउ, कियउ सुचन्दन भाल।
मीलित लोचन प्रभु भयउ, नत मुख धीमी चाल॥१२१

सोरठा

लौकिक विधि व्यवहार, हँसि हँसि महिलागण कियउ।
भयउ रीति अनुसार, धरि नासा मंडप भ्रमण॥

चौपाई

वन्दनवार पताका मण्डित मण्डप विप्र पुरोहित पण्डित
भउ विष्टरासीन भगवाना स्वीकृत अर्घ्य सहित मणि नाना
ग्रहण कियउ शंकर मधुपर्का युगल दुकूल प्रमोदोदर्का
गिरिवर पढ़ि पढ़ि मन्त्र समर्पे यज्ञसूत्र मुद्रिका समर्पे

पुरुषसूत्र पढ़ि द्विजगण संगा भयउ अठोंगर लौकिक ढंगा
तव कौतुकआगार लिवाई सकल पुरन्ध्रीवर्ग जमाई
गायउ गायिनि मंगल गाना सकल मधुर सुर सुन्दर ताना
पुनि विधि नैना योगिनि नामा प्रभुहिं करायी हँसि हँसि वामा
अरु कन्या वीक्षण करवाई कन्या कर वर कर धरवाई
प्रति विधि रत्नादिक प्रभु दियऊ लब्ध मनोरथ सबकहँ कियऊ

गीत

गौरि निरीक्षण हेतु शंभु कौतुक गृह आये ॥ ध्रु० ॥
आली अवलि निहारि हारि शंकर ठमकाये ।
करताली करि हास पुरन्ध्री वृन्द बजाये ॥
सैनहिं अली जनाय अली दइ वर सकुचाये ।
गहि अंगुल हर उमा यथाविधि मण्डप लाये ॥

चौपाई

वधू वृन्द कन्या वर लाई मण्डित मण्डप अति छवि छाई
करस्पर्श आनन्द अलौकिक लहे दोउ जिमि निर्वृति यौगिक
कियउ सलोल सलज्जित नैनन उन्मीलन अरु कबहुँ निमीलन
बैठे गिरिवर शंकर सम्मुख गहिकर तिलकुश अतिप्रसन्नमुख
अर्हण सामग्री अधिकाई लखि बहु भाँति धनद सकुचाई
सुवरणमय मणिमय कुप्यादिक निरखि चकित रत्नाकर आदिक
कन्यादान समय शुभ लग्ना बिहँसि पुरोहित बोले बचना
कन्यादान समय शुभ आयउ गोत्रकथन अवसर नियरायउ

नाम गोत्र उच्चारण रीती शास्त्र विहित अरु समुचित नीती
नकुल नाम कर गोत्र विचारा करत न होत बुद्धि संचारा
मैनाकादिक कियउ प्रहासा आली अवलि कियउ मृदु हासा
सुस्मित वदन चतुर्भुज बोले नयन निमीलित शंकर खोले
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नामा हम सब अज अरु अमर अनामा
निर्गुण पूरण ब्रह्म अगोचर हम सब तासु विकास जन गोचर
दीजै तनिक बुद्धि कर योगा करिय विचार विचारक लोगा
सब कहँ सबहि निहारन लागे हास प्रहास सबहि कर भागे
तब हँसि मुरमर्दन पुनि बोले ज्ञान नयन सबही कर खोले
हम सब पूर्ण ब्रह्म अवतारा कार्य ब्रह्म अभिधान हमारा
कारण कारण ब्रह्म हमारा हम कारण कारज संसारा
ब्रह्म गोत्र हम तीन शरीरा अब सन्देह तजहु सब धीरा
प्रश्नोत्तर अब कहिय सविस्तर गोत्र कवन मट्टी अरु पत्थर
देखा सुना कतहुँ अस कोई अनहोनी होनी कस होई
सुनि अस भयउ उभय दल हासा बाजन लगे ढाक अरु तासा
मोद प्रमोद विविध विध भयऊ पुरहित प्रकृत कार्य मन दयऊ
कश्यप सन्तति जगत् समस्ता गिरिवर काश्यप गोत्र प्रशस्ता
कन्यादान कियउ गिरिराजा अति प्रमुदित मन सहित समाजा
लोक वेद बोधित विधि नाना भयउ पुरन्ध्री गायउ गाना
युगल दलीय अमित पूगीफल वितरण भउ पायउ दोऊ दल
तहँ अवशिष्ट कोउ जन नाहीं बरियाती सरियाती माहीं

दोहा

कन्यादान प्रहर्ष अति, गिरिवर उर न समाय ।
धनि धनि गिरिवर पुण्यफल, शंकर जासु जमाय ॥

सोरठा

कन्याप्रद सुरलोक, जाय बसहिँ अस कहत श्रुति ।
मुक्त बन्ध गतशोक, कन्याप्रद गौरीपिता ॥

छन्द

गायिनि पुलकित परम प्रहर्षित गावहिँ मंगलमय गाना
नाचहिँ नट नर्तक हर्ष प्रवर्तक बाजत मधुर वाद्य नाना
उभय वर्ग अपवर्ग सरिस सुख अनायास पायउ तहँमा
उमा उमावर सुरहर आदिक देव दृष्टिगोचर जहँमा

गीत

कन्यादान करहिँ गिरिराजा अति प्रमोद भर उर मैना ॥
सप्तमात्रिका अरु अरुन्धती देत असीस मधुर बैना ।
जय जयकार करहिँ सूरजसुत वरुण कुवेर सहस नैना ॥
कन्या वर छवि निरखि मुग्धसब जानि न जाय दिवसरैना ।
सुमरि सुमरि छवि तादिनकर कवि भाग्य सराहत हिमऐना ॥

चौपाई

उमा उमावर संगम शोभा बरणत कवि कोविद मन क्षोभा
पाणिग्रहण कालिक छवि जैसी वरणि न सकै कोउ कवि तैसी
वेदी निकट वधू वर गयऊ लोक वेद बोधित विधि भयउ
अग्निस्थापन आदिक कर्मा भउ भाखे जस ब्राह्मण शर्मा

ब्रह्म वरण कीन्हे विधु भाला दर्भास्तरण आदि तत्काला
घृत आहुति प्रज्वलित हुताशन क्रम दर्शक पुरहित पद्मासन
कन्या कर्तृक वर मुख दर्शन लोचनपथ आकृति आकर्षन
हृदय हर्ष अति वरणि न जाई निर्धन जिमि दुर्लभ निधि पाई
वधू वरहिँ कहि कहि करवाई अग्नि प्रदक्षिण चतुर लुगाई
गिरिजा मृदु अंगुल हर परसे प्रेमामृत रस जलधर वरसे
श्रीशंकर लाजा छिड़िआयउ मंगल गान वधूगण गायउ
गायउ हरषि गालिमय गाना हँसि मृदु हास वधूगण नाना

गीत

दुलहा दुलहिन देत भाँवरी गाली गावत सरहजिया॥
सुस्मित वदन भालशशि सकुचित लाजा प्रक्षेपण करिया।
पकड़ि उमा कोमल भुजवल्ली हृदय जुड़ावइ विधिकरिया॥
आली अवलि अबीर उड़ावत करि मृदुहास पहथभरिया।
पुनिपुनि हासप्रहास उभय दल लोचनमीजत बरिअतिया॥

चौपाई

गुरु उपदेश पावि गिरि कन्या इष्टगन्ध लाजाञ्जलि धन्या
लाई मुख समीप जस रीती धूमाघ्राण कियउ अति प्रीती
वाणी मधुर पुरोहित भाखी वत्से तव विवाह कृति साखी
आहुति तृप्त हुताशन एहू बढ़ै सदा दम्पति बिच नेहू
सहधर्मिणी सदा प्रभु केरी पतिव्रत पालहु आज्ञा मेरी
परमादरयुत पुरहित वचना सुनी उमा विस्फारित नयना

आतप ताप तप्त पृथ्वीतल तृप्त यथा वारिद्जल थलथल
तथा पुरोहित वचन अमृतसम पियत अचलपतिसुता तृप्त तन
पुनि आज्ञा ध्रुव दर्शन हेतू कीन्ह प्रिया कहँ श्री वृषकेतू
कथमपि दरस भयउ अस वयना कही उमा लज्जा भरि नयना
सकल कार्य पद्धति अनुसारा भयउ भयउ अरु लोकाचारा
सिन्दुरदान सुअवसर देखी गिरि पत्नी मन मोद विसेखी
प्रेम अश्रु परिपूरित नयना रोमाञ्चित तनु गद्‌गद वयना
चतुरानन अस्तुति करि प्रीती करी विविध विध समुचित रीती

छन्द

जयजयचतुराननत्रिभुवनकारण प्रभुप्रसादकृतकृत्य भई।
करुणा वरुणालय परिपालय आलय बाढ़य भक्ति नई॥
वरकन्या असीस प्रभु दीजै कीजै करुणा दृष्टि प्रभो।
सकलकामना सिद्धिऋद्धिनिधि तव करुणालवलेशविभो॥

चौपाई

भउ प्रसन्न सुनि त्रिभुवन धाता शरणागत आरत सुख दाता
गिरि पतिहिँ असीस बहु दीन्हा समयोचित अनुशासन कीन्हा
विधिवत् सिन्दुरदान करावहु नहि विलम्बकरि समय बितावहु
सुनि अस वृद्ध पुरन्ध्री नाना गावन लगी मांगलिक गाना
स्वर्णपात्र भरि सिन्दुर तहँमा धरी वधूगण शंकर जहँमा
रमा और सावित्री आदिक कृत्य करत भउ कायिक वाचिक
सारुन्धतिका सप्त मातृका भई उपस्थित पुलक गात्रिका

साध्वी पौरवधू तहँ शत शत भई इकत्रित अति हर्षित कत
आशीर्वाद देन मुनि लागे सहित वशिष्ठ विनय रस पागे
जय जयकार सकल सुर करहीं वर्षहिं सुमन मोद मन भरहीं
नर्तक नट अरु वन्दी आदिक करन लगे निज निज नृत्यादिक
विविध वाद्य धुनि भउ चहुँओरा जनु गर्जत प्रावृट घनघोरा
लखी सुअवसर सकल लुगाई कुल देवता गीत मिलि गाई

गीत

मंगल देहु दयामयि मैया हेरहु करुणा भरि नयना ॥
प्रणमउँ तव पद पंकज पुनि पुनि हे जगदम्ब कृपा अयना ।
करहु वधूवर प्रति अनुकम्पा जननि अगम्य मनोवयना ॥
शेष शारदा नारद आदिक तव गुण बरणत दिन रैना ।
सिन्दुर करहु अचल गिरिजाकर सज्जन उर अन्तरशयना ॥

चौपाई

अवसर निरखि दीन्ह अनुशासन सिन्दुरदान हेतु चतुरानन
सिन्दुर आदिक सप्त सकारा यथा प्रसिद्ध लौकिका चारा
एकत्रित भउ मंगल रूपा दीन्ह यथा आयसु गिरिभूपा
कियउ स्वस्तिवाचन बहु विप्रा दमके भिन्दिपाल अति क्षिप्रा
सपत्नीक गिरिवर कर जोरे विनवहिं गुरुहिं विनय रस बोरे
तव प्रसाद हम भयउँ कृतारथ आजु लब्ध नहि कवन पदारथ
लहि शंकरहिं प्राणपति कन्या चौदह भुवन माँझ भइ धन्या
रहै सदैव अचल यह जोरी पारस्परिक प्रीति रस बोरी

दोहा

गुरुवर सुनि सविनय वचन, बोले करि मृदु हास ।
जासु जमाता भुवनपति, सर्व सिद्धि तसु पास ॥

सोरठा

करहु शीघ्रता तात, सिन्दुर दानिक शुभ लगन ।
क्षण क्षण बीतत जात, अब विलम्ब कारण कवन ॥

छन्द

जयजय धुनि सारी विश्व मँझारी व्यापि गयी कल्याणमयी
'तवसन्तुशुभानिभवानिसदा' द्विजवृन्दगिरागिरिगूँजिगयी
आमोद प्रमोद विनोद समुद्र निमग्न सभी नर नारि भई
गिरिराज समाज समेत सुखी कन्यावर शोभा निरखि नई

चौपाई

सरसीरुहगत अरुण परागा अर्ध शीतकर ऊपर लागा
आजु नीलिमा भई अरुणिमा असंभाव्य संभव भव महिमा
कन्यावर सिंहासन सोहै लखि छवि रति रतिपति मनमोहै
विप्र वृन्द दूर्वाक्षत दीन्हा नारी वृन्द चुमावन कीन्हा
मंगलगान पुरन्ध्री गावहिँ हर्षवेग करताल बजावहिँ
कन्यावर कुलदेवी गेहू प्रणति हेतु गउ सहित सनेहू
सो छवि वरणत कविवर लाजू अति अद्भुत घटना लखि आजू
जाहिं निराकृति श्रुतिगण गावै ब्रह्मा विष्णु पार नहि पावै
इन्द्रिय बुद्धि अगोचर जोई लीलानिरत वधूवर सोई

भक्त हेतु नाना तनु धारी करुणा वारिधि इच्छाचारी
निजकृत धर्मसेतु परिपालक दीनबन्धु दुर्जन कुल घालक
चले मन्द गति शंकर स्वामी त्रिभुवन व्यापक अन्तर्यामी
नत आनन नहि नयन उठावहिँ लखि पुरवधू परमसुख पावहिँ
लज्जा अभिनय करहिँ महेशू समयोचित हृदयंगम वेशू
गिरिवर पुत्रवधू आदिक जत हास्य करहिँ समयोचित संगत
कहइ कोउ यह नकुल अजन्मा कोउ कहइ गुणहीन अकर्मा
भाव युगावगाहिनी वानी सुनि गिरिजा हिय अति हर्षानी
करि कटाक्ष प्रभु बिहँसि निहारहिँ दर्सावहिँ प्राकृत व्यवहारहिँ
रवि शशि घूमहिँ जासु निदेशू तहँ विधिकरी करत आदेशू
बटगमनी महिला मिलि गावहिँ सुनहिँ पार श्रुति जासु न पावहिँ

दोहा

ब्रह्मादिक लखि प्रभु चरित, भउ विस्मित मनमाहिँ ।
माया अद्भुत शांभवी, जानत कोऊ नाहिँ ॥

सोरठा

जाहि जनावत आप, सो जानत अति अगम गति ।
ताहि न व्यापत ताप, जापर कृपा उमेशकर ॥

गीत

चले वधूवर सुन्दर रे कुलदेवी गेहू ॥ ध्रु० ॥
गान करहिँ गायिनिगण रे मन परम सनेहू ॥
सो छवि निरखत अनुपम रे भउ सबहि विदेहू ।
रमा आदि छवि निरखहिँ रे धरि प्राकृत देहू ॥

भक्त अधीन उमावर रे नहि कछु सन्देहू ।
चारि पदारथ पावहिँ रे जे जानहिँ एहू ॥
सुरन सुमन बरसावहिँ रे जिमि वुन्दन मेहू ।
उमा उमावर सुमिरहु रे जीवन सुख लेहू ॥

चौपाई

कीन्ह प्रणाम युगल कर जोरे मूरति युगल विनय रस बोरे
श्रीशंकर मणिमाल चढ़ायउ लोकाचार प्रचार बढ़ायउ
गौरी अपर हार पहिरायउ मुख प्रतिमुख पूजन लव लायउ
गूढ़ भाव यह जानत सोई जापर कृपा उमाकी होई
प्रणतपाल शरणागत रक्षक पर उपकार निरत विष भक्षक
लोकाचार विचार परायन चले सुनत मंगलमय गायन
पुनि शंकर कौतुक गृह आये हृदयंगम अनुपम छवि छाये
रतनजटित सुवरन गृह सुन्दर निरखि चकित सुरसहित पुरन्दर
रुचिर वितान इन्दु दुति राजित विचविचशीशकनिकरविराजित
रुचिर झाड़ गत दीपमालिका लखि लपकन चह बाल बालिका
नीलम लर लटकत चहुँ ओरा लखि सम्पति अति धनद विभोरा
मणिमय सिंहासन कत सोहै लखि सुषमा मुनिजन मन मोहै
चित्र विचित्र चित्र तहँ नाना सुस्मित मुख जीवित इव भाना
वन्दनवार पताका आदिक मंगलमय समुचित तत्कालिक
पट्टांशुक आस्तृत अनमोला भउ निरखत प्रमुदित मन भोला
आदि शक्ति समुपस्थित जहँमा नहि अचरज यह वैभव तहँमा

जासु कृपा लवलेश सकल सुर पावहिं अतुलित वैभव सुरपुर
समुपागत मेना महरानी वाणी कही विनय रस सानी
करि उपवास बहुत श्रम कियऊ रैनि याम युग बीतत भयऊ
करि आहार करिय विश्रामा तब देखब समयोचित कामा
समयोचित प्रभु कियउ अहारा जस वैदिक लौकिक व्यवहारा
श्वासा विधिबोधक श्रुति जासू अविधि विधान होय कस तासू
लखि वरयात्रिक भोजन अवसर गिरिवर सपरिवार भउ तत्पर
सामग्री सम्भृति निज देखी नाना भाँति सरस सविसेखी
अन्न चतुर्विध ढेर अपारा षटरसमय छप्पन परकारा
तब मैनाक कुमार सानुचर सावधान सविनय अति तत्पर
लाये बोलि हर्ष निर्भर उर प्रमथ वृन्द अरु इन्द्रादिक सुर
विधि समेत मुर मथन पधारे ऋषि सप्तक द्विज सहित सिधारे
आयउ सब अवशिष्ट बराता कवि अशक्त संख्या संख्याता
ऊर्ण वस्त्रकृत कोमल आसन धृत गृह अन्तर विस्तृत प्रांगन
पद प्रक्षालन पात्र धराये सुवरण भृंगारक छवि छाये
पद प्रक्षालन आपु करावा दुर्लभ सुख गिरिनायक पावा
यथायोग आसन बैठारे जोरि पाणि युग विनय उचारे
बान्धव वर्ग परोसन लागे पिता पुत्र गिरिनायक आगे
लायउ अगणित काञ्चन थारा व्यञ्जन पूरित पुटक सचारा
चटनी रुचिकर विविध प्रकारा नाना भाँति अपूर्व अँचारा
बिहँसि कहे लखि देव मुरारी यह अन्तःपुर पटुता सारी

हम जड़ पाथर बुद्धि विहीना प्रभु समक्ष सबही विधि दीना
त्रुटि हमार गनि सकै न काऊ क्षमा बड़नके सहज सुभाऊ
सपरिवार गिरिनायक सविनय पाँती प्रति सामग्री लयलय
पूछि पूछि अन्वेषण करहीं पूर्ण पूर्ण भाषण सब करहीं
घृतभर आदि मधुर तब लाये भरि भरि पुटक सचार लगाये
यथारीति हास्यास्पद गाना सुनि सुनि अमर निकर मुसुकाना
जेवनार भउ अनुपम रूपा निरखत चकित भयउ सुरभूपा
यह घटना अचरज नहि जानिय जगदम्बा महिमा अनुमानिय
माया जासु जगत उपजावै पालय पुनि लय समय नसावै
वैभव परिभव सकल पदारथ जगदम्बा कर्तृत्व यथारथ

दोहा

हिमआलय तप कियउ अति, शक्ति अराधन रूप ।
अभिमत वर पायउ भयउ, पुत्री शक्ति स्वरूप ॥

सोरठा

निरालम्ब अवलम्ब, धरी देह जगदम्ब जहँ ।
सकल चराचर अम्ब, कवन असंभव विषय तहँ ॥

छन्द

श्रुतिगण गुण गावै पार न पावै निराकार साकार कहै
जीवन मरण जासु इच्छाकृत भक्त हेतु अवतार लहै
सो त्रिभुवनधन्या जासु सुकन्या यशोगान तसु व्यापि रहै
याचौं वर मैया होहु सहैया सेवा भाव सदा निवहै

चौपाई

तव आचमन सबहिँ करवाये तृण मृत्तिका भृत्यगण लाये
ताम्बूलादि विविध मुखशुद्धी लायउ गिरिवर प्रमुदित बुद्धी
परिपूरित करंक कत आये करि अर्पित गिरिवर सुख पाये
गिरिवर सविनय वचन सुनाये समयोचित छल छद्म दुराये
दर्शन कारण जासु विरागी करहिँ तपोव्रत धन-जन-त्यागी
होहिँ विरल अनुकम्पा भाजन प्रियव्रत आदि निदर्शन राजन
जन्म जन्म करि जतन अनेका ज्ञानीजन जसु लहहिँ विवेका
सो प्रभु हरि हर विधि करि नेहू पावन कियउ अपावन गेहू
सब मिलि चरण सरोज पखारा को कहि सक बड़ भाग हमारा
धरि बहु कालिक अचल समाधी निर्वासन मन जाहि अराधी
सो मम लोचन गोचर आजू लखिय नयन भरि सहित समाजू
भक्ति विवश गिरिवर तब भयऊ सजल नयन सुधि बुधि सब गयऊ
गद्गद गल पुलकावलि ठाढ़ी विमल प्रेमरस सरिता बाढ़ी
दशा देखि बोले चतुरानन करिहैँ तव गुण गान पुरानन
जगद्वन्द्य जामाता जाके को कहि सकै पुण्य बल ताके
हम सब, एक एक गुण धारी त्रिगुणमयी तव उमा कुमारी
गौरी शंकर ,शक्ति सदाशिव तासु प्रेमरस पुनि पुनि पिव पिव
पावन प्रेम समागम जहँमा मुक्ति पदारथ अनुगत तहँमा
पराभक्ति जाके पर्याया शाण्डिल्यादि जासु गुण गाया
पराभक्ति जाके उर बसई नहि कैवल्य लाभ सो चहई

पराभक्ति आस्वादन करई अनायास भवसागर तरई
सुनि कृतकृत्य भयउ गिरिनायक वचनामृत अनुपम सुखदायक
पुनि पुनि विनवहिँ कर युग जोरे पुनि पुनि प्रणमहिँ प्रेम विभोरे
कहे प्रजापति आपतिहारी ह्वै प्रसन्न मन हंस विहारी
माँगहु वर अभिमत गिरिराजू मोहि अदेय कछुक नहि आजू
सुनिविधिवचन मुदितगिरिऐना बोलत भयउ वारि भरि नैना
हरि हर राउ शरीर अनेका दीनबन्धु जानउँ करि एका
मनवाञ्छित प्रभु यह वर दीजै भक्तिभाव भाजन प्रभु कीजै
एवमस्तु तब कहे विधाता कीन्हे अनुमोदन ऋषि साता
तब मुरमर्दन बोलन लागे अति प्रिय वचन अमिय रस पागे
द्वादश कुल निज उद्धृत जानहु वचन हमार प्रमाणित मानहु
कुलदीपिका सुता तब जाई विश्वव्यापिका सुनु गिरिराई
तासु कृपा-लवलेश प्रसादा होहिँ कृतारथ विगत विषादा
थके अहर्निश श्रम करि सबही करु. विश्राम जाय सब अबही
निज निवास थल सकल बराता चलन चहत पुनि मिलव प्रभाता
असकहि श्रीपति आयसु दियऊ सकल बरात गमन तब कियऊ
बान्धव सहित चले गिरिराई करि अनुगमन सबहिँ पहुँचाई
आवि अशन आदिक सब कीन्हा क्षणभरि विश्रामाश्रम लीन्हा

दोहा

वरयात्रिक यात्रा कथा, करि संक्षिप्त बखान ।
प्रकृत कथा पुनि भाखऊँ, आगम निगम प्रमान ॥

सोरठा

साम्ब शंभु गुणगान, कहत सुनत पावन परम ।
इह परत्र कल्यान, जन्म सफल जीवन सफल ॥

चौपाई

अति प्रभात वरयात्रिक जागे करन विदा तैयारी लागे
चतुरानन समेत मुरमर्दन आयउ मिलन त्रिपुर मद मर्दन
शंकर देखि उठेउ हर्षाई जहँ तहँ जय जय शब्द सुनाई
यथायोग्य व्यवहार प्रकारा आलिंगन नति प्रणति अकारा
बोले विहँसि महामति श्रीपति लोक प्रसिद्ध श्वशुरगृह प्रियअति
करि निवास कछु दिन इहँ राऊ बहुरि आबि हर करब पसाऊ
सभय अमर निर्भय अब भयऊ तारक वध अवसर नियरयऊ
पुनि पुनि उन्नति अवनति होई सब दिन समथिति रहत न कोई
जापर कृपा राउरो होई समता सुख पावत जन सोई
प्रकृति प्रवाह चराचर बहई पार कदाच विरल जन लहई
प्रकृति प्रवर्तक शरणापन्ना प्रकृति पारगत सुख सम्पन्ना
प्रारब्धानुग प्रकृति प्रतापा कोउ महाबल अतुलित दापा
कोउ महापण्डित बहुदर्शी वचनागोचर तत्त्वामर्शी
कोउ महासम्पति अधिकारी साम्राज्याधिप स्वेच्छाचारी
अनुरति विरति समाश्रित कोई भुक्ति मुक्ति पद पावत जोई
कबहि समुन्नति अवनति कबही प्रकृति पराक्रम जानिय सबही
प्रकृति पुरुष अनुमति अनुसरई पुरुषाराधक संसृति तरई

निर्गुण सगुण रूप यह पूरुख भेदभाव तहँ मानत मूरुख
पूरुख सगुण तीन तनु धारी विधि हम और राउ त्रिपुरारी
नहि अन्तर तहँ श्रुतिगण गावत ज्ञानी गण अभेद दरसावत
लीलारूप पृथक् व्यवहारा विरल विवेकी जाननहारा
मोदकादि मिष्टान्न अनेका स्थित सर्वत्र इक्षुरस एका
जस रज्जू विषधर आधारा ईश राउ तस जगदाधारा
प्रकृति पुरुषगत भेद अभेदा कोउ कोउ जानत गतखेदा
सपत्नीक प्रभुदर्शन पावा लब्ध मनोरथ नयन जुड़ावा
प्रभु सन्तति देखब भरि लोचन तारक असुर शत्रु भय मोचन
विहँसि शम्भु बोले मृदु वानी विनय निलय प्रेमामृत सानी
भ्रूविलास राउर क्षण माहीँ विश्व विलय कर संशय नाहीँ
पर राउरो नियति अनुसारा भावी तारकरिपु अवतारा
करि निमित्त तारक रिपु राऊ तारक हतब स्वकीय प्रभाऊ
विप्र धेनु सुर आरति हर्ता करुणामूरति त्रिभुवन भर्ता
भयउ सकल कारज सम्पन्ना लब्ध मनोरथ प्रभु प्रतिपन्ना
रहि कछु दिन करि उत्तर कारज पुनि रजताचल आयब आरज
नमहिँ परस्पर हरि हर पुनि पुनि यह रहस्य जानहिँ ज्ञानी मुनि

सोरठा

चतुरानन त्रिपुरारि, करि मिलाप अन्योन्य पुनि ।
वानी विविध प्रकार, भयउ सुखी सब श्रवण सुनि ॥७६॥

चौपाई

सुरगण मुनिगण आदिक जेते भउ कृतकृत्य दरस लहि तेते
कहे सबहिँ करि विनय महेशा पायउ सकल बरात कलेशा
हमहिँ कृतार्थ कियउ सब आई बान्धव भाव दिखायउ भाई
सुनि सब श्रवण मनोरम वानी परमानन्द मगन रसखानी
उत्तर कहि न सके कछु कोई सुधि बुधि विसरि चित्रसम होई
पुनि चतुरानन सस्मित वदना पुलकित सजल सरोरुह नयना
बोले वचन झरत जनु फूला कहत सुनत मेटत भवशूला
निगमागम जसु पार न पावै शेष शारदा कीरति गावै
सो प्रभु भक्तबछल भगवाना सविनय सबहिँ करत संमाना
लोकाचार विचार सुरक्षक पर उपकार निरत विष भक्षक
यहै बड़नकर सहज सुभाऊ शरणागत प्रति करहिँ पसाऊ
चाहहिँ करन सबइ अब गमना निज निज धाम पञ्चशर शमना
जाचहिँ सब राउर आदेशा मुनिगण सहित अमर अमरेशा
एवमस्तु तब कहे पुरारी भइ हलचल बरात महँ सारी
प्रणति असीस आदि व्यवहारा करिकरि प्रभु मुख सबइ निहारा
पुनि वृषकेतु तजे निज आसन मिले चतुर्मुख अरु गरुड़ासन
श्रीगणेश दुर्गा के नामा लै लै चले सबहि निज धामा
पुनि पुनि प्रभु पद पंकज पेखहिँ छन आगे छन पाछे देखहिँ
सपरिवार भूधर अनुगमने कोस प्रमित गउ तजि गृह अपने
लखि मगु महँ हरि सुरसरि पावनि धर्ममयी अघओघ नसावनि

मृदु वाणी कहि सबहि फिराये   नाविक निज निज नाव भिराये
चढ़ि चढ़ि नौका चली बराता   खेचर खपथ चले जिमि वाता
ब्रह्मा विष्णु आदि निज धामा   पहुँचत भउ परिपूरित कामा
हिमआलय आदिक गृह आये   निरखि शंभु अतुलित सुख पाये
नाथ चतुर्थी कृति पुनि कियऊ   आशीर्वाद द्विजातिन दियऊ
भयउ यथाविधि सफल अचारा   व्यापित सब थल जयजयकारा

दोहा

मास दिवस बिलमे तहाँ, श्रीशंकर सुख रूप ।
माया नाटक सूत्रधर, लीला करहिं अनूप ॥१२७॥

सोरठा

प्रमुदित सब नर नारि, निरखि वधूवर अतुल छवि ।
निज निज काम बिसारि, परिपूरित मनकाम भउ ॥७७॥

चौपाई

देहिं सारि सरहज मिलि गारी   उत्तर-देहिं विहँसि त्रिपुरारी
मोद प्रमोद विविध विध तहँमा   भयउ रैन वासर प्रति लहमा
कौतुकभवन वधूवर विलसहिं   प्रकृतिपुरुषमिलि प्रतिपल हुलसहिं
क्षण इव मास दिवस गउ बीती   सुख संभृतिमय सहित पिरीती
युग सम बीतत दुखमय लहमा   क्षण सम युग सुखसम्पति जहँमा
लखि समीप निज यात्रा काला   भई प्रेमवश गिरिवर बाला
प्रिय परिजन पितु मातु सखीजन   विरह व्यथा विह्वल गिरिजा मन
लोचन झरत प्रेम जल धारा   जिमि वर्षा ऋतु घन आसारा

लै निज अंक कुमारी मैना भाखत भई अश्रुभरि नैना
धरहु पुत्रि धीरज हिय माहीँ पत्नीगति पति दूसर नाहीँ
मन वच काय स्वामिपद पूजा नारिधर्म यह और न दूजा
पति रुख देखि करिय सब कर्मा नारिधर्म भन आर्य सुधर्मा
अंगहीन रोगी धनहीना मूरुख मन्द वृद्ध अकुलीना
गत विचार विगलित आचारा पूजिय पति यह श्रुतिमत सारा
पति सम्पन्न विपन्न एक सम सेवहिँ सदा सती तिय उत्तम
शतसुत समधिक प्रियपति जाको साध्वी वधू बखानिय ताको
निज सुखबिसरि सहहिँ दुखभारी पति सुख साधन निरत सुनारी
निज सन्तति पालन पटुताई नारिधर्म कवि कोविद गाई
पति परिजन सेवन बहुभाँती करहिँ वधू साध्वी दिन राती
गुरु शुश्रूषण सेवन करहीँ आज्ञा तासु सदा शिर धरहीँ
लज्जा-शील-रूप-गुण मण्डित प्रियंवदा शुभ तिय भन पण्डित
गौरि षष्ठि कुलदेवी पूजन इष्टदेवता चरण निषेवन
सहधर्मता सदा पति केरी नारिधर्म निगमागम टेरी
अभ्यागत आदिक सत्कारा करहिँ सदा निज शिर धरि भारा
देव पितर पूजन उद्योगा करहिँ निरालस तजि निज भोगा
गृह कारज निज हाथ सम्हारहिँ परिमित व्ययता उरमहँ धारहिँ
यथा आयव्यय करहिँ सुनारी पति रुचि राखहिँ निजरुचि टारी
समुचित त्याग करहिँ नहि कबहीँ अनुचित त्यागहिँ अवसर सबहीँ
मातु सरिस पति पोषण करहीँ सेवक सम आज्ञा अनुसरहीँ

सन्मन्त्री सम देहिँ सुमन्त्रा ताहि सती तिय भापहिँ तन्त्रा
कहत कहत मेना अकुलानी सुता विरह करुणा रस सानी
रोदन करन लगी उर लाई तनया नयनन नीर बहाई
आइ गिरीश्वर धैरज दीन्हा करि प्रबोध आश्वासन कीन्हा
लौकिक रीति नीति समुझाये सुता सिनेह नयन जल छाये
मातृपितृगत सहज सुभाऊ सन्तति नेह अबाध्य प्रभाऊ
सन्तति नेह सरिस जग माहीँ नेह अन्यथल संभव नाहीँ
त्रिभुवन नहि आलस्य समाना व्याधि बखानिय क्वचिदपि आना
शत्रु क्रोध सम और न कोई माता सरिस बन्धु नहि होई
सुनहु तात पुनि प्रकृति कहानी विपति विदारण सम्पति खानी
कहत सुनत अघओघ विनाशै हरि अज्ञान ज्ञान परकाशै
पठये बोलि शम्भु गिरिराजा गिरिवर पहुँचे सहित समाजा
शंकर यात्रा विनय सुनाये गिरिवर अंगीकार जनाये
गणक प्रवर साधे शुभ लगना पायउ सगुन प्रहर्षित अपना
गिरिवर जौतुक सजे अनूपा गज रथ तुरगादिक बहुरूपा
भूषण मणि रत्नादिक नाना अपरिमेय कहि कवि कर गाना
दासी दास अलंकृत शत शत अमित अमूल्य पदारथ कत कत
लखि उद्योग सखी जन आयउ विरह वेदना व्याकुल धायउ
गौरिहिँ निज निज हृदय लगाई गान समय समुचित सब गाई
प्रेमालाप भयउ बहु भाँती कही परस्पर लिखिहौँ पाँती
करहिँ सकल प्रेमाश्रु प्रवाहा छायउ औषधप्रस्थ उछाहा

नगर नारि नर गौरि वियोगा प्रेम विकल भउ लखि उद्योगा
सपत्नीक गिरिवर निज कारज करन लगे धैरज धरि आरज
शुभतिथि शुभवासर शुभलगना आगत लखि सब प्रेम निमगना
भार सहस शत गिरिवर साजे लखि सम्‍‌ृद्धि अलकापति लाजे
मणि माणिक्य रत्न धन जेते दीन्ह सकइ कवि कहि नहि तेते
कुप्य रजत हाटकमय नाना दीन्ह अचलपति जौतुक दाना
अंशुक पट भरि भरि मंजूषा दीन्ह अपरिमित सहित विभूषा
प्रस्थित दासी दास हजारन पैदल अरु चढ़ि समुचित यानन
प्रणमे कुलदेवता वधू वर पुनि प्रणमे गुरुजन गौरीहर
मेना उमा लगायउ छाती रोवत अति कुररीकर भाँती

दोहा

धीरज बहु विध दीन्ह तब, वृद्ध-वधू पुरनारि ।
धरि कर शीस असीस बहु, दियउ नयन भरि वारि ॥१२८॥

सोरठा

गायउ मंगल गीत, समयोचित गायिनि निकर ।
शिविकारूढ़ विनीत, भयउ शंभु पत्नी सहित ॥७८॥

गीत

धिया धरत कैसे धीर ॥
सासु ननदि नहि नहिं घर सम्पति बुद्धि रहत कत थीर ।
अनुचर भूत परेत भयंकर वर बौराह फकीर ॥
संग समाज यक्ष राक्षसगण अटल कपाल लकीर ।
सत्य वचन धैरज धरु मेना वर त्रिभुवनपति वीर ॥

चौपाई

प्रभु अनुगमने भूधर राजा परिजन पुरजन संग समाजा
बाजन लगे विविध विध बाजा भयउ भुशुंडी तुमुल अवाजा
नट नर्तक नर्तकी समाजा नाचन लगे साजि सब साजा
गायक गान मधुर सुर गावहिं दर्शक मण्डल सुभट हटावहिं
वन्दी आदिक सुयश बखानहिं द्विजगण आशीर्वाद सुनावहिं
ताहि समय तादृश छवि छयऊ जो लखि सुरपति विस्मित भयऊ
गिरिवर आदि क्रोशमित गयऊ तजि वाहन हर भूगत भयऊ
करि प्रणाम बहु विधि समुझाये सविनय गिरिवर आदि फिराये
सुता सिनेह विवश गिरि राजा कथमपि फिरे समेत समाजा
कन्यावर पुनि पुनि फिरि देखहिं प्रत्यागमन परम दुख लेखहिं
औषधप्रस्थ सकल मिलि आये उमा मातु कथमपि समुझाये
उमा मातु पूछी कुशलाता कन्या वर प्रासंगिक बाता
भाखत भयउ भूमिधर नायक सकुशल गउ शंकर सुखदायक
धरे धीर सब लखि जग रीती करि शंकर पद पंकज प्रीती
पहुँचि गन्धमादन भुवनेशा कीन्ह समय शुभ गेह प्रवेशा
यथा मातृशिक्षा जगदम्बा करत भयउ निज कृत्य कदम्बा
सहधर्मिणी समेत महेशू करि गृहधर्म देहिं उपदेशू
पावन चरित कीन्ह यह शंकर श्रोता वक्ता जन अभयंकर
विरचे मंगलमय वृषकेतू चरित रूप जगदम्बुधि सेतू

छन्द

कहहिँ सुनहिँ चरित्र जे यह परम रम्य सुखाकरम् ।
साम्ब शंकर यशो गुम्फित ज्ञान पद्म प्रभाकरम् ॥
भक्ति कैरव चन्द परमानन्द धाम उजागरम् ।
तरहिँ मायामय अपार असार संसृतिसागरम् ॥

दोहा

शिष्य पुरञ्जन सुनि चरित, सविनय श्रद्धासक्त ।
प्रणमि निरञ्जन ज्ञानघन, श्रीगुरुवर पदपद्म ॥१२९॥
जोरि युगल कर कहत भउ, मोद पुलक भर गात ।
सुमिरत हर करुणायतन, सजल नयन जलजात ॥१३०॥

चौपाई

मेना भई रुष्ट लखि शंकर प्रमथ यूथ युत परम भयंकर
सो सब चरित नाथ नहि भाखे कारण कवन गुप्त करि राखे
सुनि अस प्रश्न दियउ गुरु उत्तर मुनिजन सम्मत समीचीनतर
कल्पभेद गत चरित विभेदा तत्त्व पदारथ निष्ठ अभेदा
तात्त्विक कथा सकल मैँ गाई हास-बहुल गाथा बिलगाई
जननी जनक तासु बड़भागी जे प्रभु कथा श्रवण अनुरागी
तव अनुराग देखि मन मोरा खेलत हर्ष-तरंग न थोरा
प्रकृत चरित्र कहौँ मैँ गाई सुस्थिर होइ सुनहु मनलाई
चरित विभाग विलक्षण यदवधि कहौँ यथामति पुनरपि तदवधि
करि देवादिक वृन्द पुरस्सर सहित बरात चले शिव शंकर

निरखि सकल विश्वावसु मयना प्रमुदित मन विस्फारित नयना
शिव यह अति सुन्दर सुकुमारा गौरीवर बड़ भाग हमारा
सुनि अस वचन कहे मुनि नारद शिव गायक यह गान विशारद
गायक जाके ईदृश रूपा स्वयं देव सो कवन सरूपा
बहुरि कुबेर ससेन निहारी मेना शंभु-बरात मझारी
शोभा तासु द्विगुण लखि मयना यही जमाय कही अस वयना
सुनि अस वचन कहे मुनि नारद यह शिव मन्त्री मन्त्र विशारद
यक्षाधिपति धनाधिप एहू शिव किंकर नहि कछु सन्देहू
सुनि अस अति उत्कण्ठित मयना करी प्रतीक्षा अनिमिष नयना
क्रमिक वरुण यम और सुरेशा द्विगुणित शोभासदन सुवेशा
शिवइति शिवइति लखि २ मयना कही कहे मुनि नहि नहि बयना
शिव किंकर सब परिचय दियऊ सुनि मयना आश्चर्यित भयऊ
इनते अधिक सकल गुणखानी श्री शंकर मेना अनुमानी
क्रमिकअधिकलखिदिक्पतिशोभा वर्द्धमान शिवदर्शन लोभा
कब देखब शंकर भरि नयना अनुपम रूप सकल गुण अयना
सुनि अस वचन कहे मुनि नारद परम कौतुकी कलह विशारद
कछुक काल धैरज धरु मयना देखब नव छवि कहत बनै ना
पुनरपि सूर्यदेव नियराये तेजोमय दश दिश दरसाये
शिवइति नहिइति मुनि अरु मैना भाखत भयउ परस्पर बैना
पुनरपि चन्द्रदेव नियराये संग नखत ग्रह गण सब आये
शोभा द्विगुण निरखि गिरिरानी शिवइति निश्चय मनमहँ आनी

नहिइतिभाषण पुनि मुनि कीन्हा शिव किंकर कहि परिचय दीन्हा
सुनि मेना अतिशय हरषानी रवि-शशि-पति शंकर कहँ जानी
शंकर कहँ निज जानि जमाता नहि रानी मन हर्ष समाता
तावत् चतुरानन दउ दर्शन तपसीजन वर वारि प्रवर्षन
ऋषिवर वृन्द सहित सुखराशी सुखमय सत्यलोक विनिवासी
अति तेजोमय शोभाधामा शिव यह इति भाषी गिरिवामा
पुनि नारद मुनि नहि इति बोले गिरिपत्नी कम्पित शिर डोले
अति आश्चर्यित भइ गिरिरानी कीदृश शिव इति बोली वानी
दियउ दरश पुनि त्रिभुवन भर्ता विष्णु चतुर्भुज भवभय हर्ता
नूतन जलधर दुति पीताम्बर श्रीवत्सांकितवक्षा श्रीवर
शंख चक्र अरु गदा पद्म भृत सुमुकुट केसर तिलकालंकृत
सिद्ध्यष्टकयुत खगपति वाहन कोटि काम सुन्दर रुचिरानन
पुण्डरीक लोचन करुणाकर भक्तवच्छल भगवान् उजागर
शिव इति भाषी गिरिवर रानी भाषे नारद नहि इति वानी
शंभुसखा यह शारङ्पानी शंभु अतोधिक त्रिभुवन दानी
सुनि गिरिवर पत्नी सुखमग्ना सुस्थिर मन हरचिन्तन लग्ना
सीमा विरहित सुषमा धामा कीदृश गौरीवर अभिरामा
इति हर दरस लालसा बाढ़ी जोहत बाट अटापर ठाढ़ी
ऋषिवर वेष्टित लखि वागीशा कही मेनका यह जगदीशा
नहि इति नारदोक्त सुनि वानी तर्क वितर्क करत भइ रानी
भुवनसार भउ लोचन गोचर इत्यप्यधिक सुन्दरतर सो हर

अति बड़भागिनि सुता हमारी भई सदाशिव प्राणपियारी
नहि मम सदृश जगत महँ कोई पायउ शंभु जमाता जोई

दोहा

विकट रूप त्रिपुरारि हर, तब निज दर्शन दीन्ह।
अहंकार गिरिवधूकृत, प्रभु तुरतहि हरि लीन्ह ॥१३१॥

छन्द

लखु लखु गिरिरानी सब गुणखानी त्रिभुवन दानी शंभु यही
सुनि मुनिवर बानी लखि अकुलानी गिरिवर रानी गिरी मही
लखि भूतन यूथा प्रमथवरूथा होइ हताश अवाक रही
लखि विकट सरूपा अद्भुत रूपा मेना मूर्छा भाव लही
वक्रतुण्ड पिंगाक्ष महोदर व्यात्तवदन कत प्रमथ रहे
अंगहीन अरु पंगु आदि कत देखत दर्शक त्रास लहे
मर्मर स्वर घस्मर सब भस्मविभूषित कर तिरशूल गहे
धह धह धधकत वह्नि नयन बिच भुवन चतुर्दश दहन चहे
अति विकराल भयंकर मूरति प्रेतप्रमथपति त्रिपुरहरम्
वृषभारूढ़ पञ्चमुख लोचन त्रितय कपालकपर्द धरम्
व्याघ्रचर्मकृत उत्तरीय पट शंखविभूषण डमरु करम्
भाषे मुनि यह देव सदाशिव तजि मूर्छा लखु गौरिवरम्

चौपाई

भयउ चिकित्सा जब बहुतेरी कथमपि करवट मेना फेरी
पाइ होस भइ रोष अधीना वर दुर्दृश्य निरखि अति दीना

कथमपि भय व्याकुल उठि भागी अबला थरथर काँपन लागी
करन लगी बहु भाँति प्रलापा मृदु सुर रोदन सहित विलापा
आवि देवऋषि टोना कियऊ गौरी बुद्धि मुग्ध करि दियऊ
आवि प्रथम करि बहु उपदेशा नारद गौरिहिँ दियउ कलेशा
दियउ प्रलोभन वरगुण कहिकहि कुमरि बसी वन बहु दुख सहिसहि
करी तपस्या करि तनु गारत भयउ कामरिपु कामहिँ जारत
लही पराभव पावि विफलता पुनि नारद मुनि कही सफलता
करि प्रतीति पुनि नारद केरी करी तपस्या कन्या मेरी
आजु विप्र शिक्षा फल पायउ कज्जल निज पितुवंश लगायउ
धिक धिक मूढ़ बुद्धि भूधरवर जो बुलाय लायउ खर्परकर
कुलमर्यादा ध्वंस हमारी कियउ निठुर नारद मुनि सारी
परम पूज्य ऋषिसप्तक आये सोउ वञ्चना वचन सुनाये
आर्यपुत्र करि मुनि परतीती बिसरी सकल लौकिकी रीती
भई बुद्धि हत गिरिवर केरी जो सदुक्ति नहि मानी मेरी
रूप वित्त कुल विद्या आदी वरगुण भूलहिँ पिता प्रमादी
वरगुण कोउ दिगम्बर पाहीँ अभिमत संमत दीखत नाहीँ
अरुन्धती साध्वी ऋषिनारी सोउ वञ्चना करी हमारी
नाना रूप प्रलोभन कियऊ मोर विवेक भ्रष्ट करि दियऊ
नारदादिकर भइ का हानी मोर प्रतिष्ठा धूल मिलानी
जीवित हति भउ आजु हमारी करत हँसी जग जनता सारी
करी धूर्तता भूसुर देवा जग विश्वासपात्र जन केवा

यदि सप्तर्षि यहाँ पुनि ऐहैं लुञ्चित मूँछ भागि पुनि जैहैं
अथवा कोऊ नहि अपराधी उमा स्वयं यह विघ्न अराधी
मुक्ताहार फेकि मतिहीना पहिरी गुञ्जाहार मलीना
काञ्चन देइ काच यह बदली रोपि काँट काटी यह कदली
चन्दन तजि कर्दम अनुलेपन कियउ हाय यह लहि विक्षेपन
गंगाजल तजि डाबर पानी पानरूप शंकरव्रत ठानी
तजि इन्द्रादिदेव नानागुण वरण चहत वर निर्धन निर्गुण
ताहि समय गिरिजा तहँ आई भई न सम्मुख थित भय पाई
कछु आश्वासन वचन सुनाई मनहु घाव पर लवन लगाई
कोपवेश आकुल भइ मयना कहन लगी अति लोहित नयना
धिक धिक तोहि वृथा तुम जाई कज्जल उज्ज्वल वंश लगाई
डूबि मरहु नहि किमि जल माहीँ देखन चहउँ तोहि हम नाहीँ
जारि निकेत मरउँ विष खाई गिरउँ धरणि गिरि ऊपर जाई
नयन अगोचर भूधर राजा किमि न होहिँ लागत नहि लाजा
गर्भ गलित किमु भई न कन्या कानन मध्य न मरी जघन्या
बाघ सिंह भक्षण नहि भयऊ वाम दैव दुस्सह दुख दयऊ
कन्या शिर निज शिर छेदन करि नहि दुख सहिहउँ यह जीवन भरि
करत प्रलाप बढ़े अति कोपा नहि विवाह होइहि पण रोपा
करन लगी निज उरहिँ प्रहारा कोप अन्धमति वारंवारा
तब लगि वृद्धवधू गण आई रानि पानि गहि बहुत बुझाई
शिव महिमा कहि सभी बुझाये ऋषिगण सुरगण जे तहँ आये

चतुर्बाहु चतुरानन दोऊ थके बुझाइ विविध विधि सोऊ
तब गिरिवर समुझावत भयऊ कथमपि कथमपि सम्मुख गयऊ
प्रिये समय लखि धैरज धरहू वैवाहिक्र कारज अब करहू
पुण्य पुञ्ज भउ उदित हमारा विधि हरि हर प्रभु पहुँचे द्वारा
पूरण ब्रह्म शंभु अवतारा भउ जमाइ बड़ भाग हमारा
पुण्य पुञ्ज द्विज निर्जर वर्या उचित तासु सब विधि परिचर्या
ताहि प्रिये कटु गिरा सुनाई कारण कवन गई बौराई
सुनि अस बोली गिरिवर भामा बुद्धि भ्रष्ट तब भयउ निकामा
डोरी बान्हि कण्ठ बिच कन्या फेंकिय सागर बीच जघन्या
स्वयं सुखी ह्वै करिय विलासा मोहि न जीवन कर अब आसा
नहि कन्या पुरहर कहँ दइहउँ नतरु आजुही नइहर जइहउँ
लखि असमञ्जस अचलकुमारी सकरुण जननी जनक मझारी
करि साहस धरि धैरज दीना चिन्ताकुल चित वदन मलीना
भाषन लगी नीति रस सानी लोक वेद सम्मत शुचि वानी
सदा धर्म अवलम्बन कारिणि सतीशिरोमणि पतिव्रत धारिणि
सो तुम धर्म निरादर कर्त्री भवसि लोक लज्जा परिहर्त्री
माता बुद्धि भ्रष्ट भइ तोरी मारत दैव दण्ड शिर मोरी
पुण्य पुञ्ज बल अस जामाता विपुल भाग्य बल भउ यह नाता
पूरण ब्रह्म इनहिं तुम जानहु उत्पति-थिति-हति-कारण मानहु
मंगलमय यह मंगल धामा शिव शंकर अन्वर्थक नामा
जगदाधार प्राणपति एहू सत्य वचन नहि कछु सन्देहू

किंकर जसु सुर सहित सुरेशा आये संग साजि शुभ वेशा
उनते अधिक कासु प्रभुताई उठहु मातु तुम तजि कदराई
वरउँ वरउँ ध्रुव उनहिं वरउँ हम मातु अन्यथा मोर शरण यम
सिंह-भाग यदि लहइ सियारा जयी अबल हारइ वरियारा
असमञ्जस यह सब जग जानइ तोर बुद्धि कस अस नहि मानइ

दोहा

गौरि-गिरा-शर-विद्धउर, व्यथित भई गिरिनारि।
मीलित सरसिज नयन युग, सुधिवुधि सकल बिसारि ॥१३२

सोरठा

शोक मोह कंपूर, भयउ प्रवाहित गिरिवधू।
कही नयन पथ दूर, होत न कस द्विज देव गण ॥७९॥

चौपाई

कोप-अनल वाणी-घृत-धारा गणगनगन धुनि उरग अहारा
ज्वाला माला पहिरि अकासा उपजायउ गिरिवर उर त्रासा
रोदन करन लगी गिरिवामा दै दै धिक्कृति लै लै नामा
स्पन्दन अधर नयन युग रञ्जन पुनि पुनि अचल नन्दिनी गञ्जन
करिहउँ काह लेइ यह कन्या फेंकि कूप बिच हतउँ जघन्या
छेदन करउँ शस्त्र लै आजू करिहैं काह भूमिधरराजू
हतउँ भ्रष्टमति गरल खिलाई केवल अपयश एहि जिलाई
लही मन्दमति भूतावेशा वरन चहत हर कुत्सित वेशा

देखि कुमति अति मेना केरी बोले हरि मधुसूदन टेरी
अनुचित उचित न जो जन जानत कथा बड़नकर जो नहि मानत
गिरत तासु मस्तक दुख भारा होत शोकमय जीवन सारा
करहु विचार तनिक मन माहीँ मिथ्या वचन कबहुँ मम नाहीँ
पितृवंश तव जन्म प्रसिद्धा भई मानसी कन्या सिद्धा
हिमवत्पत्नी शुभ गुण युक्ता सो कस भई विवेक वियुक्ता
देवी सर्वधर्म आधारा सो कस करहु विरुद्ध अचारा
विधिकर मोर विप्रकर वानी मानहु निज हितकर गिरिरानी
शिव महिमा तव अवगत नाहीँ निर्गुण ब्रह्म सगुण दरसाहीँ
मूल प्रकृति प्रकटहिँ निर्गुणते अरु पुरुषोत्तम प्रकटहिँ उनते
वाम भाग अरु दाहिन भागा प्रकटित अविना भूतविभागा
प्रकृति पुरुष कृत तीन सरूपा हम ब्रह्मा अरु त्र्यम्बक रूपा
ताते भयउ वेद पुनि देवा भूत भौतिकादिक अरु जे वा
चर अरु अचर पदारथ जेते आविर्भूत शंभुते तेते
वाणी - बुद्धि - अगोचर - रूपा अमित प्रभाव अरूप सरूपा
हम अरु ब्रह्मा वर्ष सहस्रा करत निरन्तर गमन अजस्रा
कथमपि जासु पार नहि पायउ लहै पार तसु अस को जायउ
सत्य ज्ञानमय परमानन्दा अद्वय अजय भालधृत चन्दा
कनकमात्र कटकादिक जैसे शंकरमात्र चराचर तैसे
वीज प्ररोह यथा वन तरुवर शंभु प्ररोह तथैव चराचर
बीजांकुरकर फल फल जैसे जगत जातकर फल हर तैसे

आदि मध्य अरु अन्त त्रिपुरहर हरमय सकल सकलमय फणिधर
मणि महँ सूत्र सूत्रमहँ मणि जिमि शिवमहँसकलसकलमहँशिवतिमि
हम शिव शिव हम सब शिवरूपा सकल रूप शिव अलख अरूपा
निगमागम मत कारण एका संख्या विरहित कार्य अनेका
कारण कार्य भेद अज्ञानी मानहिँ नहि मानहिँ विज्ञानी
द्रष्टा दृष्ट श्रुताश्रुत जेते केवल अमल सदाशिव तेते
नाना-नाम-रूप मायामय शंभु अनाम अरूप अनामय
रज्जू सर्प शुक्तिका चानी स्थाणु पुरुष जानहिँ अज्ञानी
जब अज्ञानहिँ ज्ञान दुरावै रज्ज्वादिक सद्वस्तु लखावै
जब अज्ञान दशा समुपस्थित नाना मिथ्या भान उपस्थित
जब अज्ञान निशा तम नाशै उदित ज्ञान रवि तत्त्व प्रकाशै
सब थल शिव शिव शिव परकासा क्वचित् कदापि न अन्य विकासा
पूरण ब्रह्म प्रकृति पारंगत सोइ सदाशिव उमा वशंगत
तजि विषाद मानहु मम बाता लखहु सुभग वर सुन्दर गाता
नाना विनय देव ऋषि कीन्हा तब स्वकीय दर्शन प्रभु दीन्हा
भक्तवछल प्रभु भक्त अधीना भउ अति सुन्दर वयस नवीना
अति कमनीय मनोहर गाता हृदय जुड़ावहु निरखि जमाता
नारद वचन सुनत गिरिरानी छवि अनुपम लखि अति हरषानी

छन्द

अतुलितछविखानी त्रिभुवनदानी निरखि कोटिशतकाम लजे
भूधरवर रानी सुधि बिसरानी संमीलन युग नयन तजे

जयजय धुनि सारी दिशा मझारी व्यापि गई बहु बाद्य बजे
भूमीधर राजा सहित समाजा वैवाहिक सब साज सजे

दोहा

चरित विलक्षणभाग जत, कियउ तासु व्याख्यान ।
सुनि सुनाय पढि चरित यह, लहै परम कल्यान ॥ १३३
वैवाहिक यह चरित शुभ, कियउँ यथामति गान ।
प्रासंगिक वर्णन कियउँ, भक्ति ज्ञान विज्ञान ॥ १३४
गौरी-हर-परिणय ग्रथित, करि समाप्त यह काण्ड ।
प्रभु कृपया कहिहउँ बहुरि, सुन्दर लीला काण्ड ॥ १३५

श्लोक

वन्दे शिवं शशिनिभं गिरिजा समेतं,
गंगाविभूषितजटं भसितांगरागम् ।
श्रीनीलकण्ठमुरगाधिपहारमेतत्
काण्डं यदीय कृपयाद्य समाप्तिमागात् ॥

इति विवाहकाण्डं समाप्तम् । श्रीरस्तु । शुभमस्तु । मनोरथसिद्धिरस्तु ।

शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु

अथ लीलाकाण्डम्

दोहा

शिष्य पुरञ्जन करि विनय, कहत भयउ कर जोरि ।
गुरु निरञ्जनहिँ प्रणमि पुनि, प्रणमि बहोरि बहोरि ॥ १ ॥

सोरठा

सुधा समुद्र अनूप, मज्जन मन चाहत करन ।
शंकर लीला रूप, नाथ मुखामृत कर स्रवित ॥ १ ॥

चौपाई

ह्वै प्रसन्न गुरु भाषण लागे परमानन्द प्रेम परिपागे
सुमिरत साम्ब शंभु पद पद्मा ऐहिक आमुष्मिक सुख सद्मा
तारक हनन हेतु अवतारा लियउ महाबल शंभु कुमारा
सो सब कथा कहउँ मैं गाई सुनहु तात सादर मन लाई
धनि धनि धन्य धन्य बड़भागी तुम हर ललित चरित अनुरागी
कहत सुनत प्रभु चरित सुपावन सद्गति भाजन यदपि अपावन
उभय वंश उद्धारक सोई पिवत शंभु चरितामृत जोई
बिनु श्रम लह भवसागर पारा करि उद्घोष पुराण पुकारा
हर औरस सुत सुर सेनानी हन्ता तुअ अरु कोउ न प्रानी
अस वरदान चतुर्मुख दियऊ असुर उपद्रव तिहुपुर कियऊ
तदुपरि चरित भयउ जो नाना प्रथमहिँ सो सब कियउँ बखाना

बरनउँ अब कुमार-जन्मादी भाषे यथा व्यास मुनि आदी
साम्बशंभु रजताचल गयऊ शोभमान शोभामय भयऊ
सकल प्रमथगण अति हर्षितमन लगे बजावन विविध वाद्यगन
आगत तहँ इन्द्रादिक सर्वा लहे निरखि छवि हर्ष अखर्वा
करुणाकर करुणा तनु धारी हरिहहिँ विपति जगतकी सारी
जनता करन लगी सब आशा अब सन्निहित असुरकर नाशा
देवकृत्यकर अनुसन्धाना कीन्ह कृपासागर भगवाना
गिरि वन उपवन पुलिन विहारा कियउ उमाहर विविध प्रकारा
क्षणभरि रंग न लहे विरामा तीस दिवस अरु आठो यामा
चिन्तितभउ सुरनिरखि विलम्बा भउ सुमिरत प्रभु जगदवलम्बा
पुनि सुरगण प्रेरित हुतभक्षण गयउ रहे जहँ प्रभु विषभक्षण
गउ गौरीहर क्रीड़ा देशा बनि कपोत जस सुर आदेशा
तजे रंग लखि विहग पुरारी जानि कपट अस वचन उचारी
कपटरूप धरि को तुम आयउ विषय भोग विच्छेद करायउ
वीरज मोर चञ्चुपुट धरहू सुर कारज विधान अनुसरहू
अस कहि ताहि वीर्य प्रभु दियऊ सो पुनि चञ्चु माहिँ धरि लियऊ
वीर्य ताप परितापित तपना त्यागत भयउ दाप अति अपना
भउ असह्य धारण जब तासू पहुँचे पावक सुरसरि पासू
गंगा धार बीच सो वीरज त्यागत भयउ त्यागि निज धीरज
गंगाहू धरि सकी न ताको ताप असह्य रहे अति जाको
शरकण्डा वन सो पुनि त्यागी जहँ जनमे बालक बड़भागी

सुन्दर सुभग नयन सुखदाता वीर बली सुर-नर-मुनि-त्राता
षट् संख्यक नृपकन्या तहँमा स्नान हेतु आई तिहि लहमा
बालक निरखि सभी हरषाई मोर मोर कहि सब तहँ धाई
करन लगी अन्योन्य विवादा लही सकल मनमहँ अवसादा
तब बालक षण्मुख ह्वै गयऊ सकल कुमरि पय पीवत भयऊ
भउ बालक षण्मातुर्नामा क्रम कृत भयउ नाम अभिरामा
गौरीपुत्र हुताशन नन्दन असकन्दाख्य भयउ शिवनन्दन
गंगापुत्र तथा शरजन्मा भयउ प्रसिद्ध नाम शिवजन्मा
नाम षाण्मातुर्पुनि तासू सुरसेनानी पदवी जासू
कृत्तिकाख्य षट्कन्या जाते स्वीकृतवती पुत्रता ताते
कार्तिकेय इति नाम सुपावन भयउ तासु खलवृन्द भयावन
नारद मुनि सब कथा जनाई नृपकन्या सुनि अति हरषाई
शंभु अनुज्ञा लहि सब कन्या पालन करन लगी तसु धन्या
पुत्रभाव सब स्वीकृत कियऊ पोषण भार हरषि शिर लियऊ
साम्ब सदाशिव स्वेच्छाचारी आयउ तहँ आकाशविहारी
षट्कन्या अरु षण्मुख बालक रहे जहाँ सुर-नर-मुनि पालक
शिवहिँ शिवा तब भाषण लागी लखि बालक सिनेह रस पागी
हुतभुक् देवनदी नृपकन्या हम सुर किन्नर आदिक अन्या
करि निर्णय प्राणाधिप आसू कहिय कहिय यह बालक कासू
शिवा वचन सुनि बोले शंकर साधु शुभंकर दुष्ट भयंकर
त्रिभुवननन्दन बालक एहू तुअ नन्दन नहि कछु सन्देहू

यथा रत्न रत्नाकर जन्मा। तुअ नन्दन यह वीर अजन्मा
वह्निनिहित मम बीरज जोई पातित गंगा महँ भउ सोई
शरस्तम्ब संक्रामित सोई प्रकटे सुन्दर बालक होई
मम औरस सुत तुअ सुत एहू होइ निश्शंक अंक महँ लेहू
तजि विमान पृथ्वीतल आई वेगवती शिशु हृदय लगाई
खेचर खेगत कियउ प्रणामा ससुत साम्ब शिव लै लै नामा
पावक देव धुनी नृपकन्या प्रणमी गौरी त्रिभुवन धन्या
अञ्जलिबद्ध विनय बहु कीन्हा आशीर्वाद कुमारहिं दीन्हा
तुम सब धन्य मोर उपकारी सन्तति लालन पालनकारी
अस कहि कहि गिरिजा मृदुवानी हुतभुक आदि सबहिं संमानी
साम्ब सदाशिव लै निज बालक पहुँचि रजतगिरि सुर परिपालक
कियउ समुत्सव विविध प्रकारा वही मनहु मुदमंगल धारा
शिशु सितशशि इव बाढ़न लागे लखि सुरगण तारक भय त्यागे
धनुर्वेद पारग भउ वीरा अतुल पराक्रम अति रणधीरा
सेनापति पद सुरपति दीन्हा तिलक ललाट देश तसु कीन्हा

दोहा

सेनापति पदवी यथा, दीन्ह सुरेश्वर आय।
तारक असुर विनाश जस, कियउ शंभुसुत जाय ॥२॥

सोरठा

कहिय तथा समुझाय, सो सब चरितामृत गुरो।
शिष्य प्रश्न समुदाय, सुनि प्रसन्न गुरु कहत भउ ॥२॥

चौपाई

लियउ चञ्चुपुट शंकर बीरज हुतभक्षण कथमपि धरि धीरज
रंगभंग उत्पादित रोषा शापित कियउ वह्नि शिवयोषा
होहु सर्वभक्षी हुतभक्षण कुष्ठी कुत्सित अंग कुलक्षण
भोगहु निजकृत भोग विकर्मी करि हमार अपराध अधर्मी
निद्राभंग कथा विच्छेदा अरु शिशु-माता विषयक भेदा
सुखमय दम्पति प्रीति विभेदा ब्रह्मघात सम भाखत वेदा
अति भयविह्वल देव हुताशन भागे द्रुत जनु सौरभवाहन
अति लज्जित अरु कुपित भवानी जानि सदाशिव डमरूपानी
बोले मधुर मनोहर वानी अति आह्लाद हास्यरस सानी
अनुनय विनय आदि बहुवारा करि शंकर तसु क्रोध निवारा
मल्ली सुमन माल अति सुन्दर पहिराये शंकर गौरीउर
लखि प्रसन्न सुमुखी गिरिबाला बाहर भउ शंकर तत्काला
प्रिया समेत सभागृह आये लहि संभ्रम प्रमथादिक धाये
होन लगे बहु भाँति विचारा कीदृश सम्प्रति धर्मप्रचारा
सज्जन रक्षण दुर्जन दण्डा किमु निर्विघ्न सकल ब्रह्माण्डा
सुनत प्रश्न नन्दी भउ बोलत तारक-भार धरा प्रभु डोलत
गो द्विज देव संकटापन्ना लोक-वेद-आचार विपन्ना
धर्म कर्मकी अवनति बाढ़ी भउ अधर्मकी उन्नति गाढ़ी
पावत दुःख सकल धर्मिष्ठा भउ अति सुखभाजन पापिष्ठा
निर्भय फिरत अमर आराती अति उद्दण्ड उच्च करि छाती

सुनत वचन अस कहे महेशू अल्पकाल महँ मिटिहि कलेशू
तावत् द्वार देश सुरवृन्दा पहुँचे प्रभुपद पदुम मिलिन्दा
नन्दी द्वारपाल परचण्डा मिले हस्तधृत सुवरण दण्डा
दरस लालसा अमर जनायउ नन्दी प्रभुपहँ अरज लगायउ
भ्रू विक्षेपण मात्र अनुज्ञा कियउ महेश्वर शासनविज्ञा
लहि निदेश सुर कियउ प्रवेशा सहित वरुण यम धनद सुरेशा
जय जयकार करत सब आये प्रणमि दण्डवत् पुनि शिर नाये
संमुख थित भउ कर युग जोरे अस्तुति कियउ विनय रस बोरे

छन्द

जय जय गुणआगर करुणासागर असुरनिकन्दन पाहि प्रभो
असुर पराभव हरहु हरहु भव वैभव आपुन लखहु विभो
सुरगण अतिआरत प्रभुशरणागत वन वन भागत फिरत दुखी
संकट-परिमोचन-आर्द्रविलोचन नयनकोर लखि करहु सुखी

दोहा

प्रभु इंगित लखि प्रमथगण, बैठारे सुरवृन्द ।
रुचिरासनपर क्रमिक लखि, रुख प्रभु मुख अरविन्द ॥३॥

सोरठा

प्रभु संमुख करजोरि, बैठे सुरपति अति विनत ।
प्रणमि बहोरि बहोरि, त्राहि त्राहि भाषे सकल ॥३॥

चौपाई

प्रभु प्रसन्न मुख भाषण लागे लखि दीनता दयारस पागे
सुरगण कहहु दीनता कारण करिहउँ प्रतीकार अवधारण

सविनय कहन लगे इन्द्रादिक पुनिपुनिकरिकरिनतिनुति आदिक
तारक असुर पराभव नाथा दूर दुराइय करिय सनाथा
हम अनाथ प्रभु शरण समागत शरणागत रक्षण राउर व्रत
असुर पराक्रम सुर परितापू अवगत प्रभुहिँ साधु सन्तापू
अब असह्य प्रभु भयउ पराभव करत अहर्निश तारक परिभव
स्वाहा स्वधा वषट् अरु वौषट् रुद्ध कियउ तारक शठ निहँट
नन्दनवन अमरावति नगरी भोगत पियत अमिय भरि गगरी
यज्ञभाग भोगत खल सोई शासत द्विजहिँ न याचत जोई
वन वन फिरहिँ देव द्विज यूथा भय व्याकुल लखि असुर वरूथा
अति अनर्थकर असुर प्रचण्डा प्रभु समुचित अब ताकर दण्डा
सुनि अस वचन कुपित भउ शंकर लोहित लोचन रूप भयंकर
मौनीभूत भयउ सब कोऊ अति प्रगल्भ प्रमथादिक जोऊ
नन्दी भृंगी आदिक जेते भयउ त्रस्त प्रभु रुख लखि तेते
दन्तावलि युग अधर दवाये मुनिगण जय जय शब्द सुनाये
क्षणभरि ध्यान मग्न ह्वै गयऊ नयन खोलि पुनि भाखत भयऊ
शिव औरस सुत सुर सेनानी मारे तासु मरै अभिमानी
शिवनन्दन बिनु तासु निहन्ता नहि दूसर यद्यपि बलवन्ता
अस वरदान दियउ चतुरानन यही तासु निर्भयता कारन
सुर कारज लगि मोर विवाहू यह वृत्तान्त विदित सब काहू
तजि चिन्ता निर्भय सब होहू मानि वध्य कुमार-कर ओहू
कार्तिकेय कहँ करि सेनानी पहुँचहु शोणितपुर रजधानी

निर्भय होइ जाहु निजधामा उत्पाती कहँ भउ विधि वामा
दै सुरगण कहँ धैरज शंकर सुत मुख निरखे सुर अभयंकर
गो द्विज देव वेद अपकारी निपट निरंकुश स्वेच्छाचारी
तारक असुर महा उत्पाती करत उपद्रव अति दिन राती
जाइ पुत्र तुम ताकहँ मारहु लोक संकटापन्न उबारहु
मम औरस सुत सद्दश हमारा करहु यशोदीपित संसारा
पितु-आज्ञा सुनि गुह हरषाये करि अंगीकृत शीश नवाये
राउर आयसु सिर पर मोरे कहत कुमार उभय कर जोरे
विहँसि पञ्चमुख दीन्ह असीसा चिरजीवहु सुरचमू अधीसा
दलहु दुष्ट दल पालहु मित्रा होहु सदा परिशुद्ध चरित्रा
गो द्विज देव पितर प्रियकारी होहु सदैव धर्म पथचारी
गुरुजन मानद अनुग दयालू वृद्ध-सिद्ध-सज्जन श्रद्धालू
पतिहिँ प्रसन्न पुत्र प्रति देखी उमा हृदय मुद भयउ विसेखी
वीर प्रसूकर सहज स्वभावा लहहिँ हर्ष लखि पुत्र प्रभावा
गिरिजापतिकर प्रियतर वचना सुनि सुरपति बिसरे दुख अपना
अति प्रमोद भर हृदय सुरेशू निश्चय भयउ मिटे अब क्लेशू
भूषण भेष समन्वित सुन्दर प्रस्थानोद्यत सहित पुरन्दर
प्रणमे पितुपद पद्म षड़ानन आशीर्वाद दीन्ह पञ्चानन
सुरसेनानी सुरगण रञ्जन होहु सबल तारक खल भञ्जन
पुनि मस्तक आघ्राण महेशू करि करि पायउ हर्ष विशेषू
पुनि जननी पद पद्म प्रणामा कियउ कुमार वीर अभिरामा

गौरी हर्ष अश्रुमय धारा प्लावित गुह अभिषेक प्रकारा
सेनापति पदवी अभिषेका कियउ शैलजा गूढ विवेका
पुत्र वत्सला गिरिवर कन्या लियउ अंकभरि सुतहिँ सुधन्या
कही चूमि मुख हे सुत मोही करहु कृतारथ मारहु ओही

दोहा

मातु पिता पद युग प्रणमि, कियउ कुमार पयान ।
इन्द्रादिक अनुगत भयउ, चढ़िचढ़िरुचिर विमान ॥४॥

सोरठा

रण उत्सुक वर वीर, निशित शक्ति कर गहि चले ।
सुखकर परम समीर, विजय सूचनाकर बहे ॥४॥

चौपाई

वेग वायवी सुरगण आये सुखमय स्वर्गलोक नियराये
सेनानी स्वागत सब कियऊ पूर्ण कलश अमरी शिर लियऊ
दध्यादिक मांगलिक पदारथ आगे धरि सब भयउ कृतारथ
सौरभ सुरभि राजपथ सोहै गन्धर्विणी गान मन मोहै
अंशुकपट पथ विस्तृत राजै लम्बित सुमनमाल छवि छाजै
बगल युगल रोपित रम्भादिक रुचिर भेषधारी भट आदिक
वाद्य विविध विध बाजन लागे पढ़हिँ कवित्त भाट बढ़ि आगे
सैनिक भट रणदृश्य दिखायउ मनहु वीररस धरि तनु धायउ
जहँ तहँ नट नर्तकगण नाचत अभिनन्दनपद पण्डित बाँचत
सबहिँ अनुज्ञा कियउ अमर वर उत्सव समारम्भ भउ घर घर

लखि गंगा गुह दुरित-विभंगा हर शिर संगा तरल तरंगा
अति प्रमुदित मन कियउ प्रणामा मार्जन और क्षणिक विश्रामा
पुनि अवलोके नन्दन कानन सहित कुतूहल देव षड़ानन
भग्नोत्पाटित मूल धरणिरुह लखि भउ प्रकुपित वीर बली गुह
छिन्न भिन्न लखि लीला उपवन भउ दुर्दर्श वदन प्रकुपित मन
भृकुटी भंग निरखि सुरलोका मानि निहत रिपु भयउ विशोका
नष्ट भ्रष्ट लखि सुर प्रासादा भ्रष्ट भित्ति परिखा मर्यादा
भउ करुणाजल मग्न षड़ानन अति उत्कण्ठित संगर कारन
शक्ति उठाय कहन अस लागे सुमिरि शंभुपद पद्म परागे
अब विलम्ब-कारण कहु काहा देहिँ न कस आयसु सुरनाहा
तजहु तजहु शंका मनमाहीँ शत्रु पराजय संशय नाहीँ
गो-द्विज-सुर-विद्रोही जोई ओहि न राखि सकत अब कोई
यदि विधि-हरि-शरणागत ओहू हनिहउँ निश्चय निर्भय होहू
यदि मोकहँ गुरुजन पद भक्ती छेदन करिहि तासु गल शक्ती
यदि नहि मिथ्या वचन उचारउँ मारि शत्रु सुरवृन्द उबारउँ
यदि न दियउँ परतिय प्रति दृष्टी हतउँ शत्रु करि शायक वृष्टी
यदि अधर्म रुचि भयउ न मोही हतउँ महापातक रुचि ओही
यदि न हतउँ तारक दितिनन्दन नाम न होय मोर शिवनन्दन
साधु साधु भाषे सब सुरगन भयउ प्रहर्षित साधुसन्तजन
नारद आदि शुभाशिष दीन्ही और प्रशंसा बहुविध कीन्ही
जगदम्बा-जगदीश-तनूद्भव जो कछु कहिय करिय सब संभव

जय जय धुनि संकुल नभमण्डल पुलकित सजल नयन आखण्डल
पटपरिवर्तन करि गुह सुरपति कियउ सुदृढ़तर मित्रभाव अति
निज गुरु अनुमति लहि सुरराजा सहित देव द्विज आदि समाजा
सविनय गुहहिँ कहन अस लागे राउर बल हमार भय भागे
असुर-पराजित-अमर अनाथा निज रक्षित करि करिय सनाथा
सेनानी पद करु स्वीकारा यन्निमित्त राउर अवतारा
विहँसि षड़ानन शीश नवाये इन्द्र-वचन-स्वीकार जनाये

दोहा

जानि सुअवसर द्विजनिकर, अभिनन्दन बहु वार।
कियउ कियउ पुनि सकल मिलि, पुनि पुनि जयजयकार ॥५॥

सोरठा

लहि गुरु कृत अभिषेक, शोभमान तनु शिवतनय।
आनत सहित विवेक, सुर गुरुपद-युग प्रणत भउ ॥५॥
तिलक दियउ सुरराज, रुचिर सुगंधित भालतल।
देवचमू सिरताज, दियउ देव द्विज अभय वर ॥६॥

चौपाई

भयउ भुसुण्डी-धुनि चहुँओरा घन-घमण्ड गर्जन जिमि घोरा
वजे दुन्दुभी आदिक बाजा अमरीगण वरसावहिँ लाजा
सुरभि सुमन सुरगण बरसाये याचक मुहमाँगा-धन पाये
मिलि गन्धर्वी अरु गन्धर्वा कियउ नृत्य गीतादिक सर्वा
देखि सहसलोचन गुह बोले बहु दिन सुरगण वन वन डोले
लखि दुर्दशा अमरपुर केरी रण उत्सुकता वाढ़त मेरी

अब विलम्ब क्षण युग सम भासत कब शरसंघ शत्रुकुल नासत
आयसु करिय अमर पुर नायक करउँ पयान धरउँ धनु-शायक
कहे इन्द्र राउर आधीना अमर-चमू संगर-परवीना
करु आयसु बाजै अब डंका लहै असुर रमणी आतंका
चतुरंगिनी वाहिनी संगा करिय वीरवर अब रणरंगा
धनद वरुण यम अरु हम सबही तब अनुगामी होइहउँ अबही
बारह भानु आठ वसुदेवा अरु उनचास समीरण येवा
नक्षत्राधिप हुतभुक आदी चलिहैं किन्नर गन्धर्वादी
सुमिरि मातु पितु घनरव वयना बोले गुह सरसीरुह नयना
सज्ज होहु अब सैनिक सबही करउँ पयान असुरपुर अबही
निर्भय होइ चलहु सब भट्टा कादरता पर लागइ बट्टा
कसहु कमर अब करहु लराई लेहु समर यश सब मिलि भाई
जयजयकार करन सब लागे योधा सकल वीर रस पागे
तारक वध इच्छुक गुह देखी नारदादि मुद भयउ बिसेखी
दीन्ह असीस शीश धरि हाथा कहे अमरकहँ करिय सनाथा
सुर सेनानी असुर निकन्दन शत्रुञ्जय शत्रुञ्जय नन्दन
करिय पयान सुमिरि पितु माता सुखमय मगु मंगलमय गाता
सुनि शिवनन्दन शीश नवाये लही असीस परम सुख पाये

छन्द (भुजंग प्रयात)

बजी दुन्दुभी और छूटी भुसुण्डी
सुनाये कड़क्खा पटावृत्त मुण्डी

करीकण्ठ लम्बायमाना सुघण्टा
बजी हस्तिपोंने लिये हाथ डण्डा
भई बद्धपंक्ती नगाकार दन्ती
चलद्वाजि राजी भई उत्पतन्ती
लिये अस्त्र शस्त्रावली वीर बाँके
भये स्यन्दनारूढ़ भारी लड़ाके
असंख्यात प्रख्यात सत्कीर्ति पाँती
भये सज्ज प्रस्थान इच्छू पदाती

दोहा

अदिति सहित कश्यप प्रणमि, करि द्विजगण सम्मान ।
करि आज्ञा प्रस्थानकर, स्वयं कियउ प्रस्थान ॥६॥

सोरठा

फरकत दक्षिण अङ्ग, समरविजय सूचित कियउ ।
वीर बली रणरंग, रसिक कमर निज कसि लियउ ॥७॥

चौपाई

साजि महारथ मातलि आये देव शब्द कहि शीश नवाये
रथारूढ़ भउ गिरिजानन्दन सुमिरि मातुपितु करि गुरुवन्दन
छत्र सुवर्णदण्ड छवि छाजै गौरीपुत्र शीशपर राजै
चामर युग युग पार्श्व विराजै प्रभा विलोकि सूर्य शशि लाजै
चली वाहिनी लहि प्रभु अज्ञा दिक्पालादिक उत्सुक प्रज्ञा
ऐरावत आरूढ़ सुरेशा नानाभूषण भूषित वेशा

भयउ शम्भुनन्दन अनुगामी महाशत्रु तारक वध कामी
वज्र वज्रधर-कर अति सोहै छेदन हेतु शत्रु गल जोहै
महामेष चढ़ि भउ अनुगामी तेजस्तत्त्व हुताशन नामी
तेजोमय वर शस्त्र उठाये तेजोदीपित नभ दरसाये
नील महीधर आकृत गाता छिन्न भिन्न घन शृंगाघाता
तादृश महिषारूढ़ प्रचण्डा अनुगत वैवस्वत गहि दण्डा
महाप्रेत आरूढ़ भयंकर अनुगत नैऋत सुर अभयंकर
नील घटा घनघोर समाना महाकाय पर्वत परिमाना
तादृश मकरारूढ़ प्रचेता अनुगत भयउ मदोद्धत चेता
रिपु बन्धन वध कारण पाशा हाथ लिये हिय किये जयाशा
चढ़ि अति विक्रम मृग असवारी मारुत मनोवेग अनुकारी
अनुगत भयउ सदा शिवनन्दन कहि जय जय गुह जय संक्रन्दन
शत्रु रक्त पारणा समिच्छु गदा लिये कर विजय प्रतीच्छु
इच्छित समर सिन्धु अवगाहन भउ अनुगत शिवसुत नरवाहन
महासर्पकृत जटा निबन्धन वह्नि त्रिशूल कलित रिपु-इन्धन
तुषाराद्रि निभ वृष आरोही अनुगत शिवसुत रिपुकुल द्रोही
कुपित रुद्रगण अति विकराला हू हू करत ओढ़ि बघछाला
अमित अपर वाहन अधिरूढ़ा भउ अनुगत तजि बालक बूढ़ा
अन्धकार धूलीकृत भयऊ तहँ सबकहँ दिग्भ्रम ह्वै गयऊ
चतुरंगिनी अनी रव घोरा व्यापित भउ सब थल सब ओरा
नहि व्यक्ताक्षर शब्द सुनाये धुनि गंभीर मात्र नभ छाये

भूतल पद-खुर-नेमि-अघाता गज-भर-डोलत-तरि-इव माता
करत कुलाचल कच्छप डगमग प्रलयकाल नियरायउ लगभग
ग्रहगणकहँ निजनिज गति भूली सिद्ध समाहित नयनन खूली
शान्तिपाठ ब्राह्मणगण कीन्हा हँसि षण्मुख आश्वासन दीन्हा
स्वर्णमयी महि महँ गज आली लखि प्रतिबिम्बितनिजतनुकाली
अतल समुद्गत गज भ्रम कोपित कियउ शिलातल दन्तारोपित
उतरी चमू कनक गिरिवरते चमूभार कम्पित कन्दरते
महा चमू स्यन्दन चित्कारा करिवर बृंहित शब्द अपारा
महावीर वर कर ललकारा घोटक हेषा विविध प्रकारा
कन्दर शय हरि निद्राभंगा करि न सके यद्यपि बहुरंगा
दुन्दुभि धुनि गंभीर कराला कन्दरीय प्रतिध्वनि विकराला
नहि मृगराजहिँ सके जगाई प्रकटित गुरुगौरव गरुआई
सुर अनीक मर्दन भय पाई जहँ तहँ मृगगण चले पराई
तजि कन्दर मृगपति बहराये भयविहीन सुस्थिर दरसाये
अन्तःपुरगत असुर वधूगन केश पयोधर मण्डल नयनन
लखि धूली धूसर अकुलाई निज निज पतिकहँ जाइ जनाई
रथ गज तुरग ध्वजा धूलीमय निरखि असुरगण पायउ विस्मय
धूलीमात्र लखे सब कोई दीखत अन्य वस्तु नहि कोई
अध ऊरध जहँ तहँ चहुँओरा धूली निरखि करहिँ सब सोरा
तर्क वितर्क करन सब लागे अकस्मात् भय आयउ आगे
कहूँ निम्न थल उन्नत भयऊ धूली उड़ि उड़ि पड़ि जहँ गयऊ

कहुँ उन्नत थल अवनत भयऊ धूली ऊड़ि जहाँकी गयऊ
स्यन्दननेमि तुरग खुर जहँमा गयउ धरातल भउ सम तहँमा
गगन व्यापि गज सोहहिं कैसे वात समीरित भूधर जैसे
महा बृहत् सोहहिं रथ कैसे आयउ मेघ धरातल जैसे

दोहा

अमर वाहिनी जलधि महँ, असुर चमू तरिरूप ।
बूड़न चाहत तुरत अब, समर प्रलय अनुरूप ॥७॥
सेनानी शंकर सुतहिं, करि आगे सुरराज ।
चढ़ि आवत सुन खबर अस, कम्पित असुर समाज ॥८॥

सोरठा

भयउ प्रकम्पित गात, शोणितपुर नर नारि सब ।
छनछन आवत जात, खबर जनावन हेतु चर ॥८॥

चौपाई

कियउ षड़ानन धनु टंकारा पूरित भउ धुनि भरि संसारा
महि अहि कच्छप डोलन लागे ग्रहगण स्वाभाविक गति त्यागे
गिरि डोलत तरु गिरे हजारन मृगगण सहित भजे पञ्चानन
चीचीकूची करि खग नाना भयव्याकुल ह्वै गगन समाना
असुर चमू हलचल मचि गयऊ भीरु त्रासवश भागत भयऊ
शंकरनन्दन बनि सेनानी चढ़ि आयउ हमार रजधानी
को जानइ भावी अब काहा नियरायउ सुरचमू प्रवाहा
महा विपत्ति शीशपर आई असकहि रोवहिं लोग लुगाई

असुरवृन्द तारक ढिग गयऊ सविनय खबर जनावत भयऊ
लै निज संग सदाशिवनन्दन चढ़ि आयउ प्रभु जृंभनिकन्दन
महा महा योद्धा मिलि आये बल चतुरंग संग सजि लाये
आयसु यथा होइ महराजा करउँ तथा मिलि सकल समाजा
सुनि अस तारक अति अभिमानी अट्टहास करि बोले बानी
वाताहत कदलीइव थरथर काँपत मोर नाम सुनि घरघर
सो सब सम्मुख करत लराई पाथर सिन्धु पार तरि जाई
फूकि पहाड़ पतंग उड़ाई कबहुँ न कथा सुनी अस भाई
जो मोरे डर वन वन भागे सो पुनि आजु मोर शिर लागे
विस्फुरिताधर लोहितनयना कहे वीर रस बोरे वयना
त्रिभुवन विजय हस्तगत मोरा मोर अधीन विश्व चहुँओरा
निज निज रत्न सलामी दीन्हा कथमपि प्राण त्राण करि लीन्हा
यदि चाहउँ सुमेरु ढहवावौं लोकपालपुर गर्द मिलावौं
दिग्दन्तिन कहँ पकड़ि मँगावौं ग्रहगण बान्हि पताल पठावौं
रिपु कुल नष्ट भ्रष्ट करि डारौं कर्मसूत्रकृतबन्धन टारौं
निज बल निरवाहौं व्यवहारा निज अनुमति चलाउँ आचारा
करत प्रलाप रोष चढ़ि आवा सकल सैनिकन तुरत बुलावा
शम्बर नमुचि पाक बलवाना विप्रचित्ति भूधर परिमाना
हेति प्रहेति भूत संतापा इल्वल आदिक परम प्रतापा
कालनाभ अरु वीर अनर्वा वीर द्विमूर्द्धा आदिक सर्वा
अगणित उक्त अनुक्त यूथपति रुके द्वारपर सावधान अति

द्वारप भीतर खबर जनावा लै आयसु बाहर पुनि आवा
पहुँचे सकल खास दरबारा सिंहासनासीन सरकारा
सचिव आदि सबही तहँ जूटे आजु बड़नके छक्का छूटे
अमर अनीक निरखि विकराला सोचहिं सिर मड़रावत काला
क्रमिक्र यथोचित बैठे सबही जहँ तहँ प्रभु रुख पायउ जबही
घन गंभीर गिरा तब तारक बोले विश्व उपद्रव कारक
पौर वचन सुनि आवत हासी सुर सेनापति जंगलवासी
पहिरन चहत समर जयमाला उनके सिरपर पहुँचे काला
निजनिज अनुमति मोहिसुनावहु नहि संकोच तनिक मन लावहु
विना विचारे करै न काजा अनुशासन नीतिज्ञ समाजा
जो जन सहसा कारज करई आह राह आपुहि पगु धरई
शम्बरादि सुनि भाषण लागे महामूढ़ मदमत्त अभागे
उनके बल जानत हम नीके द्विज अरु देव बढ़े घरहीके
चढ़ि मैदान न संमुख लड़िहहिं भागि जाय कन्दर महँ सड़िहहिं
अमर वीरता सब जग जानत पुनि पुनि हरि हर शरण पुकारत
अमर चमू जलधर इव जानिय हम कहँ महावात इव मानिय
उनहिं भगावत लगिहि न वारा प्रभु प्रतीति करु वचन हमारा
हमहिं उनहिं अन्तर प्रभु कैसे हाथी अरु लुत्ती महँ जैसे
हमहिं उनहिं अन्तर प्रभु कैसे करिवर अरु पंकज वन जैसे
हमहिं उनहिं अन्तर प्रभु कैसे खगनायक उरगन महँ जैसे
हमहिं उनहिं अन्तर प्रभु कैसे अजायूथ महँ वृकवर जैसे

दोहा

वृद्ध सचिव बोलन लगे, सुनिय नाथ कछु बात।
मनोहारि हित वचन प्रभु, दुर्लभ जगत दिखात ॥९॥

सोरठा

ये सब ठकुरसुहात, वचन कहे प्रभु रुख निरखि।
इनकी लखब प्रभात, वीर धीरता गुह निकट ॥९॥

चौपाई

यानासन अरु द्वैधी भावा सहित समाश्रय विदित प्रभावा
सन्धि और विग्रहहिं वखाना षट् उपाय उशना भगवाना
यान सुअवसर नीति जनावा तथा अनवसर आसन गावा
द्वैधीभाव परस्पर भेदा रिपु मण्डल महँ नीति विभेदा
शत्रु महाबल निरखि समाश्रय कीजिय यह नैतिक जन आशय
जहँ सन्देह सन्धि तहँ कीजिय जय निश्चय विग्रह मन दीजिय
शिवनन्दन शिवसम बलवाना तहँ पुनि ब्रह्म वचन परमाना
सन्धि उपाय यहाँ प्रभु समुचित अपर उपाय मोर मत अनुचित
सुनि बोले तारक अति क्रुद्धा लोहित लोचन स्वर अवरुद्धा
प्रस्फुरिताधर दशन दबायउ गात प्रकम्पित भ्रुकुटि चढ़ायउ
हम कहँ नीति सिखावन आवा भरि मुहँ शत्रु प्रशंसा गावा
सब दिन खायउ अन्न हमारा भउ परिपुष्ट सहित परिवारा
रण अवसर भउ प्राण पियारा वचन सिंह करतूति सियारा
मुहँ नहिं कबहुँ दिखावहु मोही बूढ़ जानि शठ छोड़उँ तोही

शिर नवाय सो चले तुरन्ता कहि प्रतिकूल भयउ भगवन्ता
सेनापति लखि बोले तारक आयउ निकट उपद्रव कारक
सज्जन विनय वचन अधिकारी दण्डपात्र दुर्जन अपकारी
होहु सुसज्ज सबहि अब भाई देखउँ कार्तिकेय प्रभुताई
यूथप सकल यूथ निज साजै यात्रासूचक डंका बाजै
चलै संग मागध अरु वन्दी पढ़ै कड़कखा भट अभिनन्दी
रथ गज तुरग पदाती सबही व्यूह बद्ध करि बढ़वहु अबही
भीरु होइ सो घरही बैठै समरभूमि कायर नहि पैठै
नम्रीभूत भूप सब जहँमा रहे समुत्थित प्रस्तुत तहँमा
यूथप सब सन्नध ह्वै आये अस्त्र शस्त्र अति निशित उठाये
निशिचरपति आगमन प्रतीच्छू करन लगे संग्राम समिच्छू
शंख दुन्दुभी भेरी बाजा सुनि प्रस्तुत भउ निशिचर राजा
महा शंख धुनि अति गम्भीरा सुनत भीरु भट भयउ अधीरा
गजबृंहित हय ह्रेषित सोरा पूरित भउ सब थल सब ओरा
वीर बाँकुरन दै ललकारा जयजयकार कियऊ बहु बारा
स्यन्दन चित्कृति अतिविकराला सुनि कत बधिर भयऊ तत्काला
करि निशिचरपति गुरुहिप्रणामा प्रस्थित भयउ महा संग्रामा
गुरु प्रसन्न मन दीन्ह अशीशा सूचित कीन्ह अमंगल ईशा
वाम नयन भुज फरकन लागे चिन्ता तासु न कियउ अभागे
शस्ताशस्त विविध मृगयूथा कीन्हे सव्यासव्य वरूथा
शब्द भयंकर काक सुनाये अरु उड़ि उड़ि मस्तकपर आये

शून्य कलस आदिक बहुरूपा असगुन भउ भावी अनुरूपा
गिने न कछुक असुर मदमाता नाचत जग जस ईश नचाता
भये असुरपति रथ आरूढ़ा चले सभी तजि बालक बूढ़ा
स्यन्दन धुनि भउ अद्भुत रूपा सुनत चकित भउ अपि सुर भूपा
कायर कहे अरे रे दादा धुनि अरु प्रति धुनिकर प्रतिवादा
अद्भुत घटना भउ तेहि काला महामत्त गज भयउ बेहाला
स्रवै न मद अरु करै न नादा कायर-भीरु करहिँ बकवादा
जलधर जलधि विकल ह्वै गयऊ गर्जन वीची विस्मृत भयऊ
अम्बर संकुल विविध पताका रोकी आतप रुकी बलाका
कोलाहल डरपे अहिनाहा फुटन चहत ब्रह्माण्ड कटाहा

दोहा

तारक असुरहिँ चलत पथ, भयउ अनेक अनेक ।
असगुन अन्तक दूत इव, तदपि अटल तसु टेक ॥१०॥

सोरठा

अन्ध कियउ अविवेक, होनहार नहि टरि सकत ।
होत विलम्ब न नेक, गिरत पतंग कृशानु बिच ॥१०॥

चौपाई

बहन लगेउ तब झंझावाता परम प्रसिद्ध महा उत्पाता
चमूधरा धूलीमय गाता अन्धकार दश दिश दरसाता
गिरी टूटि अनगिनत पताका हँसत योगिनी कियउ मजाका
करि रवि वेष्टन परिधि कराला भयउ जनावत आगत काला

दीखत भउ बहु दिवस मझारी गिरत नखत गन असगुन भारी
जहँ तहँ असुर चमू चहुँओरा विकल होइ घूमत करि सोरा
चपला चमकन लगी अकाशा विना मेघ अद्भुत परकाशा
वज्रपात भउ शब्द कठोरा कहत प्राणभय जनु करि सोरा
गगन निरम्बुद शोणित धारा बरसे अस्थि और अंगारा
भउ भूकम्प महाभय दायक भयउ विमूर्छित करि करिनायक
चपल तुरंगम गिरे हजारन करि ह्रेषारव सहित सवारन
एक एकपर गिरे पदाती लहि लहि धक्का धड़कत छाती
रवि अवलोकत ऊरध आनन आइ असुरपति सम्मुख स्वानन
अति कठोर स्वर रोदन कियऊ कालागमन सूचना दियऊ
यद्यपि असगुन भउ बहु भाँती तदपि मोहवश अमर अराती
दियउ तनिक नहितिनपर ध्याना काल विवश कहँ रहत न ज्ञाना
चढ़ि विमान तब सुरगण नाना बोले वचन नीतिरस साना
यह सुनीति निदरै जो कोई अवश पराभव पावै सोई
शंकर सुत शंकरसम एहू करिहहिँ शरणागत पर नेहू
सहसबाहु वरवीर प्रतापी जाके त्रास त्रिलोकी काँपी
जहँ क्रीड़ामृग इव भउ रावन लंकापति इन्द्रादि भयावन
तासु सहस भुज छेदनिहारा जो पुनि पुनि क्षत्रिय संहारा
जो प्रभु महाविष्णु अवतारा जासु प्रताप विदित संसारा
सोउ जानि अतुलित बल षण्मुख भयउ न रणउद्यत जसु सम्मुख
तिनहिँ तोहि संगर कहु कैसे भूधरपर शिर टक्कर जैसे

छुवत जासु शत शिखर अकाशा व्यापित दिङ्मण्डल अवकाशा
क्रौञ्च नाम पर्वत अति भारी कियउ सछिद्र एक शर मारी
तिनहिँ तोहि संगर कहु कैसे लड़ै सियार सिंह सन जैसे
सुनि नभ भाषण हृदय विदारक भउ कम्पित अरिकम्पन तारक
धरि धीरज पुनि उत्तर वानी बोला गरजि वीर अभिमानी
रे वराक सुरवृन्द अभागा बहुरि मूढ़ सुलगावसि आगा
करिहउँ भस्मसात् सब काहू लखहु मोर करिकर इव बाहू
मोर बाणव्रण व्यथा भुलाई लायउ बालक एक बुलाई
विषधर सरिस बाण लखि मोरा गिरिहि महीतल बालक तोरा
बालक बल जल्पसि बहु भाँती पुनि बीतत कहरत दिन राती
यथा अतस्कर तस्कर साथा तस्करसम दुख लादत माथा
तस यह बालक तुम्हरे संगा लहिहि प्राणभय पड़ि रणरंगा
अमर समेत अमर महराजू हति हतिहउँ पुनि शिवसुत आजू
कहि अस क्रोधाकुल खल तारक गहे कृपाण विपक्ष विदारक
लखि भय विह्वल सुरगण भागे यद्यपि विजय पाइहहिँ आगे
पड़ि संभ्रम अति द्रुतगति भयऊ गिरत पड़त षण्मुख ढिग गयऊ
बोले भयभञ्जन सुररञ्जन नियरायउ तारक मद गञ्जन

दोहा

गहि कर असिवर असुरपति, अट्टहास करि क्रुद्ध ।
कहे सारथिहिँ हाँकु रथ, हतउँ अमर एहि युद्ध ॥११॥

सोरठा

चलहु जहाँ सुरराज, अधम पातकी कपट रत ।
जाको तनिक न लाज, छन भागत छन परत पग ॥११॥

चौपाई

हाँकि तुरन्त मनोजव स्यन्दन चले सारथी जहँ संक्रन्दन
सुर अनीक सागर मगु आगे निरखि सारथी काँपन लागे
अनुपम अगम अजेय अपारा धसन चहत धरती जसु भारा
निरखि अमरवाहिनी विशाला तमके तारक वीर कराला
महा-वीररस–रसिक–शिरोमणि असुर दैत्य दानव-कुल-दिनमणि
युगल बाहु भउ रोम पुलक भर रण अवसर लखि हृष्ट वीरवर
सहज प्रकृति यह वर भट केरी होइ प्रहर्षित प्रतिभट हेरी
अमर चमू चर पहुँचे तहँमा रहे वीरवर तारक जहँमा
चतुर चार तब भाषण लागे निर्भय हृदय प्राणभय त्यागे
विजय पराजय विधिके हाथा कवि कोविद गावत यह गाथा
वह अनुकूल समय अब बीते सामर अमरराज जब जीते
अब प्रतिकूल समय नियरायउ तव संहर्ता शिवसुत जायउ
सुमिरहु ब्रह्मवचन मनमाहीँ प्राण त्राण अब संभव नाहीँ
अचल चलै वरु चलै न दिनकर वचन अलीक न हरिहर विधिकर
जस शंकर तस शंकर बालक करुणाकर शरणागत पालक
यदि मनमहँ जीवनधन नेहा तजहु दर्प सुन्दर मत एहा
गुह शरणागत होहु महामति जानहु मरण अन्यथा निजगति

मोर वचन यदि रुचै न भाई सम्मुख ह्वै अब करहु लड़ाई
भावत तथ्य न मूढ़हिं कैसे पथ्य मुमूर्षु व्यक्ति कहँ जैसे
सुनत असुरपति भउ अतिकोपित कियउ शरासन शर आरोपित
तुरत वीर शम्बर तहँ आयउ चर वध नीति विरुद्ध जनायउ
तारक असुर महा अभिमानी वानी कही क्रोधरस सानी
अति निर्भय कटु भाषण भाखी कथा अवाच्य उठाय न राखी
कोप कृशानु बरत हिय मोरा अविदित मोर सुभाव न तोरा
शिर छेदन याके अब समुचित नीति विचार अनवसर अनुचित

दोहा

सुनि तारकके वचन अस, कहे विहँसि सुर दूत ।
अटपट मनमानी बकत, किमु सवार भउ भूत ॥१२॥

सोरठा

पत्नी लोचन नीर, कोपानल बुतवहु तुरत ।
होइ न छार शरीर, जरि जाते तुअ असुर पति ॥१३॥

चौपाई

सुनि अति क्रोधाकुल तारक खल लगा सुनावन निजमुख निजबल
भुवन–चतुर्दश–जीतनहारा जाके भुज–बल–सिन्धु अपारा
बूड़े सकल शत्रुकुल जहँमा निर्लज गाल बजावत तहँमा
अन्तक-नगर पठावउँ तोही अब जनि दुष्ट खिजावहि मोही
सुनत दूत हँसि भाखत भयऊ मूढ़ तुम्हार ज्ञान कहँ गयऊ
निज मुख निज परसंसा करई जो जन सो जीवतही मरई

भृकुटी-भंग भुवनसंहारक तासु तनय मारक तव तारक
तासु विरोध बचावै तोही त्रिभुवन कोउ न दीखत मोही
यदि निज जीवन प्रिय खल तोरे मानहु हितकर भाषण मोरे
शरण गहहु शंकर सुत केरी अब तारक समुचित नहि देरी
मनिहहु मोर वचन यदि नाहीं निश्चित पतन समरथल माहीं
सुनि बोले तारक अभिमानी मिले मोहि गुरुवर बड़ ज्ञानी
नीच निरक्षर भट्टाचारज आरज शिक्षक अघी अनारज
लहि अनुशासन भयउँ कृतारथ अब समुचित दक्षिणा पदारथ
असकहि गहिशित असिवर हाथा बढ़े दूतप्रति निशिचर नाथा
सुमिरि शंभु-पद-पदुम-परागा शिव शिव कहत सहित अनुरागा
झपटि दूतवर हनेउ चपेटा तारक मुहँबल पट महि लेटा
मणि माणिकमय मुकुट मनोहर टूट फूट गउ गिरत भूमिपर
मुकुट लिये कर चले दूतवर पहुँचे जहाँ रहे गुह रथपर
इन्द्रादिक सुर पूछन लागे अति विस्मित ह्वै बढ़ि बढ़ि आगे
कहहु किरीट वीर कस पायउ तारक मद मथि सकुशल आयउ
कस बतकही भई तहँ भाई समाचार सब कहहु बुझाई
सुनत चतुर चर भाषन लागे शीश नवाय विनय रस पागे
प्रभु-महिमा-लवलेश-प्रतापा भयउ दनुजपति विगलित दापा
समुचित नय हम ताहि सुनावा विधिवश तसु हिय एक न आवा
गहि असि मोहि हनन खल धावा विधिवश मोर चपेटा खावा
गिरेउ मुकुट धरणीतल तेकर भयउ उपस्थित सो हम लेकर

विहँसि षड़ानन कहेउ तुरन्ता किय कौतुक तुम अति बलवन्ता
होहु सुसज्ज सकल मिलि भाई दनुज दैत्य पर करहु चढ़ाई
अञ्जलिबद्ध पुरञ्जन बोले विस्मयसूचक मस्तक डोले
समाचार यह विस्मय कारक पराभूत भउ अतिबल तारक
विश्वव्यापिका प्रभुता जाकी भइ चरकृत दुर्गति कस ताकी
लोकप वशीभूत सब जाके कहु चरकृत परिभव कस ताके
गौरीहर परिणय जेहि हेतू अतनु विश्वविजयी झषकेतू
मृत्यु हेतु जाकर गुह जाये सो कस चरकृत परिभव पाये

दोहा

विहँसि निरञ्जन कहत भउ, सुमिरि शम्भु पदपद्म।
अघटित सुघटित अञ्जसा, करहिँ रजत गिरि सद्म ॥१३॥

सोरठा

सुविदित जासु प्रताप, जग उत्पति-थिति-हति करत।
चराविष्ट सो आप, तारक मद मर्दन कियउ ॥१३॥
भूसुर-अमर–विरोध, कहु काकर कल्याण भउ।
ब्रह्म वचन अनुरोध, आपुन ताकर वध कियउ ॥१४॥

चौपाई

तारक असुर महा अभिमानी लहि यह दुर्गति लही गलानी
शम्बर आदिक नीति बखाना सुख दुख काल कर्म कृत नाना
उन्नति अवनति कर्म अधीना हर्ष विषाद करहिँ मति हीना
वामन वञ्चित जाय पताला बहुरि होइहैँ बलि सुरपाला

सुनि उत्साहित भउ रजनीपति सिंहनाद सब लगे करन अति
भयउ दुन्दुभीनाद उभय दल शंख बजायउ यूथप अति बल
देवासुर-अनीक सरितापति तजि मर्यादा चले उमड़ि अति
भयउ तरंगित अविकल दोऊ यूथप गिरे तीर तरु दोऊ
भयउ कोलाहल त्रिभुवन व्यापी जनता घर घर थर थर काँपी
बाजन लागे मारू बाजा पढ़त कड़क्खा भाट समाजा
मारु मारु कहि लपकै कोऊ पुनि धरु धरु कहि झपटै दोऊ
कोऊ भिन्धि भिन्धि चिक्करई छिन्धि छिन्धि कोऊ उच्चरई
कृन्धि कृन्धि भाषहिं वर बीरा निःकासहिं तरकस ते तीरा
चम चम चमकत असि तहँ कैसे विद्युल्लता गगनमहँ जैसे
महाभुसुण्डी धुनि तहँ कैसे वज्राघात प्रलयमहँ जैसे
गज बृंहण हयह्रेषा कैसे प्रलय पयोधि वीचि धुनि जैसे
हयखुर रव रथचित्कृति कैसे झंझावात जात धुनि जैसे
सन सन धुनि पदातिकृत कैसे भूमिकम्प कालिक धुनि जैसे
बढ़े वीरवर अति विकराला लिये हाथ गहि बरछी भाला
द्वन्द्वी प्रतिद्वन्द्वी भिरि गयऊ सैनिक छटा अनूपम भयऊ
रथी रथीते गजी गजीते हयारूढ़हू हयारूढ़ते
पैदल पैदल भिरे परस्पर भयउ समर प्रारम्भ प्राणहर

छन्द

धाये वरवीरा अति रणधीरा चढ़ि मैदान भिड़न्त भयो
करि अरि आह्वाना भट बलवाना लड़त मरण भय भूलि गयो

जयजय शिवनन्दन असुर निकन्दन सुर अनीक उद्घोष कियो
जय जय जय तारक सुरसंहारक कहे असुरदल उमगि हियो

छन्द (भुजंग प्रयात)

महावाण आसार धारा प्रपाता
कहै लोक काधौं करैंगे विधाता
रथारोहियोंकी भई बद्धपाँती
धरा नेमिभारावनम्रा लखाती
घनाकार काली गजाली बढ़ी है
गजी हस्त चण्डी भुसुण्डी चढ़ी है
चलद्वाजि राजी नटन्ती नटी है
पदाती पदाघात उर्वी फटी है
महाखड्ग लै लै फिरंगी लड़े हैं
लिये हाथ भाला तुरंगी अड़े हैं
चमू सिन्धु शस्त्रावली ज्यौं तरंगा
दिवारात्रकालीन संगीन दंगा
महावीर संग्राम आनन्द भागी
गजाली किये लक्ष्य बन्दूक दागी
गजाली भगी वेग आवेगते यौं
घनाली महावात संप्रेरिता ज्यौं
धरे धीर कोऊ न फौजी सिपाही
गिरे भी भिरे भी भई वाहवाही

पदाती पिले भी तले हाथियों के
डगे भी भगे भी बिना साथियों के
झनत्कार शस्त्रास्त्रसंपातजाता
रणत्कार ज्यौं नूपुरों के सुनाता
चले पट्टिशो ओ गदा भिन्दिपाले
भये भूमिशायी किते भूमिपाले
हने खड्ग स्वर्गीय वर्गीय वीरे
लिये ढाल ते रोकि दैतेय धीरे
त्रिशूली सुरों से भई छिन्नभिन्ना
चमू तारकीया भई पै न खिन्ना
पढ़े विक्रमाख्यान बंदी कड़क्खा
महत्त्वाभिमानी महामान रक्खा
कटे बख्तरों ते उड़ी तूलरासी
तऊ भी भटों में न छाई उदासी
गिरे भी भिरे भी अड़े भी लड़े भी
जुटे भी छुटे भी सटे भी कटे भी
दिवाकी न संज्ञा न संज्ञा निशाकी
स्वकीयापरीया न संज्ञा दिशाकी
कहूँ शक्तिधारी करै विद्ध छाती
कहूँ योगिनी आँत लै गीत गाती

महाडाकिनी शाकिनी भी समाई
महाअट्टहासा सुसंगीत गाई
महा-भूत-वेताल-वेतालिकाएँ
महा-भैरवी और कापालिकाएँ
असृग्रक्तवस्त्रा विवस्त्रासशस्त्रा
महातांडवाऽडंबरा आत्तअस्त्रा
लगी तारकीया चमूको चबाने
लगा होश सेनानियोँ का ठिकाने
गजारोहियोँ ने भुसुण्डी चलाई
महा भैरवी दाँत गोली दबाई
भये स्यन्दनारूढ़ दैतेय राजा
दिये जोरसे मेघ सातो अवाजा
धरो धीर वीरा न थायी शरीरा
न खोवो न खोवो यशोरूप हीरा
लखो भी जरा अस्त्रशस्त्रीप्रतापा
अभी मेटिहौँ भूतप्रेतादि दापा
लगे रोकने वाहिनी वाहिनीपा
बढ़े भी सभी देवसेना समीपा
महा युद्ध रूपी रचे द्यूत योधा
धरे प्राण बाजी भरे घोर क्रोधा

तहाँ अस्त्रसन्धान था अक्षरूपा
छटा आज फौजी भई थी अनूपा
सुराराति ब्रह्मास्त्र सन्धान कीन्हें
बलाराति भी हस्त ब्रह्मास्त्र लीन्हें
मिले अस्त्र दोऊ सुसंधीयमाना
जगद्भस्मसात्कारि जाज्वल्यमाना
त्रिलोकी ज्वलज्ज्वालदंदह्यमाना
प्रभो पाहि पाहीति आक्रोशमाना
किये अस्त्र आकृष्ट दोऊ बली वे
भये क्रोध आविष्ट दोऊ दली वे
भई शान्त ज्वालावली अस्त्रजाता
सुनो तात पश्चाद्भवी युद्ध बाता
महाशंख दोनों दलोंके बजे हैं
महावीर दोनों दलों के सजे हैं

दोहा

असुरराज गर्जन लगे, तजि नारायण बाण ।
करि प्रणाम अमराधिपति, बहुरि बचाये प्राण ॥१४॥

सोरठा

युगल वीर बलवान, विविध पराक्रम करत भउ ।
दोऊ कलानिधान, नहि तिलभरि कोऊ हटे ॥१५॥

चौपाई

पावकास्त्र छोड़े असुरेशा वारुणास्त्र वारे अमरेशा
पर्जन्यास्त्र तजे असुरेशा वायुअस्त्र वारे अमरेशा
नागपाश निशिचरपति फेंके गरुड़ अस्त्र तजि सुरपति छेंके
तारककृत शैलास्त्र प्रहारा रोके सुरपति वज्र सहारा
मोहनास्त्र तारक सन्धाना चैतन्यास्त्र इन्द्र भगवाना
तजे सकल दिव्यास्त्र असुरपति कियउ निवारित सकल अमरपति
शतसहस्र शर एकहि वारा कियउ निशाचर नाथ प्रहारा
शर आच्छन्न भयउ अमरेशा जिमि घन पटलाच्छन्न दिनेशा
कियउ पराक्रम सुरपति अद्‌भुत काटे वाण जाल प्रभु अति द्रुत
इक इक शर शत शत शर काटा कटे सकल शर बाटहि बाटा
चाप अलात चक्र सम सोहे प्रतिभटहू लखि पटुता मोहे
शर आरोपत खैंचत मारत कोउ न लखि सक कार्य अनारत
दक्षिण–वाम–साचिता–पटुता लखि तारक माना निज लघुता
साधु साधु सब भाखन लागे तारक क्रुद्ध भयउ पुनि आगे
जुटे सुरासुर निजनिज जोड़ी दल-युग जय लालसा न थोड़ी
रवि शशि भिरे राहु अरु केतू विसुकर्मा मय कला निकेतू
लोकप यम कुबेर वरुणादी भिरे महाबल शम्बर आदी
इल्वल विल्वल आदिक वीरा जूझे वसुगण ते रणधीरा
उशना सुरगुरु संगर पण्डित भिरे परस्पर सकल अस्त्रवित्
भिरे युगल द्वन्दी प्रतिद्वन्दी पढ़े वीररस कविता वन्दी

कृतकृति प्रतिकृति दोऊ दोऊ अड़े लड़े अरु हटे न कोऊ
दलमल दल कोलाहल भारी भई त्रासवश जनता सारी
जय शिवनन्दन अरु जय तारक भयउ महारव वधिरी कारक
लहि अमर्ष तारक बलवाना श्रुतिपर्यन्त शरासन ताना
करन लगे शरवर्षण वीरा जिमि असरेस नील घन नीरा
दश दश शर वाजिन कहँ मारे तीस सारथी ऊपर डारे
शत शर इन्द्र लक्ष्य करि मारे ध्वजा लक्ष्य सत्तर शर डारे
निरखि हस्तगति द्रुत रिपु केरी सुरपति साधु साधु कहि टेरी
सुमिरि इन्द्र शंकर पद धूरी करि तिल सम काटे शर भूरी
एक एक शर शत शत निकसे शत शत सहस सहस पुनि विकसे
लखि शर विद्या सुरपति केरी शम्बरादि तारक दिश हेरी
लखि शरजाल विशाल अपारा तारक मायाजाल पसारा
भयउ अदृश्य कियउ शर वर्षण दुर्धर्षण सुर पायउ धर्षण
मूशल धारा बरसा पानी पाई सुर वाहिनी गलानी
पावक वृष्टि भई सुर ऊपर वही रुधिर धारा धरणीपर
माया निर्मित भूधर नाना गिरत लगी सुर चमू ठिकाना
जहँ तहँ उरग समर भू ससरे जहँ तहँ विच्छू आदिक पसरे
शूकर वाघ जन्तु भयदायक घुमड़े जाय जहाँ सुरनायक
अमर चमू यद्यपि रणधीरा भई संकटापन्न अधीरा
लखि माया सुरपति अकुलाने किंकर्तव्यविमूढ़ भुलाने
गये सकल मिलि शिवसुत शरणा पकड़े त्राहि त्राहि कहि चरणा

बोले मृदुल स्वभाव महाबल गौरीतनय भविष्य प्रबलबल
जासु कृपा जनता सुख पावै यज्ञ भाग दै जाहि रिझावै
विश्व व्यवस्था जासु अधीना भयउ आजु सो सुरगण दीना
सुख दुख आदि ईशके हाथा एक सदाशिव सबके नाथा
तजि विषाद निर्भय सब होहू जानहु सबहि मृतक अब ओहू
विधि निर्मित हम वाके काला मेटि सकै को विधि लिपि भाला

सोरठा

करि गुरुवर्ग प्रणाम, चले हरषि हिय शिवतनय।
सप्त मातृ शिव नाम, कही लेइ करु रिपु विजय ॥१६॥
वाणी भई अकाश, तुअकर तारक बध नियत।
सुर मुनि सकल हताश, करहु प्रहर्षित हतहु रिपु ॥१७॥

चौपाई

सुनि अकासवानी सुख रूपा भयउ तुष्ट सुरगण सुरभूपा
फड़के गुह दक्षिण भुज नयना दीन्ह शुभाशिष द्विज ऋतवयना
कियउ कुमार धनुष टंकारा धुनि भइ जिमि शत वज्र प्रहारा
अहि महि महिधर डोलन लागे रण वासना दनुजगण त्यागे
धड़कि उठा हिय तारक केरा सुर अनीक जयजय कहि टेरा
दिव्य अस्त्रवर विद्या नामा शास्त्र प्रसिद्ध महा बल धामा
तजे षड़ानन अति रणधीरा गौरीहर नन्दन वरवीरा
माया सकल जासु परभावा मायापति कहि श्रुतिगण गावा
तासु तनय ढिग ठहरै माया जैसे रवि ढिग तिमिर निकाया

सकल उपद्रव तुरत दुराये प्राण त्राण इन्द्रादिक पाये
आश्वासन सुरकहँ गुह दीन्हा शक्ति अमोघ हाथ गहि लीन्हा
तारक असुर दृष्टि पथ आवा कार्तिकेय नय वचन सुनावा
रे रे तारक असुर वराका कियउ उपद्रव तुम नहि का का
गो–द्विज–देव–वृन्द–अपकारी निज निर्मित पथ स्वेच्छाचारी
तव प्रताप परितापित लोका सबकहँ धर्म कर्म महँ रोका
विधि परवश सुर भयउ पराजित विधि-वर लहि तुम भये विश्वजित
सुमिरन करहु ब्रह्म वरदाना तर्क वितर्क तजहु अब नाना
मम पितु चरण शरण अब गहहू करि अभिमान वृथा जनि लरहू
हम तो उनकर आज्ञाकारी गो–द्विज–देव–साधु-हितकारी
विजय पराजय ईश रजाई जीवन मरण कर्मगति भाई
कर्मसूत्र निज कर गहि ईशा भ्रामहिँ पुतली सरिस अनीशा
मानहु मोहि न दुर्बल बालक जानहु सकल दनुज कुल घालक
हितकर वचन अरुचिकर जाकहँ जानहु वाम विधाता ताकहँ
विग्रह सन्धि यथारुचि करहू प्रभुपद गहहू वा लड़ि मरहू
नीतिरीति मैँ सकल सुनाई भावी प्रबल मेटि नहि जाई
सुनि तारक बोले बलवाना तन शिशु भाषण वृद्ध समाना
नयमय वचन यथारथ एहू हितउपदेश न कछु सन्देहू
जीवन मरण ईशकर हाथा मूढ़ अयश थापहिँ निज माथा
प्रकृति अधीन जीव सब जानहु प्रकृति प्रवर्तक ईश्वर मानहु
प्रकृति आसुरी असुरन केरी बदलि सकै सो प्रकृति न मेरी

मरिहौँ समर मान नहि तजिहौँ सिर नवाय जग मैँ नहि लजिहौँ
पीठ दिखाय अयश नहि लहिहौँ समरभूमि मरि सद्गति पइहौँ
यह शरीर क्षणभंगुर भाई यश अरु अयश जगत रहि जाई
करहु समर अब रणरस चाखहु मान प्रतिष्ठा आपुनि राखहु
तारक भटसे पड़ी लड़ाई सुनी बहुत मैँ तोर बड़ाई
विहँसि षड़ानन दीन्ह जवावा काल बुलाय तोहि यहँ लावा
जस तानी भरनी तस समुचित जस अपराध दण्ड तस समुदित
बोले तब गुह लोहित नयना लखि सुरनायक करुणाअयना
अब सुस्थिर होइ संगर देखिय तारक असुर मृतक सम लेखिय
छलवल करि जय चाहत एहू हनिहउँ निज बल नहि सन्देहू
यूथप यूथ अभय होइ बैठैं दानव शव बिच जम्बुक पैठैं
बोले तारक करि तब हासा वीर सकल अब लखहु तमासा
जिमि गंगाजल गंगाजल इव जिमि काशीथल काशीथल इव
तारक गुह रण तिमि तदुभय इव समावेश नहि लहै अन्य इव
युगल वीरवर अति बलशाली बल साँचे रणपुतली ढाली
उभय शत्रुजित् अस्त्र शस्त्रवित् समर कौतुकी समर कलावित्
शायक जाल बनावत काटत झपटत डपटत पुनि पुनि रपटत
मेघाच्छन्न सूर्य इव पुनि पुनि शराच्छन्न प्रकटत दोऊ पुनि
दिव्य अस्त्र सन्धानहिँ दोऊ तुरत निवारहिँ हटहिँ न कोऊ
पहुँचे विधि-हरि-हर-भगवाना समर दिदृक्षू चढ़ि चढ़ि याना
असुर–सारथी–स्यन्दन–वाजी निहत कीन्ह गुह तजि शरराजी

तारक विरथ गहे तलवारा गुह प्रति चला देत ललकारा
होहु ठाढ़ अब मोर समक्षा होहु शृगाल गृद्धकर भक्षा
वीर कहै नहि करि दिखलावै बकि बकि वृथा न गाल बजावै
जानत तोहि वीर सब प्रानी हम तपसीसुत शिशु अज्ञानी
करहु पराक्रम आवहु आगे जाहु न भागि मोर शर लागे
अस कहि विहँसे देव षड़ानन तारक रक्तनयन विकटानन
तारक गुह प्रति धावा कैसे कालीनाग गरुड़ प्रति जैसे
अस्त्र शस्त्र गहि भिरे परस्पर जैसे हिरण्याक्ष अरु शूकर
तारककृत कृपाणके वारा रोके ढाल अड़ाय कुमारा
वार कियउ पुनि पुनि तारक भट रोके गुह भट पुनि पुनि झटपट
अति द्रुततर गति शंभुकुमारा काटि दिये तारक तलवारा
तारक महागदा कर लीन्हे महागदा गहि गुह हँसि दीन्हे
धावहिँ चतुर्दिक्षु भट दोऊ चक्र अलात कहत कवि कोऊ
दक्षिण वाम भ्रमहिँ वर वीरा करहिँ पैतरा कत रणधीरा
छन ऊपर छन नीचे आवहिँ युद्ध चातुरी युगल जनावहिँ
सम रण कौशल सम बल दोऊ चाहत क्षण विश्राम न कोऊ
चटचट शब्द होत तहँ कैसे वज्राघात फुटत गिरि जैसे
श्वासानिल तहँ भासत कैसे प्रलय समय महँ झञ्झा जैसे
भउ कानन तरुवर उन्मूलन दिग्गजहू लागे तब डोलन
अन्धकार मय दशदिश भयऊ धूली मय सब थल ह्वै गयऊ
झपटहिँ डपटहिँ करहिँ प्रहारा पुनि पुनि देहिँ दोउ ललकारा

विजय पराजय लहै न कोऊ जय जयकार करहिं दल दोऊ
तब शिवनन्दन अतुल प्रतापा भउ अति कोपित लखि रिपुदापा
मारे गदा असुर उर माहीं द्रुतगति अद्भुत वरणि न जाहीं
मूर्छित असुर गिरा महिमण्डल निरखि प्रहर्षित भउ आखण्डल
उशना मुनि तारक तनु परसे पढ़ि पढ़ि मन्त्र अमिय जल बरसे
गुरु प्रसाद लहि उठे तुरन्ता तारक असुर महा बलवन्ता
गुरु महिमा कहि सकै न वेदा दीनदयालु हरहिं सब खेदा
गुरुप्रसाद निज निज पद पाये लोकपाल दिक्पाल कहाये
श्रीगुरु सकल–पदारथ–दाता परमारथ प्रकाश दरसाता
अन्धकार मायामय गञ्जहिं जिमि निशितम राकेश विभञ्जहिं
गुरु प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं यह सिद्धान्त सुदृढ़ श्रुति माहीं
देव रोष महँ गुरू सहारा गुरू रोष को राखनिहारा
तीन ताप तापित संसारा गुरु वचनामृत शीतल धारा
शुभ मारग उपसर्ग अनेका काटत गुरु उपदिष्ट विवेका
जलद पटल इव कुमति हजारन गुरु मारुत इव करत निवारन
धन्य धन्य पुनि धन्य शिष्य सो गुरुपद पंकज प्रेम करत जो
धन्य धन्य पुनि धन्य शिष्य सो गुरु श्रद्धामय अमिय पियत जो
धन्य धन्य पुनि धन्य गुरू सो भवसागरते पार करत जो
भवसागर नौका प्रभुसेवा कर्णधार गुरुवर बिनु खेवा
प्रतिमा थण्डिल पावक पानी रवि गुरु पूजा पीठ बखानी
बेद-पुराण भारती नाना कहेउ पूज्यतम गुरु भगवाना

सोरठा

सावधान मन लाव, प्रकृत कथानक सुनहु अब ।
शंकर सुमन प्रभाव, कहउँ यथामति तुमहिँ सब ॥१८॥
कार्तिकेय-तारक-समर, निरखहिँ सुर मुनि वृन्द ।
भिरे युगल भट कसि कमर, सोहत श्रम जल अंग ॥१९॥

छन्द

करि करि हुंकारा विकट प्रहारा युगल वीरवर करत भयो
दानव-सिरताजा तारक राजा पुनि पुनि छाड़त अस्त्र नयो
हँसिहँसिशिवनन्दनअसुरनिकन्दनपुनिपुनिशस्त्रनिरस्तकियो
समर धुरन्धर महाशक्तिधर सुमिरे वृषवाहनहिँ हियो

चौपाई

कर्णाकृष्ट धनुष गुह कियऊ शंख बजाय सूचना दियऊ
कुलिश कठिन अति धुनि टंकारा परिपूरित भइ भरि संसारा
जगदन्तक अन्तक इव धाये मनहु वीररस तनु धरि आये
लोचन अरुण महाछवि छाजत निरखि अरुण सरसीरुह लाजत
काधौँ दैव करँगे आजू विकल भये सब असुर-समाजू
तब तारक भट करि अति दर्पा छाड़न लगे बाण जिमि सर्पा
बाजन लगे विविध विध बाजा पढ़हिँ कवित्त भाट-महराजा
इत वाचस्पति उत मुनि उशना दै असीस बल बढ़वहिँ दुगुना
सेना सेनानी बढ़ि आगे रणउत्सुक ललकारन लागे
मारउँ अथवा मरउँ समर महँ पीठ दिखाय न फिरिहउँ घर कहँ

यह निश्चय सबही करि लीन्हा प्राण त्यागकर भय तजि दीन्हा
भिरे. वीरवर लै लै नामा द्वन्द्व युद्धरत अति बलधामा
कियउ वीरवर अद्भुत करनी बही रुधिर धारा रण धरनी
रुण्ड मुण्ड बिनु इत उत धावत शस्त्र लिये कर गिरत गिरावत
योधा रिपु दल काटहिँ कैसे कर्षक शस्य सुकालहिँ जैसे
क्रोधाविष्ट असुरपति भयऊ अमर वाहिनी महँ धँसि गयऊ
परिभव दिक्पालादिक पाये भयवश कोउ न सम्मुख आये
रे वराक सुर राज अभागा बालक बोलि मोर शिर लागा
आज समर रस चाखहु आई विजय पराजय ईश रजाई
कहाँ कुबेर वरुण यमराजू सबहिँ सिखावन दैहौं आजू
वाण वृष्टि करि घन इव गरजा करन लगा अद्भुत रण चरजा
इन्द्रादिक मूर्च्छावश भयऊ जनु अंकुर पाला पड़ि गयऊ
माया पण्डित माया कियऊ सुरगण छिन्न भिन्न करि दियऊ
त्राहि त्राहि भाखे सब सुर मुनि धाये शिवसुत आर्तनाद सुनि
विहँसि सबहिँ आश्वासन दीन्हा वैष्णवास्त्र माया हरि लीन्हा
तारक निरखि षड़ानन बोले तव कारण सुर बन बन डोले
विश्व वशीकृत विधिवश तुम रे आज पराक्रम देखहि मम रे
सावधान मन करहु लराई देखन चहउँ तोर मनुसाई
हम तपसीसुत जंगल वासी तुम असुरेश महाबलरासी
विधि लिपि मेटि सकइ नहि कोई यद्यपि बल-विद्यानिधि होई
सुमिरहु इष्ट देव मन माहीँ क्षणभंगुर शरीर थिर नाहीँ

हँसा ठठाय असुर सुनि वाणी भाखन लगा शूल गहि पाणी
रे शठ तोहि मृत्यु नियराई वातविवश इव बात बनाई
बालक जानि हतेउँ नहि तोही अब क्रोधाग्नि बढ़त अति मोही

दोहा

बोले शंभुकुमार तेहि, रे शठ तोहि न लाज।
समरभूमि प्रतिभट निकट, करुणा व्याज अकाज ॥१९॥

सोरठा

शूर वीर कर काज, समरभूमि मारहिँ मरहिँ।
रे कायर-सिरताज, बालक बालक बक वृथा ॥२०॥

छन्द

तारक रिपु घालक शंकरबालक ब्रह्मवचन किमु भूलि गयो
त्रिभुवन परिपालक वामन-बालक-बल बलि राजा विवश भयो
भाखत श्रुति पाँती नाना भाँती प्रणवब्रह्म ब्रह्माण्डमयम्
तार्किक मुनिराया निज मत गाया अणु कारण उदयस्प्रलयम्

छन्द (भुजंगप्रयात)

भिरे वीर दोऊ महाशस्त्र ले ले
जपै मन्त्र मान्त्रीक आसीस दे दे
किये वार दोऊ बली वेगते यौँ
वियद्विभ्रमी बाज आवेग ते ज्यौँ
बचाया बली दोउने वारको यौँ
बचाते बली कालको योगवित् ज्यौँ

हनी अस्त्र शस्त्रावली वीर दोऊ
करी दोउने छिन्न ओ भिन्न सोऊ
गदा शूल भाला हने लक्ष्य दृष्टी
करी नीर आसारसी ऋष्टिवृष्टी
चलाये बचाये गिराये बली वे
भये संगरासक्त दोऊ दली वे
यथायोग्य दोऊ भिरे द्वन्द्वयोद्धा
करे घोर संग्राम संग्रामबोद्धा
गिरे कोउ मूर्च्छा वशीभूत वीरा
घिरे बैरियों ते भये ना अधीरा
बिना मुण्डके रुण्ड मारैं गिरावैं
चमूपाल भाजी चमूको फिरावैं
भये छिन्न भिन्नांग केते भटा वे
तऊ भी झुमैं ओ घुमैं ज्यौं नटा वे
कहीं कायरों की भई मानहानी
सुनावैं बलीवीर धिक्कार वानी
बही भीषणा रक्तधारा अनूपा
भरी दन्ति पंक्ती भसी शैल रूपा
भई लाशके ढेरते रुद्ध पन्था
जुटे घोर पन्थी लिये जीर्ण कन्था

जुटे काक जम्बूक ओ गृद्ध कंका
महामांस खाये अघाये अशंका
चमू दानवी अस्त्र आघात खिन्ना
भजी वेगते ओ भई छिन्नभिन्ना
महावेगते दानवाधीश धाया
सुराधीश पै दुष्ट भाला चलाया
तहाँ चण्डिकापुत्र संकष्टहारी
दिये काटि ताको महाशक्तिधारी
करी शूलते दुष्टकी विद्ध छाती
रही योगिनी भी तहाँ गीत गाती
तऊ भी रहा थीर सो वीर बंका
यही शूरकी शूरता निःकलंका
अरे वीर कैसा मजा तू चखा है
कहो वीरकी वीरता भी लखा है
सुनी दानवारातिकी क्रूर वाणी
तऊ भी बड़ा क्रुद्ध है शूलपाणी
सुराराति ओ दानवाराति दोऊ
भये युद्ध आरूढ़ हारे न कोऊ
लगे दाहिनी ओर जाने भटा वे
भये चक्र आकार जैसे नटा वे

गदा हाथ ले ले बढ़े वीर दोऊ
रहे जूझते जो भये स्तब्ध सोऊ
चलाये बचाये गदा वीर दोऊ
शचीनाथ जल्दी किया छिन्न सोऊ
लगी देखने दोउ सेना तमाशा
हताशा चमू भी भई बद्ध आशा
सुराराति के अस्त्र औ शस्त्र थे जो
बलाराति काटे अनायास ही सो
किया मल्ल संग्राम दोनौं बलीने
यथा दो बलीबर्द काशी गलीमैं
तहाँ हाथसे हाथ दोनौं मिलाये
महावेगशाली कलेजा कँपाये
तथा पैरसे पैर दोनौं दबाये
महा मस्तकाघात दोनौं जमाये
महावेग ते दोउ छाती सटाये
महावेग ते दोउ दोऊ हटाये
यथाशक्ति दोनौं कमानी जमाये
दिये घूठना इन्द्र नीचे दबाये
उठा भूमिते वीर दैतेयराजा
करी वज्रआघात सी सो अवाजा

अड़े भी लड़े भी जुटे भी छुटे भी
महाघात ते मोरमाथा फुटे भी
गिरे भी कभी दोउ दोऊ भिरे भी
कभी बाँकुरा दर्शकों से घिरे भी
पुरस्तात् परस्ताद् गतायातकारी
तथैवोपरिष्टादधस्ताद् विहारी
किया मुष्टिकाघात दैतेयराजा
भये मूर्छितावस्थ गीर्वाण राजा
भये इन्द्र संग्रामभूमध्य शायी
तऊ भी गये बाँचि पियूषपायी
सभी स्वर्गवासी भये मौन धारी
स्वकीया महत्ता सभीने विसारी
सकै टारि कोई न भावी गतीको
बनाती वही रंक भूमीपतीको
वही रंकको चक्रवर्ती बनाती
वही तो सभीको घटाती बढ़ाती
अविश्रान्त धाता बनाते जगतको
हरी जन्म लेते बचाते भगतको
तथा रुद्र भी याचनाकृत्य धारी
चबाते धतूरा कहाते भिखारी

दिवानाथ ओ यामिनीनाथ ये भी
सदा व्योमचारी नहीं बैठते भी
यही तो गती विश्वलीला मयी है
अविद्यामयी और विद्यामयी है
जिन्हींको विधाता किये लोकपाला
बनाते जिन्हींके लिये यज्ञशाला
उन्हींकी दशा आज कैसी भई है
कहाँ उर्वशी और रम्भा गई है
सुखी सम्पदा ओ दुखी आपदामें
गिनूँगा उन्हें मैं सदा मूर्ख ही मैं

दोहा

भयउ दिवस नव अति विकट, देवासुर संग्राम ।
शूर अनगिनत निहत भउ, लहत न रण विश्राम ॥१६॥
दशम दिवस सुर-असुर-गण, करन लगे रणरंग ।
भिरे गिरे मारे मरे, हलचल दल चतुरंग ॥१७॥
प्रकृत कथा अब सुनहु तुम, तारक-हनन प्रसंग ।
सब सुरगण सुमिरन कियउ, हरगौरी अरधंग ॥१८॥

सोरठा

पठये दीनदयाल, नन्दीश्वर कहँ गुह निकट ।
जयजय शंकरलाल, भाखत नन्दी पहुँचि गउ ॥२१॥

चौपाई

नन्दीश्वर तब भाखन लागे शंकरसुवन निकट बढ़ि आगे
लाल बहुत लीला अब भयऊ निज कर्तव्य भूलि किमु गयऊ
मारहु असुर करहु नहि देरी यही अनुज्ञा शंकर केरी
वृन्दारक गण बहु दुख पाये सब मिलि मोर शरण तब आये
अभयदान हम उनकहँ दीन्हा तुम विलम्ब केहि कारण कीन्हा
सन्ध्या समय लाल नियराया आसुर वेला शास्त्र बताया
बढ़त असुर बल आसुर वेला हनिय पूर्व ही तजि अवहेला
सुनि गुह बोले वचन प्रमाना पिता वचन सबते बलवाना
प्रभु इच्छा जैसी जब होई ताको रोकि सकइ नहि कोई
उत्पति-थिति-हति लीला जासू को संकल्प रोकि सक तासू
पंचभूत जाकर डर डरहीं नियमबद्ध निज कारज करहीं
रवि शशि आदि गगन पथ चारी ज्योतिर्गण आज्ञाव्रत-धारी
तरु बीजादिक नियम निरुद्धा फूलहिं फलहिं न होहिं विरुद्धा
शीतातप आदिक सब कामा प्रभु नियमित ऋतुकृत सबठामा
प्रभु इच्छा तारक शत मरई तर्क वितर्क इहाँ को करई
पुत्र जानि प्रभु दीन्ह बड़ाई हम केवल निमित्त इहँ भाई
प्रभु प्रताप तारक संहारौं सेना छिन्नभिन्न करि डारौं
यदि शंकर सुत नाम हमारा यदि हम भूधरसुता-कुमारा
यदि द्विज-देव-धेनु पद प्रेमी यदि हम विधि बोधित व्रतनेमी
मारौं तारक असुर-वराका करौं समुत्सव संकुल नाका

मातु-पितापद सीस नवाऊँ यदि न करउँ पावक जरि जाऊँ
सुनत प्रतिज्ञा सुर हरषाये नाना भाँति सुमन बरषाये
महावीर गण शंख बजाये पुलकित सिंहनाद करि धाये
बाजन लगे विविध विध बाजा पढ़इ कड़क्खा वन्दि समाजा
महि महिधर अहि डोलन लागे बढ़े शूर अरु कायर भागे
क्षुब्ध पयोदधि बढ़ी तरंगा दानव देव मचायउ दंगा
वारिधि वीची धुनि अति घोरा सुनि कोलाहल भउ चहुँ ओरा
कीधौं प्रलय काल नियरावा होन चहत एकार्णव भावा
वीची जल प्लावित तहँ कत थल भउ त्रिभुवनमहँ हलचल सबथल
जय जयकार शब्द संकुल नभ मारु मारु कहि धावहिं भट सभ
विजय पराजय निश्चय करि करि भिरे सुरासुर आयुध धरि धरि
देव षड़ानन कीन्ह विचारा करिहहिं निशिचर अत्याचारा
प्रथम इनहिं यमलोक पठावौं तब तारक हति अमर जुड़ावौं
करि अस निश्चय शंभुकुमारा भउ मयूर वाहन असवारा
कियउ आचमन आदि यथाविधि शरअभिमन्त्रितकीन्हकलानिधि
कर कोदण्ड प्रचण्ड उठाये कछनी काछि महाछवि छाये
नन्दीश्वर कहँ पास बुलाये समाचार सब कहि समुझाये

दोहा

प्रमथनाथ जब लगि करौं, असुर चमू संहार।
तब लगि रोकिय असुरपति, हरउँ सुरन भय-भार ॥१९॥

सोरठा

प्रभु आयसु मम सीस, अस कहि गरजे प्रमथपति ।
मुनिगण दीन्ह असीस, वीर षड़ानन बढ़ि चले ॥२२॥

चौपाई

षण्मुख धँसे असुर महँ कैसे लपक बाघ बकरिन प्रति जैसे
कटन लगे दानव गण कैसे शस्य अगहनी अगहन जैसे
स्रवत रुधिर भट सोहत कैसे ऋतु वसन्त किंशुक तरु जैसे
स्रवत रुधिर करिवर ते कैसे गिरि ते गैरिक धारा जैसे
दीखत भूमि मृतकमय कैसे गगन विविध घन संकुल जैसे
काटे अरि उर शिर अरु बाहू अनायास तारक-शशि-राहू
काटे कटि पद जंघा जानू गौरी – हृदय – सरोरुह – भानू
दानव दल समुद्र सम जानिय शिवनन्दन अगस्त्य मुनि मानिय
रुद्र तनय तहँ रुद्र समाना भउ कराल मूरति भगवाना
वह्नि अस्त्र ज्वाला विकराला असुरन जारि छार करि डाला
महा महा योधा सब जोऊ शस्त्रवेग सहि सकै न सोऊ
छाड़े मोहन अस्त्र षड़ानन मोह विवश भउ भट अरु वाहन
शर निर्गमन ग्रहण संधाना का कब होत कोउ नहि जाना
इक इक शत सहस्र शत कोटी बनि शर काटत असुर करोटी
असुर वाहिनी शर आच्छन्ना काल विवश भइ प्रलयापन्ना
वृषपर्वा संज्ञास्त्र चलावा निशिचर निकर चेत महँ आवा
तब गुह तासु शरासन काटे तिष्ठ तिष्ठ कहि पुनि पुनि डाँटे

हय संहारि सारथी मारे स्यन्दन खण्ड खण्ड करि डारे
सो पुनि असिवर कर गहि धावा कार्तिकेय सोउ काटि गिरावा
शूल आदि आयुध तेइ जो जो गहा काटि दीन्हेँ गुह सो सो
करन लगा सो मुष्टि प्रहारा षण्मुख झपटि चपेटा मारा
सो खल गिरा धरनितल कैसे छिन्नमूल तरुवर वन जैसे
जानि विमूर्छित ताहि न मारे धर्म धुरन्धर शंभु दुलारे
पुनि शंकरसुत चाप सम्हारे अगणित असुर अनी संहारे
आरतनाद दानवन केरा सुनि स्यन्दन गुह सम्मुख फेरा
नन्दीश्वर तहँ भूधर रूपा दिये रोकि रजनीचर भूपा
उभय भूधराकार शरीरा उभय वीरवर अति रणधीरा
भिरे युगल भट लै लै नामा नन्दीश्वर तारक बलधामा
कीन्ह प्रमथपति मुष्टि अघाता गिरा असुरपति थर थर गाता
सम्हरि उठा पुनि तारक वीरा साधु साधु भाखे रणधीरा
कहे प्रमथपति धिक् धिक् मोही लखौँ अबहुँ खल जीवित तोही
ब्रह्मवचन मिथ्या कस होई तव हन्ता गुह बिनु नहि कोई
कियउ असुरपति मुष्टि प्रहारा हँसि प्रमथेश बचायउ वारा
वारंवार कियउ खल वारा प्रमथाधिप प्रति वार निवारा
नन्दीश्वर पुनि शूल उठाये सिंहनाद करि आगे धाये
सिंहनाद करि धावा सोऊ बाज सरिस झपटे भट दोऊ
तारकहू कर शूल सम्हारा मारा मारा कहि ललकारा
मानहु महाकाल विकराला पहुँचे युगल रूप ततकाला

शूल शूलपर टक्कर खाया झनत्कार करि भूपर आया
युगल वाहुतल कंधातल मैं करतल ताल दीन्ह तेहि पल मैं
वायु वेग रजनीचर धाये नन्दीश्वर झट पकड़ि दबाये
कीन्ह प्रमथपति मुष्टि प्रहारा पृष्ठदेश महँ वारंवारा
मूर्छा विवश भयउ रजनीचर चले प्रमथपति भाखत हर हर
कार्तिकेय-कर ताकर मरणा जानि तजे तसु वध आचरणा
गुह समीप नन्दीश्वर गयऊ निरखि वीरता हर्षित भयऊ
शम्बरादि विख्यात महाबल गुह आहत व्याकुल भउ रणथल
विहँसि षड़ानन बोले बयना कहाँ रहा तारक अघअयना
बोले नन्दीश्वर करि हासा सदा जयी शिवशंकर दासा
तारक मूर्छित गिरा धरातल मोर मुष्टिकाघात महाबल
राउर कर ताकर वध निश्चित करिय न अब विलम्ब दानवजित
साधु साधु कहि उनहिं षड़ानन जारे शर-हुतभुक रिपु कानन
लहि चैतन्य निशाचर राजा धायउ गुह समीप सजि साजा
समर कौतुकी वीर षड़ानन बढ़े वायुगति बर्हीवाहन
अति द्रुतगति शर फेकन लागे भयउ दनुजपति चकित अभागे
महाकाल जिमि प्रलय समुद्यत भासहिं तिमि शिवतनय युद्धगत
नाना दिव्य अस्त्र परभावा पावक वायु वारि दरसावा
किंकर्तव्यमूढ़ भउ तारक वदन मलान विश्व विद्रावक
धरि धैरज आगे पुनि आवा बाण वारि बरसा बरसावा
छन महँ दिये काटि सब बाना समर कौतुकी गुह भगवाना

बार बार काटे गुह चापा भयउ असुरपति विगलित दापा
चाप ग्रहण छेदन सम काला लखि प्रमथेश बजायउ गाला
पुनि शिवनन्दन शंख बजाये सुनत असुरदल अति अकुलाये
अति द्रुतगति कर गौरीनन्दन कीन्ह सारथी ध्वज हय भंजन
महावीर नन्दीश्वर घुड़के असंख्यात दानव दल लुढ़के
भागी असुर चमू अति खिन्ना गुह बाणाहत छिन्ना भिन्ना
कीन्ह षड़ानन पथ अवरोधा बाणजाल रचि अतुलित योधा
भउ अल्पावशेष रजनीचर हा हा धुनि शोणितपुर घर घर
तब नारद मुनि कहँ भगवाना भाषे ब्रह्मा दयानिधाना
लख चौरासी योनि जहाँ लौं जानहु प्रजा हमार तहाँ लौं
कश्यप सन्तति सकल सुरासुर भ्रातृभाव तहँ को न कहै फुर
तारकारि तारक वध कारण मारण तासु न करउँ निवारण
बीज विहीन असुर कुल ताता करहिं न गुह निर्जर सुखदाता
मोर स्वरस शोणितपुर जाई कार्तिकेय कहँ कहहु बुझाई

दोहा

कार्तिकेय तारक सुभट, कियउ युद्ध घमसान ।
पावकमय अरु गरलमय, तजे परस्पर बान ॥२०॥

सोरठा

विरथ कीन्ह गुह ताहि, छिन्न कवच आयुध रहित ।
होत वाम विधि जाहि, बल विद्या सब विफल तसु ॥२३॥

चौपाई

मानि मृत्यु निज ध्रुव गुह हाथा बढ़ा अभय हिय निशिचरनाथा
सोहत कर करवाल कराला फरकत अधर विलोचन लाला
मरउँ समर रविमण्डल भेदन करौँ करौँ कछु मन महँ खेद न
अस कहि कियउ वीरवर वारा गुह मारुतगति वार निवारा
शक्ति अमोघ लिये निज हाथा लखि हर्षित भउ निर्जर नाथा
बोले नन्दीश्वर करि सोरा गूँजि गयी सो धुनि चहुँ ओरा
अहि महि महिधर महिधर करिवर होहु सजग सब लोक लोकधर
तारकारि तारकवध करिहैँ गो-द्विज-साधु-अमर-भय हरिहैँ
दक्षिण अंग सुरनके फड़के भे विधि वाम असुर हिय धड़के
असगुन होन लगे तब नाना रोदन कियउ असुर ढिग श्वाना
उड़ि उड़ि काक असुर सिर ऊपर गिरन लगे अरु-गृद्ध महीपर
गिरेउ ध्वजा अरु छत्र किरीटा भउ मस्तकारूढ़ गिरगीटा
दिव्य भौम खेगत उतपाता गिना न तारक मन्द विधाता
तारकहू कर असि गहि धावा मृत्यु भीति नहि मन महँ लावा
बढ़े वायु गति भट अरु प्रतिभट किये वार गुह तारक झटपट
तजे शक्ति जो शंभुकुमारा तारक-असिहिँ छिन्न करि डारा
पुनि तारककर हृदय विदारा मचा असुरदल हाहाकारा
करि सो शक्ति निशाचर नासा पहुँची पलहि षड़ानन पासा
सो तरुसरिस गिरा घहराई कुलिशकठिनधुनि वरणि न जाई
डोले दिग्गज और कुलाचल अचला चली भई अति चञ्चल

चौदह भुवन भई अति हलचल ठहकि हँसे नन्दीश्वर खलखल
जो अवशिष्ट रहा दानव दल मारन लगे ताहि निर्जर बल
तावत् नारद पहुँचे तहँमा षण्मुख वीर विराजे जहँमा
विधि संवाद सुनाये मुनिवर दिये रोकि गुह संगर सत्वर
रोवत असुर वधू सब धाई सब मिलि दैवहिँ दोष लगाई
तारक पत्नी कियउ विलापा कोउ न सुखी भयउ करि पापा
रावण आदि निशाचर पापी सहसबाहु नृप परम प्रतापी
भउ निजनिज दुःकृत फल भोगी कर्माधीन सिद्ध अरु योगी
गो–द्विज–साधु–देव–अपकारी भयउ नाथ तुम उत्पथ चारी
ताकर फल यह दीन्ह विधाता सुरहिँ दीन्ह सुख शंकर दाता
तुअ विनु हम सब भई अनाथा हम कहँ त्यागि गयउ कहँ नाथा
सिर पटकहिँ अरु पीटहिँ छाती समुझाये नारद बहु भाँती
असुरी असुर सबहिँ समुझाये भाषि कालगति नगर पठाये
अभय होय सुरगण हरषाये जय जय कहत सुमन बरषाये
हर्षित पुलकित देव समाजा भउ गुह अनुग सहित सुरराजा
नृत्य गीत तब बहु विधि भयऊ शुभ असीस ब्राह्मण गण दयऊ
गयउ स्वर्गपुर सुर सेनानी उत्सवमय वासव रजधानी
चौदह भुवन सुखी सब प्रानी पुण्य वृद्धि मेटी सब ग्लानी
शीतल मन्द सुगन्धित वायू लगे बहन भउ जीव चिरायू
भयउ क्षोभ विरहित तब सागर सुप्रभ भयउ प्रसन्न प्रभाकर
भउ प्रवृत्त वर्णाश्रम धर्मा भउ निवृत्त सर्वत्र अधर्मा

भउ सम्मानित सब थल सज्जन भउ दण्डित दुर्दमन दुष्ट गन
भयउ लुप्त पाखण्ड विवादी जिमि हिम समय दन्द शूकादी
भउ कलुषित जनता मन निर्मल प्रावृट्-कलुषित जिमि शारद जल
श्रुति-सम्मत सब थल परचारा स्मृत्यादिक मत तसु अनुसारा
नन्दीश्वर शोणितपुर जाई सब थल ढिंढोरा पिटवाई
सदाचार पथ चलहु असुर सब सेवहु गो-द्विज-साधु-देव अब
मम आदेश अवज्ञाकारी पइहहु दण्ड अवश बड़ भारी
आश्वासन सब कहँ पुनि दीन्हा पुनि उपहार सबहि सन लीन्हा
कैलासाचल गउ नभ मारग सेवा धर्म महोदधि पारग
समाचार सब प्रभुहिँ सुनावा साम्ब सदाशिव सुनि सुखपावा
बोले शम्भु सुधोपम बयना प्रमुदित सार्द्र सरोरुह नयना
मोर भक्ति निर्वाण निसेनी यही मोरि भिक्षुककी देनी
यह शुभ समाचार परितोषा तुअ उर बसइ रत्न निर्दोषा
लोचन सजल विनय रस बोरे बोले नन्दीश्वर कर जोरे
सानुकम्प प्रभु ऊपर जाकर चारि पदारथ करतल ताकर
अढरन ढरन शरण अशरणकर सेवा करउँ सदा चरणन कर
भुक्ति मुक्ति प्रभु लागत फीका भावत एक भक्ति रस नीका
योग यतन करि भक्ति पदारथ पावि न सक यह वचन यथारथ
जापर कृपा नाथकर होई भक्ति पदारथ पावत सोई
सोई भक्ति दीन्ह प्रभु मोही होउँ न शंकर भक्ति विछोही
नहि अष्टमी न नवमी चाहौँ सदा सप्तमी भक्ति निबाहौँ

दोहा

आशुतोष सुनि वचन यह, बोले परम प्रसन्न ।
अनायास मम दासकर, सकल सिद्धि आसन्न ॥२१॥

सोरठा

मोहि परम प्रिय दास, ब्रह्म विष्णुहूँ ते अधिक ।
त्यागि सकल आयास, मोर भजन लवलीन जो ॥२४॥

चौपाई

प्रेमावेश विवश नन्दीश्वर सुधि वुधि बिसरि परे चरणनपर
कारुणीक प्रभु लियउ उठाई भक्त जानि निज हृदय लगाई
भक्तबछलता प्रभु दरसावा भक्तबछल श्रुति जाकहँ गावा
कीन्ह भक्ति विषयक उपदेशा बहु प्रकार जो हरै कलेशा
सुस्थिर चित्त सुनहु तुम ताता कहौं भक्ति प्रासंगिक बाता
भाषहिं मुनिजन पाँच कलेशा श्रुतिकदम्ब जसु करत निदेशा
प्रथम अविद्या अपर अस्मिता राग द्वेष अरु अभिनिवेशिता
यथा शुक्तिगत रजताभासा तथा ब्रह्मगत जगदध्यासा
अध्यासापर नाम अविद्या जाहि दुरावै आतम विद्या
सोइ अस्मिताको उपजावै अहंकार ममता जहँ आवै
प्रिय विषयाश्रय अनुरति रागा अप्रिय विषयक द्वेष विभागा
मृत्यु भयादि विषय अभिसन्धी अभिनिवेश कह योग निबन्धी
ज्ञानोदय सब क्लेश दुरावै अन्तराय तहँ बहुविध आवै
जड़ भरतादि निदर्शन जहँमा समुचित तर्क वितर्क न तहँमा

भक्ति पदारथ पावत जोई अन्तराय प्रतिहत नहि सोई
प्रह्लादादिक जहाँ निदर्शन अनुचित तहाँ विरुद्ध विमर्शन
परा भक्ति जाकर उर आवै ताहि मुक्ति पद तुच्छ लखावै
चाहत यदपि न मुक्ति भक्तजन पावत तदपि अनिच्छित अयतन
सेवक सरस भाव लखि ताता चारि पदारथ हम तसु दाता
सेवक–हृदय–सरोवर माहीँ बसौँ हंस इव संशय नाहीँ
समदरशी यद्यपि हम ताता राखौँ सदा भक्त सन नाता
जो जन मो कहँ देखहिँ जैसे दैखौँ हमहूँ तिन कहँ तैसे
नन्दीश्वर अति भयउ कृतारथ पावि अनूपम दास्य पदारथ
पुनि पुनि कियउ प्रणाम भक्तवर पायउ सुख मन वचन अगोचर
सुनहु तात पुनि प्रकृत कहानी पावन परम प्रेमरस खानी
मोद प्रमोद भयउ तहँ घर घर समुद्घोष भउ जय हर जय हर
आश्वासन सब कहँ गुह दीन्हा आलिंगित सुरपति कहँ कीन्हा
प्रणमि अदिति अरु कश्यप चरणा मुनिजन प्रणमे अशरण शरणा
यात्रोद्यत भउ शंकरनन्दन ब्राह्मण वृन्द कियउ अभिनन्दन
यात्राकालिक मंगल नाना भयउ गणक गण पायउ दाना
पूर्ण कलश रम्भा थम्भादी सोहत रुचिर पूग वृन्तादी
मंगल गान मनोहर घर घर बाजत वीणा आदि रुचिरतर
नट नर्तक गण जहँ तहँ नाचहिँ यात्रालग्न गणक गण बाँचहिँ
तिलउत्तमा उर्वशी रम्भा वटी निरखि शुभ यात्रारम्भा
भयउ तदा दण्डाहत डंका सुनि सो धुनि भइ दिति सातंका

पुष्पपुञ्ज बरसन सुर लागे जय जय करहिँ विप्र बढ़ि आगे
चले षड़ानन प्रमुदित वदना सुमिरे सुर-मुनि करिवर रदना
इन्द्रादिक सुर भउ गुह अनुगत किन्नर गन्धर्वादिकगण जत
नन्दनवन आदिक गुह देखत भउ मग महँ नगरादिक पेखत
दिनकर-रजनीकर-पुर आदिक निरखत चले भ्रमत भगणादिक
मुनिजन पावन कथा वखाना श्रुति-पुराण-सम्बन्धी नाना
कर्मोपासन-ज्ञान प्रसंगा भयउ विचार पाइ सत्संगा
करत विविध बतकही परस्पर नियराये कैलास अद्रिवर
उच्च श्रृंग देखत अति हरषे नयनन हर्ष अश्रु सब बरषे
लखन लगे सब अद्रि-रम्यता जहाँ अधर्मी जन अगम्यता
मातु–पिता–गुरुजन–हितकारी प्रभुसेवक तीरथ-व्रत-चारी
नाना धर्म-कर्म-रत जोई कैलासाचल पहुँचत सोई
सदा अहिंसा-दया परायण सत्य निरत प्रभु गुणगण-गायन
परनिन्दक सपनेहुँ नहि जोई कैलासाचल पहुँचत सोई
परहित निरत अहंकृति विरहित देव-पितर-रत काम-क्रोध जित
जित इन्द्रिय अरु जित निःश्वासा विजित मनोगति विगलितआशा
विधि हरि हर कहँ मानत एका जासु हृदयगत आत्म विवेका
पर रमणी जननी सम मानत पर धन लोष्ट्र सरिस जो जानत
आत्मरूप सब भूतहिँ जोई जानत हर गिरि पहुँजत सोई
मायाजाल बझै नहि जोई कैलासाचल पहुँचत सोई
रसना जासु जपत शिव नामा सो जन पहुँचत शंकर धामा

कहौं कहाँ लगि विवरण तोही विषय - वासना - गन्ध - विछोही
शिवमन्दिर ताकर नित बासा जात न यमकिंकर तसु पासा
जहँ बह सुरसरि निर्मल धारा पातक - दारु - विदारण - आरा
सगर वंश यत्कृत उद्धारा हर शिर मुकुट मनोहर हारा
सुखमय स्वर्गलोक सोपाना जहँ तनु परिहरि चढ़हिं विमाना
नाना धातु विचित्रित शृंगा जहँ निर्झर सर गूँजत भृंगा
कन्दरगत किन्नर गन्धर्वा गावहिं राग रागिनी सर्वा
दिव्य अंगना नाचहिं नाना गर्जहिं केहरि सुनि धुनि ताना
नाना मृग समलंकृत द्रोणी जहाँ विराजत राजत क्षोणी
कलरव करहिं विहंगम उपवन गावहिं साम मनहु वैदिक गन
पुष्पित पुष्पवृक्ष जहँ सोहै फलभर तरुवर मानस मोहै
चम्पक अरु अशोक मन्दारा पाटल आदिक सौरभसारा
पनस मधूक विनम्र रसाला बीजपूर खर्जूर प्रियाला
क्रमुक नारिकेलादिक नाना शाल ताल दीरघ परिमाना
जम्बु बदर जम्बीर कदम्बा इङ्गुदि तरु तापस अवलम्बा
बिल्व कपित्थ निम्ब अरु रम्भा लखि सुर मुनि मन परम अचम्भा
नन्दनवन बिच जो छवि नाहीं सो छवि छाई गिरिवन माहीं
परिमलमय चन्दनवन देखी इन्द्रादिक मुद लहे विसेखी
आलिंगन जाकर कर विषधर तदपि न विषदूषित सो तरुवर
पावि सुगंधित चन्दन संगम बनत कुटज उपवन चन्दन सम
सज्जन गुण दुर्जन महँ आवत दुर्जन अवगुण सुजन न व्यापत

गुण अवगुण सांसर्गिक होई यद्यपि अस भाखत सब कोई
निर्णय तदपि सुनहु तसु ताता प्राकृत नियम रचे जस धाता
विरल सुजन दुर्जनता लहई अविरल कुजन सुजन गुण गहई
होत अधिकतर गोचर जोई उल्लेखन ताकर जग होई
पण्डित शत मूरुख दश जहँमा बुधमण्डली कहावत तहँमा
अचल रम्यता पुनि बहु भाँती लखन लगी सुर-मुनिकी पाँती
सरिता सरवर निर्मल नीरा वहत जहाँ नित त्रिविध समीरा
जहँ काञ्चन पंकज मन मोहैं उत्पल शतपत्रादिक सोहैं
कुमुद और कल्हार मनोहर सोहत सौरभ सदन सुमन वर
कलरव करहिँ विहंगम नाना गन्धर्वादि करहिँ जनु गाना
चक्रवाक सारस अरु हंसा करहिँ मधुर रव गुह परसंसा
कारण्डव चरणायुध आदिक मृदु रव भाषहिँ गुह विजयादिक
जल कुक्कुट कोयष्टि आदि खग नाना रंग करहिँ तहँ जगमग
ध्यान समाधि लगावहिँ योगी क्रीड़ा कौतुक अनुरत भोगी
मन्त्र षड़क्षर वा पञ्चाक्षर जपहिँ भक्तजन वा एकाक्षर
वरुण बीजकर कहुँ उच्चारण करहिँ भक्तजन भक्ति परायण
गाल बजावहिँ नाचहिँ कोई शिव शिव रटहिँ मगन मन होई
श्रीफलदल अरु आक धतूरा अर्पहिँ लिंगोपरि भरपूरा
चिता विभूति विधूलित अंगा कापालिकगण पीवहिँ भंगा
नारदादि मुनि गावहिँ गाना वशिष्ठादि उपदेशहिँ ज्ञाना

दोहा

पुनि सुर मुनि देखत भयउ, वट तरुवर अति रम्य ।
घनघमण्ड चहुँ ओर ते, पुण्य पुञ्ज ते गम्य ॥२३॥

सोरठा

कोमल पल्लव वृन्द, आतप हर छाया सुखद ।
प्रभु पद पद्म मिलिन्द, वामदेव आदिक जहाँ ॥२५॥

छन्द

स्वर्ण विरचित वेदिका अति रुचिर तर जहँ अति भली ।
वामदेवादिक खड़े जहँ वीरभद्रादिक बली ॥
रत्नसिंहासन विराजित वेदिकोपरि निरुपमम् ।
साम्ब शिव आसीन तदुपरि वदति निगमं आगमम् ॥

चौपाई

निरखि सगुह सुरगण शिव तरुवर अति विनम्र तनु उतरे गिरिपर
तजि विमान सब पैदल धाये जय जय करन लगे शिर नाये
करत दण्डवत् वट तरु पासा आइ रुके सब सहित हुलासा
लहि आहट प्रभु लोचन खोले सुनि कलकल रव विहँसत बोले
आवत सुरगण सहित कुमारा असि प्रतीति हिय होत हमारा
पुनि पुनि फड़कत दक्षिण अंगा आयउ शिशु लहि जय रणरंगा
लावहु बोलि उनहिँ नन्दीश्वर चले अनुज्ञा पावि प्रमथवर
सुर समेत गुह पावि अनुज्ञा दरस हेतु उत्कण्ठित प्रज्ञा
जय हर जय हर कलरव करिकरि चले सकल हर्षाश्रु नयन भरि

सुर मुनि संयत तन मन आये   प्रभु पद परसि परम सुख पाये
दयादृष्टि प्रभु सब कहँ देखा   उर अन्तर मुद भयउ विसेखा
पूछि कुशल प्रश्नादिक ताता   पूछी विविध युद्ध की बाता
समाचार सुरनाथ सुनाये   कुमर पराक्रम बहुविध गाये
तारक परिभव दूत पराक्रम   सुरवर वर्णन कियउ यथाक्रम
नन्दीश्वर कृत तारक परिभव   सुनत भयउ प्रभु हर्ष समुद्भव
तुमुल युद्ध गुह अरु तारक कृत   बहुविध गायउ देव जृंभजित
तारक वध गुह शक्ति प्रहारा   पुनि रजनीचर कुल संहारा
विधि प्रेषित नारद जस आये   गुहहिं ब्रह्म-संवाद सुनाये
जिमि कुमार संग्राम निवारा   पायउ त्राण असुर परिवारा
शोणितपुर जस गउ नन्दीश्वर   ढिंढोरा पिटवाये घर घर
सुर अधीनता जनता मानी   सो सब कथा सुरेश बखानी
विजय पराजय नाथ रजाई   हम सब तहँ निमित्तता पाई
अस कहि इन्द्र युगल कर जोरे   मौनीभूत विनय रस बोरे
सुनि शंकर अतिशय हरषाये   नयनन हर्ष अश्रु बरषाये
बोले मधुर सुधा सम बानी   कारुणीक करुणारस सानी
तुअ बल शिशु तारक रिपु मारा   तुअ बल निशिचर कुल संहारा
संघति कार्यकारिका होई   अति प्रसिद्ध जानत सब कोई
सुनत मधुरतम अनुपम वयना   बोले इन्द्र अश्रुभर नयना
यही बड़नकी सहज बड़ाई   लघुजनहूँ कहँ देहिं बड़ाई
उत्पति-थिति-हति-कारण जोऊ   दीन सुरहिं परसंसहिं सोऊ

प्रभु-प्रताप हमरे दुख बीते प्रभु प्रताप गुह तारक जीते
प्रभु-अनुकम्पा-लव-बल मोरा जाते मंगलमय चहुँ ओरा
दीनबन्धु वर जाचउँ एहू निज चरणारविन्द रति देहू
एवमस्तु भाषे करुणामय प्रभु प्रताप सुर भयउ निरामय
सैनहिं प्रभु गुह निकट बुलाये करि मस्तकाघ्राण सुख पाये
शैल सुता सुत चुम्बन कियऊ हृदय लगाइ अंक भरि लियऊ

दोहा

नन्दीश्वर आदिक प्रमथ, पहिरायउ जयमाल ।
कार्तिकेय उर मुदितमन, प्रभु रुख लखि तिहि काल ॥२३॥

सोरठा

चहुँ दिशि जयजयकार, होन लगी मांगलिक विधि ।
प्रमथ हजार हजार, डिम डिम डमरु बजात भउ ॥२६॥

छन्द

तहँ समुत्सव विविध विध भउ नृत्यगीत पुरस्सरम् ।
कराहिँ हास हुलास प्रमुदित प्रमथवृन्द परस्परम् ॥
नर्तकी नर्तक जुटे कत भाट वन्दी कत जुटे ।
महादेव अनुज्ञया कत प्रमथगण मोदक लुटे ॥

चौपाई

मास दिवस भउ उत्सव नाना सुर मुनि चाहे करन पयाना
प्रभु आज्ञा लहि सुर मुनि गमने पहुँचे सब गृह अपने अपने
भयउ शान्तिमय चौदह लोका सुर नर मुनि सब भयउ विशोका

ब्रह्मा सहित विष्णु पुनि आये साम्ब सदाशिव अति हरषाये
नति नुति आदि यथोचित भयऊ जयजयधुनिचहुँदिशिभरिगयऊ
गुहहिँ असीस दीन्ह बहु भाँती अरुण वरण अरु जलधरकाँती
विधि हरि हर संमिलन सुअवसर भयउ विविध बतकही परस्पर
काह धर्म अरु काह अधर्मा प्रश्न षड़ानन कियउ सुकर्मा
चतुरानन तब उत्तर दीन्हा निगमागम मत वर्णन कीन्हा
वेद विहित कृति जानिय धर्मा वेद निषिद्ध प्रसिद्ध अधर्मा
कार्याकार्य व्यवस्थाकारी धर्मशास्त्र श्रुति मत अनुसारी
इतर शास्त्र आम्नाय विरोधी कहिय अशास्त्रं धर्म अवरोधी
चतुर्वर्ण चतुराश्रम कर्मा विदित विशेष समाह्वय धर्मा
सत्यास्तेय अहिंसा परहित आदि सधारन धर्म प्रकृतिकृत
मारग एक प्रवृत्ति कहावै विधि निषेध जहँ वेद बतावै
मारग अपर निवृत्ति कहावै जहँ नहि अहंकार दरसावै
विधि निषेध परतन्त्र न होई मग निवृत्ति विचरत जन जोई
यह निर्गुण पथ मुक्ति निसेनी आध्यात्मिक जहँ बहत त्रिवेनी
प्रासंगिक भउ विविध विचारा कुल आचार देश आचारा
सदाचार विषयक व्याख्याना कीन्ह वेद वक्ता भगवाना
सित विभूति रुद्राक्ष विधारन गुरुजन-देव-पितर-आराधन
प्रातःस्नान दान द्विज आदर शिष्टोपासन साधु समादर
मैत्री करुणा मुदिता वृत्ती और उपेक्षा वृत्ति प्रवृत्ती
सदृश दीन सम्पन्न भाव महँ दैव दण्ड हत दुष्ट भाव जहँ

इत्यादिक विधि दया निधाना सदाचार भगवान बखाना
कियउ विविध उपदेश अजन्मा सुनि कृतकृत्य भयउ शरजन्मा
करि बहु विनय विनय रस बोरे भयउ समुत्थित कर युग जोरे
अति प्रसाद उन्मुख चतुरानन बैठारे निज पास षड़ानन
करि मस्तकाघ्राण हरषाये निरखि चतुर्भुज प्रभु मुसुकाये
चिरजीवी भव वत्स षड़ानन भाखे चतुर्बाहु चतुरानन
विधि-हरि-हर मुद मंगल अयना भयउ प्रेम परिपूरित नयना
भई प्रीति जनु तनु धरि ठाढ़ी परमानन्द नदी जनु बाढ़ी
एवमेव बहु वासर गयऊ प्रस्थानोद्यत विधि हरि भयऊ
करि व्यवहार यथोचित सोऊ गमने यद्यपि व्यापक दोऊ

दोहा

निराकार साकार प्रभु, विधि हरि हर सुख रूप।
लीला नाटक सूत्रधर, निज माया अनुरूप ॥२४॥

सोरठा

जो यह चरित अनूप, सुनहिँ सुनावहिँ परम प्रिय।
सो न परहिँ भवकूप, अनायास रिपुजय लहहिँ ॥२७॥
निज अभिमत सब काम, साम्ब शंभु कृपया लहहिँ।
यहाँ वहाँ सब ठाम, पावहिँ परमानन्द नित ॥२८॥

चौपाई

है अति हृष्ट पुरञ्जन सविनय भाषन लगे निबद्धाञ्जलि कय
तारक वध समनन्तर गाथा श्रवण हेतु हिय उत्सुक नाथा

कहिय कृपा करि करुणा सागर जन वत्सल निर्मल गुण आगर
सुनि अस वचन निरञ्जन हरषे नयनन प्रेम रसामृत बरषे
बोले वचन परम हरषाई पावन चरित सुनहु मन लाई
यथा व्यास आदिक मुनि राया त्रिपुरासुरवध चरित सुनाया
सो सब कथा कहउँ मैं गाई प्रभु पद पदुम सुमिरि सुखदाई
बान्धव सहित तार सुत तारक हने षड़ानन सुर उपकारक
विद्युन्माली नाम सुवीरा तारकाक्ष नामक रणधीरा
अरु कमलाक्ष नाम भट भारी तारक पुत्र महाबलधारी
पिता मरण लखि गमने कानन दृढ़ निश्चयी तपस्या कारन
असुर सकल सो कियउ महातप सहन कियउ वर्षा वातातप
एक पाद अरु ऊरध बाहू भउ लखि इन्द्रादिक उर दाहू
करत भयउ नियताशन अनशन चतुरानन सुमिरन सुस्थिर मन
भउ शत वत्सर एक पाद थित सहस वर्ष भूतल मस्तक धृत
भउ शत वत्सर ऊरध बाहू कियउ पवनभुक तप निर्वाहू
ताकर तप तापित तिहुँ लोका इन्द्रादिक सुर भयउ सशोका
निरखि घोर तप प्रभु चतुरानन आयउ तहँ वर वितरन कारन
माँगु माँगु वर भाषे ताही सो सब गिरेउ चरणतल माही
करिय अवध्य देव करुणाकर चहउँ यही वर ब्रह्माणीवर
सुनि अस वचन कहे चतुरानन दीनबन्धु करुणा रसायतन
यह वरदान असम्भव जानहु वचन मोर मिथ्या नहि मानहु
काल बली ते बचत न कोई मरत अवश जनमत जग जोई

काल कलित गति रुकत न कबहू काल विवश इक दिन हम सबहू
मृत्युञ्जय मृत्युञ्जय नामा प्रभु रजताचल धाम अधामा
कालरूप धरि हरत जगत को मोर रूप धरि रचत जगत को
विष्णु रूप धरि भरत जगत को वितरत भुक्ति विमुक्ति भगत को
तजि अवध्यता मात्र निशाचर माँगहु मन अभिलषित अपर वर
करि विचार तीनिहुँ रजनीचर जाँचत भयउ मनोभिलषित वर
पुर त्रय सुवरण रजत लौह कृत दीजै प्रभु मय असुर विनिर्मित
वर्ष सहस पुर त्रय भ्रमि जहँ तहँ एकत्रित इक दिन इक थल महँ
तदा त्रिपुर जो इक शर भञ्जै सोइ तत्र थित हम कहँ गञ्जै
अपर व्यक्ति संहारक नाहीं होय हमार भुवन त्रय माहीं
एवमस्तु भाषे चतुरानन तपसी वर वितरण व्रतधारन
पुर निर्माण अनुज्ञा दियऊ मय असुरहिं पयान पुनि कियऊ
योजन सहस सहस परिमाना तिहु पुर विषयक व्यास बखाना
पुर निर्माण मयासुर कियऊ तारक तनय वास तहँ लियऊ
काञ्चनपुर सुरलोक विहारी राजत अन्तरिक्ष सञ्चारी
आयसपुर महि मण्डलचारी तहँ रहि भउ सब स्वेच्छाचारी
तारकाक्ष काञ्चनपुर वासी राजतपुर कमलाक्ष निवासी
आयसपुर थित विद्युन्माली सबहि धर्मरत अति बलशाली
पुरत्रय नाना सौध समन्वित मणिगण निर्मित गोपुर अन्वित
दिनकर अरु रजनीकर सन्निभ कैलासाचल उच्च शिखर निभ
नीलम पोखराजमय अगणित बहु प्रासाद मयासुर निर्मित

प्रति गृह शिवमन्दिर शुभ सोहै लिंग नार्मद मुनिमन मोहै
अग्निहोत्र रत द्विजगण मण्डित जहँ शत शत निगमागम पण्डित
दिव्य अंगना गन्धर्वादिक चारण किन्नर अरु सिद्धादिक
विहरहिं जहँ निर्भय दिनराती अगणित जीव जन्तु बहु भाँती
वन उद्यान रुचिर मन मोहै रुचिर फूल फल तरुवर सोहै
कल्पवृक्ष आदिक तरु सुन्दर विस्मित लखि अपि देव पुरन्दर
वापी कूप तड़ाग बिराजै दीर्घ दीर्घिका सरवर राजै
बहुविध रथ शिविका समलंकृत मत्त मतंग तुरंग अलंकृत
सभा-प्रपा-क्रीड़ा-गृह नाना शोभमान जहँ रुचिर विताना
सांगवेद विद्यालय-माला धनुर्वेद शाला सुविशाला
पुर त्रय पापी जीव अगम्या पुण्यवान सज्जन जन गम्या
पतिव्रत निरत कामिनी जहँमा पति पद प्रेम मगन प्रति लहमा
करहिं असुर यागादिक कर्मा सपत्नीक जहँ परम सुधर्मा
सबही तरुण बाल अरु वृद्धा निवसहिं जहँमा धर्म समृद्धा
निगमागम सम्मति अनुसरहीं कबहुँ न पगु अधर्म मगु धरहीं
श्रौत स्मार्त प्रभृति मत विज्ञा नीति विशारद समर अभिज्ञा
वृषस्कन्ध अरु व्यूढ़ोरस्का महावीरवर तरुण वयस्का
कुपित प्रशान्त कुब्ज अरु वामन कुंचित केश परम विकटानन
निशि वासर शिव सेवनकारी वेद विदित शंकर व्रत चारी
इन्द्रादिक सुर प्रमथनशीला त्रिभुवन जय जिनकी रणलीला
पुर त्रय ईदृश असुर विभूषित अनाचार दोषादि अदूषित

तत्प्रभया निर्जर गण दग्धा लहे पराभव परम विदग्धा
सुरगण आकुल व्याकुल भयऊ चतुराननहिँ शरण तब गयऊ
निजनिज विपति निवेदनकियऊ चतुरानन तब उत्तर दियऊ
मम वरदान पाइ सो सबही वर्द्धमान त्रिपुरासुर अबही
मम कृत असुर पराभव अनुचित निजकृततरु छेदन किमु समुचित
पुण्यवान सब त्रिपुरनिवासी तत्कृत तहँ सम्पति सुखरासी
सब मिलि होहु शम्भु शरणागत करिहहिं दया जानि जन आरत
जगदाधार बालविधु भालू करिह कोइ उपाय कृपालू
हर प्रार्थना करहु सब जाई भय विह्वल निर्जर समुदाई
सुनिविधि वचन अमर गणसबही शंकर निकट सिधाये तबही
प्रभु पहँ विपति निवेदन कीन्हा सुनि प्रभु समुचित उत्तर दीन्हा
विद्युन्माली तीनिउ भाई अरु पुरथित निशिचर समुदाई
धर्मकर्म तत्पर सो सबही नहि सम्भव परिभव तहँ अबही
सुख सम्पत्ति धर्म परिणामा पापी जनहिँ विधाता वामा
जहाँ धर्म तहँ जय नित होई अजय पात्र पापी सब कोई
पुरवासी अवध्य सब कोई जब लगि धर्म विमुख नहि होई
मम सेवक सब त्रिपुर निवासी ताते तत्प्रति मोरि उदासी
जाहु सकल मिलि सुररिपु जहँमा करहु विपत्ति निवेदन तहँमा
सुनि अस सुर गण विष्णु निकेता पहुँचे गन्धर्वादि समेता
त्राहि त्राहि भाषे सब कोई वदनमलीन दीन अति होई
गिरे भूमितल दण्ड समाना कियउं वेद बोधित नुति नाना

छन्द

जयजय सुरमर्दन असुरविमर्दन सुरभयभञ्जन पाहि प्रभो
शरणागत पालक तारकबालक-भय विह्वल सुर निकर प्रभो
इन्द्रादि अनाथा करिय सनाथा दयादृष्टि अवलोकि हरे
सकरुण निःकारण जनहितकारण जो प्रभु नरहरि रूप धरे

दोहा

सुनि अस वचन रमेश प्रभु, करुणा सिन्धु मुरारि।
धीरज सुर निकरहिँ दियउ, सकरुण वचन उचारि॥२८॥

सोरठा

शरणागत जन त्रान, करौँ सदा यह मोर व्रत।
यदपि असुर बलवान, करिहौँ तदपि उपाय कछु॥२९॥

चौपाई

जब लगि रिपु श्रुति मारग चारी सदाचार रत सद व्रत धारी
जब लगि हर अर्चन अनुरागी तब लगि अघी न अघ फल भागी
करिहउँ कछुक उपाय अवश मैँ सम्प्रति असुर धर्मपरवश मैँ
धर्म भ्रंशकर कछुक उपाई किये वध्य निशिचर समुदाई
निज निज गृह अबही सब जाहू अवसर पावि मनोरथ लाहू
करिहैँ हर करुणामृत सागर असुर हनन लखि धर्म अनादर
करि शिवलिंगार्चनकर त्यागा हर कृत वध लहिहैँ हतभागा
निज आलय सुर गयउ न कोई हरि समीप थित आरत होई
लगे करन विनती बहु भाँती त्राहि त्राहि कहि असुर अराती
वा प्रभु त्रिपुरासुर वध कीजिय वा अनअवसर प्रलय करीजिय

अमर निकर भय विह्वल देखी हरि हिय चिन्ता भयउ विसेखी
सुमिरन कियउ यज्ञकर विष्णू निर्जर गण विपत्ति असहिष्णू
यज्ञसमूह विलोकि रमेशा कहे बोलि सामर अमरेशा
करहु यज्ञ सब उपसद् नामा करहु प्रसन्न शंभु अभिरामा
पुनि सुर निकरहिँ कहे मुरारी यावत् असुर धर्म पथचारी
त्रिपुर भंग तावत् नहि संभव त्रिपुरासुर लहिहैं नहि परिभव
शंकर कृपा विना नहि ओहू वध्य शंभु भजि निर्भय होहू
यज्ञ प्रभाव शंभु परसादा पइहैँ रजनीचर अवसादा
धर्म विहीन असुर समुदाई करिहौँ मैँ करि कछुक उपाई
सुर नर मुनि उरगादिक सबही बिनु हर कृपा सुखी नहि कबही
शंभु अराधन सब मिलि भाई करहु यज्ञ करि सुर समुदाई
शंभु कृपा विधि विधिपद पाये हमहूँ विश्वम्भर कहलाये
निज निजपद इन्द्रादिक पाये दुष्ट असुर हर कोप नशाये
शिव पूजन बिनु कोइ न सिद्धी पायउ त्रिभुवन विभव समृद्धी
सुर समेत शिवलिंग समर्चा कियउ विष्णु अतुलित बलवर्चा
पूजे सब मृण्मय इक लक्षा शंभु लिंग सुर शत्रु विपक्षा
गन्ध पुष्प अक्षत श्रीफलदल कियउ समर्पण रिपु भय विह्वल
सहस सहस भउ आविर्भूता शूल शक्तिधर आदिक भूता
नाना आयुध नाना भेषा प्रलय हुताश प्रकाश अशेषा
हरिहिँ प्रणाम कियउ सब कोई विनय पुरस्सर संयत होई
तब आदेश उनहिँ हरि कीन्हा त्रिपुर विभञ्जन सम्मति दीन्हा

पुर त्रय दहन विभेदन भञ्जन करहु करहु दानवदल गञ्जन
बहुरि यथासुख शिवपुर जाहू सेवि शंभु लहु जीवन लाहू
पुनिचिन्तित मतिभउ लक्ष्मीपति दीन दयासागर उदार अति
अति सन्तप्त देवता देखी हरि उर उपजी दया विसेखी
मुरहर पुरहर सुमिरन कियऊ सुस्थिर मन निश्चय करि लियऊ
जब लगि धर्म त्याग नहि करिहैँ लिंग समर्चन नहि परिहरिहैँ
हर कोपानल महँ नहि परिहैँ तब लगि त्रिपुरासुर नहि मरिहैँ
अवश देव कारज हम साधब शंभु कृपा बल अमर उबारब
असुरहिँ उत्पथगामी करिहौँ पाप पुञ्ज उनके शिर धरिहौँ
हरि आदेश पाय सुर सबही निज निज धाम सिधाये तबही

दोहा

तदनन्तर जो भउ चरित, सुनहु सुनहु मन लाय ।
कहे निरञ्जन मुदित मन, पुरञ्जनहिँ समुझाय ॥२६॥

सोरठा

मायापति भगवान, करत भयउ अद्भुत चरित ।
श्रीहरि दयानिधान, सिरजे मायामय पुरुष ॥३०॥

चौपाई

धर्म विघ्नकारक मायामय पुरुष एक रजनीचर आमय
मुण्डी मलिन वस्त्र तनुधारी कुण्डीधर कुत्सित आचारी
लिये मार्जनी करतल माहीँ पद पद भूमि बुहारत जाहीँ
हस्त वस्त्रयुत मुख महँ धरहीँ धर्म धर्म उच्चारण करहीँ

भाषे हरिहिँ विनय रस बोरे नम्रीभूत युगल कर जोर
आयसु करिय करउँ का अरिहन् प्रभु करुणा वरुणालय भगवन्
भाषे ताहि विष्णु प्रभविष्णू त्रिपुर निशाचर नाश करिष्णू
मुण्डी मोर अंश तुम मो सम मोहहु त्रिपुर निवासी दुर्दम
करहु धर्म विरहित खल अति बल अतिशय मायावी मायाबल
त्रिपुरासुर विमोहकर हेतू जन्म भयउ तुअ कपट निकेतू
षट सहसाधिक अयुत पद्ममित नास्तिक शास्त्र वेद मत विरहित
आस्तिक-शास्त्र-विरुद्ध-निबन्धा जहाँ न कछुक धर्म मत गन्धा
पढ़ि मोसन विस्तारहु ताको होहिँ भ्रष्ट सुनि पढ़ि जन जाको
निर्मिति शक्ति देउँ मैँ तोही शिष्य बनावहु निशिचर ओही
शिष्य बनावहु त्रिपुर निवासी ग्रन्थ पढ़ावहु धर्म विनासी
उनकहँ उत्पथगामी करहू लिंग समर्चन मति अपहरहू
वश्यावश्य करी रिपु पुंस्त्री रोधन और अरोधन कर्त्री
माया तुअ कृत विविध प्रकारा करिहि जगत पाखण्ड प्रचारा
इष्टानिष्ट प्रदर्शन आदिक पिशुन भाव अरु वञ्चकतादिक
तुअ कृत विविध विरुद्ध प्रवृत्ती सदाचार सत्कर्म निवृत्ती
मधुसूदन भाषण मुण्डी सुनि कहन लगे कर जोरि युगल पुनि
किंकर जानि अनुग्रह कीजिय किंकर्तव्य अनुज्ञा दीजिय
सुनि अस वचन रमापति बोले अरिभय सुरगण वनवन डोले
भ्रष्टबुद्धि रजनीचर करहू धर्म विमुख करि सुर भय हरहू
नास्तिक ग्रन्थ पढ़ावहु ताही पुनि विस्तीर्ण करहु तुम जाही

निशिचरगणहिँ ग्रन्थ यह पढ़वहु मत कपोलकल्पित करि बढ़वहु
दीक्षित करहु असुरगण जाई आस्तिक निष्ठा दूर दुराई
श्रीशंकर पद पंकज नेहू जाते तजै असुरगण एहू
सोइ उपाय वेगि तुम करहू नहि शंका कछु मन महँ धरहू
दुराचार नाना विध करई पाप पुञ्ज निज शिरपर धरई
तदपि महेश भजन परतापा इत उत सुखी त्रिगत संतापा
सित विभूति रुद्राक्ष विधारन पार्थिवादि शिवलिंग अराधन
पञ्चाक्षर आदिक मनु जापा पुनिपुनि शिवशिव शब्द प्रलापा
पाप–तापहर कारज एहू करत अभय नित अघमय जेहू
शंभु विमुख कथमपि करि एहू पुनि तसु शर सम्मुख करि देहू
सुनि मुण्डी प्रभुकी अस वानी बोलत भयउ जोरि युग पानी
मायानाथ नाथके आगे क्षुद्र जीव हम सब केहि लागे
अस कहि मायामय बहु बारा पद गहि त्राहि त्राहि उच्चारा
सुनि मुरमर्दन भाषण लागे करुणामय करुणा-रस-पागे
जाहु तुरत त्रिपुरासुर धामा चलवहु पथ पाखण्ड निकामा
नष्ट भ्रष्ट करि त्रिपुर निवासी होहु तदुत्तर मरुथल वासी
कलियुग होइ न आगत यावत् करहु निवास तहाँ तुम तावत्
लहि कलियुग निज धर्म प्रकाशन करिहौ धर्म कर्म पथ नाशन
शिष्य प्रशिष्यादिक युत निजमत वर्धनीय मुण्डिन् त्रिभुवन गत
प्रभु राउर इच्छा अनुसारा होत समस्त जगत व्यवहारा
हम केवल निमित्तता भाजन प्रभु असिद्ध राउर कछु काज न

तदपि नाथ राउर आदेशा शिर धरिहौं धरि मायिक वेशा
वशीभूत असुरन कहँ करिहौं दै शिक्षा उनकी मति हरिहौं
वेद विरुद्ध विकर्म प्रचारा प्रचलित करिहौं भरि संसारा
अस कहि चारि शिष्य निर्माये मत मनमाना उनहिं पढ़ाये
शिष्य सकल प्रभुपद सिरनाये प्रभु उन कहँ आसीस सुनाये
मुण्डी सरिस होहु तुम सबही मत पाखण्ड परायण अबही
अस कहि श्रीहरि सुर हितकारी उनहिं बनाय कपट व्रतधारी
निज गुरु सम वस्त्रादिक धारी वेद विरुद्ध स्वतन्त्राचारी
मुण्डी हस्त समर्पित कियऊ पुनि उत्साह विविधविधि दियऊ
मुण्डी कहँ जिमि आपुन जानौं चारिहु शिष्य तथा म मानौं
सब मिलि तात त्रिपुर महँ जाई मोहहु उनहिं अधर्म बढ़ाई
दै दीक्षा शिक्षा सब काहू करहु असुर महँ पाप प्रवाहू
तुम महँ आदिभूत यह मुण्डी आदि नाम वसनावृत तुण्डी
तुम सब महँ पूजित यह जाते पूज्य नाम सुविदित जग ताते
अरिहन् कहि यह मोहि पुकारा ताते अरिहन नाम हमारा
अरिहन विकृत रूप अर्हन्निति विदित नाम मम आसमुद्र क्षिति
जिन जैनादि मोर अनुयायी भ्रष्ट करैंगे जन समुदाई
त्रिपुरासुर वध कारण एहू मत प्रचार नहि कछु सन्देहू
कलि कराल अति कुत्सित जनता महँ पसरत यह मत तत्परता
ईश्वर नियति सिद्ध युग धर्मा कलि कराल महँ प्रबल अधर्मा
प्रभु विनोद यह जग व्यवहारा पावि सकै को उनकर पारा

ऋषि यति अरु आचार्य सुनामा उपाध्याय नामा अभिरामा
नाम चतुष्टय क्रमिक तुम्हारा मुण्डी सम प्रियमात्र हमारा
प्रभुहिं प्रणमि मुण्डी तब गमने सहित शिष्य ऋषि आदिक अपने
त्रिपुर निकट पहुँचे सब जाई डेरा उपवन माँह गिराई
धर्म धर्म उच्चारण कियऊ वेद विरुद्ध वक्तृता दियऊ
मायामय मायामय वेशा कियउ वञ्चनामय उपदेशा
दरसायउ अद्भुत मायाबल भयउ प्रसिद्ध महातम थलथल
नारद मुनि अपि हरि मायावश भउ दीक्षित उनते सहि अपयश
तब विद्युन्माली ढिग नारद कहे जाय कल्पना विशारद
संन्यासी इक धर्म धुरन्धर उपवन बिच हैं टिके योगिवर
लै निज शिष्य चतुष्टय साथा करुणाकर अनाथकर नाथा
दीक्षा ग्रहण हमहुँ तहँ कीन्ही तासु अनुज्ञा शिरधरि लीन्ही
महाराज तुमहूँ तहँ दीक्षा जाय लेहु करि धर्म परीक्षा
सुनि विद्युन्माली बोले तब मुने परीक्षा व्यर्थ तासु अब
मुनिवर आपु शिष्य भउ जाकर किमु अवशिष्ट परीक्षा ताकर
दीक्षा ग्रहण हमहुँ तहँ करिहौं यतिवर आयसु सिरपर धरिहौं
अस कहि विद्युन्माली तहँमा गयउ विराजित मुण्डी जहँमा
शिष्य सहित मुण्डी पद परसे विनय बोरि वचनामृत बरसे
मोहि दयाकरि दीक्षा दीजिय दीनदयालु शरण महँ लीजिय
तासु वचन सुनि बोले यतिवर प्रथम हमार कथन सुनु प्रियवर
अनुचित उचित अनुज्ञा मोरी लंघनीय कबहूँ नहि तोरी

दृढ़ प्रतिज्ञ ह्वै स्वीकृत करहू मम विरुद्ध मगु पगु नहि धरहू
कहि तथास्तु भाषे असुरेशा हेरि दया दृग करिय निदेशा
वसन समावृत मुख धृत कुण्डी दीक्षित कियउ ताहि तव मुण्डी
मन्त्र देइ निज मत उपदेशा करि पुनि कियउ विविध आदेशा
त्रिपुर निवासी निशिचर सबही दीक्षा ग्रहण करत भउ तबही

दोहा

मुनिवर शिष्य प्रशिष्य कत, अमित शिष्य अरु तासु ।
व्यापित वञ्चित त्रिपुर भउ, धर्मकर्म कर नासु ॥२७॥

सोरठा

लुप्त सनातन धर्म, प्रकटित मत पाखण्ड भउ ।
जहँ तहँ व्याप्त अधर्म, असत्कर्म कलुषित त्रिपुर ॥३१॥

छन्द

निर्मल आचारा विमल विचारा श्रुतिमत सारा भ्रष्ट भयो
नारीव्रत धर्मा श्राद्ध सुधर्मा क्रतुकृत धर्मा अतल गयो
शंकर पद पूजा सिन्धु तनूजा-पति पद पूजा लुप्त भई
नाना विध यागा तजे अभागा मानहु जागा वाम दई

चौपाई

जब अधर्म पुर भीतर प्रविशा धर्म कर्म भीतर ते निकसा
तबते भयउ विधाता वामा त्यागी त्रिपुर रमा अभिरामा
कियउ निवास अलक्ष्मी तबही भउ हर विमुख असुरगण जबही
जो लक्ष्मी तपकरि ते पायउ जाकर डर सुर वन वन धायउ

धर्म विमुख उनकहँ लखि सोई तजी उनहिँ अति रुष्टा होई
तब भुण्डी आदिक अरु नारद गयउ विष्णु ढिग कार्यविशारद
समाचार सब प्रभुहिँ सुनाये सुनि लक्ष्मीपति अति सुख पाये
ह्वै प्रसन्न तेहि भाखत भयऊ तुम मम कृपापात्र ह्वै गयऊ
सुर नर मुनि कर दुःख मेटाये मानहु सुर कारज करि आये
करि प्रणाम भुण्डी तब गमने मरुथल काल बितायउ अपने
पथ पाखण्ड भयउ तब थापित पापाचार मर्त्यभुवि व्यापित
ब्रह्मलोक नारद मुनि गयऊ पितु-पद परसि कृतारथ भयऊ
गये संग इन्द्रादिक देवा असुर निपीड़ित मुनिगन जे वा
गयउ रमापति शंभु सकाशा करि संकल्पित त्रिपुर विनाशा
जय शंकर शंकर कहि धाये त्राहि त्राहि कहि शीश नवाये
अस्तुति करन लगे शिर नाई वेदोदित सुर मुनि समुदाई

छन्द (भुजंगप्रयात)

नमस्ते महेशान कारुण्यमूर्ते
नमस्ते गिरीन्द्रात्मजाऽभीष्ट पूर्ते
नमस्ते सुराराति संहार हेतो
नमस्ते सदाचार भृद्धर्म सेतो
त्वमेवासि कर्ता त्वमेवासि भर्ता
त्वमेवासि सर्वेश्वरो सर्वहर्ता
वयं संकटापन्नताम्प्राप्तवन्तः
प्रपद्यामहे पादपद्मद्वयन्ते

सुरारातयोस्मानुपद्रावयन्ति
प्रपन्नावयं पादपद्मद्वयन्ते
प्रभो दीनबन्धो परित्राहि दीनान्
समुन्मूलयन्नाथ दैतेयवृक्षम्
सतां रञ्जनं गञ्जनं दुर्जनानां
व्रतं तावकीनं प्रसिद्धम्परात्मन्
महादेव देवेश गौरीश शंभो
परित्राहि दीनान् परित्राहि दीनान्

दोहा

सामर इन्द्र समेत हरि, करि नुति विविध प्रकार ।
त्राहि त्राहि भाखत भयउ, प्रणमत बारंबार ॥२८॥

सोरठा

शंकर करुणासद्म, आलिंगन श्रीहरिहिँ करि ।
गहि पुनि तसु कर पद्म, विहँसत बोले वचन मृदु ॥३२॥

चौपाई

भउ नारद जहँ माया परवश उबरि सकै तहँ इतर जीव कस
त्रिपुरासुर भउ मुग्ध अभागा धर्म विमुख पूजन मम त्यागा
भइ अब त्रिपुर बहिर्गत लक्ष्मी प्रविशी तहाँ अवाध्य अलक्ष्मी
तुअ माया नहि काहि नचावा सती विरह हमहूँ दुख पावा
निरखि मोहिनी रूप अनूपा हमहूँ गिरे मनोभव-कूपा
ब्रह्मा मोहविवश ह्वै गयऊ निज तनुजा प्रति धावत भयऊ

इन्द्र इन्दु कुत्सित व्यवहारा अति प्रसिद्ध जानत जग सारा
इतर जीव तहँ काह गिनावै तुअ माया त्रिभुवन भरमावै
शरणापन्न तुमहिँ जो होई माया पार लहै जन सोई
विधिमहँ तुममहँ हममहँ जोई अद्वयमति मायाजित सोई
असुर मारि त्रिभुवन भय हरिहौं त्रिपुर भंग एकहि शर करिहौं
तव माया कौशल बल मुरजित नाम हमार विदित जग पुरजित
सुनि प्रभु वचन इन्दिरानाथा बोलत भयउ जोरि युग हाथा
यह प्रभुता प्रभुमहँ दरसाई निज अनुचर कहँ देहिँ बड़ाई
करै दीप किमु रवि उपकारा विधु उपकृति खद्योत बेचारा
प्रभु अतुलित बल त्रिभुवननाथा हम सब प्रभु बल पाइ सनाथा
विश्वविलय जसु भृकुटि विलासा तसु लघु लीला त्रिपुर विनासा
सुनि-शंकर हँसि बोले वानी परम चतुर तुम गुण गण खानी
हम तुममहँ अन्तर कछु नाहीँ गिरहिँ भेदमति रौरव माहीँ
अस करि करि बतकही परस्पर भयउ परम आनन्दित हरि हर
पुनि भाखत भउ करुणासागर दीनबन्धु शंकर गुण आगर
विदित हमार देव गण कारज़ विदित यथा दुख देत अनारज
हरि-मायाबल मुण्डी जाये ताकर चारि शिष्य कहलाये
भउ नारद मुनि मुण्डी दीक्षित मत पाखण्ड भये जस शिक्षित
भयउ भ्रष्ट मति जिमि त्रिपुरासुर सुविदित मोहि कथानक सबसुर
अस कहि प्रभु अन्तःपुर गयऊ द्वारदेश थित सुरगण भयऊ
भयउ अमर चिन्ताकुल हिरदय भयउ न कछुअग्रिम कृति निरनय

किंकर्तव्यमूढ़ भउ नाकी आज्ञा नहि कछु दीन्ह पिनाकी
अकृतकार्य हम सब हतभागा गतभय त्रिपुरासुर बड़भागा
अशरण शरण दीन दुखहारी हमहिँ भूलि गउ गरल अहारी
अति उत्कण्ठित भउ सुर सबही भउ उद्वेगविवश अति तबही
द्वार प्रवेश करन जब लागे कुम्भोदर बढ़ि आयउ आगे
दण्डाघात सुरन कहँ कियऊ सब भयभीत पलायन कियऊ
सुर मुनि गिरे धरणितल भाई कालकर्मगति रोकि न जाई
दीनवदन मुररिपु मुख हेरे त्राहि त्राहि कहि सुर मुनि टेरे
दीनबन्धु दुखदमन मुरारी दयासिन्धु गोवर्धनधारी
सुर मुनि कहँ आश्वासन दीन्हा शुभ उपदेश तदुत्तर कीन्हा
महदाराधन नहि द्रुत फलई कर्मभोग नहि टारे टरई
महदाराधन होइ न मोघा समय पाइ विनाशै अघ ओघा
निर्मल मनमहँ उपजै भक्ती भक्त हस्तगत नाना शक्ती
सुनहु वचन सामर अमरेशा मिटिहि जाहि ते सकल कलेशा
एक कोटि संख्यक जप करहू मन्त्र अमोघ हृदय महँ धरहू
प्रणव नमः शिव सहित चतुर्थी शुभं द्वितय कुरु द्वितय चतुर्थी
युत शिव नमः प्रणव शुभ मन्त्रा जाकर स्वयमपि शिव परतन्त्रा
मन्त्र प्रताप अवश्य महेशू मारि असुर हरिहैँ सब क्लेशू
विष्णु वचन सुनि सुर मुनि सबही लागे करन मन्त्र जप तबही
भउ जब जप संख्या परिपूरित दक्षिण अंग भयउ विस्फूरित
लखि शुभ शकुन सुरन सुख पाये दरस मनोरथ मन महँ लाये

आविर्भूत भयउ शिव शंकर असुर भयंकर सुर अभयंकर
दीनबन्धु करुणामृत सागर भक्तबछल प्रभु सकल गुणागर
आशुतोष आरत परिपालक अशरणशरण दुष्ट दल घालक
वरम्ब्रूहि मृदु वचन उचारे तन मन सुधिबुधि सुरन विसारे
है सुस्थिर कथमपि सुरवृन्दा गौरीपति पद पद्म मिलिन्दा
दण्ड प्रणाम करन सब लागे अतिशय प्रणय विनय रस पागे
प्रेम अश्रु नयनन वरसाये गदगद स्वर फुर वचन सुनाये
पाइ दरस हम भये कृतारथ अब अलब्ध प्रभु कवन पदारथ
चारि पदारथ करतल ताकर प्रभु अनुकम्पा ऊपर जाकर
निगम वृक्ष प्रतिशाखा माहीँ पुनि पुनि खोजि मिलत जो नाहीँ
सो प्रभु हम कहँ दरशन दीन्हा दीन विचारि शरणमहँ लीन्हा
हम सब सरिस कवन बड़ भागी करहु नाथ निज पद अनुरागी
प्रभु सर्वज्ञ सकल घट वासी जानि बूझि नहि उचित उदासी
सुर मुनिगण त्रिपुरासुर त्रासा धन जीवन ते भयउ हताशा
असुरमारि सुरनिकर बचाइय दीनबन्धुता प्रभु दरसाइय
सुर दुर्गति अविदित नहि तोही समुचित दण्ड देहु प्रभु ओही
गो-द्विज-देव-साधु अपकारी शास्त्रविचार दण्ड अधिकारी
अस कहि त्राहि त्राहि सब कोई कहन लगे बद्धाञ्जलि होई

दोहा

गायउ विश्वावसु प्रभृति, गाल बजाय बजाय ।
रंभा आदिक अप्सरा, नाची अति हरषाय ॥२९॥

करन लगे अस्तुति अमर, अमरनाथ शिर नाय ।
पुनि पुनि जय जयकार करि, सुस्थिर मन नतकाय ॥३०॥

सोरठा

नमो नमो बहु बार, नुति अन्तर्गत उच्चरित ।
वेद उक्ति अनुसार, भयउ उक्त कत नाम शुभ ॥३१॥

छन्द (भुजंगप्रयात)

नमस्ते कपालिन् कपर्दिन्नमस्ते
नमस्ते पिनाकिन् त्रिशूलिन्नमस्ते ।
नमस्तेऽन्धकारे पुरारे नमस्ते
नमस्ते स्मरारेऽसुरारे नमस्ते ॥
नमो व्यालमालाय कालाय तुभ्यं
नमश्चन्द्रभालाय पालाय तुभ्यम् ।
नमो भस्मरागाय शैलालयाय
चिताभूविहाराय गंगाधराय ॥
नमो व्याघ्रकृत्तिवसानाय तुभ्यं
नमः कालकूटं दधानाय कण्ठे ।
नमस्ते जटाजूटिने प्रेतभर्त्रे
विवस्त्राय दक्षाध्वरध्वंस कर्त्रे ॥
नमः शंभवे वीरभद्रप्रियाय
नमस्ते महाताण्डवाडम्बराय ।

पुरस्तात् परस्तात्तथैवोपरिष्टा
दधस्तात् समन्तान्नमस्ते नमस्ते ॥

दोहा

नन्दी आदिक प्रमथ वृत, धृत गिरिजा अर्द्धाङ्ग ।
कहे दयारस आर्द्र दृग, रोमाञ्चित सर्वाङ्ग ॥३१॥

सोरठा

होहु अभय सुरवृन्द, उत्पथगामी असुर भउ ।
मायाबल गोविन्द, कियउ सुकर दानव दमन ॥३४॥

चौपाई

पुनि प्रभु विसुकर्मा प्रति बोले रिपु भय तुम सब वन वन डोले
अवसर पाइ हतब अब ओही आज्ञा एक करौं मैं तोही
करहु एक स्यन्दन निर्माना असुर अबाध्य अपरिमित माना
सुनि विसुकरमा बोले वयना अति प्रसन्न मन विकसित नयना
प्रभु अनुशासन शिर पर मोरे अवलोकिय प्रभु लोचन कोरे
प्रभु अनल्प महिमा लवलेसा बल विधि सिरजहिं विश्व असेसा
स्यन्दन रचउँ नाथ मैं अनुपम तव करुणाबल अतुल अनुत्तम
अस कहि सुर शिल्पी शिरनाये सिद्धि सदन गजवदन मनाये
प्रभु कृपया निरमायउ रथवर अति अद्भुततर अन्तरिक्ष चर
क्षोणी स्यन्दन अद्भुत रूपा अन्तर्गत ब्रह्माण्ड सरूपा
सर्व देव मय सर्व लोक मय सर्वभूतमय सुर सुवर्णमय
भउ दक्षिण रथांग ग्रीषमकर वाम रथांग भयउ पुनि हिमकर

षोड़शार दक्षिण षोड़श कल द्वादशार उत्तर द्वादश कल
दक्षिण भूषण बटुगण जूहा वाम विभूषण ऋक्ष समूहा
दहिन वाम द्विजवर्य विराजित वेद पाठरत अति छवि छाजित
मन्थर भूधर रथवर नीड़ा लखि पाटव मय दानव व्रीड़ा
उदय अस्त गिरि कूवर भयऊ दोऊ अयन आन होइ गयऊ
संवत्सर भउ वेग समाना रथ कुण्डलिका सिन्धु बखाना
गंगादिक चामर कर सोहै उपमा कहि सक अस कवि कोहै
अनुपमेयता कवि अवलम्बा साधन सिद्धि हस्त जगदम्बा
असम वस्तु पावै नहि समता साम्य कथन महँ कवि अक्षमता
ईश अनीश सरिस को कहई जनता बीच अयश को लहई
होइ न कूप-आपगा-समता निरुपम उपमा कथन अधमता
प्रणव ब्रह्म भउ ब्रह्म प्रतोदा परमाडम्बर शंभु विनोदा
शरगत शल्य भयउ हुतभक्षी दग्धकरिष्णू देव विपक्षी
यन्ता भयउ देव चतुरानन बाण भयउ प्रभु खगपति वाहन
भूधरेन्द्र भउ धनुष कठोरा ज्या उरगाधिप विषधर घोरा
मन्दर पार्श्व दण्ड तहँ भयऊ मकर छत्रवर तहँ बनि गयऊ
चतुर्वेद भउ अश्व चतुष्टय अश्व विभूषण ज्योतिर्गणमय
त्रिपुरासुर तृण दहन महेशा लीलाडम्बर कियउ विशेशा
नहि प्रभुता परतन्त्रा होई लीला करत यथारुचि सोई
सुनहु कथानक श्रवण मनोहर त्रिपुरभंग जस कियउ शूलधर
तारक तनय यथोचित दण्डा पायउ सुर द्रोही उद्दण्डा

सुर द्रोही सुख लहै न कबहू विद्याबल सम्पति अति जबहू
तहाँ शंखचूड़ादि् निद्र्शन यहाँ न उचित विरुद्ध विमर्शन
रथारूढ भउ शंभु पिनाकी जय जयकार करत भउ नाकी
मही महीधर डोलन लागे बढ़े भयंकर भैरव आगे
नाचन लगी योगिनी नाना वैतालिक गण गावहिँ गाना
दे्व दुन्दुभी आनक आदि्क लगे बजावन प्रमथ भटादिक
महाशंख धुनि भइ चहुँओरा द्यावा पृथिवी व्यापि कठोरा
सम्मुख वटी अप्सरा नाना पढ़हिँ विप्रगण वेद पुराना
वेदोदित अस्तुति सब करहीँ दया दृष्टि लखि प्रभु भय हरहीँ
ह्वै वृषेन्द्र रूपी धरणीधर रथ आरोपित कियउ पृष्ठपर
रथ सञ्चालन कियउ तुरन्ता वाताधिक गति विधि भगवन्ता
त्रिपुर लक्ष्य करि श्रीवृषवाहन चले वह्नि जिमि खाण्डव कानन

दोहा

प्रेम अश्रुपूरित नयन, पुलकित तनु सुरवृन्द ।
कियउ वेदमत नुतिसहित, सुरगुरु आदि मुनीन्द ॥३२॥

सोरठा

आठो अंग लगाय, गिरे भूमितल अति विकल ।
हे प्रभु होहु सहाय, कहत कहत सुरमुनि निकर ॥३५॥
नन्दी सबहिँ उठाय, आश्वासन बहु विधि दियउ ।
जनपर सदा सहाय, भक्तबछल प्रभु तजहु भय ॥३६॥

सबहि युगल करजोरि, गद्गद गल अस्तुति कियउ ।
प्रणमि बहोरि बहोरि, हेरि हेरि पुनि पुनि प्रभुहिँ ॥३७॥

छन्द

जय जय कैलासी काशीवासी सदा उदासी सुखराशी
जयगुणगणवारिधि दीनदयानिधि नेतिपदावधि अविनाशी
जयमंगलकन्दा सुरमुनिवृन्दा शरण समागत पाहि विभो
त्रिपुरासुर त्रासा अमर हताशा परमारत परिपाहि प्रभो
हरि धर्मविभर्ता रक्षणकर्ता सुरभयहर्ता विश्वपते
श्रुतिमित सुखधाता विश्वविधाता अभिमतदाता प्रमथपते
अरुसहसविलोचन लोकपालगन त्रिपुरासुरबल विकलभये
अढरन ढरन शरण अशरणकर शरण एक प्रभु चरण अये

चौपाई

भयउ सदाशिव अति विकराला रण उत्सुक कालहुकर काला
पहुँची तहाँ शूल गहि पानी काली रूपा उमा भवानी
पहुँचे कार्तिकेय जहँ काली वृषारूढ़ प्रभु अति बलशाली
सामर अमरराज तब धाये चढ़ि निजनिज वाहन छवि छाये
कोइ गजोपरि हयपर कोई कोइ सिंहपर रथपर कोई
कोउ वृषारोहण करि धाये युद्ध समुत्सुक शंख बजाये
कोउ शाल मूशल हल धारी कोउ भुशुण्डी शस्त्र प्रहारी
कोऊ शिलाशैल कर लियऊ गिरि उपमा कवि उनकहँ दियऊ
स्वयमपि मुनिगण नाचत भयऊ जटिली दण्डहस्त छवि छयऊ

खेचर वृन्द सुमन बरसाये चारण सिद्ध आदि सब आये
चले प्रमथपति त्रिपुर लक्ष्य करि सहित गणेश्वर हू हू करि करि
कुन्ददन्त कम्पन परकम्पन इन्दु प्रकन्दु इन्द्रयव जिमि घन
पञ्चअक्ष शतअक्ष महोदर सहसअक्ष यन्ता अरु हिमकर
कंकट कट पूतन शतजिह्वा विकट शतानन दशशत जिह्वा
गणपति द्विशिरा त्रिशिरा नामा अरु एकानन अति बलधामा
अज-हय-गज-वक्त्रादिक नाना अर्धवक्त्र आदिक बलवाना
चतुर्दिक्षु शिव संग सिधाये कहि जय जय शिव गाल बजाये
करन वितर्क लगे सब कोई बुद्धिवेद्य नहि प्रभुगति होई
पल महँ जगत जारि सक जोई लक्ष्य बनाय त्रिपुर तृण सोई
आपुहि करि आडम्बर आवा अचरज गति कछु जानि न जावा
अथवा अचरज करहु न कोई अचरज रूप स्वयं प्रभु सोई
वारि बिन्दुते जग उपजावै ताते कारज सकल करावै
पुनि सड़िगलि माटी होइ जाई अथवा छार होइ उड़ि जाई
कर बिनु करइ चरण बिनु धावै अतनु सतनु इव सबहिं लखावै
बिनु सामग्री सौध बनावै लेपि पोति पुनि ताहि ढहावै
शंकरकी गति शंकर जानहिं ज्ञानी बुद्धि अगोचर मानहिं
जनवत्सलता ख्यापन हेतू अथवा चरित कियउ वृषकेतू
सज्जन अवन असज्जन दण्डा करहिं लीलया धृत शशि खण्डा
अग्रिम कथा सुनहु अब ताता कहत सुनत अघओघ नशाता
प्रस्थित भयउ सदाशिव यत्क्षण त्रिपुरहु एकत्रित भउ ततक्षण

सुर नर मुनि लखि अति हरषाये परिमल घन प्रसून बरषाये
पढ़े वीर रसमय पद वन्दी डम डम उमरु बजाये नन्दी
मारू बाजा बाजन लागे भउ अधीर दैतेय अभागे
शंखचूड़रिपु शंख बजाये गरजत प्रमथ वीरवर धाये
मारु मारु धरु धरु आदिक रव कीन्हे वीरभद्र आदिक सब
विनय किये प्रभु प्रतिविधि विष्णू सुनिय सुनिय शंकर प्रभविष्णू
त्रिपुर भयउ एकत्रित नाथा ताहि भञ्जि करु अमर सनाथा
शंकर दया दृष्टि करि हेरे, होहु अभय सुर मुनिकहँ टेरे
चापारोपित शर तिन कीन्हा पशुपतास्त्र योजित करि दीन्हा
अवहेला करि प्रभु पुर देखे भस्म भयउ जरि सो सब पेखे
चौदह भुवन जासु रिस दहई त्रिपुर दहन किमु अद्भुत अहई
प्रभु विधिआदिक सुयश बढ़ाये शर तजि दग्ध सुदग्ध बनाये
दैत्य कोटिशत पूरित पुर त्रय प्रभु प्रताप अस पायउ संक्षय
बाँचि गयउ तहँ जे शिव सेवक सदा अनश्वर शंभु निषेवक
भइ शिवगण महँ उनकी गिनती किये मुदितमन नति नुति विनती
मय नामा दानव प्रभु दासा भयउ निरापद तजि सब आसा
गाणपत्य पद पायउ ताता सुयश जासु अबहूँ विख्याता
खाण्डव वन जब अर्जुन जारे वह्नि याचना शिरपर धारे
तहँ मय दानवकी रुचि राखी सो तब भउ अस वचन प्रभाखी
करिय अनुज्ञा कछुक वीरवर पालन करउँ शक्तिभरि ताकर
सो सुनि कहे वीर पाण्डववर वियज नाम गाण्डीव धनुर्धर

कीजै एक सभा निर्माना दीखै दृश्य रुचिर जहँ नाना
निर्मायउ सो सभा रुचितर बढ़ी प्रतिष्ठा धर्मराजकर
जहँ दुर्योधन नृप भ्रम पाये जलभ्रम थलमहँ वसन उठाये
थलभ्रम जल महँ आर्द्र वसनभउ भित्ति गगन भ्रम आहत ह्वै गउ
निरखि भीम कृष्णा हँसि दियऊ विग्रह बीज वपन जिन कियऊ
गउ दुर्योधन नृप रिसिआई मानभंग मानी दुखदाई
स्वजन द्रोह करि को सुख पावा सदा सुरासुर दुःख उठावा
स्वजन द्रोह लंका ढहवाया स्वजन द्रोह भारत मचवाया
स्वजन द्रोह ते कंस विनाशा वंश वंश घर्षण तसु नाशा
बान्धव विग्रह धनजन नाशा ब्रह्म वैर करि सर्व विनाशा
प्रासंगिक कछु नीति सुनाई प्रस्तुत कथा सुनहु मन लाई
क्रोधावेश समय विकराला भउ दुर्दर्श कालकर काला
महा प्रलय कालिक घन वर्णा भइ दुर्दृश्यानना अपर्णा
भयवश अमर मौन गहि लियऊ जयजय धुनितव द्विजगणकियऊ

दोहा

अस्तुति चतुरानन कियउ, प्रेम पुलक भर गात ।
गद्‌गद गल अस्फुटित हल, महिमा वरणि न जात ॥३३॥

छन्द

जयजय पुरभर्जन घनरवगर्जन रिपुकुलतर्जन पाहिजनम्
दानवसंहारिन् सुरभयहारिन् मंगलकारिन् अघनघनम्

जययम भयहारिन् शैलविहारिन् प्रणमति सुर ता प्रभुचरणम्
शिवयासह हे शिवसौम्यदृशाजगतीमववाञ्छतिसाशरणम्

सोरठा

तब मुरमर्दन नाथ, आदिनाथ नुति करत भउ।
त्रिभुवन कियउ सनाथ, नाथ जारि तारक तनय ॥३८॥

छन्द

नमामि हे नाथ भवन्तमीश्वरं भजामि हे नाथ भवन्तमीश्वरम्
ब्रजामि हे नाथ भवन्तमीश्वरं प्रसीद देवेश विचिन्तयामिते

दोहा

पुनि सुरगण अस्तुति कियउ, निजनिज मति अनुसार।
आठो अंग लगाय पुनि, प्रणमे बारंबार ॥३४॥

सोरठा

ह्वै प्रसन्न जगदीश, सुरगण सम्बोधन कियउ।
कृपया दियउ असीस, विदा कियउ सत्कार करि ॥३९॥
प्रभु गमने कैलास, विधि हरि तसु अनुगत भयउ।
विरमे शंकर पास, कछुक दिवस मंगलचरित ॥४०॥

चौपाई

नाना भाँति भयउ सुविचारा लोक वेद कारज अनुसारा
थापित शान्ति भयउ संसारा भयउ सनातन धर्म प्रचारा
चलन लगे सब सदाचार मग धरै न कोउ कबहुँ उत्पथ पग
विप्र-धेनु-सुर-साधु समादर गुरुजन पूजन परिजन आदर

सामाजिक प्रबन्ध अति सुन्दर समुचित वर्षण करहिँ पुरन्दर
गृह गृह धन जन अन्न समृद्धी गिरिकानन मुनि जन सुखसिद्धी
पिता-पुत्र पत्नी-पति आदिक प्रीति परस्पर व्रत पर्वादिक
तीरथ दान पञ्च यज्ञादिक पार्वण कृत्य इष्ट भजनादिक
आन्वीक्षिकी त्रयी पठनादिक वार्ता नीति दण्ड गठनादिक
वेद अंग पढ़ि पढ़ि द्विज पण्डित साहित्यादि विविध गुणमण्डित
समुचित कर्म कलाप प्रचारा आयुर्धनुर्वेद विस्तारा
नहि पाखण्ड न परमत खण्डन श्रौतस्मार्त शिष्ट मत मण्डन
तस्कर–दस्यु–उपद्रव–हीना वसुन्धरा दुर्भिक्ष विहीना
शस्य समृद्धि पुष्प फल वृद्धी ब्राह्मण वृत्ति अयाचित सिद्धी
व्याजवृद्धि विरहित व्यवहारा नहि अन्याय लेश संसारा
जहँ तहँ उत्सव मंगल मोदा नर नारी सब करहिँ विनोदा
मृत्यु अनवसर कतहु न होई सब परमायु जीव जग जोई
सासु ससुर पद वधू पिरीती वधू सुवासिनि सौहृद रीती
नहि उत्पात उपद्रव ईती दीखत नहि कहुँ अनुचित रीती
कुटिल छली नहि मिथ्यावादी नहि अवैध हिंसक परमादी
वर्ण चतुष्टय निज निज वृत्ती तत्पर सदा स्वभाव प्रवृत्ती
चतुराश्रमगत निज निज धर्मा पूर्व कर्मरत अपर अकर्मा
राजा प्रजा परस्पर प्रीती तजै न कोउ यथोचित नीती
विधि हरिहर कृपया तिहुलोका भउ अवसाद रहित गत शोका
लखि प्रस्थिति अति मुदित महेशू भउ गन्तुक विधि हरिनिज देशू

करि नुति नति अरु प्रेमालिंगन गमने विधि अरु खगपति वाहन
सत्य लोक चतुरानन गयऊ मुनिजन दरश कृतारथ भयऊ
प्रणति असीस भयउ समयोचित पूछे प्रभु कुशलादि यथोचित
गउ वैकुण्ठ लोक मधुसूदन दीनदयानिधि दुष्ट निषूदन
लक्ष्मीनाथ दरस पुरवासी भउ जिमि अधन पाइ धनरासी
नन्द सुनन्दादिक करि प्रणती करन लगे पुनि बहुविध विनती
आशीर्वाद सबहिँ प्रभु दीन्हा कुशल प्रश्न पुनि सब कहँ कीन्हा

दोहा

त्रिपुरासुरवध चरित यह, कहहिँ सुनहिँ मन लाय ।
कामादिक रिपु विजय करि, मुदित मनोरथ पाय ॥३९॥

सोरठा

तात बुद्धि अनुसार, तुमहिँ सुनायउँ चरित यह ।
प्रभु गति अपरम्पार, तासु पार को लहि सकै ॥४१॥
कहे शिष्य हरषाय, सजल नयन तनु पुलक भर ।
पुनि पुनि शीश नवाय, भयउ जन्म जीवन सफल ॥४२॥
गुरु अनुकम्पा पाय, भुक्ति मुक्ति पद हस्तगत ।
होइय नाथ सहाय, जाचउँ केवल भक्ति रस ॥४३॥
सुनि सुनि प्रभु गुण गान, प्रेम पिपासा बढ़त अति ।
करन चहौँ पुनि पान, शंभु कथामृत रस गुरो ॥४४॥
षण्मुख विमल चरित्र, नाथ सुनायउ करि कृपा ।
गजमुख चरित पवित्र, श्रवण हेतु उत्सुक हृदय ॥४५॥

सहित दिनेश गणेश, हुतभक्षण दुर्गा सहित।
पञ्चम देव महेश, पञ्च देवता विदित जग ॥४६॥

पूजि प्रथम विघ्नेश, सिद्ध होत कारज सकल।
विनसत सकल कलेश, परिचय पूजन तासु कस ॥४७॥

सुनत प्रश्न हरखाय, बोले करुणायतन गुरु।
शंभु चरण शिर नाय, सुनहु तात गणपति चरित ॥४८॥

चौपाई

कहउँ तात इतिहास पुराना व्यासादिक मुनि यथा बखाना
रही एक दिन उमा भवानी मज्जन करत रूप गुणखानी
पहुँचे तहँ प्रभु त्रिभुवन दानी प्राणप्रिया तब लही गलानी
शंकर हँसि बाहर चलि गयऊ उमा सखी मुख हेरत भयऊ
नन्दी द्वारप देहु बुलाई ताकहँ कछुक कहौं समुझाई
नन्दी आय चरण शिर नाये जगदम्बा रुख लखि भय पाये
कहन लगी ताकहँ तब माता सुनहु तात मोरी कछु बाता
द्वारपाल पदवी तुम पायउ द्वारप धर्म न मन महँ लायउ
विना मोर अनुमति कस स्वामी भउ असमय अन्तःपुर गामी
मोहि न काहे खबर जनायउ नहि अनुरोध मोर मन लायउ
नन्दी विनय करन तब लागे शक्ति काह मम उनकर आगे
करि सो विविध भर्त्सना मोरे गयउ स्वेच्छया प्रांगण तोरे
नहि अपराध मोर कछु माता करहु क्षमा सेवक कर नाता

तब गिरिजा हँसि ताहि सुनाई जानी हम तुम्हारि चतुराई
क्षमा आजु मैं कीन्ही तोही जाहु न बहुरि चिढ़ायहु मोही
नन्दी गमन अनन्तर बोली आली कलह पोटली खोली
ये सब हमहिं न आदर करहीं नहि तुम्हारहू डर ये डरहीं
नहि हमार अवसरपर ये सब हर आज्ञाकारी ये जब तब
द्वारप खास नियोजित करहू मन्त्र हमार हृदय महँ धरहू
निज स्वामिनी तोहि जो मानै तुअ आज्ञा पालन व्रत ठानै
डरै न शंकरहू ते जोऊ तुअ प्रतिकूल होहिं जब ओऊ
एवमस्तु तब कहेउ भवानी जया सहित विजया हरषानी
शैलसुता सुत निर्मित कियऊ आपुन सरिस शक्ति दै दियऊ
अम्बा कर गत वारि समुद्भव पिण्ड भयउ परिणत गौरीभव
पुत्र विदित तसु नाम गणेशा सुन्दर सकलावयव सुवेशा
भूषण वसन मनोहर नाना देइ दियउ आसीस प्रमाना
होहु अतुल बल रिपुदल जेता पुत्र हमार प्रमथ गण नेता
मोर द्वारपर सुस्थिर रहहू मोर अनुज्ञा व्रत तुम गहहू
मातु अनुज्ञा तुअ मम शिरपर सुस्थिर रहिहौं सदा द्वारपर
सुनि अस पुत्र वचन जगदम्बा प्रमुदित निरवलम्ब अवलम्बा
ताहि द्वारपर थापित कियऊ यष्टी सुदृढ़ हाथ महँ दियऊ
सुत मुख निरखि अतिहि हरषाई करि करि चुम्बन कण्ठ लगाई
द्वारदेश सो थिर है गयऊ मातु अनुज्ञा पालत भयऊ
मज्जन करन लगी जगदम्बा लिये संग निज सखी कदम्बा

ताहि समय आये श्रीशंकर भीतर गमन निमित्त द्वारपर
आयउ गण अनेक प्रभु संगा भयउ प्रवेश मनोरथ भंगा
कियउ निषेध गणेश यष्टिधर ठहरहु समय जानि मज्जन कर
लौटि जाहु एहि समय प्रवेशा नहि संभव बिनु उमा निदेशा
अस कहि लियेउ यष्टि सो हाथा रोकत भयउ सुरासुर नाथा
हम शिव अस कहि प्रविशन लागे सो गण रोकि ठाढ़ भउ आगे
यष्टयाघात सहहु तुम मोरे को शिव हमहिँ न परिचय तोरे
अस कहि कियउ यष्टि आघाता तब हँसि बोले त्रिभुवन दाता
रे मूरुख नहि जानसि मोही बालक जानि हतौँ नहि तोही
हम शंकर गिरिजाकर स्वामी अस कहि भयउ द्वारपथ गामी
बहुरि दण्ड ताड़न सो कियऊ कोपि गणन प्रभु आज्ञा दियऊ
को यह द्वारदेश पर आया मम ऊपरहू दण्ड चलाया
बहुरि करन चाहत यह काहा देहु उचित उत्तर गणनाहा
ते सब ताहि कहन तब लागे द्वारदेशपर बढ़ि बढ़ि आगे
कोपाकुलित चित्त सब कोई निरखत अनिमिष लोचन होई
को तुम यहाँ कहाँ ते आये द्वारदेश पर कलह मचाये
करन चहसि तुम काह वराका लहिहौ दुर्गति तुम नहि का का
गण बुद्ध्या हम हतौँ न तोही जानसि नहि शिवगण अति कोही
हम सब द्वारपाल शंकर कर होहु न परवश यम किंकर कर
तुरत द्वार तजि भागहु भाई मरहु न वृथा चपेटा खाई
द्वारदेश नहि तजे गणेशू सबहिँ अनादर करि अकलेशू

ते सब शिवहिँ कही सब बाता तब बोले शंकर सुरत्राता
किमु पौरुष नहि तुम सब माहीँ होत बाध्य इक बालक नाहीँ
बालक एक हटाय न सकहू सम्मुख आवि वृथा कस बकहू
स्वामि वचन सुनि पुनि सब धाये नाना भाँति गणहिँ समुझाये
रे रे को तुम द्वारदेशथित नहिं जानै त्रिभुवन पति पुरजित
कौन तोहि यहँ थापित कियऊ को ऐसी सिख तो कहँ दियऊ
करसि हमार अनादर दुर्मति टारि सकै को काल कुटिल गति
महाकालकर सेवक हम सब तुअ शिर मड़रत कालपुरुष अब
यदि शृगाल सिंहासन बैठे मानहु काल व्याल मुख पैठे
हम सब द्वारपाल शिव थापित भागहु काल करहु नहि यापित
लोचन गोचर प्रमथ प्रतापा करि निर्गलित होत तुअ दापा
प्रमथ शूल जब हृदय विदारिहि तब अनुताप तोर तनु जारिहि

दोहा

सुनि अस वचन गणाधिपति, करि यष्टी आघात ।
गरजे भागहु शब्द कहि, जिमि घन वज्राघात ॥३६॥

सोरठा

किंकर्तव्यविमूढ़, गयउ प्रमथ सब शिव निकट ।
गति जाकर अति गूढ़, सो प्रभु हँसि प्रमथहिँ कहे ॥४१॥

चौपाई

तुम सब शूकर प्रमथ शरीरा मानहु आपुहिँ अति बलवीरा
सकहु हटाय न बालक एका बक बक करहु वृथा जिमि भेका

बालक एक भर्त्सना कारक ताकर होइ न सकहु निवारक
तसु ताड़न निष्कासन करहू बूड़ि अन्यथा जल महँ मरहू
लहि गञ्जन गण लही गलानी प्रणमे प्रभुहिं जोरि युग पानी
गमने सबहि होइ गंजित अति आये तुरत रहे जहँ गणपति
जाहु जाहु गणपति सन भाखे शूल शक्ति आदिक कर राखे
काल गाल तल कवलित होहू पियै तोर शोणित अब ओहू
सुनि उनकर भाषण तब गणपति लगे विचार करन मन महँ अति
का इन सब कहँ मारि भगावौं का मैया पहिं खबर पठावौं
सुनि कोलाहल गिरिवर तनया भेजी तहाँ सखी निज विजया
कही सखी कहँ श्रीजगदम्बा चिन्तित लम्बोदर अवलम्बा
देखहु जाइ होत का तहँमा गणपति द्वारपाल थित जहँमा
लखि वृत्तान्त सखी तस तहँमा अति हर्षिता भई तेहि लहमा
आवि उमा प्रति खबर जनाई यथातथ्य वृत्तान्त सुनाई
हे सखि तुअ बालक बलवीरा भृंगी भृंगी भयउ अधीरा
आपहुँ आवि द्वार फिरि गयऊ नन्दी आदि म्लानमुख भयऊ
रुके द्वार बाहर सब कोई तव सुत रोधेउ निर्भय होई
पुत्रहिं द्वारपाल करि नियमित हम सब देवि भईं निश्चिन्तित
वाद विवाद करहिं मिलि सबही शस्त्राघात होत नहि अबही
मज्जन अवसर आइ महेशू लज्जावश करि देहिं कलेशू
अब अनुमति बिनु आवि न सकिहैं यदपि पुत्र प्रति बकि झकि थकिहैं
भउ अति समुचित द्वारप थापन अब नहि सम्भव लज्जा व्यापन

सुनि अम्बा बोली मृदुवानी प्रमुदित हृदय प्रीति रस सानी
जाइ सखी समुझावहु वा कहँ जाते होइ त्रास नहि ता कहँ
प्रमथ चहैं आवन यदि भीतर रहै द्वारपर सुथिर सुदृढ़तर
आपहुँ प्रभु आवन यदि चहहीं देइ रोकि उनहूँको तहँहीं
चतुरानन सुरमर्दन देवा लोकपाल इन्द्रादिक जे वा
सबकहँ रोकि रखै द्वारहि पर करै न नेकहु काहूकर डर
यदि तिन चाहँ रारि मचावन देइ पुत्र मम उनहिं सिखावन
हम सब मिलि सहायिका ताकर ताहि हरावै अस बल काकर
जाइ सखी गणपति समुझाई उमा उक्त संवाद सुनाई
सुनि सो कथन अतिहि हरषाये जो आज्ञा कहि शीश नवाये
विजया आइ उमा ढिग बोली पुनरपि कलह पोटली खोली
तिरस्कार पायउ तुअ बालक तदपि रहा थिर आज्ञापालक
तसु अपमान तोर अपमाना तसु सम्मान तोर सम्माना
भईं अपमानित सखि हम सबही लैहौं बदला हमहूँ कबही
नहि गिरिसुते तजहु निज माना तुअ अधीन शंकर भगवाना
जिमि मर्कट नर्तक आधीना तुअ अधीन तिमि प्रभु गुणहीना
सुनि जगदम्बा सोचन लागी जासु हृदय प्रभुपद अनुरागी
क्षणमपि नाथ बिलम्ब न कियऊ विग्रह बीज वृथा वपि दियऊ
विधि-हरि-हर भावी वश सबही विग्रह रोकि सकै को कबही
सह्य न मोहि पुत्र अपमाना प्रभु चाहहिं निज गण सम्माना
भावी यथा तथा मति उपजै तथा सहायक धाता सिरजै

तत् पर तदनुरूप उद्योगा भावी विवश छोट बड़ लोगा
अस विचारि मन महँ जगदम्बा कहत भई लम्बोदर अम्बा
सुखोदर्क अति समुचित बानी साहस धैर्य नीति रस सानी
विजया कर गहि परम सयानी सेवहिँ जासु चरन मुनि ज्ञानी
सखी विनय अवसर अब नाहीँ सोचि लई मैं निज मन माहीँ
ईश सकल संसार नचावै प्रभु कहँ ईश वेद बतलावै
चरित समस्त नाथ इच्छाकृत द्वारचरित यह तथैव विरचित
अनहोनी होनी नहि होई वृथा तत्र चिन्तित मति कोई
जाइ कहहु तुम बालक पाहीँ करै न चिन्ता कछु मनमाहीँ
जो कछु कियउ उचित सो कियऊ नहि निन्दा प्रद मग पग दियऊ
विना विनय प्रविशै नहि कोई महा घोर संगर वरु होई
मोर अनुज्ञा व्रत दृढ़ ठानै कबहुँ कुतर्क न मनमहँ आनै
चतुर सखी सब कही बुझाई जगदम्बा बालक ढिग जाई
भाखे गणपति अति हरषाई चिन्ता मोहि कछुक नहि माई
मातु अनुज्ञा सिरपर मोरे देखत रहैँ कृपा दृग कोरे
अस कहि बद्धकच्छ ह्वै गयऊ महा मेघ रव गर्जत भयऊ
ठोकि ताल बाहू अरु ऊरू भयउ द्वार सुस्थिर वर वीरू
पुनि महेश गण कहँ ललकारा वीरवरोचित वचन उचारा
हम गौरीनन्दन वरवीरा तुम सब शिवगण अति रणधीरा
उभय पक्ष महँ समता भाई होहु नम्र वा करहु लड़ाई
बालक जानि मोहि नहि निदरहु रहहु सुथिर नहि भागहु कदरहु

तुम सब जगत् पिताकर यूथप जगदम्बाकर हमहूँ द्वारप
तुम सब शिव आज्ञा परिपालक हमहूँ अम्बा आज्ञा पालक
अन्तःपुर प्रवेशकर भाई विनय प्रथम रण चरम उपाई
वीर प्रमथगण सुनि अस वयना गयउ शंभु ढिग लज्जित नयना
समाचार सब प्रभुहिं जनाये सुनि प्रभु उत्तर वचन सुनाये
हम अरु ममगण अरु गौरीगण यहाँ न भासत मोहि उचित रण
अनुनय विनय उचितनहि भासत हर वनितावश अस जग भाषत
किंकर्तव्यमूढ़ हम भाई है अनन्य गति करहु लड़ाई
हमहुँ सहायक गण तुम सबकर युद्धविशारद बालक कबकर
वृथा हिमालय सुता दुराग्रह भउ सवार बालक ऊपर ग्रह
होइ सन्नद्ध जाहु सब तहँमा परम हठी बालक वह जहँमा

दोहा

होइ सुसज्ज तब प्रमथगण, गयउ जहाँ गणनाथ ।
निरातङ्क थित द्वारपर, लिये यष्टिका हाथ ॥३७॥

सोरठा

आगत शिवगण वृन्द, लखि गणेश गिरिकन्यका ।
चरण सरोज मिलिन्द, अट्टहास करि कहत भउ ॥५०॥

चौपाई

आवहु आवहु शिवगण जूहा चाहहु युद्ध होत अस ऊहा
तुम सब शिवगण अति रणधीरा हम गौरीसुत मृदुल शरीरा
देखै जग शिवगण प्रभुताई गिरिजानन्दन रण निपुणाई

आजु महा रणरंग मचैहौँ दिक्पालन कहँ नाच नचैहौँ
विधि हरि हर विस्मयवश करिहौँ नहि संग्राम विमुख पद धरिहौँ
आवहु वीर होय अब सज्जा पावि पराजय मोहि न लज्जा
हम बालक तुम प्रमथ प्रसिद्धा तुमहिँ जयाजय अयश सुसिद्धा
हम एकाकी तुम सब अगणित न्याय युद्ध यह को कह पण्डित
तथा शिवा शिव संगर माहीँ दुर्यश शिवहिँ शिवाकहँ नाहीँ
लड़हु प्रमथ तुम करि शिव दर्शन लड़उँ हमहुँ लखि माता चरनन
विजय पराजय ईश अधीना होहिँ न धीर वीर तहँ दीना
भयउ प्रमथगण लोहित नयना सुनि गणपति भाषित कटु बयना
धरि धरि आयुध शिवगण वीरा द्रुत गति धाये यथा समीरा
हू हू शब्द करन सब लागे तब गणपति आयउ बढ़ि आगे
करत दन्त घर्षण सब पहुँचे बाल युद्धमहँ तनिक न सकुचे
पादाकर्षण नन्दी कियऊ अपर पाद भृंगी गहि लियऊ
हने चपेटा गणपति अतिबल गिरे भूमिपर दोऊ मुँहबल
परिघ उठाय गणेश द्वार थित प्रमथ वृन्द कहँ कियउ विपोथित
कटि जंघोरु कटे काहूकर कटिगे मूलदेश बाहूकर
कटिगे काहूकर वक्षस्थल कटे काहुकर पृष्ठ पाद तल
मस्तक मुकुट गिरे कटि भूतल छिन्न भिन्न ह्वै गयउ प्रमथ दल
नन्दी आदि सभी भट भागे भयवश समर वासना त्यागे
करि गणपति अति अद्भुत विक्रम कीन्ह प्रमथदल विगत पराक्रम
गिरे कोउ गणपति चरणनपर गये कोउ जहँ रहे चन्द्रधर

रण सम्मुख ठहरे नहि कोऊ महा महा मुखिया भट जोऊ
जुटे गणाधिप शिवगण जहँमा सिंह शृगाल निदर्शन तहँमा
सिंहनिरखिजिमि भागतमृगगण गणपतिलखितिमिभागेशिवगण
गणहिँ भगाय द्वारपर ठहरे गणनायक शिवगण सब हहरे
महाकाल जिमि महा प्रलयकर भासित भयउ तहाँ तस गणवर
तब नारद प्रेरित ब्रह्मा विभु सकल देवयुत देवराज प्रभु
तथा चतुर्भुज प्रभु पीताम्बर पहुँचे तहँ जहँ रहे दिगम्बर
ऋषि वशिष्ठ आदिक सब आये महादेव पद शीश नवाये
छिन्न भिन्न लखि शिवगण तबही भाखन लगे शिवहिँ ये सबही
आज्ञा करिय करउँ का स्वामी हम सब राउर मत अनुगामी
समाचार सब शंकर भाखे गण दुर्दशा गोइ नहि राखे
पुनि ब्रह्मा प्रति कियउ निदेशा ज़ाइय गौरी द्वार प्रदेशा
शान्त करिय गणराज महाबल प्रलय न होय यथा त्रिभुवन थल
ऋषिवर वृन्द संग करि लीजिय शान्ति प्रबन्ध तहाँ पुनि कीजिय
सुनि प्रभु वचन चले तब धाता जग हित इच्छुक विश्व विधाता
ऋषि समेत आये चतुरानन अड़े खड़े जहँ रहे शुभानन
निरखि उनहिँ गणराज सतर्का करन लगे बहु भाँति वितर्का
आये ये सब शंभु सपक्षा मोर शत्रु बनि अम्ब विपक्षा
अस विचारि वरवीर महाबल किये गणाधिप परम कुतूहल
दाढ़ी-मूछ ऋषिन कर नोची चहुँदिस हलचल तेहि थल माची
ब्रह्मा मनमहँ कियउ विचारा यह बालक नहि माननहारा

अति दुर्धर्ष बालमति निर्हट समझावउँ या कहँ हम झटपट
किये देव तब तासु प्रबोधन विद्या वारिधि विश्व विबोधन
हे गणेश हम नहि रिपु तोरे मानहु मिथ्या वचन न मोरे
नाम मोर ब्रह्मा विख्याता सबही ते हमार है नाता
शंकर थिति-हति-उत्पति कारण उन ते उचित न युद्ध अकारण
यदि जननी जगदम्बा तोरी शंकर जनक बुद्धि अस मोरी
उनते समर तोहि नहि सोहै उनहिं जीति सक अस जग को है
सुनि हँसि बोले गिरिजानन्दन करौं कथनकर हम अभिनन्दन
किन्तु मातु आज्ञा परिपालन मोर सुदृढ़ व्रत तसु कस वारन
विनय करहिं उनते जगदीशा मातु अनुज्ञा धरिहहुँ शीशा
तब इन्द्रादिक बोले वचना तजत न यह बालक हठ अपना
शंभु अनुज्ञा शिर अपि हमरे सम स्वभाव बालक अरु बर्रे
यद्यपि समर अमंगल भासत मंगल तदपि शंभु रुचि राखत
सुनि सुरगण गहि आयुध धाये देवराज निज वज्र उठाये
अभय गणाधिप परिघ गहे तब युद्ध समुद्यत भिरत भये सब
परिघाहत सुरगण तब भागे इन्द्र वज्र तजि संगर त्यागे
भग्न अंग कत गिरे महीतल भय विह्वल ह्वै गयउ देवदल
भयवश मूर्छित भयउ देव कत भयउ देव कत शिव समीप गत
उनकर असि दुर्गति लखि शंकर विकट वदन भउ भूत भयंकर
प्रलयकाल जिनकर कोपानल करत भस्ममय त्रिभुवन मण्डल
तासु कोप लखि भउ सब व्याकुल काँपन लगे भयउ जिमि वातुल

प्रेतादिक कहँ दियउ निदेशा रण प्रस्थान हेतु भुवनेशा

छन्द

चले प्रेत पिशाच आदिक हस्त शस्त्रादिक लिये।
रणाडम्बर भयउ चहुँ दिशि सकल हू हू रव किये॥
मोरवाहन श्रीषड़ानन संग उनकर चल दिये।
करत जय जय त्रिपुरहर पद कंज रज सुमिरत हिये॥

दोहा

जिनकर जो आयुध रहे, हने सबहिं सो सर्व।
भइ अचला अति चञ्चला, भौतिक गर्व अखर्व ॥३८॥

सोरठा

हनी षड़ानन शक्ति, जाते तारक वध कियउ।
करि नहि सकी प्रशक्ति, सोउ गणेश समक्ष महँ ॥५१॥

चौपाई

शक्ति समेत शस्त्र सब तिनकर भयउ व्यर्थ गौरव बड़ जिनकर
अद्भुत चरित भयउ तहँ एका जो प्रेतादि पराक्रम छेका
शक्ति युगल जगदम्बा सिरजी प्रेतादिक भय जाते उपजी
प्रथम शक्ति अति चण्ड सरूपा कन्दरमुख नीलाचल रूपा
व्यात्त वदन कटि लम्बित केशा दीरघ दन्त भयंकर वेशा
अपर शक्ति विद्युद्द्युति देहा बाहु सहस्र रौद्र रस गेहा
आयुध तजे प्रेत आदिक जो दाँत दबाई उक्त शक्ति सो
रिपु दल महँ आयुध निक्षेपा कियउ बहुरि करि करि आक्षेपा

एकाकी गणपति वरवीरा धावहिँ परिघ हस्त रणधीरा
भूत प्रेत सुर सुरपति भागे प्रमथ वृन्द निज गौरव त्यागे
प्रमथित जिमि सागर भूधर ते तिमि प्रमथित सुर दल गणवर ते
तब धैरज धरि सकेउ न काहू भागे मृग जिमि कानन दाहू
शिवगण प्रेत-भूतगण सुरगण सबहिँ पराजित कियउ उमागण
हाहाकार भयउ सब ठामा तब बोले षण्मुख बलधामा
धैरज धरि सब करहु लड़ाई विजय पराजय ईश रजाई
काल-कर्म-गति टरै न टारे देखहु दशा सभी हम हारे
दैववाद पुरुषारथ वादा उभय प्रबल को करै विवादा
समता मति पुरुषारथ करहू हर्ष विषाद हृदय नहि धरहू
यदि पुरुषारथ सफल न होई निरुद्यमी कहि हँसै न कोई
गुह उपदेश सुना नहि कोई भागि गये सब आरत होई
युगल शक्ति ते लड़ेउ षड़ानन शक्ति हस्त अतिबल शिखिवाहन
जो जो आयुध तजे षड़ानन सो सो धरी शक्ति निज आनन
सो सो पुनि षण्मुख प्रति फेकी षण्मुख शक्ति फेकि सो छेकी
विजय पराजय लहेउ न कोई षण्मुख रुके विफलश्रम होई
गुह आदिक शंकर ढिग आयउ समाचार सब प्रभुहिँ सुनायउ
कोपाकुलित देव त्रिपुरारी चले संग करि सेना सारी
भयउ चतुर्भुज शंकर साथी चलेउ पुरन्दर चढ़ि निज हाथी
ब्रह्मा चलेउ हंस असवारा चली वाहिनी सिन्धु अपारा
पञ्चवदन गणपति ढिग आयउ शोभा निरखि परम सुख पायउ

नहि संभ्रम लवलेश प्रवेशा प्रहासित मुख नहि लवलेशा
शान्तस्वरूप अभय गंभीरा सौभगआलय मृदुल शरीरा
परिघ उठाय द्वारपर ठाढ़े विजय मनोरथ मन महँ बाढ़े
बालक निरखि पञ्चमुख बोले गिरा वेग अहि कुण्डल डोले
हम भुवनेश उमा भुवनेशी को तुम उभय बीच परदेशी
पति पत्नी बिच कलह करावहु काल भुजंगम वृथा जगावहु
तजहु द्वार निज बाट सिधारहु अथवा वार हमार निवारहु
तब हँसि बोले अम्बा गणपति नहि अपराध मोर कछु पशुपति
उमा पुत्र हम तासु नियोजन हम पर वृथा दोष आरोपन
मातु अनुज्ञा शिरपर मोरे अनुमति तासु प्रवेशक तोरे
सुमिरि मातु महिमा मन माहीँ डरउँ काल-कालहुते नाहीँ
सुनि अस शंकर भयउ प्रकोपित कियउ सुरादिक रणमहँ योजित
तावत् पहुँचि गयेउ तहँ नारद चतुर शिरोमणि कलह विशारद
बोलेउ प्रभुहि सयुक्तिक वचना प्रभुइच्छा कृत त्रिभुवन रचना
यदि न लहिहि यह बालक मरना संभावित जग भीषण घटना
प्रलय करिहि यह त्रिभुवन नाथा जगत संकटापन्न अनाथा
यथा तथा याकहँ प्रभु हनिये मोहि न मिथ्याभाषी गनिये
नारद अन्तर्हित ह्वै गयऊ स्वयमपि शिव युद्धोद्यत भयऊ
विस्मित भयउ निरखि बालकबल निश्चित कियउ हनन तसु करिछल
स्वयं चतुर्भुज आयउ तहँमा रहेउ परिघधर गणपति जहँमा
सुरगण शिवगण भूत-प्रेतगण पहुँचे सब जहँ रहे उमागण

भयेउ घोर संग्राम प्रवृत्ती नहि भट कोउ पराङ्मुख वृत्ती
लखि हरि हर सो शक्ति विलीना अरुणोदय जिमि क्षणदा लीना
भयउ घोर संगर घमसाना भयउ सुरादिक आहत नाना
गहि कर गणपति परिघ कराला दीखहिँ जिमि जगदन्तक काला
भई हताशा शंभुचमू जब मुररिपु बोलेउ पुरमथनहिँ तब
संगर करिय आपु प्रभु तबलौँ करउँ विमोहित बालक जबलौँ
विष्णु समीप गयउ गणनायक परिघ चलाये अति भयदायक
तावत् शंकर आयउ तहँमा महा त्रिशूल हनेउ तेहि लहँमा
गणप परिघ हनि शूल गिराये शंकर कोपि पिनाक उठाये
चाप गिरायउ परिघ प्रहारा कर पञ्चक आहत करि डारा
पञ्च अनाहत कर त्रिपुरारी हनेउ त्रिशूल विनोद विहारी
गणप परिघ हनि शूल निवारा भउ त्रिभुवन महँ हाहाकारा
शूल प्रलय कारक विख्याता कियउ विफल सो परिघाघाता
नहि अचरज मानै यह कोई सब कारज प्रभु रुचिकृत होई
गौरी शंकर कृत यह क्रीड़ा विवरण करत लहै को व्रीड़ा
ईश्वरकी गति ईश्वर जानहिँ ज्ञानीजन अगम्य अति मानहिँ
परिघ प्रपीड़ित भउ सब देवा प्रमथ प्रेत भूतादिक जे वा
धन्य धन्य यह गणपति वीरा महाकाल उपमित रणधीरा
अस हरि परसंसा बहु कियऊ चक्र सुदर्शन करमहँ लियऊ
चक्राघात परिघ भउ चूर्णित भउ गणपति अलात इव घूर्णित
परिघ खण्ड गणनायक फेके चक्र चलाइ विष्णु सो छेके

विष्णु गणेश परस्पर जूझे धरा व्योम दिशि विदिशि न सूझे
खगनायक करि पक्षाघाता दियउ विफलकरि परिघहिं ताता
बहुरि गणेश परिघ कर लियऊ शम्भुचमू अर्दित करि दियऊ
तव मुररिपु गणपति प्रति धायउ गणनायक निज परिघ उठायउ
जूझन लगे परस्पर दोऊ भउ दर्शक ब्रह्मादिक जोऊ
केवल दोउ दोउकहँ देखहिं तदितर वस्तु कछुक नहि पेखहिं
तावत् पहुँचि वाम दिशि शंकर द्रुततर गति हनि शूल भयंकर
गणपति मस्तक काटि गिरायउ दर्शकगण चहुँ दिशिते धायउ
भउ निश्चिन्त शंभु दल सबही गउ गिरिजा ढिग नारद तबही

दोहा

छल बल करि शंकर कियउ, निहत गणाधिप देव ।
पुत्र छिन्न मस्तक पतित, करु कर्तव्य यदेव ॥३९॥

सोरठा

सुनि गिरिजा अकुलाय, गिरी भूमितल अति विकल ।
हाहाकार मचाय, सखी सभी रोवन लगी ॥५२॥

चौपाई

भउ विमना शंकर सुखदाई निरखि उमा विषाद अधिकाई
तब गिरिजा कोपानल ज्वाला प्रलयकाल सम बढ़ी कराला
भयउ तापसंतप्त शंभुगण सुरगण भूत प्रेत आदिक गण
यक्ष रक्ष किन्नर गन्धर्वा भय व्याकुल उरगादिक सर्वा
अम्बा शक्ति सहस निर्माई भीषणता जसु वरणि न जाई

विद्युल्लता सरिस तनुकाँती विकट रूप आयुध बहु भाँती
दीर्घदन्त गजदन्त समाना व्यात्त वदन कन्दर परिमाना
तरु कोटर नासा अनुमानिय बाहु तासु सुण्डाकृति जानिय
विकटावयव भयंकर वेशा व्याप्त कियउ कैलास प्रदेशा
बोली शक्ति जोरि युग पानी प्रणमि विनय रस बोरी बानी
आयसु जननि हमहिँ जसु होई करौँ तासु पालन सब कोई
किसु रजताचल धूल मिलावौँ प्रमथवृन्दकर दन्त हिलावौँ
भुवन चतुर्दश प्रलय मचावौँ विधि हरि हर अपि नाच नचावौँ
यक्ष रक्ष किन्नर गन्धर्वा भूत प्रेत-गुह्यक गण सर्वा
मर्दित करि करि गर्द मिलावौँ पाइ अनुज्ञा सबहिँ जिलावौँ
प्रलय उदय तव रुचि अनुसारा भुवनेश्वरि कर्तव्य हमारा
तब जगदम्बा बोली बयना कोपाकुलित विलोहित नयना
करहु प्रलय शंकर दल माहीँ मोर सपक्ष कोउ अब नाहीँ
शम्भु सपक्ष विपक्ष हमारा करहु शत्रुसम तहँ व्यवहारा
आयसु पाइ शक्ति सब धाईँ शिव सपक्ष महँ प्रलय मचाईँ
हाहाकार भयउ तिहुँ लोका विधि हरि हर अपि भयउ सशोका
शक्ति शरीरज ज्वालामाला भई बहिर्गत अति विकराला
ज्वालावली कलित कत भयऊ दग्ध शरीर क्षार होइ गयऊ
व्यात्त वदन कवलित भउ केते पड़ि गउ शक्ति सामने जेते
लम्बशीर्ष कुब्जक अरु खञ्जक अति विकराल सुरासुर भञ्जक
जहँ तहँ शक्तिपंक्ति दरसाई भूतल गिरेउ सबहि भय खाई

त्राहि त्राहि भाषे सब कोई प्रभु शरणागत आरत होई
विधि हरि हर चिन्तावश भयऊ किंकर्तव्यमूढ़ होइ गयऊ
तब बोलेउ शंकर त्रिपुरारी सम्बोधित करि देव मुरारी
शक्ति शस्त्रकृत मम कटिभंगा जाइ वहाँ कस सहिहउँ व्यंगा
गमन पराक्रम मोहि न भाई करहु मित्र तुम कोउ उपाई
हमहूँ भयवश सकहिँ न जाई मुरमर्दन अस वचन सुनाई
तब शंकर श्रुतिमुख मुख हेरेउ हमहुँ त्रासवश कहि सो टेरेउ
दिक्पालादिक व्याकुल सबही उमड़न चह प्रलयोदधि अबहीं
तावत् नारद मुनि तहँ आयउ विधि हरि हर पद शीश नवायउ
कियउ सकल मिलि तहाँ विचारा सूझि परै नहि कोउ प्रकारा
यदि जगदम्बा होहिँ प्रसन्ना बाँचै शिव सपक्ष अवसन्ना
तब नारद गिरिजा ढिग गयऊ पद सरोज तसु प्रणमत भयऊ
विप्रवृन्द आयेउ तहँ शत शत भउ सबही अम्बा पद प्रणमत
कियउ सकल निजमति अनुसारा जगदम्बा नुति वारंवारा

छन्द

जय जय जगदम्बे जगदवलम्बे लम्बोदरजननी दुर्गे
हृतजनआतंके धृतताटंके मृगमदतिलके मणिपुरगे
विधिहरिहर व्याकुल दलबलआकुल प्रलयपयोदधि मग्न भये
करुणावरुणालय देविदयामयि दीनदया किमु बिसरि गये

× × × × ×

जनन्यपर्णे धृतपुष्पकर्णे
सुवर्णवर्णे भवतीं नमामः।
दीनानिमान्पाहिजनाननाथान्
मातस्सनाथीकुरुनाथमानान् ॥

दोहा

नारदादि मुनिगण निरखि, गही अम्बिका मौन।
चिन्ता व्याकुल भयउ सब, प्रतीकार अब कौन ॥४०॥

सोरठा

लै लै निज निज नाम, आठो अंग लगाइ सब।
पुनि पुनि करत प्रणाम, त्राहि त्राहि भाखत भयउ ॥८३॥

चौपाई

जोरि युगल कर बोलन लागे नारद आदि विनय रस पागे
शरणागत आरत अति जानी दया करिय अब देवि भवानी
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा लोकपाल इन्द्रादिक जे वा
किन्नर गुह्यक अरु गन्धर्वा यक्ष रक्ष उरगादिक सर्वा
भूत प्रेतगण प्रमथ समेता महा महा ऋषि इन्द्रियजेता
प्रलय पयोनिधि बूड़न चाहहिँ को सक पावि पयोनिधि थाहहिँ
तुअ कोपानल दग्ध शरीरा चाहत निकसन प्राण समीरा
जाचहिँ क्षमा सबहि कर जोरे हेरहु सदय विलोचन कोरे
अम्ब अम्ब त्यागहु निज क्रोधा करहु अनवसर प्रलय निरोधा
क्षमहु क्षमहु करुणामयि भगवति शरणागत-रक्षण-व्रत-कृतवति

उमा सुनुति सुनि मुनिगण केरी   होइ प्रसन्न करुणादृग हेरी
भाखत भई नयन भरि नीरा   पुत्रशोक आपन्न अधीरा
जीवित होइ मोर यदि बालक   करउँ अनुज्ञा प्रलय निवारक
पुत्रजन्म सुखसीमा जानहु   मरण तासु दुखसीमा मानहु
पुत्रशोक आतुर हिय मोरा   कीदृश प्रभु हिय कहहु कठोरा
नहि नाता काहू कर साथा   भउ पराय जब जीवननाथा
शूल प्रहार पुत्र गल छेदन   करि किमु कियउ न मम हियभेदन
जीवित होइ न यदि सुत मोरा   त्रिभुवन ऊपर संकट घोरा
गणाध्यक्ष यह होइ न दूजा   पावै यही प्राथमिक पूजा
त्रास विवश मुनि सुनि असवाणी   आयउ जहाँ रहे मृगपाणी
सामाचार सब उनहिं सुनाये   सुनि शंकर आदिक सकुचाये
मिलिविधि हरिहर कियउ मन्त्रणा   कवनिहुँ विधि यह मिटइ यन्त्रणा
तव प्रभु निज प्रमथनसन बोले   शक्ति सहसबल भूतल डोले
शिर लै गई अप्सरा वाकर   बचेउ कलेवर रक्षा पाकर
जाहु प्रमथगण उत्तर ओरा   बान्हहु ग्रंथि वचन यह मोरा
दृक्पथ होइ प्रथम जोइ जन्तू   तसु शिर काटि लाबि गल तन्तू
गणप कलेवर योजित करहू   नहि संशय कछु मन महँ धरहू
प्रथम करहु प्रक्षालित वीरा.   विधिवत् पूजित तासु शरीरा
प्रथम कृत्य करि प्रमथ पधारे   त्रास हताश सबहि मनमारे
प्रथम मिला हस्ती इकदन्ता   शिर छेदन तसु कियउ तुरन्ता
सो शिर तसु तनु योजित कियऊ   प्रभु पद प्रणमि खबर दै दियऊ

विधि हरि हर तब बोले वचना उत्पति थिति हति जाकर रचना
आदि शक्ति तेजोमयि एका जाते उपजत जगत अनेका
हम सब एक एक गुणधारी शक्ति त्रिगुणमयि भन श्रुतिसारी
तेजोमयि यह शक्ति अरूपा एतत्कृत प्रपञ्च बहु रूपा
तेजोमय हम सब सुर सिद्धा तेजोमय ब्रह्माण्ड प्रसिद्धा
होय अवाहन पढ़ि पढ़ि श्रुतिमनु प्रविशै सोइ तेज गणपति तनु
अभिमन्त्रण पूर्वोक्त प्रकारा भये भयउ तनु गति सञ्चारा
तुरत चेतनापन्न गजानन भउ समर्थ विचरण गिरि कानन
जीवित भउ गिरिसुता कुमारा प्रणमे मातु चरण बहु वारा
ह्वै प्रसन्न सुमुखी गिरिबाला कियउ शक्ति वारण तेहि काला
भयउ परम आनन्द प्रवाहा कियउ उमा चुम्बित गणनाहा
गौरी शंकर मिलेउ परस्पर भयउ सकल तहँ उत्सव तत्पर
डिमडिमडिमडिमडमरूधुनिसुनि भउ प्रसन्न प्रभु सुनि मृदंग धुनि
वीणा वेणु मधुर सुर बाजै सुनि पञ्चम सुर कोकिल लाजै
गीत नृत्य तहँ भउ बहु भाँती भउ उत्सवमय दिन अरु राती
कियउ सकल मिलि तसु अभिषेका गाणपत्य पद सहित विवेका
आशीर्वाद दीन्ह पुनि नाना होहु पुत्र तुम अति बलवाना
सकल गुणाकर सकल विघ्नहर सकल वेदधर सकल सिद्धिकर

दोहा

पूजन सबते प्रथम तुअ, करिहि सकल संसार ।
तुअ कीर्तन सुमिरन भजन, तदनु जगत व्यवहार ॥४१॥

सोरठा

सिद्ध होय सब काज, तव सुमिरन करि गजवदन ।
सकल प्रमथ सिरताज, विघ्नविदारण भजन तव ॥५४॥

चौपाई

भूषण वसन विविध पहिराये प्रभु पुनि पुनि तेहि कण्ठ लगाये
प्रिया समक्ष ताहि प्रभु लाये देइ अंकमहँ तसु मुसकाये
सुत मुख चुम्बन गिरिजा कियऊ प्रमुदित हृदय लगावत भयऊ
छन चुम्बैं छन हृदय लगावैं पुनि पुनि निरखि सुअन सुखपावैं
कहन लगे तव गिरिजानाथा सुमिरि द्वितीय कल्पकर गाथा
गिरितनये यह तनय तुम्हारा अति बल महाविष्णु अवतारा
सो सब चरित कहहिँ हम गाई प्राणप्रिये सुनु मन मति लाई
पुत्र हेतु तुम लहे विषादा दरसाई लौकिक मर्यादा
नहि अपुत्र कर गति कहुँ होई स्वर्गलोक पावत नहि सोई
देव पितर द्विज तृप्ति सुसाधन जाइय सुत इत उत सुखकारन
एक दिवस नारद मुनिराया आवि सुपुण्यक व्रत गुण गाया
जो यह शुभदायक व्रत करई अभिमत सकल पदारथ लहई
करइ सुपुण्यक व्रत जो कोई पावि सुपुत्र कृतारथ होई
करन लगी तव तुम व्रतचर्या विधि बोधित श्रीविष्णु सपर्या
पौरोहित्य कियउ मुनि नारद कर्मोपासन ज्ञान विशारद
व्रत उद्यापन दिन जब आयउ व्रत दक्षिणा विधान सुनायउ
अत्र दक्षिणा दान विलक्षण मन व्रतिनी पतिरूप विचक्षण

त्रिभुवननाथ दक्षिणा इहँमा लहि स्वाच्छन्द्य कहउँ एहि लहमा
अपर दक्षिणा लैहौं नाहीं खैहौं भीख माँगि जगमाहीं
ब्राह्मण ब्राह्मणता जब कियऊ श्रोता सकल मौन ह्वै गयऊ
चले हमार हस्त गहि मुनि जब भउ नतमुख षण्मुख तुमहूँ तब
ब्रह्मा विष्णु आदि तब आये देव ऋषिहिं बहुविध समुझाये
तात भयउ अब बहु परिहासा अब समुचित नहि अधिक तमासा
करु अनुकल्प दक्षिणा माहीं सो तुअ करगत संशय नाहीं
भाषन लगे मुदित मुनिराई भक्त शिरोमणि गाल बजाई
साम्ब शंभु पद पद्म परागा मानस भ्रमर करै अनुरागा
भक्ति साम्ब शंकर कर जाकहँ युगल रूप उर अन्तर ताकहँ
दरस हेतु लीला यह मेरी करिय अनुग्रह महँ नहि देरी
सुनि मुसुकाइ कहे मुरमर्दन तजहु तात तावत् पुरअर्दन
साम्ब सदाशिव विनवउँ सबही इच्छापूर्ति करउँ तुअ अबही
अस कहि हरि तुम्हार ढिग गयऊ मुनि लालसा सुनावत भयऊ
सुनि गिरिजे तुम अति हरषाई नारद मुनि कहँ तुरत बुलाई
नारद आवि चरण तुअ परसे तुम मस्तक परसे तसु करसे
प्रभु समेत मम भक्ति अलभ्या तोहि देवऋषि सदा सुलभ्या
अनपायिनी भक्ति लहि मोरी सिद्धि सकल करतल गत तोरी
कहि आसीस दियउ तुम नाना हरषि देवऋषि गायउ गाना
करि प्रणाम नारद मुनि गमने गयउ देवगण आलय अपने
क्रीड़ारत हम-तुम ह्वै गयऊ समय चिरन्तन बीतत भयऊ

नहि सन्धान हमहिँ समयादिक भयउ विकल तब द्विज देवादिक
बिनु जगदीश जगत परिपालन करत कवन सुर रिपु भय वारन
गौरी हर भव बालक एहू भावी अतिबल नहि सन्देहू
की त्रश प्रकृति लहै यह बालक सुरमुनि पालक किमु तसु घालक
लखि असमञ्जस खगपति वाहन आये बनि तहँ विप्र पुरातन
क्षुधा-पिपासा-व्याकुल ताता थर थर काँपत जरजर गाता
गृहपति गृहपति कहत पुकारे भिक्षा भिक्षा वचन उचारे
अन्न बिना निकसन चह प्राना देहु जानि द्विज भोजन दाना
अन्नदान सम नहि कछु दाना शास्त्र प्रसिद्ध अन्नमय प्राना
बहुत विलम्ब द्वार पर भयऊ वासरमणि दिशि पश्चिम गयऊ
सुनि अस उमे सुरत रस मग्ना समुद्विग्न मन भइउ अलग्ना
जानि क्षुधातुर व्याकुल विप्रा व्यञ्जन सहित अन्न लै क्षिप्रा
करुणाजल परिपूरित नयना पूछि हमहिँ कहि कोमल बयना
द्वारदेश संभ्रम युत धाई हे द्विज हे द्विज भाखत आई
तावत् द्विज अन्तर्हित भयऊ वचन सुधासम भाखत गयऊ
हर बीरज जन्मा हम बालक शय्योपरि खेलउँ सुरपालक
हम हरि विप्र रूप धरि आयउँ स्वयंवीर्य भव सुत तुअ जायउँ
आवि द्वार लहि विप्र अदर्शन शैलसुते तुम भइ चिन्तित मन
भइ पूर्वोक्त बहुरि नभ वानी तब गिरिजे तुम तजी गलानी
आवि निरखि सुत क्रीड़ा तत्पर सजल नयन भउ देह पुलकभर
सुत मुख चुम्बन आलिंगन करि भई मुदित तुम ताहि अंक भरि

भूषण वसन दियउ तुम नाना किियउ प्रमथगण अति संमाना
गाणपत्य पद हम पुनि दीन्हा अभिषेकादिक विधि सब कीन्हा
पूर्वकल्पकर कथा बखानी सोइ पुत्र यह तुअ गुणखानी
यह चरित्र जो सुनै सुनावै स्वयमपि पढ़ि अभिमत फल पावै
कारज सिद्ध सकल तसु होई विघ्न तासु ढिग जाइ न कोई
कथा विलक्षण तुमहिँ बखानी सुनहु पुरञ्जन प्रकृत कहानी

दोहा

सिन्दूरांकित भाल सुत, लखि गिरिजा हरषाय ।
कहेउ पूजिहौं तोहिं सुत, सब सिन्दूर लगाय ॥४२॥

सोरठा

पुष्पादिक उपचार, जो अर्पण करि पूजिहहिँ ।
तोहि अनेक प्रकार, ऋद्धि सिद्धि सो पाइहहिँ ॥५५॥

चौपाई

भई विलीन शक्ति सो सबही करि प्रवेश गिरिजा तनु तबही
भयउ स्वस्थ इन्द्रादिक जे वा ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा
हृष्ट पुष्ट प्रमथादिक भयऊ मोद प्रमोद नदी बहि गयऊ
प्रणमि उमा पद पंकज सुरमुनि शिवढिगगयउ करतजयजयधुनि
गणपति अर्पे शंकर अंकम भयउ मुदित हर लहि सुत संगम
तब शंकर गणपति मस्तकपर राखि मुदितमन निज पंकजकर
कहे सबहिँ शंकर सुखदाता पुत्र मोर यह सिद्धि विधाता
गणपति उठि पितुपद शिरनाये मातु चरण रज शीश लगाये

सुरमर्दन-श्रुतिसुख-पद वन्दे प्रणमे मुनिगणपद सुखकन्दे
होइ मुदित सुत शिर कर राखे वचन मनोहर पुनि प्रभु भाखे
यथा पूज्य हम हरि चतुरानन पूज्य तथा तुम होहु गजानन
यथा पूज्य सुर सहित सुरेशा पूज्य तथा तुम होहु गणेशा
सबते प्रथम पुत्र तुअ पूजा पूज्य तदुत्तर पुनि सुर दूजा
पूजे प्रथम ताहि त्रिपुरारी पुनि पूजे मधुमथन मुरारी
पूजे पुनि ताकहँ चतुरानन पुनि पूजी गिरिसुता गजानन
पूजे पुनि इन्द्रादिक सुरगन नारदादि पुनि पूजे मुनिजन
सर्वाध्यक्ष कियउ विनियोजित सब गणकर पति शंभु प्रयोजित
प्रभु गणपति कहँ दिये असीसा सुरगण नारद आदि मुनीशा
पुत्र मोर तुम सकल गणेशा गजमुख कहँ पुनि कहे महेशा
ऊर्ज मास तिथि चौथ शुक्ल दल चन्द्रोदय तुम जायउ अतिबल
पावन दिन महँ यह शुभदायक तुअ पूजन प्रशस्त गणनायक
जे जे गाणपत्य व्रत धारी तुअ पूजन करिहैं व्रतचारी
लहिहैं सकल मनोरथ सिद्धी ऐहिक आमुष्मिक सुख वृद्धी
व्रत यह वर्षावधिक निरन्तर अभिमतप्रद समाप्ति समनन्तर
प्रथम चतुर्थी व्रत आरम्भन चरम चतुर्थी तासु समापन
सकल मनोरथप्रद व्रत एहू अधिकारी कृत नहि सन्देहू
श्रद्धधान सुस्थिर चित जाको व्रतअधिकारी जानिय ताको
दंभरहित संयत शुचि जोई व्रतअधिकारी जानिय सोई
मन वच वपु गुरुसेवक जोई व्रतअधिकारी जानिय सोई

सदाचार सात्त्विक आहारा सदा अहिंसा पर उपकारा
कांस्य पात्र भोजन परिवर्जन भूमि शयन सन्ध्यात्रय मज्जन
ब्रह्मचर्य आदिक विधि नाना व्रत फलप्रद कह शास्त्र पुराना
लवणाशन व्रत महँ नहि शस्ता हविष निरामिष क्रमिक प्रशस्ता
यद्यपि अग्री अधम जन जोऊ कथमपि व्रती कृतारथ सोऊ
सो व्रतगत महिमा अधिकाई वस्तु शक्ति जानहु गणराई
व्रत तथापि विधि विरहित जोई नहि समस्त फलदायक सोई
तोहि गणेश चतुर्थी माहीँ पूजि सुखी इह संशय नाहीँ
वर्षावधि व्रत माहँ अशक्ता केवल ऊर्ज चतुर्थी भक्ता
ऐकाहिक हू व्रत जो करिहैँ सम्पति सन्तति लहि घर भरिहैँ
एकाधिक शत दूर्वादलकर अथवा एकविंश दल गणवर
तोहि समर्पित करिहैँ जोई लहिहैँ अन्तराय नहि सोई
प्रतिमा धातुमयी तुअ शस्ता अरु प्रवालमय परम प्रशस्ता
श्वेत अर्कमय प्रतिमा तोरी सिद्धिकरी यह आज्ञा मोरी
अथवा मृण्मय विग्रह ताता सम्मुदित सकल मनोरथ दाता
जो मधुरान्न करैहैँ भोजन द्विजहिँ मनोरथ भाजन सो जन
देव पितर कारज महँ समुचित द्विजद्वय द्विजत्रय भोजनक्रमकृत
व्रत अन्तिम दिन व्रत उद्यापन भोजनीय तव द्वादश ब्राह्मण
अविहित द्विज भोजन विस्तारा जहाँ दम्भ आदिक व्यवहारा
निज उपकार लक्ष्य करि जोई द्विज भोजन सो अविहित होई
अधिक अधिक फलदायक होई जहाँ रजस्तम भाव न कोई

सन्ध्या रहित विप्र जो कोई विषविहीन विषधर सम सोई
गायत्री विरहित द्विज जोई पंक्ति अपावन जानिय सोई
गायत्री कण्ठस्थ न जासू मौञ्जीव्रत पुनि समुचित तासू
तदपि रहस्य कहहिँ हम एका जो अगम्य विनु शास्त्र विवेका
उत्तम वापि अधम द्विज जाती पूजनीय कह जलधरकाँती
पण्डित वा मूरुख द्विज जोऊ कह हरि मामकीय तनु सोऊ
वीर्यज कर्मज दुइ विध ब्राह्मन भाखत मुनिजन वेद पुराणन
वीर्यज ब्राह्मण ब्राह्मण कुलभव कर्माभाव शक्ति सौरभ लव
कर्मज ब्राह्मण गाधेयादिक लहहिँ तपोबल जो सिद्ध्यादिक
कर्मठ वीर्यज ब्राह्मण जहँमा स्वर्णमध्यगत सौरभ तहँमा
सर्वशक्तिमत्ता समुपस्थित तहाँ अयोग्य भाव अनुपस्थित
सकल वर्ण गुरु भूसुर देवा कर्मठ वापि अकर्मठ जेवा
घूमहिँ लख चौरासी योनी तब मनुष्य बनि आवहिँ क्षोनी
तहाँ विप्रकुल जन्म सुदुर्लभ तहँ साक्षरता दुर्लभ दुर्लभ
तदपि न यदि भव बन्धन छूटै रिपु कामादि पुण्य धन लूटै
या ते अधिक हानि का भाई चढ़ि पर्वत भूतल गिरि जाई
पावि महानिधि पावत नाहीँ भ्रमत घटी सुचि इव जगमाहीँ
सुनि अस सकल प्रमथ प्रभुवन्दन कीन्हे पुनि पुनि अरु अभिनन्दन
जयगणेश जयगणपति कहि कहि कलकलकिये सकलसुखलहिलहि
गाणपत्य पद लहेउ गणेशा गाणपत्य जन भउ अकलेशा
मातु पिता सेवन अनुरागी भउ प्रमुदित गणपति बड़भागी

प्रमथ वृन्द गणपति कहँ वन्दे परसे पद सरोज मकरन्दे
निज अध्यक्ष कियउ अंगीकृत गाणपत्य पदवी समलंकृत
भयउ शान्तिपूरित तिहुलोका सुर नर मुनि सब भयउ विशोका
सहसवदन कहि सकहिँ न सोऊ भउ प्रमोद रजताचल जोऊ
एक वदन कस करउँ बखाना कियउँ यथामति कछु गुणगाना

दोहा

मंगलमय यह चरित शुभ, पढ़हिँ सुनहिँ चितलाय ।
इत उत सुख पावहिँ सदा, सकल विघ्न विनसाय ॥४३॥

सोरठा

सुनहु समाहित बुद्धि, तात रुचिर गणपति चरित ।
अन्तःकरण विशुद्धि, जासु श्रवण कीर्तन करत ॥५६॥

चौपाई

इन्द्रादिक गउ निज निज धामा वरणत गणपति चरित ललामा
शिवहिँ पूछि लक्ष्मीपति गमने अरु गमने श्रुतिमुख गृह अपने
साध्य सिद्ध गन्धर्व ऋषीश्वर चले प्रशंसत श्रीगौरी हर
युद्ध प्रशंसा सब मिलि कियऊ धन्यवाद गणपति कहँ दियऊ
कीदृश युद्ध कियउ गणनायक महा महा योद्धा भयदायक
नन्दी वीरभद्र बलधामा परसंसे गणपति गुणग्रामा
गौरी हर पायउ अति मोदा लै गजमुख षण्मुख निज गोदा
क्रीड़ा कौतुक नाना भाँती भयउ रजत गिरिपर दिन राती
खेलहिँ हिलिमिलि युगल किशोरा श्रीगौरी शंकर मन चोरा

उमा महेश प्रीति रस मग्ना भउ सुत पालन लालन लग्ना
मातु-पिता-सेवन-व्रत-शीला भउ षण्मुख गजमुख कृतलीला
इक दिन उमा उमेश परस्पर पुत्र विवाह भावना तत्पर
कही उमा समयोचित बानी प्रभु पद पद्म परसि निज पानी
भयउ विवाह योग्य अब दोऊ नहि विलम्बकर कारण कोऊ
होय गृहीत समय शुभ नाथा राउर अरु कन्याप्रद हाथा
करु सिद्धान्त देखि कुल शीला तावत् भयउ प्राप्त इक लीला
करन लगे तब दोनो भाई वाद विवाद मातु ढिग जाई
प्रथम मातु करु मोर विवाहा मातु मोर करु प्रथम विवाहा
सुनि विवाद शंकर मुसकाये कहि बहु भाँति उनहिँ समुझाये
समुचित गुहकर प्रथम विवाहू तदनन्तर तुम्हार गणनाहू
सोदर महँ वैवाहिक निर्णय गुरु लघु पूर्वापर क्रम परिणय
तजे न हठ अति हठी गणेशा मनमहँ कियउ विचार महेशा
गुह वाहन मयूर द्रुत चारी गणपतिकर मूषक असवारी
प्रथम भूमि परदच्छिनकारी होइ प्रथम परिणय अधिकारी
द्रुतगति वाहन जेठ कुमारा अस लहि सक परिणय अधिकारा
पुत्र युगल कहँ त्रिभुवनराई भूमि प्रदक्षिण गिरा सुनाई
चढ़ि मयूर द्रुतगति शरजन्मा चले यथा अम्बर अनुजन्मा
पृथिवी परिक्रमणकर हेतू प्रणमि अम्बिका अरु वृषकेतू
भउ गणनायक अतिशय चिन्तित भयउ उपाय दृष्ट नहि किञ्चित
बुद्धिमान विद्वान गणेशू प्रतीकार सोचे अकलेशू

मातु पिता ढिग गयउ तुरन्ता बोले गणपति अति मतिमन्ता
जननी जनक पूजिहउँ तोही बड़ी लालसा मनमहँ मोही
आसन ग्रहण करहु तुम दोऊ पुत्र वचन टारत नहि कोऊ
गौरी हर आसन आसीना भयउ गणाधिप प्रेम अधीना
पूजन यथा शास्त्र सो कीन्हा चन्दन सुमन विल्वदल दीन्हा
नाना विध नैवेद्य चढ़ाये करि नीराजन अति हरषाये
करि अस्तुति पुनि कियउ दण्डवत् सप्तवार परिकरमा विधिवत्
कहन लगे शिवकहँ तव गणपति पिता विवाह करावहु द्रुत अति
तव शंकर हँसि ताकहँ बोले नहि नहि सूचक मस्तक डोले
कियउ न भूमि प्रदक्षिण ताता तव कस यह विवाहकर बाता
तव बोले गणपति करि क्रोधा करहु पिता तुम शास्त्र विरोधा
जननी जनक प्रदक्षिण करई भूमि प्रदक्षिण सम फल लहई
वेद विहित मत नहि सन्देहू किम्नु मिथ्या श्रुति सम्मति एहू
वेद वचन मिथ्या जो कहई सो नास्तिक महँ गणना लहई
विदित वेद राउर निःश्वासा मुनि मन्वादि करहिँ विश्वासा
जननी जनक प्रदक्षिणकारी भूमि प्रदक्षिण फल अधिकारी
तात विवाह मोर अब समुचित जानि व्यवस्था लंघन अनुचित
सुनि गौरी शंकर मुसुकाये साधु साधु कहि कण्ठ लगाये
कहे चतुर तुम मूषकवाहन भउ परास्त द्रुतगमन षड़ानन
भउ प्राथमिक तोर अधिकारा करहु विवाह वेद अनुसारा
विश्वरूप तनंया अभिरामा सौभगनिलय सकल गुणधामा

ता सँग प्रभु विवाह करवायउ श्रीगणेशकर सुर मुनि आयउ
विधि बोधित सब भउ व्यवहारा उत्सव भयउ अनेक प्रकारा
आगत सबही आदर पाये मान दान लहि अति हरषाये
साम्ब शंभु लखि पुत्र वधू मुख दै मणिमाला पायउ अति सुख
आगत निज निज आलय गमने पायउ गणपति अभिमत अपने
जायउ लक्ष लाभ दुइ भाई सिद्धि बुद्धि सुत जग सुखदाई
करि परिकरमा षण्मुख आयउ नारद मुनि सब कथा सुनायउ
लागे कहन गुहहिँ तब नारद कौतुक प्रेमी कलह विशारद
तोहि पिता अति दूर पठायउ पृथिवी परिकरमा करवायउ
व्याज मात्र यह कियउ महेशू तोहि भ्रमाये देश विदेशू
सिद्धि बुद्धि पत्नी लहि गणपति लब्ध मनोरथ भयउ सुखी अति
दुइ सुत तासु भयउ अभिरामा षण्मुख लक्ष लाभ इति नामा
भोग विलास मगन दिन राती सुखभागी गणपति सब भाँती
लहे भ्रमणकृत तुम दुख नाना पायउ तात परम अपमाना

दोहा

सुनि कुमार मुनि वचन अस, होइ गउ लोहित नैन ।
बिम्बाधर फरकन लगे, कहे क्रोधमय बैन ॥४४॥

सोरठा

मातु पिता अन्याय, कियउ मोर अति वञ्चना ।
एहि महँ कछु न बसाय, किंकर्तव्यविमूढ़ हम ॥८७॥

यदि माता विष देइ, निठुर पिता विक्रय करै।
सर्बस नृप हरि लेइ, कहु कहँ ताकर शरण थल ॥५८॥
करिहउँ नहि मुनिराय, मुख दर्शन उनकर कबहुँ।
रहउँ दूर थल जाय, करउँ न कबहुँ विवाह अब ॥५९॥
ब्रह्मचर्य व्रत मोर, अद्यारभ्य सदैव दृढ़।
गिरिनन्दिनी किशोर, प्रणमि मातु पितु चलत भउ ॥६०॥

चौपाई

कियउ मातु पितु तासु निवारण बोले तजु सुत निज निर्धारण
वाक्यदान वैवाहिक तोरा भउ पूरित करु अभिमत मोरा
तुअ वियोग दुख हम सब लहिहैं सन्तति विरह व्यथा कस सहिहैं
नहि चन्दन नहि हिमकर ताता शीतल तिमि जिमि सन्तति गाता
सन्तति दरसन परसन माहीं जो सुख सो त्रिभुवन महँ नाहीं
दृढ़ प्रतिज्ञ गुह सुनेउ न एका भउ प्रस्थित निज तजेउ न टेका
क्रौञ्च नाम पर्वतपर गयऊ करि कुमार व्रत तपसी भयऊ
भउ कुमार इति नाम प्रसिद्धा गुण गावहिं जाकर सुर सिद्धा
लहि कार्तिकी कृत्तिका योगा होहिं कृतारथ दर्शक लोगा
तहँ तव गुह दर्शन जो करई ह्वै निःपाप मनोरथ लहई
पुत्र विरह दुख उमा दुखारी गउ तहँ शंभु अपर तनु धारी
भयउ मल्लिकार्जुन परसिद्धा ज्योतिर्लिंग बसहिं ज़हँ सिद्धा
तहाँ उमा हर करहिं निवासा पूरित करहिं भक्त अभिलाषा
मातु पितुहिं आगत लखि स्वामी उत्सुक भयउ अपरथल गामी

कियउ प्रार्थना सामर सुरवर भउ थिर योजन त्रय दूरीपर
जाय लखहिँ शिव सुतमुख तहँमा पावन कार्तिक पूनो लहमा
लखहिँ पुत्रमुख हिमगिरि तनया जाइ अमा वासर निज कलया
गुह गणेश यह चरित सुपावन तुमहिँ सुनायउँ मुनि मन भावन
जो जन कहै सुनै मन लाई जन्म जन्म कृत पाप नसाई
सुनत निरञ्जन वचन पुरञ्जन ध्यावत भयउ मार मद गञ्जन
पुलक अंग नयनन जल छाये शिवशिवशिवकहि अतिसुखपाये
पुनि पुनि गुरुवर चरण प्रणामा कियउ पाइ मानस विश्रामा
विहँसत बहुरि निरञ्जन बोले श्रुति सम्मत रहस्य मत खोले
जेठ अछत कस छोट विवाहा जानहु इहाँ अलौकिक राहा
देव कल्प अरु लौकिक कल्पा जानहु अन्तर इहाँ अनल्पा
विधि उत्पादित मनु शतरूपा उपगत भगिनी-भ्रातृ-सरूपा
भयउ परस्पर तासु विवाहा जाते मानव सृष्टि प्रवाहा
इन्द्र चन्द्र आदिक व्यवहारा कहि सक अनुचित सब संसारा
कियउ भानु कन्या उपभोगा यह समुचित कह को अस लोगा
दोष बड़न कहँ लागत नाहीँ आँखि पसारि देखु जग माहीँ
काहि भानुकर परसत नाहीँ अग्नि अभक्ष्य काह जग माहीँ
कारण अपर तोहि मैँ भाखउँ गोपनीय कछु गोपि न राखउँ
निर्गुण पथ नहि विधि न निषेधू भाषहिँ मुनिजन जसु दृग्वेधू
पूज्य पाद शंकर मत एहू रहि सदेह जो रहे विदेहू
अहंकारगत सब व्यवहारा अनहंकार अस्त संसारा

जाहि न अहंकार कृत भावा जासु बुद्धि महँ लेप न आवा
विधि निषेध ताकहँ कछु नाहीँ यह सिद्धान्त सकल श्रुति माहीँ
शंभु सदाशिव ब्रह्म सरूपा सदा स्वतन्त्र अरूप विरूपा
शंकरकी गति शंकर जानहिँ ज्ञानी जन अगम्य करि मानहिँ
श्रीगणपति श्रीपति अवतारा को लहि सक चरिताम्बुधि पारा
पावन कथा कही मैँ गाई अग्रिम कथा सुनहु मन लाई

दोहा

प्रभु प्रताप रघुवंशमणि, हने निशाचर यूथ।
सहित दशानन संगकरि, वानर भालु वरूथ ॥४५॥

सोरठा

करि शंकरपद भक्ति, लायउ लंका नगर ते।
सदा संगिनी शक्ति, जनकनन्दिनी रञ्जनी ॥६१॥

चौपाई

राम लखन अरु भरत शत्रुहन भयउ चारि दशरथ नृप नन्दन
कौशल्या सुत राम उदारा कैकेयी सुत भरत कुमारा
लछुमन और शत्रुहन माता नाम सुमित्रा जानहु ताता
भञ्जि पिनाक पणीकृत चापा भञ्जेउ राम भुवन भट दापा
भयउ जानकी पाणि गृहीता सती धर्म जसु परम पुनीता
रामहिँ यौवराज्य अभिषेका देन चहेउ नृप सहित विवेका
दानव दमन हेतु करुणाकर भउ दिनकर कुल कमल दिवाकर
सो यदि यौवराज्य पद पैहै नहि तपसी बनि कानन जैहैँ

रावणादि वध संभव नाहीँ इन्द्र विचार कियउ मन माहीँ
सुर प्रेरिता भारती माता कियउ प्रवेश मन्थरा गाता
सो कैकेयी मति हरि लियऊ महाविपत्ति बीज वपि दियऊ
दुइ वरदान पुरातन काला दियउ ताहि दशरथ महिपाला
धरी धरोहर इव सो रानी समय पावि बोली अस बानी
भरत राज्य रघुवर वनवासा देइ नाथ पूरहु मम आसा
निजहिँ निबद्ध सत्यमय पाशा जानि मोहि नहि करिय निराशा
पितु आज्ञा लहि राम गये वन संग लियउ करि सीता लछुमन
प्रेम विवश दशरथ सुरलोका गयउ अवधपुर भयउ सशोका
भरत जाय वन राज्य समर्पे आज्ञा विवश उनहिँ सो अर्पे
भरत पादुका पावि सिधारे नन्दीग्राम आवि व्रत धारे
सीता राम लखन वन विचरे बनि तपसी सुख सम्पति बिसरे
खर दूषण आदिक खल मारे काननवासी मुनिहिँ उबारे
लछुमन सूर्पनखाकर नासा काटी गई सो रावण पासा
सीता हरण कियउ दशवदना करि मारीच सहायक अपना
काटे मग जटायुकर पक्षा भयउ राम लखि तासु सपक्षा
जीवन दान देन प्रभु चाहा कहे जटायु भक्ति कर राहा
साधु सन्त जसु दरसन कारन घर दुआर तजि सेवहिँ कानन
सो समुपस्थित लोचन आगू मो सम आजु कवन बड़भागू
मृत्यु समय दर्शन प्रभु दीन्हा महामोह बन्धन हरि लीन्हा
मृत्यु समय दर्शन लहि राउर जीवन दान चहै को बाउर

जहँ जहँ जनमि कर्मवश जाऊँ तहँ तहँ प्रेम पद्म पद पाऊँ
एवमस्तु तव रघुवर भाखे निज कर कमल तासु शिर राखे
तनु परिहरि रघुवर तनु दरसी लहे परमपद प्रभु पद परसी
ऊर्द्ध क्रिया विधिवत निज हाथा कियउ दयासागर रघुनाथा
यही बड़नकर सहज सुभाऊ निज भक्तन प्रति करहिँ पसाऊ
रावण पहुँचि पुरी निज लंका त्यागि राम भय भउ निःशंका
सियहिँ अशोक वाटिका राखी यामिक जनहिँ यथोचित भाखी
रक्षा करहु सहित अवधाना इहाँ सम्भवित संकट नाना
निज निवासथल असकहि गयऊ लहि विश्राम सुनिद्रित भयऊ
इहँमा रामचन्द्र विलखाये प्रिये प्रिये कहि जहँ तहँ धाये
तरुवल्ली मल्ली कुसुमादिक चम्पक शिरिस मालती आदिक
ताल तमाल रसाल शाल तरु कोविदार आसत अर्जुन अरु
मृदुवयनी मृगनयनी रामा देखे कतहु कहहु अभिरामा
पूछत रघुवर वन वन विचरे भोजन पान शयन सुख विसरे
विरहानल विह्वल कृशगाता अश्रुपूर्ण लोचन जलजाता
लखन लक्ष्य करि बोले सोऊ विधि विपरीत हितू नहि कोऊ
पिता मरण दुर्गम वन वासा रमणी हरण मोर अब नासा
चञ्चल चित्त भ्रमत चहुँओरा प्रियाहीन जीवन कस मोरा
विलपत प्रलपत काँपत गाता स्रवत नीर लोचन जलजाता
सुनि लछुमन बहुविधि समुझाये नाना भाँति सुनीति सुनाये
आयउ तहँ अगस्त मुनिराजा लखि व्याकुल रघुकुल सिरताजा

कहे ताहि करुणा रस खिन्ना मुनिवर लखि वियोग उद्विग्ना
राजपुत्र करु तनिक विचारा महामोहमय जग व्यवहारा
मिटै मोह लहि तत्त्व विवेका तत् साधक श्रुति युक्ति अनेका
अद्वय तत्त्व सकल घटवासी शोक मोह विरहित अविनासी
ब्रह्म सच्चिदानन्द कहावै माया तासु जगत उपजावै
ब्रह्मबिम्ब प्रतिबिम्ब समाना उपहित बुद्धि जीव जग नाना
बुद्धिनिष्ठ सुख दुख अभिमानी तदभिमान विरहित जन ज्ञानी
निरहंकृति-थिति गत अभिमाना विगतक्लेश आतम सुखलीना
वाताहत चञ्चल प्रतिबिम्बा वाताघात लहत नहि बिम्बा
सोपाधिक प्रतिबिम्ब कहावै विगतोपाधि बिम्ब पद पावै
स्थूल सूक्ष्म अरु कारण देहा गुणमय निर्गुण पृथक् विदेहा
रज्ज्वाधार सर्प दरसावै देह विदेहाधार लखावै
रज्जु विकाश भुजंगम नाशा विनसत देह विदेह विकाशा
प्रारब्धावधि जीवन मुक्ती गत प्रारब्ध विदेह विमुक्ती
मायाकृत जग माया रूपा मायामात्र नाम अरु रूपा
नाम रूप विरहित जो कोई अद्वय स्वानुभूत तनु सोई
चिदाकाश आकाश विलक्षण भाषहिँ अद्वय तत्त्व विचक्षण
देखिय सुनिय जगत जो नाना असन्मनोमय स्वप्न समाना
मायाकृत माया अनुमानिय सुवरण भूषण सुवरण जानिय
नहि सुषुप्ति थिति जगत प्रकाशा नहि विवेक थिति विश्व विकाशा
मैँ मैँ मोर मोर यह भाषण महा मोहमय माया कारण

अध ऊरध अन्तर अरु बाहर अद्वय तत्त्वमात्र शंकर हर
अस्ति सच्चिदानन्द समुद्रा नास्ति पृथक्कृत तदितर क्षुद्रा
यह विवेक उपजै हिय जाको शोक मोह नहि व्यापै ताको
मोह निशा अवसान निदाना श्रुति विवेक रवि उदय बखाना
करि विवेक त्यागहु अवसादा प्रिया प्रिया यह व्यर्थ विषादा
पञ्चभूतमय यह जड़ देहा चिदाकार यह जीव विदेहा
जड़ चेतनमय सब संसारा कस संयोग वियोग विचारा
निराकार नहि लोचन गोचर जड़ असार नहि पात्र प्रीतिकर
नर नारी व्यवहार अविद्या अद्वय तत्त्व विनिर्णय विद्या
महाविष्णु प्रभु रघुकुल जाये दानव दलन हेतु वन आये
दण्डकवन निर्भय प्रभु कियऊ वनवासिन कहँ अति सुखदियऊ
तजिचिन्ता पितुवचन निवाहिय वचन निवाहि बहुरि गृह जाइय

दोहा

प्रणमि रामपद कमल तसु, बोले वचन प्रमान ।
नहि स्वभाव निज तजि सकौं, सहि न सकौं अपमान ॥४६॥

सोरठा

नहि क्षत्रिय कुल धर्म, रिपु अपमान सहिष्णुता ।
भार्या हरण कुकर्म, सहनशीलता मरण सम ॥६२॥

चौपाई

काम क्रोध जारत मम गाता तहँ कस तत्त्वबोध विधि बाता
अहंकार दुर्जय रिपु घोरा जीवन हरण करन चह मोरा

यह निश्चय मानस महँ मोरा कवनिहुँ विधि मारउँ तिय चोरा
अथवा आपुहिँ मरउँ समर मैं काछउँ कछनी कसउँ कमर मैं
अब विलम्ब क्षण युग सम भासत कब शरसंघ असुर दल नासत
करु उपदेश मुनीश्वर तादृश होय शत्रुवध कारण यादृश
राम वचन सुनि बोले मुनिवर सहसा करिय न कारज रघुवर
विना विचारे सहसा कारज करि अनुताप लहत नर आरज
होत हृदयदाही परिणामा अविचारी कहँ दुखमय रामा
जो रावण पशुपति व्रत धारी तिहुँ पुर जो रावण जय कारी
जो निज मस्तक आहुति दाता जाको महाकाल वर दाता
डरहिँ जासु डर विष्णु विधाता कुंभकरण सम जाकर भ्राता
उत्तोलित कैलासहिँ कियऊ इन्द्रहिँ जीति पुत्र जसु लियऊ
लंका नाम पुरी जसु दुर्गम चहुदिश जसु समुद्र परिखा सम
बल चतुरंग अपरिमित जाको नहि साधारण मानहु ताको
सुर अवध्यता हर वर ताको इष्ट देव स्वयमपि शिव जाको
सिद्ध मन्त्र निगमोदित जाको नहि साधारण जानहु ताको
विजय असम्भव तसु एकाकी यदि चाहिय जय भजिय पिनाकी
यावत् नहि प्रसन्न शंकर हर तावत् विजय असंभव वाकर
गहु रघुनन्दन पुरहर शरणा यदि अभिलषित दशानन मरणा
देउँ नराधिप विरजा दीक्षा जय सम्पादक बहुधा शिक्षा
तेजोमय बनि होहिँ विशोका विरजा मार्ग समाश्रित लोका
भूतशुद्धि प्रथमहिँ करि लीजै व्रत संकल्पित तदुपरि कीजै

करि सम्प्रोषण मज्जन आदिक नित्य कृत्य सावित्र जपादिक
सित पट शुक्ल यज्ञ उपवीती विरजा होम करिय करि प्रीती
प्राणादिक परिशोधन कीजै शुद्धि मन्त्र पढ़ि आहुति दीजै
अनुवाकान्त होम करि भूपा बनिय मन्त्रबल ज्योति स्वरूपा
अग्न्यारोपण निज तनु कीजै 'या ते अग्नि' आदि पढ़ि लीजै
पढ़त अग्निरित्यादिक मन्त्रा भस्म ग्रहण सम्मत श्रुति तन्त्रा
भस्म विधूलन सकल शरीरा पापापह जिमि सुरसरि नीरा
भस्म विधूलन सकल शरीरा तापापह जिमि मलय समीरा
लखि तनु भस्म विधूलनपूता भागहिँ दूरहिँते यमदूता
पावक वीर्य प्रसिद्ध विभूती शिवसायुज्य जासु करतूती
भस्मशयन अरु भस्म निमज्जन करि पावहिँ दुर्लभ सुख सज्जन
शंकर सहसनाम पारायण करिय राम नृपतनु नारायण
शंकर सहसनाम पढ़ि भूपा गिरै न पामरहू भवकूपा
वेदसार नामावलि एहू अन्वर्थक नहि. कछु सन्देहू
नाम सहस यह सद्गति दायक सकल मनोरथ प्रद रघुनायक
नामावलि अमोघ यह जानिय लंकाधिप वध कारण मानिय
शिव प्रसन्नता कारण एहू लहब दरस जपि नहि सन्देहू
असकहि सहसनाम मुनि दियऊ अति हर्षित रघुपति सो लियऊ
पुनि पुनि राम प्रणति नुतिकियऊ मुनिआसीसविविधविधि दियऊ
पुनि मुनिवर रघुवर कहँ भाखे निज कर कमल शीश तसु राखे
करिय अहर्निश जाप महीशा दैहहिँ अस्त्र पाशुपत ईशा

सोखिहि जल जो जलधि मझारी होय सकुल रावण वधकारी
सोइ अस्त्र तव पत्नी प्रापक सोइ प्रलय महँ विश्व समापक
तासु विना रिपु वध नहि संभव पाइ ताहि करु शत्रु पराभव
शरण गहिय श्रीशंकर चरणा यदि अभिलषित दशानन मरणा
असकहि मुनिनिज आश्रम गयऊ राम तासु पद प्रणमत भयऊ
गोदावरी तीर तव ताता राम विभूति विभूषित गाता
अंग अंग रुद्राक्ष ग्रहण करि नियम यथोचित शास्त्रोदित धरि
कियउ सदाशिव लिंग प्रतिष्ठा धारण कियउ यथोचित निष्ठा
वन्य पुष्प श्रीफल दल चन्दन आदि चढ़ावत भउ रघुनन्दन
जल फलादि दै पूजन कियऊ निशिवासर जप महँ मन दियऊ
शंभु सहस्रनाम रघुनाथा पुनि पुनि पढ़े लिंग नत माथा
मास चतुष्टय व्रतविधि धारी भउ फल-दल-जल-वाताहारी
गोदावरी तीर अति पावन प्रभुहिं मनायउ मुनि मन भावन
शम दमादि साधन सम्पन्ना भयउ शंभु पद पद्म प्रपन्ना
ध्यायउ साम्ब शंभु अभिरामा हृदय कमल महँ चन्द्र ललामा
यथा शास्त्र कीन्हे प्रभु ध्याना प्रेम निमग्न राम भगवाना
महातेज तव रघुकुल नायक देखत भयउ महा भय दायक
भासाभासित दश दिश भयऊ भय व्याकुल रघुवर ह्वै गयऊ

दोहा

अति भीषण धुनि तबहि भउ, प्रलय पयोधि समान ।
मथितसिन्धु धुनि सरिस धुनि, जीवजन्तु भय मान ॥४७॥

सोरठा

मोहित राजकुमार, अन्धीकृत लोचन भयउ ।
मन महँ कियउं विचार, माया यह दानव रचित ॥६३॥

चौपाई

उठे वीरवर तजि निज आसन सज्ज किये निज महा शरासन
दिव्य अस्त्र अभिमन्त्रित नाना वाण चलायउ उरग समाना
वह्नि-वरुण-यम-रवि-शशि-अस्त्रा अति अमोघ अरु जे बहु अस्त्रा
ब्रह्म विष्णु अस्त्रादिक केते तजे राम वेदोदित जेते
तजे राम अस्त्रादिक जो जो भयउ विलीन तेज महँ सो सो
मेघोपल जिमि सिन्धु विलीना अस्त्र शस्त्र तिमि तेजोलीना
क्षणमहँ राम चाप जरि गयऊ भस्मसात तूणादिक भयऊ
भउ भयभीत लखन मूर्छित अति किंकर्तव्यविमूढ अवधपति
भयउ जानु अवलम्बित भूतल हरि अवतार स्वयं अतुलित बल
मीलिताक्ष भउ शिव शरणागत जपत सहसनामामृत अविरत
पुनि पुनि कियउ दण्ड परनामा त्राहि त्राहि भाखत लै नामा
यथा पूर्व पुनि भयउ कठोरा प्रलय मेघ धुनि इव धुनि घोरा
महि महिधरगण डोलन लागे शीतल तेज आवि गउ आगे
नयन खोलि जब रघुपति देखे अनुपम शंकर वृषथित पेखे
मथितामृत नवनीत पिण्डवत सुवरण मरकत मणि विषाणगत
नीलरत्न छवि नयन विराजै मणि पलान चामर सित राजै
घण्टा घनधुनि शब्दित दशदिश तत्रासीन सदाशिव गलविष

कोटि दिवाकर चण्ड प्रकाशा मृदुल निशाकर कोटि विकाशा
व्याघ्रचर्म अम्बर छवि छाजै नाग यज्ञउपवीत विराजै
बाल शीतकर भाल विराजै जटाजूट गंगा छवि छाजै
नाना भूषण भूषित देहा निर्गुण सगुण विदेह सदेहा
पञ्चवदन त्र्यम्बक दश बाहू नयनानल कृत मन्मथ दाहू
रुद्ररूप नानाऽऽयुध धारी रम्यरूप अर्धंग विहारी
वाम अंग गिरिसुता विराजै लखि आनन छवि हिमकर लाजै
अभिरामा इन्दीवर श्यामा धृत केसरि कटि मणिमय दामा
दिव्याभरण माल अम्लाना दिव्य गन्ध अनुलेपन नाना
दिव्य वसन सरसीरुह लोचन अति सुन्दरता रति मद मोचन
शिव आलिंगन पुलकित देहा पति पत्नीगत अनुपम नेहा
सती धर्म आदर्श भवानी मर्यादा सागर वरपानी
शिवा सच्चिदानन्द सरूपा विश्वरूपिणी बहु विध रूपा
निरखि राम रोमाञ्चित भयऊ प्रेमाम्बुधि निमग्न ह्वै गयऊ
तन मन सुधि बुधि सब विसराये शुद्ध शान्ति सुख सिन्धु समाये
पुनि व्युत्थित भउ श्रीरघुराई सुखमय विविध दृश्य दरसाई
इन्द्रादिक दिक्पाल समूहा चहुदिश थित युत निर्जर जूहा
गरुड़ारूढ़ अग्रथित विष्णू रुद्राध्याय जपत प्रभविष्णू
वाम भाग इन्दिरा विराजै इन्दीवर लोचन छवि छाजै
तदनु चतुर्मुख हंसारूढ़ा पराभक्ति जसु मानस गूढ़ा
रुद्रसूक्त जप निरत निरन्तर जटाजूटधर दीर्घ कूर्चकर

वाम अंग भारती विराजै मधुर सरस सुर वीणा बाजै
मुनिगण पढ़ि अथर्वशिर मन्त्रा नुति नतिरत श्रुति तन्त्र स्वतन्त्रा
गंगा आदिक नदी समेता सिन्धु नीलदुति रत्न निकेता
श्वेत अश्वतर पढ़ि पढ़ि नागा अस्तुति निरत प्रेम रस पागा
कैवल्योपनिषत् श्रुतिसारा करत परायण बारंबारा
स्वर्ण वेत्रधर सुस्थिर आगे नन्दी मुदित प्रेम रस पागे
दहिन गणेश मूषकारोही वाम षड़ानन शिखि आरोही
महाकाल अभिधान भयंकर अरु चण्डेश्वर नाम प्रमथवर
युगल पार्श्व अतुलित बल सोहैं युद्ध समुद्यत रिपुदल जोहैं
काल अग्नि अभिधान रुद्रवर दाव हुताश प्रकाश दूरपर
नाचत कुटिलाकार भृंगि रिटि कर कठताल बजावत किटिकिटि
कोटि कोटि मित प्रमथ वरूथा विकट वदन जोहत रिपुयूथा
मातृमण्डली नाना वाहन प्रणमत प्रभुपद विनय नतानन
पंचाक्षर जपमन्त्र सपाना सिद्ध सहित विद्याधर नाना
गावत किन्नर आदिक गीती मधुर मधुर सुर लहि अति प्रीती
वीणावादन तत्पर नारद गावत नाचत ताल विशारद
त्र्यम्बक मन्त्र जपत द्विज वृन्दा महादेव पद पद्म मिलिन्दा
नाट्य नृत्य तत्पर रम्भादी गान करत विश्वावसु आदी
राजत शंभु कर्ण भूषण तनु कम्बलाश्वतर पढ़त वेद मनु
देव सभा लखि अनुपम रूपा भयउ कृतारथ रघुकुल भूपा
गद्गद कण्ठ जपत शिवनामा पुनि पुनि रघुपति कियउ प्रणामा

दोहा

सुन्दर स्यन्दन स्वर्णमय, भउ तब आविर्भूत ।
विविध दिव्य रत्नांशुचय, विश्व विचित्री भूत ॥४८॥

सोरठा

पंकिल स्यन्दन चक्र, नद्योपान्तिक पंकते ।
अलकापति अरु शक्र, स्यन्दन छवि लखि चकित भउ ॥६४॥

चौपाई

अनुपम सुषमा वरणि न जाई मणि मुक्ता तोरण छवि छाई
शुद्ध सुवर्ण बद्ध खुर राजी अति छवि छाजत स्यन्दन वाजी
मुक्तामय वितान वर सौहै ऊर्द्ध वृषध्वज लखि मन मोहै
शोभत अग्रभाग वर हस्ती मण्डित गण्ड मदोचित मस्ती
भ्रमत भ्रमर उपजावत शोभा कर्पूरागुरु परिमल लोभा
कस्तूरी मद पंकिल अनुपम वरणत कवि मन उपजत उपरम
सुरतरु पुष्प मालिका लटकत परिमललुब्ध भ्रमत अलिकुल कत
प्रलय मेघ धुनि इव धुनि जामैं नाना वाद्य उपस्थित तामैं
वीणा वेणु मधुर सुर सक्ता जहँ किन्नरी वृन्द अनुरक्ता
उतरि वृषभ ते श्रीत्रिपुरारी बैठत भउ रथतल्प मझारी
वाम अंग शोभित जगदम्बा पद पंकज नत देव कदम्बा
सित चामर सुर वधू डोलावहिं नीराजन करि करि सुख पावहिं

दोहा

कंकण मृदु मञ्जीर धुनि, वीणा वेणु मृदंग ।
मञ्जुल धुनि सुनि मुदित अति, शंकर गिरिजा संग ॥४९॥

सोरठा

नाचत बर्हीवृन्द, गान करत पिक प्रभृति खग ।
कम्बल आदि फनीन्द, भूषाभूषित मुदित भउ ॥६५॥

चौपाई

नत रघुपति लखि प्रभु हरषाये करुणानीर नयन भरि आये
पुनि उठाय निज रथपर लाये अति प्रसन्न मन हृदय लगाये
बिहँसि स्वकीय अंक बैठारे आचमनादि स्वयं करि डारे
बहुरि आचमन उनहिँ कराये करुणाकर करुणा दरसाये
अक्षय तरकस दिव्य शरासन अस्त्र पाशुपत रिपुवध कारन
दियउ राम कहँ पुरआराती कहि प्रहार विधि नाना भाँती
कहन लगे पुनि उनहिँ महेशू जो भक्तनकर हरहिँ कलेशू
विदित पाशुपत अस्त्र उग्र अति महाप्रलयकारक यह रघुपति
नहि साधारण रणमहँ भाई करिय प्रयोग कबहुँ रघुराई
मृत्यु भीति यदि होइ उपस्थित तब जानिय प्रयोगविधि समुचित
अन्य समय यदि करिय प्रयोगा करै भस्म यह जगदाभोगा
प्रभु सुरगण कहँ कहे बुलाई निज निज अस्त्र देहु सब भाई
पृथ्वी भार निवारण कारण भउ अवतीर्ण देव नारायण
सुर कारज लगि कानन विचरन करहिँ मनुज तनु धरि मुरमरदन
मम वर पाइ दशानन वीरा सुर अवध्य भउ अति रणधीरा
दिव्य अस्त्र लहि हनिहैं ताको वशीभूत इन्द्रादिक जाको
सुर गण वानर कुल अवतरहू राम सहायक बनि रण करहू

निज निज अस्त्र देहु सबकोई अमरवृन्द प्रमुदित चित होई
सुनि निर्जर गण अति हरषाये जो आज्ञा कहि शीश नवाये
ब्रह्मा विष्णु इन्द्र यमराजा वरुण देव गुह्यक सिरताजा
रवि शशि वसु सप्तार्चि समीरा सब अचये गोदावरि नीरा
निज निज अस्त्र दीन्ह सब कोई रावण हनन समुत्सुक होई
बहुरि सदाशिव बोलन लागे करुणाकर करुणा रस पागे
विजय शस्त्रकृत संभव जहँमा हनिय न अस्त्र रघूत्तम तहँमा
अस्त्रशस्त्र विरहित रिपु जहँमा करिय प्रहार न रघुवर तहँमा
अस्तशस्त्र अक्षम रिपु जहँमा करिय प्रहार न रघुवर तहँमा
शत्रु पलायन तत्पर जहँमा करिय प्रहार न रघुवर तहँमा
नहि अन्याय युद्ध मन दीजै रिपु सम्मुख निज पीठ न कीजै
धनुर्वेद पारग भगवाना भाषे संगर विधि अस नाना
ग्रासभूत मम सकल जहाना लखु कवलीकृत दानव नाना
होहु निमित्त मात्र अब भाई अतुल कीर्ति भाजन रघुराई
सुनि रघुनन्दन अति सुख पाये जो आज्ञा कहि शीश नवाये

दोहा

सुरगण जय जय धुनि कियउ, सुमन वृन्द बरषाय।
गायक विश्वावसु प्रभृति, कियउ गान हरषाय ॥५०॥

सोरठा

रम्भादिक हरषाय, नाट्य नृत्य तत्पर भई।
नाचे गाल बजाय, शृंगी भृंगी प्रभृति गण ॥६६॥

छन्द

तब रघुनन्दन करत निवेदन पद पंकज रज शीश धरे
रोमाञ्चित तनु हस्त त्रस्त धनु लोल विलोचन नीर भरे
करिय कृतारथ भक्ति पदारथ वर वितरण करि उमापते
जानि अनाथ अनाथनाथ हर करुणासागर अगतिगते

चौपाई

अनपायिनी भक्ति प्रभु दियऊ प्रिया वियोग सोग हरि लियऊ
तेजोमय तेजोमय भयऊ निरुद्विग्न मानस ह्वै गयऊ
एक ज्ञान घन दुइ तनु धारी प्रेमबद्ध हर अवधविहारी
महादेव पुनि भाषन लागे धृत अञ्जलि रघुवर थित आगे
करि दुष्कर तप रावण भाई लहि वर सुर अवध्यता पाई
ताते रघुवर मनुज शरीरा विष्णु अंश हनु रावण वीरा
वालि सुकंठ नाम दुइ भ्राता वैर भाव तहँ अविरत ताता
वन वन फिरत वालि-भय-भीता वालि-अनुज सुग्रीव विनीता
ता सङ करु मिताइ हति वाली जो वर वीर अमित बलशाली
वानर चमू समुद्र समाना बूड़त जहाँ निशाचर नाना
चढ़ि नल-कपि कृत दृढ़तर सेतू पहुँचत पार कटक रण हेतू
लछिमन इन्द्रजीत संहारी शयनाशन विरहित व्रतचारी
सानुज दशमुख मारव आपू हरव धेनु द्विज सुर सन्तापू
हनत निशाचर वानर भालू बनत विभीषण लंक भुआलू
चिरञ्जीव तव पाइ प्रसादा सदाचार सो विगत विषादा

सहधर्मिणी सहित रघुनन्दन पालव राजधर्म जिमि श्रुति भन
पुनि प्रस्थान करव निज धामू लै निज संग अयोध्या ग्रामू
निज निज तेज प्रविशिहैँ सबही सीता अरु भरतादिक तबही
सुनि रघुनन्दन अति सुख पाये महादेव पद शीश नवाये
आनत काय जोरि युग पानी बोले विनय सुधामय बानी
प्रभुकृपया हम भये कृतारथ करतल मोरे चारि पदारथ
राउर कृपा जाहिपर होई लब्ध जन्म जीवन फल सोई
संशय एक मोर मन माहीँ प्रभु बिनु कोउ मेटि सक नाहीँ
निराकार अद्वय भगवाना भाखत प्रभु कहँ वेद पुराना
प्रभुकहँ थिति हति उत्पति कारन भाखत मुनि जन वेद पुरानन
सो कस कुन्द इन्दु संकाशा लोचन गोचर विमल विकाशा
निर्गुण सगुण निराकृत साकृत एक तत्त्व अव्याकृत प्राकृत
अति असमञ्जस भासत एहू प्रभु बिनु कौन हरै सन्देहू
बिहँसे सुनि अस वचन महेशू जो भक्तनकर हरहिँ कलेशू
भाखत भउ दर्शन मत नाना यथा सांख्य श्रुतिशिखर वखाना
यथा अलक्ष्य एक चिति रूपा लहत स्वप्न कृत बहु प्रति रूपा
जानिय तथा सकल व्यवहारा मायामय समस्त संसारा
वट बीजादि निदर्शन नाना भाषे ज्ञानसिन्धु भगवाना
तदपि राम नहि लहे प्रबोधा आविद्यक विद्या अवरोधा
करत भयउ पुनि पुनि उपदेशा करुणासागर देव महेशा
गतभ्रम रविहि यथाथित जानत गतअज्ञान रूप पहिचानत

सर्प असत्ता भासत जबही उपजत रज्जु बोध हिय तबही
भासत यह संसार असारा जब उपजत हिय ब्रह्म विचारा
रज्जु भुजङ्गम जानत जोई भय कम्पादिक पावत सोई
उगत पूर्व दिशि दिनकर यद्यपि दिग्भ्रम कृत पश्चिम थित तद्यपि
जिमि घनपटलाच्छन्न दिनेशू अलख हरत नहि शिशिर कलेशू
तिमि अज्ञानावृत संसारी लखि न जात भ्रम सकत न टारी
जब अज्ञानावरण दुरावै रूप सच्चिदानन्द लखावै
नहि गंधर्व नगर नभ माहीँ द्वैत गन्ध अद्वय महँ नाहीँ
माया मात्र द्वैत दरसावै निर्मायी अद्वैत कहावै
अद्वय रूप हमहिँ तुम जानहु दृश्याकार असत् करि मानहु
ज्ञान दीपकर जहँ परकासा तहाँ न मोह पिशाच निवासा
दीप विवेक बरत हिय जाको अलख निरञ्जन दीखत ताको
अलख स्वानुभव गोचर होई अपर प्रमाण तहाँ नहि कोई
पञ्च पर्व अज्ञान दुरावै प्रकृति पृथक्कृत रूप लखावै
अहंकार ममता मद टूटै तत्त्व पञ्चकृत बन्धन छूटै
नहि धूली मारुत गत जैसे नहि प्रपञ्च चेतन गत तैसे
गगन कालिमा मोह निदाना पुरुष प्रपञ्च भान अज्ञाना
निराकार निर्गुण निस्संगा भ्रम मूलक तहँ प्रकृति तरंगा
माया विरचित विश्व विलासा विद्या बोधित परम प्रकासा
मोहि सदा अद्वय रस मानहु उत्पति थिति हति कल्पित जानहु

दोहा

ब्रह्म सत्य संसृति अनृत, जीव ब्रह्म नहि भिन्न ।
नित्य तृप्त सुखमय अमय, वृथा होहु कस खिन्न ॥५१॥

सोरठा

तजहु वृथा नृप खेद, सुमिरि निरञ्जन भाव निज ।
भाखत चारिहु वेद, मिथ्यारोपित जगत यह ॥६७॥

चौपाई

कहत भयउ सीतापति वचना प्रभु यद्यपि यह भ्रममय रचना
भाखत मुनि जन शास्त्र पुराना मनो विलास दृश्य यह नाना
सामय भ्रममय यह संसारा अन्धकारमय अपरम्पारा
किये नाथ बहु विध उपदेशा छूटत तदपि न मानस क्लेशा
पूरुष प्रकृति नित्य यह दोऊ पृथक् भाव लखि सकत न कोऊ
चन्द्र चन्द्रिका पृथक् न होई अविना भाव कहत सब कोई
कोटि जतन करि हारै कोऊ तदपि तजै अध्यास न दोऊ
सगुण भाव निर्गुण महँ भासै जड़ महँ चेतन भाव प्रकासै
पंगु अन्ध कृत जगव्यवहारा संगत्याग छूटत संसारा
कल्प कल्प कृत प्रबल प्रसंगा भासत दुर्घट संसृति भंगा
केवल भाव होइ कस स्वामी जब लगि युगल भाव सहगामी
निष्क्रिय पुरुष प्रकृति जड़ अहई पारस्परिक संग नित रहई
करि प्रयत्न हारहिं बलशाली छूटत बीज्ञ दाग नहि थाली
यद्यपि मिथ्यामय अध्यासा चिरकालिक मानस अभ्यासा

अर्थकारिका तदपि प्रसिद्धा जिमि मृगतृष्णादिक महँ सिद्धा
यद्यपि स्वप्न अनृतमय भाना हर्ष विषाद तदपि तहँ नाना
मानस गति परिवर्तनशीला अस्त होत नहि संसृति लीला
कबहुँ भाग्यवश प्रकृति निवृत्ती करत वासना बहुरि प्रवृत्ती
जब लगि संगविरति नहि होई आत्यन्तिक सुख लहत न कोई
विषयवासना बीज समाना अंकुरादि संगादिक नाना
विषयध्यान जलकृत तहँ सिञ्चन उपकारक तहँ कर्म न किञ्चन

दोहा

सुनि शंकर भाषण लगे, ज्ञानसिन्धु मुसुकाय ।
लहि विवेक सुनि गुरुवचन, प्रकृति पुरुष बिलगाय ॥५२॥

सोरठा

साधन साधि अनेक, यम नियमादि शमादि शुचि ।
साधक लहत विवेक, करि श्रवणादिक श्रुतिविहित ॥६८॥

चौपाई

सन्तत मोर कथामृत पाना सकल जीव महँ भाव समाना
विप्र–वृद्ध – गुरु– सज्जन – सेवा धर्म चतुर्वर्णाश्रम जेवा
कामादिक रिपु विजय प्रभावा विमल विवेक हृदय उपजावा
मत्सर और असूया जहँमा विमल विवेक न उपजत तहँमा
असपर्धा अरु आशा जहँमा विमल विवेक न उपजत तहँमा
मम पद-पङ्कज-प्रेम-पदारथ निर्वासन करि करत कृतारथ
रुद्ध मनोगति वेग प्रसादा करत दूर प्राकृत अवसादा

स्रवत नयन जल पुलकित गाता गद्‌गद गल तनु वेपथु ताता
प्रेमोदधि निमग्न गुण गावत प्रकृति प्रभाव ताहि नहि व्यापत
आतम सुमिरन विश्व भुलाई थिर मन प्रकृति पुरुष बिलगाई
वात्सल्यादि मोर गुण नाना सुमिरि सुमिरि उन्मत्त समाना
गावहिँ नाचहिँ रोवहिँ हँसहीँ प्रेमी माया-फाँस न फँसहीँ
सत्संगतिकर सहज सुभाऊ शिथिल करत प्राकृतिक प्रभाऊ
तीरथ व्रत जप तप अरु पूजा ध्यानादिक कृति और न दूजा
अविरत लगन लक्ष्य महँ जाको प्रकृति-ताप नहि तापत ताको
निर्गुण रसास्वाद जब जानत गुणमय सुख नीरस तब मानत
पावत शान्ति भरित विश्रामा सँसरत संसृति बन्धन नामा
नहि कर्तृता भोक्तृता ताको प्रकृति पुरुष विश्लेषण जाको
कृतकृत्यता भूमि सुख रूपा स्वाराज्याधिपतित्व अनूपा
मायामय विकार जब भासत तब अविकार स्वरूप प्रकासत
ब्रह्म सच्चिदानन्द स्वरूपा समरस आतम रूप अनूपा
प्राण निरोध प्रणव अभ्यासा प्रशमित प्रकृति पुरुष अध्यासा
जीवन मुक्ति विदेह विमुक्ती प्राप्त यथाक्रम भुक्ति अभुक्ती

दोहा

सुनि नानाविध अवधपति, शंकरकृत उपदेश ।
जोरि युगल कर कहत भउ, प्रणमि महेश उमेश ॥८३॥
आध्यात्मिकमतश्रुतिविदित, विवरणकियउबुझाय ।
तदपि मोह नहि मिटत मम, शंकर होहु सहाय ॥८४॥

सोरठा

करत न नाथ प्रवेश, सूक्ष्म तत्त्व महँ बुद्धि लघु।
हरु हरु सकल कलेश, प्रभु प्रत्यक्ष प्रमाण ते ॥६९॥
आगम आदि प्रमाण, अनुमानादिक विदित जत।
कलुषित मति अज्ञान, बिनु प्रत्यक्ष न समुझि सक ॥७०॥

छन्द

सुनत रघुपति वचन पशुपति मुदित मति भाखत भये
लोक उपकृति हेतु श्रीपति चरित सब राउर अये
सत्त्व गुणमय सहज सुखमय धाम वैष्णव राउरो
त्वमहमस्म्यसि हे हरे त्वमहंविभेदक बाउरो

चौपाई

निर्गुण तत्त्व सगुण तनुधारी विधि मुरमर्दन अरु त्रिपुरारी
हम महँ भेद बुद्धि जो कोई भव बन्धन निर्मुक्त न होई
उत्पति थिति हति कारज एहू मायामय नहि कछु सन्देहू
हमहिँ कहत कारण सब कोई सैनिक जय नृप जय जस होई
नर तनु धरि नर सम व्यवहारा लोकाचार लोक अनुसारा
माया भासित अघटित घटना दिव्यचक्षु लहि लखु जिमि सपना
चर्म चक्षुकर पहुँच न तहँमा कवि कोविद मति कुण्ठित जहँमा
दिव्य चक्षु जब श्रीपति पायउ दृश्य असंभावित दरसायउ
कोटि कोटि विद्युत्प्रभ तबही पातालाकृति प्रभुमुख सबही
परम भयावह रघुपति देखे जहँ ब्रह्माण्ड कोटि शत पेखे

पुनि पुनि कियउ प्रणाम नरेशू कहि कहि त्राहि त्राहि गिरिजेशू
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड निकाया प्रभुमुख अभ्यन्तर दरसाया
ज्वालामाल समाकुल लोका चन्द्रभाल मुख महँ अवलोका
मेरु विन्ध्य मन्दर गिरि आदिक दिनमणि रजनीमणि भगणादिक
क्षिति अप तेज मरुत अरु गगना निरखे रघुवर पुरहर वदना
चौदह लोक लोकपति नाना विधि हरि हर निरखे भगवाना
वन उपवन नद नदी नदीशा अवलोके तहँ अवध अधीशा
भारत खण्ड अयोध्या धामा अवलोके रामादिक रामा
निरखे देवासुर संग्रामा पूर्व अपर अति अचरजधामा
त्रिपुरदाह आदिक तहँ देखे अद्भुत माया वैभव पेखे
जगउत्पति थिति हति तहँ नाना अवलोके रघुवर भगवाना
कणमहँ कोटि कनक गिरि जैसे भुवन कोटि प्रभुमुख महँ तैसे
अघटित घटना पाटव दर्शन भउ मायामय स्वप्न निदर्शन
मिटे सकल संशय रघुवरके पगे प्रेम रस श्रीशंकरके
तत्त्वबोध पाये रघुराई पुनि पुनि पुरहर पद शिर नाई
शिथिल मनोगति प्रेम प्रवाहा विस्मृत विश्व भयउ नरनाहा
मीलित नयन पुलक भर गाता गद्गद गल मुख आव न बाता
कथमपि सुस्थिर भउ रघुनाथा अस्तुति कियउ जोरि युग हाथा

स्तव

प्रसीद विश्वेश्वर विश्वमूर्ते
कृतप्रपन्नाभिमतार्थपूर्ते ।

कृतः कृतार्थोऽस्मि भवत्प्रसादात्
तथा विमुक्तोऽस्मि मनोवसादात् ॥
प्रसीद गौरीश गिरीश नम्य
प्रसीद योगीश मुनीश रम्य ।
प्रपन्नतापोपशमातपत्रं
भजे भवन्तं हतदक्षसत्रम् ॥
त्वय्येव चित्सौख्य तनावनन्ते
विभाति विश्वं सदिवासदन्ते ।
विभाति विश्वं त्रिगुणप्रवाह
स्त्वत्सेवकानामिहनावगाहः ॥
त्वत्तो जगन्ति प्रभवन्ति सन्ति
त्वद्रक्षितानीति बुधा वदन्ति ।
त्वय्येव तानि प्रलयम्प्रयान्ति
दृष्टान्तभावं तरवोत्रयान्ति ॥
यथेन्दुबिम्बं विविधोदपात्रे
ष्वेकं बहुस्यात्प्रतिबिम्बभावात् ।
तथैक एवासि महेश्वर ! त्वं
गात्रेष्वनेकः प्रतिजीव भावात् ॥
ब्रह्मादयो रुद्र मरुद्गणादि
र्भचक्र शक्रादि भुजङ्गमादिः ।

गन्धर्व विद्याधर चारणादि
ईड्यन्त आस्ये तव दानवादिः ॥
चित्यातवैतत् चितिमत् समस्तं
तदन्तरायाति तथैतदस्तं ।
सुखञ्च दुःखं जगतीह यद्यत्
त्वयैव सम्पादितमस्ति तत्तत् ॥
स्वर्गापवर्गौ यमयातनादि
दातासि तेषां भगवन्ननादिः ।
असन्नपि क्लेशल एष देहो
जीवन्नसौख्यान्नहि चेद्विदेहः ॥
प्रपन्नमानस्तव पादपङ्कजं
प्रवृद्धमोहं जयतीह दुस्त्यजम् ।
विद्यावपुर्बान्धववित्तवेश्मसु
प्रसक्तधीर्लग्नमतिर्विकर्मसु ॥
अनादिकालीनमबाध्यमानं
न बाधते बन्धमगण्यमानं ।
त्वदाननस्थं भुवनत्रयं यत्
शूलिन्नविद्याकलितं न तत्तत् ॥
अखण्डमानन्द मनाद्यनन्तं
ब्रवीति वेदोहि यतो भवन्तम् ।

आचार्यचैत्यात्मकतांप्रपन्नो
गतिं स्वकीयां हि भवान् व्यनक्ति ॥
हृदिन्द्रियादीनधिकृत्य तिष्ठन्
भूतानि भोगैरिह संयुनक्ति ।
यद्‌यच्छ्रुतं दृष्टमथानुभूतं
द्रव्यं क्रियाकारकवस्तुजातम् ॥
सर्वं तदेतद्भगवन्नलीकं
मत्वेति चित्तं कृतिनामभीकम् ।
आनन्दमानन्दवने वसन्तं
भक्त्या प्रपद्ये भगवन्भवन्तम् ॥
वालाग्रमात्रं हृदयेशयानं
स्वात्मावबोधे यदमेयमानं ।
यस्त्वां तमीशं शरणं प्रयाति
संसारपारं द्रुतमेव याति ॥
सर्वाश्चर्यमयस्येशं वैभवं नहि गोचरं ।
मनसोवचसो यस्य तमीशं प्रणतोस्म्यहम् ॥
नमस्तेस्तु महेशान नमस्तेस्तु महेश्वर ।
नमस्तेस्तु महादेव देव देव नमोस्तुते ॥
साधनानामसाध्यं त्वां निराकारञ्चनिर्गुणं ।
प्रणमामि परंब्रह्म प्रणतार्तिहरं शिवम् ॥

दोहा

भाखत भउ रघुनन्दनहिँ, अति प्रसन्न त्रिपुरारि ।
कहु किमि संशय मोहमय, भयउ निवृत्त मुरारि ॥९९॥

सोरठा

भाखत भउ रघुनाथ, जोरि युगल कर मुदित मन ।
होत अनाथ सनाथ, प्रभु करुणा लवलेश ते ॥७१॥

चौपाई

हे प्रभु मोह निशा अब बीती उपजी उर अन्तर परतीती
प्रभु दर्शन रवि उद्य प्रभावा भउ संशयमय तिमिर अभावा
जगदेकात्मकता निज लोचन भई शान्ति लखि भवभय मोचन
करु उपसंहृत प्रभु यह रूपा सकल विश्वमय परम अनूपा
प्रभु प्रसाद मैं भयउँ कृतारथ भउ अवगत अद्वैत पदारथ
सुनि अस वचन देव त्रिपुरारी भाखत भये भक्त भयहारी
विश्वरूप दर्शन मम दुर्लभ भक्तिहीन कहँ सीतावल्लभ
मम अतिरिक्त वस्तु नहि कोई लखु सुस्थिर मति अवहित होई
अस कहि कियउ गुप्त सो रूपा नाना रूप विरूप अरूपा
तबहि राम उन्मीलित लोचन संमुख लखे देव दुखमोचन
व्याघ्रचर्म अम्बर फणि भूषण भसित विभूषित भवभयमूषण
भाल बालशशि अहि उपवीती भूत प्रेत प्रति कृत अति प्रीती
विद्युत् पिंग जटाधर सुन्दर सेवक जासु महेन्द्र पुरन्दर
पुनि पुनि प्रणमि प्रणमि रघुनाथा परसि पूज्य पद भयउ सनाथा

प्रभु आयसु लहि भउ आसीना उर उपजी उपशान्ति नवीना
प्रश्न विविध विध प्रभु रुख देखी करत भयउ मुद हृदय विसेखी
कस आनन ब्रह्माण्ड निकाया रचि राखिय नासिय उरुगाया
कस लौकिक परलौकिक भोगा कस अपवर्ग सिद्धि संयोगा
नारकीय गति जन्तु विभेदा गर्भस्थिति जातक गत खेदा
प्रश्नोत्तर प्रभु समुचित दीन्हा रघुवर उर संशय हरि लीन्हा

दोहा

गुरुवचनामृत सिक्त चित, शिष्य परम सुख पाय ।
पूछत भउ कर जोरि युग, गुरु पद युग शिर नाय ॥५६॥

सोरठा

गर्भ निवास प्रसंग, अनंगारि भाषे यथा ।
कहिय करिय भय भंग, निज अमोघ सत्संग ते ॥७२॥

चौपाई

शिष्य वचन सुनि गुरु सुखपाये भव भय भंजन वचन सुनाये
पञ्चभूत विरचित यह देहा तहँ प्रधान क्षिति नहि सन्देहा
देह जरायुज अण्डज नामा स्वेदज उद्भिज भण श्रुतिग्रामा
पञ्चम मानस सृष्टि प्रसिद्धा देव देह भाखहिँ मुनि सिद्धा
देह जरायुज वर्णन सुनहू ईश्वर महिमा मनमहँ गुनहू
शोणित शुक्र जनित यह देहा अज अव्यक्त जीवकर गेहा
ऋतु अवसर गर्भाशय देशा करत शुक्र शोणित परवेशा
भये बिन्दु बीरज संयोगा बनत कलल भण श्रुति आभोगा

वीर्य विन्दु आवरण स्वरूपा तहँ जरायु रक्षण अनुरूपा
जे जरायु निर्गत तनुधारी विदित जरायुज वेद मझारी
द्रवता गाढ़ भाव जब लहई कलल नाम तब मुनिजन कहई
एक रात्र रहि कलल अवस्था सप्त रात्रमहँ बुद्बुद संस्था
प्रथम मास पेशी घन रूपा जानहु ईश प्रभाव अनूपा
दूजे मास पिण्ड निर्माना तीजे कर चरणादिक नाना
चौथे लिंग शरीर विकाशा मनोबुद्धि चैतन्य प्रकाशा
गर्भ जन्तु तब लह संचारा तहँ स्वयमेव भणत श्रुति सारा
शुक्राधिक्य पुत्र अरु कन्या रज आधिक्य सृष्टि नहि अन्या
वीरज रज समता जब होई गर्भ नपुंसक जानहु सोई
दक्षिण पार्श्व स्थित सुत होई वाम पार्श्वथित कन्या जोई
दक्ष पार्श्व माता यदि सोवै श्रुति भण पुत्र जन्म तब होवै
वाम पार्श्व माता यदि सोवै श्रुति सम्मति पुत्री तब होवै
उदर पृष्ठ भर शयन प्रभावा गर्भ नपुंसक श्रुतिगण गावा
सब प्रत्यंग अंग निर्माना सूक्ष्मतया तहँ भण भगवाना
जन्मानन्तर संभव भावा दन्त श्मश्रु आदिक श्रुति गावा
गांभीर्यादिक पुरुष स्वभावा चाञ्चल्यादिक योषित भावा
मिश्रित भाव नपुंसक माहीँ मातृ पितृ गत संशय नाहीँ
अभिव्यक्ति तिनकर तब तहँमा प्रभु प्रभाव प्रस्तुत सब लहमा
षोड़श दिवस अवधि परसिद्धा ऋतु अवसर भाखहिँ मुनि वृद्धा
दिवस चतुर्थ विहित असनाना ऋतु कालिक शुचि वेद बखाना

वासर युग्म गर्भ आधाना बालक जन्म कहत श्रुति नाना
दिवस अयुग्म गर्भ आधाना सुता जन्म मुनि वचन प्रमाना
षोड़श दिवस गर्भ यदि रहई जन्मत महाराज श्रुति कहई
जासु कामिनी मुख अवलोकत ऋतुस्नान करि रतिसुख जोहत
तदाकार जातक आकारा मुनि कदम्ब भण श्रुति अनुसारा
पतिमुख अवलोकन तहँ समुचित तदितर मुख अवलोकन अनुचित
मातु समीप्सित विषय समीप्सा गर्भ जन्तुकर इतर अनिप्सा
जाते मातृज हृदय गर्भगत ताते रुचि समता तहँ संगत
कारण कार्य भाव थित जहँमा समधर्मता व्यवस्था तहँमा
गगनजनित श्रवणेन्द्रिय अवगत गगन शब्द गुण तसु गुण संगत
गर्भवती दौहृदिनी नामा दोहद दान विहित सब ठामा
पायसादि दोहद परसिद्धी जाते गर्भ जन्तु कर वृद्धी
दोहद दान होत नहि जहँमा गर्भ व्यंगता जानिय तहँमा
यद्विषयक जननी गत लोभा लहत गर्भ तद्विषयक क्षोभा

सोरठा

बहुरि सुनाऊँ तोहि, क्रमिक मास-कृत गर्भ थिति ।
मांस रुधिर चय होहिँ, जानहु पञ्चम मास महँ ॥७३॥
पावत चित्त प्रबोध, गर्भ पुरातन कर्मकृत ।
प्रभु प्रभाव दुर्बोध, कहि न सकत कवि मन्दमति ॥७४॥

चौप ।

षष्ठ मास महँ अस्थि सनायू नख कच रोमहिँ प्रगटत वायु

साहस ओजस बल अरु अंगा उपचित होत यथोचित रंगा
युगल पाद अन्तरित युगल कर पिहित श्रवण युग गर्भ विकलतर
गर्भवास उद्वेग समन्वित सप्तम मास गर्भ सभय स्थित
सुमिरत जन्मान्तर तहँ शत शत सुमिरत निजकृत दुष्कृत कतकत
सोचत आविर्भूत प्रबोधा पीड़ित गर्भासन अवरोधा
गर्भयातना व्यथित शरीरा जो वर्णत कविबुद्धि अधीरा
तप्त वालुका गत इव ताता जठरानल सन्तापित गाता
सुमरि सुमरि निज दुष्कृत नाना लहत यातना नरक समाना
तप्त पित्त रस सिक्त शरीरा मूर्छित मति लोचन बह नीरा
उदरस्थित कृमि दंशन करई शाल्मलि तरु कण्टक अनुहरई
पार्श्व अस्थि अर्दित तहँ जन्तू तलफत बद्ध पुराकृत तन्तू
अस्थि उग्रतर क्रकचाकारा वेधत शैशव तनु शित धारा
मलमूत्राशय कुत्सित गंधा नरकाधिक दुख निजकृत बन्धा
होत पूय शोणित कफ पाना वान्तअशन आदिक दुख नाना
जिमि विष्ठा कृमि विष्ठावासी तिमि यह जन्तु अमेध्य निवासी
यादृश दुःख गर्भथल माहीँ तादृश नरकस्थल दुख नाहीँ
सुमिरत गत जन्मान्तर भोगा नरक वेदना नाना रोगा
त्राहि त्राहि कहि शरणापन्ना प्रभु चिन्तन रत प्रभुहि प्रपन्ना
मोक्षोपाय विचार परायन नति नुति तत्पर अपर उपाय न
करिहौँ भजन जन्म प्रभु देहू करत व्यवस्था पुनि पुनि एहू
अष्टम मास त्वचा निर्माणा चपल भाव तहँ वेद प्रमाणा

(पृष्ठ ३३७ की दूसरी पंक्तिके बाद निम्नलिखित चौपाइयाँ हैं)

स्वल्पकाल महँ कर्म अधीना जनमि होत यह मृतिमुख लीना।
कबहुँक कर्म विवश यह जातक प्रसव रोध भोगत निज पातक
मास नवम अरु दशम सुअवसर प्रसव हेतु अरु अपर अनवसर
मातृ रुधिर बह नाड़ी मिलई नाभिनाल शिशु रस अस गिलई
जीवत शिशु जननी आहारा वेद कदम्ब करत व्याहारा
ईश्वर महिमा ईश्वर जानहिँ ज्ञानीजन अगम्य अनुमानहिँ
अस्थि यन्त्र परिपीड़ित एहा गिरत कुक्षिपथ पुट वृत देहा
रुधिर मेद अनुलिप्त शरीरा निर्गमनाकुल लोचन नीरा
गिरत अधोमुख रोदन करई उत्तानस्थित भूतल परई
रहत अकिञ्चितकर शिशु सोई मांसपिण्ड सम निश्चल होई
पितृबुद्धि राक्षस महँ करई मातृबुद्धि डाकिनि महँ धरई
कुक्कुर मार्जारादिक दंशन रक्षत मातु पितादिक तिहि छन
इष्ट अनिष्ट बुद्धि कछु नाहीँ ससरि गिरन चह पावक माहीँ
गहन चहत उरगहिँ निज हाथा केवल विश्वनाथ तसु नाथा
व्याधि विवश रोवत शिशु एहू रोवत जननी पड़ि सन्देहू
प्रेतोपद्रव निश्चय करई तान्त्रिक तन्त्र मन्त्र उच्चरई
कफ अवरुद्ध शिरा शिशु यावत् व्यक्त वचन कहि सकत न तावत्
शैशव दशा क्लेशमय जानहु निज कृत रस आस्वादन मानहु
यौवन वन जब पहुँचत एहू मदन दाव दहनाकुल देहू
अकस्मात् गावत अरु धावत कहि निज विक्रम गाल बजावत
आरोहत तरुवर करि वेगा कबहुँ पाणितल चमकत तेगा
साधु सन्त उद्वेजन करई गुरुजन लज्जा हृदय न धरई

अब लगि ओज सुपुष्ट न जाते जनमि न जातक जीवत ताते
उदर मध्यगत इत उत धावत जननी हिय अति भय उपजावत
अस्थि मांस चर्मादिक धामा मन्मथ मन्दिर कुत्सित वामा
मध्य विपाटित उत्तानीकृत मंडूकीय उदर सदृशाकृत
नारी अंग मध्य रतिरंगा करत मन्दमति विवश अनंगा
अस्थिस्तम्भ चर्म आवरणा शोणित कर्दम लेपित सदना
मल मूत्रादिक सिंचित जहँमा करत मन्दमति अनुरति तहँमा
निर्गत पवन देव जब सोई विट् कृमि भस्म होत शव होई
पहुँचत जरा अवस्था जबहीँ करत अनादर बान्धव तबहीँ
कफ अवरुद्ध शिरा यह देही भुक्त अन्न अब पचत न तेही
गलित दन्त मुख मन्द विलोचन तदपि करत अन्तिम दिन शोच न
कटु कषाय औषध उपचारा सुनत न पुत्र कलत्र पुकारा
कम्पित गात भग्न कटि ग्रीवा अबल अंग तृष्णा अति पीवा
शौचरहित मलदिग्ध शरीरा चलन चहत अब प्राण समीरा
पुनि पुनि चाहत दुर्लभ भोगा विकल अहित हित योग वियोगा
क्रियाहीन दुर्बल इन्द्रिय गण कटुरव प्रिया हँसत बालक गण
तहाँ मृत्युभय चिन्ता भारी आशा रहित नयन बह वारी
पोषण भरण हाय को करिहै सब परिवार अन्न बिनु मरिहै
यह धन धाम धरा को पालत रिपुकुल हाय मोर घर घालत
बान्धव वर्ग चतुर्दिश संस्थित अन्तक दूत तथा समुपस्थित
जलगत अहि अहिरिपु गह जैसे गहत यमीय मुमूर्षुहिँ तैसे

सुत वनितादिक रोदन करहीँ निर्दय यमभट असु अपहरहीँ
जिमि मण्डूक ग्रहण कर सर्पा तिमि असु अपहर दूत सदर्पा
संधि ग्रन्थि छूटत तेहि अवसर मर्मवेदना कथन कठिनतर
सहस बहत्तर वृश्चिक दंशन सदृश व्यथा पावत सो तत्क्षन

दोहा

मरण समयगत दुसह दुख, कथन योग्य सो नाहि ।
मुक्ति समिच्छु मुमुक्षु जन, सुमिरैँ निज हियमाहि ॥८७॥

सोरठा

दृष्टि विहीन असंज्ञ, मरण दशामहँ जीव यह ।
निजकृत भोगत अज्ञ, त्राण कोउ नहि करि सकत ॥७८॥

छन्द

तमोमय संसार भासत मोहमय मानस तदा ।
कृपण दृग परिजनहिँ चितवहिँ कछुक पूछहिँ ते यदा ॥
एक दिशि यमदूत खैँचत लोहफँसरी कर लिये ।
बन्धुजन खैँचत अपर दिशि नेह पाशबँधे हिये ॥

चौपाई

पुनि पुनि ऊर्ध्वश्वास प्रवृत्ती लहत न हिक्का वृत्ति निवृत्ती
आशालता छिन्न अब भयऊ दृग्पथ नरकलोक है गयऊ
संकट संकुल पथ कस जैहौँ यम समीप निज करनी गैहौँ
रहिहौँ नरक कुण्ड महँ कैसे सहिहौँ असह यातना कैसे
हाय न कियउँ कछुक शुभकर्मा कियउँ दिवसनिशि निपटअधर्मा
केवल धर्म सहायक तहँमा बन्धु मित्र दीखत नहि जहँमा

पाश निबद्ध कशाहत लोका त्रस्त हृदय पुनिपुनि कर शोका
परवश तजत जीव यह देहा जीवत यद्वत दुस्त्यज नेहा
लहत यातना देह प्रवेशा तद्वत भोगत परम कलेशा
जहँ चन्दन आदिक अनुलेपा आज तासु हुतभुक् प्रक्षेपा
भूषण वसन सुशोभित जोऊ भयउ अशुचि शव क्षणमहँ सोऊ
निर्गत जीव अछूत शरीरा परिपोषक जसु दधि घृत क्षीरा
कहत पुत्र अब काह विलम्बा उठवहु मृतक हटावहु अम्बा
भउ भस्मावशेष थिति तासू नाम पुरातन गृहपति जासू
अथवा नोचहिं गृध्र शृगाला जननी जाहि पुत्र कहि पाला
मैं मैं कहा जाहि दिन राती सो अब मिलत न कवनिहुँ भाँती

छन्द

मातु पिता परिजन अभिजन धन मोर मोर अल्पज्ञ कहै
मायामय सामय अभिनय यह इन्द्रजाल जंजाल अहै
करत पयान जीव एकाकी कर्म शुभाशुभ संग रहै
मर्त्यलोक विश्राम वृक्ष यह निज नियमित पथ पथिक लहै
संध्याकाल आनि जस पक्षी तरु ऊपर एकत्र रहै
उड़ि उड़ि जात प्रात जहँ तहँ सब स्वजन संग क्षण भंग अहै
मरणानन्तर जन्म लहत नर जन्मानन्तर मरण लहै
घटी यन्त्र इव इत उत धावत नीरधि तृण इव विवश बहै
गर्भ निवास आदि मरणावधि महाव्याधि परसिद्ध महा
श्रीशंकर पद पद्म भजन बिनु औषध अपर न वेद कहा

कर्मकलाप विविध विध करि करि कोउ न पद निर्वाण लहा
प्रभु चरितामृत पान परायण प्रेम रसायन शरण गहा

दोहा

सुनत शिष्य अति मुदित हिय, बार बार शिर नाय ।
पूछत भउ कर जोरि युग, निज मन्तव्य सुनाय ॥५८॥
स्वर्ग नरक सुख दुख विविध, लख चौरासी योनि ।
कर्म विवश प्राणी भ्रमत, भजि भगवान अयोनि ॥५९॥

सोरठा

नरक दुसह दुख भोग, सुनत मुमुक्षा उपज हिय ।
करत विविध उद्योग, जाते भवबन्धन कटै ॥७६॥

चौपाई

नरक नाम जो देश विशेषा वर्णन ताकर करिय अशेषा
सुनन हेतु उत्कंठा भारी प्रस्थिति भाषिय प्रभु तसु सारी
कवन नाम कीदृश आकारा कारण तहँ अघ कवन प्रकारा
केतिक नरक पाप फल दायक जहाँ दिवाकर सुत अधिनायक
धमराज यमराज कहावत विविध दण्ड दै दुरित दुरावत
पृथक् पृथक् अभिधान अकारा दण्डबीज अघ पृथक् प्रकारा
करुणाकर करुणामृत सागर गुरुवर दीनदयालु उजागर
करि करुणा काटिय सन्देहू दीन जानि प्रभु कीजिय नेहू
भाखत भयउ गुरू तत्काला प्रेम अश्रु भरि नयन विशाला
बहु विध नरक विविध विध पापा विविध दण्ड रवितनय प्रतापा

सकल कथन करि सकउँ न ताता   को कहिसक कत नखत लखाता
क्रम संक्षेप कहउँ कछु ताता   श्रुति पुराण यादृश दरसाता
भण तामिस्र अन्धतामिस्रा   रौरव नामक पण्डित मिश्रा
अपर महारौरव अभिधाना   पुनरपि कुम्भीपाक विधाना
कालसूत्र असिपत्र वनाख्या   अरु प्रसिद्ध शूकरमुख आख्या
अन्धकूप कृमिभोजन नामा   अरु संदंश महा दुख धामा
तप्तभूमि संज्ञक पुनि एका   जहँ गर्जत यमदूत अनेका
पविकण्टक साल्मल दुख रूपा   दण्डित जहाँ रंक अरु भूपा
वैतरणी पूयोद उग्रतर   प्राणरोध अरु विशसन दुस्तर
लालाभक्ष सारमेयादन   श्रुति अवीचि रयपान अपर भन
क्षारपंक रक्षोगण भोजन   शूलप्रोत अरु दंदशूक भन
वट निरोध अरु पर्यावर्तन   सूचीमुख पुनि नरक चिरन्तन
नरक अठाइस संख्यक एहा   जहँ दुख भोगत अघी सदेहा
पावत मृतक यातना देहा   तद्वस्थित भोगत दुख एहा
परधन परदारादिक हरई   सो तामिस्र नरक महँ परई
भोजन पान मिलत नहि जहँमा   अन्धकारमय भासत तहँमा
यमजन देहिँ यातना नाना   गर्जहिँ तर्जहिँ मेघ समाना
बनि अचेत मूर्छित तहँ रहई   अघी तमिस्र भाव तहँ लहई
परधन परदारा उपभोगी   वञ्चकता छल बल उद्योगी
छिन्नमूल तरुवर इव सोई   गिरत तमिस्र भाववश होई
जहँ लहि व्यथा अचेतन भावा   ताहि अन्ध तामिस्र बतावा

अहंकार ममतावश होई केवल द्रोह परायण जोई
द्रोहमात्र करि परिजन पालक महामूढ़ मति परघर घालक
तजि कुटुम्ब आपुहिं गृहस्वामी होहिं पापवश रौरव गामी
घातहिं जाहि जन्तु कहँ इहँमा सो रुरुतनु धरि घातहिं तहँमा
सर्पहु ते अति क्रूर स्वभावा रुरु अभिधान जन्तु श्रुति गावा
अपर महारौरव अभिधाना जहँ रुरुगण क्रव्याद समाना
अति विकराल परम परचण्डा भक्षहिं अघी मांसकर खण्डा
पीवहिं रुधिर फाड़ि तनतन्तू रोदन करहिं नारकी जन्तू
देव पितर परिवार अनादर करि करि केवल उदर समादर
केवल उदरम्भर जे लोगा लहहिं महारौरव दुख भोगा
करहिं नारकी हाहाकारा कहरहिं तलफहिं वारंवारा
जीवित पशु पक्षिन कहँ जोई रंधहिं इहँमा अकरुण होई
पुरुषाददपि गर्हित कर्मा करहिं मन्दमति उक्त अधर्मा
भोगहिं कुंभीपाक मझारी असह वेदना उत्पथचारी
यम अनुचर उन कहँ तिहि लहमा तप्त तैल महँ रंधहिं तहँमा
पितर देवता गो द्विज द्रोही कालसूत्र पातित खल ओही
दश शत योजन परिमित भूतल ताम्र धातुमय अति प्रतप्त थल
ऊपर तीव्र रश्मिमय भानू ज्वलज्ज्वालमय अधर कृशानू
यम अनुचर पातित तहँ पापी क्षुधा पिपासा विकल प्रलापी
दह्यमान आनखशिख देहा ऊठत बैठत धावत एहा
लोटत पोटत रहत न थीरा अति उद्विग्न नयन ढर नीरा

परिमित रोम पशुन महँ यावत् भोगहिँ वर्ष सहस दुख तावत्
विना विपत्ति वेद पथ त्यागी पाखण्डी ऐहिक सुख रागी
सो असिपत्र वनान्तर गामी पावहिँ दण्ड पतित महँ नामी
यम अनुचर कर कशा प्रहारा करहिँ पातकी हाहाकारा
इत उत धावहिँ अतिशय त्रस्ता होहिँ अचेष्टित अस्तव्यस्ता
तहँ करवाल युगल दिश धारा वज्र उग्रतर जासु प्रहारा
छिद्यमान तनु तरु ते गिरहीँ चहुँ दिश यम अनुचर ते घिरहीँ
तर्जहिँ गर्जहिँ अनुचर नाना पाप नाम धरि मारहिँ ताना
हा हा मरे मरे कहि पापी होहिँ विमूर्छित अति सन्तापी
राजा राजपुरुष वा कोई दण्ड देहिँ निर्दोषहिँ जोई
देहिँ शरीर दण्ड जो विप्रहिँ शूकरमुख दुख भोगहिँ क्षिप्रहिँ
यम अनुचर तहँ अति बलवाना करहिँ निपीड़ित इक्षु समाना
पीड़ित सर्वावयव प्रलापी आर्तनाद करि मूर्छित पापी
यह निज धर्म हनन फल भोगा तहँ असिपत्र वनस्थित लोगा
जे प्राणी प्रभुकल्पित वृत्ती पर अज्ञात अनिष्ट प्रवृत्ती
हनहिँ ताहि जे मूढ़ अभागी जानि बूझि इन्द्रिय अनुरागी
लब्धारब्ध कर्म फल जीवन जहँ संतोष करहिँ जे सज्जन
अन्धकूप ते गिरहिँ कुकर्मा भूत द्रोह करि को लह शर्मा
पशु मृग पक्षि सरीसृप जूका मत्कुण मशक मक्षिका लूका
जीव जन्तु इत्यादिक नाना करहिँ द्रोह जाकर मनमाना
ते तब तासु द्रोह तहँ करहीँ अन्धकूप महँ जे जन परहीँ

कबहुँ न निद्रा अवसर लहहीं व्यथा समाकुल थिर नहि रहहीं
मिष्ट अन्न आदिक प्रिय भक्षण एकाकी भक्षण दुर्लक्षण
सन्निधानगत शिशु आदिन कहँ धरि टकटकी विलोकहिं जे तहँ
करि विभाग इन कहँ नहि देहीं निस्संकोच उदर भरि लेहीं
पञ्च यज्ञ याजक जे नाहीं गिरहिं जाय कृमि भोजन माहीं
शत सहस्र योजन सुविशाला जहँ कृमिकुण्ड परम विकराला
पापिहिं कृमिगण भक्षण करहीं निशिवासर क्षण भरि नहि टरहीं
दान यज्ञ विरहित तहँ पापी पावहिं दुरित दण्ड अनुतापी
जे जन करहिं विप्रधन चोरी हरहिं ताहि अथवा वरजोरी
हरत अन्य धन जे वा सुख ते घुल संदंश नरक महँ दुखते
अति संतप्त लौह सड़सी कर यमजन दागत ताहि त्वचापर
पुनि पुनि दण्डहिं तनिक न करुणा करिकरि सड़सी पुनि पुनि अरुणा

दोहा

सुनत भयंकर नरक थिति, भयउ पुरञ्जन खिन्न ।
करुणारस आवेश वश, तन मन वच गति छिन्न ॥८०॥

सोरठा

निरखि निरञ्जन धीर, तासु दशा विस्मित भयउ ।
वत्स न होउ अधीर, कहि शिरपर कर धरत भउ ॥७७॥
धर्मराज यमराज, करहिं विशोधन दण्ड ते ।
सुर नर मुनि सिरताज, हर अनुशासन धारि शिर ॥७८॥

औषध बिनु नहि रोग, हटत न पातक दण्ड बिनु ।
विविध कर्मकृत भोग, कवनिहुँ विधि नहि ज्ञान बिनु ॥७९॥
अस कहि प्रकृत चरित्र, कहन लगे गुरु ज्ञाननिधि ।
दण्डी करहिँ पवित्र, उचित दण्ड दै पातकिहिँ ॥८०॥

चौपाई

जे नर करहिँ अगम्यागमना जे नारी परपूरुष रमना
तप्त लौह प्रतिमा संलग्ना तप्त भूमितल तलफहिँ नग्ना
कशा प्रहार वेदना भारी लहहिँ असह दुख स्वेच्छाचारी
कर सर्वाभिगमन जो कोई पविकण्टक शाल्मलि गत सोई
तरु ऊपर ते नीचे गिरहीँ छिद्यमान तनु इत उत फिरहीँ
बरणि सकत सो दुख नहि कोई लिखत लेखनी सकुचित होई
राजा राजपुरुष वा कोई धर्मसेतु भञ्जक जो होई
कहवत स्वयं धर्म अवतारा तदपि तजत आचार विचारा
यम नगरी परिखा दुख धामा नदी विदित वैतरणी नामा
यम जन करहिँ ताहि तहँ मज्जित होत अघी अघ सुमिरत लज्जित
जलचरगण तसु भक्षण करहीँ व्याकुल हृदय तदपि नहि मरहीँ
पूय पुरीष मूत्र शोणितमय मांस-आदि-मय उक्त जलाशय
यम अनुचर पापिहिँ तहँ बाहहिँ उह्यमान सो लहहिँ न थाहहिँ
घृणित घोर जल पलपल घूर्णित महा महा जलचर रद चूर्णित
जे वृषलीपति पश्चाचारा नष्ट शौच आचार विचारा
ते पूयोद नरक महँ परहीँ पुनि पुनि त्राहि त्राहि चिकरहीँ

विष्ठा - मूत्र - पूय - कफ - अर्णव पूयोदाख्य ताहि कस वर्णव
मल मूत्रादिक भक्षण तहँमा अघी करहिँ परवश प्रति लहमा
त्राहि त्राहि करि रोदन करहीँ नहि त्राता यमपुर सञ्चरहीँ
जे दुर्जन पशुयोनि विहारी ब्राह्मणादि जे मृगयाकारी
यज्ञ विना पशु हिंसक जोई प्राणरोध महँ पातित सोई
वाण विद्ध पापिन कहँ करहीँ यम अनुचर उर दया न धरहीँ
सर संकुल जहँ असु अवरुद्धा प्राणरोध भण ताहि प्रबुद्धा
दम्भ यज्ञ पशु हिंसक जोई जाइ गिरहिँ विशसन महँ सोई
यम अनुचर तहँ दण्ड प्रदाना करहिँ यथोचित वेद प्रमाना
खण्ड खण्ड करि काटहिँ गाता उड़त न प्राण पखेरू ताता
पशु हिंसन जिमि दंभी करहीँ ताहि तथा यमजन अनुकरहीँ
जे मद अन्ध मन्दमति मूढ़ा रेतः पान करावहिँ ऊढ़ा
निज तियकहँ द्विज अद्भुत पापी लालाभक्ष गिरहिँ अनुतापी
मज्जहिँ परवश रेतः कुल्या रेतःपान करहिँ मृत तुल्या
यम अनुचर प्रेरित बरजोरी बद्ध मन्दमति पातक-डोरी
राजा राजपुरुष वा जोई अधम दस्यु-वृत्तिक जो होई
गृहदाहक विषदायक पापी परधन लूटत बनत प्रतापी
नरक सारमेयादन नामा ते तहँ दण्ड लहहिँ अघधामा
विंशति अधिक सप्तशत श्वाना दंष्ट्रा जिन कर वज्र समाना
भक्षण तिनकर ते तहँ करहीँ छिन्न भिन्न तनु ते नहिँ मरहीँ
ईर्ष्याऽमर्ष तर्ष कृत दंगा धन विनिमय दानादि प्रसंगा

मिथ्या साक्ष्य प्रदाता जोई लादत पापभार शिर सोई
निपतित नरक अवीचि मझारी भोगत दुरित दण्ड दुख भारी
शत योजन शत उन्नत पर्वत आरोपित तहँ अघी मूकवत्
ऊरध पद अध मस्तक होई परवश गिरत शिखर ते सोई
आरोपण निपतन तसु पुनि पुनि अनुतापित पापी शिर धुनि धुनि
आरोपण निपतन विश्रामा पावि न सकत मूढ़ अघधामा
भग्नीभूत अंग प्रत्यंगा तदपि न निकसत प्राण विहंगा
व्रती व्रतीतर वा जो कोई द्विज जातीय सुरापी होई
नरनारी करि मदिरा पाना भोगत अयःपान दुख नाना
वह्नितापं तरलीकृत लोहा परवश पिवत नराधम ओहा
पदाक्रान्त पापी उर करि करि पियवहिं द्रवितलोह मुख भरिभरि
यम अनुचर करुणारस हीना दण्ड दान विधि बोध प्रवीना
यादृश देहिं यातना तहमाँ उपमा दुर्लभ तादृश इहमाँ
आदरणीय अनादर करहीँ निज नीचत्व न मन महँ धरहीँ
वयोवृद्ध वर्णाश्रमनिष्ठा गुनहिँ न अभिजन तपःप्रतिष्ठा
तिनहिँ क्षारकर्दम महँ जाई यम अनुचरगण देहिँ गिराई
अधोवदन करि ताहि निपातहिँ यम अनुचर पुनि पुनि आघातहिँ
पावि दुरन्त यातना नाना करहिँ पातकी रोदन गाना
जे नरमेध याग इहँ करहीँ नरपशु भक्षण विधि अनुसरहीँ
नरनारी जे नर पशु खादक अकरुण दारुण रस आस्वादक
रक्षोगण भोजन महँ गिरहीँ रक्षोगणते चहु दिश घिरहीँ

रक्षोगण सौनिक इव इहमाँ कोटि शस्त्रते तसु तनु तहमाँ
खण्ड खण्ड करि भक्षण करहीँ आगल उदर रुधिरते भरहीँ
हृष्यमान नाचहिँ अरु गावहिँ धरि आयुध पापी प्रति धावहिँ
विलपहिँ त्राहि त्राहि करि पापी पुनिपुनि कलपहिँ अतिअनुतापी
निरपराध जे मारहिँ वन पशु करहिँ ग्रामपशु वा विरहित असु
वञ्चित उपसृत जन्तु जिजीविषु उपप्रोत करि खल शूलादिषु
क्रीड़न सामग्री करि पीड़हिँ यम अनुचर तिनते तिमि क्रीड़हिँ
शूलप्रोत नरक महँ पापी शूलप्रोत होहिँ सन्तापी
असह वेदना विह्वल गाता अशरण पुनि पुनि रोवहिँ ताता
क्षुधा पिपासा अतिहि सतावहिँ कंक वकादिक उड़िउड़ि आवहिँ
तिग्म तुण्ड ते आहत करहीँ ते हाहा करि भूतल परहीँ
जे अति क्रूर प्रकृति अभिमानी समुद्वेग लह जिनते प्राणी
सर्पादिक इव जग भयदायक विसरि ईश त्रिभुवन अधिनायक
गिरहिँ जाय ते दंदशूक महँ दर्शहिँ विविध विध दंदशूक जहँ
पञ्चानन सप्तानन नाना दंदशूक तहँ काल समाना
विकट रूप पापिन कहँ ग्रसहीँ निरखि दृश्य यम अनुचर हँसहीँ
वटनिरोध नामक नरकस्था लहहिँ दण्ड जस तत्र व्यवस्था
अन्धावट आदिक महँ रुद्धा तिनहिँ करहिँ यम अनुचर क्रुद्धा
आतापित करि भकसी झोकहिँ कटुभाषण करि असि उर भोकहिँ
अभ्यागत अतिथिन कहँ देखी जिनकहँ मनमहँ क्रोध बिसेखी
पापदृशा अवलोकन करहीँ मनमहँ दया तनिक नहि धरहीँ

दहन चहहिँ जनु अभ्यागत जन अरुणनयन जनु निकस अग्निकन
पर्यावर्तन नरक मझारी गिरहिँ स्वधर्म अवज्ञाकारी
ग्रिध्र कंक काकादिक खलगन सहसा तासु उपाड़हिँ नयनन
तिग्म तुण्ड उत्पाटित नैना व्यथित अन्धलह कबहुँ न चैना
आढ्योऽस्मीति अहंकृतिमत्ता विस्मृत परलोकादिक सत्ता
पुत्र कलत्र आदि अभिशंकी अर्थव्यय चिन्तन आतंकी
दान भोग विरहित धनरक्षक स्वयमपि चना चबैना भक्षक
निशिवासर विश्राम न करहीँ धन सञ्चयी धर्म परिहरहीँ
सूचीमुखमहँ होहिँ निपातित यम अनुचर ते अनुपल पातित
छटपट करहिँ असीम कलेशा अंग अंग सूची परवेशा
लै कर तन्तु तासु तन वेधहिँ वायक इव नहि कोउ निषेधहिँ
पापी विकल पाइ दुख दुस्तर होइ विमूर्छित गिरत भूमिपर
क्रम संक्षिप्त नरक थिति भाखी कथ्य कथा कछु गोइ न राखी
अघ अनन्त अरु नरक अनन्ता दण्ड अनन्त भणत श्रुति सन्ता
अघ अनेक करि नरक अनेका गिरहिँ अघी बिनु आत्मविवेका
कहत सुनत यह नरक कथानक हटत अधर्म प्रवृत्ति अचानक
सावधान मन शंकर सेवा करि पावत परमारथ मेवा

दोहा

सुनत पुरञ्जन चकित मति, नरक दण्ड अति घोर।
पर उपकारी जगत हित, करुणावेश विभोर ॥६१॥

सोरठा

प्रणमि युगल कर जोरि, भाखत भउ आनत वदन ।
कृपया कहिय बहोरि, कस न जाहिँ जन यमसदन ॥८१॥
कहन लगे हरषाय, गुरू निरञ्जन वचन सुनि ।
सावधान मन लाय, सुनहु पुरञ्जन वचन मम ॥८२॥

चौपाई

देव पितर आराधन करहीँ मातु पिता आज्ञा शिर धरहीँ
तन मन गुरुजन सेवा करहीँ गुनहिँ अभिन्न देव गुरुवरहीँ
गो-द्विज-जीव-जन्तु हितकारी गिरहिँ न ते नर नरक मझारी
काल देश अरु पात्र विचारक दान धर्म विधि बोधित कारक
सम्पदि विपदि न हर्ष-विषादी ते न लखहिँ नरकाधिप गादी
परधन परनारी महँ तृणमति लहहिँ न ते नर नरक अधोगति
शास्त्रोदित विधि जे आचरहीँ दुर्जन संगति जे नहि करहीँ
वर्णाश्रम क्रम धर्माचारी गिरहिँ न ते नर नरक मझारी
आदरणीय समादर करहीँ यथाशक्ति परिवारहिँ भरहीँ
अन्नदान जलदान परायन ते नहि देखहिँ रवितनयायन
दया धर्म जिनके उर माहीँ दीन-दीनता लखि अकुलाहीँ
यथाशक्ति दुख ताकर हरहीँ रौरवादि महँ ते नहि परहीँ
मृदु हित सत्य वचन जे भाखहिँ छल लवलेश न मन महँ राखहिँ
काम आदि रिपुराजि विजेता जे नहि धर्म विघातक नेता
पर अपकार कदापि न करहीँ रौरवादि महँ ते नहि परहीँ

नहि दंभी नहि वंचक जोई संयमनी यात्रिक नहि होई
नहि दुश्शील न अविधि विलासी ते न होहिँ यमलोक निवासी
चोर डकैत पिशुन नहि जोई विनयी और अनिन्दक जोई
जे न असूया मत्सर भाजन शासन करहिँ तासु यमराज न
तीरथ व्रत जप तप संयम करि शुद्धि हृदय निर्भय जीवन भरि
बड़भागी परमारथ भागी गिरहिँ न नरक विषय रस त्यागी
जे निष्काम कर्म सम्पादक साधक सांख्य योग निष्पादक
आतमबोध जासु हिय उपजय तर भवनिधि करि कालहुकर जय
नवधा भक्ति जासु उर माहीँ पर हिंसा रुचि कबहूँ नाहीँ
परिमित विहित अशन जे करहीँ रौरवादि महँ ते नहि परहीँ
पराभक्ति जाके उर आवै बिनु आयास परमपद पावै
भक्ति प्रकार कहब मैँ गाई पुनि उपदेश काण्ड महँ जाई
धर्म कर्म करि सुरपुर लहहीँ करि अधर्म यमपुर दुख सहहीँ
सत्त्व रजस्तम त्रिगुण क्रमागत ऊरध मध्य अधोगति पावत
निर्गुण भवबन्धन ते छूटै परमानन्द कन्द रस लूटै
दैवी और आसुरी सम्पति वर्णन जासु कियउ राधापति
प्रथमा बन्ध निवारण कारण करत द्वितीया बन्धन धारण
दिग्दर्शन करि कछु मैँ भाखी व्यासादिक मुनि जाकर साखी
प्रकृत चरित्र सुनहु मन लाई कहि सुनि जाहि काल टरि जाई
मृत्युञ्जय भजि मृत्यु दुराई जो भक्तनकर छमहिँ बुराई
आशुतोष जाको श्रुति गावै भक्त मनोरथ आशु पुरावै

पूजिय प्रणमिय गाइय ताही ध्याइय जापिय सेविय ताही
संकीर्तन कीजिय नित तासू कीरति सुनिय बनिय तसु दासू

दोहा

सुनत पुरञ्जन मुदितमन, रोम पुलक भर गात्त ।
कहत भयउ कर जोरि युग, कियउ कृतारथ तात्त ॥८२॥

सोरठा

भाखिय प्रकृत चरित्र, करुणाकर करुणायतन ।
भउ यह दास पवित्र, प्रभुकृपयासुनिचरितशुचि ॥८३॥
कहत भयउ मुसुकाय, गुरुवर अग्रिम चरित शुचि ।
करि प्रणाम शिर नाय, शिष्य श्रवण तत्पर भयउ ॥८४॥
नानाविध उपदेश, करि बनवासी राम कहँ ।
करुणासिन्धु महेश, गाढ़ालिंगन कियउ तसु ॥८५॥
सीतापति अवधेश, प्रभु आलिंगन गलित श्रम ।
व्यपगत सकल कलेश, शंकर अंतर्हित भयउ ॥८६॥

चौपाई

जनवत्सल लीला तनुधारी मधु-मुरमर्दन अवधविहारी
तजि शर एक वालि नृप मारे सुग्रीवहिँ गद्दी बैठारे
वानर भालु वीर रणधीरा द्रुतगतिचारी यथा समीरा
चौदह भुवन खोज करि थाके पता न पायउ जनकसुताके
हनूमान अंगद आदिक भट जात भयउ दक्षिण अम्बुधि तट
तहँ सम्पाति जटायु सहोदर कहे रुचिरतर वचन मनोहर

कञ्चन कोट घटित पुर लंका तहँ थित जनकसुता सातंका
शत योजन आयत सरितापति ता महँ जलचरगण भीषण अति
पवनावर्त तरंग भयंकर तसु लंघन करि सक जो कपिवर
सो सीता दर्शन करि सकई खबरि तासु रघुवरकहँ कहई
लाँघि पवनसुत लंका गयऊ सीता दरश कृतारथ भयऊ
उपवन मथि रक्षक संहारे अक्षयकुमर प्रभृति भट मारे
रावण मद मथि लंका जारे सीता अनुमति पाइ पधारे
अंगदादि मिलितनमनसुधि भुलि आलिंगन आदिकभउ हिलिमिलि
सीतापति कहँ खबर जनाये सबमिलि सिन्धुतीर चलि आये
मार्गदान याचक प्रभु भयऊ अनुनय विनय विषय मन दयऊ
नहि संमुख आयउ सरितापति भयउ कोशलाधीश कुपित अति
राम धनुर्धर सर संधाने तब समुद्र निज गर्व भुलाने
कियउ क्षमापन कर युग जोरी भाषे बचन सयुक्ति बहोरी
कपि नल नील लब्ध वरदाना करैं सेतुबन्धन बलवाना
सब मिलि तदुपरि करिय पयाना हनिय जाय दशवदन नदाना
राम जाय रावण रिपु मारे तसु अनुजहिँ गद्दी बैठारे
सीता सहित अवधपुर गयऊ भरत मनोरथ पूरित भयऊ
कौशल्यादिक हर्ष बखानत कहि असीम कवि कोविद हारत
गुरुवर कियउ राज अभिषेका प्रचरित जहँ तहँ ज्ञान विवेका
भयउ यथोदित धर्म प्रचारा राम राज्य अविरल सुखधारा
सुनि अपवाद प्रिया निज त्यागी ता दिन ते प्रभु भयउ विरागी

मर्यादा पुरुषोत्तम भूपा अश्वमेध मख कियउ अनूपा
पायउ दुस्सह लखन वियोगा मेटि न जाय कालसंयोगा
गउ साकेत लोक रघुनाथा नगर निवासिन कहँ करि साथा
प्रासंगिक यह कथा सुनाई कहत सुनत सब पाप नसाई

दोहा

सुनत पुरञ्जन मुदितमन, भाषे अति हरषाय ।
मोहि कृतारथ कियउ गुरु, पावन चरित सुनाय ॥६३॥

छन्द

होय उऋण न कोउ गुरु ते यतन कवनिहुँ विधि करै ।
यदपि सब धन धाम परिजन तासु चरणनपर धरै ॥
जासु वचनामृत पियत नर विषय विष ते नहि मरै ।
जासु करुणा पोतपर चढ़ि शिष्य भवसागर तरै ॥

चौपाई

तहँ बड़ छोट भाव नहि भासित अद्वय भाव जहाँ परकाशित
तदपि नाथ व्यवहार विरोधा तजि बड़ छोट भाव अनुरोधा
स्वामी सेवक गुरु अरु चेला सागर डाबर पर्वत टीला
करी खरी अणु औ ब्रह्मण्डा शशि तारा दर्वी अरु हण्डा
इत्यादिक महँ समता मानत आपामर असमञ्जस जानत
विधि हरि हर प्रसिद्ध जगदीश्वर कहिय इनहुँ महँ कौन अधीश्वर
सुनि गुरुदेव कहन तब लागे प्रभु पद पद्म प्रेम परिपागे
कथा पुनीत सुनहु तुम ताता एक समय मुरमथन विधाता

कियउ परस्पर वाद विवादा काल पाइ नहि काहि प्रमादा
कहत भयउ निज निज उत्कर्षा उभय हृदय महँ उदित अमर्षा
लिंग एक भूतल ते निकसा उभय बुद्धि महँ विसय विकसा
उच्चस्वर पुनि भइ नभवाणी सुनी ताहि तहँमा सब प्राणी
अधोदेश अरु ऊरध देशा जाहु उभय मम सुनि आदेशा
लिंग अन्त करि जो यहँ आवै प्रथमहिँ सो उत्कृष्ट कहावै
अधोदेश मुरमर्दन गयऊ ऊरधगामी श्रुतिमुख भयऊ
अतिशय दूर गयउ श्री श्रीपति मरुत वेगगामी अति द्रुतगति
तदपि न तासु अन्त सो पायउ देव बहुरि उत्साह बढ़ायउ
एहि विधिकरि पुनिपुनि उत्साहा तदपि न पायउ हरि तसु थाहा
थकि झखि देव तहाँ फिरि आयउ प्रभु लीला अद्भुत दरसायउ
गयउ चतुर्मुख ऊरध देशा दूर गमन करि पायउ क्लेशा
बीचहि पाइ केतकी ताता भक्त समर्पित देव विधाता
लिंगोपरि लहि मोहि विधाता लायउ कहु केतकि यह बाता
कहे ताहि सुनु वचन हमारा कारज करेहु कथन अनुसारा
कियउ केतकी अंगीकारा भावीवश नहि कियउ विचारा
जो विधि चौदह भुवन विधाता सोऊ मोह विवश भउ ताता
जब लगि शंभु कृपा नहि होई मोह विजय करि सकत न कोई
रवि आरोग्य वह्नि धन देहीँ पञ्च अविद्या हर हरि लेहीँ
चली केतकी होइ व्यवस्थित अरु विधि मिथ्याबुद्धि अवस्थित
लाये लिँग शिखर ते फूला हम लखि सके न हरि तसु मूला

अत्र केतकी साक्ष्य प्रदात्री लोचन गोचर सौरभ गात्री
लिंग शिखर ते लायउ मोही कही केतकी धर्म विछोही
मिथ्या वचन केतकी भाखी नहि अधर्म शंका मन राखी
प्रादुर्भूत शंभु अस बोले शिर कम्पन अहि कुण्डल डोले
लोक पितामह परम प्रतिष्ठित वैदिक धर्म कर्म परिनिष्ठित
लखि आचार जासु सब प्रानी होत तदनुगत समुचित जानी
सोउ कहत कस मिथ्या वानी नहि कलंक शंका मन आनी
धिक्कृति भाजन भउ जग माहीँ सित पट दाग असित पट नाहीँ
विधि गञ्जन भउ अस बहुभाँती भयउ मलान तासु मुख काँती
तब केतकी वदन हर हेरे रुधिर अरुणतर नयन तरेरे
त्रास हतास केतकी भयऊ अति विह्वल मूर्छित होइ गयऊ
भाखत भउ समयोचित वाणी छल प्रपंच लखि डमरूपाणी
मिथ्या वचन कही तुम जाते त्याग तुम्हार किये हम ताते
मम अर्चन महँ भई निषिद्धा मिथ्या भाषण अघ अनुविद्धा
मम अर्चन महँ अर्पण तोरा करि वनिहहिँ अपराधी मोरा
मुरमर्दन कहँ जग बड़ मानत वेद वदत ते गुरुतर जानत
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नामा उत्पादक रक्षक लयधामा
उत्तर क्रम कृत वड़पन हममँ वस्तु अभिन्न भेद विभ्रममँ
मदपेक्षया भाव लघु इनकर मत्कृत नियमन ऊपर जिनकर
महा प्रलय सबकर संहारा मम कर कलित विदित संसारा
विधिते हरि बड़ हम बड़ हरिते हय ते करि बड़ हरि बड़ करिते

जो बड़ जनकर कर अपमाना सो जन भोगत संकट नाना
सुनि श्रुतिमुख प्रभुकी असवानी पायउ मन महँ परम गलानी
कियउ क्षमापन विविध प्रकारा त्राहि त्राहि कहि वारंवारा
नतिनुतिविनय जोरिकर कियऊ क्षमा समुद्र क्षमा कहि दियऊ
तब समुझाय बुझाय महेशू हरण कियउ तसु ग्लानि कलेशू
मुरमर्दनहिँ अमिय रस सानी पञ्चवक्त्र प्रभु भाखी वानी
श्रीपति जगतीपति प्रभु आपू उद्घोषत अस वेद कलापू
विश्व भरण पोषण संरक्षण राउर इच्छा कलित प्रतिक्षण
प्रजा प्रजापति आदिक जेते दैवाधीन विचारिय तेते
अब क्षन्तव्य चतुर्मुख दोषा क्षणभंगुर सज्जनकर रोषा
अस प्रसन्न मन विधि हरि शंकर आलिंगन भउ करत परस्पर
नहि केतकी भई प्रभु सम्मुख लज्जा परवश हृदय अधोमुख
लखे न शंकर लोचन कोरा क्रोधाविष्ट केतकी ओरा.

दोहा

करि नाना विध बतकही, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
प्रस्थित भउ निजनिज सदन, जहँनहि व्यापत क्लेश ॥६४॥

सोरठा

विधि हरि शंभु चरित्र, कहत सुनत संकट कटत ।
अन्तःकरण पवित्र, अनायास भवनिधि तरत ॥८७॥
हर उत्कर्षक ज्ञान, यह चरित्र कहिसुनि लहत ।
प्राप्त ब्रह्म विज्ञान, लहत अभय कैवल्य पद ॥८८॥

सुनि यह चरित अतृप्त, शिष्य पुरंजन मुदितमन ।
भावुक भक्त अदृप्त, पूछत भउ कर जोरि युग ॥८९॥

चौपाई

सुवरण वरण सुरभि अति सुन्दर जासु समादर करत पुरन्दर
चम्पक सोउ विहित कस नाहीँ कहु गुरुवर शिवपूजन माहीँ
सुनि गुरुवर तब भाखन लागे प्रभु पद पद्म प्रेम रस पागे
गोकर्णेश लोक सुखदायी दक्षिण दिशिथित हर गिरिशायी
जन्म जन्म कृत पातक नाना जासु दरस कृत भस्म समाना
दर्शन हेतु गयउ तहँ नारद परमपूज्य श्रुति शास्त्र विशारद
लखे एक चम्पक तरु मगु महँ मिले एक अरु भूमिदेव तहँ
लखि नारदहिँ भयउ थित भूसुर वीणानाद सुनत विस्मित उर
भाखत भयउ ताहि मुनिराजा आयउ यहाँ विप्र केहि काजा
तोड़ि कुसुम शंकरहिँ चढ़ैहौँ मनवाञ्छित फल तत्कृत पैहौँ
नहि मुनिवरहिँ कहे अस वचना गुप्त कियउ कारण सो अपना
वंश पात्र करगत लखि ताकर पूछत भउ नारद वीणाधर
कारण कवन पात्र यह कर महँ कहे विप्र सुनि तेहि अवसर महँ
भ्रमण मोर भिक्षार्थ मुनीश्वर कारण कार्य पिता जगदीश्वर
कठपुतली इव जनता सारी सूत्रधार इव देव पुरारी
सबहिँ नचावत गिरिजारमना घटी यन्त्र इव गमनागमना
स्वारथरत परमारथ वानी छली विप्र भाखी जिमि ज्ञानी
नहि समक्ष मुनिवरकर सोई तोड़े चम्पक शंकित होई

चम्पक तोड़ि समर्पण करिहहिँ प्रभुहिँ पुण्यबल नृप मन हरिहहिँ
वृत्तिच्छेद मोर संभावी विप्र विचार भयउ वश भावी
गोकर्णेश दरश अभिलाषी प्रस्थित मुनि जयगणपति भाषी
प्रभु दरशन लहि भयउ कृतारथ लहि पुरहर पद भक्ति पदारथ
बहु विधि शंभु समर्चन कियऊ प्रभु प्रसाद मस्तक धरि लियऊ
प्रत्यागमन कियउ मुनिराजा कहि बम्बम् बजाय गलबाजा
मारग मध्य मिले द्विज सोई फिरे शंभुपूजन करि जोई
शंकित हृदय कहन द्विज लागे निरखि देवऋषि नारद आगे
मिली आज भिक्षा नहि मोही ग्रहण किये झखि निज गृहपथ ही
मुनिवर ध्यानावस्थित भयऊ द्विज-कापट्य जानि द्रुत गयऊ
नारद चम्पक तरु तल आये प्रासंगिक कत प्रश्न सुनाये
कपटी कुटिल विप्र सो चम्पक कहँ गउ कहहु साधु हिय कम्पक
कतिपय कुसुम तोड़ि लै गयऊ शंकर आराधन मन दयऊ
सुनि चम्पक तरु भाखन लागे विप्र निवारित अनृत अभागे
कौन विप्र नहि जानउँ ओही सुमन विषय नहि अवगत मोही
कौन आपु कर वीणाधारी विस्मय परवश बुद्धि हमारी
मुनिवर तबहि चले रिसिआई काल कुटिल गति टारि न जाई
आयउ मुनि शिवमन्दिर जहँमा चम्पक कुसुम गिनत भउ तहँमा
एकाधिक शत सुमन गिनाये एक अन्य द्विज तहँ दरसाये
परिचय प्रश्न कीन्ह मुनिराया सुनि सोऊ अस वचन सुनाया
आवि एक द्विज यहँ प्रति वारा चम्पक अर्पत सौरभ सारा

चम्पक चय यह तासु समर्पित जो द्विज धेनु अहित अति दर्पित
चम्पक अर्पण पुण्य प्रभावा आपुन वशगत नृपहिँ बनावा
स्वारथ अन्ध द्विजाधम ओहू करत समस्त भूत विद्रोहू
हम केवल परमारथ इच्छुक भजहिँ उमापति ब्राह्मण भिक्षुक
अनपायिनी मुक्ति तव अस्तू ज्ञानगम्य परमातम वस्तू
आशीर्वाद दीन्ह मुनिराजा कृपया जासु सिद्ध सब काजा
मुनिवर नारद प्रभु ढिग आये नति नुति करि पुनि वचन सुनाये
प्रभुपद चम्पक अर्पणकारी भयउ विप्र सोइ अत्याचारी
प्रभुप्रसाद लहि नृपवशकारी गो-द्विज-साधु-वृन्द-अपकारी
दानाध्यक्ष ताहि नृप कियऊ आधिपत्य नाना विध दियऊ
स्वीय और परकीय न जानत गुरु अपमान पाप नहि मानत
दया दुष्ट प्रति दुःख निदाना उरग उदर गो दुग्ध समाना
प्रभु चम्पक अर्पण परितोषित करत द्विजाधम कहँ परिपोषित
सुनि अस नारद मुनिकर वानी कहन लगे प्रभु त्रिभुवनदानी
चम्पक पुष्पार्पण परभावा वशीकरण कहि मुनिगण गावा
चम्पक महिमा सबहिँ जनायउ विप्रवशंगत नृपहिँ बनायउ
तदपि दण्ड यह पाइहि विप्रा फलिहि समुत्कट अघतरु क्षिप्रा
परउपकृति परअपकृति नारद सुखद दुखद मन शास्त्रविशारद
द्रोही सपनहुँ सुख नहि पावत शरण गये नहि कोउ बचावत
श्रीशंकर अरु नारद मुनिवर संभाषण भउ करत परस्पर
तावत् एक ब्राह्मणी आयउ निज दुर्गति शंकरहिँ सुनायउ

हा हा हता हता हम स्वामिन् तुम जानत सब अन्तर्यामिन्
सुनहु नाथ मम दुर्गति कारण दीनबन्धु प्रभु करहु निवारण
अंग विहीन पंगु मम स्वामी निज प्रारब्ध भोग अनुगामी
कन्या एक नाथ गृह माहीँ वैवाहिक संभृति कछु नाहीँ
लियउ तदर्थ परिग्रह भर्ता एक अधम द्विज तद्धन हर्ता
उभयमुखी गोदान करायउ सोइ दानफल नृपहिँ सुनायउ
कृत गोदान मोर पति पायउ सो खल अरु बहु द्रव्य दिलायउ
माँगत अर्थ भाग सो पापी दानमध्य श्रुति मत अपलापी
गो विभाग स्वीकृत कस करऊँ करि दुष्कर्म नरक कस परऊँ
तजत न दुष्ट दुराग्रह अपना मूढ़ न जानत जग यह सपना
पीड़न चहत अधम सो हमकहँ आइउँ त्राण भिक्षुकी प्रभु पहँ
प्रति दिन सो द्विज इहँमा आवत चम्पक सौरभ प्रभुहि रिझावत
लेहिँ न निन्द्य दान पति मोरा ग्रहण करायउ सो बरजोरा
दीन वचन सुनि नारद मुनिवर भाखन लगे प्रणमि डमरूधर
जो ईदृश पातक आगारा विगत विचार विगत आचारा
तत्कर कृत पूजन किमु स्वामी ग्रहण योग्य जो दुर्जन नामी
को अस दुष्ट नाथ जगतीतल करत उपद्रव जो खल सब थल
राज परिग्रह पातक उत्कट गो विभाग अघ परम समुत्कट
गो विभाग भोगी जो कोई प्रायश्चित्त तासु कस होई
गोमाता महिमा श्रुति गावै वरणत पण्डित पार न पावै
दक्षिण शृंग जह्नु मुनि कन्या वाम शृंग कालिन्दी धन्या

तदुभयमध्य तपोधन मित्रा सरस्वती अभिधान पवित्रा
त्रिभुवनधाता असकंधस्थित बन्धु वर्गयुत रुद्र मध्यथित
कटि देशस्थित श्रीपति जासू महिमा कहत थकित कवि तासू
अपर अनेक सुतीरथ जेते गो पश्चाद् भागथित तेते
ऋषिगण दक्षिण कुक्षि निवासी वाम कुक्षि सुरगण सुखरासी
अधो देशगत नदी अनेका खुरगत श्रुतिगण गूढ़ विवेका
वारिधि वृन्द पयोधर देशा अनुचर जसु हरि नटवर वेशा
कवि गुण गावत खर्वित गर्वा गोतनु जगत प्रतिष्ठित सर्वा
गो परदक्षिण कर जो कोई पृथ्वी परदक्षिण फल होई
सुवरण पूरित पृथिवी दाता गोदाता समफल विख्याता
करि गोदुग्ध गंगजल पाना लहहिँ तुल्य फल वेद बखाना
जो गोमूत्र-पान जन करई पातक पुञ्ज तूल इव जरई
जो जन कर गोमय आहारा पातक हर तसु विषधरहारा
गो असपरस करहिँ जे प्राणी होहिँ पवित्र कहत श्रुति वाणी
जे गोदान करहिँ भूदाना और करहिँ जे विद्यादाना
उनहिँ दिवाकर सुत भय नाहीँ निर्णय अस निगमागम माहीँ
एकोत्तर शत कुल निस्तारा उक्त दान फल वेद पुकारा
कृच्छ्रादिकहुँ न जो अघ नाशै सोऊ अघ गोदान विनाशै
प्रायश्चित्ती जो नर होई करि गोदान शुद्ध सो होई
दरस परस दानादिक महिमा अकथनीय गोगत-गुरु-गरिमा
स्वर्ण श्रृंग महँ रूपक खुरमहँ ताम्र पृष्ठमहँ यथा विहित जहँ

लोचन युगल प्रवाल समन्वित सकल अंग पट अम्बर अन्वित
दोहनपात्र कांस्यमय सुन्दर शोभनशील नवीन वत्सतर
तरुणी रूपवती बहु दुग्धा निरखि जाहि दर्शक मन मुग्धा
देश काल अरु पात्र समागम कहत प्रशस्त जाहि निगमागम
ई दृग् धेनु दान कर जोई ताहि अलभ्य वस्तु नहि कोई
गो कन्या श्रुति विक्रय कारी लहत अधोगति कह श्रुति चारी
राउर अनुकम्पा यदि होई महा महापापी तरि जाई
गो-द्विज-देव द्रोह जो करई सो राउर रोषानल जरई
गो सम्बन्धी मूल्य विभागा करि सुख लहत न कबहुँ अभागा
चहत द्विजाधम मूल्य विभागा दुर्दश पंगु विप्र शिर लागा
लै चम्पक सो प्रभुहिँ रिझावत प्रभु प्रसाद लहि नृपहिँ नचावत
सेवक दूषण स्वामी दूषित सेवक भूषण स्वामी भूषित
भक्त कहावत करत कुकर्मा पियत सुरा जिमि ब्राह्मण शर्मा
सुनि पशुपति नारद मुनि बानी कहन लगे हँसि त्रिभुवनदानी
पावक माहँ परत जरि जाई तहँ शुचि अशुचि विचार न भाई
कत कत पतित पावि मम भक्ती उद्धृत भयउ मोर यह शक्ती
गुणनिधि आदि निदर्शन नाना अढरन ढरन मोहि जग जाना
चम्पक कुसुम समर्पण महिमा अरु हमार पदरति गुरु गरिमा
अब लगि उबरि गयउ द्विज एहू अब भोगिहि दुख नहि सन्देहू
गो-द्विज अपकारक जो होई ताहि बचाय सकत नहि कोई
जो रुचि होय करहु सो भाई मम अनुरोध राखि मुनिराई

भक्तवछल हम कहँ सब कहई द्विज कोपानल काहि न दहई
राखहु उभय पक्ष मर्यादा हरहु दुष्ट ब्राह्मण उन्मादा
भोगि दण्ड सद्गति पुनि पावै भजन हमार वृथा नहि जावै
दया धर्म कर मूल कहावै विप्रहिँ सत्त्वगुणी श्रुति गावै
दया प्रधान सत्त्वगुण भाई तजिय न दया कबहुँ मुनिराई

छन्द

प्रथम आश्रम वेदव्रत नित गृही दानादिक करै ।
तपश्चर्यारत वनाश्रम विषय मग पग नहि धरै ॥
सार्वभौमा महाव्रत इति जो अहिंसा मुनि कहै ।
तत्परायण चरम आश्रम परम सुख इत उत लहै ॥

दोहा

क्षमा परायण साधु नित, क्षमासार विख्यात ।
साधु शिरोमणि देवऋषि, क्षमा न विसरहु तात ॥८९॥

सोरठा

सुनि नारद मुनिराय, रुचिर मनोहर प्रभु वचन ।
पुनि पुनि शीश नवाय, जात भयउ चम्पक निकट ॥९०॥

चौपाई

जाय देवऋषि पूछत भयऊ ताहि जाहि दुर्दिन नियरऊ
तरुवर सत्य वचन तुम भाखहु कपट भाव अब दूर दुरावहु
कौन कुसुम तुअ प्रतिदिन तोड़त नृपबल दुर्बल कण्ठ मरोड़त
करत उपद्रव जो जब चाहत दीन दुखी दिन राति कराहत

तरु पुनि मिथ्या भाषण कियऊ भावीवश द्विज नाम न लियऊ
शंकर स्वरस सुमिरि मुनिराया विप्राधम कहँ शाप सुनाया
ई दृश गुणी होय तुम चम्पक दैवविवश भउ मिथ्या जल्पक
सत्य प्रभाव न सब जन जानत जाननहार परम पद पावत
जो सर्वदा सत्यपर रहई सर्व सिद्धि तसु करगत अहई
सूरज चन्द्र सत्य आधारा नियत काल कर गगन विहारा
क्षित्यादिक सब सत्य अधीना निम्नगमन आदिक परवीना
दिग्पतिदिग्गज ऋतुअयनादिक शेष नाग अरु कच्छप आदिक
सत्यबद्ध सब निज निज कारज करहिँ सत्यपथ तजहिँ न आरज
श्रुतिशिर ब्रह्महिँ सत्य बतावैं सत्यसंध जगदीश कहावैं
सदा सत्य भाखत जन जोई आयुर्वृद्धि अवश तसु होई
सत्य मात्रभाषी जन जोई शापानुग्रह क्षम सो होई
सत्य सरिस नहि कोऊ धर्मा मिथ्या सरिस न कोउ अधर्मा
कहउँ कहाँ लगि सत्य प्रभावा निगमागम जसु थाह न पावा
तुम असत्य भाषण फल लहहू शिवपूजन अयोग्य बनि रहहू
अद्य प्रभृति शिवपूजन माहीँ फल भागी तुअ अर्पक नाहीँ
अवश निषिद्ध कर्म दुख भागी भावीवश मम आज्ञा त्यागी
भउ अस चम्पक कुसुम निषिद्धा शिव पूजन महँ परम प्रसिद्धा
ताहि समय सो द्विज तहँ आयउ जो मुनिवरकर कोप बढ़ायउ
निरखि ताहि मुनि भाखत भयऊ जासु शाप अवसर नियरयऊ
नृपकर दान दियाय अभागा बाँटि लियउ तुम करि समभागा

गोविभाग-पातक अति भारी सोउ कियउ तुम अत्याचारी
चम्पक बल वश करि शंकर कहँ कियउ उपद्रव निर्भय जहँ तहँ
प्राचित विनु नहि पातक शुद्धी विना दण्ड नहि दोष विशुद्धी
राक्षस होहु द्विजाधम अबही भोगै निज कृत सुख दुख सबही
सुनत शाप द्विज भउ भय विह्वल क्षमा क्षमा कहि पतित चरण तल
भाखत भउ नारद भगवाना मृदुल हृदय नवनीत समाना
सुमिरि हृदय महँ शंकर उक्ती कहन लगे मुनिवर्य सदुक्ती
भानु उदय वरु पश्चिम होई वह्नि विना वरु बनै रसोई
वारि विन्दु वरु गनि सक कोई वचन हमार मृषा नहि होई
उपल तरै विहरै नभ नैया शाखामृग वरु बनै गवैया
गुरु विनु ज्ञान लहै वरु कोई वचन हमार मृषा नहि होई
होहु विराध नाम तुम दानव राक्षस वृत्ति प्रवृत्ति अमानव
पाइ रामपद पंकज दरशन तत्कर मृत धृत रुचिर दिव्य तन
शंकर भक्ति प्रभाव द्विजाधम बहुरि पाइहौ गति अति उत्तम
भयउ तुरत द्विज राक्षस रूपा विकटानन विकटाक्ष विरूपा
गोकर्णेश निकट मुनि गयऊ प्रणमि चरित सब भाखत भयऊ
आयसु लहि निज धाम सिधायउ हम यह चरित यथामति गायउ

दोहा

को दयालु शंकर सरिस, जो प्रभु भक्त अधीन ।
भक्त सहायक सर्वदा, दीनोद्धारधुरीन ॥६६॥

सोरठा

अत्याचारी दुष्ट, विप्र अघौघालय कुटिल।
ताहूपर सन्तुष्ट, अन्तकाल सद्गति दियउ ॥९१॥
शंकर दीनदयाल, कथमपि सेवन करहिँ जो।
ताहि न अन्तिमकाल, बिसरहिँ करुणासिन्धु प्रभु ॥९२॥
कहहिँ सुनहिँ जे तात, यह चरित्र पावन परम।
सायंकाल प्रभात, मध्य दिवस ते विगत अघ ॥९३॥

चौपाई

पुलकित गात प्रेम जल लोचन पुनि पुनि सुमिरि मारमदमोचन
करुणामय श्रीशंकर गाथा अति पुनीत जिमि सुरसरि पाथा
शंभु कथामृत पान पिपासू परम गूढ़ महिमा जिज्ञासू
पुनि पुनि प्रणमि पुरञ्जन गुरुपद भाखत भयउ भक्ति रस गद्गद
गुरुवर प्रभु चरितामृत सुनिसुनि श्रवण लालसा बाढ़त पुनि पुनि
प्रभु चरितामृत पान कराइय नाना विध सन्देह नसाइय
गुरु बिनु कौन शिष्य सुखकारी ज्ञानविहीन-दीन उपकारी
द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग कथानक भउ प्रभु आविर्भूत अचानक
करुणा वरुणालय गुरु भाखिय गूढ़ रहस्य गोइ नहि राखिय
सुनत निरञ्जन अति हरखाये पुलक गात लोचन जल छाये
सुमिरि सुमिरि प्रभु वत्सलभावा प्रेम मगन सुधि बुधि बिसरावा
प्रेम प्रसाद मनोगति सुस्थिर त्राहित्राहि भाखत भउ फिर फिर
सुमिरि साम्ब शिव अनुपम जोरी तदुभय चरित कथामृत बोरी

कथा सुनावत भयउ निरञ्जन सुनत भयउ थिर हृदय पुरञ्जन
द्वादश ज्योतिर्लिंग प्रसिद्धा गुण गावहिं सुर नर मुनि सिद्धा
क्रमिक कथा अब तोहि सुनावउँ शंकर सुयश यथामति गावउँ
कर्मभूमि शुचि भारत खण्डा अनुपमेय थल भरि ब्रह्मण्डा
तहँ सौराष्ट्र देश अति पावन परम रम्य मुनिजन मन भावन
ज्योतिर्लिंग सोमनाथाख्या तहँ थित त्रिभुवनमहँ जसुव्याख्या
प्रादुर्भाव कथानक तासू तोहि सुनावउँ जन जिज्ञासू
कहौं महातम मति अनुसारा को कवि लहि सक कहि तसु पारा
सुता सताइस अश्विन्यादिक अरु जौतुक मणि माणिकआदिक
वैवाहिक मंगल करि नाना चन्द्रहिं दियउ दक्ष भगवाना
शोभमान भउ उभय परस्पर पति पत्नी अति प्रेम पुरस्सर
जिमि मणि सुवरण पाइ विराजै सुवरण मणि लहिजिमि छविछाजै
भावी विवश चन्द्रमा भयऊ अकर्तव्य तत्पर ह्वै गयऊ
अश्विन्यादि निरादरकारी सतत रोहिणी संग विहारी
करत भयउ न्यूनाधिक प्रीती उनमहँ शिष्ट विनिन्दित रीती
अश्विन्यादिक पत्नी दीना गईं पिता गृह वदन मलीना
सब वृत्तान्त पितापहँ भाखी पति कुत्सित कृति गोइ न राखी
दक्ष तुरन्त चन्द्र ढिग आये कहि बहु भाँति उनहिं समुझाये
आश्रित महँ न्यूनाधिक बुद्धी प्रकटत अन्तःकरण अशुद्धी
उत्तम कुल महँ जसु अवतारा सोहत कस तसु अस अविचारा
न्यूनाधिक मति करहु न ताता तुल्य सभनकर तुमसे नाता

विनय भाव करि जामाता प्रति गयउ गगनमग स्वगृह प्रजापति
श्वशुर वचन आदर नहि कियऊ अपयश भय सहसा तजि दियऊ
भउ रोहिणीवशीकृत चन्दा कामासक्त मूढ़ मतिमन्दा
भावीवश सब सुख दुख भोगा वशभावी संयोग वियोगा
आपुहिँ मानि महाबलशाली शशि मदअन्ध न तजी कुचाली
दक्षसुता पुनि पितु गृह जाई निज पति कुत्सित चरित सुनाई
प्रकुपित दक्ष चन्द्र ढिग आये ताहि यथोचित वचन सुनाये
हम बहुविध समुझायउँ ताता मानी मोर एक नहि बाता
जामाता अरु पुत्र समाना तथा श्वशुर पितु वेद बखाना
मोर अनादरकर फल भोगी होहु अत्रिसुत द्रुत क्षयरोगी

दोहा

क्षयरोगी भउ इन्दु द्रुत, दक्ष शाप परभाव।
भयउ दीनतर शीतकर, त्यागि अहंकृति भाव ॥६७॥

सोरठा

किंकर्तव्यविमूढ़, भउ मृदुकर निरुपाय तब।
ईश नियन्त्रण गूढ़, अदलत बदलत जीव थिति ॥९४॥

चौपाई

हाहाकार करन सुर लागे शशि क्षय कृत अनर्थ लखि आगे
समय ज्ञान रवि चन्द्र अधीना लखि दुस्थिति भइ जनता दीना
करत विनय भउ शरणापन्ना विधु सुरमुनि प्रति व्याधिविपन्ना
सब मिलि चतुरानन ढिग गयऊ प्रणमि प्रणमि सम्मुख थित भयऊ

नति नुति करत भये सब कोई कहे पितामह सस्मित होई
कहि कुशलात कहहु पुनि मोही भयउ कौन सुर मुनि विद्रोही
कारण कौन यहाँ सब आये आनन प्रभा विहीन बनाये
त्राहि त्राहि कहि सुर मुनि सबही सब वृत्तान्त सुनायउ तबही
सुनि विषाद युत विधि है गयऊ चन्द्र कुचालि विनिन्दत भयऊ
सदा कुवृत्ति निरत यह चन्दा लोक लाज विरहित मति मन्दा
गुरुपत्नी हरि कियउ कुवृत्ती भउ देवासुर समर प्रवृत्ती
कथमपि समर निवारण कियऊ वचन हमार मानि सो लियऊ
तारा गर्भवती तहँ भयऊ जानि रुष्ट सुरगुरु है गयऊ
गर्भ त्याग तारा यदि करई तब हमते स्वीकृत होइ सकई
बालक जन्म भयउ तत्काला भउ विधु-गुरु विरोध विकराला
मम सुत मम सुत भाखे दोऊ करि न सकै निर्णय तहँ कोऊ
चन्द्रपुत्र इति तारा भाखी मोर वचनते गोइ न राखी
लै सुत चन्द्र गयउ निज लोका कथमपि घोर कलह मैं रोका
कथमपि मोरि कथा गुरु मानी पत्नी ग्रहण कियउ सहि ग्लानी
चन्द्र कुचालि अपरिमित अहई वरणि पार तसु नहि कोउ लहई
नहि गत अर्थ सोच अब समुचित विधु क्षयरोग उपेक्षा अनुचित
जाय प्रभास शंभु आराधन करै चन्द्र क्षय मुक्ति प्रसाधन
करि मृत्युञ्जय मन्त्र विधाना करै प्रसन्न शंभु भगवाना
सुनि श्रुतिसुख आयसु मुनि देवा किन्नर गन्धर्वादिक जेवा
विधिहिं प्रणमि सब कीन्ह पयाना मगु महँ शंभु प्रताप बखाना

गयउ देश सौराष्ट्र सुपावन क्षेत्र प्रभास साधु मन भावन
गर्त खनन सब मिलि तहँ कियऊ तीरथ आवाहन करि दियऊ
सरस्वती आदिक अति पावन महिमा वेद करत प्रतिपादन
इन्द्र इन्दु आदिक सुर वृन्दा दक्ष प्रजापति सहित मुनिन्दा
सोमनाथ सोमेश्वर नामा कियउ लिंग थापित सुखकामा
पूजन करि सब गाल बजाये गान महेश यशोमय गाये
करि प्रणाम निज लोक सिधाये चन्द्र तहाँ रहि अति सुखपाये
अर्चन नति नुति तत्पर भयउ व्रत विधान अनुरत ह्वै गयऊ
करन लगे मृत्युञ्जय जापा करत यथोचित कर्मकलापा
कियउ तपश्चर्या षण्मासा करि प्रभु दया दृष्टिकर आसा
मृत्युञ्जय जप करत निरन्तर भयउ चन्द्र प्रभु पूजन तत्पर
कियउ मन्त्रजप शशि दशकोटी काम विवश करनी करि खोटी
यताहार अरु विगताहारा कियउ घोर तप विविध प्रकारा
आशुतोष तसु दोष बिसारी दरस दियउ कैलास विहारी
दयासिन्धु प्रभु दीनदयाला शरणागत पालक सब काला
कत कत पतित वृन्द प्रभु तारे यक्ष रक्ष कत लक्ष उबारे

दोहा

वरम्ब्रूहि पद अमृत सम, पियत श्रवण पुट चन्द ।
पुनि पुनि पद पंकज प्रणत, पायउ परमानन्द ॥६८॥

सोरठा

पुनि पुनि पुलकित गात, त्राहि त्राहि भाखन लगे ।
पंकज यथा प्रभात, विकसित हृदयसरोज शशि ॥९५॥

प्रभु तव दर्शन पाय, दुर्लभ कवन पदार्थ मम।
प्रभु असहाय सहाय, क्षमा करिय अपराध सब ॥९६॥
उर प्रेरक जगदीश, निगमागम गावत प्रभुहिँ।
माया विवश अनीश, कठपुतली सम जीव जग ॥९७॥
शाप लब्ध क्षयरोग, नाथ नसाइय करि कृपा।
पावत सुख दुख भोग, प्रभु अनुमत निज कर्मकृत ॥९८॥
प्रभु करुणा लवलेश, कर्मबन्ध छेदन करत।
मेटत सकल कलेश, विदित वेद आदेश अस ॥९९॥

चौपाई

दीन दयानिधि भाखन लागे तपो निरत मृदुकर लखि आगे
प्रतिपत् प्रभृति अमावस यावत् क्षीण कला तुअ प्रतिदिन तावत्
प्रतिपत् प्रभृति पूर्णिमा यावत् वृद्धि कला तुअ प्रतिदिन तावत्
कला मात्र अवशेष अमावस पूनो पूरित कला पञ्चदश
सिद्ध वचन मम वचन प्रभावा जानहु उभय अमोघ स्वभावा
मुनि वरदान चन्द्र सुख पाये हर्षित जयजयकार सुनाये
सुर मुनि गन्धर्वादिक तहँमा आय गये प्रभु प्रकटित जहँमा
नति नुति करि प्रभु सम्मुख ठाढ़े प्रेम-पयोनिधि तट तजि बाढ़े
कहन लगे तब कर युग जोरी पद अरविन्द प्रीति नहि थोरी
पूरिय एक मनोरथ नाथा अस कहि धरे चरणपर माथा
निज अभिलाष कहहु किन भाई सुर मुनि प्रति हम सदा सहाई
कहन लगे तब सुर मुनि वृन्दा गौरीवर-पद-पद्म मिलिन्दा

सोमनाथ प्रभु नाम धराइय लिंग मध्य यहँ थिर रहि जाइय
उमया सहित उमेश कृपालो बसिय लिंग महँ देव दयालो
मृदुकर कीरति वर्धन कामा होइय प्रभु सोमेश्वर नामा
दरस परस पूजन जे करिहैँ अनायास भवसागर तरिहैँ
आय यहाँ अघ ओघ नसैहै मन वच काय विमल ह्वै जैहै
क्षय कुष्ठादि घोरतर आमय दूर दुरैहैँ देव दयामय
चन्द्र कुण्ड यह गर्त कहाइहि मुनिजन जासु महातम गाइहि
यहँ असनान करै जो कोई आधि व्याधि बाधित नहि होई
यदि षण्मास करै असनाना नसै रोग क्षय आदिक नाना
एवमस्तु भाखे श्रीशंकर भयउ कृतारथ सुनि मुनि सुरवर
अन्तर्हित प्रभु अस कहि भयऊ लिंग मध्य सुस्थिर ह्वै गयऊ
भउ प्रस्थित सब निजनिज धामा प्रभु कृपया परिपूरित कामा

छन्द

सोमनाथ चरित्र पावन श्रद्धया जे गावहीँ।
चन्द्रधर हर चरण सरसीरुह रजोरति पावहीँ॥
प्रथम ज्योतिर्लिंग वर्णन शंभु चरणन धरि हियो।
सकल आगम निगम समुदित प्रेमप्रमुदित मनकियो॥

दोहा

ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध अति, मल्लिक अर्जुन नाम।
चरित सुनावत सुनत जन, पावत अभिमत काम ॥६९॥

छन्द

दिव्य ज्योतिर्लिंग पावन मल्लिकार्जुन नाम जो ।
आशुतोष प्रपञ्चपोषक क्षमहिँ सेवक दोष जो ॥
प्रलय काल कराल मूरति लोक शोषक रोष जो ।
करउँ तासु चरित्र वर्णन देव अशरण शरण जो ॥

चौपाई

मातु पिता प्रति रुष्ट कुमारा तजि पितुगृह अन्यत्र पधारा
श्रीशैलोपरि कियउ निवासा परिहरि कैलासाचल आसा
कार्तिकेय गजवदन परस्पर उभय प्रथम परिणय प्रति तत्पर
गणपति परिणय प्रथमहिँ भयऊ वर्णन तसु पूर्वहिँ ह्वै गयऊ
उपजायउ कुमारकर रोषा परिणय प्रथम गजानन तोषा
सहि न सकी निज तनय वियोगा करि सुत मिलन विविध आयोगा
गिरिजा विरह व्यथा अधिकाई वचन अगोचर वरणि न जाई
पुत्र विरह सम दुख नहि कोई नहि सुख पुत्र मिलन सम होई
समुझाये वहु भाँति महेशा भउ निवृत्त नहि तदपि कलेशा
सुर मुनि गन्धर्वादिक तहँमा पठये शंभु रहे गुह जहँमा
लावहु बोलि गुहहिँ सब भाई विरह व्यथा अब सहि नहि जाई
अस कहि उनहिँ बहुत समुझाये आश्वासन सन्देश सुनाये
कियउ प्रयत्न जाय सब कोई गुह प्रसन्नता जाते होई
सुनि संदेसा गुह रिसिआये बहुविध अप्रिय वचन सुनाये
आवि सबहि शंकरहिँ सुनाये कथमपि षण्मुख लौटि न आये

सुनि गौरी शंकर अस वचना प्रस्थित भयउ बिसरि विधि रचना
सुनि आगमन तासु गुह धाये मातु पितुहिँ निजमुख न दिखाये
सुस्थि' भयउ क्रौञ्च गिरि जाई गिरिजा लखि चरित्र अकुलाई
गौरी शंकर भयउ निराशा तजि निज पुत्र मिलन प्रत्याशा
ज्योतिर्लिंग रूप भउ शंकर उमा सहित श्रीशैल शिखरपर
उमा सहित तहँ कियउ निवासा करुणाकर करुणा आवासा
योजन तीन दूर निज धामा कियउ षड़ानन देव ललामा
निश्चित दिवस उमा हर आवहिँ सुत मुख देखि अतुल सुख पावहिँ

दोहा

मल्लिक अर्जुन दरसते, नष्ट होहिँ सब पाप ।
सुख आत्यन्तिक हस्तगत, मिटत सकल संताप ॥७०॥

सोरठा

लह धनधान्य समृद्धि, दरस परस पूजन निरत ।
होत प्रतिष्ठा वृद्धि, आधि व्याधि व्यापत नहीँ ॥१००॥
सकल मनोरथ सिद्धि, करहिँ साम्बशिव करि कृपा ।
अष्ट सिद्धि नव निद्धि, शंकर सेवक अनुचरी ॥१०१॥

छन्द

सुनहिँ सुनवहिँ पढ़हिँ गावहिँ चरित जे यह पावनम् ।
अति मनोहर रुचिरतर अति भक्तजन मन भावनम् ॥
होहिँ शंकर कृपाभाजन लहहिँ प्रातिभ अनुभवम् ।
देहिँ पर्वतजा प्रसन्ना इहामुष्मिक वैभवम् ॥

चौपाई

प्रेम मग्न भउ मौन निरञ्जन सम्मीलित करि लोचन खञ्जन
देखि एक टक् श्रीगुरुवरको श्रद्धान मन सुमिरत हरको
कहन लगे कर जोरि पुरञ्जन जय जय जय गुरुवर भयभञ्जन
ज्योतिर्लिंग कथा सुनि तृप्ती लहत न मानस उत्सुक वृत्ती
पावन महाकाल अभिधाना ज्योतिर्लिंग शंभु भगवाना
तासु पवित्र चरित्र सुनाइय प्रेमामृत रस पान कराइय
ह्वै प्रसन्न गुरु भाखन लागे प्रभु पद पद्म प्रेम परि पागे
धन्यवाद् भाजन वड़ भागी तुम प्रभुचरितामृत अनुरागी
सावधान मन सुनहु कथानक जीति लेहु यमराज भयानक
नाम अवन्ती नगरी धन्या पहुँचि जहाँ अजघन्य जघन्या
महापुण्य सरिता जहँ क्षिप्रा निवसहिं जहाँ तपोधन विप्रा
रहे एक तहँ कर्म परायन वैदिक ब्राह्मण नय विनयायन
स्वाध्यायीकृत अग्न्याधाना कर्मोपासन ज्ञान निधाना
शंकर पार्थिव प्रतिमा पूजा निरत नित्य उद्यम नहि दूजा
आजीवन रहि अभय अशोका अन्त समय पहुँचे शिवलोका
विप्रहिं पुत्र चतुष्टय भयऊ श्रुतिपथ समारूढ़ ह्वै गयऊ
देवप्रिय प्रियमेध सुनामा सुव्रत धर्मवादी अभिरामा
सब गुणवन्त नाम अनुरूपा धर्म धुरन्धर धर्म सरूपा
पितु समान सब समगुण आगर कर्मपरायण विद्यासागर
जिनकर पुण्य प्रताप महीतल वर्द्धमान सुखसम्पति सब थल

भउ धन धर्म वृद्धि तव कैसे चान्द्री कला शुक्लदल जैसे
भउ तथैव गुण वृद्धि सभनकर उर अन्तर अनुराग भजनकर

छन्द

ब्रह्म तेजोमयी नगरी भई नाना गुणमयी।
अद्रिजा शंकर समर्चन यज्ञ दीक्षा सब लयी॥
तहँ उपस्थित अति विचित्र चरित्र वर्णन मैं करौं।
उमाशंकर चरणयुग अरविन्द उर अन्तर धरौं॥

चौपाई

पावन रत्नमाल पर्वतपर दूषण नाम प्रसिद्ध असुरवर
धर्म विदूषक अति बलवाना पाइ पितामहते वरदाना
करि कल्पित पाखण्ड प्रचारा कियउ निरुद्ध वेद आचारा
गो–द्विज–शिष्ट-साधु–विद्रोहीं अति मदमत्त अकारण कोही
निगमागम सम्मत मत रोधक निज कपोलकल्पित मत बोधक
तुच्छीकृत इन्द्रादिक सुरगण कृत–मदिरा – मदिराक्षी–सेवन
तीरथ क्षेत्र अरण्य निवासी भयउ भागि गिरिकन्दर वासी
यज्ञादिक करि सकत न कोई दूषण–आयसु–परवश होई
देव पितर निज भाग विहीना इत उत विचरहिं भयवश दीना
सुख समृद्धि लखि पुरी अवन्ती भउ प्रस्थित लै चमू जयन्ती
धीर वीर दूषण बलवाना गरजत अस्त्र शस्त्र लै नाना
शैव विप्रगण सम्मुख जाई खल दूषण यह वचन सुनाई
तजहु शंभु सेवन सब कोई मम आयसु अनुवर्ती होई

वैदिक धर्म कर्म सब त्यागहु हिंसामय कारजमहँ लागहु
स्वाहा स्वधा मन्त्र सब छोड़हु वषट् हन्तते अब मुहँ मोड़हु
नहि स्वाध्याय नाम अब लेहू प्रवचन विधि विस्मृत करि देहू
आसुर भाव ग्रहण सब करहू दैव भाव मग पग नहि धरहू
आयसु मोर न यदि सिर धरिहौ अस्त्र-शस्त्र हत तनु परिहरिहौ
यदि न मोर आयसु अनुसरिहौ हृत धन धाम कालमुख परिहौ
कथन तासु अनसुनकरिद्विजगन कियउ धर्मते तनिक न विचलन
शिव सेवन रस रसिक विप्रगन शंकर सेवन कियउ अचल मन
बिन्दु मात्र विचलित नहि भयऊ निश्चल निज नियमित पथ रहेऊ
प्रभु अमोघ महिमाके आगे को वराक असुरेश अभागे
पशुपति कोप कृशानु समाना तृणसम तहँ रजनीचर नाना
शंभु अनादर जो जन करई काल भुजंगम शिर पगु धरई
प्रभु सेवक परिपीड़क जोई त्राता तासु न त्रिभुवन कोई
अस विचार करि द्विजगण सबही भउ निर्भय सुस्थिर मन तबही
धरि धीरज दृढ़मति द्विज वृन्दा सुमिरत भउ प्रभु पद अरविन्दा
खल दल गर्जन तजन कियऊ विविध प्रकार पराभव दियऊ
लूटन लगे विप्रधन दुष्टा द्विज दृढ़ता लखि भउ अति रुष्टा
अभिमानी त्रिभुवन जयकारी जाय अवन्ती नगर मझारी
लागे करन उपद्रव भारी दूषण दुष्ट विप्र अपकारी
करि अवरुद्ध नगर चहुँ ओरा कियउ दुष्टदल धुनि अति घोरा
मारु मारु धरु धरु उच्चरहीं छिंधिभिंधिधुनि पुनिपुनिकरहीं

द्विजगणतदपि न निजपथ त्यागे प्रभुपद पद्म प्रेम परिपागे
सब मिलि देवप्रिय ढिग गयऊ सब वृत्तान्त सुनावत भयऊ
किंकर्तव्य कहहु अब स्वामी आयउ सिर पर उत्पथगामी
सुनि अस वचन देवप्रिय शर्मा सुमिरे श्रीशंकर शुभकर्मा
कहन लगे तब चारिउ भ्राता नोति निपुण शरणागतत्राता
हम सब ब्राह्मण सात्विक वृत्ती रजस्तमोमय त्यागि प्रवृत्ती
हमहिं न अस्त्र शस्त्र धनुशायक केवल शंकर मात्र सहायक
यह साधारण जनकी रीती जानि समाश्रित करहिँ पिरीती
दीनबन्धु शरणागत रक्षक करिहहिँ दया अवश विषभक्षक
निज शरणागत जानि महेशू हरिहहिँ अवश हमार कलेशू
होइ अचर चर खचर भूमिचर अग्नि अधश्चर वारि ऊर्ध्वचर
कृत अशुभंकर अनृत शुभंकर करहिँ न भक्त उपेक्षा शंकर
सुनि नागरिक विप्र अस वानी भउ सुस्थिर मन प्रभुपद ध्यानी
प्राणायाम परायण भयऊ रिपुकृत भय विस्मृत ह्वै गयऊ
विप्र चरित्र निरखि रजनीचर कियउ सकलमिलि शब्द घोरतर
धरु धरु मारु मारु कहि धाये देवप्रिय सन्निधि सब आये
तावत् पार्थिव मूर्ति निकट तहँ गर्त समुद्भव भउ वेदी महँ
महाकाल प्रकटे तत्काला गर्त मध्यगत अति विकराला
दूरम्ब्रज दूरम्ब्रज वाणी कहेउ असुर कहँ डमरूपाणी
करि हुंकार शब्द त्रिपुरारी भस्म कियउ दानवदल भारी
दूषण दुष्ट नष्ट ह्वै गयऊ विप्रवृन्द निष्कण्टक भयऊ

सूर्य उदय जिमि तिमिर विनाशा तिमि हुंकृतिकृत निशिचर नाशा
हरषि देव दुंदुभी बजाये जय जय करत सुमन बरसाये

दोहा

आश्वासन विप्रहिँ दियउ, करुणासिन्धु महेश ।
जासु कृपा लव पाइ द्रुत, मिटत समस्त कलेश ॥७१॥

सोरठा

नति नुति करि सब विप्र, हाथ जोरि भाखत भयउ ।
करिय कृपा प्रभु क्षिप्र, हरिय विषम विषयानुरति ॥१०२॥
निज पद पंकज प्रेम, दीजिय प्रभु करुणायतन ।
परिहरि नाना नेम, नाम रटउँ राउर सतत ॥१०३॥
जनवत्सल भगवान, गर्त मध्यगत रहिय नित ।
महाकाल अभिधान, ज्योतिर्लिंग सरूप प्रभु ॥१०४॥
पातक पुञ्ज नसाय, दरस परस करि राउरो ।
भवसागर तरि जाय, लिंगाराधन पुण्य बल ॥१०५॥
एवमस्तु कहि नाथ, पशुपति अन्तर्हित भयउ ।
द्विजगण भयउ सनाथ, महाकाल सेवानिरत ॥१०६॥
द्विजगण लिंग सरूप, क्रोशावधि चहुँदिश भयउ ।
निज सेवा अनुरूप, आशुतोष फल देहिँ द्रुत ॥१०७॥

छन्द

महाकाल चरित्र जे नर सुनहिँ सुनवहिँ गावहीँ ।
तासु ढिग विकराल मूरति कालपुरुष न आवहीँ ॥

लहहिँ सुख सम्पति सुसन्तति महाकाल-कटाक्षते ।
होहिँ तनु परिहरि दिगम्बर देव पञ्चदशाक्ष ते ॥

चौपाई

एक समय नारद प्रसन्न मन गोकर्णेश सदाशिव दर्शन
करि तहँ महाकाल ढिग आये दरस परस करि अतिसुख पाये
तत्र स्थित विन्ध्याचल नामा सविनय मुनिहिँ कियउ परनामा
आशीर्वाद दियउ मुनिराया लै निःश्वास विषाद जनाया
कहु विषाद कारण मुनिनाहा मोँ महँ न्यून भाव कहु काहा
सुनि अस मुदित भये मुनिराई निरखि विन्ध्यगिरि मृदु मुसुकाई
मेरु प्रशंसा महँ मन दियऊ कलह विशारद कौतुक कियऊ
यद्यपि माननीय तुम भाई सुनहु तथापि कछुक मन लाई
मेरु उच्चतम सब गिरिवरते सम्मानित ऋषि-अमर-निकरते
कञ्चन गिरि महिमा अधिकाई वचन अगोचर वरणि न जाई
सुर समाज तहँ करहिँ निवासा निवसहिँ साधु विसारि दुरासा
योगी जपी तपी तहँ बसहीँ महामोह महिमा लखि हँसहीँ
इन्द्रादिक दिक्पतिकर धामा जहाँ विराजत अति अभिरामा
जहँ अतिपुण्य चतुर्मुख लोका जहँ प्रवेशकरि जीव विशोका
तनु धरि जहँ श्रुतिगण नुति करहीँ अष्ट सिद्धि आयसु अनुसरहीँ
विरजा नाम नदी जहँ पुण्या दुरितदारिणी उपशम गुण्या
प्रविशहिँ जहँ सुर रक्षण हेतू मुर मद मर्दन अरु वृषकेतू
मेरु गुणावलि वर्णन सुनहू महिमा तासु स्वयं तुम गुनहू

जहाँ बहत नित सुरसरि धारा दुरित विदारण कारण आरा
जहँ सरसिज मनसिज सहकारी सुरी गात सुरभित शुभ वारी
करहिँ विहंगम कलरव गाना गुञ्जहिँ भ्रमर मधुर धुनि ताना
फलभर तरुवर सोहत नाना नम्रीभूत करहिँ फलदाना
सुरभित सुमन सुगंधित वाता जलकण शीतल बह सुखदाता
नाना मृग गण निर्भय विचरहिँ अश्व महिष संगी वनि विहरहिँ
निर्झर सरवर निर्मल नीरा पियत निरामय करत शरीरा
औषधि तरुवल्ली जहँ नाना आयुर्वर्धक अमिय समाना
मणि-माणिक-स्वर्णादिक आकर खर्वित करत गर्व रतनाकर
करत प्रदक्षिण दिनकर जाकर बड़पन विदित काहि नहि ताकर
वक आदिक खग गरुड़ खगेशा तुम सब अचल मेरु अचलेशा
अस कहि गउ मुनिवर निजधामा भयउ विखिन्न विन्ध्य जयकामा
प्रणव यन्त्र तत्रैव चिरन्तन करन लगे तहँ शिव आराधन
करि पार्थिव प्रतिमा तेहि ठामा करन लगे पूजन परनामा
षण्मासावधि कियउ सपर्या अनशन आदि विविध तपचर्या
शिवशंकर प्रसन्न ह्वै गयऊ युगल रूप धरि प्रकटित भयऊ
एक रूप भउ यन्त्र अधिष्ठित रूप अपर प्रतिमा परतिष्ठित
एक लिंग दुइ नाम धरायउ अमरेश्वर ओंकार कहायउ
ज्योतिर्लिंग विदित ते दोऊ प्रकटे यन्त्र मूर्तिते जोऊ
भउ ओंकार नाम यन्त्रोत्थित भउ अमरेश्वर मूर्ति समुत्थित
वरम्ब्रहि प्रभु भाखन लागे भउ विन्ध्याचल उत्थित आगे

कायवृद्धि इच्छा अनुसारा देहु दयानिधि जगदाधारा
सूर्यादिक गति रोधनकर्ता मेरु महागिरि मद अपहर्ता
यद्यपि उचित न यह वरदाना रवि गति रोधन दुःख निदाना
रवि गति रोध समय अज्ञाना तत्कृत व्यवहृति विघटन नाना
तदपि तथास्तु यथा तव इच्छा सदा सफल मम भक्त समिच्छा
भक्ति विवश प्रभु जब अस कहेऊ मन अति मोद विन्ध्यगिरि लहेऊ
लहि कृतकृत्य भाव विन्ध्याचल कायवृद्धि करि ह्वै गउ निश्चल
रवि गति रोध विकल जग भयऊ सुर मुनि मुनिअगस्त्य ढिग गयऊ
घटज विन्ध्य पर्वत ढिग पहुँचे प्रणतानत तत तनु सो सकुचे
आवौं बहुरि यहाँ हम यावत् एवंभूत रहहु तुम तावत्
कहि अस मुनि दक्षिणदिशि गयऊ प्रत्यागमन बहुरि नहि भयऊ
रवि गति भयउ यथावत् तबते भूतल नत भउ पर्वत जबते
भउ व्यवहार समय अनुकूला भइ अनुकूलित थिति प्रतिकूला
प्रस्तुत कथा सुनहु अब ताता सुर मुनिगण अति पुलकित गाता
नति नुति करि भाखन अस लागे जोरि युगल कर थित प्रभु आगे
अत्र चिरस्थित होइय नाथा सेवक जनकहँ करिय सनाथा
ज्योतिर्लिंग युगल एहि ठामा पूरिय सेवक जन मन कामा
एवमस्तु कहि श्री भगवाना ह्वै अन्तर्हित गउ निज धामा
दर्शन आदि आवि जो करिहैं इष्ट सिद्धि करि हर दुख हरिहैं
पापापह तापापह एहू ज्योतिर्लिंग न कछु सन्देहू
अस कहिसुरमुनिगउ निजलोका तत्रस्थित सब भयउ विशोका

जो यह चरित सुनै मनलाई तेहिपर शंकर सदा सहाई
मनवाञ्छित फल देहिँ महेशू करहिँ निरस्त पञ्चविध क्लेशू

दोहा

बहुरि पुरञ्जन करि प्रणति, कहत भयउ कर जोरि ।
प्रभु चरितामृत पानकी, बढ़त लालसा मोरि ॥७२॥

सोरठा

ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध, केदारेश्वर नाम्न जो ।
भजहिँ जाहि सुर सिद्ध, तासु चरित कहु करिकृपा ॥१०८॥

चौपाई

सुनत निरञ्जन अति सुख पाये प्रेम नीर नयनन भरि आये
केदारेश्वर चरित मनोहर कहन लगे निगमागम गोचर
भउ स्वायंभुव मनु विधि अंगज तत्सुत भयउ प्रियव्रत आरज
अग्निध्रादिक सप्त सुत तासू शासन द्वीप सप्त महँ जासू
सप्त वार सुरगिरि परिकरमा कियउ प्रियव्रत अचरज करमा
सप्त द्वीप अरु सप्त पयोनिधि भउ कल्पित रथ परिभ्रमण विधि
सात द्वीपमहँ सातहु भ्राता महाराज भउ पितुकृत ताता
स्वायंभुव करि कुल विस्तारा यश परिपूरित करि संसारा
तनु परिहरि पायउ सुरलोका जहाँ तपोधन बसहिँ विशोका
प्रथम पुत्र अग्निध्र प्रसिद्धा जासु महातम गावहिँ सिद्धा
जम्बू द्वीपाधिप सो भयऊ मर्यादा सागर बनि गयऊ
परिजन-प्रकृति-प्रजा–परिपालक गुरुजन-कृपापात्र रिपुघालक

परिजनप्रिय नयनिपुण प्रियंवद माण्डलीकगण जासु वशंवद
जम्बूद्वीप कियउ नव खण्डा नृप अग्निघ्र विदित ब्रह्मण्डा
नाभि आदि नव सुत तसु जाये प्रति नव खण्ड राजपद पाये
तासु पुत्र भउ ऋषभ भूपवर विष्णुअंश नृप धर्मधुरन्धर
भरतादिक तसु शत सुत जाये जीवनन्मुक्ति मार्ग दरसाये
जो अजनाभ वर्ष परसिद्धा महिमा जासु शास्त्र श्रुति सिद्धा
अधिपति भरत भयउ तसु जाते भारतवर्ष कहायउ ताते
एकाशीति भरत नृप भ्राता भयउ पुण्य बल ब्राह्मण ताता
भउ कवि आदिक नव योगेशा लहे ज्ञान जिनते मिथिलेशा
कुशावर्त आदिक नव वर्षा कल्पित कियउ ऋषभ दुर्धर्षा
भउ अवशिष्ट पुत्र तसु नायक सब शत्रुञ्जय धरि धनुशायक
सकल क्षेत्र महँ भारतवर्षा कर्मक्षेत्र जसु अति उत्कर्षा
भरत भूमि महँ जन्म समिच्छू सुरगण मुक्ति पदारथ इच्छू
खण्ड खण्ड महँ लै अवतारा हरत रमापति धरणीभारा
लै नर नारायण अवतारा कियउ रमापति धर्म प्रचारा
भारत खण्ड बदरिका वन महँ करत निवास सदा कानन महँ
करहिँ तपस्या जन हितकामा धीर वीरवर अति अभिरामा
नारदादि लहि तसु उपदेशा परिपूजित भउ देश विदेशा
वासुदेव अरु अर्जुन नामा भये सोइ प्रभु सुर हितकामा
नाना चरित कियउ महिमण्डल अनुवर्ती सुर मुनि आखण्डल
लीला कियउ लोक हित हेतू जासु उपास्य देव वृषकेतू

नर नारायण पूजित शंकर कबहुँ कबहुँ प्रगटहिँ डमरूधर
प्रभु राउर पूजन हम करिहहिँ चरणोदक निज शिरसा धरिहहिँ
रहिय सदा सुस्थिर यहँ नाथा पूरि मनोरथ करिय सनाथा
बहुत विनय जब कियउ मुरारी प्रगटे ज्योतिर्लिंग पुरारी
हिमगिरि उच्च शिखर केदारा जहाँ महा तपसिनकर डेरा
नर नारायण आश्रम जहँमा प्रगटे केदारेश्वर तहँमा
भक्ताधीन सदा गौरीवर भक्त मनोरथ पूरहिँ द्रुततर
उत्तर काशी भउ इहि ठामा उमा उमावर निलय ललामा
इहाँ आवि जो तनु परिहरहीँ अनायास भवसागर तरहीँ
मोक्षधाम यह पुरी सुहावनि परम रम्य मुनिजन मन भावनि
यहाँ न म्लेच्छादिक आक्रमना नहि जन संग न दुर्जन गमना
दुहु धुनि सहस्रार महँ जाहीँ करि भेदन मिलि ब्रह्म विलाहीँ
धुनिगतिगतचिदंश पहिचानिय धुनि गतिलय चिदंशलयजानिय
कलिकालुष्य यहाँ नहि आवै मृत्यु समय प्रभु प्रणव सुनावै
तारक मन्त्र प्रणव श्रुति बोधित क्वचिदपि राम नाम अनुमोदित
उभय बीच कछु अन्तर नाहीँ वर्ण विभेद मात्र दरसाहीँ
प्रणव ऊर्द्ध्व गति अनुग उर्द्ध्वगति राम नाम गति अनुग उक्त गति
योगी जपी तपी संन्यासी किन्नर गुह्यक भोग विलासी
सुर सुरवधू अप्सरा आदिक पूजहिँ प्रभुपद गन्धर्वादिक
उच्च नीच सब प्रभुपद प्रेमी सुख सम्पन्न सर्वदा क्षेमी
नर नारी रागी वैरागी कीट पतंग मोक्ष पद भागी

केदारेश्वर दर्शन करहीं उत्तर काशी मग पग धरहीं
आधि व्याधि बन्धनते छूटहिं परमानन्द परम सुख लूटहिं
उत्तम अधम जाति जो कोई उत्तम गति भाजन सब होई
कहत सुनत यह कथा मनोहर होत न अन्तक लोचन गोचर
पापापह तापापह एहू पावन चरित न कछु सन्देहू
नर नारायण केदारेश्वर दर्शक शासक नहि नरकेश्वर
जीवनकाल भोगि सुख नाना अन्तकाल पावै निर्वाना

दोहा

बहुरि निरंजन कहत भउ, शम्भु चरण शिर नाय ।
सुनहु भीमशंकर चरित, वत्स हरषि मन लाय ॥७३॥

सोरठा

विषय रोग हटि जाय, पशुपति चरितामृत पियत ।
भव बन्धन कटि जाय, प्रभु पद प्रेम कृपाणते ॥१०९॥

चौपाई

विदित कामरूपेश्वर देशा स्वयं तहाँ अवतरे महेशा
भयउ यदर्थ अत्र अवतारा कहउँ तोहि निज मति अनुसारा
भीम नाम राक्षस बलवाना कियउ उपद्रव जहँ तहँ नाना
सज्जन कहँ परिपीड़ित कियऊ दुर्जन कहँ सुख सम्पति दियऊ
करि पाखण्ड पंथ परचारा भ्रष्ट कियउ वैदिक आचारा
भयउ प्रगल्भ दीन दुखदाई दण्डित निरपराध जन भाई
कुंभकर्ण रावण लघु भ्राता कर्कट सुता कर्कटी ख्याता

उभय संग भउ सह्य अद्रिपर जायउ ताते भीम निशाचर
शैशवही सो पूछन लागा निज जननी कहँ दुष्ट अभागा
कौन वीर मम जन्म प्रदाता एकाकिनी रहहु कस माता
सुनि सुत प्रश्न कर्कटी बोली कर्णाकलित कर्णिका डोली
यहाँ आवि संगम सो कियऊ जाय बहुरि दर्शन नहि दियऊ
अग्रज सहित ताहि रघुराई हते समर महँ लंका जाई
नयन अगोचर लंका धामा एकाकिनी रहउँ एहि ठामा
असुर विराध नाम मम भर्ता भयउ राम रिपु तसु संहर्ता
लहि वैधव्य पिता ढिग आई तासु निकट रहि दिवस बिताई
मातु पिता मम भक्षण हेतू गयउ सुतीक्षण विप्र निकेतू
ब्राह्मण महा तपस्वी सोऊ कियउ दग्ध शापानल दोऊ
तदारभ्य मम यहाँ निवासा करउँ तोहि लहि जीवन आसा
जन्म तुम्हार भयउ एहि ठामा पोषण कियउँ अनाथा वामा
सुनि अस करत भयउ सो चिन्तन विष्णु असुरकुल शत्रु चिरन्तन
मारि विराध पितुहिँ संहारा जो वह दशरथ राज कुमारा
लियउ रमेश राम अवतारा ताते श्रीपति शत्रु हमारा
अवशि तासु बदला मैं लैहौं हरिहिँ मारि यमलोक पठैहौं
सपत्नीक मातामह हन्ता विप्र सुतीक्ष्ण यमालय गन्ता
कुम्भकर्णकर सुत न कहाऊँ रुधिर नदी रण यदि न बहाऊँ
हरिहिँ मारि यदि महि न गिराऊँ नहि यदि विजय ध्वजा फहराऊँ
करि निश्चय अस सो बलशाली तपोनिरत भउ दुष्ट कुचाली

विधि उद्देश्यक तप अति भारी करन लगा विधिवत् व्रतचारी
एक पाद अरु दिनकर दृष्टी सहि शीतातप मारुत वृष्टी
ध्यान मग्न अरु ऊरधबाहू विस्मृत विश्व सहित उत्साहू
अशनादिक तजि वर्ष सहस्रा नियम यथोदित कियउ अजस्रा
शिरते तसु निकसी तपज्वाला लोक भयंकर परम कराला
ज्वालादाह दग्ध इव सबही ब्रह्मलोक गउ सुर मुनि तबही
पहुँचि सबहि श्रुतिमुख पद परसे रोदन करत नयन जल बरसे
उन सब कहँ पूछी कुशलाता लोक पितामह जगत विधाता
कियउ निवेदन उक्त पराभव अति बल भीम तपोबल वैभव
दै वरदान तासु तप रोधिय दया दृष्टिते हमहिं विलोकिय
सुनि सुर वचन गयउ चतुरानन राक्षस भीम तपस्या कानन
वरम्ब्रूहि विधि भाखन लागे भयउ उपस्थित निशिचर आगे
कहत भयउ तब असुर भयावह देहु अतुल बल मोहि पितामह
अस कहि असुर मौन धरि लियऊ दै वर श्रुतिमुख प्रस्थित भयऊ
बली भीम अभिमत वर पावा जाय मातु चरणन शिर नावा
करत भयउ निज पौरुष वरनन हनिहौं रिपु गन लाखन लाखन
भूप कामरूपेश्वर नामा प्रथमहिं विजय कियउ तेहिठामा
भूपहिं निगड़बद्ध सो कियऊ कारागार रुद्ध करि दियऊ
गर्जन तर्जन ताड़न कियऊ नाना भाँति पराभव दियऊ
धन सर्वस्व हरण करि लियऊ अस्त्र शस्त्र सैनिक कहँ दियऊ
राजचिह्न चामर छत्रादिक अपहृत कियउ अलंकरणादिक

भउ नरपति धर्मच्युत नाहीँ धरि धीरज कारागृह माहीँ
रहि एकान्त मृत्तिका प्रतिमा निर्मित कियउ जानि प्रभु महिमा
पूजन लगे प्रेम परिपूरित धृत रुद्राक्ष विभूति विधूलित
मानस मज्जनादि कृति कियऊ सब उपचार मानसिक दियऊ
नति नुति मुद्रा आसन आदिक कियउ यथोदित पाठ जपादिक
प्रणव सहित पञ्चाक्षर विद्या त्रिषवण जपत भयउ अति हृद्या
शिव आराधन मात्र परायन करत मधुर सुर प्रभु गुण गायन
पत्नी तासु दक्षिणा नामा भइ पूजनरत पतिहित कामा
पति पत्नी मिलि शंकर सेवा कियउ त्यागि जलपान कलेवा
उभय मनोमन्दिर विनिवासी भउ गौरीशंकर सुखरासी
भयउ समस्त महीतल जेता अतिबल भीम निशाचर नेता
निगम धर्म अरु आगम धर्मा खण्डित कियउ सनातन धर्मा
वर्ण धर्म अरु आश्रम धर्मा खण्डित कियउ देश-कुल धर्मा
याजन यजन न करि सक कोई बिगड़े द्विज पाखण्डी होई
राजा राजपुरुष जो कोई करि अन्याय न शंकित होई
देव पितर नहि पावहिँ भागा सब कहँ सीदित कियउ अभागा
सुर मुनिगण अति पीड़ित भयऊ गौरीनाथ शरण महँ गयऊ
प्रभु पद पंकज कियउ प्रणामा त्राहि त्राहि कहि लै लै नामा
अस्तुति सबहि कियउ बहुभाँती भउ प्रसन्न हर शशधर काँती
कुशल प्रश्न करि करि आश्वासन भाखत भयउ देव वृषभासन
कारण कौन यहाँ सब आये कौन मन्दमति तुमहिँ सताये

सुर मुनि द्रोह करत जो कोई धरत भुजंगम सिर पद सोई
रक्षक तासु न त्रिभुवन कोई जो शठ सुर ब्राह्मण विद्रोही
रहउँ सदा मैं भक्त अधीना द्रवत हृदय मम लखि जन दीना
सुनि सुर मुनि प्रसन्न मन भयऊ नयनन प्रेम अश्रु भरि गयऊ
भाखे वचन विनय रस बोरी असुर निपीड़ित कर युग जोरी
प्रभु सर्वज्ञ सकल घटवासी ऋद्धि सिद्धि सब राउर दासी
नाथ प्रभुहिं नहि कछु अज्ञाता ज्ञानरूप प्रभु श्रुति विख्याता
तदपि कहउँ आयसु अनुसारा भीम असुरकृत अत्याचारा
सुरगण भयवश द्वार न खोलहिं आरत मुनि जन वन वन डोलहिं
कियउ विलुप्त असुर बलवाना धर्म कर्म कर नाम निशाना
करत उपद्रव अकरुन छन छन करि आघात हरत सरबस धन
मारत पीटत लूटत स्वामी जानहु प्रभु सब अन्तर्यामी
करि संहार तासु भगवाना दीजिय हम कहँ जीवन दाना
एवमस्तु कहि श्रीशंकर हर त्रास मिटायउ सुर मुनिजनकर
नृपति कामरूपेश्वर नामा भजत मोहि मम दर्शन कामा
दर्शन देइ ताहि हम अबही दूर दुरैहौं संकट सबही
अस कहि नाथ मौन धरि लियऊ सुर मुनि जन सब प्रस्थित भयऊ
तदा कामरूपेश्वर राजा तपोलीन भउ निज हित काजा
भीमहिं कहा जाय इक निशिचर भूपति करत तपस्या दुश्चर
प्रभु अभिचार रूप तप एहू अति अनर्थकर नहि सन्देहू
तपोभंग कीजिय द्रुत जाई दानवेश दानव सुखदाई

सुनिअस प्रकुपित भीमनिशाचर चला मरुत गति गहि कर असिवर
पहुँचा भूप निकट तेहि लहमा प्रतिमा आदिक देखा तहँमा
विल्वपत्र आदिक उपचारा कोपाकुलमति वचन उचारा
कारज कौन यहाँ तुम करहू निरखि हमार प्रताप न डरहू
कहु आराध्यदेव को तोरा काटिहि कासु कण्ठ असि मोरा
सत्य वचन भाखहु तुम मोही भूप अन्यथा हतिहउँ तोही
सुनि अस नरपति कियउ विचारा भावी तस जस लिखा लिलारा
नहि असत्य भाषण मैं करिहौं कबहुँ न प्रभु पद पद्म बिसरिहौं
करहिं न प्रभु सेवक अनपेक्षा करहिं सदा सर्वत्र अवेक्षा
अस विचारि नृप भाखन लागे प्रभुपद पद्म प्रेम परिपागे
देवदेव अधिदेव महेशू मम आराध्यदेव भुवनेशू
करउँ देव सेवन निशिवासर कारज अपर न कछुक यहाँपर
तुअ अधीन कारागृहवासी करउँ तपस्या रहउँ उदासी
करहु यथारुचि क्रोधानुग्रह मैं परवश का करिहौं विग्रह
केवल करौं महेश भरोसा रक्षक और न पास परोसा
सुनि अस भीम कियउ मृदुहासा कहेउ नृपहिं तुम करहु तमासा
वसनहीन धनहीन उदासी भिक्षुक तपसी जंगलवासी
करहु तासु प्रतिमाकर पूजन निज हित अहित तोहि नृप सूझ न
यदि हितइच्छित तजु तसु पूजा तोहि बचाव उपाय न दूजा
सुनि अस वचन कहन नृप लागे कहौं काह मैं तुम्हरे आगे
छोड़हु मारहु वा तुम भाई मोर हृदय नहि कछु कदराई

शंभु अनादर कबहुँ न करिहौं तुअ असिवर आहत वरु मरिहौं
अति कोपाकुल लोहित नयना भीम असुर भाखे कटु बयना
मारौं तोहि अधम अभिमानी कहाँ गये तव त्रिभुवनदानी
अस कहि गहि करवाल कराला धायउ हनन हेतु ततकाला
जो कर मोर भक्त विद्रोहा ताहि अवश्य हतौं करि कोहा
अस हमार प्रभुकर परतिज्ञा नहि सो मम परिभव अनभिज्ञा
रक्षा नाथ अवशि मम करिहैं मम विद्रोही आपुहि मरिहैं
अस निश्चय करि नृप मन माहीं भये तनिकहू विचलित नाहीं
सत्य वचन भाखे भूपाला भजेउँ भजौं भजिहौं शशिभाला
मोहि मन्दमति मारि न सकिहौ मोर द्रोह फल आपुहि चखिहौ
जे जन प्रभु शरणागत द्रोही ताड़क तासु शूलधर ओही
सुनि अस वचन भीम तब बोला बम्बम् करत तोर बम्भोला
मम पितृव्य वशीकृत सोई रहा सदा किंकर इव होई
विजय चहसि तुम तासु भरोसे दग्ध होहि मम पावक रोसे
मोहि जासु बल जीतन चहसी छिपिहि मोर भय क्वचिदपिरहसी
रहि न सकिहि सो थिर मम आगे वन वन बिलखिहि भागे भागे
यह प्रतिमा तुम दूर हटावहु मोर अवज्ञा मन नहि लावहु
सुनि अस कहे नृपति पुनि ताही यह विभेद अब संभव नाही
करिहौं त्याग यदपि हम पामर करिह त्याग न तदपि मोर हर
अंगीकृत नहि प्रभु परिहरहीं नील गरल गलमहँ नित धरहीं
पियत भंग नित बसत मसाना तसु स्वीकृतिकर कौन ठिकाना

तजहु शिवहिं वा करहु लराई इष्टानिष्ट विचारहु भाई
अस कहि रोष विवश सो भयऊ गहि करवाल भूप पहँ धँसेऊ
असि असपरस कियउ नहि यावत् प्रगटे प्रभु प्रतिमाते तावत्
रे शठ भीम ठाढ़ रहु यहँमा हतिहौं मूढ़ तोहि एहि लहमा
शरणागत रक्षण व्रत मोरा किमु न मन्दमति अवगत तोरा
अस कहि कीन्हा वाण प्रहारा द्रुत शतखण्ड खड्ग करि डारा
बहुरि शूल प्रक्षेपण कियऊ भीम असुर प्रभु लखि हँसि दियऊ
शतधा छिन्न कियउ तसु शूला करि प्रहार पुरमथन त्रिशूला
कियउ भीम पुनि शक्ति प्रहारा भयउ देव उर क्रोध अपारा
निज त्रिशूल फेके त्रिपुरारी खण्ड खण्ड शक्तिहिं करि डारी
पुनि पुनि राक्षस कियउ प्रहारा प्रभु लीलया विफल करि डारा
अस्त्र अस्त्रते शस्त्र शस्त्रते दिव्य अस्त्र हू दिव्य अस्त्रते
त्रिभुवननाथ व्यर्थ करि दियउ किंकर्तव्यमूढ़ खल भयऊ
असुर चमू हर चमू परस्पर भयेउ महारव आहव तत्पर
युगल समुद्र समागम जैसे सेना युगल जुटी तहँ तैसे
हाहाकार मचा चहुँ ओरा प्रलय मेघ गर्जन सम घोरा
द्विरद भार डोलत जिमि तरणी चमू वेग कंपित तिमि धरणी
भयवश दिग्गज करहिं कलोला क्षुब्ध समुद्र कुलाचल डोला
ग्रहगण तारागण भय व्याकुल सामर अमरावती समाकुल
थर थर काँपहिं दश दिक्पाला पहुँचिगयउ जिमि प्रलय अकाला
ऋषिसप्तक आदिक सब मुनिगण पुनिपुनि करहिं स्वस्तिपद भाषण

तब नारद मुनि आयउ तहँमा रणलीला अनुरत प्रभु जहँमा
सम्प्रार्थना करन तब लागे जोरि पाणियुग थित प्रभु आगे
क्षमासमुद्र क्षमा अब कीजै बिनसत प्रजा राखि अब लीजै
असमय प्रलय समय संभावित प्रभु महिमा त्रिभुवन अनुभावित
नाथ क्षुद्र यह असुर अभागा हठि सुर नर मुनिके सिर लागा
हनिय आशु अब करिय न देरी बाजै विजय सूचिका भेरी
तृण सम रिपु प्रभु रोष कुठारा तासु हनन महँ कौन विचारा
नारद प्रार्थित जगदाधारा क्रोधवह्नि रिपु कानन जारा
करि हुंकृति अरु शस्त्र प्रहारा कोटि कोटि असुरन संहारा
भस्मीभूत असुरगण भयऊ निरवशेष रिपुदल ह्वै गयऊ
भीमासुरके नाम निशाना गयउ मिटाय न रहा ठिकाना
भीम महाबल भउ जरि छारा प्रभु द्रोहिहिं को राखनहारा
जगत भयावह असुर समाजू भस्मीभूत भयउ सो आजू
असत् सत्य इव भासत एहू मायामय जग नहि सन्देहू
क्षणभंगुर यह जीव जहाना सुस्थिर मानत ताहि नदाना
भयउ न प्रभु कोपाग्नि निवृत्ती फूत्कृति कृत ज्वाला परवृत्ती
वनते वन अन्तर महँ पहुँची अग्निशिखा नहि कथमपि सकुची
भस्मराशि संकुल भउ कानन क्वचिदपि तहँमा थल जल ज्ञान न
भस्म राशिते औषध नाना समुद्भूत कृत जीवनदाना
जल थल हीन रुद्ध व्यवहारा रुद्ध सकल आहार विहारा
सुरमुनि विनय कियउअतिदीना भउ प्रसन्न प्रभु रोष विहीना

भाखे सुर मुनि कर युग जोरी नाथ करउँ कछु विनय बहोरी
यह डाकिनी पुरी अपवित्रा प्रभु पदरज लहि होय पवित्रा
यह औषधी लोक दुखदायी होय नाथ कृपया सुखदायी
होइय नाथ सुथिर एहि ठामा विदित भीमशंकर इति नामा
यहाँ आवि जो दर्शन करिहैं प्रभुपद पंकज पराग परसिहैं
कलि कालुष्य ताहि नहि व्यापै यम अनुचर लखि थरथर काँपै
एवमस्तु कहि चन्द्रललामा ह्वै अन्तर्हित गउ निज धामा
ज्योतिर्लिंग भीमशंकर इति कियउ डाकिनी नगरी संस्थिति

छन्द

भीमशंकर चरित अद्भुत रुचिरतर जे गावहीं ।
उमा शंकर चरण पंकज युगल अनुरति पावहीं ॥
आवि दर्शन करहिं जे यहँ मुक्त पातक पुञ्जते ।
होहिँ तनु तजि ते विहारी राजताचल कुञ्जके ॥

दोहा

शिष्य पुरञ्जन मुदित मन, पूछत भउ कर जोरि ।
श्री विश्वेश्वर चरित शुचि, भाखिय नाथ बहोरि ॥७४॥

सोरठा

ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध, काशीवासी मुक्तिप्रद ।
सकल शास्त्र श्रुति सिद्ध, कहु महिमा तसु करुणया ॥११०॥

चौपाई

सुनत निरञ्जन अति सुख पाये मनहीं मन प्रभुपद सिर नाये

कहन लगे विश्वेश्वर महिमा वचन अगोचर तसु गुरु गरिमा
विश्वेश्वर महिमा गुण गाना महा पाप गिरि कुलिश समाना
कहत सुनत प्रभु प्रेम दृढ़ावै ज्ञान सहित वैराग्य बढ़ावै
महिमा वत्स यथामति गावौँ गुण अपार कहि पार न पावौँ
सुनहु तात अब मन चित लाई मति अति लघु महिमा अधिकाई
देखिय सुनिय विषय जग जो जो प्रलय काल महँ रहत न सो सो
भौतिक भूत चराचर जेते प्रलय काल महँ बिनसहिँ तेते
तब केवल चेतन शिव सत्ता तदितर सकल पदार्थ असत्ता
द्वैताद्वैत भान तब नाहीँ सच्चित् सुखमय शिव रहि जाहीँ
निर्गुण शिव गुणगुणि आधारा तन्मूलक संसृति व्यवहारा
निर्गुण विकसित गुणमय रूपा प्रकृति पुरुष शिव शक्ति सरूपा
लक्ष्मी नारायण तदभिन्ना विधि सस्त्रीक अभिन्न अखिन्ना
निर्गुण कारण ब्रह्म प्रसिद्धा कार्य ब्रह्म गुणमय श्रुतिसिद्धा
नहि कारण कारज महँ भेदा रूप भेद नहि वस्तु विभेदा
कुण्डल कटक कर्णिका नाना कनक मात्र जिमि धातु अनाना
प्रकृति पुरुष लक्ष्मी नारायण सृष्टि अनन्तर कृत्य परायण
किंकर्तव्यमूढ़ भउ दोऊ सुनत भयउ नभवाणी सोऊ
षोड़श एकविंश असपरसा वर्ण युगल श्रुतिगोलक परसा
तप आदेश जानि परमेशू खोजत भयउ तपस्या देशू
को उत्पादक अहै हमारा रमा रमेश्वर कियउ विचारा
शिव इच्छित नगरी निर्माणा भउ तब पञ्चकोश परिमाणा

तेजोमय अति सुन्दर रूपा आकाशस्थित भयउ अनूपा
नगरी थित लक्ष्मी नारायण लहि आयसु भउ तपःपरायण
तपोजन्य श्रम कृत जलधारा व्यापित भई सकल संसारा
जलमय सकल विश्व दरसाये रमा रमापति विस्मय पाये
विस्मय कृत सिर कम्पन भयऊ मणिकर्णिका पतित ह्वै गयऊ
भई पतित मणिकर्णी जहँमा मणिकर्णिका कुण्ड भउ तहँमा
जलप्लावित नगरी सो शंकर धारित कियउ स्वकीय शूलपर
सुचिर विष्णु निद्रित तहँ भयऊ जलशायी नामा ह्वै गयऊ
प्रकृति पुरुष लक्ष्मी नारायण आदिकाल जलशयन परायण
जीव-कर्म-संप्रेरित काला भयउ सृष्टि उन्मुख तत्काला
विष्णु नाभिथल विपुल सरोरुह भउ चतुरानन सरसीरुह रुह
सो तदुपरि त्रिभुवन निरमाये जहाँ भूत भौतिक दरसाये
योजन कोटि पचास सुविस्तृत निर्मित विश्व सरोरुह निःसृत
लौकिक वैदिक सब व्यवहारा प्रचलित पूर्व कल्प अनुसारा
मध्य समुद्र यथा थित नैया तिमि ब्रह्माण्ड जलस्थित भैया
घटी यन्त्र अन्तर जिमि डोलक तिमि ब्रह्माण्ड नाम तहँ गोलक
दिग्गज-कुल गिरि-धृत ब्रह्मण्डा कारण तसु हर ब्रह्म अखण्डा
भूर्भुवः स्वः मह जन नामा तप अरु सत्य चतुर्मुख धामा
स्वर्नामादि ऊर्ध्व थित लोका ज्ञानोपास्तिगम्य गत शोका
तल अरु अतल सुतल अरु वितला ऋद्ध महातल सदा अविकला
लोक रसातल अरु पाताला तल सप्तक नीचीन विशाला

निवसहिँ तहँ जसु जस अधिकारा सावधि काल कर्म अनुसारा
द्वीप समुद्र नदी नद आदिक दण्डकादि वन गिरि मेर्वादिक
सकल वस्तु परिवर्तनशीला सकल दृश्य श्रीशंकर लीला
अक्षर क्षर दुइ विध शिव रूपा निर्गुण सगुण अपर पर रूपा
मनोवचन इन्द्रिय गोचर जत क्षर सरूप श्रुतिशिखर बखानत
सकल अगोचर द्रष्टा जोई अक्षर रूप वेद भन सोई
अगुणहिँ सगुणहिँ एक पदारथ मानहिँ अवगत तत्त्व यथारथ
भक्ति भाव गत सगुण प्रतिष्ठा अद्वय रस गत निर्गुण निष्ठा
सगुण प्रतिष्ठ सगुणपद भागी निर्गुणस्थ निर्गुण अनुरागी
मारग एक प्रवृत्ति कहावै सगुण भाव मुनिजन तहँ गावै
मारग अपर निवृत्ति कहावै तहँ केवल निर्गुण दरसावै
क्रम संजात प्रवृत्ति निवृत्ती प्रथम प्रवृत्ति द्वितीय निवृत्ती
सोपान क्रम इहँमा जानिय यह मत बुधजन अनुमत मानिय
यथा न चन्द्र चन्द्रिका भेदा सगुण अगुण महँ तथा अभेदा
निर्गुण ज्ञान होय नहि यावत् सगुणोपासन समुचित तावत्
यावत् होत न आतमज्ञाना तावत् मिलत न मूल ठिकाना
आतमज्ञान होत जब जाकहँ अहंकार छूटत तब ताकहँ
छूटत अहंकार जब जाकहँ जीव भाव छूटत तब ताकहँ
सकल चराचर ब्रह्म सरूपा भासत उपजत हर्ष अनूपा
सोहं सोहं निर्मल ज्ञाना विधिनिषेध निर्गत तब नाना
भुवन चतुर्दश निर्मित भयऊ निर्गुण पुरुष सगुण बनि गयऊ

शंकर मनमँह कियउ विचारा कौन प्रकार जीव निस्तारा
पंचक्रोश मित काशी धामा सुमिरे शंभु लोक हित कामा
मोक्ष धाम काशी अभिरामा जहाँ अकिञ्चित्कर यमनामा
जे बसिहैं काशी पुर माहीं विधिनिषेध किंकर ते नाहीं
काशी आवि मिटत सब पापा आध्यात्मिक आदिक तिहु तापा
पतित वृन्द पावन यह नगरी मनहु मुक्तिरस पूरित गगरी
वरुणा असी मध्य सुख रूपा सुपुरी वाराणसी अनूपा
जहँ उत्तरगामिनी त्रिपथगा भागीरथी जाह्नवी गंगा
अविमुक्तेश्वर लिंग शुभंकर थापित कियउ स्वयं तहँ शंकर
अविमुक्तेश्वर कहँ करुणाकर भाखे हर हिमकिरण कलाधर
नहि मोक्तव्य कबहुँ यह काशी तुमते मोक्षपुरी सुखराशी
अविमुक्ताभिधान यह धामा अविमुक्तेश्वर तुअ शुभ नामा
तब त्रिशूल ऊपरते शंकर पुरी उतारि धरे धरणीपर

दोहा

जब जब दैनन्दिन प्रलय, होत परम विकराल।
तब तब धरहिँ त्रिशूलपर, काशी दीनदयाल ॥७५॥

सोरठा

जब जब सिरजहिँ लोक, प्रेरित जीवादृष्टते।
ब्रह्मदेव गत शोक, तब तब काशी भूमिथित ॥१११॥

चौपाई

आतम तत्त्व प्रकाशत जाते काशी पुरी नाम भउ ताते

अविमुक्तेश्वरते अविमुक्ता भउ अविमुक्त संज्ञया उक्ता
मुक्तिपुरी यह मुक्ति प्रदात्री अरु कामादि पदारथ दात्री
काशी सदृश न नगरी अन्या वाराणसी विश्व महँ धन्या
आनन्दन जहँ तरुवर बहु विध नाम भयउ आनन्दवनाभिध
मंगलमय यह मंगल नगरी शोभमान जंगलमय सगरी
सालोक्यादि मुक्ति अन्यत्रा सायुज्याह्वय केवल अत्रा
जाकी गति त्रिभुवन महँ नाहीं ताकी गति काशी महि माहीं
सुर मुनि चाहत यहँ निज मरना मुरमर्दन हरि विधि श्रुतिवदना
मानवादि सब यहँ मरणेच्छू आवागमन निवृत्ति समिच्छू
शत वत्सर काशी गुण गावै पार तथापि तासु नहि पावै
एक समय कैलास निवासी आयउ पावन नगरी काशी
अविमुक्तेश्वर दर्शन कियऊ महिमा तासु प्रकट करि दियऊ
लिंग महातम वर्णन कीन्हा श्रोतागणहिं परम सुख दीन्हा
अविमुक्तेश्वर अति सुख पाये प्रभु दर्शन करि पद शिरनाये
पूजनादि विधि कियउ यथारथ करि बहु नतिनुति भयउ कृतारथ
भाखत भयउ युगल कर जोरी अति प्रिय वचन विनय रस बोरी
दीनदयाल दया-रस-सागर सुनिय विनय जनबन्धु उजागर
होइय प्रभु अविमुक्त निवासी पर उपकार हेतु सुखरासी
सहि न सकौं प्रभु नाथ वियोगा यद्यपि यहाँ सुलभ सब भोगा
प्रेम मगन लोचन जल छाये गद्गद गल तनु पुलक लखाये
प्रभु राजा काशी रजधानी सुर मुनि प्रकृति प्रजा सब प्रानी

यह सुयोग प्रभु नयनन देखौं ब्रह्मानन्द तुच्छ करि लेखौं
आपु महेश मुक्तिपद दाता अन्नदानकर्त्री गिरिजाता
अन्नदान दै जीवन दाना देहिँ अम्बिका दयानिधाना
अन्तिम समय मुक्तिपदभागी करिय सबहिँ सेवक अनुरागी
सब सर्वत्र शुभाशुभ भोगी यहाँ होहिँ फलभोग वियोगी
योगी जपी तपी संन्यासी ज्ञानी आदिक काशीवासी
सांग वेद विद्या अधिकारी कलाकुशल कवि कोविद भारी
नाना तन्त्र स्वतन्त्र महामति शास्त्रपारगत यथा बृहस्पति
वणिकवृन्द धन धान्य समृद्धा अनुभावी जन शिक्षक वृद्धा
इत्यादिक यहँ करहिँ निवासा साम्ब शंभु पद पंकज दासा
दीनबन्धु प्रभु त्रिभुवननाथा एवमस्तु कहि करिय सनाथा
प्रभु कपालमोचनकर कारण रहिय यहाँ भवरोग निवारण

दोहा

शिष्य पुरञ्जन कहत भउ, गुरुवर पद शिरनाय ।
गुरु कपालमोचन कथा, कृपया कहिय बुझाय ॥७६॥

सोरठा

शिष्य हृदय सन्देह, छिन्न करत गुरुवचन असि ।
शरणागत प्रति नेह, बड़ जनकर प्राकृतिक गुण ॥११२॥

चौपाई

सुनि अस वचन कहन गुरु लागे प्रभु पद पद्म प्रेम परिपागे
एक समय श्रीशंकर पुरहर ब्रह्मलोक गउ करुणातत्पर

प्रभुहिं निरखि बहुविध सत्कारा करत भयउ विधि विधिअनुसारा
पुनि पुनि नतिनुति कियउ परस्पर देव विधाता अरु गौरीवर
करत भयउ अस्तुति तहँ नाना चारिहु मुखते विधि भगवाना
पञ्चम मुखते कुत्सित वचना भाखत भउ पड़ि दैवी घटना
लखि प्रभु चारि वदन भउ तुष्टा पञ्चम मुख लखि भउ अति रुष्टा
छिन्न करउँ यह पंचम आनन अस विचार करि श्रीवृषवाहन
शूल उठाय हाथ महँ लियऊ पंचम वदन छिन्न करि दियऊ
तीजे नयनानल ब्रह्मण्डा भस्म करहिं जो ब्रह्म अखण्डा
तासु चरित अस अचरज नाहीँ करहु विचार वत्स मनमाहीँ
लीला-नाटक-नटवर रूपा अभिनय कियउ पुरारि अनूपा
जन उपकृति मति कृपानिधाना करत भयउ हर लीला रचना
लोक - वेद - मर्यादा - रक्षक कियउ चरित यह प्रभु विषभक्षक
छिन्न कपाल वेगते आया त्रिभुवनपतिकर पीछे धाया
चौदह भुवन भ्रमण प्रभु कियऊ कबहुँ कतहुँ विश्राम न लियऊ
सब थल दीखत भयउ कपाला लीला कियउ बाल शशिभाला
पहुँचे काशी निकट महेशू जहाँ जाय सब मिटत कलेशू
निपतित तहँ कपाल ह्वै गयऊ तब शिव शंकर सुस्थिर भयऊ
विधि कपाल निपतितभउ जहँमा अविमुक्तेश्वर याचे तहँमा
नाथ निवास यहाँ अब कीजिय यह वरदान मोहि प्रभु दीजिय
एवमस्तु तब कहेउ महेशू जासु कृपा लव हरै कलेशू
सुनत पुरञ्जन पूछत भयऊ कथा श्रवण उत्सुक ह्वै गयऊ

विधि-पञ्चम मुख भउ कटुवचना असमञ्जस भासत यह घटना
कहु श्रीगुरुवर कारण तासू शिष्य जानि हरु संशय आसू
सुनत निरञ्जन हर्षित भयऊ कथा कथन तत्पर ह्वै गयऊ
एक समय भउ अद्भुत घटना कियउ पुराणादिक जस रटना
लखि विधि सरस्वती निज कन्या रूपवती गुणवती सुधन्या
मोहविवश विह्वल ह्वै गयऊ तिष्ठ तिष्ठ इति भाखत भयऊ
सुनि पितु वचन भई सो क्रुद्धा क्रोधप्रभाव कण्ठ भउ रुद्धा
कथमपि कहन लगी पुनि ऐसे हे पितु जल्पसि कटुरव कैसे
भयउ तात तुम कुत्सित भाखी नहि जड़मति मर्यादा राखी
अद्य प्रभृति पञ्चम मुख तोरा भाखिहि कुत्सित वचन कठोरा
सरस्वती भाषण सुनि काना भयउ विकलमति विधि भगवाना
तबते कुत्सित वचनोच्चारण करत भयउ सो मुख निष्कारण
ताते तन्मुख छेदनकर्ता भयउ महा प्रभु गौरीभर्ता
सुमिरत जिनहिँ मिटत सब पापा आध्यात्मिक आदिक सब तापा
शिव शिव कहि जन होहिँ विशोका भटके सो प्रभु चौदह लोका
स्वयंसिद्ध संसार विरागी सो प्रभु भउ कस हत्याभागी
करहिँ चरित नाना वृषकेतू शिष्टाचार प्रदर्शन हेतू
जस जस कर बड़ जन आचरना तस तस इतर करत अनुकरना
करहिँ लोकसंग्रह मन्मथअरि सदाचार शिक्षण लीला करि
कियउ स्वयं पातक स्वीकारा धर्मसेतु कस कर अविचारा
अथवा ईश्वर गति को जानै ज्ञानीजन अगम्य करि मानै

दुर्मद मदन दहन जो कियऊ अर्ध अंग वनिता धरि लियऊ
धारहिं गरल कण्ठ महँ जोई विश्वविदित मृत्युञ्जय सोई
भिक्षुक स्वयं दिगम्बर जोई सेवक तासु धनाधिप होई
भूत पिशाच प्रमथ वेताला सेना जासु महा विकराला
चतुरंगिणी-चमूपति होई तासु कृपा भाजन जन जोई
स्वयं देव वृषवाहन जोई गजवाहन सेवक तसु होई
भंग धतुर विष भोजन जाकर षट रस भोजी सेवक ताकर
वसन जासु चर्मादिक तुच्छा दिव्य वसन तसु सेवक गुच्छा
स्वयं महाविष नाग विभूषित सेवक स्वर्ण विभूषण भूषित
स्वयं योगरत भोग विरागी भक्त भोग भाजन बड़भागी
नित्य मुक्त प्रभु स्वयं कृतारथ देहिं सेवकहिं भक्ति पदारथ
भक्ति सुकर दुष्कर अति ज्ञाना निरालम्ब सालम्ब बखाना
ज्ञान भक्ति महँ साधन भेदा साध्य अभेद बतावत वेदा
सुनहु वत्स अब प्रकृत कहानी प्रभु पद पद्म प्रीति मन आनी

दोहा

अविमुक्तेश्वर-विनय सुनि, ज्योतिर्लिंग प्रधान ।
काशीवासी भयउ प्रभु, विश्वेश्वर भगवान ॥७७॥

सोरठा

भक्ति भुक्ति अरु मुक्ति, तासु कृपा कृत हस्तगत ।
सुनि अस वैदिक उक्ति, विश्वेश्वर सेविय सदा ॥११३॥

चौपाई

काशीवास कियउ प्रभु जबते परमोत्कृष्ट भई सो तबते
काशी सरिस धाम नहि कोऊ विधि हरि हर सुर नगरी जोऊ
यदपि अयोध्यादिक पुर साता मुक्ति पुरी श्रुति महँ विख्याता
काशी पुर प्रापणकर कारण अवधादिक इति श्रुति निर्धारण
परम्परा कारण अवशिष्टा अवधादिक नगरी भन शिष्टा
पाप पुञ्ज विस्फोटन कारण अविमुक्तस्थित मृदुकर धारण
काशी नगरी धन्या धन्या बद्ध मुमुक्षु विमुक्त शरण्या
काशी विश्वेश्वर संमेलन घटित दिवाकर सुत अवहेलन
जाहि न विधि कौनेहुँ विधि वामा सो लह काशी बसि विश्रामा
वाराणसी गमन मैं करिहौं वाराणसी मध्य मैं बसिहौं
पुनि पुनि अस भाषण जो करई वाराणसी वास फल लहई
जो यह चरित सुनत प्रति वारा पावत फल इच्छा अनुसारा
बहुरि निरञ्जन भाखन लागे अञ्जलिबद्ध शिष्य लखि आगे
श्रीकाशी विश्वेश्वर महिमा कहौं वत्स गुरु गौरव गरिमा

दोहा

एक समय गिरिकन्यका, प्रभु चरणन शिरनाय।
कहत भई मृदु हास करि, परउपकृति मन लाय ॥७८॥

सोरठा

महिमा वर्णन नाथ, करु काशी काशीशकर।
जाते होहिँ सनाथ, सुर नर मुनि नागादि सब ॥११४॥

चौपाई

सुनि अस वचन कहन प्रभु लागे काशीपुरी प्रेम परिपागे
काशी क्षेत्र परम प्रिय मोरा जो काटत भव बन्धन डोरा
सेवक मोर मोर व्रतधारी काशीवासी श्रुति पथ चारी
अंग अंग रुद्राक्ष विभूषित यथाशास्त्र सित भसितोद्धूलित
शिव शिव नाम निरन्तर जापी शापानुग्रह कुशल प्रतापी
विषम विषय विष चिन्ताहीना परमानन्द प्रेम लवलीना
शतरुद्रीय मन्त्र मनभावन पढ़ि अर्पहिँ सुरसरि जल पावन
पञ्चाक्षर आदिक मनु जपहीँ प्राजापत्यादिक तप तपहीँ
शत सहस्र श्रीपत्र चढ़ावहिँ नाचहिँ गावहिँ गाल बजावहिँ
करहिँ भक्तजन विविध अराधन पुनि पुनि वरुण बीज उच्चारन
धरहिँ योगिवर शुद्ध समाधी परसत उनहिँ व्याधि नहि आधी
कायव्यूह परकाय प्रवेशा अन्तर्धान सिद्धि अकलेशा
हंसः सोहम् प्रणव प्रकासा निरवधि नित्यानन्द विकासा
जीवन्मुक्त महातम वर्णन अहहि वेद अरु विविध पुराणन
जहँ तहँ यथा तथा तनु परिहरि लब्ध अभयपद व्याप्त भुवन भरि
अणिमा महिमादिक तसु दासी उपरत शुद्ध समाधि विलासी
पतित वृन्द पावन जसु संगा यथा त्रिपथगा सुरसरि गंगा
जाहि न विधि हरि मोर अपेक्षा कृत परमेष्ठि पदादि उपेक्षा
विचरहिँ जीवन्मुक्त अनेका लब्ध पुरुष प्राकृतिक विवेका
हानि लाभ सुख दुख समदरसी निरवच्छिन्न ब्रह्म सुख परसी

विषय विरत विगलित विषयाशा मम पद पंकज प्रेम पियासा
मनोवागगोचर पद गन्ता रुद्धमरुद्धति मनोनियन्ता
सम निन्दा नुति मानामाना हस्तामलकी कृत विज्ञाना
अहंकार ममता लवलेशा नहिं जिन कहँ अरु पञ्चकलेशा
जगत ब्रह्ममय अन्तर भासत बाहर लौकिक रीति विकासत
प्रारब्धक्षयमात्र प्रतीक्षित कैवल्यामृत याग सुदीक्षित
जिनहिँ कछुक नहि हेय पदारथ उपादेय नहि स्वयं कृतारथ
जे नहि विधि निषेध परतन्त्रा कर्माकर्म विहीन स्वतन्त्रा
हमहिँ उनहिँ अन्तर कछु नाहीँ व्याधि उपाधि द्वैत हटि जाहीँ
अध्यापन अध्ययन निरन्तर करहिं शिष्य गुरु त्यागि अनवसर
नाना तरुवर राजी राजै तदुपरि नाना विहग विराजै
परम रम्य सर सरसिज शोभा उपजावत मन मनसिज छोभा
गन्धर्वादि करहिँ कल गाना करहिँ सुनृत्य अप्सरा नाना
वाराणसी प्रभाव अशेषा वरणि न सकहिँ शारदा शेषा
तदपि यथामति कछुक सुनावौँ मनभावन पावन गुण गावौँ
अस कहि गुरुवर भाखन लागे वाराणसी प्रेम परिपागे
जीव विचार यहाँ नहि भाई तनु परिहरि विमुक्त ह्वै जाई
कीट पतंग विहंगम आदी मानव दानव गन्धर्वादी
अमर निकर ऋषि मुनिगण जेते तनु परिहरि विमुक्ति लह तेते
गृह आश्रम आदिक चतुराश्रम काशीमृत निवृत्त जनिमृति श्रम
शैशव आदिक वृद्ध वयस्था काशीमृत निर्वाण पदस्था

जे अविवाहित तथा विवाहित काशी मृत भवबन्धन विरहित
शुचि अरु अशुचि जीव जो कोई काशी मृत विमुक्त सो होई
यदपि अशुचिजनिमृतिकालीना काशी मृत भवबन्धन हीना
स्वेदज आदि चतुर्विध जन्तू यहँ मृत खण्डित बन्धन तन्तू
यहँ मृत यथा मुक्ति अधिकारी तथा न कुत्रपि भन श्रुति सारी
ज्ञान ध्यान अरु कर्मोपासन विषय विराग मनो निर्वासन
जप तप योग याग संन्यासा अनपेक्षित लहि काशीवासा
नामापेक्षा भजनापेक्षा यहाँ न गोदानादि अपेक्षा
कथमपि काशी महँ जो मरई अनायास भवसागर तरई
पञ्चक्रोश गत जल थल गगना मुक्ति पात्र लहि जहँ तहँ मरना
कुरुक्षेत्र आदिक जत तीरथ कथमपि देहिं न मुक्ति पदारथ
पितृ लोक स्वर्गादिक दायक काशीमात्र विमुक्ति विधायक
काशी मरण ब्रह्म विज्ञाना तदितर मुक्ति हेतु नहि आना ।
कामद तीरथराज प्रयागा करि कामना किये तनु त्यागा
यथा तथा काशी मृत जोई लहि सायुज्य कृतारथ होई
कोउ धर्म नहि सत्य समाना शान्ति समान मुक्ति नहि आना
क्षेत्र विविध अरु तीरथ नाना कोउ न वाराणसी समाना
भोग विलास मग्न अति कामी काशी मृत विमुक्त पद नामी
गो द्विज साधु देव अपकारी काशी मृत विमुक्ति अधिकारी
गुरु पितु मातु वृद्ध अपकारी काशी मृत विमुक्ति अधिकारी
पापनिलय सब अवगुण धामा काशी मृत पावै विश्रामा

मरण अमंगल शब्द सकल थल सोइ महामंगल काशीतल
वरु पिशाच काशीपुर वासी अजर अमर नहि स्वर्ग निवासी
वरु अघ पैशाचिक गति दायक क्रतु सहस्र नहि स्वर्ग विधायक
काशी प्रेत मुक्तिपद पावै स्वर्गी क्षीण पुण्य गिरि जावै
विधि हरि इन्द्र आदि सब देवा काशी मध्य करहिँ मम सेवा
द्वैपायन आदिक मुनि नाना पूज्य सुरासुर गुरु भगवाना
चतुर्वर्ण चतुराश्रम वासी करहिँ मोर सेवा रहि काशी
सहस जन्म करि योगाराधन लहहिँ न योगी जो पद पावन
केवल तनु तजि काशी माहीँ पावहिँ सो पद संशय नाहीँ

दोहा

करि अंगुलि निर्देश प्रभु, मुख्यस्थान बखान ।
अद्रिसुता प्रति करत भउ, श्रीशंकर भगवान ॥७९॥

सोरठा

श्रीगिरिराज कुमारि, हर्ष समुद्र निमग्न मन ।
लोचन पलक उघारि, देखत भइ निर्दिष्ट थल ॥११८॥

चौपाई

गोप्रेक्षक यह क्षेत्र अनूपम गोप्रेक्षेश्वर लिंग अनुत्तम
चतुरानन थापित अति पावन दुरित विदारण मुनि मन भावन
दर्शन आवि करत जो कोई दुर्गति भाजन कबहुँ न होई
लखु कैलास भवन गिरिकन्ये अति पावन मनभावन धन्ये
कपिलाह्रद विधिविरचित सुन्दर जहँ मज्जहिँ सुर सहित पुरन्दर

दर्शन मात्र करत जो कोई पातक पुञ्ज मुक्त सो होई
जो मज्जन अवगाहन कर्ता हम तसु सकल पराभव हर्ता
लखु यह रूद्र रूप सुखदायक किल्बिष मोचक पुण्य विधायक
विनय कियउ सुर मुनिगण मोरा पुनि पुनि त्राहि त्राहिकर सोरा
याचे यहाँ मोर आगमना चतुरानन अरु लक्ष्मीरमना
लिंग रूप धरि हम यहँ आये सबकर मनकामना पुराये
यहाँ आवि जो दर्शन करई यम यातना माहँ नहि परई
थापन हेतु लिंग मम लाये ब्रह्मा संभृति सकल जुटाये
तावत् विष्णु आवि अति द्रुतगति कियउ लिंग थापन उत्सुक मति
विष्णुहिं कहन लगे तब श्रुतिमुख लिंग थापना निरखि पावि दुख
मम आनीत लिंग थापन कस कियउ आपु तजि मर्यादा अस
सुनि अस कहत भयउ मुरमर्दन चतुरानन कहँ देव जनार्दन
रुद्र भक्ति प्रेरित हम आजू किये लिंग थापन सजि साजू
समुचित नहि उद्वेग कथञ्चित नहि करिहहिं हम राउहिं वञ्चित
लिंग प्रसिद्ध सर्वदा एहू राउर नाम न कछु सन्देहू
लिंग हिरण्यगर्भ यह धाता राउर नाम विश्व विख्याता
सुर नर मुनि सब कहि यह नामा करि पूजन लहिहैं मनकामा
विष्णु वचन सुनि विधि सुख पाये सुर नर मुनि सबही हरषाये
हिरण्यगर्भ दरस फल पाई मोर लोक बसिहैं जन जाई
लिंग थापना पुनि विधि कियऊ श्रीनारायण अनुमति दियऊ
स्वयं स्वलीनेश्वर इति नामा लिंग रूप हम भउ अभिरामा

यहाँ आवि जो तनु परिहरई पुनरपि गर्भवास नहि परई
राक्षस व्याघ्ररूप बलवाना महाकाय पर्वत परिमाना
काशी मध्य उपद्रव कारक महामत्त गजराज विदारक
इहँमा आवि ताहि मैं मारा भउ व्याघ्रेश्वर नाम हमारा
जो व्याघ्रेश्वर दर्शनकर्ता तसु हम सकल पाप संहर्ता
प्रिये पिता तव जग हित कामा यहाँ आवि शैलेश्वर नामा
लिंग मोर अस्थापित कियऊ बहु विध दान द्विजन कहँ दियऊ
प्रिये करहु दर्शन करि आदर करहिँ सुरासुर जासु समादर
दर्शन करै यहाँ जो कोई प्रभु प्रसाद रिपु विजयी होई
जहँ काशी अरु गंगा संगम सुवरण अरु सुगन्ध संगम सम
संगम पद सहितेश्वर नामा लिंग मोर तहँ अति अभिरामा
थापित कियउ देव चतुरानन इंधन पातक पुञ्ज हुताशन
दर्शन करहु प्रिये करि आदर जासु सुरासुर करहिँ समादर
मध्यमेश अरु जम्बूकेशा युगल लिंग हृत भक्त कलेशा
दर्शन करहु प्रिये करि आदर जासु सुरासुर करहिँ समादर
शुक्रेश्वर इति लिंग प्रसिद्धा सेवक जसु सुर नर मुनि सिद्धा
थापित कियउ मुनीश असुरगुरु दरस तासु करु प्रिये पीनउरु
लिंग कृत्तिवासेश्वर पावन महा महा पातक विद्रावन
दर्शन आवि इहाँ जो करई यम यातना मध्य नहि परई
दर्शन करहु प्रिये करि आदर सेवक जासु देवमुनि सादर
लिंग वृद्धकालेश्वर नामा दुरित दवानल अति अभिरामा

प्रिये करहु दर्शन करि भक्ती अकथनीय जसु अनुपम शक्ती

दोहा

अमित लिंग थापन कियउ, इन्द्रादिक सब देव।
परउपकृति मति सदय अति, विधि वेदोदित एव ॥८०॥

चौपाई

लिंगमयी यह काशी नगरी देव देवतालंकृत सगरी
पंच क्रोश यह क्षेत्र चतुर्दिश मुक्तिविधायक ख्यात दसहुँदिश
यहाँ आवि जो तनु परिहरई अनायास भवसागर तरई
श्रोत्रिय विज्ञ पतित चण्डाला तनु परिहरि विमुक्त तत्काला
अज्ञानी ज्ञानी वा जोई काशीमृत विमुक्त सब होई
सुनि अस वचन जोरि युग पानी कही उमा विस्मय मन आनी
प्राणनाथ मोहि संशय एका कथमपि नहिं करि सकउँ विवेका
त्रिविध कर्म विरहित संन्यासी कर्म त्रिविध कलुषित गृहवासी
योगी जपी तपी धर्मिष्ठा धर्म विरोधी खल पापिष्ठा
उभय पक्ष समता यदि होई पुण्य प्रयास करिहि कस कोई
अक्षत कर्म लहै यदि मुक्ती होय निरर्थक वैदिक उक्ती
संशय अपर नाथ हिय माहीँ प्रभु बिनु तासु निवारक नाहीँ
जैसी मति गति तैसी होई अस निर्णय जानत सब कोई
काशी मरत गृहादिक सुमिरत मुक्ति पदारथ कस तसु करगत
काशी मरण मात्र लह मुक्ती अति प्रसिद्ध यह वैदिक उक्ती
उभय पक्ष सार्थकता कैसे तम दुति सँग इक थल थित जैसे

तथ्यातथ्य सुनिर्णय कीजिय संशय अपनोदन प्रभु कीजिय
सुनि अस वचन देव त्रिपुरारी भाखे सुनु गिरिराजकुमारी
समीचीन यह प्रश्न तुम्हारा उपजायउ हिय हर्ष हमारा
जो यह कथा सुनै मनलाई तूल सरिस तसु अघ जरिजाई
पाप रहित काशी मृत जोई सद्योमोक्ष लहत ध्रुव सोई
पाप सहित काशी मृत जोई कायव्यूह अवशि तसु होई
उचित यातना अनुभव करई कर्म भोग फल कहु कस टरई
क्षीण सकल पातक पुनि सोई मुक्ति पदारथ भाजन होई
काशी महँ पातक जो करई काशी मृत पिशाच तनु धरई
लहि भैरवी यातना नाना अघी अयुत वत्सर परिमाना
बहुरि मोक्षपद पावत सोई आतमरूप प्रतिष्ठित होई
भयउ प्रथम संदेह विभेदन करउँ अपर संशयकर छेदन
शुभ अरु अशुभ कर्म जो कोई बिना भोग तसु क्षय नहि होई
पापी नरक यातना पावै पातक सुमिरि सुमिरि पछतावै
धर्मी स्वर्ग भोग अधिकारी सुख भागी भाखत श्रुति चारी
तारतम्य सुख दुख महँ होई यथाकर्म श्रुति सम्मति सोई
मिश्रित पुण्य पाप जसु होई नाना योनि जन्म लह सोई
पुण्य पाप विरहित जो कोई मुक्ति पदारथ पावत सोई
खण्डित करत कर्मकृत बन्धन पुरी काशिका अस श्रुतिगण भन
अथवा ज्ञान पदारथ महिमा करत निरस्त कर्म गुरु गरिमा
सुनहु प्रिये अब कर्म प्रकारा कियउ श्रुतिस्मृति जासु विचारा

त्रिविध कर्म सञ्चित क्रियमाना अरु प्रारब्ध कहत मुनि नाना
सञ्चित पूर्वजन्म संपादित अरु क्रियमाण अद्य आपादित
भोगत जाहि जीव संसारी भन प्रारब्ध ताहि श्रुति सारी
नहि प्रारब्ध कर्म बिनु भोगा क्षीण होत भन पण्डित लोगा
सुख दुख पुण्य पाप कृत होई अति प्रसिद्ध जानत सब कोई
पापापह मम नाम सुपावन अरु अविमुक्त नगर मनभावन
अथवा आतमज्ञान प्रसादा मिटै कर्म बन्धन अवसादा
कोटि जन्म करि यत्न अनेका उपजत अद्वय आत्म विवेका
सर्व सुलभ यह काशी धामा पहुँचि न सकत जासु विधिबामा
पूर्व जन्म करि काशी गमना पावत काशी नगरी मरना

दोहा

जैहौं काशी नगर इति, करि पुनि पुनि संकल्प।
शत जन्मावधि होय तब, काशी दर्शन कल्प ॥८१॥

सोरठा

काशी दर्शन पाय, होत कृतारथ जीव यह।
जाको दैव सहाय, सो काशी दर्शन लहत ॥११६॥
भ्रमण करत कृतकर्म, जन्म जन्म तीरथ सकल।
संपादित निज धर्म, सो काशी दर्शन लहत ॥११७॥
पुरी षट्क अवधादि, पूर्व जन्म तहँ जाय जन।
तब पुनि लहत अनादि, विश्वेश्वर अरु काशिका ॥११८॥

चौपाई

वाराणसी त्रिपथगा मज्जन करहिँ भाग्यवश जे सुकृतीजन
द्विविध कर्म सञ्चित क्रियमाणा नष्ट होहिँ तसु वेद प्रमाणा
अरु प्रारब्ध कर्म बलवाना बहुविध सुख-दुख भोग निदाना
क्षय बिनु भोग तासु नहि होई कोटि जतन करि हारै कोई
मरणानन्तर प्रारब्धक्षय होत यथा श्रुति शास्त्र सुनिश्चय
एवं त्रिविध कर्म क्षय जबही करतल मुक्ति पदारथ तबही
विश्वनाथ अरु काशी महिमा करत निरस्त कर्म गुरुगरिमा
काशी विश्वेश्वर अरु गंगा संगम करत महाभय भंगा
अन्तःकरण चरण तुम जानहु कर्ममात्र श्रुति सम्मति मानहु
क्षीण समस्त कर्म यह जबही अन्तःकरण शीर्ण पद तबही
चरणहीन जब अन्तःकरना बरबस छूटत गमनागमना
चित्त वृत्ति प्रतिहत जब होई तब समाधि थिति कह सब कोई
सिद्ध समाधि मुक्तिपद साधक त्रिविधोपाधि पराभव बाधक
उक्त प्रकार मुक्तिपद सिद्धा कहैँ याज्ञवल्क्यादि प्रसिद्धा
काशी आवि बहुरि गृहगन्ता करि तहँ पापाचरण अनन्ता
उक्त पुण्य संप्रेरित सोई क्षीण कर्म काशीगत होई
क्षीण कर्म सो होत कृतारथ लहत अत्र मृत मुक्ति पदारथ
सेविय ताते सब तजि काशी होइय सब तजि काशीवासी
सुनि प्रभु वचन कही तब अम्बा पर उपकृति मति जगदवलम्बा
जे जन प्रियतम संगम कामा त्यागत तनु प्रयाग शुभधामा

प्रियतम काशी मृत यदि होई होय विदेह न संशय कोई
अतनु विदेह मुक्तिगत जोई संभव तासु मिलन कस होई
उभय पक्ष असमंजस भासत प्रभु प्रसाद हृद्‌गुहा प्रकाशत
प्रभु द्युति दीपित त्रिभुवन एहू प्रभु सर्वज्ञ न कछु सन्देहू
प्रथम सिद्धि यदि अपर असिद्धी अपर सिद्धि यदि प्रथम असिद्धी
प्रियजन मिलन हेतु यदि कोई वेणीमग्न वपन कृत होई
काशी मृत सो लहै विमुक्ती काम अपूर्ति व्यर्थ श्रुति उक्ती
मज्जन वपन काम सम्पादक काशी मरण मुक्ति निष्पादक
तनु विरहित विमुक्तिगत जोई प्रियजन मिलन अतनु नहि होई
उभय पक्ष सार्थकता जैसे समाधान प्रभु कीजिय तैसे
भाखे प्रभु करि कोमल हासा जासु मनोगत विश्वविकासा
वेद वचन मिथ्या नहि होई शीतल अनल कहै कस कोई
सूर्योदय पश्चिम वरु होई सुखी ब्रह्मद्रोही वरु जोई
पंकज दल जल थिर वरु होई भित्ति सुदृढ़ वरु सैकत जोई
चन्द्र तापकर हिमकर तापन अमिय मृत्युकर शीत हुताशन
होय कदाचित उष्ण हिमालय काशी मृत वरु जाय यमालय
राजा मित्र होय वरु कोई वेद वचन नहि मिथ्या होई
वेद प्रवर्तक धर्म धुरीना करहिँ रमापति सृष्टि नवीना
मनोमयी सम्मेलन कारण भउ गिरिजे अस शंका वारण
कामित सुत वनितादिक जो जो देहिँ मनोमय श्रीपति सो सो
सुनि गिरिजा अस अति सुख पाई सुर मुनि जय जयकार सुनाई

२७

प्रभु तबते भउ काशीवासी गिरिजा सहित सकल सुखराशी
काशी विश्वेश्वर गुणगाना कियउँ यथा मन शास्त्र पुराना
जो यह कथा सुनै संसारी प्रभु कृपया पावै फल चारी
रुचि अनुरूप सकल सुख पावै जो जन शुभ चरित्र यह गावै

छन्द

चरित सुन्दर श्रुति मनोहर भय विमोचन पावनम् ।
काशिका विश्वेश महिमा कथन मुनिमन भावनम् ॥
जह्नुकन्या यशोवर्णन विविध विध पापापहम् ।
कहैँ सुनैँ सप्रेम जन ते लहैँ पद तापापहम् ॥

दोहा

शिष्य पुरञ्जन मुदित मन, सुनि शिवचरित अनूप ।
गुरुहिँ प्रणमि भाखत भयउ, वचन सुधारस रूप ॥८२॥

सोरठा

ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध, विश्वेश्वर अविमुक्त थित ।
भजहिँ जाहि सुर सिद्ध, मुनी तासु महिमा अमित ॥११९
ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध, त्र्यम्बकेश त्रिभुवन विदित ।
सकल शास्त्र श्रुति सिद्ध, कहिय नाथ तसु शुभचरित ॥१२०
सुनि गुरुवर मृदुहास, करि प्रमुदित भाखत भयउ ।
करउँ यथोक्त प्रकास, त्र्यम्बकेश शुभ चरितकर ॥१२१

चौपाई

पुरा भयउ गौतम मुनिराया विश्वविदित जसु यश जग गाया
नाम अहल्या पत्नी तासू रूप अनूप विदित जग जासू
सपत्नीक मुनि करि तपचर्या विस्मित कियउ सकल मुनिवर्या
दक्षिणदिशि गिरि ब्रह्मशिखरपर भयउ अहर्निश व्रत विधि तत्पर
वत्सर अयुत तपस्या कियऊ शिखर तपोदीपित करि दियऊ
एक बार तहँ भयउ अवर्षण शत वर्षावधि भूरस शोषण
दीख न कतहुँ आर्द्र तरु पल्लव गोधन हीन भयउ सब वल्लव
अन्नहीन निष्प्राण शरीरा नर नारी सब भयउ अधीरा
जीवन विरहित सकल जलाशय जहँ तहँ दीखत मृतक जन्तुचय
पशु पक्षी गण जहँ तहँ मरई हाहाकार सुरासुर करई
करैं योगि द्विज प्राणायामा ध्यान लगावैं आठो यामा
समय अतीत करन अस लागे कछुक विकल ह्वै जहँ तहँ भागे
शान्ति रहित भउ सब संसारा तरुवल्ली चय भउ निस्सारा
वरुणोद्देशक तप आरम्भा गौतम कृत तजि निद्रा जंभा
षण्मासावधि कुम्भक साधन कीन्हे मुनि पुनि विविध अराधन
तब तहँ वरुण दया करि आये वरम्ब्रूहि इति वचन सुनाये
याचे जलवर्षण वरदाना जग हित हेतुक मुनि भगवाना
कहन लगे तब वरुण जलाधिप केवल शिव चौदह भुवनाधिप
प्रभु अभिरुचि टारे नहि टरई सोइ अवर्षण वर्षण करई
वर्षण भिन्न माँगु वरदाना होय मुनीश्वर तव कल्याना

सुनि अस वचन कहे मुनिराई प्रासंगिकी नीति कछु गाई
आश्रय आश्रयि भाव प्रसिद्धा विना तासु व्यवहार असिद्धा
आश्रयि रूप चराचर जीवा आश्रय केवल श्यामल ग्रीवा
आश्रय आश्रयि भाव सुसिद्धा पति पत्नी महँ लोक प्रसिद्धा
नृपति प्रजा महँ लोक प्रसिद्धा आश्रय आश्रयि भाव सुसिद्धा
आश्रय आश्रयि भाव सुसिद्धा तरु वल्ली महँ लोक प्रसिद्धा
सधन अधन महँ लोक प्रसिद्धा आश्रय आश्रयि भाव सुसिद्धा
आश्रय आश्रयि भाव सुसिद्धा महि महिधर महँ लोक प्रसिद्धा
मम आश्रय लहि आश्रयि लोका अनावृष्टि महँ होहिँ विशोका
यह वरदान महाप्रभु दीजै सेवक जानि कृतारथ कीजै
जीवहिँ मुनिगण आश्रित मोरा यावत् अनावृष्टि यह घोरा
जो लघु जनकर आश्रय होई बड़जन विदित लोक महँ सोई
नीच उच्च आश्रय परतापा सुखी विगत दुख दारिद तापा
फल तस होय सेव्य जस होई यह निर्णय जानत सब कोई
देहिँ नृपति संसेवित सोना बनियाँ देइ टंक भरि नोना
सेवित धेनु करै पयदाना सेवित विषधर हरै पराना
दया धर्मकर मूल कहावै उपकारी यश वेद सुनावै
करुणाकर करुणा अब कीजै अनावृष्टि संकट हरि लीजै
दीजै नाथ मोहि वरदाना जाते जग पावै कल्याना
गौतम विविध विनय जब कियऊ वरुण तथास्तु वचन कहि दियऊ
पुनि गौतम कर गहि जलनायक भाखत भयउ जगत सुख दायक

एक गर्त खोदहु मुनि अबही जाते सुख लहिहँ जन सबही
गौतम तुरत गर्त निर्माये निरखत वरुण देव हर्षाये
गर्त वारि पूरित ह्वै गयऊ लखि महिमा सब विस्मित भयऊ
अक्षय जलपूरित यह गर्ता प्राणी अनावृष्टि दुखहर्ता
दान-होम - जप-श्राद्ध - विधाना यहाँ किये अक्षयफल नाना
गौतम कुण्ड नाम यह गर्ता अति पवित्र सब पातक हर्ता
भयउ भाखि अस अन्तर्धाना दया समुद्र वरुण भगवाना
सकल चराचर परम प्रसन्ना भउ गौतम मुनि शरणापन्ना
लौकिक वैदिक सब आचारा भउ आरब्ध सकल व्यवहारा
यव धान्यादि शस्य सम्पत्ती भयउ बीति गइ पूर्व विपत्ती
गौतम आश्रम निकट निवासी भउ ऋषि मुनि सब जंगलवासी
सफल वृक्ष जिमि सेवै पक्षी कुसुमित तरु जिमि मधुरस भक्षी
शिष्यनिकरजिमिशिक्षकआश्रित तिमि जनता गौतमहिँ समाश्रित
पोषण भरण भयउ बहु भाँती भउ सुखमय सबकर दिन राती
पशु पक्षी सब गौतम शरना पहुँचि भूलि गउ संकट अपना
स्वाहा स्वधा मन्त्र उच्चारन गुञ्जित भउ गौतम मुनि कानन
हन्तकार धुनि पुनि पुनि भयऊ वषट्कार रव वन भरि गयऊ
वैष्णव शैव शाक्त आदिक मुनि कियउ इष्ट आराधन पुनि पुनि
सुखमय समय भयउ सबकेरा भउ सुखमय गौतम मुनि डेरा

दोहा

आनन्दित जनता भई, गौतम मुनि परभाव ।
श्रीगौतम कानन भयउ, व्यापित सात्त्विक भाव ॥८३॥

सोरठा

विस्मयजनक चरित्र, भयउ तदा गौतम निकट ।
अन्तःकरण पवित्र, होत वत्स यह चरित सुनि ॥१२२

चौपाई

जल आनयन हेतु मुनिराया शिष्य निकर निज कुण्ड पठाया
कियउ निषेध उनहिँ मुनि नारी लेहु न बटुक कुण्डगत वारी
जलादान हम सब जब करिहैँ तत्पश्चात् अपर जन भरिहैँ
गुरुपत्नी समीप सब गयऊ समाचार यह भाखत भयऊ
गुरुपत्नी करि बटु आश्वासन गयउ बहुरि जहँ मुनि पत्नीगन
अनुनय विनय कियउ सब काहू मैत्रीभाव जानि बड़ लाहू
मुनि पत्नीगण गञ्जन तासू कियउ बिसरि मुनिउपकृति आसू
जासु प्रसाद विपति अति बीती कियउ तासु सँग कुत्सित रीती
ऋषिपत्नी सब निजनिजपतिप्रति मिथ्या कथा कही दुर्मति अति
हमहिँ अहल्या गञ्जित करई नहि राउर भय मनमहँ धरई
मुनि समाज तृणवत् करि मानत जानि अधीन हमहिँ अपमानत
निरखि अहल्यापति परतापा होत हमहिँ दुस्सह सन्तापा
स्वामिन् नारि स्वभाव अनेका अतिकलुषित नहि तनिक विवेका
करि साहस हम सब अब प्राना तजिहैँ भउ असह्य अपमाना
यद्यपि हम सब जीवितपतिका तदपि सहैँ दुख यथा अगतिका
सुनि मुनिजन निज पत्नी बानी पायउ मनमहँ परम गलानी
त्रियाचरित्र सत्य कवि कहई दैवहुँ सो वञ्चित करि सकई

साहस अनृत मूर्खता माया नारी दोष अशौच अदाया
यद्यपि नारिहिँ कह सब अबला त्रिभुवन जयिनी तद्यपि प्रबला
क्षुर धारोपम हृदया वामा अमृतोपम वचना अभिरामा
विषवल्लरी विरक्ता जोई अमृतवल्लरी रक्ता सोई
नहि विश्वासपात्र हरिणाक्षी यथा भुजंगम मारुतभक्षी
गौतम गहन समाश्रित वामा कियउ चरित यह विग्रहकामा
स्वामिनकहँ विमूढ़ करि डारी का नहि करि सक कुटिला नारी
मुनि मुनिपत्नीगण मिलि सबही कियउविचार घृणितअति तबही
भावी वेग टारि को सकई विधि वञ्चित करि पौरुष थकई
करौ कोउ अस निन्दित कारज जाते गौतम बनै अनारज
अपमानित गञ्जित अति होई जहँ तहँ कानन भटकै रोई
ह्वै निज आश्रमते निष्कासित होय शिष्ट जनमहँ उपहासित
करि निश्चय अस दुर्मति द्विजगण भयउ तपस्या तत्पर तत्क्षण
दारुण तप करि कृशतनु भयऊ भोजन पान शयन तजि दियऊ
विघ्नहरण गजवदन उपासन करन लगे करि रुद्ध मरुन्मन
पूजन तासु कियउ बहु भाँती निरालस्य तन्मय दिन राती
दूर्वादल तण्डुल शतपत्रा सिन्दूरार्घ्यर्पण कृत सत्रा
अगुरु धूप घृतदीप चढ़ायउ लोहित चन्दन अंग लगायउ
कियउ मोदकापूप निवेदन अरु नति नुति सविनय आवेदन
जब अस बीति गयउ बहु काला भउ प्रसन्न गजवदन दयाला

दोहा

वरम्ब्रूहि वाणी मधुर, भाखत श्रीगणनाथ ।
जनवत्सल दर्शन दियउ, मुनिजन भयउ सनाथ ॥८४॥

सोरठा

अति रोमाञ्चित गात, गल गद्गद लोचन सजल ।
लखत न नयन अघात, निमिष नियम पल परिहरे ॥१२३
निरखि रूप अभिराम, भयउ कृतारथ मुनि निकर ।
वारंवार प्रणाम, करि करि अस्तुति करत भउ ॥१२४

जय गणनायक सिद्धिविधायक
जनसुखदायक पाहिजनम् ।
विघ्नविदारण सद्गतिकारण
कुर्वस्माकं द्रुतमवनम् ॥
प्रमथ चमूपति परिवृढ़ दृढ़बल
समृड़ मृड़ानी नन्दन हे ।
वयमुपजातास्तावक चरणं
शरणं चर्चित चन्दन हे ॥

चौपाई

करि अस्तुति याचे वरदाना मुनिजन विधि वञ्चित हतज्ञाना
गौतम मुनिहिँ करिय अति गञ्जित भाल बाल विधु कुंकुमरञ्जित
गौतम मान मथन प्रभु कीजै विभव दुराय पराभव दीजै
सुनिअसघृणितवचन गणनायक भाखे वचन भाखिबे लायक

तुम सबकर गौतम मुनिराया करि परिपालन प्राण बचाया
तासु अहित अस कुत्सित बानी कहत न कस उपजै मन ग्लानी
उपकारी प्रति करि अपकारा विधि वञ्चित जन सह दुखभारा
यावत् रवि शशि नरक मझारी पावत दुसह दण्ड दुख भारी
जे कृतघ्न विश्वास-विघातक आ-युगान्त दण्डित कृत पातक
गौतम मुनिवर सेवन करहू मत्सरता मन महँ नहि धरहू
यदि निजहितअभिवाञ्छितविप्रा मानहु मम अनुशासन क्षिप्रा
सुनि अस विप्रवृन्द अकुलाये गणपति पद पंकज शिर नाये
विनवत भयउ पाणि युग जोरी परिम्लान मुख ग्लानि न थोरी
रोषामर्ष वेग अवरोधा नहि सम्भव विनु आतमबोधा
क्रोध हुताशन ताप तितिक्षा नहि संभव लहि केवल शिक्षा
गुरु देवता कृपा यदि होई कामादिक जय करि सक कोई
करि कत जन्म विविध व्रतचर्या मिलहिँ ज्ञानदायक गुरुवर्या
अति असह्य कोपानल ज्वाला पजरत उर अन्तर विकराला
निर्वापन तसु प्रभु अब कीजै भक्तवच्छल वाञ्छित वर दीजै
प्रभु अन्यथा मृतक सम मानिय हमहिँ नाथ नहि मिथ्या जानिय
सुनि गणपति विस्मित ह्वै गयऊ मौन भाव अवलम्बन कियऊ
को सक टारि दैव बलवाना यथाशक्ति करि पौरुष नाना
नल हरिचन्द राम रघु राजा धर्म युधिष्ठिर कुरु सिरताजा
कहहु काहि नहि दैव नचाया पुरुषारथ कहु कौन बचाया
सुनहु वत्स अब प्रकृत कहानी सुनि सुख उपजै मिटै गलानी

पुनि बोले श्रीगिरिजानन्दन भाखौं तुमहिं यथारथ मुनिजन
उपकारिनकर करि अपकारा पावत संकट वारंवारा
नाना नीच योनि दुख भोगी निर्धन क्षय कुष्ठादिक रोगी
सन्तति मुख सो देखत नाहीं कुक्कुर इव कुत्सित जगमाहीं
छिन्न भिन्न अपि चन्दन दारू नहि परिहर निज सौरभ सारू
पर अपकृत अपि सज्जन साधू तदुपकार कारक निर्बाधू
जब तुम्हार अति दुस्थिति भयऊ क्षुधा तृषा दुस्सह दुख दियऊ
तब गौतम मुनि सबकर रक्षा कियउ दयालु साधु व्रत दक्षा
सो सब भूलि गयहु क्षण माहीं तुम सम घृणित कोउ जग नाहीं
पुनि पुनि अस गणपति समुझाई मुनिजन तदपि शान्ति नहि पाई
कोटि उपाय कोउ यदि करई भवितव्यता तदपि नहि टरई
हठि मुनिजन सोई वरदाना याचे मोहविवश हतज्ञाना
एवमस्तु कहि तब गणनायक अन्तर्हित भउ सिद्धि विधायक
मायिक धेनु रूप धरि गणपति जन वत्सलता जासु ख्यात अति
पहुँचे गौतम मुनिकर आश्रम शस्यशून्य तेहि कियउ विनाश्रम
व्रीहि यवादिक चर्वण कियऊ भक्तवश्यता परिचय दियऊ
तावत् गौतम मुनि तहँ पहुँचे धेनुरूप लखि मन महँ सकुचे
लघु तृणखण्ड हाथ गहि लीन्हा मृदु ताड़न करि वारण कीन्हा
अद्भुत चरित भयउ तब तहँमा गौतमकृत गो वारण जहँमा
लहि मायिक गो तृण असपरसा गिरी धरातल लगा न अरसा
धेनु मरण लखि भउ कोलाहल भउ गौतम कानन महँ हलचल

गौतम मुनि व्याकुल ह्वै गयऊ तन सुधि बिसरि विमूर्छित भयऊ
ऋषि ऋषिपत्नीगण तहँ आयउ धिग्गौतम इति शब्द सुनायउ
दुर्गञ्जन अरु ताड़न कियऊ स्वाश्रम निष्काशित करि दियऊ
लखि मुनिवर दैवी दुर्घटना कियउ गहन गिरि गह्वर अटना
हाय दैव कहि रोदन कियऊ जनता महँ अपमानित भयऊ
लखि तव मुख अघ उपजत गौतम भाखे मुनिगण स्वयं नराधम
कुल कलंक तुम गौतम भयऊ अस कहि प्रहसित मुख ह्वै गयऊ
भउ विस्मयाविष्ट मुनिराई पत्नी सहित ग्लानि अति पाई
मानस व्यथा वरणि नहि जाई शोक जनित जल लोचन छाई
सपत्नीक मुनि लखि विधि बामा कियउ मुनिनकहँ दण्ड प्रणामा
त्राहि त्राहि गौतम मुनि बोले लोचन पलक न मुनिजन खोले
क्षमायोग्य नहि पातक तोरा भाखे मुनिजन वचन कठोरा
वसनावृत आनन ह्वै गयऊ मुनि मुखदरस बचावत भयऊ
करन लगे पुनरपि कटु भाषण भावीवश मुनिगण निष्कारण
तुअ मुखदर्शन पातक भारी दूर होहु द्रुत उत्पथचारी
गोहत्या करि सम्मुख आवत त्राहि त्राहि कहि क्रोध बढ़ावत
बूड़ि मरहु चुल्लू जल माहीं निन्दित जीवन जीवन नाहीं
सुनि गौतम मुनि अति अकुलाये पुनिपुनि मुनिजन पद शिर नाये
भाखन लगे जोरि युग पानी बानी मृदुल विनय रस सानी
प्रतीकार मुनिगण अब भाखिय दुर्दश जानि शरण महँ राखिय
करिय क्षमा शरणागत जानी दीनदयालु दया मन आनी

कहिय काह कर्तव्य हमारा प्रायश्चित्त शास्त्र अनुसारा

दोहा

तब मुनिगण भाखत भयउ, धर्मशास्त्र अनुसार।
करहु प्रकाशित पाप निज, गौतम बारंबार ॥८५॥
वसुधा परिकरमा करहु, करहु मास उपवास।
पुनि ब्रह्माद्रि प्रदक्षिणा, एक पचास पचास ॥८६॥

सोरठा

अथवा गंगा धार, लावहु गौतम मुनि यहाँ।
मज्जहु बारंबार, संयत मन वच काय नित ॥१२५॥
मृण्मय लिंग बनाय, शंकरकर शतलक्ष मित।
पूजहु चित्त लगाय, प्रायश्चित्त विधान यह ॥१२६॥
सुनि गौतम मुनिराय, जो आज्ञा भाखत भयउ।
मुनिगण पद शिर नाय, श्रीगणेश कहि चलत भउ ॥१२७॥

चौपाई

मुनिवर प्रायश्चित्त विधाना कियउ यथा मुनि निकर बखाना
भूमि भूमिधरवर-परिकरमा कियउ महामुनि गौतम शर्मा
भउ मासोपवास-व्रत-चारी पार्थिव-लिंग-समर्चन-कारी
सपत्नीक भउ गौतम मुनिवर निशि वासर शिव सेवन तत्पर
शंकर ध्यान मगन मुनिराया उपरत मारुत मन वच काया
शिष्य और उपशिष्य समेतू कियउ सुसेवित श्रीवृषकेतू
भउ प्रसन्न श्रीगौरीशंकर कहे आवि तहँ ब्रूहि ब्रूहि वर

सुरमुनि प्रमथादिक तहँ आयउ गौतम मुनि जहँ ध्यान लगायउ
आनन पञ्च पंच दश लोचन दश भुज शरणागत भय मोचन
शशिमुखशशिनिभशिशुशशिभाला उरगाभरण उरग वर माला
उरग-यज्ञउपवीत विराजित मस्तक देवधुनी छवि छाजित
भसित विधूलित भसित त्रिपुण्डा अक्षमाल करधृत नरमुण्डा
सौभग निलय हिमाचलकन्या अर्धाङ्गिनी वाम दिशि धन्या
जय जयकार करत सुरवृन्दा अनुगत अनुगत विविध मुनिन्दा
डिम डिम डमरु बजावत भृंगी अरु गलवादन तत्पर श्रृंगी
वीणा मधुर बजावत शारद सामवेद गावत मुनि नारद
हिय महँ प्रभु अन्तर्हित भयऊ मुनि समक्ष प्रकटित ह्वै गयऊ
दरस पावि मुनि भयउ कृतारथ लहेउ अनिच्छित चारि पदारथ
प्रणमिप्रणमिबहुविधनुतिकियऊ शंकर पद रज शिर धरि लियऊ

छन्द (भुजङ्गप्रयात)

विनम्रीभवन्नौमि गौरीकलत्रं
श्रुतिर्वक्ति यस्यानवद्यं चरित्रम् ।
महीदेवकल्याणकारिन्नमस्ते
पिनाकिन् कपर्दिन् त्रिशूलिन्नमस्ते ॥१॥
जटाजूटधारिन् चिताभूविहारिन्
सुराराति विध्वंसकारिन्नमस्ते ।
त्रिकालानपायिन् महामोक्षदायिन्
सहस्रार शायिन्नमायिन्नमस्ते ॥२॥

प्रभुं कालकालं सुधासद्मभालं
गणेशाधिपालं महामुण्डमालम् ।
करालं करालं कपालं दधानं
ज्वलत्कालकूटं दधानं नतोहम् ॥३॥
चिदाकाश मूर्तौं सुधापिण्डपूर्तौं
महामोहधूते सदा सावधानम् ।
महाव्याघ्रकृत्तिं वसानं श्मशानं
स्वकीयाङ्गभासा भजे भासयन्तम् ॥४॥
हृदम्भोज भानुं नगेशानसानुं
समाश्रित्य सञ्चिन्तयन्तं च किञ्चित् ।
जगद्वन्द्य पादारविन्दं भजे त्वां
क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधम् ॥५॥
न मे नाथ बुद्धिर्नमे नाथ शुद्धि
स्तपो वा जपो वा समर्चा विधिर्वा ।
न मे नाथ वेदान्तविद्यालवो वा
त्वमेको गतिर्मे त्वमेको मतिर्मे ॥६॥
जगत्-सृष्टि-संहार-रक्षा-विधानं
तव भ्रूविलासोद्भवं शास्त्रसिद्धम् ।
किमेकस्य रक्षाविधाने मम त्वं
समालम्बसे हन्त नाथालसत्वम् ॥७॥

भवानीप्रिया हस्तिवक्त्रो सुतस्ते
पुरारे मुरारिः सखा ते प्रसिद्धः ।
कुतोयं त्वयीशान कार्पण्यदोषो
न भक्तानपेक्षा प्रभो शोभते ते ॥८॥
मयीशानुकम्पा विधेया विधेया
कृपालुत्व कीर्तिर्न हेया न हेया ।
त्वदीये जगद्वन्द्य पादारविन्दे
मनोमे द्विरेफत्व समायातु भक्त्या ॥९॥
नवकं यः पठेदेनद्भक्ति भावेन मानवः
महादेव प्रसादेन मुच्यते सर्व किल्बिषैः ।
यद्यदिच्छति तत्तस्या त्रात्रकार्या विचारणा
भुक्तिञ्जीवन्नवाप्नोति मृतोभवति मुक्तिभाक् ॥

दोहा

मुनिवर कृत अस्तुति सुनत, ह्वै प्रसन्न जगदीश ।
मांगु मांगु वर कहत भउ, धरि कर मुनिवर शीश ॥८७॥

सोरठा

तब गौतम मुनिराज, जोरि पाणि युग कहत भउ ।
नहि अलभ्य कछु आज, नाथ राउरो दरस लहि ॥१२८
प्रभु आज्ञा अनुसार, तदपि याचना कछु करौं ।
गोवध पाप अपार, दूर दुराइय करि कृपा ॥१२९

भाखे गिरिजानाथ, पाप रहित तुम सर्वदा।
पाप बोझ निज माथ, लादे मुनिगन तोहि छलि ॥१३०
करि यह मायाजाल, तोहि कलंकित कियउ सब।
लहिहैं अब तत्काल, निज करनीफल मुनि निकर ॥१३१
रवि शशि थिति पर्यन्त, यमपुर बसत कृतघ्न जन।
नहि पातककर अन्त, होत किये निष्कृति विविध ॥१३२
त्रिभुवन रक्षा दक्ष, धन्य धन्य तुम धन्य तुम।
पातक फल प्रत्यक्ष, अधम मुनिनकर जग लखै ॥१३३

चौपाई

कलुषित मुनिजन जहँ तहँ जैहैं नहि कुत्रापि शान्ति सुख पैहैं
कुकुर इव अपमानित सब थल अनुतापित सुमिरत अघ अनुपल
गौतम मुनि तुम स्वयं पवित्रा लहि मम दरस पवित्र पवित्रा
तुअ चरित्र यह जे जन गैहैं मुक्त सकल पातक ह्वै जैहैं
माँगहु वर अभिलषित मुनीशा कहत भयउ पुनि प्रभु जगदीशा
सुनि अस भाखत भउ मुनिनायक जय शरणागत जन सुखदायक
यद्यपि प्रभु राउर परसादा बीति गयउ मम सब अवसादा
एक तथापि लालसा मेरी पूरित करिय दया दृग हेरी
बहै यहाँ प्रभु सुरसरि धारा लहै पातकी जन उद्धारा
प्रायश्चित्त विधान हमारा पूरित होय शास्त्र अनुसारा
मुनिगण कियउ नाथ जो अज्ञा चाहौं करन न तासु अवज्ञा
गिरत भयउ अस कहि चरणनपर भयउ प्रसादोन्मुख श्रीशंकर

एवमस्तु करुणाकर बोले विसयकृत गलकुण्डल डोले
स्वर्गलोक अरु मर्त्यलोकते सार समुद्धृत करि पूर्वहिते
राखत भयउ दयानिधि शंकर इंद्रादिक सुरराज सुकिंकर
सार पदारथ सोइ महेशू निज विवाह अवसर अकलेशू
कर्म दक्षिणा विधि कहँ दियऊ स्वस्तिवचन उनते मुनि लियऊ
जो अवशिष्ट सार महँ किञ्चन दियउ सोइ गौतमहि अकिञ्चन
सार पदारथ जलमय भयऊ वामा रूप सोइ है गयऊ
गंगा नाम तासु विख्याता जसु गुण गावत श्रुति विज्ञाता
नति नुति तासु किये मुनि गौतम जसु तट तनु तजि तरत नराधम
धरे कमण्डलु महँ विधि ताकहँ राखे शंकर शिर धरि जाकहँ
नृपति भगीरथ ताही लायउ ताते भागीरथी कहायउ
भउ उद्धृत जसु परस सगर सुत शास्त्रसिद्ध यह महिमा अद्भुत
गंगानयन निमित्त महीपति भउ कुलतारण नाम विदित अति
दरस पाय मुनि अति हरषाये पुनि पुनि पद पंकज शिर नाये
पूजन कियउ साजि सब साजा भउ अस्तुति तत्पर कृतकाजा

छन्द

जय जय गङ्गे तरल तरंगे भवभयभंगे जह्नुसुते
शंकर संगिनि विन्ध्य विभङ्गिनि दुरित निकंदिनि देवनुते
सिन्धु विलासिनि हिमगिरिवासिनि विद्रुमहासिनि पावय माम्
देवि त्रिपथगे त्रिभुवन जनता करुणापांगे पालयताम्

जगदुद्धारिणि मामुद्धारय दुरितंदारय तारय माम्
देवि दयामयि कृपाकटाक्षैर्मामवलोकय मोचय माम्
करुणामयि करुणाम्मयि दर्शय शोधय शोधय मलिन मतिम्
तावक चरणं शरणं याचे याचे भगवति नान्यगतिम्

दोहा

करुणाकर करुणायतन, करुणासिन्धु महेश।
भाखत भउ भागीरथिहिँ, शंकर विगत कलेश ॥८८॥
भागीरथि अब करि कृपा, करहु मुनिहिँ निष्पाप।
तव प्रसाद लवलेशते, कटत जगत सन्ताप ॥८९॥

सोरठा

करि गङ्गा मृदु हास, विनय कियउ जगदीशते।
उत्पति थिति अरु नास, प्रभुलीलाकृत अंजसा ॥१३४
राउर लीला नाथ, महिमाख्यापन हेतु मम।
मुनिवर स्वयं सनाथ, राउर कृपाकटाक्षते ॥१३५
प्रभु आज्ञा अनुसार, मुनिवर भयउ पवित्र यह।
सुत कलत्र परिवार, गौतमकर परिपूत भउ ॥१३६
कैलासाचल धाम, करन चहौँ प्रस्थान अब।
मुनि परिपूरित काम, मोहि न प्रभु बिनु अपरगति ॥१३७

चौपाई

सुनि अस श्रीहर भाखन लागे करुणाकर करुणा परि पागे
पञ्च सहस वत्सर कलि यावत् निवसहु मर्त्यलोक महँ तावत्

तव सेवन त्वयि मज्जन आदिक करत लहत नहि जन जन्मादिक
करि सुकृती तुअ तीर निवासा मकर मेख तुल संक्रम मासा
कल्प कल्प कृत पाप विवर्जित करिहैं इन्द्रादिक पुर निर्जित
करि नन्दनवन आदिक भोगा लहिहैं मुक्ति ज्ञान संयोगा
कलिमल कलुषित भारतवासी तुअ प्रसाद अघ ओघ विनासी
पर उपकार बड़नकर धर्मा सदाचार सज्जन कर कर्मा
सुनि अस कहत भई पुनि गंगा स्वर्गनिसेनी हर शिर संगा
वसिय नाथ यहँ उमा समेता यथा भक्तजन हृदय निकेता
एवमस्तु तब शंभु उचारा गुञ्जित भउ नभ जय जयकारा
अमरी अमर सुमन वरसाये मुनि आश्रम मुद मंगल छाये
शीतल सुरभि मन्द सञ्चारा सुसगुन सूचक वही बयारा
भउ होमीय हुताशन इद्धा उर्वीतल धन धान्य समृद्धा
अरु वैदिक आचार विचारा भउ प्रचलित लौकिक व्यवहारा
निवसउँ प्रभु काशी पुर माहीँ यहाँ वास आवश्यक नाहीँ
होय यहाँ यदि मोर महातम सकल तीर्थ उत्कृष्ट अनुत्तम
छली द्विजनकर शोधन भारा थापित होय न नाथ हमारा
उमा सहित राउर पद पद्मा यदि निरखौँ नित रहि निज सद्मा
करिहौँ वास यहाँ मैँ नाथा नित्य दरस दै करिय सनाथा
करि पवित्र गौतम मुनिराजू जैहौँ पुनि रजताचल आजू
मुनिजन छल परपञ्च अगारा पातक इनकर अगम अपारा
इनहिँ न प्रभु करि सकौँ पवित्रा जे कृतघ्न अति निन्द्य चरित्रा

सुनि विहसित मुख भउ श्रीशंकर करुणा वरुणालय करुणाकर
तावत् सुर मुनि पहुँचे तहँमा विविध क्षेत्र तीरथ तेहि लहमा
यंक्ष रक्ष किन्नर गन्धर्वा नर नागादिक प्राणी सर्वा
गौतम मुनि गंगा गौरी हर पूजे सब जय जय धुनि तत्पर
प्रणमि प्रणमि अस्तुति बहु कियऊ अरु उपचार विविधविधि दियऊ
भयउ प्रसन्ना देवी गंगा अरु शंकर गौरी अर्धंगा
वरम्ब्रूत इति भाखत भयऊ सबै हर्ष गद्गद ह्वै गयऊ
अञ्जलिबद्ध कहन तब लागे परमानन्द प्रेम परि पागे

दोहा

यदि प्रसन्न हम सबनि प्रति, गङ्गा उमा समेत ।
राउ सबै कीजिय यहाँ, चिरकालीन निकेत ॥९०॥

सोरठा

त्र्यम्बकेश इति नाम, ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध अति ।
पूरिय सब मनकाम, यात्रिक जनकर करि कृपा ॥१३८॥

चौपाई

तब गंगा भाखी मृदु बैना करुणा रस परि पूरित नैना
महा महा प्राचीन मुनिन कहँ गौतम निकट उपस्थित जे तहँ
गौतम मुनि पवित्र ह्वै गयऊ इति कर्तव्य सिद्धि मम भयऊ
अब कैलास गमन मैं करिहौं साम्ब शंभु पदरज सिर धरिहौं
शंभु स्वरस लहि मुनि ऋषि नाना समयोचित तब वचन बखाना
हम सबकर पवित्रता कारण करहु यहाँ निज थिति निर्धारण

सिंह राशिगत जब सुर गुरुवर शास्त्रसिद्ध यह पर्व महत्तर
द्वादश वत्सरपर यह पर्वा लगि उपजावत धर्म अखर्वा
तब हम सब मिलि इहँमा ऐहैँ मज्जनादि करि दुरित दुरैहैँ
तीरथ क्षेत्र विविध धरि रूपा भाखे वचन समय अनुरूपा
अघी वर्ष एकादश हम महँ करिहैँ अघ प्रक्षालन जहँ तहँ
प्रति द्वादश वत्सरपर हम सब यहाँ आवि दर्शन पैहैँ तब
मज्जनादि करि अति सुख पैहैँ प्राप्त पातकहिँ दूर दुरैहैँ
उमा सहित शंकर अरु आपू निवसिय यहाँ हरिय सब पापू
कृतकृत्यता लाभ सब करिहैँ साम्ब शंभु पदरज शिर धरिहैँ
सिंह राशिगत गुरुवर यावत् रहिहैँ हम सब इहँमा तावत्
नहि गुरुसिंही योग समाना अपर योग मुनि निकर बखाना
गौतमादि मुनि विनती कियऊ एवमस्तु शंकर कहि दियऊ
गंगा उमा सहित श्रीशंकर कियउ वास तहँ लोक शुभंकर
जब जब लागत यह शुचि पर्वा होहिँ तहाँ एकत्र सुसर्वा
तीरथ क्षेत्र पितर मुनि देवा किन्नर गंधर्वादिक जे वा
नाग दनुज मनुजादिक सबही पहुँचैँ तहाँ योग यह जबही
एक मास तहँ करैँ निवासा पूरैँ श्रीप्रभु सबकर आसा
बसैँ वासुदेवादिक तहँमा गंगा संग गौतमी जहँमा
गुरु सिंहीय पर्व यह यावत् अफल प्रयागादिक थल तावत्
प्रथम गौतमी मज्जन दाना गोदावरी तदनु असनाना
बहुरि गौतमी मज्जन दाना हत्यामोचन वेद बखाना

त्र्यम्बक ज्योतिर्लिंग प्रसिद्धा सेवक जासु सुरासुर सिद्धा
करैं निवास गौतमी तीरा सम्मानित जहँ सुरसरि नीरा
महापाप संताप विमोचन त्र्यम्बक लिंग सकल दुखमोचन

दोहा

शिष्य पुरञ्जन कहत भउ, सुनि त्र्यम्बक गुणगान ।
जल शरीर कस सुर नदी, भाखिय कृपानिधान ॥९१॥

सोरठा

शंकर जटा कलाप, सोहत जासु प्रवाह शुचि ।
महापाप उपपाप, बिनसत जासु प्रसादते ॥१३९
तासु महातम ज्ञान, करन चहौं जस श्रुति उदित ।
गुरुवर कृपानिधान, करु अनुकम्पा जानि जन ॥१४०
मुनिजन पापाचार, क्लेश दियउ जे गौतमहिँ ।
कौन भाँति निस्तार, भउ उनकर गुरुवर कहिय ॥१४१

चौपाई

सुनि गुरुवर तब सुवचन भाखे गोपनीय कछु गोपि न राखे
जब गौतम मुनि आदिक भूसुर कीन्ह प्रार्थना इन्द्रादिक सुर
भयउ ब्रह्म गिरि निर्गत तबही सुरधुनि मुनिजनकृत नुति जबही
सोइ उदुम्बर तरुते निकसी धर्मामृत धारा जनु विकसी
गौतमादि तहँ नाना भूसुर किय मज्जन नर नाग सुरासुर
गंगाद्वार नाम थल तहँमा भउ यह अद्‌भुत घटना जहँमा
गौतम मुनि असपरधी सबही मज्जनार्थ आयउ तहँ तबही

अन्तर्हित गंगा ह्वै गयऊ गौतम करुणा परवश भयऊ
ये सब अम्ब समाश्रित मोरे इनहिँ उबारिय मोर निहोरे
विनय कीन्ह गौतम बहु भाँती परउपकार निरत दिन राती
नहि नहि गौतम भाखत भयऊ तदपि अदर्शन तसु ह्वै गयऊ
गगन गिरा तब सबहिँ सुनाई जहँ समुपस्थित मुनि समुदाई
करि न सकौं मैं इनहिँ पवित्रा जे कृतघ्न अति कपट चरित्रा
जो रक्षक भउ संकट काला ताहि फँसाये मायाजाला
जो सब थल व्यापक भगवाना कहि सर्वज्ञ करत श्रुति गाना
तिनहिँ बिसरि ये कीन्ह कुचाली निरपराध प्रति हत्या डाली
उपकारक कर करि अपकारा कियउ चरण निज परशु प्रहारा
गौतम मुनिवर सरल स्वभावा राउर विदित सदय परभावा
रिपुसन वैर प्रेम प्रेमीसन करिय कहत अस नीति विज्ञजन
राजा योगी और रसिक जन रस ही ते वश होत सुकवि भन
पाजी इतराजी वश होई नीतिकुशल अस कह सब कोई
शठाचरणपर शठता समुचित नीति सुरासुर गुरुकृत सुविदित
आततायि वध किये न दोषा धर्मशास्त्र सम्मति निर्दोषा
नहि कृतघ्न प्रति करुणा कीजै दण्डशास्त्र सम्मति मन दीजै

दोहा

सुनि गौतम मुनि सदय अति, कहत भयउ बिलखाय ।
शरणागत मुनि निकर मम, होइय अम्ब सहाय ॥९२॥

पतित वृन्द पावन सुयश, सुरधुनि तव सब ठाम।
श्रुति पुराण इतिहास कत, गावत तव गुणग्राम ॥९३॥

सोरठा

सगर वंश उद्धार, कियउ आबि भूतल स्वयम्।
इनकर करु निस्तार, देवि दयामयि दरश दै ॥१४२

चौपाई

जे अपकारक प्रति उपकारी तिनहिँ प्रशंसहिँ देव मुरारी
बड़नकेर यह सहज सुभाऊ आरत अवगुण गनहिँ न काऊ
आवत शरण दीन यदि कोई बड़ जन अवशि दयावश होई
यही बड़ाई बड़जन केरी लगवहिँ पार दीन जन हेरी
सुनि गंगा गौतम मुनि वानी परम मधुर करुणा रस सानी
ह्वै प्रसन्न सुमुखी सुखरूपा कहे वचन आपन अनुरूपा
धन्य धन्य गौतम मुनिराया दीन दयालु भाव दरसाया
प्रायश्चित्त यथोदित करिहैँ अढरन ढरन शंभु जब ढरिहैँ
तब ये पैहैँ दरस हमारा इनकर तब करिहौँ उद्धारा
सुनि गौतम अति प्रमुदित भयऊ ते कर्तव्य लग्न ह्वै गयऊ
भूमि प्रदक्षिण आदि विधाना कियउ यथा श्रुति शास्त्र प्रमाना
गंगा धार प्रगट तब भयऊ नभ जय धुनि संकुल ह्वै गयऊ
गंगाद्वार विदित मनभावन तहँ भउ कुशावर्त अति पावन
मज्जनादि करि द्विजन जघन्या अति पातकी भये तहँ धन्या
करि मज्जन अवगाहन दाना गौतम मुनि द्रोही मुनि नाना

भउ पवित्र अघओघ नसाना भउ सर्वत्र गंगगुण गाना
मुनि पत्नी गण मज्जन कियऊ गौतम नारि संग धरि लियऊ
देवनदी करि दियउ उवारा करुणा परवश करुणागारा
सपत्नीक मुनिगण नुति नाना कियउ यथा श्रुति शास्त्र बखाना
मुनि मुनिपत्नी भयउ कृतारथ गायउ सुरसरि सुयश यथारथ
सुरसरि महिमा वचन अगोचर शीश चढ़ायउ जाहि त्रिपुरहर
करि नाना तप साधन योगा जो गति पावि सकत नहि लोगा
पतितपावनी सुरसरि तीरा सो गति पावत त्यागि शरीरा
अनायास नहि लेनी देनी गंगा कीर्तन मुक्ति निसेनी
कुशावर्त अरु गंगाद्वारा करि मज्जन लह भव निस्तारा
उन कहँ गर्भवास नहि होई मज्जनादि कर यहँ जो कोई
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा सुरमुनि आदि करत जसु सेवा
ताहि त्रिपथगाकर गुणगाना सुनत सुनावत लह कल्याना
गंगाराधन करत न जोई जीवन तासु अकारथ होई
स्वयमपि हरि राघव अवतारा पञ्चवटी गत सुरसरि धारा
पायउ निरखि प्रमोद अपारा कियउ मज्जनादिक आचारा
कियउ निवास तहाँ बहुकाला कृपा जासु काटत भवजाला
त्र्यम्बक ज्योतिर्लिंग प्रसिद्धा जासु महातम गावहिँ वृद्धा
दर्शन तासु कियउ रघुनाथा लखन कुमार जानकी साथा
सुरसरि–शंकर–रघुवर–दरसन करि न लहत पुनि गर्भवास जन
आजीवन शुचि तीर्थ निवासी पञ्चवटी प्रहरावधि वासी

उभय तुल्य फलभागी होई यह रहस्य जानत जन कोई
महापतित अधमाधम जोऊ यहाँ आवि गति पावत सोऊ
कुशावर्त अरु गंगाद्वारा नदी गौतमी सुयश अपारा
पञ्चवटी रघुवर हर महिमा गौतम मुनिवर गौरव गरिमा
शत वत्सर यदि अविरत गावहिं शेष शारदा पार न पावहिं
त्र्यम्बक ज्योतिर्लिंग महातम गायउँ यथाबुद्धि पावनतम

दोहा

परम मनोहर चरित यह, कहत सुनत मन लाय ।
पाप पुञ्ज निर्मुक्त जन, सुखी परम पद पाय ॥९४॥
कहन लगे पुनि सदय गुरु, त्र्यम्बक चरित सुनाय ।
शंकर ध्यान निमग्न मन, कथमपि पलक उठाय ॥९५॥

सोरठा

सुनन चहहु अब काह, कहहु वत्स संकोच तजि ।
सुमिरहु गिरिजानाह, जो दायक फल चारिकर ॥१४३
कहत भयउ शिर नाय, शिष्य पुरञ्जन मुदितमन ।
वैद्यनाथ गुण गाय, मोहि कृतारथ करिय गुरु ॥१४४
गुरुवर परमोदार, करुणाकर करुणायतन ।
करुणा वरुणागार, वचन मनोहर कहत भउ ॥१४५
सुनहु वत्स मन लाय, वैद्यनाथ गुणगान शुचि ।
संयत मन वच काय, लहत यथोदित श्रवण फल ॥१४६

पाप पुञ्ज जरि जाय, जासु महातम सुनि श्रवण।
भक्ति पदारथ पाय, इहामुत्र सुख हस्तगत ॥ १४७

चौपाई

मुनि पुलस्त्य कुल संभव मानी रावण नाम महा अभिमानी
राक्षस सकल सुरासुर जेता लंका नगरी जासु निकेता
कैलासोपरि शंकर पूजा करत भयउ तजि कारज दूजा
समय अतीत बहुत ह्वै गयऊ नहि प्रसन्न शंकर जब भयऊ
हिमगिरि दक्षिण देश सुपावन तहाँ गर्त निर्मायउ रावन
नाना तरुवर तल निर्बन्धी नियम पुरस्सर दृढ़ अभिसन्धी
करन लगे श्रीफल दल हवना मन्त्र षडक्षर पढ़ि जितपवना
तदपि न दरस दीन्ह जगदीशा जानि उपद्रावक भुज बीसा
आशुतोष यद्यपि प्रभु नामा पूरित करैं भक्त मनकामा
आसुर भावापन्न दशानन जानि विलम्ब कीन्ह पञ्चानन
परम साहसी राक्षस राजा प्रभुपद पंकज दरशन काजा
निज कर निज शिर छेदन कियऊ आहुति ताकर निज कर दियऊ
नव संख्यक शिर छेदन कियऊ पुनिपुनि पावक आहुति दियऊ
तदपि न दरस दीन्ह वृषकेतू जानि ताहि जगपरिभव हेतू
मस्तक दशम लगे जब छेदन दरस दीन्ह तब त्रिपुर विभेदन
मांगु मांगु वर भाखन लागे करुणाकर करुणा रस पागे
गिरे दशानन प्रभु पद ऊपर जय जय धुनि गुञ्जित भउ भूपर
भाखे त्राहि त्राहि बहु बारा परसे मस्तक देव उदारा

भयउ यथावत् सब शिर तबही अंग पुष्ट भउ तपकृश सबही
नति नुति करन लगे बहु भाँती दीनदयालु लगायउ छाती
भक्तबछल प्रभु दीनदयाला शरणागत रक्षक सब काला
साधु असाधु शरणगत जोई मनवाञ्छित फल पावत सोई
गुण अवगुण प्रभु गनत न काऊ समदर्शी अति सरल सुभाऊ
निरखि प्रसाद सुमुख निज नाथा अस्तुति कियउ जोरि सबहाथा

छन्द

जयजय पुरभञ्जन अन्धकगञ्जन जन मनरञ्जन प्रमथपते
जयजय विषभक्षक सेवकरक्षक विजितविपक्षक अगतिगते
प्रभु मैं अति पापी सुरसन्तापी तदपि हाथ मम माथ दियो
भएउँ अति पावन यदपि अपावन क्षमासिन्धु अपनाय लियो

चौपाई

सुनि अस्तुति प्रसन्न भउ शंकर गौरीवर हर प्रीतिपुरस्सर
लंकापतिहिं कहन तब लागे लखि प्रणमत सुप्रेम परि पागे
माँगु माँगु वर वीर दशानन करहु न अब विलम्ब बिनुकारण
तब लंकापति सुनि प्रभुवाणी भाखत भयउ जोरि युग पाणी
यदि प्रसन्न गिरिजावर आपू दै वरदान हरिय संतापू
अतुलित बल अरु अतुल प्रतापू दीजिय मोहि भक्तवश आपू
सकल सुरासुर वश करि डारौं रणमहँ नाथ सबहिं संहारौं
मम संहारक होय न कोऊ ब्रह्म विष्णु इन्द्रादिक जोऊ
सुनि अस बिहँसि कहे त्रिपुरारी वर याचना तोर अति भारी

जो जनमत सो मरत दशानन कथमपि होय न तासु निवारन
महा करालकाल जब आवत ताहि समय को काहि बचावत
नहि निर्बन्ध करहु तुम रावन मानहु वचन मोर मनभावन
दै अवकाश मांगु वर वीरा निपट दुराग्रह करैँ न धीरा
भाखे दशमुख प्रहसित वदना जानि अजेय पराक्रम अपना
देव दनुज नागादिक सर्वा चारणादि किन्नर गंधर्वा
मोहि न जीति सकै प्रभु कोई इन्द्रोपेन्द्र स्वयं यदि होई
मानव जाति हमार अहारा सो कस करि सक मम संहारा
कीजिय नियत मृत्यु मम नाथा दुर्बल जीव मनुजकर हाथा
दैव दशानन मति हरि लीन्हा एवमस्तु शंकर कहि दीन्हा
दैवाधीन चराचर जीवा प्रेरक तसु प्रभु श्यामलग्रीवा
बहुरि तपस्या करि बहु भाँती क्षुधा पिपासा सहि दिन राती
प्रभुहिँ प्रसन्न कियउ दशवदना याचे तसु निज नगरी गमना
आशुतोष शंकर तब भाखे नियम गमन विषयक यह राखे
करिहौँ गमन नियम अनुसारा सुनहु दशानन वचन हमारा
लिंग उठाय लेहु तुम मोरा गमन करहु निज नगरी ओरा
लिंग न धरेहु भूमिपर भाई बिगड़ै बात न बनी बनाई
परसत भूमि लिंग मम जहँमा करिहौँ सुचिर वास मैँ तहँमा
लिंग उठाय लियउ दशवदना कियउ पुरी लंका प्रति गमना
कतिपय पथ जब भयउ अतीता मिली भूमि पर्यली पुनीता
मूत्रवेग उत्कट जब भयऊ व्यग्रहृदय रावण है गयऊ

ब्राह्मण रूप विष्णु तहँ आये तिनहिँ दशानन निकट बुलाये
ह्वै विनीत भाखे लंकापति ब्राह्मण रूप इन्दिरापति प्रित
मूत्रवेग व्याकुल हम भाई कारज एक करहु द्विजराई
लिंग न राखि सकौँ धरणीपर अस आयसु प्रभु गिरिजावरकर
वेग निवृत्ति करौँ मैँ यावत् बिलमहु विप्र इहाँ तुम तावत्
क्षणभरि धरहु लिंग निज हाथा कहा द्विजहिँ अस लंकानाथा
समय अतीत अधिक जब देखब तव यह लिंग भूमिपर फेकब
अस कहि लिंग लियउ निज हाथा ब्राह्मण रूप इन्दिरानाथा
अति बलवती महाप्रभु इच्छा बहुतकाल द्विजकियउ प्रतीच्छा
तदपि भयउ नहि वेग निवृत्ती रोधि सकै को दैव प्रवृत्ती
तब द्विज लिंगहिँ तहँ धरि दियऊ करि पुकार निज पथ धरि लियऊ
वैद्यनाथ सोइ भयउ प्रसिद्धा ज्योतिर्लिंग शास्त्र श्रुति सिद्धा
तब दशवदन कियउ बहु यतना करि गउ थाकि पराक्रम अपना
तिल भरि लिंग न सके उठाई मिटी दुष्ट–गौरव–गरुआई
जो कैलास धरेउ निज करपर थगित होय तेइ गिरेउ भूमिपर
थका लगाय शक्ति निज सगरी होय हताश गया निज नगरी
अनायास तहँ आई गैया थन पय सिक्त कियउ तिहि भैया
बैजू नाम गोप तहँ आयउ ताहि प्रथम सो लिंग लखायउ
गंगाजल अर्पा करि भक्ती आराधना कियउ भरि शक्ती
बैज गोप थापित श्रीशंकर बैजनाथ भउ भक्त शुभंकर

दोहा

लायउ रावण लंकपति, लिंग पर्यली माहिँ ।
ताते भाखत भुवन भरि, रावणेश्वर ताहि ॥९६॥

सोरठा

ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध, वैद्यनाथ प्रभु कामप्रद ।
देहिँ कुशोथरि सिद्ध, करत मनोरथ दीन जहँ ॥१४८
करि न सकौँ गुणगान, निरवशेष लहि मुख अयुत ।
करैँ शंभु कल्यान, अति लघुमति भाखे कछुक ॥१४९

छन्द

पढ़त जो यह चरित मन दै सकल संकट तसु कटै ।
वैद्यनाथ प्रसाद लहि' अवसाद नाना विध हटै ॥
सकल सुख संपति सुसंतति पावि पावन गति लहै ।
सत्य कवि याचत सदाशिव प्रेमभाजन नित रहै ॥

चौपाई

कहत भयउ पुनि गुरू निरञ्जन करि सम्बोधित शिष्य पुरञ्जन
महादेव नागेश्वर वर्णन भाखौँ करहु वत्स आकर्णन
जो यह चरित सुनै मनलाई तूलराशि इव अघ जरि जाई
सकल मनोरथ पूरित तासू गौरी सङ हर करहिँ सुपासू
साम्ब सदाशिव पदरति जासू दुर्लभ कौन पदारथ तासू
रही दारुका गिरिजा चेटी जासु प्रताप त्रस्त मति खेटी
दारुक नाम राक्षसाधीशा बली दारुका प्राणाधीशा

कियउ दारुका उग्र तपस्या भई प्रसन्ना उमा नमस्या
वरंब्रूहि जब कही भवानी भाखत भई दारुका रानी
मम निवास वन जहँ जहँ जाऊँ संग जाय मम अस वर पाऊँ
एवमस्तु भाखी जगदम्बा सिद्धिरमण लम्बोदर-अम्बा
बलदर्पित तब राक्षसराजा चला बजाय दुंदुभी बाजा
दश दिक्पाल लीन्ह तेइ जीती बलगर्वित भउ करत अनीति
लौकिक अरु वैदिक मर्यादा ध्वस्त कियउ कहि नास्तिकवादा
सब थल प्रचलित भउ पाखण्डा साधु सन्त नित पावहिं दण्डा
भउ चार्वाकवाद सब ठामा कोउ न कहि सक हरि हर नामा
आस्तिक कृत यागादिक जहँमा करत उपद्रव नास्तिक तहँमा
हाहाकार मचा महि माहीँ सज्जन परिपालक जन नाहीँ
जहँ तहँ जाय दारुका कानन करत भयउ सज्जन विद्रावन
षोड़श योजन विस्तृत सो वन तसु आक्रमण रोधिसक को जन
भय विह्वल जनता भै गयऊ त्राहि त्राहि सब भाखत भयऊ
और्व नाम ऋषि परम प्रतापी निशिवासर पञ्चाक्षर जापी
जनता पहुँचि गई तसु आश्रम सदयभयेऋषिनिरखि व्यतिक्रम
त्राहित्राहि धुनि पड़ि गइ काना शरणापन्न-त्राण मन ठाना
होत भयउ कोलाहल पुनिपुनि त्राहित्राहि मुनि त्राहित्राहि मुनि
प्रणमे पुनि पुनि मुनिवर चरणा कहे राखु मुनि आपन शरणा
दारुक खल राउर ढिग नाहीँ आवि सकत लहि भय मनमाहीँ
राउर को न तपोबल जानत को न त्रास राउर मन मानत

तब ऋषिवर करुणा रस सानी भाखत भउ आश्वासन बानी
धरहु धीर सब त्यागहु त्रासा जौं मैं श्रीशंकर कर दासा
दूर दुरैहौं क्लेश तुम्हारा मानहु भाषण सत्य हमारा
अस कहि कहत भयउ मुनिराया यदि मम निर्मल मन वच काया
यदि शठ असुर उपद्रव करिहैं हिंसा उद्यत आपुहि मरिहैं
बसहु निरापद निज निज धामा रटहु सकल मिलि शंकर नामा
शंकर नामावलि जो जपई ताहि निरखि यमकिंकर कँपई
जो प्रभु पद पंकज अनुरागी तादृश कौन जीव बड़भागी
जो सब तजि शिव सेवन करई सो न कबहुँ संकट महँ परई
अस कहि और्व मौन ह्वै गयऊ करि प्रणाम सब प्रस्थित भयऊ
प्रचलित भयउ सनातन धर्मा भउ नास्तिक आस्तिक सत्कर्मा
भयउ अहिंसक असुर कदम्बा भउ ऋषिवर सबकर अवलम्बा
समाचार इन्द्रादिक पाये चतुरंगिणी अनी सजि आये
अमित असुरगण जहँ तहँ भागे युद्ध मनोरथ दारुक त्यागे
हाहाकार असुर गण करई प्राण त्राण दुघट लखि परई
हिंसारहित समर नहि होई हिंसा करत मरत सब कोई
और्व वचन मिथ्या नहि होई प्रतीकार सूझत नहि कोई
पाहन तरै गीत कपि गावै मृषा वचन ऋषि मुख नहि आवै
जन द्रोही सुख सम्पति पावै मृषा वचन ऋषि मुख नहि आवै
अवलोकय अन्ध पंगु वरु धावै मृषा वचन ऋषि मुख नहि आवै
कलहवती वरु पति सुख पावै मृषा वचन ऋषि मुख नहि आवै

अस विचार करि निशिचरनाहू आज्ञा दियउ भागि सब जाहू
स्वयमपि सानुग निशिचरनाहा गुप्तवास कन्दर महँ चाहा
संकट निरखि दारुका रानी कहत भई समयोचित बानी
दियउ मोहि वर शंकर वामा मम निवास वन गति सब ठामा
यह वरदान विदित सब काहू हमहिं न मारि सकत सुरनाहू
सोपकरण यह विस्तृत कानन वेगवान जिमि सुररिपु वाहन
जल भीतर प्रविशै तत्काला दूर होय द्रुत दुख जञ्जाला
सुनत दारुका वचन असुरगन करत भयउ जयधुनि प्रमुदित मन
भयउ कृतारथ निशिचर यूथा विहत मनोरथ अमर वरूथा
वन खगपति इव करि उड्डयना उदधि मध्यगत जहँ कछु भय ना
लगे कुचालि करन सब कोई हिंसा तत्पर निर्भय होई
योग सिद्धि बल जल अवरोधा कियउ निशाचर नायक योधा
जलधि मध्य नौका आरूढ़ा आकर्षण खल करत निगूढ़ा
कारागृह महँ करि अवरोधा सबहिं देत दुख करि अति क्रोधा
एक समय इक वणिक महाशय पहुँचे तहँ कृत संभृति सञ्चय
सानुग उनहिं असुर धरि लियऊ कारागार रुद्ध करि दियऊ
देन लगे नानाविध पीड़ा करत भयउ दुखदायक क्रीड़ा
वणिक महाशय शिवव्रत तत्पर करहिं समर्चन अवसर अवसर
पूजहिं पार्थिव लिंग त्रिसन्ध्या शिव पूजन कृत दिवस अवन्ध्या
यद्यपि विघ्न करहिं सब कोई तदपि वणिक नहि विचलित होई
लक्ष्य अर्थ ते तनिक न डिगहीं पाहन-ईंट यदपि ते हनहीं

पत्नी सहित वणिक शिव पूजा करैं दिवस निशि काज न दूजा
दै मानस उपचार विविध विधि स्वाध्यायादिक करहिँ यथाविधि
जे कारागृह रुद्ध अपरजन दीक्षितकियेसबहिँजिमिश्रुतिभन
करन लगे सब मानस अर्चन असनपनादिक शिवशिव कीर्तन
वैश्यवर्य अर्पित उपचारा स्वयं लेहिँ प्रभु विविध प्रकारा
वैश्यवर्य सो जानै नाहीँ शिवागमन कारागृह माहीँ
सुप्रिय नाम वैश्यवर सोऊ कारागृह गत प्राणी दोऊ
कियउ व्यतीत वत्स षण्मासा दयासिन्धु दरशन प्रत्याशा
दारुक अनुचर आयउ तहँमा सुभग रूप शंकर थित जहँमा
अनुचर पड़ि विस्मय आवेशा गयउ त्वरित जहँ थित असुरेशा
समाचार निज प्रभु ढिंग बोला सो सुनि बुद्धि भई तसु लोला
आवि वणिकते पूछन लागा व्यग्र हृदय सो असुर अभागा
ध्यावहु काहि कहौतुम निज हिय सुभग रूप को आवत सुप्रिय
तुअ गृहचरित अपर को जानै यामिक कस न चरित्र बखानै
पूछौ हमैँ कहौ कस राजन आपुहि आयउ लागत लाज न
कुपित भये सुनि अस असुरेशा वैश्यहिँ मारहु किये निदेशा
हत्या हेतु असुरगण धाये वैश्य शंभुपद ध्यान लगाये
त्राहि त्राहि कहि सुमिरन कियऊ सकल विश्वव्यापक सुनि लियऊ
चतुर्द्वार मन्दिर अभिरामा भूमि विवर निर्गत तेहि ठामा
ज्योती रूप प्रगट भउ शंकर मन्दिर मध्य भक्तवत्सल हर
सायुध सपरिवार प्रभु प्रगटे हनन समुद्यत उनपर झपटे

रूप भयंकर ज्वालामाली झपटे रिपुदल दलन कपाली
अस्त्र पाशुपत कर धरि लीन्हा मारत पलक प्रलय करि दीन्हा
अपरिमेय रिपु मारि गिराये हू हू करत प्रमथगण धाये
असुर चमूकर नाम निशाना दियउ मिटाय शंभु भगवाना
वैश्यवर्यकर करि अस रक्षा लियउ लगाय नाथ निज वक्षा

दोहा

कहन लगे तब शूलधर, सुनहु वत्स मम बात ।
मम भक्तनकर दुष्ट जन, कभु न सकत करि घात ॥९७॥
अति प्रमुदित मन जाहु घर, भूलेहु हमहिँ न तात ।
पूजेहु पार्थिव लिंग मम, सब मिलि सायं प्रात ॥९८॥
आजीवन करि भोग बहु, अन्त समय मम पास ।
सपरिवार आगमन तुअ, जहाँ बसहिँ मम दास ॥९९॥

सोरठा

सुप्रिय दण्ड प्रणाम, करत भयउ पुनि पुनि प्रभुहिँ ।
साम्ब सदाशिव नाम, लै लै गलवादन कियउ ॥१५०
प्रभुपद सरसिज भक्ति, भउ याचत कर जोरि युग ।
शंभु सहित निज शक्ति, एवमस्तु कहि गयउ गृह ॥१५१

चौपाई

चिन्तित भयउ वणिकवर तहँमा रहे रुद्ध जल भीतर जहँमा
अति भयदायक तरल तरंगा महा पूर परिपूरित अंगा
नाना मकर विहंग भुजंगा महावात कर धीरज भंगा

नाविक दल युग मचवत दंगा भयउ विषम निर्गमन प्रसंगा
तावत् पहुँचे तहाँ प्रमथ गन शिव प्रेरित जहँ रहे वणिकजन
अनायास ह्वै गउ निर्गमना सुप्रिय आदिक पहुँचे भवना
प्रमथ-सिद्धिबल भउ यह काजा प्रमुदित अमर बजावै बाजा
ज्योतिर्लिंग जहाँ नागेशा बरसायेउ तहँ सुमन सुरेशा
प्रगटे सुप्रिय–रक्षण–हेतू भउ नागेश नाम वृषकेतू
ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध प्रभावा मुनि व्यासादिक जसु गुणगावा
श्रीनागेश दरस लहि लोका संकट मुक्त होहिं गतशोका
लखि विध्वंस दारुका रानी गई तहाँ जहँ रही भवानी
खबरि उनहिं सो सबै सुनाई जलधारा नयनन बरसाई
अम्बा तासु बाँह गहिं लियऊ विविध भाँति आश्वासन दियऊ
दैवी गति टारे नहि टरई कोटि उपाय जीव किन करई
नहि गत अर्थ दारुके बहुरत यथाकर्म जग सुख-दुख उपजत
अस कहि गई दारुका कानन जहँ नागेश नाम पञ्चानन
उमा अपन पति कहँ तहँ भाखी पति अनुरोध बुद्धि नहि राखी
मम दासीकर दुर्गति ऐसी भई भक्तिवश प्रभु मति कैसी
मम अनुरोध रहा नहि मनमँ करौं प्रलय मैं देखिय छनमँ
रणचण्डी बनि प्रमथहिं मारौं अगणित कापालिक हति डारौं
धरा धूलि धूसर करि डारौं सुर मुनि मारि गिराउँ हजारौं
रुख लखि शंभु सहमि तब गयऊ विषय यथारथ भाखत भयऊ
तुअ दासी पति भयउ कुकर्मा कियउ विनष्ट सनातन धर्मा

सुर मुनि साधु सतावन लागा तातें दण्डित भयउ अभागा
अब दारुका अरण्य मझारी भयउ सभी श्रुति मारगचारी
वर्ण धर्म अरु आश्रम धर्मा भउ प्रचलित मिटि गयउ विधर्मा
ज्योतिर्लिंग नाम नागेशू तुअ समेत बसिहौं यहि देशू
सुनि गिरिजा उत्तर तब दियऊ निज अभिमत मत भाषण कियऊ
कलियुग अन्त सत्ययुग आगम तावत् दासी राज्य यहाँ मम
गर्भवती कत दानव वामा जातपुत्र निवसत यहि ठामा
राक्षस वंश वृद्धि अस होई बाधा विघ्न करै नहि कोई
एवमस्तु तब पुरहर भाखे आग्रह वृत्ति न मनमहँ राखे
पुनि अस कहन लगे त्रिपुरारी सुनहु प्रिये अब गिरा हमारी
जस चरित्र भावी सुकुमारी भाखौं तोहि कथा सो सारी
महासेन क्षत्रिय वर वीरा वीरसेन तसु सुत रणधीरा
मम सेवा रत सो दिन-राती करत अराधन मम सब भाँती
निर्मल मति कृतयुग आरंभा मम सेवा रुचि परिहरि दंभा
वीरसेन लहि मम वरदाना नृपति चक्रवर्ती बलवाना
वैदिक धर्म करिहि तब थापित सदाचार महिमण्डल व्यापित
लहि वरदान वीर सो मोरा जाय दारुका वन बरजोरा
पावि पाशुपत अस्त्र हमारा मर्दित करिहि असुर दल सारा
सहित राक्षसी राक्षस नाना मारि मिटाइहि नाम निशाना
रहि नागेश नाम तेहि ठामा पुरिहौं सब दर्शक मनकामा
साम्ब सदाशिव करि असनिश्चय गउ कैलासाचल प्रभु गिरिशय

दोहा

सुनत पुरञ्जन मुदित अति, किय गुरुवरहिँ प्रणाम ।
दै असीस मुनि कहत भउ, सुमिरि शंभु सुखधाम ॥१००

सोरठा

ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध, नागेश्वर वर्णन कियउँ ।
सकल मनोरथ सिद्ध, तासु सुनत जो चरित यह ॥१५२
मिटत सकल संकष्ट, श्रीनागेश्वर दरस लहि ।
पातक पुञ्ज विनष्ट, अवशि होत नागेश लखि ॥१५३

दोहा

बहुरि निरञ्जन करत भउ, रामेश्वर गुणगान ।
सुस्थापित रघुवर कियउ, जिनहिँ स्वयं भगवान ॥१०१

सोरठा

पितु आयसु शिर धारि, लक्ष्मण सीता सहित वन ।
जाय असुरगण मारि, भार उतारेउ भूमिकर ॥१५४
लहि अगस्ति उपदेश, भयउ शंभु सेवन निरत ।
कोशल देश नरेश, दशरथ सुत सीता रमण ॥१५५
शंकर दरसन पाय, भयउ कृतारथ ज्ञान सुनि ।
लहि सुग्रीव सहाय, सीता अन्वेषण कियउ ॥१५६
दक्षिण वारिधि तीर, गउ लंका प्रस्थान करि ।
सानुग भयउ अधीर, उदधि अगाध अपार लखि ॥१५७

प्रभुपद शीश नवाय, ध्यान मग्न भउ अवधपति।
शंकर भयउ सहाय, दरस दियउ करुणायतन ॥१५८
तुरत दियउ वरदान, बान्है वारिधि नील कपि।
करहु तुरन्त पयान, मारहु सानुग लंकपति ॥१५९
तीरथ वारि मँगाय, रामेश्वर थापन कियउ।
रघुनन्दन हरषाय, रिपुदल हति पायउ प्रिया ॥१६०
ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध, सो रामेश्वर नाम प्रभु।
सकल मनोरथ सिद्ध, दरस परस लहि होत जसु ॥१६१
ख्यात सुपावन धाम, रामेश्वर सुस्थान यह।
कहि सुनि जसु गुणग्राम, श्रोता वक्ता भव तरत ॥१६२
प्रथमहिँ कथा प्रसंग, रामेश्वर वर्णन भयउ।
अति संक्षेपित ढंग, क्रमकृत भउ वर्णन यहाँ ॥१६३

दोहा

मुदित पुरञ्जन श्रवण करि, शंभु चरित्र पवित्र।
पूछत भउ उत्सुक हृदय, पुनि घुस्मेश चरित्र ॥१०२

सोरठा

गुरुवर वेद प्रवीन, हरखि निरञ्जन कहत भउ।
कहौँ न कछुक नवीन, शास्त्रोदित भाषण करौँ ॥१६४

चौपाई

दक्षिण दिशा देवगिरि जहँमा भारद्वाज कुलोद्भव तहँमा
ब्राह्मण एक सुधर्मा नामा शंकर भक्त विदित सब ठामा

साध्वी प्रिया सुदेहा तासू पतिव्रत धर्म विदित जग जासू
वर्णाश्रम समुचित कृति तत्पर हित मति गृहिणी गृही परस्पर
अभ्यागत पूजन अनुरागी पञ्च यज्ञ तत्पर बड़ भागी
शंकर चरण-सरोरुह-मधुकर साधु सन्त गुरुजनकर किंकर
श्रुति पारंगत वैदिकवर्या करत शिष्यगण जसु परिचर्या
करहिँ नित्य नैमित्तिक कर्मा परसत जिनहिँ न कबहुँ अधर्मा
सदाचार अरु विमल विचारा अति परिशुद्ध सकल व्यवहारा
धन समृद्धि परिपूरित भवना द्विजवर निश्चय सब सुख सपना
दाता परम सकल गुण भाजन परमारथ रत लौकिक काज न
जीवनकाल बहुत गउ बीती अटल शंभुपद पंकज प्रीती
भयउ न तदपि पुत्र मुख दर्शन दम्पति सुख महँ जासु निदर्शन
हानि लाभ महँ द्विज समदरसी प्रिया सुदेहा भउ झामरसी
पुनि पुनि पतिहिँ कहत सो भयऊ जीवन काल नाथ बहु गयऊ
वाम दैव हम कहँ दुख दीन्हा पुत्रविहीन मोर गृह कीन्हा
पुत्र हेतु पिय करिय प्रयतना सुत बिनु इहामुत्र सुख सपना
भाखे द्विजवर अति विज्ञानी वृथा प्रिये तुम लहहु गलानी
सब शुभ अशुभ कर्म अनुसारा करहु प्रिये हिय माँहि विचारा
धैरज धरहु करहु सन्तोषा वृथा न मढ़हु दैव शिर दोषा
यद्यपि द्विज बहु विधि समुझावा तसु हिय तदपि प्रबोध न आवा
दुखमय बहुत समय जब गयऊ एक प्रसंग उपस्थित भयऊ
प्रतिवासी गृह गई सुदेहा सखी मिलन कारण करि नेहा

पाइ प्रसंग कही इक नारी हमहिं तुमहिं अन्तर बड़ भारी
पुत्रवती हम सद्गति भाजन तू अपुत्रिणी लागत लाज न
पुत्र विहीना गति नहि लहई वचन यही व्यासादिक कहई
कोउ न तुअ धन भोगनहारा मम धन भोगत पुत्र हमारा
पितृ ऋणी तुअ पति बिनु बालक मम पति अनृण लहि कुल पालक
विकल सुदेहा निज गृह आयउ समाचार सब पतिहिं सुनायउ
भाखन लगी पावि अति खेदा प्रियतम वृथा शास्त्र अरु वेदा
नाथ अपुत्र करत सत्कर्मा पुत्रवान कत कुत्सित कर्मा
सुत उत्पत्ति यत्न पिय कीजै प्राणनाथ निश्चय करि लीजै
बिनु बालक मरिहौं विष खाई प्रविसौं अथवा जलमहँ धाई
पल भरि नाथ पड़त कल नाहीं वरत विषाद वह्नि हिय माहीं
पत्नी वचन श्रवण जब कियऊ पुष्प युगल द्विज कर महँ लियऊ
पुष्प पुत्रप्रद दक्षिण कर धृत पुष्प अपुत्रद वाम हस्त कृत
एक पुष्प तुम लेहु उठाई प्रिये प्रणमि शंकर सुखदाई
विधनाकर लिपि मेटि न जाई पुष्प अपुत्रद लियउ उठाई
लखि द्विज अति विह्वल ह्वै गयऊ पत्नी कर धरि भाखत भयऊ
घट घट वासी एक महेशू सकैं मिटाय पुरारि कलेशू
तदतिरिक्त सब दुखमय जानहु पुत्रादिक सुख नश्वर मानहु
दुख संकुल स्वर्गादिक लोका केवल आतमरूप विशोका
क्षीण पुण्य स्वर्गी लह पतना स्वर्ग निमित्तक मूढ़ प्रयतना
ध्रुव सुख भागी आतमज्ञानी नश्वर सुख भागी अज्ञानी

धैरज धरहु करहु सन्तोषा को सक मेटि कर्मकृत दोषा
निर्मल बुद्धि-प्रसाद-समुद्भव ध्रुव सुख अध्रुव सुख विषयोद्भव
पुत्रादिक सब स्वारथ साधक प्रति पल परमारथ प्रतिबाधक
अहंकार ममता मद त्यागी शिव अनुरत अरु विषय विरागी
पावत ध्रुव सुख पुण्य प्रतापा लहत न यावत् मनमहँ पापा
नहि स्वाधीन विषय सुख भोगा बाधक धन अभाव अरु रोगा
आतमसुख सब क्षण स्वाधीना नहि कृत्रिम नहि पर आधीना
सकल कामना दुख परिणामा निष्कामना सकल सुखधामा
सुनि पति वचन सुदेहा विकला वचन यथोचित मुखते निकला
हमहिँ न ज्ञान ध्यान अधिकारा केवल पतिव्रत धर्म अधारा
पतिपद गति मति पतिपद धर्मा पति उपासना सब सत्कर्मा
अबला जानि दया प्रभु कीजिय किंकर्तव्य अनुज्ञा दीजिय
तब भूदेव कहन अस लागे कारुणीक करुणा परिपागे
विधिगति टारि सकै नहि कोई टारि सकै शंकर प्रभु सोई
शरणापन्न होहु तुम तासू सकल सुरासुर सेवक जासू
अस कहि भयउ मौन द्विजराई मनमहँ सुमिरि शंभु सुखदाई
विप्रवधू न लही अवबोधा रोवत रोवत गल अवरोधा
भई सुदेहा अति कृश देहा तजा गेह अरु देह सिनेहा
भोजन वसन शयन सुख बिसरेउ अति उद्वेग हृदय महँ पसरेउ
करन लगी पतिसन हठ सोई करु विवाह कथमपि सुत होई
ताहि विप्रवर भाखन लागे प्रिये ग्लानि पैहहु तुम आगे

करि विवाह दुखभागी हमहूँ करहु न अस आग्रह तुम कबहूँ
धर्म विघ्न जस होइ न मोही तस कर्तव्य प्रिये नित तोही
सो तथापि हठ पुनिपुनि कियऊ कथमपि द्विज अनुमति दै दियऊ
लाई कन्या निज नैहर ते धरवाई तसु कर पति करते
परिणय विधि विधिबोधित भयऊ सिन्दुरदानादिक ह्वै गयऊ
भई कनिष्ठा घुश्मा नामा लज्जा-रूपवती गुणधामा
सदा सपत्नी रुचि अनुसारा करत भई सो सब व्यवहारा
दासी इव तसु सो नित रहई पद पद तसु आयसु अनुसरई
भयउ सपत्नी द्वय महँ प्रेमा दोउ निवाहत निज निज नेमा
पार्थिव लिंग एक अरु शत मित निर्मायउ पति आयसुते नित
प्रतिदिन करै सुधर्मा पूजन करै विसर्जन करि प्रक्षेपन
एक सरोवर महँ प्रति वासर भयउ लक्षमित गत कत वत्सर
घुश्मा गर्भवती ह्वै गयऊ पति पत्नी आनन्दित भयऊ
विषय असंभव संभव होई प्रभु महिमा कहि सकत न कोई
जनमा ब्राह्मण पुत्र मनोहर बन्धु वधूगण गायउ सोहर
सित दल शशि इव बाढ़ा बालक माता पिता उभय कुल पालक
जातकर्म आदिक सब कर्मा उपनयनावधि कियउ सुधर्मा
जायउ घुश्मा बालक जबते लही सुदेहा ईर्ष्या तबते
उपजा पुत्र निरखि उर दाहा प्रतिपल शोक उदधि अवगाहा
लोक मध्य सो भई अनादृत घुश्मा भई लोक महँ आदृत
लोक अनादर अति दुखदाई अभिमानीते सहि नहि जाई

अहंकार भ्रम हिय नहि जाही तुल्य अनादर आदर ताही
कछु दिन अस अतीत जब भयऊ परिणय योग्य पुत्र है गयऊ
चहु दिश तेँ कन्याप्रद आयउ वरहिं विलोकि परम सुख पायउ
सत्कुल जानि कथा थिर भयऊ सुदिन सुलग्न नियत है गयऊ
वर वरयात्री कियउ पयाना पहुँचे कन्याप्रद अस्थाना
विधिव्यवहार विविधविध भयऊ परिणय विधि बोधित है गयऊ
सुत सुतवधू समेत सुधर्मा चले कराय चतुर्थी कर्मा
पञ्चम दिन आयउ निज गेहा लखि दुखदग्धा भई सुदेहा
सुत सुतवधू निरखि सब कोई करहिँ प्रशंसा हर्षित होई
सुनत सुदेहा भइ सन्तप्ता जिमि ग्रीषम चण्डातप तप्ता
मत्सर असपरधा कलुषित मति लियउमनहिँमननिश्चितकरिअति
करि छुर छिन्न पुत्र हति डारौँ कथमपि अन्तर्दाह निवारौँ
एक राति लखि सुतगृह शुन्या सुत शिर छिन्न कियउ हतपुन्या
करि प्रक्षेप तड़ाग मझारी गइ निज निलय निर्दया नारी
सासु समीप आइ तब बाला बोली खोज करिय तत्काला
रञ्जित रक्त सेज मैँ देखी का लिपि विधि कपालमहँ लेखी
रोदन करन लगी बहु भाँती बार बार पीटत भइ छाती
सुनि घुश्मा देवी तहँ जाई दशा देखि मुख गिरा न आई
कर्म शुभाशुभ सुख दुख दाता तहँमा प्रेरक मात्र विधाता
अस कहि वधुहिँ अंक महँ लाई कथा पुरातन विविध सुनाई
हर्ष विषाद विहीन सुधर्मा कहे कौन यह कियउ कुकर्मा

अन्वेषण जहँ तहँ करवाया पता तथापि कछुक नहि पाया
किंकर्तव्यविमूढ़ भयउ सब घुश्मा गई तड़ाग निकट तब
क्षिप्त मृत्तिका लिंग जहाँपर पुत्रहिँ देखत भई तहाँपर
अम्ब अम्ब कहि टेरत भयऊ घुश्मा लखि विस्मित ह्वै गयऊ
हर्ष विषाद भयउ कछु नाहीं समदर्शिता तासु मनमाहीं
शिव चिन्तन महँ भई निमग्ना जासु प्रसाद महाभय भग्ना
दर्शन दियउ भक्त भय हारी अति विकराल शूल कर धारी
भाखे हतौं सपत्नी तोरा हत्या कियउ भक्त जेइ मोरा
घुश्मा कहेसि क्षमिय परमेशू सब प्रारब्धाधीन कलेशू
हते ताहि अब फल कहु काहा क्षमिय क्षमिय अब त्रिभुवननाहा
ह्वै प्रसन्न प्रभु भाखत भयऊ तव यश जग उज्ज्वल ह्वै गयऊ
जो अपकारीकर उपकारी पातक नशत दरस तसु भारी
जो तुअ सुतकर हत्या कियऊ प्राण त्राण तुम तसु करि दियऊ
दरस पावि तव पुत्र प्रहर्त्री सकल पाप अपनोदन कर्त्री
घुश्मा कहेउ युगल कर जोरी नाथ सुनिय इक विनती मोरी
मर्त्य भुवन जन रक्षा हेतू निवसिय यहाँ साम्ब वृषकेतू
एवमस्तु तब शंकर भाखे भक्ताधीन भक्त रुख राखे
जो प्रभु सकल भोग सुख त्यागी प्रभु सो सदा भक्ति अनुरागी
धन्य वंश जहँ सो सुत जाये प्रभु पद प्रेम जासु उर आये
अग्रिम कथा सुनहु अब ताता भाखत भउ जो त्रिभुवनदाता
हम घुश्मेश नाम एहि ठामा बसिहैँ यहाँ लोकहित कामा

यहाँ आवि मम दरशन करिहैं यथा तूल तसु पातक जरिहैं
श्रद्धान मति तप करि इहँमा पहुँचत पुनरावृत्ति न जहँमा
पार्थिव लिंगालय सर एहू नाम शिवालय करत विदेहू
मज्जनादि इहँमा जे करिहैं अघविमुक्त भवसागर तरिहैं
लिंग रूप अस कहि प्रभु भयऊ मंगलमय सो थल है गयऊ
उक्त शिवालय सरवर जहँमा तीरथ नाम शिवालय तहँमा
घुश्मा सहित सुधर्मा जोऊ परिकरमा करवायउ सोऊ
एकोत्तर शत ज्येष्ठा दारा जाते भउ तसु अघ परिहारा
पत्नी द्वय युत पुत्र समेता सुख सम्पन्न स्वकीय निकेता
आजीवन रहि अन्तिम काला गउ शिवलोक सुमिरि शशिभाला

दोहा

ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध अति, श्रीघुश्मेश चरित्र ।
वर्णन कियउँ यथावगति, सुनि नर होय पवित्र ॥१०३

सोरठा

कहत सुनत मन लाय, श्रीघुश्मेश चरित्र जो ।
भक्ति पदारथ पाय, पावत पद पावन परम ॥१६५
द्वादश लिंग चरित्र, पाठ करत जो नित्य क्रम ।
मानस तासु पवित्र, सूक्ष्म तत्त्व अवगति लहत ॥१६६
म्लेच्छादिक जो जाय, दर्शन द्वादश लिंग कर ।
जन्म शुद्ध कुल पाय, बनत पात्र प्रभु भगतिकर ॥१६७

अस कहि गुरु मतिमान, भाखत भउ पुनि शिष्य प्रति ।
कथा सरित असनान, करि विमलीकृत हृदय जो ॥१६८
सुनन चहौ अब काह, कहौ तात संकोच तजि ।
जगत पयोनिधि थाह, कहत सुनत लह शिवचरित ॥१६९
शरभ चरित्र बखान, करु गुरुवर करुणायतन ।
को करि सक गुणगान, गुरु करुणा लवलेशकर ॥१७०

चौपाई

सुनत निरञ्जन अति सुख पाये मीलित नयन शंभुपद ध्याये
क्षणभरि ध्यान मगन रहि सोऊ खोलत भउ निज लोचन दोऊ
पुनि पुरञ्जनहिँ भाखन लागे प्रभु पद पद्म प्रेम परि पागे
वत्स यथारथ तुम बड़ भागी शंकर चरितामृत अनुरागी
कथा सरित असनान प्रतापा नसत जन्म जन्मान्तर पापा
साधन प्रथम श्रवण परसिद्धा ज्ञान भक्ति महँ मत श्रुति सिद्धा
शरभ कथामृत मन महँ आवा यथा पराशर सुत मुनि गावा
करि संक्षेप कहौँ मैँ ताता सुमिरि सदाशिव पद जलजाता
करि विस्तार पार नहि पावौँ सहसवदन बनि यद्यपि गावौँ
एक समय पति मृदु भुज देखी अब्जा ताहि अबल करि लेखी
निज हिय महँ सो कियउ विचारा होनहार को रोकनहारा
कोमल भुज कस रिपु संहारैँ विपद्ग्रस्त भू भार उतारैँ
कस गो ब्राह्मण देव उबारैँ साधु सन्तकर विपति बिदारैँ
जानि गयउ सब अन्तर्यामी व्यापक मुररिपु घट घट गामी

भयउ चरित हरि रुचि अनुसारा जो भाखें मुनि व्यास उदारा
सनक सनन्दन और सनातन सनत्कुमार कुमार सनातन
परम प्रसिद्ध सिद्ध अवतारा आवि गयउ बैकुण्ठ दुआरा
रहे विष्णु अन्तःपुर माहीं जहँ प्रवेश बिनु आज्ञा नाहीं
द्वारपाल जय विजय प्रसिद्धा रोकि दियउ सनकादिक सिद्धा
प्रभु दर्शन प्रतिबन्धनकारी जनमहु निशिचर योनि मझारी
तीनि जन्म रहि निशिचर रूपा तब पैहौ निज रूप अनूपा
तावत् प्रभु पहुँचे तहँ आई दर्शन दियउ भक्त सुखदाई
क्षमहु विप्र सेवककर दोषा क्षमा पयोदधि परिहरि रोषा
मूढ़ विप्र महिमा नहि जानै जासु महातम वेद बखानै
नाम मोर ब्रह्मण्य प्रसिद्धा भाखत श्रुति अरु सुर मुनि सिद्धा
धर्म कर्म बिनु विप्र न होई याग यजन जानत सब कोई
विप्र और हुतभुक् मुख मोरा अष्टादश पुराण कर सोरा
तथा न होम जन्य परितृप्ती यथा विप्र भोजन कृत तृप्ती
जो ब्राह्मण पदरज शिर धरई पाप पुञ्ज परिशोधन करई
द्विज प्रसादकृत मोर प्रसादा यह हमार अविचल मर्यादा
सनकादिक मुनि अतिमृदु बयना प्रेम अश्रु परिपूरित नयना
दण्ड प्रणाम कियउ सब पुनिपुनि भउ लज्जा अवनत मुख सुनिसुनि
कहन लगे सब कर युग जोरी याचत क्षमा बहोरि बहोरी
प्रभु इच्छा प्रेरित सब कोई करत शुभाशुभ परवश होई
दारु पुत्तली सम सब कोई कर्मसूत्र भ्रामित नित होई

कर्मसूत्र प्रभु राउर हाथा व्यासादिक गावहिँ यह गाथा
मर्त्यलोक चिरकाल विशाला सो प्रभु यहाँ क्षणावधि काला
आवत इनहिँ न लागिहि वारा इनहिँ उवारव धरि अवतारा
हिरणकशिपु बल बुद्धि समृद्धा हिरण्याक्ष तसु अनुज प्रसिद्धा
जय अरु विजय दैत्य तनुधारी भयदायक तिहुँ लोक मझारी
करि तप पाइ ब्रह्म वरदाना होइहि जग विजयी बलवाना
दितिसुत दिति सुखदायक वीरा ससुत भवित्री अदिति अधीरा
धरि वाराह रूप विकराला मारब हिरण्याक्ष तत्काला
मारब हिरणकशिपु बनि नरहरि सुर मुनि सुखदायक दानव अरि
रावण कुंभकर्ण पुनि दोऊ राम नृपति ह्वै मारब सोऊ
पुनि जयविजय विदितधरणीतल दन्तवक्त्र शिशुपाल महाबल
वासुदेव ह्वै मारब दोऊ पुनि निज धाम पधारिहि सोऊ
हिरणकशिपु सुनि अनुजविनाशा देइहि चौदस भुवनहिँ त्रासा
सुर मुनि पहुँचि चतुर्मुख सन्निधि करिहैँ प्रार्थित सुर रिपु वध विधि
विधि सुर सहित आवि इहि ठामा करिहैँ विनय लोक हितकामा
तब आश्वासन दै प्रभु आपू हरब शरण आगत परितापू
करि मम भक्त केर अपकारा मरिहि शत्रु अस करि स्वीकारा
ह्वैहैँ सामर श्रुतिमुख हर्षित जिमि निदाघ सुशस्य रवि धर्षित
करि प्रणाम सब निजनिज धामा जैहैँ सुर मुनि पूरित कामा

दोहा

भक्त हेतु नरहरि भयउ, करुणासिन्धु मुरारि ।
मुनि पूछत भउ शिष्य तब, गुरुहिँ सुमिरि त्रिपुरारि॥ १०४॥

सोरठा।

नहि हरि हर महँ भेद, मानौं कछुक विवेक बल।
तथा पुकारत वेद, खेद न परसत भेद बिनु ॥१७१॥
धरि नरहरि अवतार, यथा बचायउ भक्त निज।
बिनु शस्त्रादि प्रहार, कस हिरण्यकशिपुहिँ हने ॥१७२॥
अद्भुत विकट सरूप, शरभ रूप धरि शंभु कस।
कोप अलौकिक रूप, नरहरिकर रोके सपदि ॥१७३॥
कहत भयउ हरषाय, शिष्य प्रश्न सुनि गुरु सदय।
सुनहु वत्स मनलाय, कहौं यथाक्रम चरित यह ॥१७४॥

चौपाई

अनुज मरण सुनि शूकर हाथा हिरणकशिपु अस गायउ गाथा
जो हमार सोदर संहारक धरि वराह वपु सुर उपकारक
करि तप वर लहि हतिहौँ ताही निर्बल केवल छलवल जाही
गो द्विज देव साधु वध करिहौँ सकल अमूल्य रत्न अपहरिहौँ
पति स्वयमेव लोकपालनकर करिहौँ शासित सकल धुरन्धर
याजन यजन आदि अवरोधा करि करिहौँ श्रुति शास्त्र विरोधा
यज्ञ भाग विरहित सब देवा ह्वै अशक्त करिहैँ मम सेवा
बनिहैँ द्विजगण मोर उपासक बनिहौँ भुजबल त्रिभुवन शासक
वर कामुक निश्चय अस कियऊ भोग विलास त्यागि सब दियऊ
कानन जाय कियउ तप भारी वत्सर अयुत भयउ व्रतचारी
अचल रूप सो धरी समाधी क्षुधा पिपासादिक गति बाधी

जनमा तरुवर देह मझारी नीड़ बनायउ गगन विहारी
सहस्रार सरसीरुह विकसी ब्रह्मरन्ध्रते ज्वाला निकसी
समुद्विग्न भउ सुर मुनि सबही गउ चतुरानन नगरी तबही
ज्वाला जलन निवेदन कियऊ आश्वासन विधि सब कहँ दियऊ
गउ असुरेश समीप चतुर्मुख भयउ तासु समुपस्थित सम्मुख
वरम्ब्रूहि भाखे चतुरानन कियउ असुर उन्मीलित नयनन
भाखत भयउ जोरि युग पानी निरखि प्रसन्न चतुर्मुख दानी
राउर रचित जीव जो कोई मोहि न मारि सकै प्रभु सोई
मरौं न प्रभु निसिवासर माहीँ आयुध कलित होय वध नाहीँ
गृह भीतर वा बाहर माहीँ वर बल मोर होय वध नाहीँ
प्रभु आकाश धरातल माहीँ वर बल मोर होय वध नाहीँ
एवमस्तु कहि गउ चतुरानन गयउ असुरपति गृह तजि कानन
भयउ उपद्रव जहँ तहँ नाना लुप्त भयउ सब शास्त्र पुराना
साधु सन्त सब पीड़ित भयऊ दुर्जन दुष्ट सुखी है गयऊ
कियउ राजधानी सो आपन शोणितपुर महँ गद्दी थापन
जहँ तहँते दानवगण आयउ हिरणकशिपु कहँ अधिप बनायऊ
आज्ञावर्ती जे नहि भयऊ ते यमलोक अतिथि है गयऊ
हरि विद्वेषी भयउ अभागा गो द्विज देव सन्त सिर लागा
भउ प्रह्लाद नाम सुत तासू धर्म परायण मुररिपु दासू
वैष्णव धर्म परम परिनिष्ठित साधु मण्डली मध्य प्रतिष्ठित
नैसर्गिकी तासु हरि भक्ती भक्ति प्रभाव अलौकिक शक्ती

बाल वयःकृत मतिकृत वृद्धा सुख दुख समरस भक्ति समृद्धा
रामनाम विसरत नहि कबहूँ महा विपत्ति माथपर जबहूँ
पञ्चम वर्ष वीति जब गयऊ सो अध्ययननियोजित भयऊ
तूर्य्यादिक बाजा बजवायउ नृप गुरुगृह पुत्रहिं पठवायउ
गुरु आसुरी पढ़ायउ विद्या पढ़ी न नृप सुत जानि अविद्या
करि करि आग्रह शिक्षक थाके नहिं कुमार सहमत भउ ताके
अष्टाक्षर नारायण मन्त्रा जपत भयउ प्रह्लाद स्वतन्त्रा
भयउ निवृत्त असुर गुरु कछु दिन यत्न करत भउ पुनिपुनि अनुदिन
कथमपि भयउ सफलता नाहीँ गुरुहिं कुमर अध्यापन माहीँ
तब गुरु थकि नृप सन्निधि जाई असफलता निज ताहि जनाई
हिरणकशिपुसुनि सुतहिँ बुलाया निज उत्संग उपरि बैठाया
करि मस्तक आघ्राण मुदित मन पूछत भउ करि करि तसु लालन
कहहु पुत्र गुरु काह सिखायउ किमु वंशोचित शिक्षा पायऊ
शिक्षा मोर एक हरि नामा गुरु शिक्षाकर मोहि न कामा
जपिहौं राम नाम निशिवासर अध्ययनार्थ मोहि नहि अवसर
सुनि सुतवचन भयउ सो व्याकुल गुरुहिँ बुलायउ कोप समाकुल
कस शिक्षा तुम बालहिँ दियऊ मम रिपु नाम मन्त्र गहि लियऊ
अस कहि गुरुकहँ गञ्जित कियऊ दोष भार शिर तसु धरि दियऊ
कियउ नीच सम्बोधन पुनि पुनि अति संत्रस्त भयउ गुरु सो सुनि
हिरणकशिपु पत्नी ढिग गयऊ कर गहि ताहि कहत अस भयऊ
तुअ सुतकर मति गइ बौराई हरिसेवक निज नाम धराई

हिरण्याक्ष घातक रिपु मोरा तासु भजन अनुरत सुत तोरा
सुनत कयाधु भई अति विकला भइ अवाक मुख वचन न निकला
करि प्रयत्न सो सुतप्रति भाखी करि चुम्बन शिर ताखी राखी
गुरु मुखते शिक्षा जो पाई सुनवहु सुत तजि हठ दुखदाई
बहुरि पूर्ववत् सो हरिनामा पढ़त भयउ पुनिपुनि अभिरामा
पुत्रहिं कहत भई तब माता त्रिभुवन राज्य तजसि कस ताता
पिता रोष हुतभक्ष पतंगा होहु न करि पितु आज्ञा भंगा
असुर शत्रु सुरमर्दन केरा भक्ति भाव यह उचित न तेरा
तजि तसु भक्ति करहु निज कर्मा असुर कुलोचित सुत तुअ धर्मा
सुनि प्रह्लाद कहन अस लागे समुचित अस न वचन मम आगे

दोहा

पाइ मशक भय मत्तगज, तजत न नरपति द्वार ।
तजौं न पितु भय हरि भजन, सुनि उपदेश तुम्हार ॥१०५॥

सोरठा

पिता मोर असुरेस, विश्वकोटि शत अधिप हरि ।
अन्तर अत्र बिसेस, यथा मशक गजराज महँ ॥१७५॥
अन्तर यथा प्रसिद्ध, सुधारश्मि खद्योत महँ ।
अन्तर तथैव सिद्ध, असुर ईश जगदीश महँ ॥१७६॥

चौपाई

हरि सेवन तजिहौं नहि कबहूँ मरणान्तिक दुख पैहौं जबहूँ
जन्म कृतारथ जानहु तासू प्रभु पद पंकज अनुरति जासू

इन्द्रिय मनोबुद्धि धनि तासू जसु गोचरगत श्रीप्रभु आसू
त्रिभुवन सम्पति तृण सम जानौं प्रभु पद प्रेम परसमणि मानौं
धरि धैरज सुख दुख फल भोगौं प्रभुपद रति हिय निधि इव जोगौं
सुनि सुत वचन मातु अकुलाई समाचार सब पतिहिं जनाई
नहि मम साध्य पुत्र प्रभु राउर भावी परवश भउ यह बाउर
सुनि दनुजाधिप भयउ विरुद्धा तजि सुत वत्सलता भउ रुद्धा
मन्त्रीगण कहँ तुरत बुलाये कोपाकुल अस वचन सुनाये
कुल अंगार भयउ सुत एहू दानव कुल दूषण तजि नेहू
यथा तथा वध याकर करहू दया धर्म मनमहँ नहि धरहू
अंगुल काटि बचाइय हाथा यह प्राचीन लौकिकी गाथा
अग्निदाह आयुधकृत छेदन गरल पान करिवरकर भेदन
प्रासादोपरिते भू प्रपतन अगम अगाध जलाशय मज्जन
यथा तथा मारहु सब एही मोर अवज्ञा भय नहि जेही
तजै प्राण अथवा हरि त्यागै रहहु सतर्क न गृह तजि भागै
भयउ दमन आज्ञा अनुसारा भयउ न विचलित राजकुमारा
अग्नि समिद्ध सुशीतल भयऊ अगम जलाशय थल ह्वै गयऊ
सिरिस सरिस भउ आयुध नाना द्विरद दन्त विस तन्तु समाना
रामनाम कीर्तन कलगानम् अमरी वीक्ष्य जगौ कलगानम्
पुनि पुनि सुमन देव बरसायउ दैत्य दनुज लखि अतिदुख पायउ
भउ विसयाविष्ट सब कोई कहे कुमार हसित मुख होई
नहि विस्मय कारण यहँ कोई सुनहु दैत्यगण थिर चित होई

श्रीपति भक्ति महातम भारी शरणापन्न दीन दुखहारी
पञ्चभूत वशवर्ती जाके वश्य होय तसु सेवक काके
इन्द्रादिक डर मानै जाके तासु भक्त डर मानै काके
चक्र सुदर्शन घूमत जहँ तहँ हरत भक्तभय पहुँचि गाढ़ महँ
हिरणकशिपु ढिग मन्त्री गयऊ अद्भुत घटना भाखत भयऊ
असामर्थ्य भाखे सब कोई दमन विफलता विस्मित होई
करिय नाथ यहँ साम प्रयोगा जानि निरर्थक दण्ड नियोगा
वाहन आदि प्रलोभन नाना दियउ पुत्र कहँ नृप मतिमाना
तजे न रामनाम प्रह्लादा पावि प्रेम रसमय आह्लादा
पुनि अध्यापक प्रति सुत अर्पा सामनीति गहि परिहरि दर्पा
शिक्षक विविध यत्न करि थाके भउ प्रह्लाद न सहमत ताके
पिवत रामरस रसना जाको भासत विरस विषयरस ताको
त्रिभुवनविभवहेतु नहि विचलित होत भक्तिरस रसिक विशद चित
स्वप्नोपम लौकिक सुख मानत भक्तिमात्र निरवधि सुख जानत
प्राण जाय वरु भक्ति न तजई भक्त सकल तजि प्रभुपद भजई
नहि प्रह्लाद तजे निज टेका परम शुद्ध मति पाइ विवेका
पुनरपि गुरु दै विविध प्रलोभन करन लगे बहु भाँति प्रबोधन
सामनीति गहि बहु उपदेशा कियउ यथा दनुजेश निदेशा
कहत भयउ समयोचित वानी प्रीति पुरस्सर गहि तसु पानी
तव सहपाठी बालक केते पढ़त आसुरी विद्या एते
मानि तात तुम मोर सिखावन पढ़हु पाठ जस निजपितु शासन

मातु पिता आज्ञा वशवर्ती कृती करत समलंकृत धर्ती
जानहु पिता प्रजापति रूपा माता सर्वसहा सरूपा

दोहा

भाखत भउ सुनि गुरु बचन, राजकुमर मुसकाय ।
धर्मतत्त्व दुर्बोध अति, सहसा जानि न जाय ॥१०६॥
मातु पिता गुरुजन स्वजन, कर यदि धर्म विरोध ।
अहित रूप जानिय तिनहिँ, उचित न तहँ अनुरोध ॥१०७॥

सोरठा

जन्म जरादि कलेश, अवरोधक कहँ मानि हित ।
मानिय तासु निदेश, हित हितकर नहि अहितकर ॥१७७॥

चौपाई

सुनि गुरु ताहि बहुरि समझायउ साम पुरस्सर दण्ड दिखायउ
जो सलोक लोकाधिप शासक सकल सुरासुर जासु उपासक
ताते वैर भाव तव कैसा चरणारोपण अहि शिर जैसा
ताते वैर भाव तव कैसा शिर आघात अचलपर जैसा
ताते वैर भाव तव कैसा वारिधितरण शिलापर जैसा
आज्ञा भंग नराधिप केरा वध अशस्त्र यह निर्णय मेरा
असुराधिप कोपानल ज्वाला जगत भस्म करिसक तत्काला
प्राणाधिक प्रिय कछु नहि ताता चतुर्वर्ग साधन यह गाता
तजि हरि प्राण बचावहु भाई करहु यथा जस जनक रजाई
राज विरोधी को सुख लहई ग्राह शत्रु कस जलमहँ रहई

बिहँसि कहत भउ राजकुमारा सुनु गुरु थिरमति वचन हमारा
सृष्टि स्थिति हति जिनकर हाथा तिनकर करपंकज जसु माथा
तासु अनिष्ट करै जन जोई मुखभर गिरत न संशय कोई
मोहि सुदृढ़ श्रीपति परतीती दनुजाधिपकर तनिक न भीती
मातु पिता गुरु परिजन मित्रा द्रविण बुद्धि भवजलधि सरित्रा
एकमात्र लक्ष्मीपति मोरा भासत तन्मय जग सब ओरा
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड विधाता पिता मोर शरणागत त्राता
आज्ञा तासु सदा सिर मोरा भक्त बछल जो नवलकिशोरा
करिय निग्रहानुग्रह जस रुचि मन अनुरत मम दुष्ट दर्प मुचि
जब रवि करत विश्व परकासा दीपशिखा तब विरहित भासा
विश्वपिता मम पिता रमेशू नाम मात्र मम पितु असुरेशू
मोहि विष्णु वशवर्ती जानिय असुराधिप विपक्ष अनुमानिय
करौं न विष्णु अवज्ञा कबही जानिय मोर सुदृढ़ मत सबही
तजि अध्यापन गउ गुरु वासा निरखि कुमर थिति पायउ त्रासा
राजकुमार पाइ अवकासा बालक वृन्द बुलायउ पासा
परमारथ उपदेश सुनावा भक्ति पदारथ साधन गावा
श्रवण और कीर्तन अरु सुमिरन पदसेवन अर्चन अरु वन्दन
दास्य सख्य अरु आत्म निवेदन जीव ईश बिच जहँ कछु भेद न
अनायास अद्वय थिति पहुँचत चपल मनोगति सहसा सँकुचत
व्यापक चिन्मय भाव विकासा दहराकाश प्रकाश प्रकासा
विषय विलय थिति चित्त प्रसादा व्यपगत हर्ष शोक अवसादा

क्रम क्रम सहजानन्द प्रवाहा निरवधि सुख नीरधि अवगाहा
हृदि हृदि गगनाकार अधिष्ठित स्वयं सिद्ध समभाव प्रतिष्ठित
किञ्चिद् चिन्तन चिन्तन जासू कौन प्रयास भजन महँ तासू
चौदह भुवन थूल तनु जाके कौन प्रयास भजन महँ ताके
वस्तु मात्र महँ जो सम रूपा समदर्शन तसु भजन सरूपा
रसना जासु रटत हरिनामा निर्मल मन पावत विश्रामा
अनायास भवबन्धन छूटै अविरत राम नाम जो लूटै
सुनि बालकगण हित उपदेशा मानि लियउ प्रह्लाद निदेशा
विष्णु चरण पंकज अनुरक्ता भउ बालकगण कीर्तन सक्ता
सुनि कीर्तन धुनि गुरु द्रुत धाये पुनिपुनि शिष्य गणहि समुझाये
गुरु सहमत जब भयउ न कोई हिरणकशिपु ढिग पहुँचे सोई
राजकुमार शिष्य मति फेरी मानत कोउ न आज्ञा मेरी
समयोचित कीजिय प्रतिकारा राजन् अब नहि साध्य हमारा
शिष्य मण्डली मति भइ भोरी भ्रामित राजकुमरकर डोरी
सविस्तार सब कथा सुनाई भेद नीति जस कुमर चलाई
हिरणकशिपु सुनि अति अकुलाये मन्त्रीगण कहँ तुरत बुलाये
कहत भयउ सब कहँ सो बयना कोपाकुलित सुलोहित नयना
यह बालक कुलघालक भयऊ दिति कुल दावानल ह्वै गयऊ
यहाँ बोलि समझावहु ताही होय न यथा यमालय राही
बोलि कुमारहिं सभी बुझायउ कृतकार्यता न कथमपि पायउ
पुत्र पाणि गहि भाखे राजा पीड़ित करहु न दैत्य समाजा

सकल बाल मति परिवर्तन करि करन चहहु उत्पात नगर भरि
यदि तुम चाहहु निज कल्याना करहु न पुत्र मोर अपमाना
त्यागहु विष्णु भजन तुम सत्वर कार्य तोहि यदि निज जीवनकर
मम प्रताप आगे को विष्णू जानसि मोहि न त्रिभुवन जिष्णू
उत्तर दियउ सुनत प्रह्लादा वृथा तात यह वाद विवादा
जीवन मरण तुल्य मैं मानौं त्रिभुवन रक्षक रक्षक जानौं
जिनपर त्रिभुवन रक्षण भारा रक्षा करिहैं सोइ हमारा
महाकाल जाके डर डरई सरवरि तासु कोउ कस करई
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड नचावत सोइ विष्णु मम प्राण बचावत
सिन्धु विन्दु समता नहि होई जीव ईश सम कहै न कोई
राउ पतंग वह्नि इव श्रीपति तासु विरोध असंगत तव अति
समभिलषित यदि निजकल्याना भजिय विश्व रक्षक भगवाना
नाना वैभव भोग विलासा स्वप्न सरिस आविद्यक पासा
विषय मात्र क्षणभंगुर ताता लक्ष्मीपति शाश्वत सुखदाता
विषय राग तजि बनिय विरागी होइय सब तजि प्रभु अनुरागी
अट्टहास सुनि कियउ असुरपति भयउ क्रोधवश नयन रक्त अति
घनरव गर्जत भाखन लागा कहहु कहाँ वह विष्णु अभागा
लावहु बोलि मारिहौं ताही निज रक्षक तुम मानहु जाही
मोर पराक्रम को नहि जानत चौदह भुवन जासु डर मानत
नाम मोर सुनि को थिर रहई शस्त्राघात मोर को सहई
अरे मूढ़ तुअ मति गई मारी हारि गई सिखवत महतारी

मोर सिखावन धरसि न काना निज कुल शत्रु भजन व्रत ठाना
तजि आग्रह मानहु मम बाता राजकीय सुख भोगहु ताता

दोहा

सकल सभ्यगण मन्त्रिगण, समुझायउ बहु बार।
नीति निपुण भउ थगित करि, नीति अनेक प्रकार ॥१०८॥

सोरठा

विचलित चित प्रह्लाद, भयउ न कथमपि भक्तवर।
पावि प्रेम आह्लाद, परमानन्द निमग्न मन ॥१७८॥

छन्द

कहत भउ प्रह्लाद सुनि पितु वचन करयुग जोड़ि कै।
करहु तात विचार मन महँ दर्प दुर्मति छोड़ि कै॥
विष्णुसत्ता सकल घट घट चर अचर संसारमेँ।
सूझि पड़त न अज्ञ जन कहँ प्राकृतिक व्यवहारमेँ॥
आपु महँ हम महँ सभी महँ खम्भमेँ तरवारमेँ।
स्वर्ग मर्त्य पताल महँ अरु राउरो दरवारमेँ॥
सौध भीतर सौध बाहर सौधपर अरु द्वारमेँ।
विष्णु थलमहँ विष्णु जलमहँ गगन गहन पहारमेँ॥
मातृ पितृ कलत्र परिजन मित्र अरु धनधाम जो।
परिच्छेद विहीन दीनदयालु गुण अभिराम जो॥
ब्रह्म सच्चिदनन्त सुखमय भक्त हृदयाराम जो।
साधुरंजन दुष्ट गंजन प्राणप्रिय मम राम सो॥

चौपाई

हिरणकशिपु सुनिअति रिसिआये घनरव गरजि खम्भ ढिग आये
भाखत भयउ पुत्र मुख हेरी हतिहौं अरिहिं न करिहौं देरी
यदि अस्तम्भ मध्य हरि तोरा शस्त्राघात सहै अब मोरा
अस कहि वज्रपात धुनि गरजा गहि करवाल पुत्र प्रति तरजा
खम्भ उपर करवाल प्रहारा कियउ स्वकीय शक्ति अनुसारा
जब अस्तम्भलग्न असि भयऊ महाशब्द त्रिभुवन भरि गयऊ
पवि पर्वत संयोगज जैसे भयउ पुरा रव भउ तब तैंसे
खम्भ फाड़ि निकसे प्रभु आपू नरहरि रूप प्रचण्ड प्रतापू
विकट रूप लखि दनुज समूहा भयउ त्रस्त मति करि करि ऊहा
प्रकटित भउ प्रभु सायकाला दिवस निशेतर क्षण विकराला
अर्ध सिंह तनु अर्ध मनुख्या विदित नृसिंह परावर मुख्या
भयउ विखण्डित जलधर वाता पाइ नृसिंह केसराघाता
हड़हड़ गड़गड़ अद्भुत रूपा शब्द प्रलय घन धुनि अनुरूपा
कियउ महाप्रभु रिपु भयदायक महाभक्त प्रह्लाद सहायक
सुनि कठोर रव कच्छप डोले धृत समाधि शिव लोचन खोले
मही महीधर डोलन लागे वन परिहरि हरि केसरि भागे
पारावार तजे मर्यादा पायउ जलचर जन्तु विषादा
चीची कूची करि खगवृन्दा उड़ स्वस्तिपद पढ़हिं मुनिन्दा
नृहरि मुखोद्गत पावक ज्वाला रिपुगण भस्म कियउ तत्काला
नरहरि कृत हुंकार महा रव असुरी गर्भ गिरायउ कत नव

अति दीरघ नखधर नरहरि तनु देखत ही भउ असुर मृतक जनु
युद्धोद्यत भउ असुरन सब ही भइ भीषण घटना यह जब ही
श्वास वातहत भउ सब कोई भयउ महाप्रभु सम्मुख जोई
हिरणकशिपु प्रभु सम्मुख आवा अस्त्र शस्त्र बहु भाँति चलावा
दारुण युद्ध कियउ करि साहस कहे विहँसि प्रभु सावस सावस
भयउ मनहि मन प्रमुदित विष्णू लखि द्वारपबल त्रिभुवन जिष्णू
भउ मुहूर्त भरि दारुण युद्धा लीला करत भयउ प्रभु क्रुद्धा
हिरणकशिपु कृत लोक कलेशा जानि गहे प्रभु ताकर केशा
सायं समय देहली देशा खींचि लियउ प्रभु द्रुत दनुजेशा
क्रोड़ोपरि धरि तनुहिं विदारण कियउ नखनते जगदुद्धारण
रक्तपान तसु करि तत्काला पहिरि लियउ तसु अँतरी माला
सुर नर मुनि समक्ष यहि भाँती मारे नरहरि सुर आराती
जय जयकार कियउ सुरवृन्दा पढ़े वेद भृगु आदि मुनिन्दा
अमरी निकर सुमन बरसायउ गान मनोहर किन्नर गायउ
भेरी आदि विविध विध बाजा बजवायउ हर्षित सुरराजा
नर्तन तत्पर नर्तन शीला कियउ नटी नट अभिनय लीला
निहत भये दानव बहुतेरे दूर पलायित भये घनेरे
निर्दानवा भई यह धरनी शिर उर पीटहिं दानव घरनी
जगत् समस्त भयउ निरुपद्रव भुवन चतुर्दश विगत पराभव
भयउ भुवन भरि हर्ष प्रवाहा मोद प्रमोद मगन सुरनाहा
भउ प्रवृत्त धार्मिक व्यवहारा लुप्त भयउ पाखण्ड प्रचारा

भयउ प्रवृत्त पंञ्च यज्ञादी पञ्च देवता पूजन आदी
सज्जन साधु सुखी सब भयऊ दस्यु आदि प्रतिहत ह्वै गयऊ
विकट रूप लक्ष्मी जब देखी पायउ मनमहँ त्रास विसेखी
लहि अतिशय विसय आवेशा गई न नरहरि निकट प्रदेशा
लहि अस्मश्रुदाह भय श्रुतिमुख गयउ न ज्वालामाली संमुख
इन्द्रादिक प्रभु निकट न गयऊ त्रिभुवन ज्वाला व्याकुल भयऊ
तुम आगे तुम आगे जाहू प्रलपहिँ सब लहि ज्वालादाहू
अहो विचित्र रूप यह कीदृक् लोचन कर्ण अगोचर ईदृक्
प्रह्लादहिँ सब प्रेरित कियऊ प्रोत्साहन नाना विध दियऊ
तब प्रह्लाद चले बढ़ि आगे प्रभुपद पद्म प्रेम परिपागे
मम कल्याण हेतु अवतारा लियउ दयानिधि जगदाधारा
भक्तवछल प्रभु भक्त सहायक भक्त अधीन भक्त सुखदायक
मातु पिता परिजन प्रभु मोरा प्रीतिपात्र मम मानस चोरा
हमहिँ न भय लखि विकट सरूपा गिरत न जासु भक्त भवकूपा
राजकुमार कहत अस धाये प्रेम अश्रु लोचन युग छाये
निरखि नाथ सेवक सुख पाये करि मस्तकाघ्राण उर लाये
लेलिहान प्रभु सेवक देहा ख्यापित कियउ दीनजन नेहा
तव संगम शीतल मम हृदया वत्स हमार होहु अब अभया
तव वंशज अवध्य सब मोरा राज्य अकण्टक करगत तोरा
अस कहि नाथ भक्त भय हारी नरहरि तनु मधुमथन मुरारी
वरम्ब्रूहि मृदु वचन उचारे दीनदयालु दीन रखवारे

दोहा

प्रेम अश्रु पूरित नयन, पुलकित सकल शरीर ।
प्रणमि प्रणमि अस्तुति करत, गद्गद वचन अधीर ॥१०९॥
जन्म सफल जीवन सफल, सफल भयउ मम वंश ।
अनुकम्पा जापर कियउ, मुनिगण मानस हंस ॥११०॥

सोरठा

अस कहि भयउ अधीर, प्रेम अम्बुनिधि मगनमन ।
कथमपि करि मति थीर, वेदोदित अस्तुति कियउ ॥१७९॥

छन्द

जगत उतपति थिति लयादिक जासु भ्रुकुटि विलासते ।
तासु लव महिमानुकीर्तन मध्य समरथ नाथ के ॥
भक्तिरस आवेश मुग्धा प्रेमलुब्धा बुद्धि मे ।
करि कलभ कर्णाग्र चञ्चल राज्य आदिक विषय ये ॥
इन्द्रजित्त्वर भयउ सत्वर नखविदीर्ण पितापि मे ।
ई हशी गति लखि न श्रीपति रागलेश कदापि मे ॥
नाथ जो सुख तव पदाम्बुज प्रेम जन्य विराग मैं ।
परम दुर्लभ नाथ सो सुख वैषयिक अनुराग मैं ॥

चौपाई

सुनि प्रसन्न भउ श्री भगवाना दियउ ताहि नाना वरदाना
निज पद पद्म प्रेम प्रभु दीन्हा तिलक देइ दनुजाधिप कीन्हा
निज कर कमल तासु तनु परसे सुख अम्बुद सुखमय जल बरसे

किय मौनावलम्ब प्रह्लादा उपजा हिय अनुपम अह्लादा
ज्वाला शान्ति तदपि नहि भयऊ भय व्याकुल त्रिभुवन ह्वै गयऊ
ब्रह्मादिक गणपति ढिग गयऊ सब वृत्तान्त सुनावत भयऊ
त्रिभुवन त्राण करहु अब भैया माँझधार बूड़त अब नैया
सपदि जाय नरसिंह सकासा शान्त करहु ज्वालाकृत त्रासा
करि ब्रह्मादि वचन स्वीकारा भउ प्रस्थित त्रिपुरारि कुमारा
श्रीनरहरि ढिग पहुँचे जाई लखि छवि कवि कविता सकुचाई
लम्ब उदर मूषक असवारी लखि प्रहास भउ सभा मँझारी
करि उत्पतन चला जब वाहन गिरे भूमिपर करिवर आनन
निरखि देव नरहरि मुसकाये मानि शान्ति सब ही सुख पाये
अस्तुति करत भयउ सब कोई प्राण त्राण कारण नत होई
क्रोध निवृत्ति तदपि नहि भयऊ ज्वाला यथा पूर्व रहि गयऊ
तब सब मिलि गे शंकर पासा प्राण त्राण कारण कृत आसा
दण्ड प्रणाम कियउ बहु बारा अस्तुति कियउ अनेक प्रकारा
जब जब संकट पायउ सुरगण तब तब प्रभु कृपया भउ रक्षण
हमहिँ बचायउ करि विष भक्षण नीलकण्ठ भउ नाम ताहि क्षण
कियउ उपद्रव त्रिपुरासुर जब हमहिँ बचायउ महादेव तब
जालंधर आदिक रिपु मारे तदुपद्रुत तिहुँ लोक उबारे
को करि सक राउर गुणगाना पार न लह जसु वेद पुराना
श्रीनरहरि मुख निर्गत ज्वाला विश्व दहन चह अति विकराला
करुणा करि प्रभु करिय उबारा बूड़न चह नौका मँझधारा

सुनि शंकर करुणार्द्र विलोचन भाखत भयउ दीन दुख मोचन
निर्भय होय सकल जन जाहू करिहौं प्रशमित ज्वाला दाहू
पाइ अमोघ अभय वरदाना करन लगे सब प्रभु गुणगाना
करि प्रणाम इन्द्रादि पधारे शंकर पद रज शिरपर धारे

दोहा

शरभ रूप धरि प्रभु चले, अति विकराल विशाल ।
जासु कृपा लवलेशते, कटत कठिन भव जाल ॥१११॥

सोरठा

यदाकार अवतार, शरभ नाम त्रिपुरारि भउ ।
कहउँ तन्त्र अनुसार, सुनहु वत्स निश्चल धिया ॥१८०॥

चौपाई

तीन नयन रवि शशि हुतभक्षा काली अरु दुर्गा युग पक्षा
विद्युज्जिह्व वज्र नखधारी वड़वानल जसु उदर मँझारी
व्याधि मृत्यु रिपुराजि विमोचन अति द्रुतगति मारुत मदमोचन
हृदय भयंकर भैरव रूपा मृग खग मिश्रित रूप अनूपा
मृगाकार जसु अर्ध शरीरा खग इव चञ्चु पक्षधर वीरा
अधोवक्त्र चौपद विकराला ऊर्ध्ववक्त्र भुज चारि कराला
प्रलय हुताशन सरिस प्रकाशा प्रलयाम्बुद सम शब्द विकाशा
सटा छटाकृत रूप भयंकर महापक्ष विक्षिप्त भूमिधर
देखत ही रिपु अति बलवाना विगलित बल विक्रम अभिमाना
अष्टपाद अद्भुत तनु शंभू जासु वशंगत विष्णु स्वयंभू

चण्ड वात वेगाधिक वेगा लखि नरहरि पायउ उद्वेगा
शरभहिँ निरखत होत भयाकुल जाति निसर्गाधीन सिंह कुल
करि सजाति मर्यादा रक्षण अन्तर्हित भउ नरहरि तत्क्षण
ज्वाला शान्ति भयउ तत्काला नृहरि कण्ठगत भउ जयमाला
भउ निरुपद्रव त्रिभुवन तबही भयउ वशीकृत रिपुगण सबही
चतुरानन आदिक सुरवृन्दा कियउ प्रणतिनुति सहितमुनिन्दा
अमरी अमर सुमन बरसायउ नारदादि गुण गान सुनायउ
नट नर्तक किन्नर गन्धर्वा नाच गान तत्पर भउ सर्वा
दुर्जन दुखी सुखी भउ सज्जन भउ फलफूल पूर्ण वन उपवन
शस्य समृद्धा वसुधा भयऊ कल्पित मत विलुप्त ह्वै गयऊ
इन्द्रादिक अस भाखन लागे प्रभुपद पद्म प्रेम परि पागे
रक्षा करैँ शरभ शिर देशा त्रिनयन रक्षैँ भाल प्रदेशा
काली दुर्गा घटित सुपक्षा करैँ सर्वदा रक्षित अक्षा
विद्युज्जिह्व कर्णयुग रक्षैँ खमिति बीजमय भव भय भक्षैँ
रक्षैँ वक्त्र वज्र नखधारी रक्षैँ उर नरहरि भयहारी
कालानल द्युति गुद अस्थाना रक्षा करैँ हरैँ दुख नाना
रक्षैँ आपद मस्तक खगपति गौरीपति करुणानिधान अति
अष्टापद परमापदहर्ता होहिँ सदा दुर्गति संहर्ता
सुनत शरभ अस सुरमुनि वचना कियउ तथास्तु वचनकर रचना
कवच मोर यह पढ़िहैँ जोई सुस्थिर श्रद्धान मन होई
सो जन रक्षापात्र हमारा कहौँ ऊर्द्ध्व कर वारंवारा

लखि प्रसन्नमुख शंकर स्वामी आय गयउ तहँ खगपति गामी
पारस्परिकालिंगन भयऊ हर्ष निमग्न दोउ ह्वै गयऊ
भयउ यथोचित नति नुति ताता पूछत भयउ दोउ कुशलाता
करि बतकही परस्पर नाना बोलि पठेउ कुँवरहिं भगवाना
हरहिं पूछि गद्दी बैठाये बहुविध राजनीति समुझाये
राज्य सुचिरकालिक हरि दीन्हा निज अवध्य तसु वंशज कीन्हा
दियउ यथारथ भक्ति पदारथ कुलोद्धार करि कियउ कृतारथ
करि सुर मुनिकर बहु आश्वासन प्रस्थित भउ पशुपति वृषवाहन
मुरमर्दन चतुरानन आदिक चढ़ि चढ़ि चले गरुड़ हंसादिक
नारदादि प्रस्थित ह्वै गयऊ पुनि पुनि प्रणत दैत्यसुत भयऊ
किन्नर गन्धर्वादिकं जेते प्रस्थित भउ गावत गुण तेते
नरहरि शरभ पवित्र चरित्रा कहत सुनत नर होत पवित्रा

छन्द

शरभ नरहरि चरित पावन रवितनय विद्रावणम् ।
पढ़हिं जे जन भक्तियुत नित लहहिं पद अति पावनम् ॥
कदाचिदपि न शत्रु परिभव सर्वदा सुख संपदा ।
पुत्र पौत्रादिक अलंकृत सद्म मंगलमय सदा ॥

दोहा

करि अनुकम्पा कहत भउ, गुरुवर ज्ञान निधान ।
रोमाञ्चित तनु मुदितमन, सुमिरि शंभु भगवान ॥११२॥

नल चरित्र वर्णन करौं, सुनहु वत्स मनलाय ।
लखि दयालुता भिल्लकर, पहुँचे आपुहि आय ॥११३॥

सोरठा

जहँ अचलेश्वर नाम, शंभु लिंग प्रकटित भयउ ।
निराकार निर्नाम, नाम रूप तसु भक्तिवश ॥१८१॥
अचल रूप भउ आप, निरखि अचलता भिल्लकर ।
मानस चपल प्रताप, शमित होत जसु नाम जपि ॥१८२॥

चौपाई

अर्बुद अचल तपस्या धामा रहा भिल्ल तहँ आहुक नामा
पत्नी तासु आहुकी नामा शिवपूजन तत्पर निःकामा
भिल्ल दम्पती भक्त शिरोमनि वनवासिन महँ ख्यापित धनि धनि
जलसेचन आदिक विधितत्पर बोध प्रबोधन करहिँ परस्पर
सुखमय समय बितावत भयऊ यशोगान दश दिश ह्वै गयऊ
एक समय गउ दर्शन हेतू कछुक दूर गत जहँ वृषकेतू
तावत् तसु घरपर यति एकू आयउ कृत अद्वैत विवेकू
करि प्रदोषकालिक शिवदर्शन रात्रिवास इच्छुक निर्जन वन
एकाकिनी निरखि तहँ नारी भउ द्वैधीकृत बुद्धि भिखारी
यहाँ वास अब समुचित नाहीँ एकमात्र गृहिणी गृहमाहीँ
पितु पितु कहि सम्बोधन कियऊ अर्घ्यादिक आगे धरि दियऊ
करि अनुकम्पा रहहु यतीश्वर करहु पवित्र भक्त अनुचर घर
नाना विनय करन सो लागी आय गयउ आहुक बड़भागी

व्यक्ति युगल केवल गृहमाहीँ रहि सक अपर व्यक्ति अरु नाहीँ
अस असमञ्जस भिल्ल बखाना हिंसक जन्तु बहिंगत नाना
गमनोद्यत सुनि यति ह्वै गयऊ भिल्लिनि तावत् भाखत भयऊ
स्वामिन् गृह बाहर मैं रहिहौँ हिंसक जन्तु पराभव सहिहौँ
अतिथि अवज्ञा नाथ न कीजै अतिथि धर्म पालन मन दीजै
भाखन लगे भिल्ल तब वचना प्रिये विश्व क्षणभंगुर रचना
बहिर्देश महँ रात्रि निवासा करिहौँ तजि निज जीवन आसा
अजर अमर नित आतम देवा थूल देह कहु सुस्थिर केवा
सकल विश्व क्षणभंगुर एहू धर्म अभंगुर नहि सन्देहू
कहि अस आहुक प्रस्थित भयऊ बाह्य देश सुस्थिर ह्वै गयऊ
सहित आहुकी उक्त यतीश्वर निशि यापन तत्पर गृह भीतर
कोणान्तर्गत यतिवर भयऊ वनेचरी निद्रित ह्वै गयऊ
हिंसक जन्तु विविध तहँ आयउ कथमपि आहुक समय बितायउ
अति गम्भीर नाद करि तहँमा पहुँचा व्याघ्र भिल्ल सो जहँमा
महावेगते तदुपरि झपटा लै आयुध आहुकहू डपटा
क्षणभरि रहा समर व्यवहारा भयउ भिल्ल पुनि व्याघ्र अहारा
प्रातःकाल निरखि यति नायक आहुक दशा महा दुखदायक
शोकाकुल भउ पाइ विषादा तजि सुख दुख समता मर्यादा
यतिहिँ आहुकी आइ बुझावा परमारथ कहि कहि समुझावा
कुटिल कालगति को कहि सकई कवि लेखनी लेख लिखि थकई
भाव अभाव लाभ अरु हानी काल कलित कहि गावत ज्ञानी

काल हिंडोला को नहि झूलै जब लगि ज्ञान नयन नहि खूलै
कालवशीकृत सुर मुनि सबही अवशीकृत सरूप थित जबही
सकल चराचर रूप महेशू सकल निषेधावधि अकलेशू
शिव सरूप शिव सेवक होई कीट भृंग इव तन्मय जोई
शोकपात्र नहि वनचर एहू त्यक्त देह करि धर्म सनेहू
तजिय खेद यतिवर विज्ञानी खेद भेदगत लह अभिमानी
सकल दृश्य मायामय कल्पित ब्रह्म सच्चिदानन्द अकल्पित
अजर अमर अद्वैत अनूपा जन्म मृत्यु तसु की दृश रूपा
धन्यवाद भाजन यति एहू जो धर्मार्थ तजे निज देहू
स्वामी चिता प्रवेश यथावत करिहौं जस निगमागम सम्मत
खेद मदर्थ न समुचित यतिवर करिहौं पति सहगमन सुमरि हर

दोहा

स्वयं चिता निर्माण करि, पतिमुख पावक धारि।
प्रविशि स्वयमपि वह्नि बिच, सुमिरि शंभु त्रिपुरारि ॥११४॥

सोरठा

प्रगट भयउ तत्काल, भाल बाल शशि पञ्चमुख।
संग बजावत गाल, शृंगी भृंगी प्रगट भउ ॥१८३॥
धनि धनि कहि बहु वार, तासु प्रशंसा कियउ प्रभु।
भाषण सुनहु हमार, दयासिन्धु अस कहत भउ ॥१८४॥

चौपाई

एतज्जन्म न भउ सुखलेशा पायउ विधिकृत विविध कलेशा
पुनरपि जन्म लेहु महि माहीं सेवन मोर निरर्थक नाहीं

हंस योनिगत यह यति नायक तुअ तुअपति संयोग विधायक
वीरसेन नैषध नृप तनया आहुक भविता नल नृप सनया
देश विदर्भ भीम महिपाला पुत्री तुम दमयन्ती बाला
जोड़ी युगल प्रेम अनुविद्धा नल दमयन्ती नाम प्रसिद्धा
राजकीय करि भोग विलासा दीपित दश दिश कीरति भासा
पति समेत पुनि मम पुरवासा जहाँ न व्यापत माया पासा
अस कहि प्रभु अन्तर्हित भयऊ दम्पति कालकलित ह्वै गयऊ

दोहा

चलित भयउ नहि धर्मते, जाते दम्पति दोउ ।
अचलेशाह्वय लिंग भउ, ताते शंकर सोउ ॥११५॥

सोरठा

श्रीअचलेश चरित्र, कहहिँ सुनहिँ जे सुथिर मति ।
बहिरन्तर सुपवित्र, लहहिँ विमल निर्वाण पद ॥१८५॥
जोरि पाणि युग पद्म, बहुरि पुरञ्जन कहत भउ ।
गुरुवर करुणा सद्म, सुनन चहौँ पुनि प्रभु चरित ॥१८६॥
शत्रु जलन्धर नाम, महादेव मारे यथा ।
पुरहर लीलाधाम, कहिय सविस्तर चरित शुचि ॥१८७॥
सुनत वचन गुरुदेव, मुदितमना भाखत भयउ ।
मुनि व्यासादि यदेव, भाखे कहौँ तदेव हम ॥१८८॥
कहौँ यथामति तात, सावधान मन सुनहु अब ।
शंभु चरण जलजात, प्रेम पिपासू धन्य तुम ॥१८९॥

चौपाई

एक समय पहुँचे सुरराजा कैलासाचल सहित समाजा
शंकर द्वार पुरुष विकराला देखत भयउ इन्द्र तिहि काला
विकट दन्त विकटानन रूपा विस्मित भयउ निरखि सुरभूपा
पुरुषहिं सुरपति पूछत भयऊ कहहु कहहु कहँ पशुपति गयऊ
पुनि पुनि पूछे तिनहिं सुरेशू उत्तर कस न देहु प्रमथेशू
नहि सो पुरुष दियउ कछु उत्तर क्रोधाविष्ट भयउ तब सुरवर
वज्राघात कियउ तब सुरपति नीलकण्ठ ताते भउ पशुपति
कुलिश कठोर भयउ जरि छारा वृत्रासुर गल छेदनहारा
शंकर महिमा पारावारा अवगाहन करि को लह पारा
शेष शारदा गावहिं महिमा ब्रह्मा विष्णु बखानहिं गरिमा
क्रोधाविष्ट शंभु ह्वै गयऊ ज्वालामाला निर्गत भयऊ
अति संत्रस्त भयउ सुरराजा पहुँचि गयउ तहँ विप्र समाजा
करवायउ तब दण्ड प्रणामा इन्द्रहिं सुरगुरु मंगलकामा
अस्तुति करत भयउ कर जोरी बोले वचन विनय रस बोरी

स्तुति

देवाधिप नमस्तुभ्यं त्र्यम्बकाय कपर्दिने ।
नमस्त्रिपुर संहर्त्रे शर्वायान्धक मर्दिने ॥
विरूपाय नमस्तुभ्यं बहुरूपाय ते नमः ।
नमस्ते यज्ञरूपाय यज्ञानाम्फलदायिने ॥

यज्ञघ्नाय नमस्तुभ्यं महाकालाय ते नमः ।
नमस्ते कालकालाय नमः कालाहि धारिणे ॥
अक्षराय नमस्तुभ्यं विरूपाक्षाय ते नमः ।
चतुरानन शिरोहंत्रे ब्रह्मण्याय नमोस्तुते ॥
दीनोद्धारधुरीणाय शरण्याय नमो नमः ।
परमात्मन्नमस्तुभ्यं त्राहीन्द्रं शरणागतम् ॥

दोहा

सुनि अस्तुति सुरगुरु कथित, भउ प्रसन्न जगदीश ।
नयनवह्नि संवरण करि, गुरु प्रति भाखे ईश ॥११६॥
जीवदान इन्द्रहिँ दियउ, करि अस्तुति मम तात ।
जीव नाम भविता मुने, ताते तव विख्यात ॥११७॥

सोरठा

माँगहु सुरगुरु क्षिप्र, निज अभिमत वरदान तुम ।
प्रीतिपात्र मम विप्र, विदित नाम ब्रह्मण्य मम ॥१९०॥
सुरगुरु कर युग जोरि, कहत भयउ पञ्चाननहिँ ।
नाथ प्रार्थना मोरि, सुनिय हरिय संत्रास मम ॥१९१॥
यदि प्रसन्न जगदीश, वह्निशमन कृपया करिय ।
शरणागत सुरईश, त्राहि त्राहि करुणानिलय ॥१९२॥
कहत भयउ त्रिपुरारि, वागीश्वर मुनि वचन सुनि ।
अभय होय असुरारि, फेकौँ पावक दूर थल ॥१९३॥
होय न सकत प्रविष्ट, नयनानल यह नयन महँ ।
सुरगुरु करौँ निविष्ट, ज्वलज्ज्वलन अम्बुधि उदर ॥१९४॥

चौपाई

गंगा सागर संगम जहँमा भयउ वह्नि प्रक्षेपण तहँमा
लवणार्णव पावक गिरि गयऊ बाल रूप बनि रोवत भयऊ
तसु रोदन धुनि अति विकराला कम्पित कियउ धरणि तत्काला
सप्तलोक बधिरीकृत भयऊ लहि विस्मय ब्रह्मा तहँ गयऊ
लखि सागर अंकस्थित बालक पूछे श्रुतिमुख श्रुति प्रतिपालक
कासु पुत्र यह शिशु अति अद्‌भुत कारयिता यह विश्व उपद्रुत
बोले अम्बुधि कर युग जोरी प्रजानाथ यह सन्तति मोरी
गंगा मोर समागम जहँमा शिवतेजोभव भउ यह तहँमा
प्रणमि सिन्धु चतुरानन चरना अर्पे तदुत्संग शिशु अपना
एतज्जातकर्म आदिक कृति करिय यथाविधि जस वैदिकस्मृति
कहत रहे जब अस सरितापति विधि अस्मश्रु गहे शिशु दुर्मति
खींचत भयउ पकड़ि अस्मश्रू निर्गत भयउ नयनते अश्रू
कथमपि मुक्तकूर्च ह्वै गयऊ सरितापतिहिँ कहत विधि भयऊ
धरा नेत्र जल मम यह जाते नाम जलन्धर भविता ताते
भविता तरुण अबहिँते बालक सर्वशास्त्र पारग कुल पालक
सकल अवध्य वध्य शंकर कर अधिपति दानव दैत्य निकरकर
इन्द्रोपेन्द्र नरेन्द्र विजेता महावीरवर त्रिभुवन नेता
भयउ यदुद्‌भव बालक एहू लहत अन्त तहँ नहि सन्देहू
असुर गुरुहिँ तब विधि बुलवायउ तत्कर तसु अभिषेक करायउ
पूछि समुद्रहिँ अन्तर्धाना भयउ चतुर्मुख विधि भगवाना

लखिसुतअतिप्रमुदितसरितापति क्यिउ याचना कालनेमि प्रति
तत्तनया निज तनय विवाहा दियउ कराय निम्नगा नाहा
भयउ जलन्धर परम प्रहर्षित पाइ प्रेयसी प्रेमाकर्षित
आसमुद्र महिमण्डल शासन तत्पर भउ अधिकृत सिंहासन
अमर विनिर्जित दानव जेते जलन्धरान्तिक आयउ तेते
तजि पाताल महीतल आयउ निज निज विक्रम सबहि सुनायउ
कहत कोउ सुरपति हति डारौँ कोउ कहत यमराज पछारौँ
वरुणहिँ मारि कुवेरहिँ मारौँ अमरपुरी धूली करि डारौँ
रवि शशि उद्वन्धन मैँ करिहौँ कहत कोउ मैँ अम्बुधि भरिहौँ
सकल कुलाचल गर्द मिलाऊँ सहसफनी फन सहस हिलाऊँ
लै ब्रह्माण्ड अण्ड इव फोरौँ वेदविहित मर्यादा तोरौँ
सुनत जलन्धर अति सुख पायउ सुस्मित मुख सम्मान जनायउ
भउ कस सैंहिकेय शिरछेदन कहि करु गुरु सन्देह विभेदन
उसना सुनि असुराधिप भाषण कहन लगे शिरछेदन कारण
सिन्धु-मथन आदिक इतिहासा भाखे गुरु असुरेश सकासा
निजपितु मथन सुनत भउ कोपित सभा बीच करि दियउ सुघोषित
साजहु भटगण निजनिज साजा बजै अबहिँते मारू बाजा

दोहा

दूत भेजि सुरवर निकट, करि नयविधि निर्वाह ।
जाय सदल बल जीति रिपु, बनिहौँ सुरपुर नाह ॥११८॥

सोरठा

पठये घस्मर दूत, कहि अस असुराधिप तुरत ।
जाय माइके पूत, कहहु इन्द्र प्रति कथन मम ॥१९५॥
मथित कियउ पितु मोर, अमर निकर अन्याय करि ।
पुनि अपहृत करि जोर, रत्ननिकर कस करि लियउ ॥१९६॥
सो सब देहु तुरन्त, प्राण रत्न यदि प्रिय तुमहिँ ।
किये अन्यथा अन्त, भविता सुर मुनि निकरकर ॥१९७॥

चौपाई

सुनि अस वचन इन्द्र रिसिआयउ दूतहिँ उत्तर वचन सुनायउ
जलधि मथन हम घस्मर कीन्हेँ गिरिगण पक्षहीन करि दीन्हेँ
देव दैत्य सबही भउ रक्षित शिवकृत कालकूट विष भक्षित
देव दैत्य मिलि प्रमथन कियऊ रत्न विभक्त सबहि करि लियऊ
अमिय छीन जब दानव लीन्हा समर सुरासुर भीषण कीन्हा
सुरते असुर पराजित भयऊ परिहरि रत्न भागि सब गयऊ
कहहु दोष तुम काह हमारा दोषारोपक दुष्ट गमारा
तुअ सोदर शंखहिँ हति डारा अनुज मोर करि चक्र प्रहारा
तुम पुनि मूढ़ मोर सिर लागा महाकालवश भयउ अभागा
अस कहि दूतहिँ कियउ विसर्जित दानव दैत्य विजेता रिपुजित
दूत आबि सब कथा सुनाई सुनत जलन्धर गउ रिसिआई
सुरपति विजय समर उद्योगा करत भयउ करि बहु आयोगा
देश देशते दानव आयउ नाथ नाथ कहि माथ नवायउ

कोटि कोटि तहँ दानव दलपति पहुँचे जय जयकार करत अति
शुंभ निशुंभादिक सेनापति चले स्वर्गनगरी प्रति कति कति
जाय जलन्धर डेरा डाला नन्दनवन जहँ सुरतरुमाला
करि मंगल विधि कियउ पयाना सुरपति अनुगत सुरगण नाना
वन्दीगण विरुदावलि गावहिँ मुनिगण आशीर्वाद सुनावहिँ
बजे उभय दल मारू बाजा भउ सन्नद्ध असुर सुर राजा
सेना युगल चली बढ़ि आगे अस्त्र शस्त्र गण चमकन लागे
मूसल परिघ बाण खड्गादिक कियउ प्रहार देव दैत्यादिक
भयउ उभय दल रुधिर परिप्लुत कत हत कत आहत द्रुत विप्लुत
गज वाजी रथ पत्ती अगणित भयउ कालमुख कलित समरकृत
संजीवनी विद्यया भृगुसुत असुरन दियउ जिलाय सबहिँ द्रुत
सुरगुरु सुरन जिलायउ सबही द्रोणाचल औषधते तबही
पूछत भउ निज गुरुहिँ जलंधर जीवित भउ कस सुरगण द्रुततर
संजीवनी न सुरगुरु पासू दियउ जिलाय सुरन कस आसू
द्रोणाचल औषध बल एहू सुरन जिलावत नहि सन्देहू
द्रोणाचल अपहृत करि लेहू जीवनहीन सुरन करि देहू
अस कहि भार्गव उत्तर दियऊ सुनिसो गिरि अपहृत करिलियऊ
गिरि अम्बुधिमहँ भउ तव पातित कियउ जलन्धर सुरगण घातित
द्रोणाचल ढिग सुरगुरु गयऊ निरखि शून्यथल विह्वल भयऊ
भाखे इन्द्र निकट गुरु जाई जय आशा अब त्यागहु भाई
भागहु प्राण बचाय तुरन्ता होइ न यथा देवकुल अन्ता

लुके जाय सब मेरु गुहामहँ पहुँचि गयउ असुराधिपहू तहँ

दोहा

निरखि जलन्धर कहँ तहाँ, भय कम्पित सुरराज।
सुररिपुकर अस्तुति कियउ, बहुविध सहित समाज ॥११९॥

छन्द (भुजङ्गप्रयात)

नमो मत्स्य कूर्मादि नानावतारैः
परित्राणकर्त्रे सदा सज्जनानाम्।
परिध्वंसकर्त्रे सदा दुर्जनानां
विशुद्धस्य धर्मस्य संस्थापकाय ॥
नमस्ते सुराराति विध्वंसकारिन्
नमस्तेऽसुराराति कल्याणदायिन्।
जगत् सृष्टि संहार रक्षा विधायिन्
त्वमेवासि दीनान् समुद्धर्तुमीशः ॥
गदा शंख पद्मारि हस्ताय तुभ्यं
नमो देव देवेश पद्मेश विष्णो।
महाभीतिरस्मानुपेताद्दुष्टा
दतोरक्ष रक्ष प्रपन्नान् परात्मन् ॥
नमस्ते पुरस्ताच्च पश्चान्नमस्ते
पुनश्चोपरिष्टादधस्तान्नमस्ते।
नमः पार्श्वतस्ते नमस्सर्वतस्ते
मनोवाग् वपुर्भिर्नमस्ते नमस्ते ॥

समाकर्ण्य देवस्तुतिं गन्तुकामो-
ऽभवत् पद्मनाभोनिहन्तुं सुरारीन् ।
गरुत्मन्तमारूढ़ उत्कण्ठितस्सन्
सुनन्दादिभिः पार्षदैरावृतश्च ॥
पठेत् पञ्चकं यः विशुद्धान्तरात्मा
लभेदैहिकं सौख्यमामुष्मिकञ्च ।
परां भक्तिमासाद्य सम्प्राप्य बोधं
विदेहत्वमायाति कैवल्य लाभात् ॥

दोहा

गमनोद्यत पतिकहँ निरखि, निज भ्राता वध हेतु ।
कहत भई कर जोरि युग, रमा सुतिय खगकेतु ॥१२०॥
मम सोदर अम्बुधि तनय, श्यालक राउर नाथ ।
तसु वध समुचित कहिय कस, भगिनीपतिकर हाथ ॥१२१॥

सोरठा

बिहँसि कहे श्रीनाथ, तव सोदर नहि वध्य मम ।
उमानाथकर हाथ, मरण तासु श्रुतिमुख कथित ॥१९८॥

चौपाई

गो - द्विज - देव - वेद - विद्रोही हतिहैं महादेव शिव ओही
धर्माधर्म भोग सब कोई लहत निवारण तसु कस होई
जस तानी भरनी तस जानहु 'अत्युच्चैः पतनं' तुम मानहु

सुनि अस वचन मौन भइ लक्ष्मी चली जलन्धर निकट अलक्ष्मी
चढ़ि खगपति हरि पहुँचे तहँमा नतिनुति तत्पर सुरगण जहँमा
गरुड़ पक्ष वाताहत निशिचर महावात आहत जिमि जलधर
लखि पीड़ित निज चमू जलन्धर चला कोप करि समर धुरन्धर
अस्त्र शस्त्रकर विविध प्रहारा भयउ उभयकृत जिमि जलधारा
अगणित बाण चलायउ दोऊ उभय वीरवर काटे सोऊ
भिन्दिपाल असि तोमर पट्टिश शूल गदादिक चला उभय दिश
क्षणभरि करि प्रभु लीला युद्धा लोहित नयन भयउ अति क्रुद्धा
तजि अमोघ शायक हरि झपटे काटि धनुर्ध्वज हय रथ डपटे
भयउ विदारित हृदय जलन्धर होइ विमूर्छित गिरा भूमिपर
मूर्छा विगत जलन्धर धावा थिर रहु कहिकहि प्रभु ढिग आवा
तुमुल युद्ध तत्पर भउ दोऊ विजय पराजय लहत न कोऊ
भउ प्रसन्न प्रभु लखि तसु विक्रम भाखे वरम्ब्रूहि विगतश्रम
सुनत जलन्धर भाखन लागे लहि विस्मय निर्भय हिय आगे
मम भगिनी समेत मम गेहू बसिय आज करि स्वजन सिनेहू
इन्द्रादिक सुरगण निज संगा लाइय निज अनुगमन प्रसंगा
एवमस्तु भाखे लक्ष्मीपति पत्नी सोदर जलन्धरम्प्रति
रमा सहित इन्द्रादि समेता आयउ मुरहर असुर निकेता
तावत् इन्द्रादिक अधिकारा लखि अनधिष्ठित जलधि कुमारा
शुंभादिककर तहाँ नियोगा कियउ पावि अवसर संयोगा
विविध रत्न इन्द्रादि वशंगत तुरत जलन्धर कियउ हस्तगत

करि पाताल बहिंगत अहिगण संस्थापित तहँ कियउ असुरगण
सुर नर नाग यक्ष गन्धर्वा निज नागरिक बनायउ सर्वा
करत भयउ भुवन त्रय शासन ह्वै आसीन इन्द्र सिंहासन
प्रजा पुत्र इव पालत भयऊ धर्म कर्म रक्षक ह्वै गयऊ
नृपति जलन्धर शासन समया भयउ प्रजा सब निर्भय हृदया
आधि व्याधि व्यापै नहि काहू जर न कोउ शोकानल दाहू
कोउ न दुखी न कृश नहि दीना नहि तब कोउ त्रिवर्ग विहीना
एक समय कलह प्रिय नारद लखि सुर दुख विपदम्बुधिपारद
गयउ जलन्धर नगर गगन पथ योगसिद्ध आरूढ़ पवन रथ
तासु समृद्धि विलोकन हेतू यत्कृत राजधर्म पथ सेतू
देखि चकित भउ तासु समृद्धी जहँ अगण्य अलकापति ऋद्धी
नीति विशारद नीति चलायउ सस्मित मुख निज शीश हिलायउ
दै अर्घादिक सहित समाजा भउ मुनिपद रत निशिचर राजा
पुनि पुनि मुनिहिँ पूछि कुशलाता भाखत भयउ इन्दिरा भ्राता
मुनिवर कहहु कहाँ ते आयउ का तहँ अद्भुत विषय लखायउ
कारण कौन हिलायउ शीशा आश्चर्यित कस भयउ मुनीशा
असुरराज हौं हरगिरि गयऊँ उमा उमावर देखत भयऊँ
योजन अयुत कल्पतरु कानन जहँ वटतर शोभित पञ्चानन
कामधेनु कत जहँ तहँ चरई चिन्तामणि कत जगमग करई
सामगान गुञ्जित चहुँ ओरा करहिँ प्रमथ जय जय शिव सोरा
सरवर सरिता निर्झर नाना करहिँ विहंगम जहँ कलगाना

एवं विध समृद्धि तहँ देखी त्रिभुवन ऋद्धि क्षुद्र करि लेखी
देखि विपुल छवि विस्मय भयऊ ताते शिर कम्पित ह्वै गयऊ
यादृश ऋद्धि शंभुकर भाई तादृश विभव तुमहुँ नहि पाई
स्त्री रत्नादि विभव तहँ यादृक् तुअ नगरी महँ दुर्लभ तादृक्
विविध अप्सरा अहिगण कन्या नहि तव शंभु प्रियासम धन्या
जसु सौन्दर्य जलधि महँ मज्जित भउ चतुराननहू अति लज्जित
उपमा तासु कहै कस कोई निरखि जाहि लज्जित रति होई
शंकर विषय विरक्त विरागी जासु रूप लखि भउ अनुरागी
अर्धाङ्गिनी कियउ शिव जाही कहहु बरनि सक को कवि ताही
अस कहि गउ नारद निज धामा भयउ ज़लन्धर सुनत सकामा
दूत पठायउ तहँमा राहू जहाँ रहे हर दीरघ बाहू
रहे द्वारपर नन्दीश्वर भट पहुँचि गयउ तहँ राहु दैत्य झट
नन्दीश्वर तब खबर जनायउ लहि आयसु प्रवेश सो पायउ
त्र्यम्बक निकट जाय भउ ठाढ़ा प्रभु प्रताप लखि भय उर बाढ़ा
हर भ्रू इङ्गित अनुमति पाई कथमपि निजपति उक्ति सुनाई
भस्म विलिप्त मसान निवासी भूत प्रेत वृत सदा उदासी
मुण्डमाल कर कलित कपाला वन वन फिरत बजावत गाला
अस्थिभार वाहक विषभक्षक फूत्कृत करत जटा बिच तक्षक
सकल रत्न अधिपति मैं आजू मोर अधीन पुरन्दर राजू
गिरिजा रत्न न सोहत तोही आज्ञा मानि देहु सो मोही
सुनि अस रुद्र ललाट समुद्गत एक पुरुष भउ हर समक्षगत

सिंह सरिस मुख लह लह रसना ज्वलज्ज्वलन लोचन दिग्वसना
ऊर्द्ध केश अति शुष्क शरीरा अपर नृसिंह रूप रणधीरा
ग्रसन हेतु सो राहुहिँ धायउ राहु मरुद्गति निरखि पलायउ
धाय मरुद्गति गहे राहुको ग्रसन समुद्यत ठोकि बाहुको
त्राहि त्राहि सो भाखत भयऊ सत्वर शंकर शरणहिँ गयऊ
मैवं मैवं कहि करुणानिधि दियउ तुरत करि तसु रक्षण विधि
हनन अयोग्य दूतकर ताता सुरगुरु कहहिँ नीति विज्ञाता
प्राणदान अब या कहँ देहू आयसु मोरि मानि तुम लेहू
ताहि पुरुष सो त्यागत भयऊ प्राण बचाय भागि सो गयऊ

दोहा

कहत भयउ सो पुरुष तब, प्रभुहिँ युगल कर जोरि ।
करु निवृत्त दै भक्ष्य कछु, क्षुधा व्यथा अति मोरि ॥१२२॥

सोरठा

प्रभु आज्ञा अनुसार, करगत भक्षण दियउँ तजि ।
लखौँ न कछुक अहार, प्राण पखेरू उड़न चह ॥१९९॥

चौपाई

निज पद पाणि मांस आहारा करहु तात तुम विना विचारा
करहु मोर आज्ञा प्रतिपालन करहु व्यतीत अधिक अब काल न
कियउ पाणि पद मांस अहारा पुरुष शंभु आज्ञा अनुसारा
शिर अवशेष मात्र रहि गयऊ लखि प्रसन्न शंकर अति भयऊ
लखि तसु कारज अतिशय दुष्कर भउ विस्मित अति गिरिजावर हर

करुणासिन्धु कहत भउ ताही आशुतोष गावत जग जाही
द्वारपाल मम होहु वीरवर नाम तुम्हार कीर्तिमुख घर घर
मम पूजन बिनु पूजन तोरा फल विहीन अस सम्मत मोरा
प्रथमहिं जे जन पूजक तोरा ते पूजन अधिकारी मोरा
प्रभु द्वारप तवते सो भयऊ प्रथम पूज्य शिवते ह्वै गयऊ
बर्बर देशाधिप भउ राहू ताते बर्बर कह सब ताहू
जाय जलन्धर प्रति सब बाता कियउ निवेदित सो कृशगाता
दूत वचन सुनि भउ अति क्रोधा बद्धमूल ह्वै गयउ विरोधा
सेनापति पति कहँ बुलवाया समर समुद्घोषित करवाया
समर दुन्दुभी आहत भयऊ नगर बीच हलचल मचि गयऊ
करन लगे द्विज गण स्वस्त्ययना वीराङ्गना अश्रु भर नयना
भयउ विविध मांगलिक विधाना पायउ विप्र सदक्षिण दाना
इष्टदेव अरु निज गुरु पूजन कियउ तथा कुलवृद्ध प्रपूजन
कोटि कोटि सेना परिवेष्टित चला जलन्धर कृत जय चेष्टित
नाचहिं नटी नर्तकी नाना गायकवृन्द करहिं कलगाना
वन्दीगण विरुदावलि गावहिं इत उत द्रुतगति धावक धावहिं
बाजत पुनि पुनि मारू बाजा भाखत भट जय जय महराजा
हयी गजी अरु रथी पदाती बल चतुरङ्ग चला बहु भाँती
हय ह्रेषित गज बृंहित रथधुनि गुञ्जित भयउ नभस्तल पुनिपुनि
सिंहनाद शंखादिक नादा सुनि कायर हिय भउ अवसादा
धरती थर थर काँपन लागी अचल अशेष अचलता त्यागी

डगमगाहिँ कच्छप अरु कोला शेष सहस आनन भउ लोला
चले दैत्य गुरु भार्गव नामा शिष्य जलन्धर मंगल कामा
गिरा जलन्धर मुकुट महीतल अशकुन बूझि न डरा महाबल
नानाविधि अशकुन तिहि काला भयउ मृत्युसूचक विकराला
गणना तासु न कियउ कालवस लह कल्याण देवद्रोही कस
लखि उद्योग तासु सुरवृन्दा शिव समीप गउ सहित मुनिन्दा
हर चरणोपरि शिर धरि दियऊ प्राप्त विपत्ति निवेदन कियऊ
सेना सहित जलन्धर आवत कौन नाथ बिनु हमहिँ बचावत
सुनि अस वचन शंभु मुसकाये महाविष्णु कहँ तुरत बुलाये

दोहा

महा विष्णुकर कर परसि, कहत भयउ त्रिपुरारि ।
कस न जलन्धर वध कियउ, संगर बीच मुरारि ॥१२३॥

सोरठा

त्यागि परम प्रिय धाम, बैकुण्ठहिँ तसु गृह बसे ।
भक्त हृदय अभिराम, भक्त उपेक्षा कियउ कस ॥२००॥

चौपाई

सुनि अस बोले खगपति वाहन सुनु विज्ञप्ति देव वृषवाहन
राउर अंशज लक्ष्मी सोदर ताते मोर अवध्य जलन्धर
विश्व विलयकर्ता प्रभु आपू मारि शत्रु हरु सुर सन्तापू
सुनि हरि वचन कहत हर भयऊ श्रवण समुत्सुक सब ह्वै गयऊ
एतत्शस्त्र अस्त्र कृत मुरहर होइ न सकत गतासु जलन्धर

निज निज तेज अंश सब दीजै मम तेजोंश मिलित तहँ कीजै
तेजो निर्मित शस्त्र प्रतापा हति रिपु हरिहौं सुर सन्तापा
निज निज तेज दीन्ह सब कोई विष्णु आदि जय इच्छुक होई
सकल तेज एकत्रित भयऊ सहसा घनीभूत ह्वै गयऊ
तब निज अंश दीन्ह भुवनेशू जासु कृपालव कटत कलेशू
सब मिलि भयउ सुदर्शन चक्रा असुर अदृष्ट तबहि भउ वक्रा
सदा अमोघ असुर भयकारी तपसा पायउ जाहि मुरारी
तावत् पहुँचि गयउ कैलासा असुर जलन्धर शंकर पासा
हयी गजी अरु रथी पदाती पहुँचे अगणित सुरआराती
जहँ तहँ भागि गयउ सब देवा किन्नर गन्धर्वादिक जे वा
भयउ सुसज्ज प्रमथगण सबही पुरहर आज्ञा पायउ जबही
सेनानी नन्दीश्वर आदिक चले सशस्त्र वीरभद्रादिक
आगे बढ़ि आयउ सब वीरा हू हू करत महारणधीरा
कैलासोपत्यका धरातल भिरि गउ निर्भय हृदय युगलदल
भेरी शंख मृदंग तुमुल धुनि हय ह्रेषित गज बृंहित पुनि पुनि
महा महा स्यन्दन धुनि घोरा परिपूरित ह्वै गउ चहुँ ओरा
सकल कुलाचल डोलन लागे परिहरि गुहा केहरी भागे
डगमग डगमग भूतल करई हाहाकार सकल जन करई
भइ शूकरदयिता अपि नमिता भाराक्रान्त अधस्तल गमिता
तोमर शक्ति मुशल करवाला पट्टिश कुलिश पाश विकराला
परिपूरित रणभूमि विराजै उल्काबृत नभ इव छवि छाजै

झनत्कार शस्त्राहति केरा सुनि भउ भीरु हृदय भय डेरा
विविध रुण्ड मुण्डादि प्रचण्डा पवि खण्डित जिमि पर्वत खण्डा
भयउ रुधिरमय नदी प्रवाहा करहिँ वीरवर जहँ अवगाहा
भयउ हताहत दानव अगणित प्रमथ वीरकृत इन्द्रादिकजित
दैत्य दनुज करि शस्त्र प्रहारा कोटि कोटि प्रमथहिँ हति डारा
विजय पराजय पुनि पुनि पावहिँ पुनि पुनि बढ़ि बढ़ि आगे धावहिँ
दोउ दलीय हार नहि मानत काटत कटत मरत अरु मारत
भइ मांसासृक् पिच्छल धरणी भयउ अगम्य सामरिक सरणी
प्रमथ निहत असुरादिक जेते जीवित कियउ असुर गुरु तेते
मृत सञ्जीवन मन्त्र प्रभावा। निरखि प्रमथगण अति भय पावा
गयउ सकल मिलि शंभु सकाशा भयविह्वल परिहरि जय आशा
निरखि दशा शंकर करुणानिधि सबहिँ दियउ आश्वासन बहु विधि
पुनि कृत्या प्रभु मुखते निकसी भाद्री नील घटा जनु विकसी
परम भयंकर विकट शरीरा कहत रूप जसु गिरा अधीरा
ताल जंघ उदर स्थित आनन पयोधरा पीड़ित तरु कानन
चली शंभु आज्ञा अनुसारा अति द्रुतगति जिमि अहि आहारा
समर भूमि सो पल महँ पहुँची निरखि जाहि रिपु सेना सकुची
कोटि कोटि राक्षस संहारा करत भई करि मुष्टि प्रहारा
भक्षण करत भयउ शतकोटी दैत्य दनुज उर कलित करोटी
गहि शुक्रहिँ उड़ि गई अकाशा निशिचर तदपि न भयउ हताशा
क्रोधाकुलित विलोहित लोचन कियउ असुरगण बाण विमोचन

शलभ यूथ इव शरगण छूटत क्षेत्रकणिश इव असु कण लूटत
दश दिश भयउ वाण आछन्ना भयउ प्रमथगण मरणासन्ना
शिवगण शर शत भिन्न शरीरा बरसे रुधिर मेघ जिमि नीरा
वासन्तिक जिमि किंशुक तरुगण प्रतिभासित भउ तथा प्रमथगण
गिरत कोउ अरु गिरि गउ कोई शरसंछिन्न भिन्न तनु होई
यद्यपि प्रमथ जीतिहैँ आगे तदपि एहि क्षण भागन लागे
लखि निज चमू विमुख शैलादी कार्तिकेय लम्बोदर आदी
अतिशय शीघ्र चले तहँ धाई जहँ जय दुन्दुभि असुर बजाई
चमचम चमचम चमके अस्त्रा कियउ झनत्कृति आहत शस्त्रा
आहत करतल कृत रव चटचट आहत दण्ड जनित रव फटफट
वाजी टाप जनित रव टप टप असि गलकर्तन कृत रव छप छप
बरछी भेदन कृत रव खच खच कहहिँ सपक्षी पुनि पुनि बच बच
नन्दीश्वर जब कोपित भयऊ असुरनकर छक्का छुटि गयऊ
कोटि कोटि भट मारि गिराये असुर वीरते यदपि घिराये
रुण्ड मुण्ड मय भउ तब धरणी भयउ अगम्या सेना सरणी
दानव धीर वीर तब क्रुद्धा शर धारा कृत दश दिश रुद्धा
कालनेमि नन्दी प्रति धावा शुंभ गजानन प्रति बढ़ि आवा
बढ़ा निशुंभ असुरवर वीरा कार्तिकेय प्रति अति रणधीरा
तब निशुंभ भट मारि पञ्चशर पातित कियउ मयूर वीरवर
गुह अति द्रुत निज शक्ति उठाई तावत शुंभानुज रिसिआई
गुह शक्तिहिँ निज शक्ति प्रहारा तिल सम छिन्न भिन्न करि डारा

नन्दीश्वर निज बाण चलायउ कृष्ट धनुर्गुण श्रुति ढिग आयउ
कालनेमि भउ विद्ध शरीरा भउं कम्पित मति यद्यपि वीरा
हय रथ केतु छिन्न करि डारा नन्दी वीर शिलाद कुमारा
कालनेमि तब लोहित लोचन काटे तसु धनु करि शर मोचन
तजे त्रिशूल शिलाद कुमारा शत्रुहिं विद्ध हृदय करि डारा
हति हय सारथि मारि गिरावा पैदल कालनेमि तब धावा
कियउ महागिरि शिखर प्रहारा नन्दीश्वर पातित करि डारा
रथवाहन अरु मूषकवाहन भिरे परस्पर शुंभ गजानन
विद्ध हृदय शुंभहिं करि डारा बाणप्रहार उमेश कुमारा
हते सारथिहिं तजि शर तीना तदपि शुम्भ भट भयउ न दीना
बरसत जलद यथा जलधारा शुंभ वीर तिमि बारंबारा
बरसत भयउ अमित शरधारा सिंहनाद करि करि बहु बारा
शरभिन्नांग गिरा तब मूषक कियउ शंख धुनि सुरमुनि दूषक
भयउ पदाती लम्बोदर तब निरखि प्रसन्न निशाचर दल सब
तब गणनायक भट भउ क्रुद्धा प्रलय काल जिमि रुद्र विरुद्धा
शुंभहिं परशु विद्ध उर कियऊ गणपति निजबल परिचय दियऊ
पुनि मूषकारूढ़ सो भयऊ जय धुनि गुञ्जित नभ ह्वै गयऊ
कालनेमि नामा तब वीरा सहित निशुंभ वीर रणधीरा
दोऊ मिलि गणपति प्रति धावा लखि तब वीरभद्र चढ़ि आवा
वीरभद्र शत सहस भूत वृत पहुँचि गयउ जहँ गणपति रणकृत
कत कुष्माण्ड और कत भैरव कत वैताल योगिनी गण तब

|

आयउ हू हू करत पिशाचा गावत बजवत करि बहु नाचा
किलकिल शब्द करत तहँ कोऊ सिंहनाद घरघर रव कोऊ
भेरी ताल मृदंग बजावत पुनि पुनि धरती थरथर काँपत
भूतादिक गण इत उत धावत असुरहिं धरि धरि दाँत दबावत
कियउ अमित असुरन कहँ ग्रासा जिमि पशुगण अभिनव मृदुघासा
कोऊ पतन कोउ उत्पतना कोउ प्लवंगम इव उत्प्लवना
करहिं कोउ अद्भुत नृत्यादिक निर्भय वीरभद्र भृत्यादिक
तावत् गुह नन्दीश्वर वीरा करि विश्राम महा रणधीरा
तजत भयउ अविरल शर धारा अमित दैत्य दानव हति डारा
छिन्नभिन्न तनु भउ रिपु अगणित परिपातित अरु भक्षित बहुमित
भइ अति विह्वल दानव सेना भागन लगे वीरवर के ना
चतुरंगिणी वाहिनी भागी प्रमथ चमू तसु पाछे लागी
देखि चलित निज चमू जलन्धर अति क्रोधाकुल समर धुरन्धर
बजवायउ रण दुंदुभि बाजा सजवायउ सब सैनिक साजा
प्रणमि असुर गुरु चला तुरन्ता कोलाहल भरि गयउ दिगन्ता
भयउ महा स्यन्दन आरूढ़ा काल विवश रण उत्सुक मूढ़ा
धृत शिर ऊपर मणिमय छत्रा करि संकल्पित संगर सत्रा

दोहा

विप्र स्वस्ति वाचन कियउ, दियउ शुभाशीर्वाद ।
भउ विधिकृत अशकुन तदपि, को करि सक अपवाद ॥१२४॥

सोरठा

प्रमथ चमू विकराल, निरखि जंलन्धर बढ़ि चला ।
हलचल भउ तत्काल, उभय वाहिनी बीच अति ॥२०१॥

चौपाई

शर समूह छोड़न सो लागा क्रोधाविष्ट मृत्युभय त्यागा
शर संछन्न भयऊ दिङ्मण्डल भउ सन्त्रस्त निरखि आखण्डल
गणपति नन्दी वीरभद्र भट सबहिँ कियउ शरविद्ध हृदय झट
प्रलय मेघ इव गर्जत भयऊ श्रोता वधिरीकृत है गयऊ
मारि शक्ति गुह तसु हिय वेधा शक्तिविद्ध हिय दारित द्वेधा
कथमपि सो सुस्थिर रहि गयऊ वीर समर तत्पर पुनि भयऊ
क्रोधाकुलित विलोहित लोचन कियउ जलन्धर गदा विमोचन
गुह गदया आहत अपि अतिबल भयउ विमूर्छित पतित भूमितल
पुनरपि करि खल गदा प्रहारा पातित कियउ शिलाद कुमारा
निरखि क्रुद्ध अति भयउ गणेशू सुमिरि महाप्रभु देव महेशू
काटि गदा करि परशु प्रहारा तिष्ठ तिष्ठ भाखे बहु बारा
तीन बाण तजि वीरभद्र भट कियउ जलन्धर हृदय विद्ध झट
त्यागि सप्त शर पुनि रणधीरा छत्र केतु हय काटे वीरा
अपर रथोपरि पुनि आरूढ़ा बढ़ा जलन्धर काल-विमूढ़ा
मारि शक्ति गणपतिहिँ गिराया वीरभद्र प्रति पुनि बढ़ि आया
वीरभद्र भट वीर जलन्धर तिष्ठ तिष्ठ कहि भिरे परस्पर
काटे अतिबल रिपु रथ वाजी वीरभद्र भट तजि शर राजी

चाप तासु खण्डित करि दियऊ वीरभद्र अद्भुत रण कियऊ
दैत्यवृन्दकर कियउ विमर्दन यथा मत्त करिवर पंकज वन
पुनरपि परिघ ग्रहण करि वीरा चला जलन्धर विकट शरीरा
सहसा वीरभद्र मस्तकपर परिघ पात करि दियउ जलन्धर
जो भट रुद्र अंश अवतारा सोउ पतित भउ परिघ प्रहारा
अचरज यहाँ न मानै कोई प्रभु प्रेरित सब कारज होई
हर अंशज यह वीर जलन्धर पूर्व भृत्य गोलोकनाथ कर
राधा शापित दुर्मति जायउ सो सब चरित व्यासमुनि गायउ
वीरभद्र गुह गणपति नन्दी लखि निरस्त हर्षित रिपुवन्दी
कियउ जलन्धर कीरति गाना सुनत प्रमथगण भयउ मलाना
हत उत्साह भयउ सब कोई विधि गति रोध न कथमपि होई
गयउ सकल मिलि शंभु सकाशा त्यागि समर उत्साह हताशा
समाचार सब प्रभुहिं सुनाये यथा गुहादि पराजय पाये
पाहि पाहि कहि कियउ प्रणामा आर्त प्रमथ गण लै लै नामा
आश्वासन पुनि कियउ महेशू जो आरतकर हरहिं कलेशू
आर्तनाद सुनि प्रभु प्रलयंकर वृषारूढ़ भउ प्रस्थित द्रुततर
डगमग डगमग धरती करई डोलत भूधर तरुवर गिरई
ग्रहगण विस्मृत पथ ह्वै गयऊ प्रलय काल जनु अति नियरयऊ
अट्टहास जब कियउ दिगम्बर सुनि अद्भुत रव चकित जलन्धर
हू हू करत प्रमथगण धाये शत शत जगदन्तक जनु आये
असुर वाहिनी द्रुतगति भागी भयवश भउ भट समर विरागी

जिमि गंगा गमनोद्यत जन लखि भागत तुरत दुरिततति झखिझखि

छन्द

चलित लखि निज चमू चहुँ दिश महारुद्र प्रतापते ।
भउ जलन्धर चकित मति अति व्यथित मति निज पापते ॥
कहत भउ चित्कार करि करि फिरहु फिरहु न डरहु रे ।
यहाँ यश परलोक सद्गति जय पराजय सम अरे ॥

दोहा

जानि प्राणभय भाजि गइ, असुर वाहिनी तात ।
निरखि भीषणाकार हर, भई प्रकम्पित गात ॥१२५॥

सोरठा

गुह गणपति नन्दीश, वीरभद्र आदिक सुभट ।
निकट स्थित जगदीश, लखि रिपु सम्मुख बहुरि भउ॥२०२॥

छन्द (भुजंगप्रयात)

भिरे वीर बाँके यशस्वी मनस्वी
बिसारे महामृत्यु भी ज्यौं तपस्वी ।
बजी दुन्दुभी और शंखादि बाजा
भये क्रोध आविष्ट त्रैलोक्य राजा ॥
तरंगातितुंगा जटाजूट गंगा
विषज्वालमालीय माला भुजंगा ।
तृतीयाक्षि सप्तार्चिदाह प्रदग्धा
भई दानवी वाहिनी दैव दग्धा ॥

महामत्त मातंग आरूढ़ योधा
कृत प्रास संपात मार्गावरोधा ।
रथी ओ तुरंगी पदाती पताकी
चले लक्ष्य कै कै जहाँ थे पिनाकी ॥
झनत्कार चित्कार फुत्कार सोरा
टनत्कार टंकार हुंकार घोरा ।
प्रतिद्वन्द्वि योधा बढ़े हाक दै दै
स्फुरत्तीक्ष्ण शस्त्रास्त्र संधान कै कै ॥
बढ़े भी चढ़े भी भिरे भी गिरे भी
लड़े बाँकुरे शत्रुओं ते घिरे भी ।
डटे भी सटे भी कटे भी हटे भी
शराविद्ध वक्षस्थलों के फटे भी ॥
महा डाकिनी शाकिनी काकिनी भी
महा राकिनी लाकिनी हाकिनी भी ।
महा ताण्डवाडम्बरा संभ्रमन्ती
नटन्ती लपन्ती पतन्त्युत्पतन्ती ॥
जुटे गृद्ध्रकाकादि कंकादि पक्षी
सृगालादि जन्तू महामांस भक्षी ।
भई सो मसानोपमा युद्धभूमी
भई नाचती भैरवी झूमि झूमी ॥

चौपाई

भयउ जलन्धर भट अति क्रुद्धा किियउ बाणते दश दिश रुद्धा
गौरीपति प्रति धावत भयऊ यूथप यूथ संग ह्वै गयऊ
शुंभ निशुंभ अश्वमुख वीरा वीर वलाहक अति रण धीरा
खड्ग रोम अरु वीर प्रचण्डा कालनेमि नामा उद्दण्डा
घस्मरादि सेनप सब धाये बाण जाल नभ मण्डल छाये
बढ़त भयउ तब प्रभु मुसकाई बाणवात रिपु राजि उड़ाई
खड्ग रोम शिर परशु प्रहारा काटि दियउ प्रभु लगा न वारा
वहुरि वलाहक शिर प्रभु काटे तजि खट्वांग क्रोध करि डाँटे
पाशबद्ध घस्मर कहँ कियऊ वृषभ ऋषभ अपि कत हतिदियऊ
वहुरि शंभु शर जाल बिछाये निरवकाश रिपु प्राण गँवाये
सिंहार्दित जिमि गजगण विद्रुत तथा पलायित रिपुगण अति द्रुत
विचल देखि निज चमू जलन्धर चला हाक दै समर धुरन्धर
महादेव सम्मुख बढ़ि आया निर्भय हिय कटुवचन सुनाया
का वीरता मारि दुर्बल जन मम सम्मुख थिर होहु एक छन
यदि किञ्चिद्बल तुअ महँ तपसी वारहु मत्कृत शरमय झपसी
नहि मैं त्रिपुर न अन्धक आदी नहि तारक भट आदि प्रमादी
आजु जलन्धर भट तुअ सम्मुख सुस्थिर होहु न भागहु दुर्मुख
आजु वीरता तोहि दिखैहौं समर भूमि बिच नाच नचैहौं
अस कहि सप्तति शर संधाना खींचि धनुर्गुण यदवधि काना
बिहँसि शंभु छेदन करि डारे उत्पति थिति हति करनेवारे

पुनि प्रभु धनु हय छत्र पताका शर संछिन्न कियउ दै हाका
विरथ छिन्न धनु झटिति जलंधर गदा समुद्यत कियउ वीरवर
यावत् गदा चलावन चाहा तावत् काटे त्रिभुवन नाहा
मुष्टि समुद्यत करि सो धावा महादेव सन्निधि शठ आवा
अति द्रुत वाण वेगते शंकर दियउ फेंकि तिहि क्रोश दूरपर
अतुल शक्ति लखि शंकर केरी न्यून शक्ति निज मन महँ हेरी
तदपि न तजा समर उत्साहा करि करि समर सिन्धु अवगाहा
गान्धर्वी माया सो कियऊ माया पतिहिँ मुग्ध करि दियऊ
नाचन लगीँ अप्सरा नाना गन्धर्वादिक गायउ गाना
बाजत वीणा वेणु मृदंगा उठत मोद आमोद तरंगा
नादलुब्ध प्रभु नाद विलीना भउ बहिरन्तर बोध विहीना
शस्त्राशस्त्र ससरि गउ कर ते अभय हृदय भउ रिपुदल हर ते
लखि एकाग्री भूत महेशू चला उमा सन्निधि असुरेशू
काल विवश शठ मनसिज मुग्धा महा मोहवश रति रस लुब्धा
शंभु सरिस आकार बनायउ वृषभारोही डमरु बजायउ
जटाजूटधर हाथ त्रिशूला भाल बालशशि भासित चूला
गिरिजा जानि प्राणपति आगत करत भई तसु समुचित स्वागत
गिरिजा रूप विलोकि मनोहर स्खलित वीर्य ह्वै गयउ जलन्धर
भयउ जड़ाङ्ग मूढ़ तत्काला जानि गई असुरहिँ गिरिबाला
अन्तर्हिता भई जगदम्बा विद्युत्ततिरिव जगदवलम्बा
निरखि ताहि कृत अन्तर्धाना बहुरि गयउ जहँ हर भगवाना

अति संत्रस्त चित्त चिति शक्ती सुमिरत भयउ हरिहिँ कृत भक्ती
तुरत समागत भउ तहँ मुरहन दुष्ट निकन्दन खगपति वाहन
भाखत भईं उमा सब गाथा कियउ चरित जो निशिचरनाथा
हर दयिता गुह-गणपति-माता बन्धु आपु जसु त्रिभुवन त्राता
दुर्गति आजु भई तसु ऐसी लहै अनाथा दुर्गति जैसी
सुनि मुरमर्दन भाखन लागे काल विवश वह भयउ अभागे
यदवधि तासु प्रिया पतिवरता तदवधि वध्य न निशिचर भरता
मारग दुष्ट दिखायउ मन्दा भ्रष्टसतीत्व करौँ मैँ वृन्दा
असकहि गउ हरि निशिचरधामा तत् पत्नीव्रत भंगन कामा
गन्धर्वादिक माया . सबही क्षण भरि रहि विलुप्त भइ तबही
माया दृश्य जानि सब शंकर क्रोधाविष्ट भयउ रण तत्पर
महासमरकर भउ आरम्भा चला जलन्धर करि अति दम्भा
युगल वाहिनी जूझन लागी शस्त्रपातकृत विकसी आगी
मारु मारु धरु धरु भट बोलै पदाघातते धरती डोलै
तिष्ठ तिष्ठ कहि दौड़त दोऊ मारत मरत हटत नहि कोऊ
तुमुल युद्ध भउ नाना भाँती जानि न जात दिवस अरु राती

दोहा

गुरू निरञ्जन कहत भउ, पुरञ्जनहिँ समुझाय।
विष्णु चातुरी चरित कछु, सुनहु वत्स मनलाय ॥१२६॥
असुर जलन्धर वीरवर, पत्नी वृन्दा नाम।
सती धर्मरत अनवरत, रूपशील गुण धाम ॥१२७॥

सोरठा

भंग न यावत् होइ, सतीधर्म पतिवर्म इव ।
तावत् वध्य न सोइ, असुर जलन्धर वीरवर ॥२०३॥
महाविष्णु भगवान, जानि निगूढ़ रहस्य यह ।
सर्वज्ञता निधान, गयउ जलन्धर नगर महँ ॥२०४॥
गौरी वञ्चक दुष्ट, गो-द्विज-देव-विरोध रत ।
यदुपरि शंभु विरुष्ट, यथातथा यह होइ हत ॥२०५॥

चौपाई

अस विचार श्रीपति मन आवा मायामय अभिनय दरसावा
वृन्दा सती धर्म विध्वंसा करि निश्चित मुनि मानस हंसा
कृत संकल्प बुद्धि महँ अपना जस हरि तथा भयउ तसु सपना
स्वप्न दशामहँ भउ अस भाना जाते वृन्दा भई मलाना
महिषारूढ़ जलन्धर भूपा तैलाभ्यक्त दिगम्बर रूपा
कृष्ण सुमन उर उन्मर्यादा सेवत जाहि विविध क्रव्यादा
मुण्डी दक्षिण दिशि संप्रस्थित अन्धकार आवृत दुरवस्थित
मग्न स्वकीय नगर अम्बुधि महँ आपुहिँ लखी निमग्ना सो तहँ
स्वप्न विगत वृन्दा जब जागी लहि विषाद अति सोचन लागी
छिद्र सहित लखि निष्प्रभ दिनकर त्रस्तबुद्धि कम्पित तनु थरथर
उपवन आदि भ्रमण सो कियऊ प्रिय अनुचरी संग लै लियऊ
गोपुर अट्टालादिक धामा गई शान्तिकामा सो वामा
कथमपि शान्ति न पाई वृन्दा स्रवत वारि लोचन अरविन्दा

जहँ तहँ फिरी न भउ चित चैना रोइ रोइ लोहित भउ नैना
तावत् वनमहँ राक्षस दोई निरखि महा विह्वल भइ सोई
सिंहवदन दंष्ट्रानन भीषण भागन लगी निरखि सो तत्क्षण
तावत् भउ मुनि लोचन गोचर मौनी तपसी जटाजूटधर
तासु समीप गई सो बाला भयाविष्ट मानस तत्काला
बाहुलतावृत कण्ठस्थलमैँ वृन्दा कृत सो भयवश पलमैँ
पुनि पुनि वृन्दा भाखन लागी जय जय मुनिवर विषय विरागी
शरणागत रक्षा मुनि कीजै अबला जानि अभय वर दीजै
सुनि मुनिवर करि तसु आश्वासन करत भयउ पुनि हुंकारस्वन
मुनि हुंकारध्वनि परतापा भागे राक्षस तजि निज दापा
लखि राक्षसहिँ पलायित वृन्दा गही धाय मुनि पद अरविन्दा
पुनिपुनि प्रणमि प्रणमि तापसवर भाखत भइ वृन्दा गद्‌गद स्वर
त्राण कियउ मम दीनबछल मुनि प्राण बचायउ करि हुंकृति धुनि
एक विनय सुनु तापस मोरा भासत शून्य मोहि चहुँ ओरा
प्राणनाथ मम भूप जलन्धर जूझत पुरहर संग वीरवर
युद्ध दशा तापस कस अहई चिन्तावह्नि हृदय मम दहई
योगसिद्ध जानिय सब आपू कुशल कथन करि हरु संतापू
सुनि मुनि ऊपर दृष्टि उठायउ तावत् कपि युग दृग्पथ आयउ
मुनिवर भ्रू इंगित लखि वानर आयउ उतरि गगनते भू पर
मुनि पद पंकज प्रणमत भयऊ वृन्दा दृक् तदुपरि पड़ि गयऊ
लखि पतिशिर कबन्ध कपि हाथा गिरी भूमितल नारि अनाथा

मूर्छावस्थ भई अति दीना शुष्क रदच्छद वदन मलीना
कमण्डलूदक सेचन कियऊ मुनि तदुपरि जनु जीवन दियऊ
जागि उठी सो सुप्तोत्थितवत् स्रवत नयन जल नील जलदवत्
पुनिपुनि निपतित पीटत शिर उर फेकि विभूषण मेटत सिन्दुर
रोवत हिचकत करत विलापा कुररी सरिस दुसह सन्तापा
निर्दय हृदय दैव दुख दियऊ शिर सिन्दूर मोर हरि लियऊ
मन वच काय कियउँ पति सेवन करुणा तदपि भई पति देव न
मोहि त्यागि भउ सुर पुरवासी जरत विरह पावक यह दासी
कहु प्रभु काह मोर अपराधा दियउ दैव कस वैभव बाधा
मृदु भाषण कस करहु न नाहा करि मृदु परस हरहु उर दाहा
तव मुनिवर वहु कियउ प्रबोधा कुटिल काल गति कहि दुर्बोधा
त्राहि त्राहि कहि कहि सो वाला मुनि पद रज सिर धरि तत्काला
कहत भई समयोचित वाणी नम्रीभूत जोरि युग पाणी
स्वाभाविक सज्जनकर धर्मा दीनदया निःस्वारथ कर्मा
सर्व शक्तिमत्ता मुनि माहीँ शास्त्र सिद्ध मत संशय नाहीँ
जीवदान पति कहँ मुनि दीजै यशोदीप्त दिङ्मण्डल कीजै
सुनि मुनिवर तव भाखन लागे गौरी वञ्चक भयउ अभागे
एतज्जीवन दुष्कर मानौँ निज तपबल तथापि प्रण ठानौँ
जीवित करौँ न यदि पति तोरा सकल तपस्या निष्फल मोरा
अस कहि शिर कबन्ध संयोगा करि भाखे उठु मोर नियोगा
कहि मुनि अन्तर्हित ह्वै गयऊ सागरतनय उपस्थित भयऊ

भउ दम्पति गत परम प्रमोदा आलिंगन आदिक आमोदा
करि विहार वन उपवन माहीँ तृप्तचित्त भउ दम्पति नाहीँ

दोहा

एक समय रति रभसकर, लहि अवसान रमेस।
दरस दियउ निज रूपकर, परम मनोहर वेस ॥१२८॥
मायापति माया कियउ, धरि नाना विध रूप।
सोइ जलन्धर रूप भउ, पुनि निज रूप सरूप ॥१२९॥

सोरठा

सर्वरूप सर्वेश, सर्व आतमा सकल पति।
विगत अविद्या लेश; उनहिँ न परसत विधि अविधि ॥२०६॥
पुरा गोपिका तात, जो गोलोक निवासिनी।
वृन्दा इति विख्यात, भई जलन्धर कामिनी ॥२०७॥
दियउ राधिका शाप, ताते पायउ जन्म इह।
करुणासागर आप, लियउ ताहि अपनाइ पुनि ॥२०८॥

चौपाई

वृन्दा निरखि चतुर्भुजधारी नव जलधर रुचि देव मुरारी
भ्रष्ट पतिव्रत भइ अति दीना अति विखिन्न मति वदन मलीना
दयासिन्धु तव मिथ्या नामा मोहि बनायउ विधवा वामा
कियउ परस्त्री गमन अधर्मा विदित भुवन महँ सात्त्विक कर्मा
माया सकल भयउ अब ज्ञाता चरित विगर्हित यह सुरत्राता

तापस रूप भयउ तव आपू मम पति तनु बनि कृत अति पापू
जय अरु विजय नाम जो अनुचर सोइ भयउ तव युगल निशाचर
रावण कुम्भकर्ण बनि दोऊ प्रिया राउरो हरिहैं सोऊ
भार्या विरहानल दुख भारी लहब आपु बनि काननचारी
जो यह शिष्य यहाँ हरि राउर ताहि संग लै भ्रमब व्यथित उर
अनुज राउरो शेषनाग जो शक्ति शस्त्र आहत मृत सम सो
मोर शाप नहि मिथ्या कबहूँ होइ सकत बाधक विधि जबहूँ
सुनि श्रीपति बोले मृदुबानी सुनहु प्रिये तुम कथा पुरानी
मन्निमित्त तुम कियउ महातप क्षुधा तृषा सहि सहि हिम आतप
राधा शाप भयउ प्रतिबंधक पुनि यह कलित चरित संबंधक
तुलसी नाम विदित तुअ वामा भार्या मोर पूज्य सब ठामा
लक्ष्मि सरस्वति तुलसी गंगा चारि प्रिया मम पाइ प्रसंगा
लक्ष्मी आदि आपगा रूपा तुम अति पावन वृक्ष सरूपा
तुलसी दल अर्पण जो करिहैं हमहिं ताहि लखि अन्तक डरिहैं
सुनि वृन्दा प्रभु पद रज परसी लोचन युगल प्रेमजल बरसी
वह्नि प्रवेश कियउ तत्काला विष्णु लोक सो पहुँची बाला
पतिव्रत भंग कियउ एहि भाँती सुर कारज लगि जलधर काँती
अग्रिम कथा सुनहु अब ताता यथा निहत भउ सुर दुखदाता
हर अद्भुत बल निरखि जलन्धर भउ द्रुत माया रचना तत्पर
करि माया गौरी निरमायउ महा विषाद प्रमथदल छायउ
जो सर्वेश देव विद्यानिधि मोहित भयउ सोउ रिपु सन्निधि

लीला नायक लीलाकारी जानि न सक तसु गति संसारी
विश्व विरागी पत्नी परवश पावन परम मसान भूमि बस
वसन विहीन विधूलित गाता सो प्रभु त्रिभुवन वैभव दाता
मद विरहित नित विजयाभक्षी महा अहिंसक पशुमख लक्षी
पुनि पुनि करत उमा आघाता ब्रान्हि करत भ्रामित मुसकाता
शुम्भादिक कृत अस उत्पाता निरखि शंभु भउ कम्पित गाता
मन उद्विग्न शिथिल भउ गाता भउ तूर्ष्णीं सुर मुनि सुखदाता
असुर जलन्धर लहि अस अवसर हरहिँ विद्ध करि दियउ मारि शर
तब मुरहर पुरहर ढिग आये करि करि प्रोत्साहन समुझाये
मायामय यह उमा सरूपा निरमायउ रजनीचर भूपा
रौद्ररूप तब भउ त्रिपुरारी ज्वलज्ज्वालमाला तनुधारी
रौद्र रूप लखि असुर निकाया अति भयविह्वल दशदिश धाया
समरभूमि थिर रहा न कोऊ महा महा मुखिया भट जोऊ
शुम्भ निशुम्भ बलाहक आदी भागे भागहु भागहु वादी
शुम्भ निशुम्भहिँ दउ तब शापा विश्व विलोपक लखि तसु दापा
गौरीवध्य होहु तुम दोऊ समर भूमि गत अति शठ जोऊ
तावत् करि साहस पुनि धावा वीर जलन्धर आगे आवा
शराच्छन्न भूतल करि दियऊ शरासार छेदन प्रभु कियऊ
वृषभहिँ हनि शर आहत कियऊ निज विक्रम परिचय सो दियऊ
भागि गयउ सो वृषभ महाबल जो सर्वदा समर महँ अविचल
तब क्रोधाकुल भउ जगदीशा जासु वशंगत तत्त्व पचीसा

सोरठा

चक्र सुदर्शन नाम, प्रभा जासु शत सूर्य सम ।
समुपस्थित सब ठाम, भक्त गाढ़ महँ रहत जो ॥२०९॥
लियउ ताहि निज हाथ, सागर सुत वध हेतु हर ।
गुह नन्दी गणनाथ, वीरभद्र जय जय कियउ ॥२१०॥

चौपाई

निहत जलन्धर चक्र प्रहारा कियउ महाप्रभु जगदाधारा
जहँ तहँ भगी आसुरी सेना दैव हिंडोला झूलत के ना
वाम दैव आपत्ति निदाना दहिन दैव सुख सम्पति नाना
जासु अधीन सकल सुर सिद्धा भक्षक भउ तसु जम्बुक गृद्धा
उन्नति अवनति कारण आपू महादेव शिव विदित प्रतापू
सुमन राशि सुरगण वरसायउ यशोगान गन्धर्वन गायउ
भयउ यथाविधि धर्म प्रचारा भउ विनष्ट सज्जन दुख भारा
स्वाहा स्वधा शब्द गुञ्जित दिश हुं फट वौषट शब्द अहर्निश
हन्तकार गुञ्जित नृपगामा वषट्कार गुञ्जित सब ठामा
भयउ परम निर्मल दिङ्मण्डल सर सरितादिक भउ निर्मल जल
भउ जाज्वल्यमान हुतभक्षक नृप नृपपुरुष भयउ जनरक्षक
तस्कर-दस्यु-निकर भउ लुप्ता जिमि ग्रीषम ऋतु मेढ़क गुप्ता
भउ पाखण्ड विवाद निरस्ता जिमि हिमऋतुमशकादिक अस्ता
अप्रगल्भ भउ मिथ्यावादी बुध सन्निधि जिमि धूर्त विवादी
व्यभिचारादिक भयउ विनष्टा सत् संगति जिमि दुर्मति नष्टा

भउ सब थल अध्ययन प्रचारा ज्ञानोदय जिमि तत्त्व विचारा
ज्येष्ठ समक्ष कनिष्ठ न मरई नहिं दारिद्र्य दहन जन जरई

छन्द

सुनहिँ सुनवहिँ पढ़हिँ जे जन नित जलन्धर वध कथा।
भक्तियुत थिर चित लहहिँ न रिपु पराजयकृत व्यथा॥
लहहिँ सुख सम्पत्ति सन्तति धवल कीरति पावहीँ।
ताहि अन्तिम काल शंकर आप रूप बनावहीँ॥

दोहा

जालन्धर वध चरित सुनि, मुद न पुरञ्जन थोर।
सकुचत सविनय वचन पुनि, कहत भयउ कर जोर॥१३०॥

सोरठा

मुनि उपमन्यु चरित्र, श्रवण हेतु उत्सुक हृदय।
श्रोता होत पवित्र, प्रभु चरितामृत पान करि॥२११॥
सकुचत मानस मोर, प्रश्न करत पुनि पुनि गुरो।
हेरिय लोचन कोर, शरणापन्न विचार करि॥२१२॥

चौपाई

सुनत निरञ्जन भाखत भयऊ हर्ष अश्रु लोचन भरि गयऊ
धन्यवाद भाजन तुम भउ अति कथा सरित जल ते निर्मल मति
करौँ यथामति प्रभु गुण गाना वर्णन जासु करत श्रुति नाना
भउ उपमन्यु नाम मुनि बालक पशुपतिरत पशुपति व्रत पालक
गो-पय मातु देहु कह सोऊ बाल वयस्क हठी अति ओऊ
पिष्ट घोलि पय कहि सो दियऊ बालक मुदित पानं करि लियऊ

निज मातुल गृह गउ शिशु सोई गोपय पिवत मुदित अति होई
पुनि पैतृक गृह आयउ जवहीँ पुनि पुनि पय माँगत भउ तवहीँ
पिष्ट घोलि धवलीकृत पानी दियउ सुतहिँ सो लब्ध गलानी
पय माधुर्य न जलमहँ पायउ वालबोध सो धूम मचायउ
रोदन करत कही तव माता हे सुत हम कहँ वाम विधाता
निजकृत कर्मभोग सव लहई मोह विमोहित परकृत कहई
हम दारिद्र्य हुताशन दग्धा कियउँ न शिवसेवन करि श्रद्धा
ताते हम सम्पत्ति विहीना गोपय लाउँ कहाँते दीना
पिष्ट घोलि जल तोहि पिलाऊँ कथमपि पुत्र तोहि वहलाऊँ
दुग्ध पिपासा सुत यदि तोही भजहु सकल तजि वृषभारोही
भक्तवछल प्रभु दीनदयालू शंकर चौदह भुवन भुआलू
सकल मनोरथ दाता सोई भजिय ताहि शरणागत होई
सेवा फल इच्छा अनुरूपा देहिँ महाप्रभु विविध सरूपा
धन आदिक कामुक करि सेवा पावत अभिमत तादृश मेवा
जो निष्काम भजन कर तासू भवबन्धन काटत तसु आसू
हम सव करि तसु निस्पृह भजना भये लोकसुख विरहित अधना
लौकिक सुख भंगुर तुम जानहु स्वप्न सरिस मिथ्या अनुमानहु
यदि तुम गोपय इच्छुक ताता भजहु साम्ब शिव त्रिभुवनदाता
भई अश्रु परिपूरित नैना भजु सव तजि प्रभु कहि अस वैना
सुनि उपमन्यु कहा सुनु मैया अहै शंभु यदि त्रिभुवनरैया
अप्रतिहत तप करि पय सागर करिहौँ प्राप्त सेवि गिरिजावर

सुनि उपमन्यु वचन तसु माता भाखत भई सुनहु प्रिय ताता
'यदि अहई' यह संशय वचना त्यागहु पुत्रक लखि भव रचना
बिनु कारण कारज नहि होई असन्दिग्ध मानत सब कोई
जगत् कार्य कारण जगदीशा अस उद्घोष करत श्रुतिशीशा
जगदीश्वर पद वाच्य महेशू पुरुष विशेष विदित अक्लेशू
विधि हरि हर यह त्रिविधाकारा एक मूर्ति कहि वेद पुकारा
भेदबुद्धि इहमाँ जो करई नहि कथमपि भवसागर तरई
सर्वरूप सर्वेश्वर शंकर सच्चित्सुख तनु संशय परिहर
नमः शिवाय मन्त्र पञ्चाक्षर महादेवकर सकल शुभंकर
सप्त कोटि मनु प्रणव समेता कृत सम्यक् जप सिद्धि निकेता
सबकर उद्गम लय आधारा यह पञ्चाक्षर शिव आकारा
निज निज फलदायक सब मन्त्रा सब फलदायक यह कह तन्त्रा
उत्तम अधम सकल जनरक्षक समदर्शी शिव जिमि विषभक्षक
तथा सर्वरक्षक पञ्चाक्षर मन्त्रराज यह सर्व सिद्धिकर
सकल मन्त्र तजि जपु यह मन्त्रा जासु जाप बल प्रमथ स्वतन्त्रा
रसना जसु पञ्चाक्षर लग्ना सो न कबहुँ भवसागर मग्ना
नहि अप्राप्य वस्तु कछु ताको पंचाक्षर तत्परता जाको
शिव जनरक्षक मन्त्र अघोरा तद्रक्षक यह कर श्रुति सोरा
पंचाक्षर उद्भूत अघोरा मानहु सत्य वचन सुत मोरा
तजि अघोर पञ्चाक्षर जापी होत न भव विभ्रम संतापी
दियउ भस्म यह तुअ पितु मोही देउँ आजु पुत्रक सो तोही

विरजानल संभव यह रक्षा सदा करत दुखदारण दक्षा
भस्म सहित यह मन्त्र प्रदाना लहि तव पुत्रक सब कल्याना
श्रद्धान मति करि प्रभु सेवा करतल चारि पदारथ मेवा

दोहा

लहि जननी उपदेश शिशु, लहि बहुविध आशीस ।
सकल वचन शिर धारि तसु, चला प्रणमि जगदीस ॥१३१॥

सोरठा

प्रणमि मातु पद पद्म, अति उत्सुक उत्साह युत ।
शंकर करुणा सद्म, सुमिरि चला तप करनको ॥२१३॥
कहत भई पुनि मातु, सुरगण रक्षक होहिँ तुअ ।
होइ विघ्न नहि जातु, तप साधन महँ भजन महँ ॥२१४॥

चौपाई

लहि जननी आयसु मुनि बालक करत भयउ तप निज कुल पालक
जाय हिमालय पवन अहारा तप तत्पर भउ विप्र कुमारा
कथमपि अष्ट इष्टका लायउ ताते शिव मन्दिर निरमायउ
मृण्मय लिंग बनाय तहाँपर करि आवाहन पूजन शंकर
गौरी-गुह-गणपति-गण पूजा करत भयउ परिहरि सुर दूजा
वन्य पुष्प फल पत्र समर्पन करि करि करत भयउ शिव अर्चन
पावन जल अर्घादिक दाना कियउ विप्र सुत पुनि गुणगाना
करत कबहुँ जप कबहूँ ध्याना अरु स्वाध्याय कबहुँ श्रुति नाना
सुचिर काल लखि तसु तप भारी भउ विस्मयाविष्ट नर नारी

एक वृद्ध मुनि करि तव ध्याना लब्ध यथार्थ पुरातन ज्ञाना
पूर्व जन्म महँ बालक एहू परम सिद्ध करि हर पद नेहू
पुनर्जन्म पायउ शिशु एहू कछुक विघ्नवश नहि सन्देहू
दुग्धाभाव भयउ तप हेतू अपनायउ पुनरपि वृषकेतू
महा सिद्ध निगमागम वक्ता भविता यह शिशु अनुपम भक्ता
सुनि अस गत विस्मय सब भयऊ प्रभु पद प्रेम मग्न ह्वै गयऊ
करत तपस्या गउ बहु वत्सर विघ्न एक आयउ तसु शिरपर
ब्रह्म पिशाच करत अति सोरा मुनि मरीचि शापित अति घोरा
विघ्न करत भउ नाना भाँती पाहन ईंट फेंकि दिन राती
अट्टहास रोदन हू हू धुनि करत भयउ भयदायक पुनि पुनि
नमः शिवाय मन्त्र पञ्चाक्षर जपत न विचलित भउ तापसवर
अशन विहीन परम कृश गाता एकाकी शिशु मृदु मुसकाता
ब्रह्म पिशाच लब्ध सद्भावा पञ्चाक्षर धुनि श्रवण प्रभावा
करि बालक आदर सद्भावा गउ निज धाम लब्ध मुनि भावा
तपस्तेज दीपित भउ गिरि वन आश्चर्यित भउ निरखि विप्रगन
निरखि तेज सब सुरगण धाये समाचार सब हरिहिं सुनाये
प्रणमि प्रणमि सब भउ आसीना बोले श्रीपति भक्त अधीना
जाहु सकल सुर निजनिज धामा परिपूरित करिहौं मनकामा
सुनत प्रणमि सुर प्रस्थित भयऊ गरुड़ारूढ़ विष्णु ह्वै गयऊ
मन्दर गिरि पहुँचे सो जाई कहे शिवहिं सब कथा बुझाई
प्रभु उपमन्यु नाम शिशु एका करत घोर तप संहित विवेका

तसु तनु निर्गत तैजस दाहा करन क्षार गिरि वनकर चाहा
भस्म होन चह प्रभु भूमण्डल अहै त्रस्त मति अपि आखण्डल
जाइ नाथ ताको वर दीजै रक्षित तापतप्त जग कीजै
क्षीर समुद्र काम मुनि बालक भउ त्रिभुवन महँ भय सञ्चालक
विष्णु विसर्जन करि गिरिजापति प्रस्थित भउ तसुवर प्रदान मति

छन्द

धरि सुरेश्वर रूप वृषाकपी
गयउ बालक यत्र महातपी ।
धवल हस्ति वरोपरि हर्षते
सुमन सुन्दर थे सुर वर्षते ॥

दोहा

शक्ररूपधारी मुदित, गउ हर हिमगिरि धाम ।
आतपत्र सित लसित शिर, चन्द्र बिम्ब अभिराम ॥१३२॥

सोरठा

करुणा सागर देव, करुणाकर करुणायतन ।
करुणालय स्वयमेव, तदुपरि कृपा करिष्णु भउ ॥२१५॥

चौपाई

लखि उपमन्यु भयउ तव उत्थित जोरि पाणि युग अग्र उपस्थित
करि प्रणाम भाखत पुनि भयऊ आश्रम मम पावित ह्वै गयऊ
आयउ आपु अमरपुर नाथा सुर गन्धर्व आदि करि साथा
कहि अस सो मौनी ह्वै गयऊ शक्ररूप हर भाखत भयऊ

हे शिशु करि तुम घोर तपस्या जानहु अणिमादिक निज वस्या
अति सन्तुष्ट भये हम ताता लखि तुअ तपकृत अतिकृश गाता
मन इच्छित तुअ यत वरदाना याचहु तजहु घोर व्रत नाना
सुनि अस वचन कहत भउ सोऊ प्रभु पद पंकज मधुकर जोऊ
शंभु भक्ति दीजै सुरराजू मोहि न अपर वस्तुकर काजू
श्रीशंकर पद पद्म परागा मन मधुकर मम कर अनुरागा
इन्द्ररूप हर तव निज गर्हा करत भयउ बहु विध तदनर्हा
वसत मसान पिशाच समेता अस्थि माल कापालिक नेता
विषधर भूषित गरल विदूषित चिता भस्म उद्धूलित रूषित
प्रभु निन्दा सुनि भउ सो रुष्टा भाखत भयउ सुनहु रे दुष्टा
तुमहिं मारि मैं हूँ तब मरिहौं तुअ विक्रम डर तनिक न डरिहौं
शिव निन्दा फल तोहि चखाऊँ तव मैं शंकर दास कहाऊँ.
परम अस्त्र तव भस्माकारा करमहँ लियउ मुनीश कुमारा
क्रोध अन्ध ह्वै कियउ प्रयोगा हाहाकार करत भउ लोगा
क्षीर समुद्र लालसा त्यागी धर्मवीर भउ स्वतनु विरागी
भस्म अस्त्र ज्वाला महँ सोऊ दग्ध करन चह निज तनु जोऊ
तावत् श्रीशंकर आदेशा ज्वाला रुकि गइ मध्य प्रदेशा
भउ नन्दी तसु रोधनकर्ता यथा निदेश विश्वसंहर्ता
अघटित घटना सुघटित होई प्रभु महिमा जानत जन कोई
तावत् निज दर्शन प्रभु दियऊ स्वतनु दीप्ति दीपित दिश कियऊ
श्रीगिरिजायुत गणपति-गण-युत प्रमथवृन्द युत सुरमुनि संयुत

बाजत देव दुन्दुभी नाना गन्धर्वादि करत कल गाना
अमरी सुमन राशि बरसावत तिलोत्तमादि नृत्य दरसावत
जय जय करत विप्रगण आवत नन्दी डिम डिम डमरु बजावत
ब्रह्मा विष्णु आदि नुति करहीँ सुरसरि धुनि सुनि मुद मन भरहीँ
भउ जनु परमानन्द प्रवाहा तहँ उपमन्यु कियउ अवगाहा
कियउ दण्डवत् प्रणति विप्रसुत विस्मृत सुधि बुधि भयउ प्रेम युत
एहि एहि कहि नाथ बुलाये सो द्रुत धाय शंभु ढिग आये
ताहि उठाय अंक महँ लीन्हा आशीर्वाद विविध विध दीन्हा
कियउ मस्तकाघ्राण महेशू जासु कृपालव कटत कलेशू
गौरी कर तसु कियउ समर्पण यह तुअ सुत कहिकहि श्रुतितर्पण
मस्तक परस तासु करि अम्बा लियउ अंकमहँ जगदवलम्बा
पुत्र पुत्र कहि चुम्बन कियऊ निज कुमार पदवी दै दियऊ
क्षीर समुद्र रूप धरि आयउ दुग्ध निवेदन करि शिर नायउ
तुअ आज्ञावर्ती मैँ भयऊँ पुत्र आजुते अस कहि दियऊँ
प्रलयावधि समृद्धि दै दियऊ धनद यथोचित आदर कियऊ
भउ धन धान्य समृद्ध तपोवन जहँ तसु वासस्थान पुरातन
जननी तासु परम गति पाई आजीवन सम्पति अधिकाई
कियउ पाशुपत व्रत उपदेशू करुणासागर देव महेशू
दियउ ज्ञान विज्ञान समेता सेवक हृदय सरोज निकेता
प्रवचन शक्ति दियउ प्रभु ताको अति प्रिय पुत्र भयउ गिरिजाको
करि सर्वज्ञ ताहि भगवाना दियउ स्वकीय पादुका दाना

दोहा

कहत सुनत यह चरित जो, जेहि महँ शिव गुणगान ।
करुणाभाजन शंभुकर, लह इत उत कल्यान ॥१३३॥

सोरठा

शंकर लीला गान, कियउँ यथामति रुचिरतर ।
को लहि सक अवसान, शंकर अमित चरित्रकर ॥२१६॥
शेषनाग भगवान, गावहिँ यदि शत जन्म भरि ।
तदपि समुद्र समान, लीला पार न लहि सकहिँ ॥२१७॥

छन्द

प्रभु गुण नाना अमिय समाना श्रुति पुट पाना करहिँ सदा
तजि अभिमाना मन अम्लाना परम पयाना करहिँ यदा
बहुरि न आवहिँ प्रभुपद पावहिँ नितनित ध्यावहिँ शिवहिँ मुदा
परमानन्द परम पद पावहिँ प्रलयकाल अपि होय तदा

श्लोक

वृन्दारक व्रात कृताभिवन्दनं
प्रजापति व्रात कृताभिनन्दनम् ।
निरञ्जनं भक्तजनानुरञ्जनं
समाश्रये शंभु पदाम्बुजद्वयम् ॥

भजामि सीतापतिं पूज्यपादं
स्वारोपित भ्रान्ति भवापवादम् ।
शान्तं चतुर्थं शिवमद्वितीयं
स्वात्मस्वरूपं मनसा प्रपद्ये ॥

इति लीलाकाण्डं समाप्तम् । शुभमस्तु, श्रीरस्तु ।

* शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु *

अथ उपदेश काण्डम्

सोरठा

पिप्पल दल चल गात, रोमाञ्चित जनु पनस फल ।
कहत भयउ सकुचात, प्रेम पूर अवरुद्ध गल ॥ १ ॥
प्रणमि निरञ्जन पाद, शिष्य पुरञ्जन मुदित मन ।
गौरी हर संवाद, उपदेशात्मक कहिय कछु ॥ २ ॥
भाखत भउ गुरुदेव, सुनहु वत्स संवाद शुचि ।
वर्णित यत्र तदेव, जाते इत उत सुलभ सुख ॥ ३ ॥

चौपाई

वर्णाश्रम नैसर्गिक धर्मा निगमागम बोधित सत्कर्मा
प्रणमि शंभु पद पंकज धन्या पूछत भई प्रभुहिं गिरि कन्या
वर्ण भेद अरु आश्रम भेदा कहिय नाथ जस भाखत वेदा
पृथक् पृथक् करि धर्म बखाना करिय तासु कारुण्य निधाना
करि यह सब स्वधर्म निर्वाहा लहहिं काह फल त्रिभुवन नाहा
अनापृष्ट अपि गुरुजन भाखहिं गोपनीय कछु गोपि न राखहिं
होहिं दीनवत्सल गुरुदेवा द्रवहिं दीनता लखि बिनु सेवा
यदि मैं प्रभुचरणनकर सेवा कियउँ शक्ति भरि प्रियतम देवा
चतुर्वर्ण चतुराश्रम जो जो श्रुत अविशेष धर्म कहु सो सो
पतिव्रत धर्म बखानिय स्वामी धर्म प्रवर्तक श्रुति अनुगामी
मोर मनोरथ पूरिय आजू अति उदार त्रिभुवन महराजू

मन महँ प्रश्न उपस्थित नाना समाधान बिनु हृदय मलाना
सर्वज्ञता धाम प्रभु ईशा सकल जीव अल्पज्ञ अनीशा
कठपुतली इव जीव समूहा नाथ सूत्रधर अस मुनि ऊहा
कर्ता कारयिता प्रभु आपू तहाँ अहंकृति मिथ्या दापू
गुणागार मर्यादा सागर प्रभु वशवर्ती त्रिभुवन नागर
को करि सक राउर गुणगाना धरहिं जासु ब्रह्मादिक ध्याना
वह्नि समिद्ध सरिस जगदीशा विस्फुलिंग इव जीव अनीशा
सकल शक्ति परिचालिय आपू इन्द्रिय अन्तःकरण कलापू
आपुहिं बिनु तनु मृतक कहावत प्रभु समेत सो इत उत धावत
जब प्रभु रहिय स्वरूपावस्थित सकल शक्ति कारज अनुपस्थित
सोइ समाधि दशा श्रुति सिद्धा पुनि कैवल्य विमुक्ति प्रसिद्धा
जीवनकाल समाधि कहावत पद कैवल्य अतनु मुनि गावत
मम उत्तर दाता नहि कोऊ त्रिभुवन महँ श्रुति पारग जोऊ
सुनि श्रीशंकर भाखन लागे लखि निज प्रिया समुत्सुक आगे
ज्ञान शक्ति तुम मम गिरिकन्ये निगमागम प्रतिपादित धन्ये
पर उपकार हेतु तुअ पृच्छा कहौं तथैव यथा तुअ इच्छा
प्रथम वर्ण ब्राह्मण श्रुति सिद्धा दूजो क्षत्रिय वर्ण प्रसिद्धा
तीजो वैश्य वर्ण अयि वामा एतत्त्रैवर्णिक द्विज नामा
वर्ण चतुर्थ शूद्र अभिधाना पुरुष सूक्त श्रुति अत्र प्रमाना
ब्राह्मण पुरुष विराट मुखोद्भव क्षत्रिय विदित तासु भुज संभव
वैश्य तासु उरु संभव भयऊ शूद्र पाद संभव है गयऊ

उत्तम मध्यम तादिक तहँमा क्रमकृत मुख भुज उरु पद जहँमा
पृथक् पृथक् अब तोहि सुनाऊँ तत्तद्धर्म यथोदित गाऊँ
जेहि उपनयन आदि दश भेदा संस्कार तेहि भन द्विज वेदा
परिणय मात्र विहित विधि जहँमा नारी नाम कहावत तहँमा
संस्कार जहँ विहित न होई ताहि शूद्र जानत सब कोई
याजन यजन प्रतिग्रह दाना अध्यापन अध्ययन विधाना
षड्विध धर्म करहिँ मनु गाना प्रथम वर्णकर वेद प्रमाना
प्रथम तीन तहँ याजन आदिक वृत्तिभूत भाखत मन्वादिक
प्रतिग्रहातिरिक्त अवशिष्टा क्षात्र धर्म भन जे जन शिष्टा
क्षत्रवृत्ति कर आदिक नाना बिनु ब्राह्मण मन्वादि बखाना
प्रजा अरक्षक कर आदाता सो नरपति पापी विख्याता
धर्म नियोजक नरपति जोई लहत पुण्य कर परिमित सोई
कर्षक आय होय यत्किञ्चित् षष्ठ अंश तहँ नृपकर समुचित
करत अनुग्रह निग्रह जोई धर्मनिष्ठ जानिय नृप सोई
धर्म युद्धमहँ विमुख न होई धर्मनिष्ठ जानिय नृप सोई
गो-द्विज-साधु सुरक्षक जोई धर्मनिष्ठ जानिय नृप सोई
कुलवर्धक गुरु वृद्ध उपासक नीतिनिपुण शासक अनुशासक
प्रकृति पौर नागरिक मानप्रद श्रेणी श्रेष्ठ आदि सम्मानद
गुणिमानद गुण ग्राहक जोई अति कल्याण पात्र नृप सोई
भन गोरक्षण कृषि क्रय विक्रय वैश्य वृत्ति मन्वादि महाशय
यजन दान अध्ययन विधाना वैश्य धर्म भन मनु भगवाना

त्रैवर्णिक सेवन सत्कर्मा भन मन्वादि शूद्रकर धर्मा
विहित शूद्र द्विज सेवन वृत्ती अति निषिद्ध तसु इतर प्रवृत्ती
लखि तसु यथा लाभ सन्तोषा उपजत मोहि परम परितोषा

दोहा

जीवत निज निज वृत्तिते, पार उतारौँ खेवि ।
जगदम्बुधिते ताहि मैँ, यह निर्धारित देवि ॥ १ ॥

सोरठा

पुनरपि करौँ बखान, वृत्ति चतुष्टय विप्रकर ।
जहँ मनु वचन प्रमान, वेद रूप वा वचन मम ॥ ४ ॥

चौपाई

प्रथम वृत्ति शालीन कहावै दूजो यायावर श्रुति गावै
पुनि शिल वृत्ति तृतीय कहावै उञ्छ चतुर्थ वृत्ति मन भावै
बिनु याचना वृत्ति जो वामा भन शालीन ताहि श्रुति ग्रामा
यायावर इति तसु अभिधाना दैनन्दिन सञ्चय परिमाना
कर्षक व्रीहि काटि लै आवै पतित अन्न कण शिल मनु गावै
केवल शिल भक्षी जग जोई शास्त्र सिद्ध शिल वृत्तिक सोई
आपण पतित अन्न जो रहई उञ्छ नाम ताको श्रुति कहई
उञ्छवृत्ति तद्भक्षक विप्रा पावन पद पावत अति क्षिप्रा
उत्तर क्रम उत्तमता जानहु उञ्छवृत्ति सर्वोत्तम मानहु
तजि स्वधर्म परधर्माचारा भयदायक अस वेद पुकारा
यदि स्वधर्म महँ निधन समागम सेविय ताहि तदपि भन आगम
क्षत्रिय लड़त करत तप विप्रा होत उदर्क सुखावह क्षिप्रा

अवभासत परधर्म सुखावह होत तासु परिणाम भयावह
बिनु विराग गृह तजि संन्यासी अवँशि होत सो रौरववासी
नहि जघन्य जन उत्तमवृत्ती सेवै अस श्रुतिशास्त्र प्रवृत्ती
यदि आपत्ति परै सिर आई अन्य धर्म सेवा श्रुति गाई
क्षत्रिय होय न याचै कबहूँ महा विपत्ति परै सिर तबहूँ
पुनि सांकेतिक वृत्ति अनेका कहौं प्रिये करि शब्द विवेका
ऋत अरु अमृत वृत्ति श्रुतिसिद्धा पुनरपि मृत अरु प्रमृत प्रसिद्धा
सत्यानृत पुनि वृत्ति प्रसिद्धा वृत्ति श्ववृत्ति सदैव निषिद्धा
भाखत उञ्छ शिलहिं ऋत वेदा वृत्ति युगल अविवक्षित भेदा
अमृत अयाचित वृत्ति कहावै निगमागम मन्वादिक गावै
नित्य याचना मृत पर्याया प्रमृतहिं कर्षण श्रुतिगण गाया
सत्यानृत वाणिज्य कहावै झूठ-साँच व्यवहार चलावै
अधम वृत्ति नीचनकर सेवा ताहि श्ववृत्ति कहत भूदेवा
नहि ब्राह्मण क्षत्रिय अधिकारी श्रुति सिद्धान्त श्ववृत्ति मझारी
श्वान वृत्तिजन निन्दित जानिय श्वान सरिस अपमानित मानिय
सर्व वेदमय श्रीभूदेवा सर्व देवमय श्रीनरदेवा
ये दोऊ अपमान अनर्हा करैँ न सेवन लखि तहँ गर्हा
ब्रह्म वर्ण लक्षण स्वाभाविक कहौँ यथा भाखत मन्वादिक
शम दम अरु संतोष तपस्या आर्जव क्षमा शुचित्व प्रशस्या
ज्ञान दया मम भक्ति पदारथ सत्य वचन ब्रह्मत्व यथारथ
शौर्य वीर्य धृति तेज प्रसादा ब्रह्मण्यता दान मर्यादा

क्षमा मनोजय दुर्दश रक्षा क्षत्रियता भन धी धन दक्षा
दश दश प्रिये उभयकर लक्षण अस भाखत भउ प्रभु विषभक्षण
इष्टदेव गुरुदेव समादर अरु मम पदपंकज परमादर
धर्मादिक त्रिवर्ग सम्पादन उद्यम तत्परता आस्तिक-पन
अरु पटुता लक्षण शास्त्रोदित वैश्य वर्णकर लक्षण समुदित
नम्रभाव त्रैवर्णिक सेवा वेदमन्त्र विरहित कृति जेवा
सत्य शुचित्व धेनु-द्विज-रक्षण भन मन्वादि शूद्रकर लक्षण

दोहा

करत भयउ शंकर बहुरि, नारी धर्म बखान ।
सेवि जाहि इत उत लहत, महिलागण कल्यान ॥ २ ॥

सोरठा

सुनि प्रसंग यह नारि, श्रद्धा अरु विश्वास करि ।
लहत पदारथ चारि, योग सिद्धि तसु अनुचरी ॥ ५ ॥

चौपाई

नारिनकर पतिसेवन धर्मा पति आयसु अनुसरि शुभकर्मा
सविनय सासु ससुरकर सेवा सम्मानय पति परिजन जेवा
सासु ससुर परिचर्या करई लहि असीस तसु मुद मन भरई
जस जस तसु प्रसाद उपजावै तस तस सन्तति सम्पति पावै
पतिव्रत धरै सदा मनलाई कर गृह कारज तजि कदराई
गृह मार्जन आदिक कृति जेते आपुहिं करै मुदित मन तेते
यदि इन्दिरा दृष्टि अधिकाई कार्य करावै हाथ पराई

वस्त्राभरण साजि शृंगारा पति हिय हर्षक विविध प्रकारा
पति आयसु बिनु कहूँ न जावै कबहुँ दुराग्रह नहि मन लावै
यदि कारजवश परगृह जावै त्वरित बहुरि पुनि पति गृह आवै
प्रियंवदा अरु लज्जाशीला पति अनुमति बिनु बिसरै लीला
पति रुख राखि करै सब कारज रोष न कबहूँ करै अकारज
प्रणयकोप यदि उपजय कबहूँ पति अपमान करै नहि तबहूँ
सावधान मति शुचि अति रहई श्वेत वसन धारण नहि करई
बालवृद्धकर पोषण तत्पर जहँ तहँ यशोगान तसु घर घर
कुल मर्यादा कबहूँ न तोड़ै कबहुँ न अतिथिधर्म सुख मोड़ै
हितू नियोजन पितू समाना मातु सरिस पोषणविधि नाना
मन्त्री सरिस मन्त्र कह काना पत्नी रीति प्रीति रस दाना
बान्धव वर्ग विहित व्यवहारा बूझै कुशल उपायन द्वारा
पालय शिशुगण परिहरि आलस संकट निरखि तजै नहि ढाढ़स
बहु विध पाक कर्म निपुनाई शिशु औषध अवगति अधिकाई
गावै मांगलीक कलगाना परिणय आदि सुअवसर नाना
कार्य भार लेवै निज ऊपर राखै दृष्टि यथोचित व्ययपर
करै अपरिमित व्यय नहि कबहूँ अपरिमेय धन पावै तबहूँ
करै पवित्र पर्व जिज्ञासा देव पितर नहि करै निरासा
सकल तीज महँ अलवण भक्षण कुल वधुअनकर जानहु लक्षण
वट सावित्री व्रत मनलावै सो सुखमय सौभाग्य बढ़ावै
पति पद पूजन पति पद ध्याना पति पद प्रेम सुधा रस पाना

प्रोषितपतिका तजि श्रृंगारा करै व्रती इव बहु व्यवहारा
सिन्दुर अरु लाक्षालंकारा केवल तत्कालिक श्रृंगारा
इष्ट षष्ठिका गिरिजा पूजा करै नित्य तजि पूजन दूजा
परिहरि लालच स्वारथ केरा प्रणमै गुरुपद साँझ सवेरा
नाभिगृहादि अपेक्षा राखै लहि संयोग कबहुँ नहि भाखै
अंगहीन निर्धन कुलहीना रोगी निर्बल रूप विहीना
कपटी क्रोधी क्रूर स्वभावा पर तिय गामी कलुषित भावा
ऐसहु पतिहिँ भजै कुलनारी जौँलगि वर्ण धर्म अधिकारी
हतभागिनि विधवा यदि होई मृतपति भक्ति धरै हिय गोई
ब्रह्मचर्य व्रत सदा निबाहै चलै न कबहुँ विनिन्दित राहै
संयम नियम करै भरि शक्ती राखै देव पितर प्रति भक्ती
तीरथ दान मान गुरुजनकर रक्षण रक्षणीय परिजनकर
अनशनादि करि इन्द्रिय जयिनी यथाशक्ति दुर्दशजन दयिनी
विषय भोग विरहित कृश देहा कबहुँन करै विषय विष नेहा
श्रृंगारादि सदा परिहरई नहि रञ्जित पट धारण करई
वेद विहित करि विधि निर्वाहा तनु परिहरि पावत निज नाहा
नहि पर पुरुष पाप दृग देखै पिता पुत्र भ्राता सम लेखै
निजपति त्रिभुवनपति हम दोऊ एक रूप करि मानै सोऊ
पति धर्मिणी जाय परलोका पति संगिनी होय गतशोका
दिव्य भोग करि लहै विमुक्ती पति समेत अस वैदिक उक्ती
सती वधू गुणगान अनन्ता यथाशक्ति गावै श्रुति सन्ता

प्रस्तुत कथा सुनहु गिरिकन्ये सती शिरोमणि त्रिभुवन धन्ये
निज निज कुलाचार अधिकारी अन्त्यजादि अधमाधम भारी
दस्युवृत्ति अरु तस्करवृत्ती तजै सर्वदा पाप प्रवृत्ती
निज निज धर्म कर्म अनुरागी इत उत सदा विविध सुखभागी
करत करत स्वाभाविक कारज यावत् निर्गुण उपशम आरज
दग्धबीज स्वाभाविक कर्मा उपजावत सुखमय निष्कर्मा
पुनि पुनि बीज वपन जहँ होई होय वीर्य विरहित क्षिति सोई
उप्त बीज़ तहँ उपजत नाहीँ सोइ निदर्शन लखु मन माहीँ
कामाशय मनकृत अति भोगा उपजावत न वासना रोगा
शान्तिमूल शंकरपद भक्ती उपजावत भव मोचन शक्ती

दोहा

कहत भयउ पुनि प्रेमवश, शंकर करुणागार ।
दयासिन्धु जनबन्धु प्रभु, पुरहर परम उदार ॥ ३ ॥

सोरठा

दीनोद्धार धुरीण, धर्मप्रवर्तक ज्ञानघन ।
आगम ग्रथन प्रवीण, श्वासभूत जसु निगमगण ॥ ६ ॥

चौपाई

चातुर्वर्ण्य धर्म साधारण सुनहु प्रिये अब करि अवधारण
सत्य दया तप शौच तितिक्षा शम दम ब्रह्मचर्य अरु इक्षा
त्याग अहिंसा अरु ऋतु भावा यथालाभ सन्तोष स्वभावा
समदृक् सेवन अरु स्वाध्याया ग्राम्येहोपरमण कसि काया

भन क्रमकृत उपरम अभ्यासा शेष शारदा नारद व्यासा
नर व्यापार विपर्यय दर्शन जहँ पण्डित दारिद्र्य निदर्शन
मौन भाव अरु आतम ज्ञाना यथायोग्य अन्नादिक दाना
सकल भूतमहँ आतम बुद्धी यत्कृत होत अहंकृति शुद्धी
जानि ब्रह्ममय सकल चराचर तहँ कर्त्तव्य यथोचित आदर
सकल भूत महँ नर तनुधारी श्रुति भन उमे मोक्ष अधिकारी
तातें तहँ आदर अधिकाई समुचित जब लगि द्वैत दुराई
जब अद्वैत भान मन आवै उत्कर्षापकर्ष कस भावै
श्रवण और कीर्तन अरु सुमिरन पद सेवन अरु अर्चन वन्दन
दास्य सख्य अरु आत्म निवेदन नवधा भक्ति महाभय भेदन
सकल धर्म यह तीस प्रकारा करि उतरैं भवसागर पारा
शंकर वृषभ धर्म अवतारा तदुपरि रहत शंभु असवारा
धर्मारूढ़ सदा शिव शंकर करहिं अनुग्रह धर्मनिष्ठपर
अस कहि गौरी हर संवादा कहत भयउ गुरु विगत विषादा
पूछत भई बहुरि गिरि कन्या चतुराश्रमकर धर्म सुधन्या
सुनि शंकर पुनि भाखन लागे गिरिजा प्रेम सुधा परिपागे
गुरुकुल बसै ब्रह्म व्रतधारी जित इन्द्रिय मन गुरु हितकारी
नीच दास इव गुरु गृह रहई सौहृद सुदृढ़ हृदयमहँ गहई
गुरु पावक रवि अमर उपासन साँझ सवेरे बद्ध सुखासन
मौन त्रिसन्ध्या सन्ध्योपासन जप गायत्री मन्त्र सनातन
जब गुरु निज ढिग लेइ बुलाई पढ़ै वेद मन दै तब जाई

श्रुति अध्ययन आदि अवसाना प्रणति विधान करै श्रुति गाना
मुञ्ज मेखला कटि महँ धारै हरिण चर्म अरु वसन सम्हारै
धरै दण्ड अरु जटा कमण्डल कुशधारी विचरै महिमण्डल

दोहा

भिक्षाटन प्रतिदिन करै, साँझ सवेरे जाय।
गुरु समीप धरि देय सब, पाय अनुज्ञा खाय ॥ ४ ॥

सोरठा

गुरु आयसु अनुकूल, तत्परिमित भक्षण करै।
गुरु आयसु प्रतिकूल, होय न परै उपास वरु ॥ ७ ॥

चौपाई

परिमित भोजी होय सुशीला श्रद्धधान जित इन्द्रियलीला
नारी निकट न पुनि पुनि जावै विना प्रयोजन दूर दुरावै
आवश्यक तत परिमित व्यवहृति करै न कबहूँ परधन अपहृति
करै न बृहद्व्रती आलापा प्रमदा संग जानि तहँ पापा
इन्द्रियवश प्रमदा सहवासी होत कुकर्मा नरक निवासी
जे प्रमदावश तजि निज धर्मा त्यागैं तिनहिं बृहद्व्रत कर्मा
नारि संग तत्संगी संगा तजै बृहद्व्रत होइ असंगा
कच साधन उन्मर्दन आदी अस्नानादि न करै प्रमादी
गुरुतिय युवतीते व्रतचारी युवा वयस्क गिरीश कुमारी
घृत घट सम प्रमदहिं अनुमानिय अग्निसरिस पुरुषहिं पुनि जानिय

घृत पिघलै जिमि पावक योगा तिमि नारी मन नर संयोगा
बोध विवेक भागि द्रुत जाई मन्मथ भट जब करत चढ़ाई
आमिष भोजन मधुरस पाना व्रत निषिद्ध मन्वादि बखाना
अंगराग अरु भूषण आदिक व्रतनिषिद्ध भाखत मन्वादिक
अभ्यञ्जन उद्वर्तन आदी व्रतिहिं निषिद्ध कहत श्रुतिवादी
नहि ताम्बूल विहित प्रथमाश्रम अरु प्रसंगवश परहिं न विभ्रम
त्यागै नियत कर्म नहि तब लगि छूटै अहंकार नहि जब लगि
द्वैत भान जब रहै न किञ्चित् कृत्याकृत्य तदैव अकिञ्चित्
लहि विराग भिक्षुक संन्यासी होय अहिंसक विषय उदासी
यदि विराग उपजै हिय नाहीँ करै विंवाह बसै गृह माहीँ
रति अनुरति कर मध्य अवस्था भाखत श्रुति नैष्ठिक व्रत संस्था
गुरु अभाव गुरु पुत्रहिं गुरुवत् मानै तत्पत्नी वा तद्वत्
होय गृही अपि करि व्रतचर्या करै देव अरु पितर सपर्या
ऋतुगामी अरु परउपकारी सोइ गृहस्थ ब्रह्म व्रतचारी
गुरु दक्षिणा देइ व्रतचारी होत इतर आश्रम अधिकारी
सांग वेद पढ़ि गुरु आयसु लहि चलै व्रती गुरुपदरज शिर गहि
प्रणमि प्रणमि श्रीगुरुपद पद्मा बृहद्व्रती गमनै निज सद्मा

दोहा

गुरुमैँ निज़मैँ अनलमैँ, अरु सब भूतन माहिँ ।
आत्मरूप देखै सदा, पातक पुञ्ज नसाहिँ ॥ ५ ॥

सोरठा

आश्रम वानप्रस्थ, कहौं तासु अब धर्म हम।
ब्रह्मव्रती गृहस्थ, बसै जहाँ अधिकार लहि ॥८॥

चौपाई

अस कहि भाखत भयउ उमावर करुणाकर करुणारस सागर
करि तृतीय आश्रम निर्वाहा परै न पुनि भवसिन्धु प्रवाहा
जाय बसैं ऋषिलोक मझारी जे तृतीय आश्रम व्रतचारी
कर्षण ते अनाज जत जावैं तिनको वनवासी नहि खावैं
बिनु कर्षण अनाज जे जावैं तिनको वनवासी नित खावैं
अग्निपक्क कच्चा नहि खावैं रविकर पक्क सुफल नित पावैं
बन वस्तुनन्हि होम नित करहीं नूतन पाइ पुराणहिं तजहीं
पावकहित विरचै तृणशाला अथवा गिरि कन्दरा विशाला
वर्षा पवन घाम हिम सहई ग्रीषम पञ्च हुताशन तपई
केश रोम नख मूँछ विधारण करैं करैं नहि तासु प्रसाधन
जटिली दण्ड कमण्डलु धारी धरै मृगाजिन शैलकुमारी
अग्नि परिच्छद धारण करहीं ग्रामवृत्ति दूरहिं परिहरहीं
भन वनवास माहँ मुनि ज्ञानी तथा निगम आगम शुचिवानी
द्वादश वत्सर उत्तम कल्पा आठ चार दुइ इक अनुकल्पा
यथायोग्यता करि निर्वाहा पार होत भव जलधि अगाहा
यदि वार्धक्य करत तप आवै अथवा दोषज व्याधि सतावै
यदि विचार करि सकत न बुद्धी अनशन साधि करै अघशुद्धी
करै न लखि अशक्ति निर्वेदा लक्ष्य विषय महँ परिहरि खेदा

तीनिहुँ अग्नि आत्म महँ लाई अहंकार ममकार बिहाई
कारण महँ कारजहिं मिलावै यथायोग्य करि अति सुख पावै
तनकर छिद्र मिलाइ अकासा मारुत महँ पुनि मेलै श्वासा
तपसी ऊष्म तेज महँ मेलै शोणित कफ रेतहिं जल झेलै
अस्थि मांस पुहुमी महँ मेलै वाग् वक्तव्य वह्नि महँ झेलै
हस्त हस्तकृति धरै इन्द्र महँ पाद पादगति धरै विष्णु पहँ
ब्रह्मा महँ रति सहित उपस्था मन्वादिक अस कियउ व्यवस्था
धरै मृत्यु महँ सगुद विसर्गा भन श्रुति धुनि दिश महँ बुधवर्गा
परस सहित त्वच मारुत ओरा मेलै तपी करत श्रुति सोरा
रूप सहित दृग रवि महँ मेलै रस युत. रसना जल महँ झेलै
मेलै गन्ध सहित महि घ्राणहिं मनहिं मनोरथ युत सित भानहिं
बुद्धि बोध्य युत पर कवि माहीं अहंकार ततकृति हर पाहीं
चित्त सत्त्व युत जीवहिं माहीं अरु जीवहिं परमातम पाहीं
क्षिति जलमहँ जल कहँ पावकमहँ पावक मारुत मारुत नभ पहँ
अहंकार महँ नभहिं मिलावै महातत्त्व महँ ताहि लगावै

दोहा

महा तत्त्व कहँ पुनि तहाँ, प्रकृतिहि माँहिं मिलाय ।
प्रकृतिहिं पुनि परमातमहिं, योगी देहिं विलाय ।।६।।

सोरठा

परमातमकर रूप, इहि विधि आपुहिं जानि सो ।
पावत रूप अनूप, ब्रह्म सच्चिदानन्द निज ।।९।।

ब्रह्म रूप अवशिष्ट, दग्ध योनि . पावक सरिस ।
भाखहिं जे जनशिष्ट, मुक्ति दशा अस तात्त्विकी ॥१०॥

चौपाई

भाखत भउ पुनि धर्म पुरारी निगम गदित संन्यास मझारी
वन आश्रमी होइ यदि समरथ जानि त्रिवर्ग पदार्थ अकारथ
विषय विरक्त ज्ञान अधिकारी अत्रामुत्र विलास बिसारी
प्राण मध्य करि हुतभुक् न्यासा विदित वेद बोधित संन्यासा
देह मात्र अवशिष्ट महीतल इत उत विचरै दैव मात्र बल
निःस्पृह विषय मात्र समुपेक्षक समदरसी सम भाव अपेक्षक
एक रात्रि केवल कृत वासा ग्रामादिक बिच परम उदासा
कौपीनाम्बर दण्ड कमण्डल धृत तुच्छीकृत अपि आखण्डल
सर्वभूत हिंसा परिहर्ता नहि निन्दा नहि नतिनुति कर्ता
नहि उद्वेज्य और उद्वेजक शरणागत मानस निर्णेजक
उपरत सर्वारम्भ विवर्जित भर्जित कर्मबीज भय वर्जित
हिंसा वैधी अपि न विधेया दयावृत्ति क्वचिदपि नहि हेया
उपादेय अरु हेय न किञ्चन मंगल मूरति सदा अकिञ्चन
एकाकी अरु तत्त्व विवेकी जाकी मति माया नहि छेकी
प्रतिदिन यथालाभ सन्तोषा पूर्ण अपूर्ण होय वा कोषा
उदर मात्र भिक्षाते भरई सञ्चय चर्चा कबहुँ न करई
वरु उपवास होय निशिवासर विहित न भिक्षा सप्ताधिक घर
सप्तागार भैक्षुकी भिक्षा एवं विधा वैदिकी शिक्षा

वाद विवाद न समुचित कबहूँ करै उपद्रव दुर्जन जबहूँ
सहि अपमान करिय सम्माना भन संन्यास धर्म श्रुति नाना
देह लक्ष्य करि नहि रिपुभावा समुचित वेद पुराणन गावा
जीवन मात्र निमित्त अहारा सरिस कुलाल चक्र व्यवहारा
विस्मृत भूत भविष्य विचारा वर्तमान कालिक सञ्चारा
प्रिय अप्रिय पदार्थ नहि कोई उदासीनता मन महँ होई
अप्रिय वचन कबहुँ नहि भाखै नहि अनिष्ट चिन्तन हिय राखै
त्रिगुण रहित निर्गुण विश्रामा संन्यासाश्रम विरहित कामा
चरणारोपण दृष्टिपूत थल पान भिक्षुकहिँ वस्त्रपूत जल
भाषण सत्यपूत श्रुति सम्मत मनःपूत आचरण सुसंयत
विगत संग एकान्त निवासी व्यथाहीन अन्त्याश्रम वासी
चतुर्वर्ण महँ भिक्षा तासू शिखासूत्र विरहित थिति जासू
करै न भिक्षा निन्दनीय गृह नहि अपमान मान चर्चा इह
त्रैवर्णिक भिक्षा भन मध्यम वानप्रस्थ भिक्षा अति उत्तम
भिक्षा अधम शूद्र गृह माहीँ तदितरगृह भिक्षा विधि नाहीँ
साँझ सवेरा भिक्षुक भिक्षा लोभाविष्ट देइ नहि दिक्षा
करै न वहुत ग्रन्थ अभ्यासा आत्माराम विगत अध्यासा
नहि पण्डितम्मन्य अभिमानी होइ कदापि काल विज्ञानी
आपुहिँ ब्रह्मरूप अनुमानै ब्रह्म जीव बिच भेद न मानै
मायामय कल्पित यह भेदा स्वप्न निदर्शन भाखत वेदा
हंसो हंसः सोहं सोहम् पुनि पुनि चिन्तन करै शिवोहम्

वचन दण्ड अरु काया दण्डा मनोदण्ड वास्तविक त्रिदण्डा
वेणु मात्र दण्डी नहि दण्डी भांखत भउ अस प्रभु शशिखण्डी

दोहा

काय वचन मानस दमन, जानहु देवि त्रिदण्ड।
त्रिविध दमन यह जाहि नहि, सो भिक्षुक उद्दण्ड ।।७।।

सोरठा

बन्ध मोक्ष विज्ञान, करै यती संयत मना।
बन्ध देह अभिमान, निरभिमान थिति मोक्षपद ।।११।।
बन्ध विषय आसक्ति, जानहु गिरिवर कन्यके।
जानहु तदनासक्ति, मोक्ष कहत भउ शंभु अस ।।१२।।
इन्द्रिय गण विक्षेप, विषयवर्ग बिच बन्ध पद।
तसु तहँ निर्विक्षेप, भाखत श्रुतिगण मोक्ष पद ।।१३।।
मनः प्रवृत्ति निवृत्ति, बन्ध मोक्ष पद क्रम कथित।
मन वच काय प्रवृत्ति, बन्ध तदुपरति मोक्ष पद ।।१४।।

चौपाई

अन्तक आक्रम सुमिरन पल पल बीज विरति अंकुर विमुक्ति फल
स्वप्न सरिस नश्वर संसारा संकट संकुल कारागारा
अनुरति फाटक विरति प्रहारा तोड़ि फोड़ि भिक्षुक निकसारा
बिनु विराग संन्यास विडम्बन उभय भ्रष्ट कृत धर्म विलंघन
लहत यातना नरक मझारी पावत क्षुद्र योनि संसारी
उपशम और अहिंसा धर्मा तुर्याश्रम प्रसिद्ध सत्कर्मा

तप ईक्षा वनवासी धर्मा विदित वेद बोधित सत्कर्मा
इज्या और भूतगण रक्षण गृहीधर्म भन वेद विलक्षण
बृहद्व्रती कर गुरु पद पूजा परम धर्म गिरिराज तनूजा
ब्रह्म जीव बिच माया यावत् दूर स्वरूपावस्थिति तावत्
लहि माया महँ मिथ्या ज्ञाना भासत अद्वैतात्मक भाना
जीवन्मुक्ति सहित प्रारब्धा पद कैवल्य क्षीण प्रारब्धा
जीवन्मुक्ति दशा अवसाना लह कैवल्य भिक्षु भगवाना
अति संक्षिप्त रीति मैं गाई भिक्षुक चर्या जस श्रुति गाई
अस कहि गृही धर्म उपदेशू करत भयउ सर्वज्ञ महेशू
गृही वनी अथवा संन्यासी होय बृहद्व्रत गुरुकुलवासी
गृह निवास अनुराग अवस्था शिथिल राग वनवास व्यवस्था
वीतराग संन्यास विधाना यथायोग्य विधि बोधित नाना
प्रथमाश्रम वर्णन ह्वै गयऊ कथन द्वितीयाश्रमकर भयऊ
तथा चतुर्थाश्रम विधि गाये निगमागम गण यथा सुनाये
आश्रमते आश्रम प्रति गमना भाखे समुचित गिरिजा रमना
नहि विगताश्रम संस्थिति समुचित ज्ञान भक्ति यदि हिय अनुपस्थित
अब गिरिकन्ये सुनु गृह धर्मा नाना कर्माकर्म विकर्मा
बृहद्व्रती अनुराग वशीकृत करै गृहस्थी परिजन परिवृत
रूप शील कुलवती सवर्णा मृदु भाषण आकर्षित कर्णा
सहज सलज्जा विनय विभूषित व्यङ्गत्वादिक दोष अदूषित
यवीयसी प्रेयसी विवाहै शास्त्रोदित गृह धर्म निबाहै

श्रुति भन पुत्र प्रयोजन भार्या इन्द्रियलोलुप होहिँ न आर्या
पिण्ड प्रयोजन पुत्र प्रसिद्धा नँहि अपुत्रकर गति भन वृद्धा
लखि ऋतु समय विहित संगमना पर्वादिक महँ उचित न गमना
निगम निषिद्ध दिवस संयोगा उपजावत पातक अरु रोगा
गर्भवती संयोग निषिद्धा पूर्ण गर्भ महँ परम निषिद्धा
पितृऋण ऋषिऋण और देवऋण गृहाश्रमी शिर मुख्य तीन ऋण
आप्त वर्ग ऋण भूत वर्ग ऋण गृहाश्रमी शिर उभय अपरऋण
सन्तति जनन पितृऋण मोचन श्रुति स्वाध्याय आर्षऋण मोचन
इज्याकर्म देवऋण मोचन परिजन अवन आप्त ऋणमोचन
भौतिक रक्षण तद्दण मोचन भाखत भउ अस शंभु त्रिलोचन
सूना पञ्चक गृह आश्रम महँ भाखौँ गिरिवर कन्ये जहँ जहँ
घट मार्जनी पेषणी ऊखल चुल्ली हिंसा पञ्चक गृह थल
सूना पञ्चजनित अघ जेते नाशत पञ्च यज्ञ करि तेते
ब्रह्म यज्ञ पितृ यज्ञ प्रसिद्धा देव यज्ञ निगमागम सिद्धा
भूतयज्ञ नरयज्ञ प्रसिद्धा पञ्चयज्ञ यह भन मुनि वृद्धा
ब्रह्मयज्ञ स्वाध्याय कहावै पितृयज्ञ तर्पण श्रुति गावै
देवयज्ञ भन होम विधाना भूतयज्ञ श्वादिक बलि नाना
भन नरयज्ञ अतिथि सत्कारा विदित यज्ञ यह पञ्च प्रकारा
परम धर्म अभ्यागत सेवा गृह आश्रम महँ भन मनु देवा
यथा शक्ति सेवन तसु समुचित अतिथिअनादरअतिशयअनुचित
अतिथि हताश होय यदि जावै लै गृहि धर्म पाप दै जावै

वर्णाश्रम यह कर्मप्रधाना कर्म भेद श्रुति भाखत नाना

दोहा

कर्माकर्म विकर्मकर, वर्णन कियउ महेश ।
निरवशेष तसु ज्ञानतें, मिटत अशेष कलेश ॥ ८ ॥

सोरठा

जानहु कर्म प्रधान, सकल चराचर विश्व यह ।
ताते तासु बखान, करौँ यथामति वत्स हम ॥१५॥

चौपाई

नित्य और नैमित्तिक नामा कर्म युगल भाखत श्रुति गामा
जाहि किये बिनु पातक होई नित्य कर्म विधि बोधित सोई
प्रातः संध्या सायंसंध्या अरु मध्याह्न समयगत संध्या
तद्वन्दना नित्य अभिधाना भाखत मुनि मन्वादिक नाना
सूर्य आदि सुर पञ्चक अर्चन और इष्ट देवता समर्चन
ब्रह्म हेतु पुष्पादिक दाना भन मुनि कर्म नित्य अभिधाना
अग्निहोत्र मज्जन विधि बोधित नित्य कर्म कर श्रुति उद्घोषित
भन स्वाध्याय कर्म श्रुतिवादी प्रवचन कर्म नित्य मन्वादी
अरु प्रातःस्मरणादि विधाना नित्यकर्म भन आगम नाना
लहि निमित्त कृत जासु विधाना भन श्रुति नैमित्तिक अभिधाना
तर्पण पार्वण श्राद्ध विधाना वैश्वदेव आदिक बलि नाना
मृत हेतुक कृत श्राद्ध विधाना नैमित्तिक भन वेद पुराना
सांवत्सरिकोद्दिष्ट विधाना नैमित्तिक भन वेद पुराना
तीर्थ प्राप्त हेतुक जो होई श्राद्ध विदित नैमित्तिक सोई

अपर पक्ष आदिक जत पर्वा तत्पार्वण नैमित्तिक सर्वा
अयन विषुव संक्रमण प्रसिद्धा पर्व समय भाखत मुनि सिद्धा
चन्द्र सूर्य उपराग प्रसिद्धा पर्व समय भाखत मुनि सिद्धा
अक्षय नवमी और तृतीया पावन तिथि मुनिजन कमनीया
तिथि माकरी सप्तमी नामा पावन समय कहत मुनिग्रामा
व्यतीपात क्षय दिवस मझारी पावनता भाखी त्रिपुरारी
सहित द्वादशी श्रवण नखत्रा भन पावन मुनिजन कृत सत्रा
राका सहित मघा नक्षत्रा भन पावन मुनिजन कृत सत्रा
राका अनुमति सहित समस्ता मास नखत भन वेद प्रशस्ता
अनुराधा द्वादशी समेतू भाखत भउ पावन वृषकेतू
उत्तर तीनिहुँ श्रवण समेतू सहित द्वादशी धर्म निकेतू
एकादशी सहित उत्तर त्रय भाखत पावन धर्म शास्त्र चय
जन्म नखत युत श्रवण नखत्रा भन पावन मुनिजन कृत सत्रा
संस्कार दश विध विधि बोधित जातकर्म आदिक उद्घोषित
आभ्युदयिक अरु याज्ञिकअवसर नैमित्तिक पार्वण भन मुनिवर
दान धर्म उत्सव विधि नाना उक्त समय पुरमथन बखाना
नहि विधि वाक्य विहित श्रुतिसिद्धा नहि निषेध श्रुतिवाक्य निषिद्धा
ज्योतिष्टोम आदि श्रुति सिद्धा कामित कामद काम्य प्रसिद्धा
तीरथ व्रत दानादिक धर्मा अभिहित काम्य कर्म शुभ कर्मा
काम्य कर्म निर्विघ्न समापित करत काम संकल्पित प्रापित
फल अनपेक्ष काम्य यदि सात्त्विक अचिर करत संशोधन तात्त्विक

आगम निगम निबन्ध निषिद्धा जासु नाम पातक श्रुतिसिद्धा
सोइ निषिद्ध कर्म दुखदाई विविध अधोगति कारण भाई
ब्राह्मणवध इत्यादिक नाना कर्म निषिद्ध पुरारि बखाना
पापापह कृच्छ्रादिक नाना प्रायश्चित्त कर्म अभिधाना
तारतम्य पातक महँ जैसे प्रायश्चित्त विविध विध तैसे
कर्म अकाम अकर्म प्रसिद्धा निर्बन्धकता जसु श्रुतिसिद्धा
कर्म निषिद्ध विकर्म प्रसिद्धा बन्धकता जसु भन मुनिवृद्धा
कर्माकर्म विकर्म प्रकारा भाखे प्रभु अस जगदाधारा

दोहा

वर्णाश्रमगत धर्मकर, करि उपदेश पुरारि।
करत भयउ उपदेश पुनि, जस भाखत श्रुति चारि ॥ ९ ॥
सप्त द्वीप महँ द्वीप यह, जम्बू द्वीप प्रसिद्ध।
तहँ प्रसिद्ध नवखण्ड महँ, भारत यह श्रुति सिद्ध ॥१०॥

सोरठा

भारत खण्ड पवित्र, जहाँ फलत कृत कर्म फल।
बसहिँ विशुद्ध चरित्र, साधक सिद्ध प्रसिद्ध जहँ ॥१६॥
पावहिँ स्वर्ग ललाम, जहँ तनु तजि करि कर्म शुचि।
लहहिँ मोक्ष अभिराम, ज्ञानी जन निज ज्ञान बल ॥१७॥
चाहहिँ मृति जहँ देव, कथन काह तहँ इतरकर।
जहाँ बसैँ हम एव, तुअ समेत धरि तनु विविध ॥१८॥

तहँ संक्षिप्त प्रकार, परिगणना शुचि देशकर ।
करौं शास्त्र अनुसार, उपजत सत्त्व प्रसाद जहँ ॥१९॥

चौपाई

जहँ सत्पात्र सोइ शुचि देशा भाखत भउ अस देव महेशा
ब्राह्मण विद्या-तपोनिधाना भन सत्पात्र ताहि श्रुति नाना
दयावान जो आतमज्ञानी भन सत्पात्र ताहि श्रुति बानी
सर्वोत्तम सत्पात्र तीनि हम सुरमर्दन श्रुतिवदन पूज्यतम
जो हमार प्रीत्यर्थ कर्मकृत् सो विशुद्धमति कठिन कालजित्
जो हमकहँ निजकृत फल अर्पक ताहि परम पद हमहुँ समर्पक
दुर्दश दीन दरिद्र भिखारी दयापात्र भाखत श्रुतिचारी
मम अरु हरिकर सेवक जोई गिरिजे दयापात्र मम सोई
सुर मन्दिर श्रुति भन अतिपावन धर्म भूमि मुनिजन मन भावन
जहँ गंगादिक नदी प्रसिद्धा धर्म भूमि निगमागम सिद्धा
जहाँ सरोवर पुष्कर आदिक धर्म भूमि भन मुनि मन्वादिक
कुरुक्षेत्र आदिक अति पावन धर्म भूमि अरु मुनि आश्रम वन
गया प्रयाग पुलह मुनि आश्रम नैमिष वन विरहित कलि विभ्रम
फाल्गुन सेतु पुनीत प्रभासा कुशस्थली श्रीकृष्ण निवासा
मथुरा विन्दु सरोवर पावन नारायण आश्रम मन भावन
वाराणसी पुरी अति धन्या तादृश मुक्ति पुरी नहि अन्या
सीतारामाश्रम अति पावन नन्दा पम्पा मुनि मन भावन
मलय महेन्द्रादिक कुल भूधर धर्म भूमि भन मनु मुनिजन वर

देश पुण्यतम साधक वर्गा करि तप लहत स्वर्ग अपवर्गा
सदाचार वर्णन गिरिजावर करत भयउ पुनि करुणा सागर
सज्जन कृत शोभन आचारा सदाचार श्रुति मत अनुसारा
अथवा पित्रादिक कृत जोई पारम्पर्य क्रमागत होई
सुप्रसिद्ध एवंविध दोई सदाचार भाखत सब कोई
मातु पिता गुरुजन सत्कारा सदाचार श्रुति मत अनुसारा
प्रतिदिन गुरुजन प्रणति विधाना सदाचार भन वेद पुराना
गो द्विज सुर सुधर्म सत्कारा सदाचार श्रुति मत अनुसारा
वयोवृद्ध अरु विद्यावृद्धा आदर सदाचार परसिद्धा
साधु सन्त सेवन बहु भाँती सदाचार गावत श्रुति पाँती
यथा शास्त्र लौकिक व्यवहारा सदाचार श्रुति मत अनुसारा
ऊगत डूबत सूर्य अदर्शन सदाचार भन निगमागम गन
प्रातः सायं निद्रा वर्जन सदाचार गावत पण्डित जन
पर नारी अगमन अरु अशयन विवसन सदाचार भन मुनिजन
सदाचार एकाकी अगमन सदाचार निजन गृह अशयन
सदाचार धरणी नख अलिखन सदाचार निर्हेतु अविलपन
गिरिजे ब्राह्मण दुइ बिच अगमन सदाचार भाखत पण्डित जन
जलमहँ निज प्रतिबिम्ब अदरशन सदाचार भाखत पण्डित जन
जल भीतर निष्ठीवन वर्जन सदाचार भाखत पण्डित जन
जल भीतर अनग्न परवेशा सदाचार इति शास्त्रनिदेशा
जल महँ मल मूत्रादिक वर्जन सदाचार भाखत पण्डित जन

मल मूत्रादिक दरसन परसन वर्जन सदाचार भन मुनिजन
पदकृत हुतभुक् सेवन वजन सदाचार भाखत पण्डित जन
मध्य दिवस अरु साँझ सवेरा अर्धरात्रि पैशाची वेरा
चारि समय चौवट्टी अगमन सदाचार भाखत पण्डित जन
प्रातर्मज्जन सन्ध्यावन्दन गायत्री जप पैतृक तर्पण
दिनकर अर्घ पञ्चसुर अर्चन पुनरपि शालग्राम समर्चन
गिरिजे इष्ट देवता अर्चन मोर मृत्तिका लिंग समर्चन
स्वाध्यायादिक वैश्वदेव विधि सदाचार भाखत विद्यानिधि
बाह्य होम अरु वायु होम अरु इन्द्रियाग्नि शब्दादि होम अरु
सांख्य बोध श्रुति शिखर विचारा सदाचार श्रुति मत अनुसारा
श्रुति मत सायं सन्ध्यावन्दन समय प्रदोष हमार समर्चन
शत रुद्रीय स्नपन विधाना सदाचार भाखत मुनि नाना
प्रातः कृत्य आदि आचारा शयनावधि श्रुति मत अनुसारा
शास्त्रोदित आह्निक विधि जेते सदाचार इति जानिय तेते
सार्वभौम हिंसा विधि वर्जन सदाचार भाखत पण्डित जन
लोष्टु विमर्दन नख तृण छेदन वर्जन सदाचार भन मुनिजन
रद कृत नख कर्तन परिवर्जन सदाचार भाखत पण्डित जन
मिथ्या अप्रिय वचन विवर्जन सदाचार भाखत पण्डित जन
पर द्रव्यापहरण परिवर्जन पर निन्दा वर्जन निर्मल मन
अप्रिय सत्य वचन परिवर्जन सदाचार भाखत पण्डित जन
भूतल मणि शंखादि अधारण प्रथमहिं उपवेशन संचारण

लवणादिक परहस्त-अधारण तजिवो शुष्क विवाद अकारण
मत्सर दंभ असूया वर्जन सदाचार भाखत पण्डित जन
कामादिक ऋपु विजय बुद्धिबल वञ्चकता वर्जन परिहरि छल
रात्रि समय दधि सक्तू अनशन सदाचार भाखत पण्डित जन
दाहिन दिश जलपात्र विधारण दृष्टिपूत पथ पद सञ्चारण
सर्व दोष मय कलह विवर्जन सदाचार भाखत पण्डित जन
शपथ निबाह प्रतिज्ञा पालन बन्धु वर्ग पालन अरु लालन
दुष्कर सुकर व्यवस्था रक्षण सदाचार भाखे विषभक्षण
अहंकार ममकार विवर्जन ज्ञान प्रताप वासनाभर्जन
रागद्वेष दुराग्रह वर्जन सदाचार भाखत पण्डित जन
किय मौनावलम्ब श्रीशंकर ध्यानावस्थ भक्त अभयंकर

दोहा

सदाचार सुनि विविध विध, श्रीगिरिराज कुमारि ।
कहत भई अति मुदितमन, प्रभु पदरज शिर धारि ॥१९॥

सोरठा

होत प्रमोद प्रवाह, सदाचार वर्णन सुनत ।
पुनि पुनि त्रिभुवन नाह, श्रवण पिपासा बढ़त मम ॥२०॥
करि मृदुहास महेश, प्रकृत कथा भाखत भयउ ।
जाते मिटै कलेश, इहामुत्र सुख हस्तगत ॥२१॥

चौपाई

आत्म प्रशंसा वर्जन सज्जन संगम सदाचार भन मुनि जन

नारी–क्रीड़ा–मृगता वर्जन पुण्य पुञ्ज पाथेय समर्जन
निज लाघव पर गौरव बुद्धी मन-वच-तन बहिरन्तर शुद्धी
पात्रि योग्यता पर उपकारा सदाचार श्रुति मत अनुसारा
वृथा मांस अरु मत्स्य अभक्षण लोक वेद मर्यादा रक्षण
वृथा खीर कृसरादि अभोजन सदाचार भाखत पण्डित जन
पर व्यवहृत वस्त्रादि अधारण सदाचार भाखत पण्डित जन
नहि चरणोपरि चरण विधारण सदाचार इति श्रुति निर्धारण
प्राप्त पूज्य प्रतिमादि प्रणामा सदाचार गावत श्रुति ग्रामा
शिक्षा हेतु शिष्य सुत ताड़न तदतिरिक्त सर्वत्र अताड़न
दुर्बल-दीन - दुखी - परिपालन प्रिये स्वांग अरु पीठ अवादन
साँझ शास्त्र चिन्ता परिवर्जन सदाचार भाखत पण्डित जन
उत्तर पश्चिम अभिमुख अशयन निशा अमज्जन मौनी भोजन
घूमत फिरत किञ्चिदपि अनशन सदाचार भाखत पण्डित जन
सावशेष भोजन श्रुति सम्मत सदाचार सो प्रिये मोर मत
यत् किञ्चित् भोजन अभिनन्दन निगमागम भन तासु अनिन्दन
नार्द्र-सार्द्र-पद कृत शयनाशन सदाचार भाखत पण्डित जन
छिन्न त्रुटित आसन अरु वर्तन वर्जन सदाचार भन मुनि जन
गाभी पुच्छ परस मंगलमय भाखत सदाचार बृहदाशय
भन आचमन भोजनाद्यन्ता सदाचार श्रुति पारग सन्ता
तुष भस्मादि उपरि उपवेशन वजन सदाचार भन मुनिजन
बड़ जन अभ्युत्थान विधाना सदाचार भन वेद पुराना

अर्घदान अरु आसन दाना सदाचार भन वेद पुराना
गमन समय अनुगमन विधाना सदाचार भन वेद पुराना
तनु मल अपाकरण करि मज्जन वर्जन सदाचार भन मुनिजन
करि भक्षण हुतभक्षण परसन सदाचार भाखत पण्डितजन
उत्थित मूत्र विसर्जन वर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
भस्मादिकपर मूत्र विसर्जन वर्जन सदाचार भन मुनिजन
पूज्य वृक्ष दक्षिण करि गमना सदाचार भन विद्यारमना
सुर मन्दिर दक्षिण करि गमना सदाचार भन विद्यारमना
सुर प्रतिमा दक्षिण करि गमना सदाचार भन विद्यारमना
सम्मुख दक्षिण दण्ड प्रणामा सदाचार गावत मुनिग्रामा
परदच्छिन क्रम सुर परिकरमा सदाचार गावत मुनि शरमा
रवि शशि नखत अशुचि कृत दर्शन वर्जन सदाचार भन मुनिजन
दूजे वसन विहीन अभोजन सदाचार भाखत पण्डितजन
अशुचि अवस्था महँ शिर परसन वर्जन सदाचार भन मुनिजन
केश ग्रहण शिर ताड़न वर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
अस्नानीय वारि निक्षेपण शिरपर अतिरय वा उत्क्षेपण
अरु अभ्यंगादिक करि मज्जन वर्जन सदाचार भन मुनिजन
अनुपविष्ट नहि पद प्रक्षालन सदाचार भाखत पण्डितजन
अतिरय मज्जन जल उत्क्षेपण वर्जन सदाचार भन मुनिजन
लवण और रस विक्रय वर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
ताम्रपात्र महँ गोरस भोजन वर्जन सदाचार भन मुनिजन

वृथा अभोजन अरु अति भोजन वर्जन सदाचार भन मुनिजन
पूति पर्युषित भोजन वर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
यातयाम भोजन परिवर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
अति कट्वम्ल विदाही तीछन उष्ण रूक्ष रुचि मात्र गवेषन
एतादृश भोजन परिवर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
निद्राधिक्य अनवसर निद्रा निद्रा विवशहिँ करत दरिद्रा
एतादृश निद्रा परिवर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
वात रोग बिनु वासर निद्रा निशा मध्य युग याम अनिद्रा
उक्त अनिद्रा निद्रा वर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
भोजन आदि पात्र महँ छिद्रा तद्व्यवहारिहिँ करत दरिद्रा
एतादृश व्यवहार विवर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
छिक्का जीवोत्तिष्ठ पतन छन कथन करध्वनि जृम्भा श्रुतिभन
सदाचार यह जानहु ताता द्विजवध अघ तसु अकरण ख्याता
निद्रा भंग कथा विच्छेदा अरु दम्पतिगत प्रीति विभेदा
शिशु जननी विभेद परिवर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
उक्त चतुष्टय वेद पुराना द्विज हत्या सम करत बखाना
कृसर समन्वित मत्स्य अभोजन सदाचार भाखत पण्डितजन
मृत प्रेयसी पितृ गृह गमना गावत गावत मार्ग विचरना
कर्कट भक्षण वृक्षारोहन वर्जन सदाचार भन मुनिजन
मिष्ट अन्न एकाकी भोजन जन अनेक जहँ वा जहँ शिशुजन
वर्जन सदाचार भन मुनिजन निगमागमगण विविध पुराणन

सूर्य अग्नि गो ब्राह्मण अभिमुख मार्गमध्य सुर प्रतिमा सम्मुख
मूत्र विसर्जन वर्जन मुनि भन निगमागमगण और पुराणन
दिन रजनी मलमूत्र विसर्जन उत्तर दक्षिण मुखक्रम मुनि भन
अनधीनता पाइ जस संभव तादृश दिश भन सत्यवती भव
गिरिजे सदाचार यह जानहु असदाचार अन्यथा मानहु
गुरुसन सदा विवाद विवर्जन क्रुद्ध गुरुहिँ भरि शक्ति क्षमापन
अपि निन्दनीय गुरू अनिन्दन सदाचार भाखत पण्डितजन
रक्तमाल धारण परिवर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
श्वेत पद्म अरु श्वेत पद्मकर माल्य अधारण भाखत मुनिवर
सदाचार यह जानहु ताता भाखे अस शंकर श्रुतिज्ञाता
आलय दूर अतिथि गृह रचना सदाचार भाखत श्रुति वचना
बिनु शंका अपि प्रातःकाला गमन बाह्य भू भन श्रुतिमाला
सदाचार यह सुन्दरि जानहु नहि सन्दिग्ध भाव मन आनहु
शिखा विहीनहिँ शिखा प्रदेशा परसमात्र श्रुति शास्त्र निदेशा
बन्धन बिनु अपि सदाचार सो भाखत अस श्रुति शास्त्र विज्ञ जो
उद्‌गारादिक अशुचि अवस्था निज दक्षिण श्रुति परस व्यवस्था
सदाचार सुन्दरि जानहु सो भाखत अस श्रुति शास्त्र विज्ञ जो
म्लेच्छादिक परसन संयोगा मज्जन विधि श्रुतिशास्त्र नियोगा
मोर और हरि नाम लियेते जरत तूल इव पातक जेते
सदाचार जानहु सुन्दरि सो भाखत अस श्रुति शास्त्र विज्ञ जो
परसि चर्म आदिक कर क्षालन सदाचार भाखत पण्डितजन

पर्व दिवस रद धावन वर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
नीच व्यक्ति कृत दान अग्रहण सदाचार भाखत पण्डितगण
त्रुटित जीर्ण खट्वापरि अशयन सदाचार भाखत पण्डितजन
निरखि प्रकाश युक्त थल शयना सदाचार भाखत श्रुतिवयना
पिप्पल-वट-फल शाण शाककर अनशन सदाचार भन मुनिवर
रजस्वलाकृत परस अन्नकर अनशन सदाचार भन मुनिवर
अन्य व्यक्तियुत एक पात्रमहँ सदाचार भन श्रुति अनशन कहँ
अजा गाय अरु मोर मांस कर अनशन सदाचार भन श्रुतिधर
केशयुक्त भक्षणकर त्यागा सदाचार भन मुनि बड़भागा
धरणीधृत भोजनकर त्यागा सदाचार भन मुनि बड़भागा
सकल कुटुम्ब भोजनान्तर भोजन सदाचार भन मुनिवर
वर्णन करत करत परमेशू भयउ निमीलित नयन महेशू

दोहा

ध्यानोन्मुख श्रीशंकरहिँ, निरखि गजानन मात ।
दियउ राखि निज मृदु करहिँ, चरण युगल जलजात ॥१२॥

सोरठा

पाय परस त्रिपुरारि, उन्मीलित लोचन भयउ ।
तब गिरिराज कुमारि, कहत भयउ मृदु हास करि ॥२२॥
भयउ तृप्त नहि चित्त, सदाचार व्याख्यान सुनि ।
लहि अदभ्र जिमि वित्त, तृप्त होत नहि लुब्ध मन ॥२३॥

चौपाई

सुनि शंकर तब भाखन लागे लखि श्रवणोत्सुक गिरिजा आगे
जल निक्षेप अशन समनन्तर सदाचार दाहिन अंगुठपर
पतित संग भाषण अपि निन्दित सदाचार भन शिष्ट अनिन्दित
निष्ठीवन छिक्का समनन्तर भन आचमन विहित पण्डितवर
सदाचार सो जानहु ताता अस भाखत विद्वज्जन त्राता
गुरुकृत इष्ट मन्त्र कर दिक्षा सदाचार इति श्रुतिकर शिक्षा
भस्मोद्धूलन अरु तसु धारण सदाचार रुद्राक्ष विधारण
दीपशिखा निर्वापन वर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
नारीकृत कुष्माण्ड अछेदन सदाचार भाखत पण्डितजन
गिरिकन्ये मम लिंग समर्चन सदाचार भाखत पण्डितजन
करु उपविष्ट शिरस्थल बड़जन सदाचार इति आप्त व्यक्ति भन
करि पथ गमन पाद प्रक्षालन सदाचार भाखत पण्डित जन
पाद अल्प प्रक्षालन वर्जन सदाचार भाखत पण्डितजन
वसन मलीन अल्प रद धावन वर्जन सदाचार भन मुनिजन
करगत अशन पान अञ्जलिगत वर्जन गृहिकर सदाचार मत
अक्षालित पीठानुपवेशन सदाचार भाखत पण्डित जन
आनत मुख गण्डूष विसर्जन सदाचार भाखत पण्डित जन
रद धावन विनु पानादिक अपि अविहित भाखत भयउ वृषाकपि
परिवर्जन तसु सदाचार भन धीधन अरु निगमागम गन
यथायोग्य पुण्ड्रादि विधारन सदाचार भाखत पण्डित जन

भोजनादि अरु अध्ययनादी पद प्रक्षालन भन मन्वादी
वत्स पुरञ्जन सदाचार सो भाखत निगमागम मुनिजन जो
रजनी रजनीमुख अनिमज्जन सदाचार भाखत पण्डित जन
श्रीखण्डादि सुगन्धित चन्दन आदि विलेपन सदाचार भन
क्षौर कर्म उत्तर असनाना सदाचार भन वेद पुराना
अनाहूत उत्सव महँ अगमन सदाचार भन वेद पुराणन
अनाहूत यज्ञस्थल गमना सदाचार भन विद्या रमना
अन्त समय महँ तीरथ गमना सदाचार भन विद्यारमना
सदाचार इत उत सुखदायक सन्तति-सुख-सम्पत्ति विधायक
सदाचार जो पालन करई कबहुँ न सो संकट महँ परई

दोहा

सदाचार पालन सविधि, करत आयुकर वृद्धि ।
सदा सहायक शूलधर, करगत नाना सिद्धि ॥१३॥
सदाचार वर्णन अमित, जिमि नभ नखत अनन्त ।
तदपि कछुक वर्णन कियउँ, जस भाखत श्रुति सन्त ॥१४॥

सोरठा

कहत सुनत जो कोइ, सदाचार व्याख्यान यह ।
इहामुत्र सुख सोइ, लहि पुनि पावत नित्य सुख ॥२४॥
आपामर सुख हेतु, कहत भईं जगदम्बिका ।
प्राणनाथ वृषकेतु, करन चहौं पुनि प्रश्न कछु ॥२५॥

चौपाई

सदाचारगत भस्म महातम कहिय यथोदित हे प्रभु प्रियतम
महादेव सुनि भाखन लागे करुणाकर करुणारस पागे
भयउ एक भृगु वंशज द्विजवर अनशनव्रती तपस्या तत्पर
तसु आश्रम महिमा अधिकाई पुत्र पुरञ्जन कहि न सिराई
शीत समय शीतल जलशायी ग्रीष्म पञ्चपावक सुस्थायी
वर्षाऋतु आसार सहिष्णू बाह्याभ्यन्तर इन्द्रिय जिष्णू
कतिपय कतिपय दिवस अनन्तर लघ्वाहारी व्रतविधि तत्पर
भयउ अहिंसक हिंसक जन्तू भउ निबद्ध जिमि द्विज तपतन्तू
हय महिषादि शत्रुता परिहरि विचरे हिलिमिलि क्रीड़ा करिकरि
ऋक्ष शरभ अरु सिंह सियारा अनुचर इव तहँ कृत व्यवहारा
कन्दमूल फल आदि अहारा लावत भउ तहँ विविध प्रकारा
अलवण शाकमात्र इक बारा भउ तसु लघुमित प्रिय आहारा
पण आदि भोजन तत्पर जो भउ पर्णाद नाम विश्रुत सो
मन महँ सो करि दृढ़ संकल्पा तीव्रतपा भउ विसरि विकल्पा
शाकरसाभ रुधिर मम यदवधि करिहौं दुश्चर तप मैं तदवधि
तन्निभ रुधिर दृष्टिगोचर जब निज निष्कलुष भाव अनुभव तब
करत भयउ तप निश्चय करि अस भउ प्रख्यात तासु घर घर जस
एक दिवस कुश अंकुर छेदन करत भयउ तसु त्वचा विभेदन
शाकरसाभ रुधिर सो देखी पायउ मनमहँ मोद विसेखी
नृत्य गीत तत्पर भउ पुनि पुनि पुनिपुनि करत भयउ करतलधुनि

करि करि अट्टहास बहु वारा क्रियउ प्लवनविधि विविध प्रकारा
जल्पन प्रलपन गल्पन वल्गन करत भयउ सो पुनिपुनि वन वन
भउ मदमत्त सरिस सो विप्रा भागत भउ लखि मृगगण क्षिप्रा
नर्दमान भउ पुनि पुनि सोऊ जिमि विक्षिप्त चित्त जन कोऊ
लखि विभ्रान्त चित्त तसु क्षिप्रा दर्शन दियउँ ताहि बनि विप्रा
तसु विभ्रान्ति निवारण कारण चरित मोर यह दुर्मद वारण
पुनि पुनि कियउँ तासु सम्बोधन भउ तथापि नहि तासु प्रबोधन
नर्तन नर्दन तत्पर सोऊ दियउ न कान वचन मम जोऊ
पुनि पुनि तासु कियउँ सम्बोधन कथमपि भयउ तासु उद्बोधन
कर गहि तासु कहत हम भयऊ हे द्विज तुअ मति कस ह्वै गयऊ
अहंकार आयउ मन माहीँ विप्र तोहि सोहत सो नाहीँ
अन्धकार थिति विधु महँ जैसे अहंकार थिति तुअ महँ तैसे
यह बहुमूल्य तपोधन तोरा चाहत हरन प्रबल मद चोरा
यशोगान तसु आपहि घर घर जो जन करत तपस्या दुष्कर
यह अभिमान ग्लानिकर कारण तपसिहिँ सोह विनय निष्कारण
यज्ञ तपस्या यश चिर सञ्चित करहु न भ्रष्ट होइ मदवञ्चित
नहि'शीतोस्मि'भाखि शशिगर्जत नहि'उष्णोस्मि'भाखि रवि तर्जत
'दाहकोस्मि'इतिकहिनहि हुतभुक् करत गर्व अपि खाण्डव वनभुक्
भउ तपतेज धौत सब पापा तजहु विप्र यह मानस दापा
यह पृथिवी अति पृथुतर रूपा विविध व्यक्ति आश्चर्य सरूपा
त्वदपेक्षया तपोधन नाना करहिँ अधिक तप गत अभिमाना

लखहु विप्र मम तपः प्रभावा नहि शरीरमहँ कलुषित भावा
आपुहिँ कलुषित तनु तुम जानहु वचन हमार सत्य करि मानहु
स्रवत भस्म द्विज मम तनु कैसे दावानल विदग्ध वन जैसे
कियउँ अंगुली छेदन अस कहि चली भस्म धारा ताते बहि
श्वेत दुग्ध धारा अनुकर्त्री तापस विप्र तपोमद हर्त्री
लखि विभूति धारा सो द्विजवर भयउ प्रशंसा भाषण तत्पर
साधु साधु कहि वारंवारा भउ प्रतिमा इव गत सञ्चारा
भयउ विस्मयाविष्ट मनोगति लोचन बीच भयउ त्राटक अति
कथमपि मन सुस्थिर करि सोऊ भाखत भयउ जोरि कर दोऊ
सृष्टि समुद्र अगम्य अपारा थाह तासु को पावनहारा
तप अभिमान भयउ मम जोऊ मम अनभिज्ञ भावकृत सोऊ
नष्ट भ्रष्ट अब मम अभिमाना करौं कहाँ लगि तव गुणगाना
लखि राउर यह अद्भुत लीला महा मोह मद भउ अब ढीला
राउर कुल नामादिक परिचय बोध हेतु हिय उत्सुक अतिशय
कौन तपस्या करि यह महिमा पायउ आप अपूरब गरिमा
वर्ष सहस्र कियउँ तप भारी मारुत नीर पर्ण आहारी
भउ पर्णाद नाम मम ताते पर्णमात्र भक्षण मम जाते
तदपि न बही भसित सित धारा अंगुलिव्रण निर्गलित अपारा
शाकरसाभ रुधिरमय धारा निरखि भयउ मद मोह अपारा
वास्तव बड़जन गर्व न करई गर्वी लघुमति संकट परई
रावणादि करि गर्व अपारा भउ परिभूत सहित परिवारा

कहत भयउ पुनि द्विजवर सोऊ भउ प्रश्रयावनत अति जोऊ
मम अपराध क्षमा प्रभु कीजै अभयदान वर कृपया दीजै
किमु नव जलधर रुचि हरि आपू किमु शंकर धृत जटा कलापू
किमु चतुरानन देव विधाता जय जय जय शरणागत त्राता

दोहा

अस कहि कियउ प्रणाम मुनि, आठहु अंग लगाय।
त्राहि त्राहि भाखत बहुरि, गिरे चरणपर धाय ॥१५॥

सोरठा

दरस दियउँ तब ताहि, वेदोदित निज रूपकर।
मुनिजन भाखत जाहि, कृपया कल्पित भक्तिवश॥२६॥
सुर सुन्दरि मम रूप, विदित अतीन्द्रिय वेदमहँ।
कल्पित रूप अनूप, भक्तानुग्रह हेतु कृत ॥२७॥

चौपाई

श्रुत अरु दृष्ट पदारथ यावत् प्रिये रूप मानहु मम तावत्
प्रकृति पुरुष तनु हम तुम दोऊ वास्तव भेद न भाखत कोऊ
जड़ चेतनमय तुम हम दोऊ तदपि अवास्तव भाखत कोऊ
प्रकृति पुरुषमय यह संसारा द्वैत भाव जबलगि व्यवहारा
केवल भाव प्राप्त जब होई चिदचित् कथन करै कस कोई
किमपि अनिर्वचनीय स्वरूपा वास्तव तत्त्व अनूपम रूपा
केवल भाव विदित जब होई किमिदमित्थमिति कहत न कोई
वस्तु सच्चिदानन्द सरूपा तब अवशिष्ट अनाम अरूपा

प्रकृत कथा अब सुन्दरि भाखौं गोपनीय कछु गोपि न राखौं
करत भयउअस्तुति मम पुनिपुनि द्विज पर्णाद करत जय जय धुनि
जय जय ब्राह्मण रूप पिनाकी सेवक जसु इन्द्रादिक नाकी
ब्रह्म विष्णु सुरपति परिपूजित प्रणव रूप बहिरन्तर कूजित
जय भस्मांगराग अहिभूषण भस्मोत्पादक त्रिपुर विदूषण
प्रणमौं प्रभु पद पंकज दोऊ संसाराम्बुधि नौका जोऊ
प्रभु करुणा लवलेश प्रसादा कृत अधमाधम गत अवसादा
विप्र वेदनिधि आदि निदर्शन व्याधा भिल्ल आदि कतिपय जन
दीनबन्धु शरणागत पालक दयासिन्धु श्रुति मत सञ्चालक
दरस पाय मैं भयउँ कृतारथ मोहि लभ्य नहि कौन पदारथ
प्रणत पालता व्रत प्रभु केरा जानि निरयभय अपगत मेरा
प्रणमौं पुनि पुनि राउर चरणा राखिय नाथ मोहि निज शरणा

दोहा

वरम्ब्रूहि इति ताहि हम, कहत भयउँ बहु बार ।
प्रेम मग्न मुनि करत भउ, पुनि पुनि जय जयकार ॥१६॥

सोरठा

मम पद पंकज प्रेम, याचत भउ सो विमल मति ।
सुमिरि आपनो नेम, एवमस्तु हम कहि दियउँ ॥२८॥
जो मम शरणापन्न, प्रत्याशा परिहरि सकल ।
सो न संकटापन्न, कथमपि और कदाचिदपि ॥२९॥

चौपाई

गाणपत्य पद ताकहँ दियऊँ मम पद रज सो शिर धरि लियऊ
गिरि सुमेरुपर करहु निवासा जहाँ लोकपालन कर वासा
गो-द्विज-देव-साधु-हितकारी होहु सदा तुम मम व्रत धारी
अस पर्णादहिँ दै वरदाना भयउँ प्रिये पुनि अन्तर्धाना
भयउ भस्म उत्पादन वर्णन करहु प्रिये तुम पुनि आकर्णन
भस्मोद्धूलन भस्म विधारण करत कर्मकृत बन्धन वारण
भस्मोद्धूलन भस्म विधारण करत बालग्रह आदि निवारण
भस्मोद्धूलन भस्म विधारण करत भूत प्रेतादि निवारण
भस्मोद्धूलन भस्म विधारण करत अलौकिक बल सञ्चारण
भस्मोद्धूलन भस्म विधारण पराभक्ति उत्पादन कारण
भस्मोद्धूलन भस्म विधारण परानन्द अनुभवकर कारण
तीर्थराज कनखल मज्जनफल वितरत भस्मोद्धूलन प्रतिपल
पुष्कर अरु प्रभास मज्जनफल वितरत भस्मोद्धूलन प्रतिपल
ब्रह्मा विष्णु अनन्त सुरेशा करि भस्मोद्धूलन अकलेशा
अग्नि वरुण यम आदिक जेते भउ कृतकृत्य भस्मते तेते
सिद्ध तपोधन आदिक जेते जीवन्मुक्त भस्मते तेते
प्रिये भस्म धरि हमहुँ यथाविधि भउँ सर्वेश्वर उपरि विष्णु विधि
सारभाग भौतिक वस्तुनकर भस्मीभूत परम पावनतर
श्रद्धधान जन धारक तासू होत पवित्री कृत हिय आसू
यथा निषेधावधि सुन्दरि हम तथा निषेधावधि विभूति मम

नहि डाकिनी आदि भय ताको सित विभूति भूषित तनु जाको
नहि विभूति असनान समाना भाखत वेद अपर असनाना
नहि गंगा सम तीरथ कोई वेद समान प्रमाण न होई
मृत्यु सरिस शासक नहि आना तप नहि भस्मविलेप समाना
गणपत्य पद पावत सोई भस्म विलेपन कर्ता जोई
इन्द्रादिक सुर तसु आराधक करत भस्म धारण जो साधक
भस्म विधारण विधि अब भाखौं गोपनीय कछु गोपि न राखौं
होमभस्म दावानल भस्मा द्विज पाकाग्नि समुद्भव भस्मा
अथवा गोमय भस्म विधाना भाखत व्यासादिक मुनि नाना
पढ़त अग्निरित्यादिक* मन्त्रा भस्मोद्‌धूलन भाखत तन्त्रा
प्रथम प्रणव व्याहरण विधाना श्रुति मन्त्रन महँ भन मुनि नाना
हंस सहित करि प्रणवोच्चारण सन्ध्या तीनि त्रिपुण्ड्र विधारण
त्र्यम्बक मन्त्रोच्चारण अथवा पञ्चाक्षर उच्चारण यद्‌वा
भन त्रिपुण्ड्रधारण विधिमुनिजन आप्त व्यक्ति अरु वेद पुराणन
मन्त्र षडक्षर यद्वा द्विजगन उच्चारहिँ इति भाखहिँ मुनि जन
केवल पञ्चाक्षर उच्चारन शूद्रादिक महँ समुचित मुनि भन
करि त्र्यायुषमिति मन्त्रोचारण द्विज कर्तव्य विभूति विधारण
शिर भुजमूल युगल वक्षःस्थल त्र्यायुष क्रम करि भस्म महाफल
जो गोमय भगलग्न हस्त धृत शान्तिक सोइ विभूति दग्ध कृत
पंच मन्त्र , सद्योजातादिक तत्कृत दहन कहहिँ व्यासादिक

* सभी मन्त्र ग्रन्थ के अन्त में परिशिष्ट में मुद्रित हैं।

पढ़ि मेधावीत्यादिक मन्त्रा भन त्रिपुण्ड्र धारण श्रुति तन्त्रा
गोमय अन्तरिक्षगत कर धृत पौष्टिक सो शास्त्रोक्त दग्धकृत
तासु षड़ंग मन्त्रकृत दाहा भाखहिँ व्यासादिक मुनि ताहा
एतदेव गोमय अत्रोदित कामद विदित प्रसाद दग्धकृत
परि ईशान मन्त्र प्रक्षालन पद्कर शिरकर भन द्वैपायन
उद्धूलित विभूति सब अंगा करत पवित्र यथा जल गंगा
पढ़ि तत्पुरुष विहित मुखक्षालन अरु अघोर पढ़ि हृत्प्रक्षालन
नाभि देश क्षालन विधि बोधित आगम निगम करत उद्घोषित
सद्योजात मन्त्रकृत क्षालन सर्व अंग महँ भन द्वैपायन
पढ़त अग्निरित्यादिक मन्त्रा नख शिख धूलन भन वा तन्त्रा
गोमय हेतु वर्ण अनुसारा भन गोगण निगमागम सारा
ब्राह्मण कहँ समुचित गौ श्वेता क्षत्र रक्त भन बदर निकेता
पीता गौ वैश्यन कहँ समुचित शूद्रीया कृष्णा शास्त्रोदित
प्रथम वर्ण धूलन अधिकारी नहि तदितर इति भन श्रुतिचारी
भन पावन तिरपुण्ड विधारण सार्वजनिक मुनिवर द्वैपायन
केवल द्विजहि मन्त्र अधिकारी गावत सामादिक श्रुति चारी
दीक्षा रहित व्यक्ति जो कोऊ मन्त्र अनधिकृत जानहु सोऊ
भस्म विधारण मन्त्र विधाना एतद्रूप करत श्रुति नाना
मम पंचार्ण मन्त्र अधिकारी जानहु सबहिँ गिरीन्द्र कुमारी
मध्यानामांगुष्ठ मिलाई भन त्रिपुण्ड्र धारण मुनि राई
मध्यानामा विहित वाम क्रम अरु अंगुष्ठ विहित दक्षिण क्रम

उभय भागते रेखा रचना भाखत एवंविध श्रुति वचना
मध्यानामा सहित तर्जनी कृत रेखा वा विपति भर्जिनी
दक्षिण हस्त अंगुली द्वारा विहित भस्म धारण व्यवहारा
ब्रह्म विष्णु अरु मोर अकारा रेखात्रय श्रुति मत अनुसारा
आर्द्रीकृत सित भसित विधारन आ मध्याह्न कहहिँ द्वैपायन
तदुपरि भस्म शुष्क संधारन भाखत मुनिजन निगमागमगन
संध्या त्रितय भस्म संधारन विहित विशेष कहहिँ द्वैपायन
केपि पश्चिमा सन्ध्या अवसर आर्य आर्द्र भसितादर तत्पर
देव पितर कारज जो कोई भस्म रहित निष्फल सब होई
प्रिये भस्म भूषित तनु देखी उरगादिक लह त्रास विसेखी
सकल उपद्रव नाशन कारन भस्म विधारण भन द्वैपायन
भुक्ति मुक्ति दायक परभावा सित विभूति कर मुनिजन गावा
भसित महातम कथन अनन्ता दिग्दर्शन करि गावहिँ सन्ता
श्रौतस्मार्त कर्म अधिकारी नहि अभस्म जन भन श्रुति चारी

दोहा

भस्म विधान अनेक विध, भाखत वेद पुरान ।
पुस्तक विस्तृति भय विवश, कीन्हे स्वल्प बखान ॥१७॥

सोरठा

शंभु शिरो व्रत नाम, कर्म प्रशंसा करत श्रुति ।
सार्वजनिक हित काम, कथन करौँ अब तासु कछु ॥३०॥

चित्रायुक्त पूर्णिमा तिथि जब व्रत अवसर प्रशस्त श्रुतिमत तब
क्षेत्रारामारण्य सुदेशा निज गृह वा इति शास्त्र निदेशा
तेरस तिथि शुचि कृत नित्यक्रिय शिव आज्ञा याञ्चाकरि निज हिय
लै आयसु आचार्य देवकर वैशेषिक विधि पूजि उमावर
शुक्ल वस्त्र उपवीत माल्य धर करि अनुलेपन शुक्ल सुरभितर
कुश आसन आसीन त्रिकुशकर पाङ्मुख वापि उदङ्मुख थिरतर
प्राणायाम सगर्भ वार त्रय करि परिहरि लौकिक चिन्ताचय
करि अध्यादिक व्रत संकल्पा यादृश मनमहँ निश्चित कल्पा
व्रत विषयक यम नियम अनेका प्रिये न कथमपि त्याज्य विवेका
यावज्जीवन व्रत संकल्पा द्वादशाब्द आदिक वा कल्पा
षट् वत्सर वत्सर त्रय अथवा वत्सर एक मास षट् यद्वा
मास एक वा द्वादश दिन वा षट् वासर वा वासर त्रय वा
व्रत संकल्पावधि अस जानहु एक दिवस वा श्रुति मत मानहु
यथागृह्य हुतभुक् आधाना होम निमित्तक वेद बखाना
आहुति दान मन्त्र पञ्चाक्षर द्विजगण महँ वा विदित षड़क्षर
मूल मन्त्र वा आहुति मन्त्रा विहित कहत अस श्रुति अरु तन्त्रा
घृत अरु समिध देवि चरु सिद्धा हवि प्रशस्त भाखत मुनि वृद्धा
तिथि पूर्णिमा पूर्व कृति एहू तत्त्व विशोधक नहि सन्देहू
क्रम कृत तत्त्व विशोधन सुमिरन साधक पूर्वकृत्य मुनिजन भन
प्रथम सूक्ष्म तन्मात्रा शोधन पञ्चभूतकर तदनु विशोधन
कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय शोधन पुनि कर्तव्य धातु परिशोधन

प्राणादिक पञ्चानिल शोधन पुनरपि अन्तःकरण विशोधन
सत्त्व रज स्तम त्रिगुण विशोधन पुनरपि पुरुष प्रकृति परिशोधन
विद्या राग कला परिशोधन नियति काल अरु माया शोधन
पुनि विशुद्ध विद्या परिशोधन बहुरि महेश सदाशिव शोधन
शक्ति और शिव तत्त्व विशोधन प्रत्याहुति कृति अस श्रुति बोधन
अमुक तत्त्व मम देहावस्थित शुद्ध होय अस वचन व्यवस्थित
प्रत्याहुति प्रति तत्त्व एहि विधि भन विधान व्यासादि ज्ञाननिधि
करि अस विरजा होम सुपावन होत रजो विरहित तनु पावन
करि हविष्य भोजन दिन एहू शिव सेवक विमली कृत देहू
पिण्डीकृत गोमय पावक महँ थापै कृत विरजा आहुति जहँ
चतुर्दशी तिथि समय प्रभाता कृत संक्षिप्त नित्य कृति व्राता
यथा पूर्व करि व्रत विधि नाना अहोरात्र उपवास विधाना
पञ्चदशी तिथि पुनरपि नाना यथा पूर्व करि कृत्य विधाना
दै पूर्णाहुति होम समापन करि सित भसित राखि अतिपावन
जटिली मुण्डी किंवा धृतशिख धारण करै भस्म आनख शिख
कौपीनाम्बर वापि दिगम्बर अथवा धृत शुचि काषायाम्बर
कृतकृत्यत्व पावि एहि भाँती गौरीहर सुमिरै दिन राती
भउ शास्त्रोक्त शिरोव्रत वर्णन चाहहु बहुरि काह आकर्णन
अस कहि भउ प्रभु मीलित लोचन आशुतोष सेवक दुख मोचन

दोहा

सुनि अम्बा भावत भई, पाणि पद्म युग जोरि ।
पियत कथामृत श्रवण पुट, बढ़त पिपासा मोरि ॥१८॥

सोरठा

दयासिन्धु जगदीश, भस्म महातम कहिय पुनि ।
होत अनीशहु ईश, भस्म विधूलित तनु सविधि ॥३१॥

चौपाई

सुनि शंकर पुनि भाखन लागे भस्म महातम बहुविध आगे
मृण्मय दारव अरु चैलादिक भस्मपात्र भन मुनि मन्वादिक
सुवरण-रजत-रत्न-मय नाना भस्मपात्र भन वेद पुराना
मणि इव भस्महिँ धरिय सुठामा भाखत अस निगमागम ग्रामा
महापाप उपपातक जेते भस्मपरस भस्मीकृत तेते
यती ज्ञान अरु वनी विरागा व्रती वेद आदिक बड़भागा
पावत गृही स्वधर्म समृद्धी भक्ति समिच्छुक भक्ति प्रवृद्धी
एक भस्म धारण कर नाना फल गावत अस वेद पुराना
शूद्र वर्ण सित भसित विभूषित लहत पुण्य कलिदोष अदूषित
पाप पुञ्ज वन वह्नि विभूती साधक सिद्धि समागम दूती
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा यक्ष रक्ष सिद्धादिक जेवा
लोक लोकपति भस्म विधारक भस्म प्रताप विपत्ति विदारक
उमा रमा विधिवामा आदिक भस्म धारिणी मुनि पत्न्यादिक
सविधि विभूति विधारक जोई लहत शिष्ट महँ गणना सोई
धृत विभूति जहँ भोजन करई अवढर ढरन तहाँ हर ढरई
सुख सम्पत्ति विविध विध तहँमा धृत विभूति भोजन कर जहँमा
जसु हिय महँ विभूति अनुरागा जानिय ताहि विप्र बड़भागा

जे विभूति अनुराग विहीना ते चण्डाल सरूप मलीना
जे मम पूजक भस्म विहीना नरक दुःख भोगहिं ते दीना
नहि सुर पितर कर्म अधिकारी भस्महीन जन भन श्रुति सारी
भस्म स्नानापादित शुद्धी आत्मनिष्ठ रति भन कृत बुद्धी
भस्मोद्धूलित सर्व कलेवर भस्म निष्ठ रति भन पण्डितवर
भूतादिक रोगादिक जेते द्रवहिं भस्मनिष्ठहिं लखि तेते
अघभक्षक इति भस्म प्रसिद्धा भासन हेतु भसित भन वृद्धा
भूति हेतुका भूति प्रसिद्धा रक्षणार्थ रक्षा भन वृद्धा
करत अकारज शत शत जोऊ भसितलिप्त तनु पावित सोऊ
मृत्युकाल सित भसित विधारक दुरित दग्ध अपि निज उद्धारक
भस्मदिग्ध तनु श्वानहु मरई योगिगम्य पद करतल करई
सत्कृति विरहित धिक्कृत काला धिक्कृत भसित अभासित भाला
धिक्कृत पतिव्रत विरहित बाला धिक्कृत भसित अभासित भाला
धिक्कृत शिथिल धार करवाला धिक्कृत भसित अभासित भाला
धिक्कृत सरसिज विरहित ताला धिक्कृत भसित अभासित भाला
धिक्कृत अनातिथ्य गृहिशाला धिक्कृत भसित अभासित भाला
धिक्कृत सुनय रहित नरपाला धिक्कृत भसित अभासित भाला
धिक्कृत अ-व्यवहृत मणिमाला धिक्कृत भसित अभासित भाला
तजि विभूति धारण सत्कर्मा श्रमफल विफल न धर्माधर्मा
अविहित गायत्री उपदेशा भस्म रहित अस श्रुति आदेशा
जिमि द्विजत्व सूचक उपवीता तथा भस्म इति वैदिक गीता

भस्महीन करि सन्ध्यावन्दन प्रत्यवाय भागी इति श्रुति भन
यादृश तादृश भस्म विधारन करत अपावन पावन श्रुति भन
अनुपवीत करि सन्ध्यावन्दन कृत गायत्री जप पुनि पावन
भस्माभाव न प्रतिनिधि होई भाखत व्यासादिक सब कोई
कुल उद्धारक भस्म स्नाता लब्ध तीर्थ फल भन मुनि व्राता
सप्त त्रि पञ्चक कफकृत रोगा चतुःषष्टि मित पैत्तिक रोगा
वातामय असीति परिमाना सकल निवर्तक भस्म स्नाना
जल मज्जन शत गुण फलदाता भस्म स्नान कहत मुनि व्राता

दोहा

कण्ठोपरिधृत सित भसित, दहत कण्ठकृत पाप ।
भुजसंपादित अघ जरत, भुजगत भस्म प्रताप ॥१९॥
हृदयोपरिधृत सित भसित, जारत मानस पाप ।
शिश्न समर्जित अघ जरत, नाभि विभूति प्रताप ॥२०॥
गुद देशस्थित अघ जरत, गुद धृत भस्म प्रताप ।
पार्श्व देशकृत अघ जरत, तद्धृत भस्म प्रताप ॥२१॥
परदारालिंगन विदित, पार्श्व देशकृत पाप ।
पार्श्व देश धृत भसित तसु, नाशक भन श्रुति आप ॥२२॥

सोरठा

नख शिख भस्म स्नान, नखशिख कृत पातक हरत ।
करहु प्रिये अवधान, भस्म कथानक श्रवण महँ ॥३२॥

चौपाई

एक समय मुनिवर दुर्वासा गउ यमलोक साम्ब शिव दासा
धृत रुद्राक्ष भस्म उद्धूलित प्रेमामृत मद लोचन घूर्णित
जय शिव शंकर जय शिव शंकर पुनि पुनि भाखत गौरीवर हर
पितर कव्यवाहादिक जेते अभ्युत्त्थानादिक कृत तेते
यथायोग्य आसन आसीना वार्तालाप कियउ सब नाना
हाहाकार शब्द श्रुतिगोचर भउ गिरिकन्ये तत्र तदवसर
हा हतोस्मि इति भाखत कोई हा दग्धोस्मि कोउ कह रोई
रोवत कोउ होइ अति खिन्ना कृत सर्वाङ्ग छिन्न अरु भिन्ना
करुण शब्द सुनि मुनि करुणाकर पुनि पुनि पूछत भयउ तदवसर
कहहु शब्द यह कस यमराजू हृदय विदीर्ण होत सुनि आजू
सुनि अस भाखत भउ यमराजा करत शब्द यह अघी समाजा
कुण्ड अनेक पाप फल दायक मामक अनुचर दण्ड विधायक
लब्ध दण्ड पापिनकर घोरा श्रुति गोचर मुनिवर यह सोरा
सुनि अस मुनिवर करुणाधामा प्रस्थित भउ अवलोकन कामा
धर्मराज संयमनी स्वामी भउ सानुग मुनिवर अनुगामी
तहाँ अनेक कुण्ड भय दायक लखि कारुण्य विवश मुनिनायक
कुम्भीपाक मुख्यतम कुण्डा देखत भउ मुनि कृत तिरपुण्डा
ब्रह्म–विष्णु–शंकर कर द्रोही गिरत अत्र निष्कारण कोही
जगदम्बिका विनिन्दक जेते उचित दण्ड यहँ पावहिँ तेते
गणपति–सूर्य विनिन्दक जेते उचित दण्ड यहँ पावहिँ तेते

ब्राह्मण वेद विनिन्दक जेते उचित दण्ड यहँ पावहिँ तेते
मातृ पितृ गुरु निन्दक जेते उचित दण्ड यहँ पावहिँ तेते
धर्म विनिन्दक धृत पाखण्डा पावहिँ यहाँ यथोचित दण्डा
कामाचार तप्त मुद्रांकित लहहिँ दण्ड यहँ मूढ अशंकित
मुनिवर पापिनकर गति एहू शोधन हेतु न कछु सन्देहू
सुनि यमराज वचन अस मुनिवर भउ करुणा परवश करुणाकर
कुण्ड समीप जाय मुनिराजू लखे अधोमुख अघी समाजू
पायउ पापी निकर परम सुख भउ विस्मृत यमदण्ड जनित दुख
इत उत धावहिँ गावहिँ गाना नृत्य करहिँ उन्मत्त समाना
अट्टहास करि करि करतल धुनि करहिँ हर्ष निर्भर मन पुनि पुनि
स्वर्गाधिक सुख पायउ सबही लखे अधोमुख मुनिवर जबही
बाजत वीण मृदंग मधुर सुर उत्सवमय भउ वैवस्वतपुर
चकित चित्त मुनिवर लखि भयऊ सौरभनिलय पवन बनि गयऊ
संयमनी पति अति घबराये सुनि ब्रह्मादि देवता धाये
गरुड़ारूढ़ रमापति आये ग्रहगण दिक्पतिगण सुनि धाये
सपत्न्यर्षादिक मुनिगण आयउ लखि अद्भुत थिति विस्मय पायउ
सिद्ध साध्य किन्नर गन्धर्वा यक्ष रक्ष नागादिक सर्वा
भयउ चकित अति बढ़िबढ़ि आगे किमिदं किमिदं भाखन लागे
भयउ नरक महँ हर्ष प्रवाहा कोउ न कहि सक कारण काहा
भयउ पातकी विगत विषादा भउ विच्छिन्न वेद मर्यादा
दण्डनीय पापी करि पापा करि सत्कर्म सुखी निष्पापा

ईश्वर नियम भग्न भउ कैसे शीतल वह्नि उष्णजल जैसे
लखि अद्भुत गति खगपतिकेतू आयउ द्रुतगति मोर निकेतू
दरस पाय अतुलित सुख पाये नति नुति तत्पर शीश नवाये

दोहा

तुअ समेत मम दरस ते, मुरहर पुलकित गात ।
सुख नीरधि विनिमग्न मन, दशा बरनि नहि जात ॥२३॥

सोरठा

कथमपि लक्ष्मीनाथ, लहि प्रबोध भाखत भयउ ।
होत अनाथ सनाथ, राउर कृपा कटाक्ष ते ॥३३॥
राउर कृपा प्रसाद, त्रिभुवन रक्षण दक्ष हम ।
विगत भयउ अवसाद, राउर पद रज परस ते ॥३४॥

चौपाई

शिष्य कथा सुनि अति हरषायउ गुरु पद पंकज शीश नवायउ
प्रभु सर्वज्ञ परम सुख परसी करामलक इव श्रुति पथ दरसी
प्रभु वचनामृत जलधि निमज्जन करत कृतारथ भविता सज्जन
हरिहिं सत्त्व गुणमय श्रुति गावत हरहिं तमोमय सोइ सुनावत
हरहिं प्रणाम कियउ श्रीविष्णू विश्वम्भर मधु कैटभ-जिष्णू
कथा प्रसंग सुनायउ पुनि पुनि अचरज भासत मनमहँ सुनिसुनि
सुनि सस्मित मुख भयउ निरञ्जन कियउ निमीलित लोचन खञ्जन
सुमिरि साम्बशिव पद अरविन्दा पावन प्रेम पराग मिलिन्दा
समीचीन प्रश्नोत्तर भाखे तत्त्व रहस्य गोइ नहि राखे

विधि हरि हर महँ भेद न कोई मानत भेद पातकी होई
उत्पति-थिति-हति-कारज-हेतू विधि-हरि-हर तनु भउ वृषकेतू
जिमि याचक पाचक अध्यापक केवल नाम भेद अनुमापक
तिमि ब्रह्मा-हरि-हर महँ तात्त्विक भेद न मानत कछु वेदान्तिक
सर्वशक्तिमय ईश्वर नामा अद्वय वस्तु अमेय अनामा
निराकार निर्गुण प्रभु जोई माया कलित तीन तनु सोई
स्वर्णकार कृत कञ्चन एका काञ्ची कुण्डल कनक अनेका
अविकृत थिति समुपस्थित जबही एकी भाव उपस्थित तबही
माया शबलित चेतन जोई परमेश्वर नामा प्रभु सोई
पुरुष नाम तसु शास्त्र प्रसिद्धा माया तासु प्रकृति भन सिद्धा
दक्षिण अंग समुद्भव तासू विदित चतुर्मुख नाम विकासू
वाम अंगते प्रकटित तासू विदित चतुर्भुज नाम विकासू
भयउ बहुरि प्राकृतिक विकासू पूर्वोदित क्रम उद्भव जासू
प्रकृति जनित प्राकृतिक ललामा ब्राह्मी और वैष्णवी नामा
ब्रह्मा सृष्टि कर्म अधिकारी त्राण परायण देव मुरारी
महाकाल त्रिभुवन संहर्ता अपर रूप धरि कर्ता धर्ता
अतनु तीन तनु एकहि काला श्रुतिमुख श्रुतिभुज अरु शशिभाला
असमञ्जस मानहिँ अनभिज्ञा कहहिँ समञ्जस जे जन विज्ञा
होहिँ सिद्धजन बहुवपु धारी एक समय बहु देश मझारी
यह योगज घटना परसिद्धा जानहिँ मानहिँ जे जन सिद्धा
योगाराध्य योग फल दायक जासु शक्ति ब्रह्माण्ड विधायक

एक समय तसु रूप अनेका नहि संभव इति मति अविवेका
उत्कर्षापकर्ष कस जहँ तहँ भाखहिँ नाना मुनिजन उनमहँ
उत्तर समीचीन तसु ताता कहौँ यथा भाखत मुनि व्राता
सात्त्विक राजस तामस भावा तत्कृत रुचि वैचित्र्य स्वभावा
तत्तन्निष्ठा दृढ़ता कारण उत्कर्षापकर्ष अवधारण
वासुदेव शिव विद्या आदिक परब्रह्म वाचक रामादिक
विष्णु इन्द्र चन्द्रादिक जेते परब्रह्म प्रतिपादक तेते
धातु अर्थ अरु शब्द स्वरसकृत एतदर्थ वेदान्त समादृत
वत्स परम प्रिय शिव इति शब्दा जिमि वर्षा ऋतु नूतन अब्दा
शिव पद कल्याणार्थक रूढ़ा कल्याणेच्छु तरुण शिशु बूढ़ा
जो शिव मृत्युञ्जय परसिद्धा मृत्यु जयेच्छुक सिद्ध असिद्धा
सिद्ध असिद्ध होय जो कोई शिव सेवक मृत्युञ्जय होई
मार्कण्डेय विदित अल्पायू शिव सेवा करि भयउ चिरायू
आयउ अन्तक अवसर देखी धारे शिरपर पद सो पेखी
मन्दभाग्य तेहि जानहु ताता जो न भजत प्रभु पद जलजाता
विनु हरभक्ति न हरिपद भक्ती विनु हरभक्ति न रीझहिँ शक्ती
विनु हरभक्ति न पाइय ज्ञाना ज्ञान विना दुर्लभ निर्वाना
जननी जनक धन्य तसु ताता जो सेवत प्रभु पद जलजाता
विविध वाहनारूढ़ देवगन वृषभारूढ़ प्रसिद्ध त्रिपुरहन
शंकर वृषभ धर्म परसिद्धा धर्मारूढ़ प्रभुहिँ भन सिद्धा
शिवाधीन जानहु सब धर्मा शिव शिव विलपत नसत अधर्मा

मार्ग अनेक गम्य थल एका एक मूल शाखादि अनेका
उपजत क्रमिक सत्त्व उद्रेका तँदनुसार यतमान विवेका
वेद वाक्य अद्वैत प्रतिष्ठा सोपानोपम बहु विध निष्ठा
कर्मठ कोइ उपासक कोई कोउ भाग्यवश ज्ञानी होई
लगन होय यदि कथमपि तहँमा पहुँचत मूल ठिकाना जहँमा
जन्य जनकता विधि हरि हरमहँ श्रुतिगत कालभेद कृत तहँ तहँ
मायाकृत नाना विध भावा वास्तव सम-रस-रूप-स्वभावा
कारज अवसर जस जस जब जब होत अवस्था तस तस तब तब
कबहुँ पुरुष अरु नारी कबहूँ वास्तव केवल चिन्मय तबहूँ
दीखत एकरूप बहु रूपा अभिनय कारण विविध सरूपा
वास्तव एक रूपही तबहूँ आपामर जन जानत सबहूँ
शिव भज शैव शाक्त भज शक्ती वैष्णव करत विष्णुपद भक्ती
सौर गाणपत्यादिक केते रुचि अनुरूप उपासक तेते
व्यक्तहिँ मानहिँ जे अव्यक्ता होहिँ व्यक्त तनु तजि अव्यक्ता
यत् किञ्चित् सचराचर लोका मानि ब्रह्म तनु होहिँ विशोका
बुद्बुद वीची आदिक जेते जल अतिरिक्त वस्तु नहि तेते
क्षोभ समय नाना विध रूपा विगत क्षोभ पुनि सौम्य सरूपा
जीवन्मुक्ति यावदारब्धा तदनन्तर केवलपद लब्धा

दोहा

दिग्दर्शन करि कछुक हम, कियउँ तत्त्व उपदेश ।
एतद् भावुक भक्तकर, मिटत अशेष कलेश ॥२४॥

सोरठा

करत भयउ गुरुदेव, प्रकृत कथा वर्णन बहुरि।
शिवहिँ सुमिरि स्वयमेव, अनुकम्पा प्रेरित हृदय ॥३५॥

चौपाई

विष्णु वचन सुनि शंकर स्वामी लागे भाखन अन्तर्यामी
अचरज कछुक न मानहु विष्णो एतद्धेतु कहौं सुरजिष्णो
भसम महातम को कहि सकई सहस वदन अपि कहिकहि थकई
भसम प्रसाद होय नहि काहा जाते नसत त्रिविध अपि दाहा
कुम्भीपाक विलोकन कारण गउ मुनिवर कृतभसित विधारण
अधोवदन अवलोकत भयऊ तहाँ विभूतिकणा उड़ि गयऊ
कुम्भीपाक स्थित जत पापी भसम परस ते भयउ अपापी
दुर्वासा धृत भस्म प्रसादा भयउ नारकी विगत विषादा
अद्यारभ्य नरक तेहि ठामा भयउ पितर तीरथ अभिरामा
कर्मठ पितृलोक जे जैहैँ करि मज्जन तहँ अति सुख पैहैँ
धर्मकुण्ड भउ कुम्भीपाका रमारमण अस भस्म विपाका
मोर लिंग पित्रीश्वर नामा थापनीय तहँ सुखद ललामा
पित्रीश्वरी थापिता तहँमा परिपूजक सुखदा सब ठामा
अस कहि मौन भयउ गंगाधर प्रणमि कियउ प्रस्थान चक्रधर
अस कहि मुनिवर भाखन लागे प्रभुपद पद्म प्रेम परि पागे
भसम कथानक सुनि गिरिकन्या भई मुदितमन त्रिभुवन धन्या
कही पाय विस्मय आवेशा नाथ जीव कस लहत कलेशा

कस विभूति सेवन तजि लोका पावत इत उत पुनि पुनि शोका
सुनि गौरीवर उत्तर दियऊ बिहँसि प्रेयसी कर धरि लियऊ
प्रिये न सुलभ विभूति विधारण सुलभ न प्रिये शैव मत धारण
कोटि जन्म करि पुण्य अनन्ता मोर प्रेम तव पावहिं सन्ता
उपजत भस्मनिष्ठ रुचि ताही होत पुण्य पुञ्जोदय जाही
उपजत ममकीर्तन रुचि ताही होत पुण्य पुञ्जोदय जाही
उपजत सत्संगति रुचि ताही होत पुण्य पुञ्जोदय जाही
वाराणसी वास रुचि ताही होत पुण्य पुञ्जोदय जाही
शिवरात्रि व्रत अभिरुचि ताही होत पुण्य पुञ्जोदय जाही
भस्म महातम वर्णन . पारा लहि न सकौं कहि वर्ष हजारा
होय न सान्त अनन्त पदारथ गगन अन्त किमु लह पुष्पक रथ
जो यह कहै सुनै मन लाई तसु हिय भसित भक्ति अधिकाई
भस्म कथानक देवि अनेका अति आश्चर्य एक ते एका
संक्षेपित क्रम तोहि सुनाये जाबालादि विप्र जस गाये
दिग्दर्शन ते लहहिं विवेकी जिनकर हृदय मोह नहि छेकी
सुन्दरि सुनन चहहु अब काहा सदुपदेश सद्गतिकर राहा

दोहा

भईं गिरिजा अति मुदितमन, सुनि प्रियतम प्रिय बैन ।
पुलकित तनु गद्गद वचन, स्रवत प्रेम जल नैन ॥२५॥
कहत भईं कर जोरि युग, सुनि प्रभुकृत उपदेश ।
आपामर जन लहत सुख, विनसत कठिन कलेश ॥२६॥

सोरठा

सुनन चहौँ अब नाथ, परम पुण्य रुद्राक्ष विधि।
जाते होहिँ सनाथ, अल्पबुद्धि जड़ जीव अपि ॥३६॥

चौपाई

सुनि शंकर गिरिजा मृदुबानी दीन दयानिधि त्रिभुवन दानी
प्रिये कहौँ रुद्राक्ष महातम जासु नाम सुनि कम्पित तनु यम
भूत प्रेत दुष्टग्रह आदिक डरहिँ जाहि लखि वेतालादिक
महापाप उपपातक जेते भागहिँ द्रुत रुद्राक्ष धरे ते
अब रुद्राक्ष विधारण संख्या भाखौँ यत्कृत पुण्य असंख्या
कण्ठ देशमहँ बत्तिस दाना चालिस मस्तक देश बखाना
उभय कर्ण महँ षट् षट् दाना कर युग द्वादश युग परिमाना
षोड़स षोड़स बाहु देश महँ एक एक दृग एक शिखा जहँ
हृदय देश अष्टोत्तर दाना धारण आगम निगम बखाना
एतत् संख्यक धारणकारी रूप हमार गिरीन्द्रकुमारी
हमहिँ ताहि कछु अन्तर नाहीँ अस निश्चय मानहु मन माहीँ
स्वर्णबद्ध रुद्राक्ष विधारन रजत बद्ध वा भाखत मुनिगन
धारण मन्त्र पञ्च अक्षर शुचि अथवा प्रणव मात्र श्रुति अभिरुचि
श्रद्धा निर्मल भक्ति अपेक्षित धारण विधिमहँ छल अनपेक्षित
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य समन्त्रक धारण अधिकृत इतर अमन्त्रक
चतुर्वर्ण चतुराश्रम जेते एतद्धारण अधिकृत तेते
कृत रुद्राक्ष विधारण जोई करत पाप तल्लिप्त न होई

यदि सर्वथा होय नहि धारण विधि संक्षिप्त करहु अवधारण
द्विज यज्ञोपवीत महँ धारण करै तथा अपि नरक निवारण
अथवा नारी धरै एक अपि यदि द्विजपत्नी पञ्चाक्षर जपि
वाम बाहु महँ कर महँ यद्वा द्विज दक्षिण कर भुज महँ यद्वा
अथवा कण्ठ देश अपि एका धारणीय अस शास्त्र विवेका
जो रुद्राक्ष रहित तनु होई शत शत धिक्कृति भाजन सोई
जो रुद्राक्ष विधारणकारी ताहि रुद्र इति भन श्रुति चारी
जे रुद्राक्ष विधारण करहीं शिव अवबोध पाइ भव तरहीं
गंगा मज्जन सम फल लहई कोटि जन्म कृत पातक दहई
धारि एक रुद्राक्ष शिखा महँ वारुण मज्जनकारी जहँ तहँ
धृत रुद्राक्ष शिखा च्युत वारी गंगोदक असपरधाकारी
जे रुद्राक्ष विधारण लज्जित होहिँ न होहिँ भवाब्धि अमज्जित
लहहिँ जन्म सांकर्य विनिश्चय धृत रुद्राक्ष विनिन्दक अघमय
धृत रुद्राक्षहिँ अन्नाच्छादन देइ वसत मन्दर गिरि कानन
प्रथम पंक्ति महँ गणना तासू हिय रुद्राक्ष समादर जासू
धृत रुद्राक्षहिँ भोजयिता जे श्राद्ध दिवस पितृपुर गमिता ते
गन्ता दाता अन्न गमयिता अति रहस्य मत यह अपि दयिता
धृत रुद्राक्ष पादक्षालन जल पियत पुण्य शिवलोक वास फल
कथमपि करि रुद्राक्ष विधारण लहत परम सुख श्रुति निर्धारण
भक्त अभक्त समन्त्र अमन्त्रा धृत रुद्राक्ष मुक्त भन तन्त्रा
लज्जावश भयवश वा होई धृत रुद्राक्ष सुखी सब कोई

कहँ लगि वरणौं देवि महातम धृत रुद्राक्ष प्राणसम प्रिय मम
प्रश्न कियउ तब गिरिवर कन्या पति प्रति पति प्रेयसी सुधन्या
कहिय प्राणपति कारण काहा कहि प्रियतम रुद्राक्ष सराहा
राउर प्रीतिपात्र कस सोऊ अति प्रशस्त श्रुतिगण महँ जोऊ
प्रश्न सुनत प्रभु प्रमुदित भयऊ मीलित युगल नयन ह्वै गयऊ
प्राक्तन कथा सुनावन लागे निरखि प्रिया श्रवणोत्सुक आगे
एक समय सुरगण मम पासा आयउ लहि त्रिपुरासुर त्रासा
विविध उपद्रव त्रिपुरासुर कृत सुनि भउ हिय करुणा रसमय द्रुत
भयउ हमहिँ चिरकालिक ध्याना रहा न कछुक बहिर्गत ज्ञाना
लोचन श्रवित भयउ जलधारा जिमि असरेस वारि आसारा
लोचन श्रवित भयउ जलधारा कामुक हिय जिमि काम पसारा
लोचन श्रवित भयउ जलधारा जिमि योगज आनन्द अपारा
भउ रुद्राक्ष वृक्ष जल बिन्दू शशिलोचनज धवल जिमि इन्दू
धवल वर्ण षोड़श परकारा श्रुतिगत जसु वर्णन विस्तारा
सूर्य नेत्र भव द्वादश भेदा कपिल वर्ण तसु भाखत वेदा
कृष्ण वर्ण पावक नयनोद्भव भन दश विध कालिन्दी तट भव
श्वेत वर्ण सो ब्राह्मण वर्णा कपिल वर्ण पुनि क्षत्रिय वर्णा
शूद्र वर्ण तहँ श्यामल वर्णा वर्णित एतद्रूप त्रिवर्णा
जप अरु ध्यान हीन जन जोऊ धृत रुद्राक्ष सिद्ध शुचि सोऊ
परमानन्द परम पद पावत व्यासादिक मुनिवर अस गावत
अष्टोत्तरशत दाना माला उर धरि यमवञ्चक गिरिबाला

क्षण क्षण अश्वमेध फल लहई धरि उर महँ माला श्रुति कहई
उत्कर्षापकर्ष विज्ञाना यथावर्ण तसु वेद बखाना
एक वक्र मम तनु भन सिद्धा हरत ब्रह्मवध पाप प्रसिद्धा
मोर तोर तनु द्विमुख प्रसिद्धा महा पाप उपपापह सिद्धा
त्रिमुख हुताशन रूप प्रसिद्धा योषिद्वध अघ हन भन सिद्धा
चतुर्वक्र श्रुतिवक्र प्रसिद्धा पुरुष हनन अघ हन भन सिद्धा
पञ्चवक्र कालाग्नि रुद्र तनु अघ अभक्ष्य भक्षण जो हन भनु
अगमनीया गमन पाप जो नाशत सब अघ पञ्चवदन सो
षण्मुख षण्मुख रूप प्रसिद्धा ब्रह्मवधादि अघापह सिद्धा
दक्षिण कर महँ एतद्धारन भाखत धर्म धुरन्धर मुनि जन
सप्तानन अनंग तनु जानहु स्वर्णचौर्य पापापह मानहु
अष्ट वक्र गणपति तनु जानहु अन्न तूल छल अघ हन मानहु
सुवरन छल गुरुपत्नी गमना दुष्कुल जात कामिनी रमना
एवंविध दुरितौघ नसाहीं धरि अष्टास्य प्रिये तनु माहीं
नाना विध विघ्नौघ नसाहीं धरि अष्टास्य प्रिये तनु माहीं
लहहिं परमपद अन्तिम काला सुनहु अष्टमुख फल गिरिबाला
भैरव रूप नवानन जानहु भुक्ति-मुक्ति-प्रद गिरिजे मानहु
वाम हस्त महँ तासु विधारन भाखत पौराणिक द्वैपायन
होत हमार सरिस बलवन्ता प्रिये नवानन धारक सन्ता
सहस भ्रूणवध शत ब्राह्मणवध नवमुख सद्यःकरत तदघ वध
दशमुख देव जनार्दन जानहु अतुलित महिमा ताकर मानहु

ग्रह वेताल पिशाच उरग गन डाकिन्यादि ब्रह्म राक्षस गन
दशमुख निरखत भागहिँ कैसे लखि पञ्चानन मृगगण जैसे
एकादश मुख रुद्रैकादश व्यासादिक मुनि गावत जसु यश
शिखा देश महँ तासु विधारन अति प्रशस्त भाखत द्वैपायन
करि हयमेध सहस फल यादृश धरि एकादश मुख फल तादृश
वाजपेय शत करि फल यादृश धरि एकादश मुख फल तादृश
शत सहस्र गोदानज यत् फल धरि एकादश आनन तत् फल
द्वादश वासरमणि द्वादश मुख तद्धारणकृत लब्ध विविध सुख
तद्धारणकृत रवि परितोषा करत शान्त कफ आदिक दोषा
वाजिमेध गोमेध याग फल तद्धारणकृत हरत हृदय मल
शृंगि शस्त्रि व्याघ्रादि भयापह आधि व्याधिहर परम सुखावह
बड़ लघु जन्तु हननकृत पापा द्वादश मुख हरि हरत त्रितापा
सिद्ध होत रस सहित रसायन धरि द्वादश मुख भन द्वैपायन
अहह त्रयोदश मुख यदि लहई गुह समता पावत श्रुति कहई
लहै चतुर्दश मुख यदि कोई मत्समता पावत जन सोई
जे प्रतीति या महँ नहि करिहैँ असिधारा नरकहिँ ते परिहैँ
यथा तथा रुद्राक्ष एक अपि धारणीय इति भाखत श्रुतिरपि

दोहा

पुनि रुद्राक्ष विधान शुचि, भाखौँ वेद प्रमाण ।
जाते इत उत हस्तगत, नाना विध कल्यान ॥२७॥

सोरठा

एतत् सदृश न आन, साधन कोउ गिरिसुते ।
भाषण मोर प्रमान, मम वचनानुग निगमगण ॥३७॥

चौपाई

जपमाला लक्षण पुनि भाखौँ गोपनीय अपि गोपि न राखौँ
रुद्राक्षानन श्रुतिमुख रूपा बिन्दु तासु श्रीरुद्र सरूपा
परम पुण्य उत्पादक दरशन परसन तासु विदित अघमरषन
दर्शन कोटि गुणित परसन फल परसन कोटि गुणित धारण फल
धारण कोटि गुणित श्रुत जप फल हरत अकाम जाप मानस मल
हरत अकाम परस वाचिक मल हरत अकाम दरस कायिक मल
हस्त कण्ठ उर श्रुति मस्तक तल धरि रुद्राक्ष रुद्र तनु ता फल
सर्वावध्य रूप सो होई धृत रुद्राक्ष उक्त विधि जोई
होत सुरासुर वन्द्य पाद सो धृत रुद्राक्ष उक्त विधि जन जो
अपि उच्छिष्ट विकर्मनिष्ठ अपि धृत रुद्राक्ष पवित्र दुष्ट अपि
धृत रुद्राक्ष मरै यदि कूक्कुर निर्विवाद पहुँचत सो मम पुर
कुक्कुर जाति बीच फल ईदृक् धृत रुद्राक्ष मनुज महँ कीदृक्
होत एकविंशति कुल तारक पुण्य उदय रुद्राक्ष विधारक
अष्टोत्तर शत पञ्चाशत वा सप्ताधिक विंशति मित यद्वा
एतन्माला धारण जपकृत् पावत फल अनन्त भन श्रुतिवित्
पुत्रजीव आदिक जत माला नहि रुद्राक्ष सरिस गिरिबाला
षोड़श कला तुल्य तसु नाहीँ अस निर्णय निगमागम माहीँ

सकल ग्रहनमहँ जिमि ग्रहपति रवि नीति कुशलमहँ जिमि भार्गव कवि
नदियन महँ जिमि सुरसरि गंगा हय महँ उच्चैःश्रवा तुरंगा
मुनियन महँ जिमि कश्यप नामा देवन महँ पशुपति अभिरामा
देविन महँ जिमि तुम गिरिकन्या भक्तिन महँ जिमि भक्ति अनन्या
सेनानी महँ कार्तिकेय जस रण महँ राम दशानन रण जस
मणियन महँ रुद्राक्ष वरिष्ठा भन अस मुनिजन ज्ञान गरिष्ठा
नातःपरतर साधन कोई नातःपरतर पावन कोई
नातःपरतर प्रिय मम कोई धृत रुद्राक्ष भस्म जन जोई
धिक्कृत भसित विहीन कपाला धिक्कृत अशिवार्चन गृहिशाला
धिक्कृत उर रुद्राक्ष विहीना धिक्कृत त्यक्ताचार कुलीना
धिक्कृत मुख शिव शब्द विहीना धिक्कृत धनी विमुख लखि दीना
धिक्कृत धर्मी दम्भ मलीना धिक्कृत जीवन नीच अधीना
वक्र वक्रते पुच्छ पुच्छ ते योजनीय श्रुतिवचन गुच्छ ते
मेरु ऊर्ध्वमुख ग्रन्थि समन्वित एवंविध माला भन श्रुतिवित्
प्रक्षालन सुगंध शुचि जलकृत मूलमन्त्र कृत न्यास बुधोदित
शिव षडंग गत अस्त्र मन्त्रकृत परस तासु निगमागम बोधित
कवच मन्त्र ते करिय इकत्रित मूलमन्त्र विन्यास पुनः कृत
सद्योजातादिक कृत प्रोक्षण अष्टोत्तर शत जप अघ मोक्षण
मूलमन्त्र पढ़ि शुचिथल थापन तदुपरि सोम शंभु प्रति थापन
एवंरूप प्रतिष्ठित माला सिद्धि दायिका भन श्रुतिजाला
मूर्द्ध कण्ठ वा कर्ण प्रदेशा जपमाला धारण आदेशा

मज्जन दान होम जप अवसर भन रुद्राक्ष धारणा मुनिवर
वैश्वदेव सुर पूजन अवसर भन रुद्राक्ष धारणा मुनिवर
प्रायश्चित्त श्राद्ध दीक्षा जब भन रुद्राक्ष धारणा श्रुति तब
विनु रुद्राक्ष श्रौत कारज कृत गिरत नरकमहँ भनइतिश्रुतिवित्
मल अरु मूत्र विसर्जन अवसर भन रुद्राक्ष अधारण मुनिवर
भोजन मैथुन समय न धार्या शुचि रुद्राक्ष कहहिँ मुनि आर्या
अनघ करत अघ धृत रुद्राक्षा भन जाबालि व्यास समकक्षा
तदपि न धरै अशुचि जन एहू श्रुति शासन अस नहि सन्देहू
भक्तियुक्त ह्वै धारण समुचित यदपि अभक्तहु नहि फलवञ्चित
रुद्र अक्ष तरु मारुत परसी तृण अपि नन्दन वन सुखदरसी
शिव शिव शिव उच्चारण कर्ता रुद्रअक्ष सित असित विधर्ता
वैष्णव एव न कछु सन्देहू हम हरि एक अभिन्न अदेहू
पापी अपि रुद्राक्ष विधारक तनु तजि होत आत्म उद्धारक
हिय महँ जस रुद्राक्ष सिनेहा लह धारण फल नहि सन्देहा
पण्डित अथवा मूरुख होऊ सुन्दरि धर्मी पापी जोऊ
उद्यमशील अनुद्यमशीला धृत रुद्राक्ष मुक्त भवलीला
सुनहु प्रिये इतिहास पुरातन भाखत भयउ पतित जन पावन
गर्दभ कीकट देश निवासी पायउ गति जिमि तीरथवासी

दोहा

प्रभु पद पंकज परसि युग, भाखी अचल कुमारि ।
अचरज भासत प्रभु कथन, गर्दभ जाति विचारि ॥२८॥

सोरठा

परम अपावन देश, कीकट देश प्रसिद्ध अति ।
जहँ मृत नाना क्लेश, भोगत शास्त्र निदेश अस ॥३८॥
करि पुरहर मृदु हास, कहत भयउ सुन्दरि सुनहु ।
करौं रहस्य प्रकास, श्री रुद्राक्ष प्रभावकर ॥३९॥

चौपाई

धृत रुद्राक्ष भार खर एका श्रमवश गिरत भूमितल टेका
भूतल पतित कलेवर त्यागा पहुँचा मन्दर गिरि बड़भागा
प्रमथ बीच भउ गणना तासू अस रुद्राक्ष प्रभाव प्रकासू
अपर कथा पुनि सुनहु भवानी श्रीरुद्राक्ष महातम सानी
भउ गिरिनाथ नाम द्विज कश्चित कोसल देशी परम विपश्चित
धार्मिक धनी विविध मख कर्ता दीनदयालु दीन दुख हर्ता
गुणनिधि नाम भयउ सुत तासू दुराचार गनि सकिय न जासू
मुक्तावली नाम गुरु दारा मोहित कियउ अनेक प्रकारा
सौभगमद यौवनमद धनमद विवश होइ को बचत निरापद
गुरु पत्नीगामी हतभागा काम अन्ध लज्जा भय त्यागा
विष प्रयोग करि गुरु कहँ मारा त्यागि दियउ कर्तव्य विचारा
मोह विवशकृत विविध विलासा परिहरि रौरवादिकर त्रासा
जब जननी जनकहिँ भउ ज्ञाता सुत दुश्चरित विश्व विख्याता
विष प्रयोग तब कियउ अभागा जाते मातु पिता तन त्यागा

उपजत कुत्सित सुत कुल जाकर कुल कालिमा माथपर ताकर
सुत अजात अरु मृत अपि जोऊ कुत्सित सुतते सुखप्रद सोऊ
पुनि पुनि उपजावत संतापा मोहमत्त सुत अतुलित दापा
लहहिँ पितरगण दुर्गति ताकर उपजत कुलकलंक सुत जाकर
पैतृक द्रव्य अपव्यय माहीँ भयउ विनष्ट रहा कछु नाहीँ
करत भयउ तब तस्कर वृत्ती अति लम्पट सो पाप प्रवृत्ती
भउ नित मदिरा मत्त अभागा जाति बन्धु सहभोजन त्यागा
जाति बहिष्कृत गउ सो कानन गुरु पत्नी समेत शठ निर्धन
दस्यु वृत्ति अरु तस्कर वृत्ती भयउ ब्रह्मवध विषय प्रवृत्ती
पापपुञ्ज सञ्चय करि मूढ़ा दुःकृति करत करत भउ बूढ़ा
काल पुरुष तब आयउ तहँमा पहुँचि गयउ जब अन्तिम लहमा
सूक्ष्म कलेवर उपहित चेतन लखि यमदूतहिँ भयउ अचेतन
द्रुत शिव दूत वीर तहँ पहुँचे निरखि ताहि यमदूत न सकुचे
उभय दूत महँ भउ संवादा नाना भाँति वाद प्रतिवादा
यह पातकी नरक अधिकारी आजीवन अघ सञ्चयकारी
कौन हेतु आयउ यहँ आपू अस कहि तासु सुनायउ पापू
सुनि यमदूत वचन शिवदूता कहे पतित अपि यह परिपूता
एतत् प्राण वियोग भयउ जहँ अधो देश दश हस्त प्रमित तहँ
श्रीरुद्राक्ष भाग्यवश अहई कहहु अधोगति कस यह लहई
अति पवित्र रुद्राक्ष प्रतापू तहँ अनुचित यमकिंकर दापू
चढ़ि विमानसो गउ शिवलोका महापातकी भयउ विशोका

छन्द

अपरिमित रुद्राक्ष महिमा सहसमुख नहि कहि सकै ।
तहाँ लघुमति सत्य कवि कस भारती अटपट बकै ॥
कियउँ तथपि तदीय वर्णन यथामति जस श्रुति कहै ।
सुनि सुनाय प्रसंग शुचि यह परम सुख इत उत लहै ॥

दोहा

निगमागम भाषण करत, यत्कृत पुण्य प्रभाव ।
निदरत ताहि अभाग्यवश, कलिकलुषित हृद्भाव ॥२९॥

सोरठा

पतित पुञ्ज सिरताज, गुणनिधि जाते तरि गयउ ।
ताको निदरत आज, मोह विवश दुर्भाग्य वश ॥४०॥

चौपाई

रुद्र अक्ष धात्री फल परिमित भन सर्वोत्तम निगमागमवित
रुद्र अक्ष बदरी फल परिमित भन मध्यम व्यासादि तत्त्ववित
रुद्र अक्ष चणमात्र अधम भन जाबालादिक वैदिक मुनिगन
रुद्र अक्ष सित ब्राह्मण वर्णा रक्त पीत क्रमगत युग वर्णा
असित शूद्र इति श्रौत विनिर्णय एतादृश निगमागम आशय
ब्राह्मणादि धवलादिक वर्णा धरैं यथोदित निज निज वर्णा
सम अरुक्ष दृढ़ कंटक युक्ता शुभ रुद्राक्ष श्रुति स्मृति उक्ता
रुद्रअक्ष क्रिमिदष्ट निषिद्धा छिन्न भिन्न अपि अशुभ प्रसिद्धा
कण्टक रहित अशुभ भन मुनिजन गिरिवरनंदिनि निगमागमगन

व्रणयुत अरु आवरण विहीना भाखहिँ अशुभ रहस्य प्रवीना
पढ़ि ईशान मन्त्र शिर ऊपर पढ़ि तत्पुरुष मन्त्र श्रवणपर
मूर्द्धदेश पढ़ि मन्त्र अघोरा धारिय करत वेद अस सोरा
पढ़ि अघोर पुनि हृदय प्रदेशा धारिय अस श्रुति निकर निदेशा
बीज अघोर मन्त्र पढ़ि कर महँ धारणीय इति सम्मति जहँ तहँ
वर्जित मद्य मांस लशुनादिक धारण महँ भन मुनि व्यासादिक
जो अभक्ष्य भक्षण परिहरई रुद्रअक्ष सो धारण करई
यद्यपि पाप करत अपि पापी रुद्रअक्ष धारक निष्पापी
तदपि शास्त्र मर्यादा एहू रक्षणीय नहि कछु सन्देहू
विषुव अयन संक्रमण ग्रहण दिन अमा पूर्णिमा विदित पर्वदिन
रुद्रअक्ष धारण जौं करई पाप पुञ्ज ताकर डर डरई
पातक अरु उपपातक जेते तथा महापातक अपि तेते
धरि रुद्राक्ष उक्त वासर महँ नष्ट होहिँ इति सम्मति जहँ तहँ
धारि यज्ञउपवीताकारा रुद्रअक्ष उतरत भवपारा
द्विसर त्रिसर माला उर धारक पूजनीय जिमि शूल विधारक

दोहा

रुद्रअक्ष महिमा अमित, कहँ लगि भाखौँ देवि ।
धृत रुद्राक्षहिँ जगदुदधि. पार लगाऊँ खेवि ॥३०॥

सोरठा

सत्य वचन यह मोर, धारणीय रुद्राक्ष नित ।
सुख दुख बन्धन डोर, टूटत धृत रुद्राक्ष कर ॥४१॥

चौपाई

सुनि यह वचन हिमालय कन्या भईं मुदित मन त्रिभुवन धन्या
पुनि पुनि प्रभुपद पद्म निरीक्षण करत भईं पुनि पुनि मुख वीक्षण
भाखत भईं मनोहर वयना हर्ष अश्रु परिपूरित नयना
सुनत कथामृत होत न तृप्ती पुनि पुनि बाढ़त श्रवण प्रवृत्ती
सुनन चहौं प्रभु दान विधाना वर्णन जासु करत श्रुति नाना
दुर्गत नाशन दान प्रसिद्धा भाखत निगमागम मुनि वृद्धा
कौन दान करि लभ्य कौन गति श्रवणोत्कण्ठा इति प्रियतम अति
कहत भयउ तब चन्द्रविभूषण गंगाधर पुरहर अहिभूषण
प्रश्न विश्व हितकारक एहू प्रश्न प्रयोजक प्रजा सिनेहू
दान धर्म निगमागम सम्मत वयोवृद्ध मत बुद्धि वृद्ध मत
गिरिवर पुत्रि यथोदित भाखौं गोपनीय कछु गोइ न राखौं
चन्द्रलोक पावत कन्याप्रद यदि निःकाम लहत मुरहर पद
मन्वन्तर समयावधि वासा तदनन्तर नरलोक निवासा
सालंकार होय यदि कन्या होत द्विगुण फल भन श्रुति धन्या
गोघृत गोपय सुवरन दाता रजत-वस्त्र-फल अरु जल-दाता
चन्द्र लोक महँ तासु निवासा भरि मन्वन्तर विविध विलासा
मर्त्यलोक पुनि जनमत सोई यदि निष्काम हृदय नहि होई
स्वर्ण अलंकृत ताम्र अलंकृत धेनु सवत्सा रजतालंकृत
विप्रहिं दान देत जो कोई सूर्यलोक चिर निवसत सोई
वत्सर अयुत तहाँ करि वासा पुनि पावत नरलोक निवासा

विप्रहिँ भूमि-विपुल धन-दाता वसत सुचिर तहँ निर्मल गाता
करि तहँ सुचिर निरामय वासा पुनि पावत नरलोक निवासा
अनुशय-रहित-हृदय यदि होई श्वेत द्वीप चिर निवसत सोई
यावच्चन्द्र दिवाकर तहँमा निवसत लक्ष्मीपति प्रभु जहँमा
भक्तियुक्त विप्रहिँ गृहदाता परिहरि इत उत यातायाता
विष्णुलोक महँ निवसत सोई अनुशय रहित हृदय यदि होई
गृह रज परिमित वासर सोई निवसत तहँ अनुशय यदि होई
मर्त्य लोक महँ प्रत्यावर्तन होत बहुरि भन वृद्ध पुरातन
सदन दान यद्देव निमित्तक तत्पुर गति भन महामहत्तक
सौध दान महँ पुण्य चतुर्गुण देशदान फल भन श्रुति शतगुण
उत्तमदेशदान फल मुनिजन निगमागम गन भाखत दुइ गुन
करत तड़ागदान जन जोई रेणु मान मित वत्सर सोई
सुचिरकाल जनलोक निवासी होत बहुरि मानव पुर वासी
वापी दान करत जन जोई तद्दश गुण फल पावत सोई
जो दीर्घिका नाम पुष्करणी दान करत जगजीवन सरणी
वापी दान तुल्य फल पावत एतादृश निगमागम गावत
चारि सहस्र धनुष परिमाना भन दीर्घिका दैर्घ्य मुनि नाना
तत्सम प्रस्थ न्यून वा प्रस्था तदा दीर्घिका कथन व्यवस्था
दश वापी परिमाण समाना जानहु कन्या वेद प्रमाना
पात्र व्यक्ति जसु पाणि ग्रहीता शास्त्र कुशल कुल शील पुनीता
सालंकृता होय यदि कन्या गावत द्विगुण पुण्य श्रुति धन्या

पुण्य तड़ाग खनन महँ जोई तदुद्धारमहँ तत्सम होई
वापी पंकोद्धारक जोई अरु वापी निर्माता होई
उभय तुल्य फल भाखत वेदा उभय कार्य महँ नहि कछु भेदा
रोपहिँ पिप्पल तरुवर जोई पूर्व पुण्य प्रेरित चित होई
पुनरपि तासु प्रतिष्ठाकारी सविधि यथोदित वेद मझारी
तपो लोक महँ निवसत सोई चतुरानन ढिग प्रमुदित होई
करि तहँ वत्सर अयुत निवासा पुनि जननी गर्भाशय वासा
मर्त्यलोक महँ विविध कलेशा पुनि पुनि संसृतिचक्र प्रवेशा
जन्म कर्म पुनि भोग वासना जन्म कर्म पुनि भोग वासना
जरा मरण पुनि इत उत गमना जरा मरण पुनि इत उत गमना
नहि तबलगि चक्रक अवसाना जबलगि सदय न श्रीभगवाना
भक्ति पदारथ पावत जोई चक्र भ्रमणते उबरत सोई
निज अभिमान दुराशा परिहरि भजहु वत्स सब तजि तुम हर हरि
हरि हर एक रूप श्रुति गावत नहि सज्जनहिँ भेद मति भावत
ज्ञान महानिधि पावै जोई जगदम्बुधि गोपद तसु होई
करिहौँ भक्ति ज्ञान उपदेशा करि कैवल्य काण्ड परवेशा
प्रकृत कथा पुनि सुनहु पुरञ्जन कहत भयउ अस गुरू निरञ्जन
गौरी हर संवाद अनूपा ज्ञाता जसु न गिरत भवकूपा
सुस्थिर हृदय सुनहु सो ताता मन्दभाग सुनि कथा अघाता

दोहा

सुनत पुरञ्जन मुदित मन, कहत भयउ कर जोरि ।
कथा सुधा पुनि पुनि पियत, बढ़त पिपासा मोरि ॥३१॥

सोरठा

करिय कृपा गुरुदेव, करुणाकर करुणायतन ।
भाखे शंभु यदेव, कहिय तदेव मुमुक्षुप्रिय ॥४२॥

चौपाई

शुभ संवाद सुनावन लागे गुरुवर शिष्य प्रेम परि पागे
पुष्पोद्यान दान जो करई सर्वभूत सुख इच्छुक होई
अयुत वर्ष ध्रुवलोक निवासी होत बहुरि मानव पुर वासी
जो विमान दाता जग माहीँ बसत विष्णुपुर संशय नाहीँ
यावन्मन्वन्तर करि बासा पुनि पावत नरलोक निवासा
मणि चित्रित विस्तृत रथ दाना फलद चतुर्गुण वेद बखाना
लहत अधफल शिविका दाता अस सिद्धान्त वेद विख्याता
हरि हेतुक हरिभक्ति समेता श्रद्धधान आदर समवेता
करत दोल मन्दिरकर दाना विष्णु लोक तसु वास बखाना
मन्वन्तर शत परिमित समया रहत सदैव अनामय अभया
जो जन राजमार्ग निर्माता बिच बिच सौध विश्रमण दाता
वत्सर अयुत इन्द्रपुरवासी होत बहुरि नरलोक निवासी
देव दान अरु ब्राह्मण दाना कहत तुल्य फल वेद पुराना
भूसुर सुर महँ अन्तर नाहीँ जानत विरल व्यक्ति जग माहीँ
चतुर्वर्ग संसूचक वेदा धारक तासु विप्र गत खेदा
नम्य प्रणम्य गम्य द्विज देवा निदरि तिनहिँ सुख पावत केवा
दत्त पदारथ पावत तहँमा नहि अदत्त समुपस्थित जहँमा

करि दाता स्वर्गादिक भोगा पावत भारत जन्म सुयोगा
यथा कर्म त्रैवर्णिक जन्मा विप्र ज्ञानबल होत अजन्मा
करि निज धर्म शूद्र अपि जोऊ क्रमिक विप्रता पावत सोऊ
कल्प कोटि शत अपि बिनु भोगा कर्म सत्त्व भन श्रुति आभोगा
करत भस्म कर्महिँ ज्ञानानल भन ई दृक् श्रुति शिखर ज्ञानबल
सुनि गिरिजा पुनि भाखन लागी पर उपकार दया रस पागी
दान अनुक्त कहिय पुनि स्वामी ज्ञान निधान विश्वहितकामी
कहत भयउ सुनि करुणासागर दीनबन्धु शंकर गंगाधर
विविध दान तसु फल पुनि नाना भाखत आगम वेद पुराना
निरवशेष कहि सकत न कोई कहौं प्रधान दान जग जोई
अन्नदान जो विप्रहिँ देवै मम पुर बसत मोहि नित सेवै
अन्न कणामित वत्सर सोई रहत मोर ढिग निर्भय होई
नहि व्यापत मम नगर अविद्या रहहिँ उपस्थित दशविध विद्या
मोर नगर महँ आतम ज्ञाना करतलगत करि योग विधाना
अनुशय रहित हृदय जसु होई योग विघ्न तसु होत न कोई
अन्नद अन्य जाति प्रति जोऊ पहुँचत मोर नगर महँ सोऊ
अन्नमान वत्सर मम लोका वसत अनामय विरहित शोका
भारतभूमि जन्म पुनि पावत भारत महिमा श्रुतिरपि गावत
करि सत्कर्म परमपद भागी जो पद चाहत विषय विरागी
करत अक्लम कर्म जो कोई परमारथ अधिकारी सोई
कर्मभूमि भारत विख्याता तदितर भोग-भूमि इति ख्याता

भारत जन्म पाइ अपि मुग्धा पिवत विकर्मा जननी दुग्धा
प्राक्तन पाप निवर्तक तहँमा धर्माचरण रुचत नहि जहँमा
पुरुषकार प्रतिबन्धक रोधक पुरुषकार परमारथ बोधक
पुरुषकार बल होय न काहा यदि न होय निर्वेद प्रवाहा
सिद्धि साध्यकर होय न यावत् पुरुषकार परिहरिय न तावत्
पुरुषकार निष्फलता जहँमा प्राक्तन पाप प्रबलता तहँमा
तजि अवसाद करिय पुरुषारथ नहि अलभ्य जग कोइ पदारथ
करै पंगुरपि गिरि आरोहन यदि मम होय सदय अवलोकन
पढ़ै मूक अपि वेद पुराणन यदि मम होय सदय अवलोकन
दीन दरिद्र होय महराजा होय जघन्य धन्य सिरताजा
लहै हुताशन शीतल भावा सुन्दरि मम करुणा परभावा
जो निर्भर मन मोर भरोसा करौं सर्वदा तसु परितोसा
भयउ कछुक प्रासंगिक वर्णन पुनि कर्तव्य प्रकृत आकर्णन
अन्नदान सम दान न कोई जहाँ न पात्र परीक्षा होई
देश कालकर नियम न कोई क्षुत्पीड़ित यदि उपगत होई
आसन दान करत जो कोई द्विज देवोद्देशक शुचि होई
विष्णुलोक महँ होत प्रतिष्ठित अयुत वर्ष इति भन श्रुति निष्ठित
विप्रहिँ देइ दुधारी गैया सुचिर काल हरिपुर बसवैया
लोम मिताब्द होत तहँ वासा इति भाखत पौराणिक व्यासा
पुण्य चतुर्गुण पर्व सुअवसर शतगुण फल भन तीरथ तटपर
विदित कोटि गुण पुण्य दान महँ श्रीनारायण क्षेत्र कथित जहँ

गांग प्रवाहावधिक प्रदेशा चतुर्हस्तमित मुरहर देशा
उभयमुखी गोदान करत जो लोममिताब्द विष्णुपुर थित सो
श्वेत छत्र दाता जो कोई वरुणालय महँ निवसत सोई
वत्सर अयुत तहाँ सो बसई मर्त्यलोक संकट पुनि फँसई
वस्त्र युग्म दाता जो कोई पीड़ित विप्रहिँ सादर होई
वायु लोक महँ होत प्रतिष्ठित अयुत वर्ष इति भन श्रुतिनिष्ठित
विप्रहिँ शालग्राम समर्पक वसत जाय वैकुण्ठ अदर्पक
यावच्चन्द्र दिवाकर वासा होत तासु हरि ढिग भन व्यासा
शय्या रुचिर देत जो कोई चन्द्र लोक महँ निवसत सोई
यावच्छशिरवि तहँ सो बसई पुनि नरलोक क्लेश महँ फँसई
दीपदान द्विजदेव निमित्तक वह्निलोक प्रद भन मुनि सप्तक
मन्वन्तर समयावधि तहँमा वसत दीप दाता जो यहँमा
गज दाता भारत महि मण्डल विप्रहिँ वसत निकट आखण्डल
इन्द्र अर्ध आसन विनिवासा होत तासु इति गावत व्यासा
यावदिन्द्र सो निवसत तहँमा निपतति बहुरि पुण्यक्षय लहमा
भरत खण्ड विप्रहिँ हय दाता वरुणलोक पावत सुख व्राता
इन्द्र चतुर्दश थिति पर्यन्ता तहाँ वास तसु भन मुनि सन्ता
रुचिर वाटिका विप्रहिँ दाता वायुलोक पावत सुखव्राता
वास तासु यावन्मन्वन्तर भन तहँ धर्मशास्त्र पण्डितवर
व्यजन श्वेत चामरकर दाता वायुलोक भोगत सुख व्राता
अयुत वर्ष तहँ तासु निवासा पावत बहुरि मर्त्यपुर वासा

धान्य रत्न दाता चिरजीवी विद्यानिधि निज बल अनुजीवी
दाता और ग्रहीता जोऊ लहत विष्णु सन्निधि थिति दोऊ
भारतवर्ष द्विजहिँ तिल दाता लोक हमार लहत सुख त्राता
तिल परिमित वत्सर करि भोगा पुनि पावत सुजन्म संयोगा
ताम्रपात्र दाता इह जोई एतद्द्विगुण लहत फल सोई
पतिव्रतवती सुन्दरी वामा शोभन वसन विभूषण धामा
प्रियंवदा ह्रीवती सुशीला कवरी जित भ्रमरी द्युति लीला
करि एवंविध वनिता दाना चन्द्रलोक पावत सम्माना
इन्द्र चतुर्दश थिति पर्यन्ता वास तासु तहँ भन मुनि सन्ता
पुनि गन्धर्वलोक तसु वासा पावत बहु विध भोग विलासा
करि निवास तहँ शत शत वर्षा लहत जन्म पुनि भारतवर्षा
जन्म सहस्र मनोहर वामा पावत अस गावत मुनि ग्रामा
काञ्चनादि पुनि देत ग्रहीतहिँ भार्याक्रय कारज अनुचित नहिँ
अस निर्णय निगमागम संम्मत गिरिनन्दिनि धर्मज्ञ शिष्ट मत
फल दाता सुरपति पुर वासी अयुत वर्ष सुख भोग विलासी
फल मित वर्ष तहाँ करि वासा पुनि पावत नर लोक निवासा
सहस सफल तरुवर कर दाना अति प्रशस्त भन वेद पुराना
सुचिर सुचिर तसु सुरपुर वासा होत कहत अस मुनिवर व्यासा
भारतवर्ष लहत पुनि जन्मा ज्ञान भक्ति युत होत अजन्मा
सगुणा भक्ति सगुण पद दायक अगुण ज्ञान निर्व्राण विधायक
परा भक्ति अपि निर्वृति कर्त्री आविद्यक कलेश संहर्त्री

नाना विध धन धान्य समन्वित देत विपुल गृह संभृति अन्वित
भारत खण्ड द्विजहिं जो कोई शत मन्वन्तर स्वर्गी होई
शुचि श्रीमत्कुल पावत जन्मा ज्ञान भक्ति बल होत अजन्मा
शस्य समन्वित पृथ्वी दाता भारत पुण्य क्षेत्र विख्याता
लहत वास वैकुण्ठ नगर महँ शत मन्वन्तर रमा रमण जहँ
भारत भूमि जनमि महराजा होत करत क्षत्रोचित काजा
शत जन्मावधि भूपति सोई पुत्री धनी प्रजेश्वर सोई
गो व्रजादि युत ग्राम प्रदाता पुर वैकुण्ठ लहत सुखत्राता
लख मन्वन्तर तसु तहँ वासा भाखत धर्म विज्ञ मुनि व्यासा
ग्राम लक्ष अधिपति पुनि सोई होत मर्त्यपुर मानव होई
नहि निर्भूमि होत सो प्रानी लख जन्मावधि भन मुनि ज्ञानी
सुप्रज पक्वशस्य समलंकृत विविध तड़ाग वाटिका अन्वित
सफल पुष्प तरु वल्ली भूषित सद्विचार आचार विभूषित
इत्थम्भूत नगरकर दाता वसि कैलास लहत सुखत्राता
दश लक्षेन्द्र काल पर्यन्ता तसु निवास तहँ भन मुनि सन्ता
रुद्र ब्रह्म हरि लोक उपरिगत मणि द्वीप गोलोकोपरि जत
शास्त्र प्रसिद्ध मुख्य कैलासा जहँ निवसहिं अनन्य मम दासा
भारत भूमि जनमि पुनि सोई महाराज पद भूषित होई
शत शत जन्म तजत नहि धरणी अस गाथा व्यासादिक वरणी
देश राज्य द्वीपादिक दाता अधिक अधिक फलभागी ख्याता
कार्तिक मास हरिहिं तुलसी दल अर्पक भोगत त्रियुग दिव्य फल

विष्णुलोक अनुपम सुखभागी भारत जनमि विष्णु अनुरागी
जित इन्द्रिय लहि भक्ति पदारथ अनायास पावत परमारथ
विप्रहिँ मिष्ट अन्न भोजयिता शान्त हृदय हरि मन्दिर शयिता
विप्रलोम मित वत्सर तहँमा भुक्त भोग पुनि जनमत यहँमा
मीन कर्क अभ्यन्तर काला तीग्मरश्मि तिग्मांशु कराला
वासित जल भारत महँ दाता गत कैलास लहत सुखव्राता
इन्द्र चतुर्दश थिति पर्यन्ता निवसत तहँ भाखत मुनि सन्ता
भारत भूमि जनमि पुनि सोई मम सेवक श्रुति पारग होई
सक्तुदान वैशाख मास महँ अति प्रशस्त इति निर्णय जहँ तहँ
सक्तुरेणु परिमित वत्सर सो मम ढिग वसत सक्तु दाता जो
जो शिवरात्रि बिल्वदल दाता मत्प्रीत्यर्थ लहत सुखव्राता
पत्र मान युग मम पुर वासा होत तासु इति भाखत व्यासा
भारत जनमि लहत मम भक्ती विषय विरक्ति मोर अनुरक्ती
यदा तदा श्रीफल दल दाता इहामुत्र भोगत सुखव्राता
मकर अर्क तिल तण्डुल दाता शीत निवारण इन्धन दाता
तूलिक ऊर्णपटादिक दाता कृमिज वस्त्र गलवस्त्र प्रदाता
मेष अर्क यव जीवन दाता सजल सफल घट घटी प्रदाता
रुचिर उपानच्छत्र प्रदाता सूक्ष्मवस्त्र जलपात्र प्रदाता
आर्द्र मृदुल चणकान्न प्रदाता पथिक सुखावह प्रपा विधाता
सोपकरण क्रिसरान्न सुशोभन विप्रहिँ मुदित करावहिँ भोजन
इत उत भोजयिता सुख पावत अस गाथा व्यासादिक गावत

दोहा

दान विविध विध श्रवण करि, श्रीगिरिजा सुख पाय ।
भाखत भइँ पुनि मुदित मन, प्रभुपद शीश नवाय ॥४२॥

सोरठा

श्रवण पिपासा वृद्धि, पियत कथामृत होत प्रभु ।
कवन मनोरथ सिद्धि, दुर्लभ प्रभुपद सेवकहिँ ॥४३॥

चौपाई

व्रत पूजादि पुण्य फल स्वामी कृपया कहिय प्रजाहित कामी
सुनि शंकर विहसित मुख पद्मा भाखत भउ करुणा रस सद्मा
परउपकार हेतु तुअ पृच्छा प्रिये ममापि तथैव समिच्छा
सावधान मन सुनहु प्रिये मम प्रश्न तुम्हार मोर हृदयंगम
व्रती रामनवमी दिन जोई विष्णुलोक महँ निवसत सोई
अतिशय सुखी सप्त मन्वन्तर होत तहाँ इति भाखत मुनिवर
भारत जनमि लहत हरिभक्ती धनी गृही परिहृत आसक्ती
करि नवरात्र प्रकृति परिपूजा व्रत संयमी काज नहि दूजा
वासन्तिकी शारदी अवसर तथा शैशिरी ग्रैष्मी व्रतपर
षोड़श विध उपचार समर्पक आरात्रिक पुष्पाञ्जलि अर्पक
नृत्य गीत वाद्यादि समुत्सव वैध विहित बलिदान प्रीतिभव
होत तासु ममलोक निवासा अस गाथा गावत मुनिनाथा
शक्ति शक्त महँ नहि कछु अन्तर भन अभिन्न तुअ मम थितिमुनिवर
भोगि सप्त मन्वन्तर तहँ सुख जनमि भूमि पुनि साधन अभिमुख

पुत्री धनी राज राजेश्वर होत कहत श्रुति नाना मुनिवर
शुक्ल अष्टमी लक्ष्मी अर्चन करि पावत जनमध्य समर्चन
पक्ष एक श्रीपूजन तत्पर यथा विधान द्विजाति प्रीतिकर
तासु वास गोलोक मध्यगत आ मन्वन्तर इति श्रुति भाखत
लहि शुभ जन्म राज राजेश्वर पद पावत इति गावत मुनिवर
करत रासमण्डल महिमण्डल शत शत गोप गोपिका मण्डल
करि बहु विध प्रतिमा निर्माना वृन्दा कानन कुञ्ज निधाना
मंगल मोद प्रमोद प्रवाहा प्रेमाम्बुधि अम्बुधि अवगाहा
राधाकृष्ण समर्चनकारी बसत जाय गोलोक मझारी
थिति चतुरानन थिति पर्यन्ता भाखत निगमागम अरु सन्ता
पुनरावृत्ति पाइ हरिभक्ती पावत त्यक्त विषय अनुरक्ती
कृष्ण मन्त्र लहि सद्गुरु मुखते गत गोलोक रहत अति सुखते
होत कृष्ण पार्षदवर सोई लहि सारूप्य शान्त चित होई
शत शत चतुरानन लय देखत जागत लीला बहु विध पेखत
एकादशी सितासित दलगत युगल एक महँ वा जो कृतव्रत
तनु परिहरि गोलोक निवासा होत तासु इति भाखत व्यासा
लहि सारूप्य होत पार्षदवर होत न बहुरि पतन पृथ्वीपर
तिथि द्वादशी धवल दल भादव शक्र समर्चक यादृश वैभव
षष्टि सहस्र वर्ष सुरपति पुर विविध विहार करत अनुगत सुर
रवि संक्रमण सप्तमी सित दल माघ मास रवि पूजक भूतल
करत हविष्य अशन जो कोई सूर्य लोक महँ निवसत सोई

रहि तहँ मन्वन्तर पर्यन्ता पुनि नरलोक जन्म भन सन्ता
भारत पुनरागत श्रीयुक्ता अस गाथा निगमागम उक्ता
चतुर्दशी तिथि ज्येष्ठ कृष्ण दल सावित्री परिपूजक भूतल
ब्रह्मलोक महँ निवसत जाई मन्वन्तर सप्तक हरषाई
चिरजीवी पुनि भारत आई बल धन ध्यान ज्ञान अधिकाई
तिथि पञ्चमी माघ उज्ज्वल दल सरस्वती परिपूजक भूतल
षोड़श विध उपचार समर्पक आरात्रिक पुष्पाञ्जलि अर्पक
भक्ति समन्वित संयत चित्ता विविध समुत्सव यादृश वित्ता
यावद्ब्रह्म दिवानिश सोई मणि द्वीपगत प्रमुदित होई
पुनर्जन्म लहि कविवर पण्डित ज्ञानी चौदह विद्या मण्डित
हरि नामावलि वक्ता दाता हरि सन्निधि भोगत सुख व्राता
युग पर्यन्त लहत तहँ वासा परमानन्द रमापति दासा
पुनर्जन्म लहि धनी सुखी सो पाइ भक्ति प्रेमार्द्र चित्त सो
कोटि नाम यदि जपत अकामा गत नारायण क्षेत्र सुधामा
निर्मल मानस विषय विरक्ता पूज्य पदारविन्द अनुरक्ता
प्रारब्धावधि जीवन्मुक्ता तनु तजि अतनु भाव तसु उक्ता
पूजत नित मम पार्थिव लिंगा जानि मोहि अनवद्य अलिंगा
रेणु मान वत्सर मम लोका क्रीड़त प्रमथ संग गतशोका
भारत आगत महाराज पद लहत प्रजापालक विरहित मद
शालग्राम समर्चक प्रति दिन करत पान चरणोदक अनुदिन
शत चतुरानन थिति पर्यन्ता वसत विष्णु मन्दिर भन सन्ता

भारत आगत भक्ति लहत सो गत वैकुण्ठ न बहुरि पतत सो
करत सकल व्रत तप जो कोई विष्णुलोक महँ निवसत सोई
इन्द्र चतुर्दश थिति पर्यन्ता वसत तहाँ इति भाखत सन्ता
भारत भूमि बहुरि सो आवत दुर्लभ महाराज पद पावत
भक्ति समुत्थ ज्ञान सो लहई होत अजन्मा इति श्रुति कहई
सकल तीर्थ मज्जन जो करई भूमि प्रदक्षिण श्रम शिर धरई
सो कैवल्य मुक्ति पद भागी जो पद लहत यती बड़भागी
जो पद पावत विषय विरागी लहि अध्यात्म ज्ञान बड़भागी
जो पद लहत भक्त बड़भागी जाकर बुद्धि प्रेम रस पागी
अश्वमेध चौगुन फल पावत राजसूय कर्ता श्रुति गावत
अश्वमेध कर्ता जो कोई लोम मान मित वत्सर सोई
इन्द्र अर्ध आसन आसीना होत कहत इति विप्र कुलीना
सर्व मखाधिक मम तुअ मखफल सर्व बलाधिक ब्रह्मतेज बल
सर्व मखाधिक मम तुअ मखफल सकल बलाधिक योग जनित बल
सर्व मखाधिक मम तुअ मख फल सकल योगबल अधिक सतीबल
सर्व मखाधिक ज्ञान यज्ञ फल तपो बलाधिक ज्ञान भक्ति बल
विष्णु श्रेष्ठ जिमि सकल देव महँ नारद मुनि जिमि सब मुनिजन महँ
वेद श्रेष्ठ जिमि सकल शास्त्र महँ विप्र श्रेष्ठ जिमि सकल वर्ण महँ
देवधुनी जिमि सकल तीर्थ महँ सुन्दरि हम जिमि सब पवित्र महँ
एकादशी यथा सब व्रत महँ तुलसी यथा सकल पत्रन महँ
चन्द्र श्रेष्ठ जिमि सकल नखत महँ गरुड़ श्रेष्ठ जिमि पक्षीगण महँ

प्रकृति श्रेष्ठ जिमि महिला गण महँ श्रेष्ठ यथा मन द्रुतगन्ता महँ
चतुरानन जिमि प्रजापतिन महँ यथा प्रजापति सकल प्रजा महँ
वृन्दा वन जिमि सकल वनन महँ श्रेष्ठ यथा भारत खण्डन महँ
रमा श्रेष्ठ जिमि सकल धनिन महँ सरस्वती जिमि सब पण्डित महँ
श्रीदुर्गा जिमि सकल सती महँ श्रीराधा सौभाग्यवतिन महँ

दोहा

श्रेष्ठ सकल क्रतु महँ तथा, सुन्दरि मम-तुअ-याग ।
यह रहस्य जानत विरल, व्यक्ति जासु बड़ भाग ॥३३॥

सोरठा

अश्वमेध शत याग, करि पावत सुरराज पद ।
विरल व्यक्ति बड़ भाग, तत्सहस्र कृत विष्णु पद ॥४४॥

छन्द

सकल तीरथ दान मज्जन सकल क्रतु जो जन करै ।
सकल व्रत करि तनु कसै अरु सकल तप श्रम शिर धरै ॥
सकल श्रुति स्वाध्याय विधिवत भू समस्त परिक्रमा ।
सकल साधन कर परम फल स्वात्मरतिकृत विश्रमा ॥

चौपाई

कृष्ण अष्टमी व्रत परभावा शत जन्मार्जित दुरित दुरावा
इन्द्र चतुर्दश थिति पर्यन्ता हरि सन्निधि थिति भन मुनि सन्ता
लहि सुजन्म पुनि भक्ति लहत सो कृतकृत्यता शान्ति भाजन सो
प्रति दिन गंगा मज्जनकारी रवि इव पावन भूमि मझारी

पद पद अश्वमेध फल लहई भरि मन्वन्तर हरिपुर रहई
तत्पद रेणु परसि परिपूता होत धरित्री अधम अछूता
वस शिवरात्रि व्रती गत शोका मन्वन्तर सप्तक मम लोका
जो शिवरात्रि बिल्वदल अर्पक सुमरि ताहि यमराज अदर्पक
पत्र मान युग मम पुर वासा भाखत तासु महामुनि व्यासा
लहि सुजन्म पुनि महाराज पद श्रौताचार प्रचारक शर्मद
मेष तूल अरु मकर अर्क महँ प्रातःस्नान प्रशंसा जहँ तहँ
होत अपावन पावन सोई प्रातःस्नान करत नित जोई
कहँ लगि करौं कर्म गति वर्णन गूढ़ रहस्य करहु आकर्णन
यथातथा मानस परिशुद्धी तजि संकल्प कामना बुद्धी
होत अकाम कर्म ते सुन्दरि काम्य असात्त्विक अथवा परिहरि
मानस शुद्धि ज्ञान उपजावत ज्ञानवान परमारथ पावत
तीर्थादिक अपि मानस शुद्धी करत कहत अस मुनि कृतबुद्धी
तीरथ वारि प्रधान प्रदेशा गंगा आदि यथा शुचि देशा
शिला प्रधान क्षेत्र निर्देशा जिमि ज्योतिर्लिंगादि प्रदेशा
आश्रम सिद्ध तपस्वी देशा जिमि च्यवनाश्रम आदि प्रदेशा
सकल वर्ण महँ ब्राह्मण यादृश सकल तीर्थ महँ गंगा तादृश
सकल वर्ण महँ ओमिति यादृश सकल क्षेत्र महँ काशी तादृश
निज निज धर्म धर्म महँ जैसे आश्रम महँ रामाश्रम तैसे
कहँ लगि ताकर करौं बखाना जो प्रत्यक्ष दृष्ट जग नाना
कहँ लगि करौं तपस्या वर्णन गूढ़ रहस्य करहु आकर्णन

दुरित वृन्द इन्धन परसिद्धा दाहक तसु तप मुनि मत सिद्धा
तप शरीर शोषणकर नामा विधि अनुसार कहत मुनिग्रामा
अस्थि मात्र अवशिष्ट शरीरा महा तपस्वी सो मति धीरा
विश्वामित्र निदर्शन तहँमा सृष्टि कथन उद्घोषित जहँमा
चान्द्रायण कृच्छ्रादि अनेका तपश्चरण भन प्राप्त विवेका
अथवा वर्णाश्रम निज धर्मा तपश्चरण भन मुनि सत्कर्मा
तपहिं ज्ञानवाचक कह कोई वेद स्वरस विज्ञाता जोई
सात्त्विक राजस तामस नामा तप नाना विध भन मुनिग्रामा
देव प्रीतिकर सात्त्विक नामा राजस जहँ राज्यादिक कामा
हिंसा हेतुक तामस नामा अस निर्णय श्रुतिगत अभिरामा
उत्तम आदिम मध्यम मध्यम अन्तिम जानहु अधम यथाक्रम
देत ऊर्ध्व गति मध्यम गतिको तथा अधो गति तपश्चरण सो
सत्त्व रज स्तम गुण कृत एहू क्रमिक त्रिविध गति नहि सन्देहू
निश्चित नियत नियम निर्वाहा तप अभिधान कहत मुनि नाहा
शिष्यनकर गुरु सेवन धर्मा नारिनकर पति सेवन कर्मा
मातु पिता सेवन सुतकर्मा परम तपस्या रूप सुधर्मा

दोहा

सुनि गिरिजा हरषाय अति, कहत भई मुसुकाय ।
कहिय नाथ करुणायतन, अजरामरण उपाय ॥३४॥

सोरठा

करि प्रभु शुचि मृदु हास, अप्रतिहतमति ज्ञान निधि ।
कहे मोर प्रिय दास, होत अजन्मा ज्ञान लहि ॥४५॥

भाखौं सुलभ प्रकार, अजरामरण उपाय कर ।
यह संसार अपार, महामोह बाजीगरी ॥४६॥
जिमि रवि अरुण प्रकाश, तमो राशि तरसा हरत ।
ज्ञान दिनेश विकाश, मोह राशि नाशत तथा ॥४७॥
अज्ञानावृत ज्ञान, जब लगि तब लगि दृश्य यह ।
मानहु वचन प्रमान, स्वप्न दृश्य इव दृश्य सब ॥४८॥
जिमि प्रबुद्ध जन बुद्धि, जानत मिथ्या स्वप्नथिति ।
तिमि प्रबुद्ध मति शुद्धि, अवगत मिथ्या जगत थिति ॥४९॥
आ ज्ञानोदय काल, कर्म-बन्ध-विनिबद्ध-जन ।
कर्म सूत्र तत्काल, काटत ज्ञान कृपाण शित ॥५०॥

चौपाई

शुभ अरु अशुभ कर्म जग माहीं सुख दुख दायक संशय नाहीं
भारत पुण्य पाप उत्पादक तदितर केवल भोग विधायक
देव दनुज दानव गन्धर्वा यक्ष रक्ष मनुजादिक सर्वा
पुण्य पाप उत्पादन कर्ता तदितर तिर्यगादि तदकर्ता
जीव प्रधान कर्म अधिकारी सुख दुख भोगत विश्व मझारी
स्वर्ग नरक अरु नाना योनी लहत कर्म करि भारत क्षोनी
करत कर्म उन्मूलन भक्ती करि उत्पन्न प्रबोध प्रशक्ती
भारत भूमि सुदुर्लभ नर तनु तहँ दुर्लभ ब्राह्मण तनु भन मनु
ब्राह्मण द्विविध सकाम अकामा तहँ अकामना उपशम धामा
सुख दुख भोगत विप्र सकामा जिमि शूद्रादि वर्ण सब ठामा

तनु तजि अतनु भाव सो पावत काम गन्ध नहि जसु ढिग आवत
पुनरावृत्ति लहत नहि सोई विषय वासना त्यागत जोई
सूक्ष्म असूक्ष्म वासना दोई यह प्रसंग जानत जन कोई
सूक्ष्म वासना अतिशय गुप्ता हृदय क्षोभ सूचक तसु उक्ता
जस अपुत्र जन जग महँ कोई लहि विवेक अपि वासित होई
सो वासना गुप्त अति रहई असुत तथापि क्षोभ लव लहई
प्रिये असूक्ष्म वासना जोई बहु विध नाच नचावत सोई
नृप ढिग जस जस नृप रुचि होई तस तस हाँ हाँ भाखत सोई
वासर निशिहिं निशिहिं भन वासर शोकाकुल अपि हँसत अनत्रसर
नीच भृत्यता श्वा इव करई बनि तस्कर कारागृह परई
सहधर्मिणी त्याग कर कोई वारवधू सेवक इव होई
अर्थ धर्मकर स्वाहा करई पाप पोटरी सिरपर धरई
तजि संकोच मान मर्यादा जहँ तहँ माँगत विगत विषादा
कुलकलंक कुलनाम बुड़ावत बनि तवालची हँसि हँसि गावत
इत उत भ्रमत शुभाशुभ भोगत वासित हृदय वित्त संयोगत
विविध मनोरथ मन महँ करई काल अचानक असु अपहरई
कहँ लगि गाउँ वासना गाथा निजानन्द बिनु तजत न साथा
प्रकृत कथा अब सुन्दरि भाखौं गोपनीय कछु गोपि न राखौं
ज्ञानी जन केवल पद पावहिं ताहि न कालचक्र भरमावहिं
जानहु ब्रह्म रूप सो प्रानी निरहंकृत निर्मम विज्ञानी
यह प्रक्रम आगे चलि कहिहौं जगदुद्धार सुयश जग लहिहौं

कर्मठ जन यागादिक कारी वसत जाय सुरलोक मझारी
यादृश कर्म लहत फल तादृश सुन्दरि श्रुति निर्णय एतादृश
जन्म मरण सुख दुख भय शोका कर्म जनित पावत सब लोका
ऋद्धि सिद्धि निधि लहत कर्मते दशदिक्पति पद लहत कर्मते
विधि हरि शंकर बनत कर्मते नहि शंका तात्त्विक विचारते
असुरराज नर-नाग-राज पद कर्मज अरु अभिमान मान मद
दिनपति रजनीपति गुह गणपति बनत कर्मते लहत विविध गति
यक्ष रक्ष किन्नर गंधर्वा जहँ लगि जीव चराचर सर्वा
दानव दैत्य विविध पशु पक्षी कृमि कीटादि स्वकृत फल भक्षी
निर्मूलन तसु ज्ञान भक्तिबल गुरु सेवा बल त्यागि दंभ छल

दोहा

सुनि पति भाषण गिरिसुता, कहत भईं सिर नाय ।
कर्म कठिन गति अगम अति, कहिय नाथ समुझाय ॥३५॥

चौपाई

काह कर्म तसु कारण काहा कहिय कृपाकरि त्रिभुवन नाहा
काह देह अरु देही काहा काह गेह अरु गेही काहा
दैहिक कर्म देव को करई मैं मैं करत मृत्युमुख परई
ज्ञान बुद्धि प्राणेन्द्रिय वर्णन करु प्राणेश देवता कीर्तन
कौन देव भोजयिता भोक्ता जीव ईश भव बन्धन मोक्ता
सुनि श्रीशंकर भाखन लागे करुणाकर करुणा रस पागे
वेद विहित शुभ कर्म प्रसिद्धा तदितर अशुभ कर्म भन सिद्धा

सुर सेवन फल इच्छा विरहित उपजावत परभक्ति अनुपहित
सोइ कर्म उन्मूलन कर्त्री ज्ञान दायिनी भवभय हर्त्री
सगुण सगुण निर्गुण निर्गुण पद पावत त्यक्त अहं ममता मद
सगुण देवता संग विमुक्ती पावत सगुण भक्त लहि मुक्ती
तनु परिहरत अतनु पद पावत निर्गुण भक्त बहुरि नहि आवत
घटाकाश घट भंग भये जिमि महाकाशता लहत प्रिये तिमि
जीवन्मुक्त लहत निर्वाना त्रिविधोपाधि भान अवसाना
नश्वर घटगत यथा असत्ता को कहि सक नश्वर घट सत्ता
तथा उपाधिनिष्ठ नहि सत्ता स्वप्न समान भान अलबत्ता
यह रहस्य जन जानत सोई तुअ मम करुणाभाजन जोई
यद्यद्देव उपासक जो जो तत्तल्लोक निवासी सो सो
लहत उपासक जन क्रममुक्ती ज्ञानवान् जन सद्योमुक्ती
यदि न उपासक निर्वासन मति लहि सुजन्म पुनि पावत सद्गति
आतमज्ञानवान जन जोई अजर अमर मंगलमय सोई
ब्रह्म सच्चिदानन्द सरूपा सुन्दरि गिरत न पुनि भवकूपा
कर्म पुरातन बहु विध जोई अपर कर्म कर कारण सोई
कर्म शुभाशुभ प्रेरणकारी हमहि प्रिये बसि हृदय मझारी
मम इच्छा तुम गिरिवर कन्ये सबहिँ नचावहु त्रिभुवन धन्ये
शरणापन्न हमहिं जो कोई नहि अभिमान विवश सो होई
कर्ता कारसिता सो जानत हमहिँ निजहिँ कठपुतली मानत
होत प्रवाह पतित कारज यत् अनासक्त मति करत रहत तत्

त्रिविध देह निगमागम भाखत तदाधार निज कृति फल चाखत
थूल सूक्ष्म अरु कारण नामा त्रिविध देह भाखत श्रुति ग्रामा
शोणित शुक्र समुद्भव देहा यह असथूल न कछु सन्देहा
क्षित्यप तेज मरुत आकाशा पञ्च भूत मय यह भव पाशा
मल मूत्रादि घृणित यह काया हम कहि ताहि मूढ़ अपनाया
आधि व्याधि मन्दिर यह काया क्षणभंगुर जहँ तहँ भरमाया
पञ्च प्राण दश इन्द्रिय धी मन सप्तदशक श्रुति सूक्ष्म देह भन
कर्म भोग साधन यह देहा मन इन्द्रिय प्रेरक चपलेहा
प्रिये प्रलय पर्यन्त रहत यह इहामुत्र गमनागमनावह
मन प्रेरित इन्द्रियगण धावत स्वयमपि सकल विश्व घुमि आवत
आवत जात पलक महँ सब थल हेतु बन्धकर यहि मन सुचपल
पञ्च कलेश काम क्रोधादिक हर्ष विवाद प्रमाद मदादिक
दिशि दिशि शत्रु मित्र भावादिक आग्रह दण्डानुग्रह आदिकै
हम तुम यह वह आदिक भावा कार्य सकल मानस परभावा
पुण्य पाप संपादक एहू स्वर्ग नरक आपादक एहू,
बन्ध मोक्षकर कारण एहू भोग योग सम्पादक एहू
अजित शत्रु मन विजित मित्र मन लालन हठ मुनि जय उपाय भन
कर्म अकाम अकाम उपासन ज्ञान समाधि विजय कारण भन
यम अरु नियम विजय कारण भन सत्संगति शुचि देश तथा भन
शुद्ध विवेक विशुद्ध विरक्ती जानहु मनो विजयिनी शक्ती
देह लक्ष्य करि अहमिति बुद्धी मम इति मम इति बुद्धि अशुद्धी

सुख दुख मोहारोपण बुद्धी मृति जनि भयदायिका अशुद्धी
महा मोह अभ्यास अविद्या तम इत्यादिक भन कृतविद्या
सोइ अविद्या कारण देहा तनु अरु अतनु हेतु तनु एहा
सकल विश्वकर कारण एहू उपजावत संसार सिनेहू
त्रिविध देह यह त्रिविध उपाधी यत्कृत विविध आधि अरु व्याधी
पुरुष देह अभिमानी जोई देही जीव कहावत सोई
यदवधि देह जीव परसिद्धा जब अदेह तब निरवधि सिद्धा
देह गेह यह देही गेही देह गेह तजि मुक्त विदेही
महा मोह आवृत जीवातम मिथ्यामति मानत कर्ता हम
भोक्ता अपि आपुहिँ सो मानत मायामत्तं तत्त्व नहि जानत
भोजयिता हम तुअ अर्द्धङ्गी भोक्ता जीव अविद्या संगी
कर्म भोग आदिक व्यवहारा मायामय श्रुति मत अनुसारा
सच्चित्सुखमय निष्क्रिय एका शुद्ध ब्रह्म भन लब्ध विवेका
तहँ नानात्व बुद्धि अज्ञाना कर्तृत्वादिक तथा बखाना
जीव ईश आदिक जत भेदा मायामय वास्तविक अभेदा
यदवधि गुणमय प्रकृति प्रवाहा तदवधि जगदम्बुधि अवगाहा
यदि भवबन्धन वस्तु अलीका तदा मोक्ष पदकर कस टीका
मिथ्या भवबन्धन यदि एहू मृषा मोक्ष अपि नहि सन्देहू
पावन ज्ञानवान जो कोई यह रहस्य जानत जन सोई
भाखत भइँ सुनि श्रीजगदम्बा गावत जसु जस वेद कदम्बा

दोहा

चान्द्रायण आदिक विविध, व्रत की हश जगदीश ।
जाहि आचरत विमल चित, निर्मल होत अनीश ॥३६॥
तपहिँ प्रशंसहिँ मुनिनिकर, निगमागम इतिहास ।
तप नामक कृच्छ्रादि व्रत, करत विवेक विकास ॥३७॥

सोरठा

अन्तःकरण विशुद्धि, उपजावत निष्काम तप ।
तपो विशोधित बुद्धि, अधिकृत ब्रह्म विचार महँ ॥५१॥

चौपाई

सहधर्मिणी वचन सुनि शंकर भाखत भउ त्रैलोक्य शुभंकर
कृच्छ्र विविध विध भाखत वेदा सुनहु समाहित मति तसु भेदा
तप सान्तपन कृच्छ्र परसिद्धा संयम तद्विषयक भन सिद्धा
पञ्चगव्य भक्षण पूरव दिन अहोरात्र उपवास अपर दिन
घृत दधि पय गोमय गोमूत्रा पञ्चगव्य भाखत श्रुति सूत्रा
विहित कुशोदक मिश्रण तहँमा पञ्चगव्य भक्षण विध जहँमा
मूत्र आठ मासा परिमाना गोमय षोड़श माष बखाना
द्वादश माष दुग्ध परिमाना दश मासा दधि मान बखाना
घृत अपि अष्ट माष परिमाना एतदर्ध कुशउदक बखाना
तीन कृच्छ्र सान्तपन विधाना यति सान्तपन तासु अभिधाना
गोमूत्रादिक पृथक् पृथक्करि प्रतिदिन पियत मान मद परिहरि
सप्तम दिवस निरन्न बितावै सोइ महा सान्तपन कहावै

गोमूत्रादि अशन दुइ दुइ दिन पृथक् पृथक् उपवास चरम दिन
अति सान्तपन तासु अभिधाना भाखत निगमागम मुनि नाना
क्वाथ पलाश उदुम्बर पुःकर श्रीतरुदल कर कुश जल सुन्दर
प्रतिदिन पृथक् क्वाथ कर पाना सोइ पर्ण सान्तपन विधाना
तप्त दुग्ध घृत अरु जलपाना दिन चतुर्थ उपवास विधाना
तप्त कृच्छ्र निगमागम गावत पाप पुञ्ज द्रुत दूर दुरावत
दुग्धादिक शीतल यदि होई शीत कृच्छ्र भाखत श्रुति सोई
तीन तीन दिन तसु तसु पाना तीन दिवस उपवास विधाना
तप्त शीत कृच्छ्रहिं भन कोई दिनकर सुत भय मेटत जोई
एक भुक्त अरु नक्त अयाचित अशन अलाभ निमित्त कदाचित
अनशनविधिअपिमुनिजनगावत अनशनविधिअन्तिमदिनभाखत
पाद कृच्छ्र अभिधान तपस्या भाखत मुनि मन्वादि नमस्या
तीन तीन दिन एवं व्रत विधि द्वादशाह सम्पाद्य धर्मनिधि
प्राजापत्य तपः श्रुति सिद्धा गावत निगमागम मुनि वृद्धा

छन्द

पाणिपूरण अन्न भोजन होय प्राजापत्यमेँ ।
यदि तदा अभिधान तसु अति कृच्छ्र व्रत मनि सत्यमे ॥
ग्रास संख्या कथन नहि इह उक्त जस निगमादिमेँ ।
यथा शक्ति अनेक व्रत विधि उक्त मनु ग्रन्थादिमेँ ॥
कृच्छ्रादि कृच्छ्र अभिधान तपो व्यवस्था ।
नाना पुराण निगमागम शास्त्र संस्था ॥

षड् युग्म वासर सकृज्जल मात्र पाना ।
एतत्तपश्चरण गावत वेद नाना ॥

चौपाई

द्वादश दिवस उपोषण जोई व्रत पिण्यक मनु भाषित सोई
पिण्याकाशन अरु मण्डाशन तक्रपान व्यासादिक मुनि भन
अम्बुपान अरु सक्तुक भोजन षष्ठ दिवस महँ विहित अभोजन
वासर षट् संपाद्य तपस्या सौम्य कृच्छ्र भन विप्र नमस्या
पिण्याकाशन प्रथम दिवस जहँ सक्तु अशन दूजे वासर महँ
तीजे वासर तक्र पान जहँ विहित अभोजन अन्तिम दिनमहँ
सौम्य कृच्छ्र भाखत मुनि कोई चतुर्दिवस जसु व्रत विधि होई
भाखत वेद द्रव्य परिमाना यद्भक्षण करि रहि सक प्राना
पिण्याकादिक पञ्च द्रव्य जो तीन तीन दिन भक्षण तसु जो
अनुदित इह उपवास विधाना दिवस पञ्चदश साध्य बखाना
कृच्छ्र तुला पुरुषाख्य प्रसिद्धा जासु प्रशंसा गावहिं सिद्धा
दिवस पञ्चदश उक्त विधाना वासर षट् उपवास बखाना
दिवस एकविंशति परिमाना जसु संपादन समय बखाना
कृच्छ्र तुला पुरुषाह्वय कोई भाखत अति दुष्कर तप जोई
सुनहु प्रिये चान्द्रायण व्रत अब जासु प्रशंसा गावत मुनि सब
यव इव मध्य भाग असथूला ग्रास वृद्धि जहँ विधि अनुकूला
भन यवमध्य नाम चान्द्रायन विपुल ग्रास तहँ लखि द्वैपायन
जिमि पिपीलिका मध्यम भागा सूक्ष्म पीन पुनि प्रान्त विभागा

भन पिपीलिका मध्य निगम गन ग्रास ह्रास लखि नाना मुनिजन
शुक्ल पक्ष प्रतिपत् इक ग्रासा इक इक ग्रास वृद्धि भन व्यासा
तिथि पूर्णिमी पञ्चदश ग्रासा पुनि एकैक ग्रासकर ह्रासा
कृष्ण पक्ष चौदहवीं तिथि जब एक ग्रास अनुमति श्रुति भन तब
होय अमावस तिथि जब उपगत तदा उपोषण विधि श्रुति सम्मत
चन्द्रकलाकर वृद्धि ह्रास जिमि वृद्धि ह्रास इह ग्रास विषय तिमि
यथा अमावस कला अदर्शन तिमि एतत्तिथि ग्रास अदर्शन
उपचय अपचय विधि इह भाषित अपचय उपचय क्वचिदपि भाषित
प्रतिपत्कृष्ण चतुर्दश ग्रासा सम्मत क्रमिक ग्रासकर ह्रासा
एक ग्रास चौदहवीं तिथि जब कुहू समागत समुपोषण तब
सित प्रतिपदारभ्य पुनि वृद्धी विहित ग्रासकर यत्कृत सिद्धी
तिथि पूर्णिमा पञ्चदश ग्रासा अपचय विधि अस गावत व्यासा
षोड़श दिन वा दिवस चतुर्दश पक्ष यदा तिथि वृद्धि ह्रास वश
पक्ष त्रयोदश दिन भयकारक ग्रास त्रयोदश विघ्न विदारक
पक्ष सप्तदश दिन भयकारक ग्रास सप्तदश विघ्न विदारक
सित दल इक इक ग्रास वढ़ाइय शिति दल इक इक ग्रास घटाइय
इति वचनानुसार क्रम बोधा माननीय नहि उचित विरोधा
करि क्रम भंग बार दुइ दिन महँ ग्रासग्रसन विधि भ्रम विकल्प तहँ
दुर्वलमति कल्पित विधि जो जो क्रम विभंग भय धर्षित सो सो
मूल कुठाराघात निदर्शन दर्शित अरु कृत उत्पथ दर्शन
शुक्लपक्षगत वासरादि जो कोउ न कहि सक कृष्ण पक्ष सो

कृष्ण पक्षगत वासरादि जो कोउ न कहि सक शुक्ल पक्ष सो
यागादिक महँ तत्तत् समया नहि पाक्षिक इति निर्णय अनया
इक रवि महँ द्विर्भोजनकारी व्रती न किंतु दुर्गति अधिकारी
षोड़श ग्रास* चतुर्दश ग्रासा भाखत तदा महामुनि व्यासा
नमो मन्त्र युत स्वाहा मन्त्रा ग्रास मन्त्र भाखत श्रुति तन्त्रा
वृद्धि विषय महँ अन्तिम मन्त्रा पुनि पठनीय कहत श्रुति तन्त्रा
ह्रास विषय महँ अन्तिम मन्त्रा अपठनीय भाखत श्रुति सन्ता
शिखी अण्ड परिमित प्रति ग्रासा मुख विकार परिमाण व्युदासा
पुटकादिक महँ परिमित ग्रासा धारणीय जहँ वृद्धि न ह्रासा
कुक्कुटाण्ड आर्द्रामलकादी ग्रासमान अपि भन मन्वादी
ग्रास द्रव्य वर्णन आकर्णन करहु गिरीन्द्र बालिके थिर मन
अस कहि पुरहर भाखन लागे पर उपकार सुधारस पागे
चरु भिक्षान्न सक्तुकण यवकन शाक पयोदधि घृत मुनिजन भन
मूल फलादि हविष्य वस्तु जत ग्रास द्रव्य श्रुतिशास्त्र विहित तत
व्रत आरम्भ समाप्ति समय महँ होमादिक उद्घोषित जहँ तहँ
व्याहृति होम विधान प्रसिद्धा अपर मंत्र कृत अपि भन वृद्धा
तर्पण होम हव्य अनुमन्त्रण मृदुकर उपस्थान आमन्त्रण
यथाशक्ति विप्रन कहँ समुचित भाखत मुनि मन्वादिक श्रुतिवित
आज्य होम *यद्देवादिक ते उक्त प्राथमिक मन्वादिक ते
देव कृतस्येत्यादि मन्त्र ते अन्त्याहुति कृति उक्त तन्त्र ते

---

* ग्रास विषयक प्रमाण तथा मन्त्रादि परिशिष्ट में देखिये ।

व्रत समाप्ति कालिक समिदाहुति व्रतारम्भ कालिक आज्याहुति
समुचित उभय काल होमादिक अत्यावश्यक अन्तिम कालिक
व्याहृति अन्वित प्रणव समन्वित तदिति चतुर्विंशति अक्षरमित
गायत्री मनु परम प्रशस्ता भाखत वेद पुराण समस्ता
तत्सम्पाद्य होम आदिक कृति निगमागम पुराण सम्मति इति
तिथि पूर्णिमा पञ्चदश ग्रासा दिन तसु पूर्व विहित उपवासा
एतावतादर्श तिथि माहीँ करत कोउ ऋषि अशन मनाहीँ
एवं विधि द्वात्रिंशद्वासर सूचित व्रत सम्पादन अवसर
त्रिंशद्दिन पूर्वोक्त प्रकारा व्रत विधान श्रुतिमत अनुसारा
नियत कर्म परिहरै न कबहूँ करै कठिन दुश्चर तप जबहूँ
कहौँ अपर चान्द्रायण व्रतविधि कहत यथा मन्वादि धर्मनिधि
अस कहि भाखत भउ श्रीशंकर सदसदनुग्रह निग्रह तत्पर
चत्वारिंशत् दुइ शत परिमित कथमपि ग्रास ग्रसन भन कश्चित
त्रिंशद्दिन सम्पाद्य उक्त व्रत विदित अपर चान्द्रायण श्रुतिमत
अष्ट ग्रास प्रति वासर भक्षण मध्य दिवस एतद्व्रत लक्षण
चतुश्चतुर्मित निशि दिन ग्रासा एतत्व्रत वा भन मुनि व्यासा
एक दिवस महँ ग्रास चतुर्मित अपर दिवस महँ द्वादश परिमित
अपर दिवस पुनि समुपोषण भन षोड़श ग्रास अपर दिन पुनि भन
एतद्व्रत लक्षण अथवा तस जानहु मुनि मनु उद्घोषित जस
कथमपि दुइ शत चालिस माना एतद्व्रत महँ ग्रास विधाना
नहि इह प्रतिपदादि अनुवृत्ती मास ग्रास परिपूर्ति प्रवृत्ती

दुइ शत और पञ्चविंशति मित ग्रास ग्रसन वा भन इह कश्चित
अष्ट ग्रास विधि बोधित व्रत जो प्रतिदिन यति चान्द्रायण व्रत सो
ग्रास अहर्निश चतुश्चतुर्मित शिशुचान्द्रायण भावत श्रुतिवित
तीन तीन प्रतिवासर ग्रासा ऋषि चान्द्रायण भन सो व्यासा
नवति ग्रास त्रिंशदिन माहीँ उपचय अपचय विधि कछु नाहीँ
मार्कण्डेय कथित सोमायन व्रतविधि श्रवण करहु सुस्थिर मन
गोवक्षोज चतुष्टय पयकर पान सप्त वासर भन मुनिवर
गोवक्षोज तृतय पय पाना दिवस सप्त मुनिवर्य बखाना
गोवक्षोज द्वितय पय पाना दिवस सप्त मुनिवर्य बखाना
गोवक्षोज एक पय पाना दिवस षट्क मुनिवर्य बखाना
दिवस तीनि उपवास विधाना सोमायन व्रत वेद बखाना
चान्द्रायण सोमायन व्रत द्वय तुल्य फलद इति मुनिवर आशय
तीस दिवस सम्पाद्य उभय व्रत साधन रीति भेद भन श्रुति जत
दिवस चतुर्विंशति संपादित प्रिये अपर सोमायन समुदित
गोवक्षोज चतुष्टय पयकर पान तीन वासर भन मुनिवर
गोवक्षोज तृतय पय पाना दिवस तीन मुनिवर्य बखाना
गोवक्षोज द्वितय पय पाना दिवस तीन मुनिवर्य बखाना
गोवक्षोज एक पय पाना तीन दिवस मुनिवर्य बखाना
क्रम विलोम पुनि गो पय पाना मार्कण्डेय मुनीश बखाना
एक द्वितय अरु तृतय चतुष्टय गोवक्षोज स्रवित पावन पय
पान तीन दिन तीन दिवस पुनि तीन दिवस पुनि तीन दिवस पुनि

दिवस चतुर्विंशति सम्पादित एवंविध सोमायन सम्मुदित

दोहा

एतद्व्रत आरम्भ करि, कृष्ण चतुर्थी माहिँ ।
करि समाप्त सित द्वादशी, दुरित वृन्द जरि जाहिँ ॥३८॥

सोरठा

गायत्री जप आदि, तप विधि इति कर्तव्यता ।
गावत मुनि मन्वादि, यम नियमादि अनेक विध ॥५२॥

चौपाई

मज्जन तृषवण द्विसवन अथवा एक सवन विधि बोधित यद्वा
भूमिशयन पत्रोपरि भोजन ब्रह्मचर्य दिन निद्रा वर्जन
सत्य अहिंसा अस्तेयादिक ह्रीमति आहुति स्वाध्यायादिक
उक्त व्रतन महँ वपन विधाना प्रायश्चित्त प्रसंग बखाना
वपन अभाव दान द्विगुणी कृत भाखत मुनि मन्वादिक श्रुतिवित
व्रत अनुकल्प विषय गोदाना विविध संख्यया वेद बखाना
तारतम्य अघ विषयक यादृश तारतम्य दानहुँ महँ तादृश
प्रायश्चित्त अनेक प्रकारा भाखत मुनि मनु श्रुति अनुसारा
निगमागम इतिहास पुराना मनु मुनि निर्मित सुस्मृति नाना
पातक विविध प्रकार बखानत प्रायश्चित्त तथा तसु भाखत
निष्कृति अघापहारक कोई केवल व्यवहृति हेतुक कोई
उभय कार्य सम्पादक कोई अघ अनुसार परिस्थिति होई
कहँ लगि ताकर करौँ बखाना जो कुञ्जर असनान समाना

मज्जन पुनि धूली उद्धूलन पुनि मज्जन धूली उद्धूलन
एवंविध पुनि पुनि असनाना पुनि पुनि तनु महँ धूलि मिलाना
प्रायश्चित्त पाप अपनोदक नहि तद्धेतु मनोमल शोधक
कलुषित मन प्रेरित यह देही पुनि पुनि कृत अघ विषय सिनेही
निर्मल मन पातक नहि करई निस्पृह विषय राग परिहरई
यद्यपि कृच्छ्रादिक तपचर्या मनोविशोधक भन मुनिवर्या
नहि वासना मिटावत तद्यपि कृच्छ्रादिक दुश्चर तप यद्यपि
विश्वामित्र पराशर आदिक गावत जसु जस इतिहासादिक
सोउ वासना वासित होई कियउ पाप जानत सब कोई
निर्वासनिक हृदय जस होई साधन प्रिये कहौं अब सोई
गायत्री पञ्चार्ण प्रणव जप फल इच्छा विरहित सात्त्विक तप
श्रुति स्वाध्याय श्रवण अरु कीर्तन क्रम क्रम रति विषयक परिवर्तन
विषय भावना तजि मम चिन्तन विषय भावना तजि मम चिन्तन
जस जस मम चिन्तन दृढ़ होई तस तस मम प्रेमोदय होई
इक्षु रसास्वादन क्रम सुख जिमि मम प्रेमानुभूति क्रम सुख तिमि
विषय विराग क्रमिक दृढ़ होई मेटत विषय वासना सोई
पापाचरण निवर्तक सोई शान्ति सौख्य परिचायक होई
मनोवृत्तिकर चारि अवस्था उद्घोषित निगमागम संस्था
विक्षेपावगाहिनी प्रथमा तथा लयावगाहिनी चरमा
गतायात असलेष नामिका दूजी तीजी मध्य गामिका
विषय मात्र परिचिन्तन जहँमा विक्षेपावगाह मन तहँमा

मम चिन्तन पुनि विषय भावना मम चिन्तन पुनि विषय भावना
गतायात अवगाहन तहँमा भन क्रम प्रत्यावर्तन जहँमा
लक्ष्यैकाग्र भाव्य दृढ़ जहँमा असलेषावगाह भन तहँमा
लहि गुरु दुःख न जाते टरई द्वन्द्व दुःख मनसा परिहरई
बुद्धि प्रसादज सुख अनुभूती उपजत लोकालोक विभूती
सकल वृत्ति विस्मरण सरूपा लय सुख थिति समाधि अनुरूपा
जहँ ऐकाग्र्य निरोध क्रमिक थिति जहँ अवशिष्ट सत्य सुखमय चिति
बुद्धि प्रसाद समुद्भव हर्षा तहाँ उपस्थित जिमि घन वर्षा
सकल वासना दूर दुरावत लोकोत्तर सुख चय दरसावत
प्रायश्चित्त यथारथ एहू योग सांख्य मत नहि सन्देहू
अनशन दान ग्लानि पछतावा प्रायश्चित्त भेद मुनि गावा
पाप करत अज्ञात जीव जो शुद्ध होत करि दानादिक सो
जानि बूझि जो कुत्सित कर्मा तहाँ अकिञ्चित्कर शुभ धर्मा
गहती प्रायश्चित्त प्रवृत्ती तहँ भाखत मुनि सात्त्विक वृत्ती
जानि बूझि इच्छित जहँ दुष्कृति तहँ भन श्रुति द्विगुणी कृत निष्कृति
पाप महापातक उपपातक अति पातक प्रासंगिक पातक
पञ्चक गण यह शास्त्र प्रसिद्धा निष्कृति पृथक पृथक तसु सिद्धा
संक्षेपित निष्कृति कछु भाखौं धर्मशास्त्र मर्यादा राखौं
ब्रह्महनन अरु मदिरा पाना करि चोरी सुवरन आदाना
गुरु तल्पारोहण यह चारी महा पाप श्रुत निगम मझारी
पञ्चम इन चारिहुँ कर संगा पुनि बहु विध तत्सम परसंगा

दोहा

पातक ब्राह्मण हनन सम, गुरुजन निन्दा माहिँ ।
श्रुतिनिन्दा अरु मित्रजन, वध महँ संशय नाहिँ ॥३९॥
लसुन पलाण्डुक आदिकर, भक्षण शास्त्र निषिद्ध ।
कुटिल भाव निज उच्चता, सूचक अनृत प्रसिद्ध ॥४०॥
रजस्वलाकर कामवश, अधरासव कर पान ।
भाखत आगम निगम गण, मदिरापान समान ॥४१॥
अश्वरत्न अरु अंगना, रत्न और गोरत्न ।
हरण और निक्षेपकर, हरण प्रचण्ड सपत्न ॥४२॥

सोरठा

स्वर्णस्तेय समान, भाखत निगमागम निकर ।
व्यासादिक मतिमान, सुरगुरु आदिक ज्ञाननिधि ॥५३॥
मित्रांगना कुमारि, भगिनी अन्त्यज अंगना ।
प्रिये सगोत्रा नारि, पुत्रवधू गुरुवधू सम ॥५४॥
इन महँ गमन निषिद्ध, गुरुपत्नी महँ गमन सम ।
महा पाप श्रुति सिद्ध, एवमेव मन्वादि भन ॥५५॥

चौपाई

दयिते भगिनी मातृसपत्नी देशिकतनया देशिकपत्नी
मातु पिता भगिनी गुरुतनया निज तनया संगम अति अनया
संगम इनकर परम निषिद्धा गुरुतल्पग अघ सरिस प्रसिद्धा
बहुरि प्रिये उपपातक वर्णन करहु समाहित मन आकर्णन

अस कहि शंकर भाखन लागे पर उपकार सुधा रस पागे
गोवध और व्रात्यता चोरी ऋण धन अनपाकृति बरजोरी
देव पितर ऋषि ऋण अनपाकृति अथवा गिरिनन्दिनि उपदुष्कृति
लहि अधिकार अनग्न्याधाना उपपातक निगमादि बखाना
दार ग्रहण अधिकार प्रसिद्धा अग्न्याधान माँह भन सिद्धा
अग्निहोत्र अरु अग्न्याधाना एकार्थक मुनि वृन्द बखाना
अग्रज अग्र अनुजकर परिणय अविक्रेय लवणादिक विक्रय
पाठन पठन वैतनिक जोई शास्त्रोदित उपपातक सोई
पारिवित्य परनारी सेवन वृद्ध्युपजीवन. लवणोत्पादन
नारी क्षत्रिय वैश्य शूद्रकर हत्या उपपातक भन मुनिवर
नास्तिकता निन्दित उपजीवन सन्तति विक्रय व्रतविधि भञ्जन
धान्य कुप्य पशु चोरी याजन भन अयाज्यकर उपअघ मुनिजन
त्याग मातु पितु सुतकर विक्रय तड़ागादिकर मुनि मनु आशय
उपपातक इति कन्या दूषन परिविन्दक याजन उपअघ भन
अरु तत्प्रति कन्याकर दाना कुटिल भाव गुरु भिन्न स्थाना
स्वार्थपाक अरु व्रतविधि लोपा उपजावत शासक यम कोपा
गिरिवरनन्दिनि मद्यपायिनी जाया संगति नरकदायिनी
स्वाध्यायाग्नि त्याग सुत त्यागा भन उपपातक बान्धव त्यागा
इन्धन हेतु आर्द्र द्रुम छेदन नारीहिंसा औषध जीवन
सुन्दरि पीड़क यन्त्र विधाना निज विक्रय उपपाप बखाना
शूद्र निषेवण सख्य नीचकर विविधव्यसन उपअघ भनमुनिवर

हीन योनि संगमन निराश्रम थिति परान्न कृत पोषण अधिगम
असच्छास्त्रकर अरु आकरकर अधिकृति अरु विक्रय पत्नीकर
मुनि मन्वादि उक्त उप पापू गणित कियउ सुन्दरि हम आपू

दोहा

पीड़न ब्राह्मण जाति कर, मदिराघ्रेयाघ्रान ।
जातिभ्रंशकर पाप अरु, पुं पशु रति श्रुतिमान ॥४३॥
खर हय उष्ट्र मृगेभ अज, आविक वध निगमादि ।
वर्णसंकरी करण अघ, भाखत मुनि मन्वादि ॥४४॥
धनादान पतितादि ते, अरु वाणिज्य निषिद्ध ।
अनृत अपात्रीकरण अघ, शूद्र दास्य भन सिद्ध ॥४५॥
खगवध कृमिवध कीटवध, भोजन मदिरायुक्त ।
चौर्य फलेन्धन कुसुमकर, मलीकरण अघ उक्त ॥४६॥

सोरठा

मलीकरण अघ उक्त, महिष मीन अरु सर्पवध ।
विविध निमित्त प्रयुक्त, अघ प्रासंगिक चारि यह ॥५६॥
पाप प्रकीर्णक नाम, विविध निमित्तक विविध विध ।
जो अनुक्त यहि ठाम, अपर नाम संकीर्ण जसु ॥५७॥
महा पाप सम पाप, पाप मात्र अभिधान तसु ।
शास्त्रोदित अति पाप, त्याग मातु पितु आदिकर ॥५८॥

चौपाई

भन मनु मातृ सपत्नी गमना पुत्रवधू अरु दुहिता गमना
गिरिजे अहि पातक अभिधाना याज्ञवल्क्य आदिक मुनि नाना
अनुपातक अपि भाखत कोऊ कतिपय थल अनुदित अपि जोऊ
प्रिये पितृ असवर्णा पत्नी मातृ मातृ मातुलकर पत्नी
सुन्दरि पितुभ्राताकर पत्नी पत्नी माता नरपति पत्नी
मातु पिता भगिनी सखिपत्नी स्वसृ सखी अरु श्रोत्रिय पत्नी
उत्तम वर्ण समुद्भव नारी रजस्वला समगोत्रा नारी
अविवाहिता अन्त्यजा नारी प्रव्रजिता शरणागत नारी
ऋत्विग्वधू पुरोहित नारी जो असवर्णा भगिनी नारी
निक्षिप्ता नारी परिगणिता द्वाविंशति प्रकार श्रुति गदिता
अनुपातक भन इन महँ गमना मुनि मन्वादिक पूजित चरना

सोरठा

अति संक्षिप्त प्रकार, अघ पञ्चक परिगणित भउ ।
विस्तृत विशद विचार, धर्म ग्रन्थ महँ उक्त जसु ॥५९॥

चौपाई

अस कहि प्रायश्चित्त विधाना भाखत भउ शंकर भगवाना
कुटी बनाय विपिन महँ वासा करै ब्रह्महा विगत सुखासा
वनवासावधि द्वादश वत्सर भिक्षा भक्षक शव शिर ध्वजकर
फल मूलादि अलाभ होय जब भिक्षा भक्षण तासु विहित तब
अष्टोत्तर सहस्र गोदाना व्रत समनन्तर वेंद बखाना
यदि न होय गोदान समर्था सेतुबंध मम दरस तदर्था

एतत् प्रायश्चित्त विधाना केवल व्यवहारार्थ बखाना
प्रायश्चित्त पाप अपनोदक मरणान्तिक दुर्गति अवरोधक
अग्निपतन अरु सिन्धु प्रवेशा मरणान्तिक निष्कृति आदेशा
धर्म शास्त्र महँ विस्तृत वर्णन कियउँ अत्र दिङ्मात्र निदर्शन
कहहिँ अश्वमेधादिक यागा क्वचिदाचार्यवर्य बड़भागा
नृपसंपाद्य याग विधि एहू नरपति हेतुक नहि सन्देहू
ब्रह्महनन महँ जो अघ मुनि भन इति ब्राह्मणी तथा भन श्रुतिगन
प्रायश्चित्त अर्ध तसु गांवत मुनिजन श्रुतिरपि तथा सुनावत
विस्तर भय तत्कथन निरोधक नाना धर्म ग्रन्थ तद्बोधक

दोहा

सुरापान निष्कृति कथन, सुनहु प्रिये मन लाय ।
पाप विशोधन हेतु जेहि, भाखत मुनि समुदाय ॥४७॥

चौपाई

पावक निभ मदिराकर पाना करि मद्यपी तजै निज प्राना
पानासक्त होय यदि सोऊ पान करावै दूजो कोऊ
अघी पान कारयिता नाहीँ अस सम्मति निगमागम माहीँ
पैष्टी पान विवक्षित तहँमा प्राणान्तिक निष्कृति विधि जहँमा
गौड़ी माध्वी प्रभृति पान जहँ विहित न प्राणान्तिक निष्कृति तहँ
पैष्टी भिन्न मद्यकर पाना विप्रेतर महँ अनघ बखाना
अति सन्तप्त गव्य तादृश जल पान उक्त वा निष्कृति सम फल
यदि अबोधकृत पैष्टी पाना कृच्छ्र और अति कृच्छ्र बखाना
यदि अबोधकृत गौड़ी पाना तप्त कृच्छ्र निगमादि बखाना

यदि अबोधकृत माध्वी पाना एतदेव व्रत वेद बखाना
करि अज्ञात वारुणी पाना व्रत अरु पुनरुपनयन विधाना
मद्य चतुर्दश लोक प्रसिद्धा तीन मुख्य तहँ भन मुनि सिद्धा
पैष्टी गौड़ी माध्वी नामा भन मदिरा निगमागम ग्रामा
गरीयसी तहँ पैष्टी नामा श्रुति द्विज त्रितय अपेय बखाना
शूद्र निमित्त न उक्त अपेया लौकिक अनुमति उचित अदेया
प्रथम वर्णकर सदा अपेया सकल सुरा जसु शक्ति अमेया
क्वचिदपि सुरा पानकर अनुमति तन्त्र पटल महँ तदपि चिन्त्यअति
जहँमा इन्द्रिय प्रीति अभावा पराभक्तिकर पूर्ण प्रभावा
साधक अहंकार मद विरहित शुद्ध समाधि हेतु उत्कण्ठित
शुद्ध सत्त्व गुण विकसित जहँमा सुरापान तान्त्रिक विधि तहँमा
ब्राह्मण वेद ब्रह्म अधिकारी हीन ब्रह्मबल स्वेच्छाचारी
यदि निर्गुण थिति अधिगत होई अविहित विहित विषय नहि कोई
स्वर्णस्तेय महापातक जो केवल प्रथम वर्णकर श्रुत सो
स्वर्णस्तेय अपर वर्णन कर उपपातक भाखत मनु मुनिवर
मुद्रा कनक माष दश परिमित तदपहरण महदघ भन श्रुतिवित
चान्द्रायण व्रत निष्कृति ताकर व्यवहारार्थ मान भन मुनिवर
करि यवकण गोमूत्र अहारा शुद्ध होत करि तसु अपहारा
माष मात्रकर तीन मास भरि भाखत निगमागम व्रत विधि करि
किञ्चिदल्प दश माष स्वर्ण हरि शुद्ध होत भरि वत्सर व्रत करि

दोहा

गुरुतल्पग अघ कथन अब, सुनहु प्रिये मन लाय ।
प्रायश्चित्त विधान तसु, कहौं तोहि समुझाय ॥४८॥
एकादश संख्यक गुरू, कहत शास्त्र समुदाय ।
करौं प्रिये परिगणन तसु, श्रुति सम्मति मन लाय ॥४९॥

चौपाई

गुरु आचार्य पिता अरु भ्राता अग्रज नरपति दण्ड विधाता
मातुल श्वशुर और असुत्राता मातु-पिता-पितु गुरु विख्याता
ज्येष्ठ वर्ण अरु भ्राता पितु कर गुरु एकादश भाखत मुनिवर
गुरु पञ्चक कतिपय मुनि सम्मत त्रिक अपि कतिपय महर्षिअभिमत
जनक और गायत्री दाता विद्या दाता अन्न प्रदाता
भयत्राता गुरु पञ्चक ख्याता भाखत एवं श्रुति मत ज्ञाता
उपाध्याय नरपाल जनयिता भन गुरु त्रिक श्रुतिमत दर्शयिता
इनकर पत्नी महँ कृत गमना भन गुरुतल्पग पूजित चरना
पितु पत्नी पद वाच्य यहाँपर मातृ सपत्नी भाखत मुनिवर
मातृ सपत्नी अपि असवरणा अविवक्षित यहँ भन मुनि चरणा
हीन वर्ण महँ नहि महदघ भन निगमागम पुराण अरु मुनिजन
गुरुतल्पग निष्कृति विधि वर्णन करौं यथा भन निगमागम गन
तप्तायस प्रतिमा आलिंगन अथवा तादृश तल्प शयन भन
उत्कर्तन करि वृषण युगलकर धारण करै तासु निज करपर
निष्कृतित्रिविधकहतमरणान्तिक कामित अघ विषयक सैद्धान्तिक

पत्ती उतराभिमुख गन्ता शुद्ध होत तनु तजि भन सन्ता
वर्ष चतुर्विंशति परिमाणा कहत महाव्रत वेद पुराणा
भिक्षाशन वनवास विधाना यथा पूर्व यहँ भन मुनि नाना
भन सर्वस्वदान अपि कोई धर्म रहस्य विज्ञ मुनि जोई
नहि प्राणान्तिक निष्कृति तहँमा प्रिये अकाम कलित अघ जहँमा
महापातकी संसर्गी जो महा पातकी वेदोदित सो
करै ब्रह्मवध निष्कृति सोऊ ब्रह्मवधी संसर्गी जोऊ
तत्तत् पातक निष्कृति श्रुति भन यद्यत् पातकि संसर्गी जन
पाद न्यून सांसर्गिक निष्कृति तावन्मात्र बिनासत दुष्कृति
संसर्गी द्वितीय जो कोई निष्कृति अर्ध किये शुचि होई
नहि चतुर्थ महँ पातक लेशा गिरिनन्दिनि अस श्रुति आदेशा
व्रत द्वादश वार्षिक यदि होई नव षट तीन अब्द क्रम सोई
अस सर्वत्र ऊह कर्तव्या भाखत अस नाना मुनि भव्या
अल्पकाल सांसर्गिक जहँमा प्रायश्चित्त अल्प भन तहँमा
बृहत् काल सांसर्गिक जहँमा प्रायश्चित्त बृहद् भन तहँमा

दोहा

एकासन शय्यादि महँ, सह उपवेशन जोइ ।
एक पंक्ति भोजन मिलित, पाक भांड जहँ होइ ॥५०॥
पक्व अन्न मिश्रण प्रिये, सह भोजन अपि सोइ ।
याजन अध्यापन क्रिया, वैवाहिक विधि कोइ ॥५१॥

चौपाई

कन्यादान और आदाना परिणय महँ द्वैविध्य बखाना
अस नवधा संसर्ग बखाना नाना मुनि जन वेद पुराना
भोजन आसन अरु शय्यादिक सहाचरण कर्ता सब कालिक
संसर्गी वत्सर पर्यन्ता पावत पतित साम्य भन सन्ता
प्रायश्चित्त कृच्छ्रव्रत नामा भाखत यहँ निगमागम ग्रामा
असु संसर्गी अन्नादन महँ निष्कृति अर्धसुकृच्छ्र वेद कह
एतदन्न भक्षक जो कोई कृच्छ्रपाद ते शोधित होई
अत्र कथन संक्षिप्त प्रकारा धर्मग्रन्थ महँ विशद विचारा

दोहा

सुन्दरि अनुपातक कथन, करौं बहुरि समुझाय ।
भाखत नाना मुनि यथा, निगमागम समुदाय ॥८२॥
तत्तन्निष्कृति अपि कहौं, श्रुति सम्मति अनुसार ।
संक्षेपित क्रम बृहत् क्रम, स्मृतिगत विविध प्रकार ॥८३॥

चौपाई

उत्कर्षार्थक मिथ्या वचना नृप ढिग मिथ्या पैशुन रचना
गुरु विषयक मिथ्या अभियोगा ब्रह्महनन सम भन मुनि लोगा
श्रुति विस्मरण और तसु निन्दन कूटसाक्ष्य अरु सखिजन हिंसन
अन्त्यजान्न लशुनादिक भक्षण सुरापान सम भाखत मुनिजन
निःक्षेपापहरण अरु नर हय रजत भूमि मणि हीरक कतिपय
इन सबकर अपहरण वेद भन स्वर्णहरण सम नाना मुनिजन

स्वजना गमन कुमारी गमना सुन्दरि अन्त्यज नारी गमना
सखिपत्नी सुत पत्नी गमना तादृश यादृश गुर्वी गमना
ज्ञानकलित यदि पातक एहू आमृति निष्कृति नहि सन्देहू
महद्घ महँ जिमि निष्कृति रचना तिमिनिष्कृतियहँइतिश्रुतिवचना
यदि अज्ञान कलित अघ एहू निष्कृति कृच्छ्रादिक व्रत तेहू
चान्द्रायण पराक व्रत आदिक बड़ लघु अघ महँ भन मन्वादिक
भन पराक प्रतिनिधि श्रुति नाना लघु अघ शुद्धि पञ्च गोदाना

दोहा

गोवधादि उपपाप इति, भाखत वेद पुराण ।
प्रायश्चित्त विधान तसु, सुनहु सहित अवधान ॥७४॥

चौपाई

जो उपपाप सोइ अनुपापा गणित क्वचित् नहि तसु अपलापा
नाना मुनिकर नाना सम्मति माननीय सब त्यागि असम्मति
उपपातक अनुपातक जोऊ लघु अघ गुरु अघ जानहु सोऊ
गौरव लाघव ज्ञाताज्ञाता अघ महँ भन मुनि मनु विज्ञाता
अनुपातक उपपातक भावा उपजावत मति अमति प्रभावा
उपपापी गोहन्ता जोऊ गोमुत्रार्द्र पियै यव सोऊ
चूर्णीभूत यवागू नामा एक मास भरि भन मुनि ग्रामा
होय गोष्ठवासी कृत वपना गोचर्मावृत करि तनु अपना
पूर्व दिवस निशि और अपर दिन रहै तीन बेला भोजन बिन
चारिम सायंकाल अहारा परिहरि क्षार लवण व्यवहारा

शुचि गोमूत्र करै असनाना दुइ मासावधि भन मुनि नाना
करै दिवस महँ गो अनुगमना वशीभूत करि इन्द्रिय अपना
करै खुरोत्थ रेणु आदाना शुश्रूषण अरु प्रणति विधाना
आनिशि वीरासन आसीना लहि अवसाद होय नहि दीना
गो उत्थिति महँ निज उत्थाना तासु गमन महँ गमन विधाना
उपवेशन उपवेशन थिति महँ अस आदेश शास्त्र महँ जहँ तहँ
यथा शक्ति गो पालन कर्ता चौर व्याघ्र कृत संकट हर्ता
लखि गोमातु पंक महँ लग्ना करि श्रम करै ताहि तदलग्ना
गर्तादिक पतनादिक अवसर होय शक्ति भरि रक्षण तत्पर
वर्षा शीत मरुतमय अवसर यथा तथा गोरक्षण तत्पर
सहै आपु वरु परम पराभव दूर दुरावै गो संकट लव
निज पर खेत चरै गोमाता खाय अन्न खल चञ्चल गाता
बछिया करै दुग्ध कर पाना करै न तासु कथन मतिमाना
करि अस प्रायश्चित्त विधाना त्रैमासिक व्रत वेद बखाना
शुद्ध होत एतद्व्रत विधि करि गोवध कर्ता आलस परिहरि
एक वृषभ अरु दश गोदाना सुचरित व्रत दक्षिणा विधाना
गो अभाव महँ मूल्य प्रदाना गो वृषभन कर वेद बखाना
यदि अभाव अपि होय मूल्यकर भन सर्वस्व प्रदान तदवसर
क्षत्रियादि स्वामिक गोमृतिकर क्रमिकअल्प निष्कृति भनमुनिवर
शूद्र मात्र स्वामिक गोमृतिकर बहु थल निष्कृति उक्त अल्पतर
रोधन बन्धन योजन ताड़न प्रिये होय यदि गोमृति कारन

क्रमकृत पादवृद्धि निष्कृति महँ भाखत मुनि मन्वादिक जहँ तहँ
भाखत प्राजापत्य विधाना रोधनादि विषयक मुनि नाना
शीत मरुत कृत गोमृति जहँमा उक्त अपालन निष्कृति तहँमा
उद्बन्धन कृत गोमृति जहँमा उक्त अपालन निष्कृति तहँमा
शून्य गृहादि उपेक्षा कारन मृति महँ प्रायश्चित्त अपालन
अल्प जलाशय मज्जन कारन मृति महँ प्रायश्चित्त अपालन
श्वभ्रपतन अहि विद्युत कारन मृति महँ प्रायश्चित्त अपालन
हिंसक श्वापद भक्षण कारन मृति महँ प्रायश्चित्त अपालन
प्राप्त अपालन निष्कृति जहँमा प्राजापत्य नाम व्रत तहँमा
सशिख वपन सन्ध्यात्रय मज्जन अरु तसु आर्द्र चर्मकर धारन
तदनुव्रजन दिन निशि सहवासा भाखत पौराणिक मुनि व्यासा
व्रत समनन्तर ब्राह्मण भोजन भन कर्तव्य निगम आगम गन
व्रत अनुकल्प एक गोदाना वृषभ सहित भाखत मुनि नाना
जानि बूझि गोवध कृत जहँमा कृच्छ्र चतुष्टय समुचित तहँमा
व्रत अनुकल्प चारि गोदाना भाखत निगमागम मुनि नाना
बाल वृद्ध नारी कृत मृति जहँ प्रायश्चित्त अर्ध भन मुनि तहँ
शूद्र कलित अपि गोमृति जहँमा प्रायश्चित्त अर्ध भन तहँमा
गो अभाव तन्मूल्य प्रदाना भाखत मुनि मन्वादिक नाना
नाना व्यक्ति कलित गोमृति जहँ पाद पाद निष्कृति विभिन्न तहँ
रोध बन्ध योजन व्यापादन पाद वृद्धि निष्कृति भन मुनिजन

दोहा

अंकन नासाछेद श्रुति, छेदन बन्धन बीच।
अति दोहन अति वाह महँ, यदि गो पावै मीच ॥५९॥

सोरठा

चान्द्रायण कृच्छ्राख्य, करि जन होत विशुद्ध तहँ।
तदनुकल्प श्रुति-भाख्य, अष्ट धेनुकर दान वा ॥६०॥

चौपाई

शकट वाह दण्डादिक ताड़ित होइ विमूर्छित अथवा निपतित
उत्थित तुरत चलै पद कतिपय पानी पियै ग्रास वा भक्षय
तहाँ न प्रायश्चित्त विधाना भाखत व्यासादिक मुनि नाना
होत रोग कृत गोमृति जहँमा प्रायश्चित्त विहित नहि तहँमा
करत चिकित्सा गोमृति जहँमा प्रायश्चित्त विहित नहि तहँमा
प्रसव निमित्तक गोमृति जहँमा प्रायश्चित्त विहित नहि तहँमा
धर्म ग्रन्थ महँ वितत विचारा अत्र उक्त संक्षिप्त प्रकारा
क्षत्रिय वैश्य शूद्र वध विषयक भन निष्कृति मुनि करुणा हृदयक
चारिम अष्टम षोड़श अंसा भन निष्कृति श्रुति पंकज हंसा
उक्त ब्रह्मवध निष्कृति-यादृश तदपेक्षया अंश एतादृश
सवृषभ सहस संख्य गो दाना क्षत्रिय वध महँ वेद बखाना
सवृषभ शत संख्यक गोदाना वैश्य हनन महँ वेद बखाना
सवृषभ दश संख्यक गोदाना शूद्र हनन महँ वेद बखाना
तीन वर्ष व्रत क्षत्रिय वध महँ सार्ध वर्ष व्रत वैश्य हनन जहँ

नव मासिक व्रत शूद्र हनन महँ उद्घोषण अस श्रुति महँ जहँ तहँ
जो अपकृष्ट वर्णकर घातक करि चान्द्रायण होत विपातक
गायत्री अभिमन्त्रित ग्रासा चान्द्रायण महँ भन मुनि व्यासा
शूद्र वर्ण अपि करि चान्द्रायन शुद्ध होत इति भन द्वैपायन
गायत्री अभिमन्त्रण तहँमा अविहित व्रती शूद्रकुल जहँमा
व्रत अनुकल्प अष्ट गोदाना भाखत मुनिजन मनु भगवाना
अन्त्यजादिवध अन्त्यजादिकरि शुद्ध होत चान्द्रायण व्रत चरि
करि अन्त्यजा गमन सह भोजन करि तसु अमति पूर्व व्यापादन
करि पराक व्रत होत विशुद्धी भन मन्वादिक निर्मल बुद्धी
व्रत अनुकल्प पञ्च गोदाना भाखत मन्वादिक भगवाना
ब्रह्म वधू वध महापाप भन इतर वधू वध उपपातक भन
षड्वार्षिक व्रत विप्रा वध महँ त्रैवार्षिक क्षत्राणी वध जहँ
वार्षिक वैश्या शूद्रा वध महँ उद्घोषित इति श्रुतिमहँ जहँ तहँ
धेनु पञ्च दश दान बखाना व्रत अनुकल्प महामुनि नाना
प्रायश्चित्ती हय वध कर्ता वस्त्र दान तसु अघ अपहर्ता
गज वध प्रायश्चित्त बखाना मुनिजन पञ्च नील वृष दाना
अज अरु मेष हनन महँ मुनिजन वृषभ दान दुष्कृति निष्कृति भन
गर्दभ वध महँ नाना मुनिजन एक वर्ष वय वत्स दान भन
जहँ अज्ञान कलित मृति एहू निष्कृति अर्ध न कछु सन्देहू
अति उत्तम हय खर वध जहँमा विहित कृच्छ्र चान्द्रायण तहँमा
हस्ति तुरग अरु महिष उष्ट्र कपि वध निष्कृति व्रत सप्तरात्र अपि

व्रत अनुकल्प धेनु युग दाना निगमागम इतिहास बखाना
मृति अज्ञान कलित यदि एहू निष्कृति अर्द्ध न यहँ सन्देहू
साधारण वनमृग हत्या जहँ अहोरात्र व्रत घोषित जहँ तहँ
जातवेद इति अग्नि मन्त्र जप व्रत कालिक भन मुनिजन कृततप
व्रत समनन्तर भन घृत दाना याज्ञवल्क्य आदिक मुनि नाना
बिनु जाने वनमृग* मृति जहँमा भन घृतदान विहित श्रुति तहँमा
घृतपद घृत घट दान विबोधक श्रुति आशय अस दुष्कृति शोधक
अहि बिड़ाल श्वा नकुल शृगाला मृति निष्कृति भन मुनि जाबाला
यदि प्रमाद कृत मृत्यू एहू कृच्छ्रपाद व्रत नहि सन्देहू
युग्म दिवस कर दुग्ध अहारा कृच्छ्रपाद श्रुति मत अनुसारा
ज्ञान कलित हत्या यह जहँमा दुग्ध पान वासर त्रय तहँमा
साधारण पक्षी वध जहँमा उक्त नक्तव्रत निष्कृति तहँमा
और माषमित रूपक दाना भाखत मन्वादिक मुनि नाना
भिन्न भिन्न निष्कृति श्रुति सम्मत भिन्न भिन्न खग वध महँ मुनिमत
नहि विस्तार भिया भउ वर्णन निगमागम कृत विस्तर कीर्तन
यहँ दिग्दर्शन मात्र प्रयत्ना विशद विचार हेतु श्रुति यत्ना
पक्षि हनन निष्कृति गोदाना भाखत मुनि मनु वेद पुराना
मत्स्यादिक जलचर वध जहँमा सप्त रात्र व्रत भन श्रुति तहँमा
लवण दान अपि भन मुनि कोई अहोरात्र व्रत विधि जहँ होई

---

* मृग शब्द यहां महिष, हाथी, गैंड़ा, भालू, बन्दर, सिंह, बाघ और विभिन्न प्रकार के मृगों के लिए आया है।

तित्तिर वध विषयक तिल दाना द्रोण मान भाखत मुनि नाना
वर्ष युगल वय वत्स प्रदाना शुक वध निष्कृति वेद बखाना
वर्ष तीनि वय वत्स प्रदाना क्रौञ्च हनन महँ वेद बखाना
शकटमान कृमि आदिक वध महँ शूद्र हनन निष्कृति भन जहँ तहँ

दोहा

श्येन भास बक हनन जहँ, विहित एक गोदान ।
वानर वध महँ उक्त विधि, भाखत वेद पुरान ॥६०॥

सोरठा

मारि बिलेशय जीव, तथा जलेशय हनन करि ।
जहाँ अशक्ति अतीव, लवण दान अहरात्र व्रत ॥६१॥
भाखत शक्त्यनुसार, लवणदान मनु वेद निधि ।
भन निष्कृति विस्तार, नाना विध निगमादिगण ॥६२॥

चौपाई

शूद्र हनन निष्कृति भन श्रुति तहँ सास्थि सहसमित जन्तु हननजहँ
शूद्रहनन निष्कृति भन श्रुति तहँ निहत्त शकटमित अस्थिहीन जहँ
अथवा द्विजहिँ कछुक करि दाना सास्थि हनन महँ शुद्धि विधाना
अस्थिहीन प्राणी वध जहँमा प्रणायाम विशोधक तहँमा
विकृत अन्न रस सुमनज वध महँ घृतप्राशन निष्कृति भन जहँ तहँ
एक दिवस अन्नादिक परिहरि शुद्धि होत घृत मात्र पान करि
विकृत फलज वध निष्कृति एहू भाखत मुनिजन गत सन्देहू
ज्ञाताज्ञात सकृत् असकृत महँ निष्कृति भेद वेद भन जहँ तहँ
तरुछेदन उपपातकगण महँ उक्त निगम आगम महँ जहँ तहँ

उपपातक निष्कृति चान्द्रायण भाखत मुनिजन धर्म परायण
क्वचिदपि महापाप महँ गणना तरु छेदनकर अस श्रुति वचना
निन्दा श्रवण मात्र तहँ जानहु प्रिये वचन मम अनृत न मानहु
सफल पुष्प दल तरुवर जहँमा प्रायश्चित्त प्रिये अस तहँमा
नीरस तरु छेदन महँ पापा अनुदित तहँ निष्कृति अपलापा
यज्ञ पात्र हल आदि हेतु कृत तरुछेदन नहि उक्त पापकृत
वर्ण तृतय महँ निष्कृति एहू पूर्णमात्रया नहि सन्देहू
शूद्र वर्ण कर्तृक यह शुद्धी अर्धमात्रया भन कृतबुद्धी
ज्ञान कलित अभ्यास कलित जहँ अघ निष्कृति आधिक्य उक्त तहँ
होम जपादि कलित अभिचारा मारण नाम प्रयोग प्रकारा
तहँ निष्कृति अति कृच्छ्र प्रसिद्धा भाखत मुनि मन्वादिक वृद्धा
व्रत अनुकल्प धेनु त्रय दाना निगमागम इतिहास बखाना
आवृति विषयक व्रतविधि आवृति तदनुकल्प विषयक अपि आवृति

दोहा

अघ अभक्ष्य भक्षण दुरित, निष्कृति श्रुति अनुसार।
सुन्दरि विश्वहितार्थ यहँ, भाखौं विविध प्रकार ॥८७॥

सोरठा

प्रायश्चित्त विहीन, यद्यपि कलिकालीन जन।
तदपि ग्रन्थ लवलीन, भयवश तजिहैं दुश्चरित ॥६३॥

चौपाई

मार्ग शुभाशुभ प्रवहनशीला नदी वासना दैवी लीला
मम तुम्हार करुणालव जापर शुभवासना करत तसु उर घर

सो जन दुष्कृति निष्कृति तत्पर वनिहैं अतिथि न जगदन्तक कर
अस कहि शंकर भाखन लागे करुणामय करुणा परि पागे
भंन षडविध, अभक्ष्य मुनिनाना धर्मशास्त्र अरु वेद पुराना
जाति दुष्ट अरु क्रिया विदूषित काल दुष्ट संसर्ग विदूषित
घृणाजनक निज भाव विदूषित करत षट्क यह जीवहिँ दूषित
पर पाकाश्रय दूषित अन्ना भन अभक्ष्य मुनि श्रुति सम्पन्ना
शूद्रादिक गृह आश्रित अन्ना भन अभक्ष्य मुनि श्रुति सम्पन्ना
क्षीरादिक अपि शूद्र गृहाश्रित भनअभक्ष्यमुनिश्रुतिवचनाश्रित
पर पाकीय विनिन्दा नाना करत वेद अरु शास्त्र पुराना
अन्न पतित आदिक उपनीता कहि अभक्ष्य श्रुति गावत गीता
जहँ एकत्रित नाना जाती अभक्ष्यान्न तहँ भन श्रुति पाँती
पर पाकाशी जो द्विज होई जनमत अन्नद पशु बनि सोई
जो अनिन्द्य अनिमन्त्रित कोई भुक्त परान्न मोहवश होई
अन्नाश्रित अघभक्षी सोई भाखत मन्वादिक सब कोई
पर पाकान्न अमा तिथि भक्षण परम निन्द्य भन विप्र विचक्षण
भक्षक मासावधिक होम फल लहत अन्नप्रद श्रुति शासन बल
करि अभोज्य भोजन अरु भक्षण वस्तु अभक्ष्य विमूढ़ कुलक्षण
करि अपेयकर पान मोहवश दुर्गति तत्र अत्र अति दुर्यश
एतद्दुष्कृतिकर निष्कृति भन कृच्छ्रपाद व्रत निगमागम गन
व्रत अनुकल्प दान श्रुति सिद्धा द्वादश पण भन ब्राह्मण वृद्धा
यवकण अरु गोमुत्र अहारा अपि सप्ताह शास्त्र अनुसारा

व्रत अनुकल्प दान पण षट्कर भाखत वेद पुरान विप्रवर
द्रव्य अभोज्य आदि यदि गुरुतर निष्कृति चान्द्रायण भन मुनिवर
शूद्र अन्न भक्षण पापावह लोक विनिन्दित नरक भयावह
शूद्र अन्न अरु परस सहामन विद्या अधिगम सह संभाषन
एक पंक्ति भोजन सह शय्या जो कर विधिवञ्चित तजि लज्जा
त्र्यह उपवास तासु निष्कृति भन व्रत अनुकल्प चतुर्विंशति पन
यदि आमान्न कलित अघ एहू षट पण निष्कृति नहि सन्देहू
ज्ञान कलित यदि दुष्कृति एहू देय द्विदश पण नहि सन्देहू
यदि आपत्तिग्रस्त जन कोई आम अन्न महँ दुरित न होई
मनु सम्मति अस शास्त्र प्रसिद्धा निगमागम मत मुनिमत सिद्धा
राज अन्न आदिक बहु अन्ना भन अभक्ष्य मुनि श्रुति प्रतिपन्ना
धर्मशास्त्र महँ वर्णन तासू करैं गवेषण जे जिज्ञासू
विस्तर भय कृत लेख निरोधा करौं कछुक संक्षेपित बोधा
राज अन्न अपि वर्जित तहँमा राजा पाप परायण जहँमा
नर्तक क्रूर चिकित्सक अन्ना स्वर्ण-चर्म-कारादिक अन्ना
स्त्री जीवी मृगजीवी अन्ना कुक्कुर अज जीवीकर अन्ना
अन्त्यज चाण्डालादिक अन्ना अति निन्दित भन श्रुति प्रतिपन्ना
मास उपोषण निष्कृति तासू भन हस्तामलकी श्रुति जासू
भन अनुकल्प अष्ट गोदाना निगमागम इतिहास पुराना
पतित परस करि कृत असनाना शुद्ध होत अस वेद बखाना
बिनु असनान करै यदि भोजन तप्त कृच्छ्र तसु निष्कृति मुनि भन

भन अनुकल्प तीन गोदाना निगमागम इतिहास पुराना
केश सहित अरु कीट सहित जहँ पक्क अन्न दुष्कृति भन मुनि तहँ
अस्थि समन्वित पक्क अन्न जहँ मुनि मन्वादिक दुष्कृति भन तहँ
शूद्र वधू असपृष्ट अन्न जहँ प्रिये श्वान असपृष्ट अन्न जहँ
रजस्वला असपृष्ट अन्न जहँ शूद्रमात्र असपृष्ट अन्न जहँ
निष्कृति मन्वादिक तहँ भाखत निष्कृति रहित पापफल चाखत
केवल पञ्चगव्यकर पाना मुनिगण प्रायश्चित्त बखाना
रहै निरन्न निरम्बु ताहि दिन पञ्च गव्य आदेश जाहि दिन
कुक्कुरादि पतितादिक दृष्टा अन्न विदूषित भन श्रुतिशिष्टा
मृद् भस्माम्बु कनकजल प्रोक्षण करत तदन्न अशुद्धि विमोक्षण

छन्द

मक्षिका कृमि जन्तु दूषित केश दूषित अन्न जो ।
उक्त शास्त्र विधान प्रोक्षित तदपि शुद्ध न अन्न सो ॥
कुनख दूषित अन्न अपि नहि शुद्ध होत तथा प्रिये ।
वर्जनीय अभक्ष्य बुद्ध्या मानि पातकमय हिये ॥

दोहा

वृथा पाक भक्षक मनुज, पाप पंक ते लिप्त ।
होत कहहिँ मन्वादि इति, पातक पुञ्ज अलिप्त ॥९८॥

सोरठा

तल्लक्षण श्रुति उक्त, सुनहु अद्रि तनये अये ।
तद्भक्षण अघ मुक्त, होत यथा जड़जीव पुनि ॥९४॥

देवादिक उद्देश, विरहित निज उद्देश जहँ ।
देत परत्र कलेश, वृथा पाक अभिधान तसु ॥६५॥

चौपाई

वैश्वदेव बलि विरहित पाका वृथा पाक भाखत श्रुति वाका
नित्य श्राद्ध विरहित जो पाका वृथा पाक भाखत श्रुति वाका
स्वोदर पूर्तिमात्र कारण जो वृथा पाक भन द्वैपायन सो
प्राणायाम तृतय घृत प्राशन वृथा पाक भक्षण अघ नाशन
जानि बूझि वा पुनि पुनि जहँमा भक्षण द्विगुणित निष्कृति तहँमा
देव पितर उद्देश रहित जो वृथा मांस निगमादि उक्त सो
निष्कृति प्राजापत्य नाम व्रत तद्भक्षण महँ मुनि मनु सम्मत
मधु घृत पायस कृसर पूप नव अन्न लब्ध निष्पत्ति समय जब
वृथा मांस भक्षण निष्कृति भन इनकर वृथा अशन महँ मुनि जन
चान्द्रायण व्रत निष्कृति तहँमा वारंवार उक्त अघ जहँमा
प्राजापत्य और चान्द्रायन तदनुकल्प क्रम भाखत मुनिजन
एक धेनु अथवा मुद्रा त्रय देय प्रजापति व्रत थल निश्चय
सार्ध सप्तमित धेनु अपर महँ मुद्रा सार्ध द्विविंशति श्रुत तहँ
यज्ञ श्राद्ध अवशिष्ट मांसकर भक्षण दोषरहित भन मुनिवर
सविधि लब्ध आमन्त्रण जहँमा मांस अशन महँ दोष न तहँमा
औषधार्थ करि मांस अहारा जहाँ न अन्य उपाय प्रकारा
दोषाभाव कहत मुनि नाना निगमागम इतिहास पुराना
उक्त चतुर्विध मांस अहारा परिसंख्या श्रुति मत अनुसारा

भक्षणजन्य पाप नहि होई उक्त रीति भन मुनि सब कोई
करत अभक्षण सज्जन जोई परम पुण्य सुख भाजन होई
होत प्रवृत्ति रागवश जहँमा परिसंख्या शास्त्रोदित तहँमा
पञ्च पञ्च नख भक्षण आदिक परिसंख्या भन मुनि मन्वादिक
उभय पक्ष समुपस्थित जहँमा नियम विधान करत श्रुति तहँमा
यज्ञ मध्य मुखवहन्युपधमना नियम करत जिमि पूजितचरना
व्यजन चालनादिक अपि कारण वह्निज्वलन महँ यहँ कृत वारण
नैसर्गिकी प्रवृत्ति न जहँमा विधि विधान भाखत श्रुति तहँमा
सन्ध्यावन्दन तर्पण अर्चन होमादिक विधि विषय निदर्शन
हत पशु रोम मान मित वत्सर हन्ता लहत यातना यम घर
अविधि हनन विषयक यह दोषा वैध हनन भाषित निर्दोषा

छन्द

देत अनुमति पशु हनन महँ निहत पशु छेदन करै ।
करै वध क्रय और विक्रय पाक करि अघ शिर धरै ॥
होय उपहर्ता अशन करि उदर गिरि कन्दर भरै ।
अष्टविध यह विदित घातक नरक कुण्डन महँ परै ॥

दोहा

विहित शशादिक मांस अपि, विदित भक्षणायोग्य ।
यागादिक व्यतिरिक्त थल, नहि कदापि उपभोग्य ॥५९॥
अघभागी सबसे अधिक, होत निहन्ता मूढ़ ।
भक्षणादि संयोग नहि, वधिक विना यह गूढ़ ॥६०॥

सोरठा

परिहरि मांसाहार, आमन्त्रित अपि नहि करै।
मांसाशन व्यवहार, निगमागम आदेश अस ॥६६॥
करै निमन्त्रण काल, आवेदन निज नियमकर।
फँसत न पातक जाल, भाखत निगमागम निकर ॥६७॥
निन्दनीय व्यवहार, आमन्त्रण भक्षण यदपि।
भन श्रुति पापाचार, पुण्य निमन्त्रण हेलना ॥६८॥
वेद वचन अनुसार, औषधार्थ अपि मांसभुक्।
करै न कामाचार, रोगमुक्त निष्कृति करै ॥६९॥

चौपाई

धर्मशास्त्र महँ विस्तर वर्णन भयउ अत्र केवल दिग्दर्शन
अग्रिम कथा सुनहु गिरिकन्ये पर उपकार निहित मति धन्ये
अस कहि पुरहर भाखन लागे त्यागि समाधि दया परि पागे
दर्श अष्टमी और अमावस पञ्चदशी रवि संक्रम विधिवस
महिला तैल मांस मधु भोगी सप्त जन्म निर्धन अरु रोगी
प्रायश्चित्त अभोजन केवल भाखत मुनि जन शास्त्र स्वरसबल
जानि बूझि यदि पातक एहू प्राजापत्य विहित व्रत तेहू
वारंवार होय अघ एहू चान्द्रायण तहँ नहि सन्देहू
इच्छित वृथा मांस भक्षण करि शुद्ध होत त्र्यह भोजन परिहरि
करि एकाकी मिष्ट अहारा निदरि वृद्ध शिशु परिजन दारा
निदरि अतिथि अरु मित्र भृत्यगन ताहि पातकी भाखत मुनिजन

निष्कृति अहोरात्र उपवासा दान अष्ट पण भन मुनि व्यासा
शूद्र भाण्ड अरु भग्न भाण्ड महँ भक्षण पापावह भन जहँ तहँ
दिवस एक उपवास विधाना करि घृत प्राशन भन मुनि नाना
स्वर्णोदक मिश्रित घृतप्राशन भाखत जावालादिक मुनिजन
ताम्र रजत कनकादिक वर्तन करत न भंगजन्य अघ परसन
अकृताचमन करै यदि भोजन होत पातकी भाखत मुनिजन
भोजन करत मौन नहि होई श्रुति भन सोउ पातकी होई
नासत उक्त उभय विध पापा साष्ट सहस गायत्री जापा
भक्ष्य भोज्य चर्वण आदिक महँ बिनु आचमन पाप भन जहँ तहँ
ताम्बुल चर्वण विना आचमन नहि पापावह भाखत मुनिजन
अधर युगल असपरस कियेपर प्रिये वस्त्र परिधान कियेपर
दन्त लग्न फल मूल रहेपर भुक्तशिष्ट घृत तैल रहेपर
ताम्बूलेक्षु दण्ड भक्षण महँ अनुच्छिष्टता घोषित जहँ तहँ
करि मधुपर्क सोमरस पाना अनुच्छिष्ट मन्वादि बखाना
दुरित उक्त अतिरिक्त द्रव्य महँ भक्षण पान जन्य भन जहँ तहँ
मधु पय नारिकेल जल आदिक पान जन्य अघ भन मन्वादिक
अनिवेदित महँ पातक एहू भन मन्वादिक नहि सन्देहू
नासत उक्त उभय विध पापा साष्ट सहस गायत्री जापा
वारंवार कलित अघ थल महँ प्रायश्चित्त द्विगुण भन जहँ तहँ
व्रत विधि लोपजन्य अघ जहँमा अहोरात्र अनशन विधि तहँमा
अनुपवीत भक्षण कृत पापा नासत शत गायत्री जापा

अरु उपवास अहर्निश व्यापक जप सह कृत मेटत अस पातक

छन्द

अंगुली कृत दन्त धावन क्षार लवणास्वादनम् ।
मृत्तिका भक्षण कुलक्षण निरय भय संपादनम् ॥
त्रितय यह गोमांस भक्षण सरिस भय उत्पादनम् ।
सुनहु निष्कृति अचलकन्ये उक्त अघ व्यापादनम् ॥

चौपाई

क्षार लवण भक्षक जो कोई बसि वन त्र्यह पवित्र सो होई
मृद् भक्षण कर्ता जो कोई करि एकोपवास शुचि होई
अंगुलिकृत रद धावन जहँमा करि एकोपवास शुचि तहँमा
पुनि पुनि करै पाप यह जोई तप्त कृच्छ्र करि शोधित होई
तदनुकल्प द्वादश पण दाना उशना नाम मुनीश बखाना
सैन्धव अरु सामुद्रक लवणा भन विशुद्ध मुनि पूजित चरणा
आमिष भाण्ड सिद्ध अहारा करै व्रती यदि विगत विचारा
दुग्ध मात्र करि पान दिवस त्रय शुद्ध होत अस मुनिजन आशय
तदनुकल्प इक मुद्रा दाना भन मुनि हारीतादिक नाना
देव अतिथि अरु भृत्य भूत गन अभ्यागत अरु पितर हुताशन
वायस आदि काम्य बलि भागी रुग्ण सगर्भा इन कहँ त्यागी
आपुहि प्रथम करै जो भोजन लहै अधोगति नाना गञ्जन
यदि यह पाप होय अनजाना शुद्धि एक उपवास बखाना
वारंवार उक्त अघ जहँमा प्राजापत्य नाम व्रत तहँमा

एक धेनु अनुकल्पित दाना मुद्रा त्रय तसु मूल्य बखाना
एक बार अघकर्ता कोई प्राजापत्य अर्ध तब होई
मुद्रा सार्ध एक तहँ दाना धर्म शास्त्र तत्त्वज्ञ बखाना
तैलाभ्यंग क्षौर आदिक करि ग्रहै अन्न जल मज्जन परिहरि
निष्कृति मज्जन अरु अनुतापा साष्ट सहस गायत्री जापा
नील वस्त्रधारी भोजन महँ गुल्म लतादिक छेदक जहँ तहँ
भोगत नरक यातना भोगा प्रायश्चित्त रहित कृत रोगा
त्र्यह उपवास तासु निष्कृति भन निगमागम नाना पुराण गन
तदनुकल्प षट पण परिमाणा दान बखानत शास्त्र पुराणा
गुरु उच्छिष्ट भिन्न उच्छिष्टा भन अभक्ष्य निगमागम शिष्टा
कृच्छ्रपाद तहँ निष्कृति जानहु तदनुकल्प द्वादश पण मानहु
काक विड़ाल श्वान नकुलादिक उच्छिष्टाशन महँ मन्वादिक
शास्त्रोदित निष्कृति उपदेशा करहिँ किये जसु मिटै कलेशा
सूर्यावर्त क्वाथ करि पाना एक दिवस उपवास बखाना
तदनुकल्प अपि भाखत मुनिजन निगमागम उद्घुष्ट आठ पन
नहि काकादि पक्षि पातित फल दूषित मुनि भन शास्त्र स्वरस बल
भाखहिँ अज मुख शुचि मुनि नाना अन्न परस महँ वेद प्रमाना
अन्न राशि द्रोणाधिक जहँमा श्वादि परस कृत दोष न तहँमा
दूषित अंश मात्र प्रक्षेपा शास्त्रोदित निष्कृति संक्षेपा
देवायतन विवाह यज्ञ जहँ नहि असपृष्ट वस्तु दूषित तहँ
दध्यादिक घन वस्तु अनेका प्रोक्षण शुचि कह लब्ध विवेका

तरल पदार्थ घृतादिक जेते वह्नि ताप तापित शुचि तेते
अल्प अन्न दूषित जहँ होई तहाँ त्याग विधि भन सब कोई
द्रोणाधिक थल प्रक्षेपादिक नहि तदून थल भनँ मन्त्रादिक
सेटकार्धयुत सेटक दोई आढ़क मान कहत सब कोई
आढ़क चारि द्रोण परसिद्धा द्रोण चारि खारी भन सिद्धा

दोहा

एक पंक्तिगत करहिँ जहँ. भोजन व्यक्ति अनेक ।
तहाँ समुत्थित कोपि यदि, विधिवश विगत विवेक ॥६९॥

सोरठा

तहँ भोजनकर त्याग, समुचित सब कहँ शास्त्रमत ।
करि भोजन अनुराग, जे न तजहिँ ते पापभुक् ॥७०॥
प्रायश्चित्त विधान, तहँ भन श्रुति सान्तपन व्रत ।
तदनुकल्प भन दान, एक पुराण* पुराणवित् ॥७१॥

चौपाई

उत्थानावश्यकता जहँमा पंक्ति भेद विधि भन श्रुति तहँमा
उत्थाताकर युगल भाग महँ जल रेखा आदिक भन जहँ तहँ
नारी पीत शेष जल पायी लहत पाप भन श्रुति समुदायी
शूद्र पीत जल पायी जोऊ होत पातकी भन श्रुति सोऊ
वृक्ष शंखपुष्पी अभिधाना तद्रस पक्व क्षीर कर पाना
करि त्र्यह प्रथम पातकी निर्मल भन मुनिजन अस शास्त्र वचन बल

* चौवन्नी ।

तदनुकल्प इक मुद्रा दाना भन मनु आदिक अति मतिमाना
कुश विपक्व त्र्यह क्षीर पानते होत विमुक्त द्वितीय पापते
तदनुकल्प इक मुद्रा दाना भन मनु आदिक अति मतिमाना
अन्त्यजादि कृत कूप तड़ागा तहँ करि मज्जन पान अभागा
प्रथम दिवस उपवास विधाना पर दिन पञ्चगव्यकर पाना
करि पातक विमुक्त सो होई भाखत मन्वादिक सब कोई
भन अनुकल्प आठ पण दाना मुनि मन्वादिक अति मतिमाना
धृत जलपात्र वामदिशि जोई ग्रास ग्रास मलभक्षक सोई
सो जल जानहु रुधिर समाना सुन्दरि अस निगमादि बखाना
प्राजापत्य व्रती शुचि होई द्वादश पण अनुकल्पित सोई
धृत जलपात्र वामकर जोई कृत जलपान पातकी होई
दक्षिण कर असपृष्ट वामकर लहत न पातक इति भन मुनिवर
प्राजापत्य और अनुकल्पा पूर्व सरिस नहि कछुक विकल्पा
मृति दूषित कूपोदक पाना पापावह श्रुति निकर बखाना
निष्कृति तासु सुनहु गिरिकन्ये प्रिये अपर्णे त्रिभुवन धन्ये
तीनि दिवस उपवास विधाना तदुपरि पञ्चगव्यकर पाना
व्रत अनुकल्प आठ पण दाना आगम निगम पुराण बखाना
क्लिन्न शीर्ण यदि मृत पशु होई षडह उपोषण भन सब कोई
मुद्रा त्रितय दान अनुकल्पा तहँ अनुचित संकल्प विकल्पा
पयस्विनी गैया कर दामा भन मुद्रा त्रय मुनि निष्कामा
क्षत्रियकर दुइ दिन उपवासा वैश्य हेतु इक दिन भन व्यासा

शूद्र निमित्तक नक्त उपोषण पञ्चगव्य पुनि पातक मोषण
व्रत अनुकल्प आठ पण दाना आगम निगम पुराण बखाना
क्लिन्न शीर्ण महँ द्विगुणित विधि भन अरु द्विगुणित अनुकुल्प विप्र भन
नर शव दूषित यदा कूपजल दूना सब विधि भन मुनि श्रुतिबल
दश दिवसावधि प्रसव समयते भन अपेय मुनि श्रुति आशयते
गव्य और आजिक माहिष पय आविक वृषाक्रान्त गोकर पय
उष्ट्री इकशफ हयी आदि पय सुन्दरि मृतवत्सा गैया पय
अन्य वत्सकृत दोहन गोपय क्षतयुत असतन पय नारी पय
वन्य सकल पशु मृग आदिक पय पापावह इति श्रुति तति आशय
गो महिषी अरु अजा दिवस दस भये अतीत पेय पय श्रुति अस
तदितर सकल उक्त यहँ जे जे भन अपेय पय मुनिजन ते ते
युगल वत्सकर प्रसव करै जो भन अपेय पय शमल भखै जो
निष्कृति प्राजापत्य बखाना व्रत अनुकल्प एक गो दाना
करि उष्ट्री नारी पय पाना निष्कृति मुनि मन्वादि बखाना
विहित द्विजनकर पुनि उपनयना तप्त कृच्छ्र भन पूजित चरना
सार्ध द्विविंशति मुद्रा दाना उपनयनानुकल्प भन नाना
तप्त कृच्छ्र अनुकल्प बखाना मन्वादिक द्वादश पण दाना
लै संन्यास आदि यदि कोई गृही होय अति पापी सोई
प्राजापत्य करै षण्मासा अस निष्कृति भाखत मुनि व्यासा
धेनु पञ्च दश दान बखाना तदनुकल्प निगमागम नाना
पतितहिं पतित चोर कहँ चोरा कहि व्याहार करत चहुँ ओरा

पर अभिशाप करत जो कोऊ तत्समान अघ भागी सोऊ
यदि विधिवश मिथ्या अभिशापा करत तासु द्विगुणी कृत पापा
निष्कृति प्राजापत्य बखाना धेनु त्रितय अनुकल्पित दाना
दम्पति अग्नि युगल ब्राह्मण द्वय वह्नि विप्र द्वय अरु द्विज गो द्वय
इनकर मध्य गमन जो करई अकृत विशुद्धि नरक महँ परई
निष्कृति एक दिवस उपवासा भन अनुकल्प आठ पण व्यासा
नहि आतुर नहि अधन गृही जो तजि नित्यादिक कर्म अघी सो
एक दिवस यदि परिहृत कर्मा एक दिवस व्रत हरत अधर्मा
अथवा रत्ती षट्क प्रदाना रजत द्रव्यकर वेद बखाना
तीन दिवस नित्यादिक परिहरि होत विशोधित कृच्छ्र अर्ध करि
कहत चतुर्विंशति पण दाना तदनुकल्प निगमादिक नाना
तजि नित्यादिक संवत्सर भरि लहत नरक दुख सो तनु परिहरि
श्रुति संसर्गानर्ह बतावत जो अकर्म रहि वर्ष बितावत
तासु अवलोकन कर जो कोई रवि दर्शन बिनु शुचि नहि होई
तजि निःश्वास तजहिं गृह तासू देव पितर ऋषि आदिक आसू
अघ निष्कृति तसु उक्त न कोई अकर्मण्य एवंविध जोई
मुनिजन कृत तथापि कछु निर्णय कहौं न जासु अनन्वित आशय
रहै अकर्मक जो दिन एका षट रत्ती तसु शुद्धि विवेका
दुइ रत्ती यदि माष प्रमाना षट रत्ती त्रय माष समाना
त्रिशत षष्टि दिन वर्ष प्रमाना त्रिशत षष्टि त्रिगुणित जो माना
तन्मित देइ रजतकर मासा वार्षिक अकृत कर्म अघ नासा

दिनाधिक्य यदि वत्सर माहीँ तथा माष संख्या बढ़ि जाहीँ
त्रैवर्णिक सेवा यदि करई ब्राह्मण सोउ नरक महँ परई
निष्कृति प्राजापत्य तीन तसु अथवा देय त्रिधेनु मूल्य वसु
ब्राह्मण वर्ण शूद्र सेवा करि भोगत दुस्सह दण्ड नरक परि
निष्कृति चान्द्रायण व्रत यद्वा सार्ध सप्तमित धेनु देय वा
सार्ध द्विविंशति मुद्रा तहँमा देय दान एवंविध जहँमा
जसु परवृत्ति ग्रहण करि जीवन निर्जीवन समान तसु जीवन
जीवन फल धर्मादि पदारथ जीवन बिनु धर्मादि अकारथ
ब्राह्मण वर्ण गुरू परवृत्ती लहत नरक दुख कुत्सित वृत्ती
निष्कृति तसु चान्द्रायण व्रतविधि भाखत जाबालादिक श्रुतिनिधि
सार्द्ध द्विविंशति मुद्रा दाना तदनुकल्प निगमादि बखाना
अविक्रेय विक्रय जो करई सोउ नरक कुण्डन महँ परई
लवण क्षीर मधु घृत दधि वारी विक्रय अघ भाखत श्रुति चारी
पक्क अन्न गुड़ तैल ग्राम्य पशु ऊर्णा लाक्षा शंख वन्य पशु
सर्व गन्ध अरु सर्व रंगकर विक्रय भाखत पातक मुनिवर
चर्म केश विष अस्त्र तिलादिक विक्रय पातक भन मन्वादिक
पुस्तक धर्म कर्म फल विक्रय भन पातक मन्वादि महाशय
निष्कृति तीन दिवस उपवासा भाखत पौराणिक मुनि व्यासा
सार्ध एक मुद्राकर दाना तदनुकल्प मन्वादि बखाना
निन्दित देश अंग अरु वंगा मगध और सौराष्ट्र कलिंगा
अब्धि प्रान्त म्लेच्छादिक देशा तहँ गन्तुक प्रति अघ आदेशा

तीर्थगमन बिनु जो तहँ गन्ता बिनु निष्कृति तसु सौरि नियन्ता
गंगादिक तीरथकर सेवा तसु निष्कृति इति भन भू देवा
मनु मुनि पुनरुपनयन विधाना तीर्थाशक्ति निमित्त बखाना
चान्द्रायण व्रत बहुरि बखाना उपनयनोत्तर मुनि मतिमाना

दोहा

जल पावक महँ जो करत, अशुचि द्रव्य प्रक्षेप ।
वैवस्वतपुर होत तसु, विकट कुण्ड निक्षेप ॥६२॥

सोरठा

प्राजापत्य विधान, निष्कृति तसु भाखत निगम ।
एक धेनुकर दान, तसु विकल्प भन मुनि निकर ॥७२॥
भाखत निष्कृति आध, पीड़ित जनकर मुनि निकर ।
होत तासु अपि बाध, प्रक्षेपक यदि अज्ञ शिशु ॥७३॥

चौपाई

व्रतारम्भ करि व्रत परिहरई सो खल नरक कुण्ड महँ परई
त्र्यह समुपोषण वपन विधाना निष्कृति तसु मन्वादि बखाना
पुनरपि व्रत करि होत पवित्रा भाखत मुनिजन विमल चरित्रा
अधोवायु निष्ठीवन जहँमा दन्तलग्न वचनानृत जहँमा
पतित व्यक्ति संभाषण जहँमा छिका आदि अशुचि थल जहँमा
दक्षिण श्रवण परस विधि तहँमा जलाभाव सुन्दरि जेहि लहमा
भन आचमन प्राथमिक कल्पा गोतन परसन मध्यम कल्पा
दिनकर दर्शन अन्तिम कल्पा श्रवण परस विधि अगतिक कल्पा

पूर्व विधान असम्भव जहँमा अपर विधान शास्त्रमत तहँमा
अशुचि वस्तु कथमपि मुख जाहीँ निष्कृति मज्जन संशय नाहीँ
नील वस्त्र राखै गृह जोऊ प्रायश्चित्ती दुर्मति सोऊ
नील वस्त्र विक्रेता जोऊ प्रायश्चित्ती दुर्मति सोऊ
नील वस्त्र क्रय कर्ता जोऊ प्रायश्चित्ती दुर्मति सोऊ
पहिरि नील पट क्रतु जो करई सुन्दरि नरक कुण्ड सो परई
एकाहोपवास पुनि पाना पञ्चगव्य कर शुद्धि बखाना
व्रत अनुकल्प एक गोदाना धर्मशास्त्र विद्वान बखाना
शिशु नारी क्रीड़ा हेतुक जहँ नील वस्त्र नहि दोषावह तहँ
शय्या हेतु नील पट जहँमा भन मन्वादिक दोष न तहँमा
परसि पलाण्डु लसुन असनाना विहित नक्त व्रत सहित बखाना
परसि रुद्र निर्माल्य मोहबस शुद्ध होत मज्जन करि श्रुति अस
वाण लिंग महँ दोष न होई यह प्रसंग जानत जन कोई
ज्योतिर्लिंग प्रसादादिक महँ दोषाभाव घोषणा जहँ तहँ
गुरु अपमान करत जो कोई नरक कुण्ड दुख भोगत सोई
तू तू कहत गुरुहिँ जो कोई नरक कुण्ड दुख भोगत सोई
करि प्रसन्न गुरु कहँ जस होई करि एकोपवास शुचि होई
व्रत अनुकल्प आठ पण दाना भाखत आगम निगम पुराना
करि द्विजाति अन्त्यजकर संगा मूढ़ कूपजल पान प्रसंगा
करि उपवास करै पुनि पाना पञ्चगव्यकर बेद बखाना
सेवा कर्म विप्र यदि करई पातक ग्रस्त नरक महँ परई

ब्राह्मण कर्म शूद्र यदि करई पातक ग्रस्त नरक महँ परई
विप्रहिँ पुनरुपनयन विधानां कृच्छ्र त्रितय पुनि वेद बखाना
भन अनुकल्प धेनु त्रय दाना निगमागम इतिहास पुराना
उपनयनातिरिक्त व्रत दाना भन शूद्रहुकर वेद पुराना
त्रैवर्णिक सेवा महँ एहू विप्र विशुद्धि न कछु सन्देहू
विप्र शूद्रकर सेवक जहँमा चान्द्रायण व्रत समुचित तहँमा
सार्ध द्विविंशति मुद्रा दाना तदनुकल्प भन वेद पुराना
प्रायश्चित्त उक्त नहि जहँमा पाप प्रकीर्ण नाम भन तहँमा
चान्द्रायण आदिक व्रत विधि तहँ लखि गुरुलघु पातक भन जहँ तहँ
धर्मशास्त्र विद्वत्कृत निर्णय तहँ समुचित इति मुनिजन आशय
सुन्दरि जहँ रहस्य पातक तहँ जप होमादिक भाषित श्रुति महँ
शिव इति हरिरिति अम्बादिक इति कीर्तन हरत सकल विध दुष्कृति
निगमागम पुराण मत एहू करु विश्वास न कछु सन्देहू
विस्तर भीति लोक अवरोधा करत न समुचित उक्त विरोधा
कलि केवल कीर्तन आधारा कीर्तन बल पावत उद्धारा
मम हरि नाम रसायन पाना करत त्रिदोष त्रिगुण अवसाना
प्रिये अनादर आदर थल वा हास और सांकेतिक थल वा
आलस असतोभादिक थल वा नाम ग्रहण पावन सब थल वा

दोहा

सुनि गिरिजा अति मुदित मन, कहत भयउ शिरनाय ।
व्रत उपयुक्त हविष्य, जत, कहिय नाथ समुझाय ॥६३॥

सोरठा

सुनि शंकर मुसुकाय, कहत भयउ विकसित नयन ।
करौं लोकहित लाय, कथन हविष्य पदार्थकर ॥७४॥

चौपाई

सितास्विन्न हैमन्तिक धाना यव तिल मुद्ग हविष्य बखाना
कंक केराव और नीवारा भन हविष्य निगमागम सारा
वास्तुक अरु हिलमोचिक शाका भन हविष्य निगमागम वाका
षाष्ठिक कालशाक अरु मूला भन हविष्य मुनि गतश्रुति कूला
सकल मूल महँ केमुक केवल नहि हविष्य भन मुनिजन श्रुतिबल
कंद समुद्रज सैन्धव लवणा भन हविष्य मुनि पूजित चरणा
गोदधि घृत हविष्य भन मुनिजन दुग्ध अनुद्धृत सार तथा भन
पनस आम्र फल श्रुति हविष्यभन श्रुति हरीतकी अपि हविष्य भन
जीरक अरु पिप्पली तथा भन नारंगी तिंतिणी तथा भन
कदली लवली फल हविष्य भन धात्री फल अपि श्रुति हविष्य भन
ऐक्षव अगुड़ हविष्य वेद भन अरु हविष्य घृतपक्व वस्तु भन
प्रस्तर अदलित द्विदल मुद्गकर भन हविष्य व्यासादिक मुनिवर

दोहा

कहि हविष्य करुणायतन, जगतीतल हित हेतु ।
व्रत वर्जित आमिष निकर, भाखत भउ वृषकेतु ॥६४॥

चौपाई

प्राणि अंग चूर्णहिं भन मुनिजन आमिष तथा चर्मजल अपि भन

भन आमिष जम्बीरहिँ मुनिजन बीजपूरकहिँ तथा वेद भन
यज्ञा शिष्ट माष आदिक जो भन आमिष मुनि मन्वादिक सो
श्रीमुरमर्दन अनिवेदित जो भन आमिष मुनि मन्वादिक सो
दुग्ध अन्न भन आमिष मुनिजन तथा मसूर अन्न मुनिजन भन
भाखत मांसहिँ आमिष मुनिजन पर्व समय समुचित तसु अनशन
गोपय छागीपय महिषीपय अन्यत्पय आमिष इति निर्णय
पर्युषितान्न मसूरिक अन्ना भन आमिष श्रुतिमत प्रतिपन्ना
द्विज विक्रीत क्रीत द्विजकृत रस आमिष भाखत निगमागम अस
भूमिज लवण वेद आमिष भन गव्य ताम्रथित अपि तथैव भन
स्वार्थमेव पाचित जो अन्ना भन आमिष मुनि श्रुति प्रतिपन्ना
आमिष इतर हविष्य और जो शास्त्र कदम्ब निरामिष भन सो

दोहा

सुनि गिरिजा प्रमुदितहृदय, पुनिपुनि शीश नवाय ।
पुलकित तनु भाखत भयउ, आनन्दाश्रु बहाय ॥६५॥

सोरठा

महिमा अगम अगाध, को कहि सक राउर अतुल ।
निगम निकर निर्बाध, श्वास जासु ब्रह्मादि भन ॥७५॥
चर अरु अचर समस्त, जगत जासु इच्छा रचित ।
रक्षित और निरस्त, निरवच्छिन्न प्रवाह यह ॥७६॥

स्तुति

जय जय शंकर भक्त शुभंकर हरिहृत्पंकज भानो ।
पुरहर तव दुर्गम महिमानं कथमपि वेत्तिहि नानो ॥

प्रमथवृन्द वन्दित पद पंकज जय मनसिज मद हारिन् ।
त्वामुपयामि शरणमरिमर्दन मन्दर कुञ्ज विहारिन् ॥
रवि शशि वह्नि विलोचन संसृति मोचन देव्वदयालो ।
प्रियतम मामव मामव मामव गिरिवर गुहा शयालो ॥
नाथ नमस्ते नाथ नमस्ते जगदात्मन् परमात्मन् ।
भवदुपदेश सुधाप्लावित मतिरेतु सुखं सर्वात्मन् ॥

श्रुत्वा स्मृत्वा पठित्वैतां
स्तुतिं श्रद्धा समन्वितः ।
प्राप्नुयात् कामितान् कामान्
इहामुत्र सुखी भवेत् ॥
तथास्त्विति वचः शंभुः
प्रोवाच गिरिजाम्प्रति ।
किमिच्छसि पुनर्ज्ञातुं
इत्याह जगतां हितः ॥

चौपाई

विहित निषिद्ध सुमनगण जो जो प्रभु पूजन महँ भाखिय सो सो
इति जगदम्बा भाखत भयऊ सुनि प्रसन्न शंकर है गयऊ
भाखत भयउ सुनहु गिरिकन्ये सावधान मति त्रिभुवन धन्ये
सुमन महातम मुनिगण गावत निगमागम इतिहास सुनावत
भन सुमनन महँ देव निवासा श्रुति पारंगत मुनिवर व्यासा
देवार्चन महँ सुमन प्रधाना गन्नत आगम निगम पुराना

सुन्दरि अगणित सुमन समस्ता भाखौं कछुक तथापि प्रशस्ता
पुष्प पत्र फल तोय समर्पक निरखि होहिं यमराज अदर्पक
भक्ति सहित पुष्पादि समर्पत हमहिं न सो पुनि इतउत सर्पत
श्रद्धा भक्ति समर्पित जो जो ग्रहण करौं प्रमुदित अति सो सो
विहित निषिद्ध पुष्प आदिक जो हमहिं कहौं गिरिवरकन्ये सो
भन हयारि कैरव अरु पद्मा विहित पुष्प मम विद्या सद्मा
भन नागेश्वर और चमेली सेवन्तिका द्रोण अरु बेली
अपामार्ग नीलोत्पल अर्का विहित पुष्प भन श्रुति तजितर्का
कुटज शमी धत्तूर बखाना विहित पुष्प निगमागम नाना
अपराजिता अशोक उदुम्बर विहित पुष्प भन नाना मुनिवर
कण्टकारिका प्रिये उशीरा अरु करहाट विहित भन धीरा
कर्णिकार कल्हार कदम्बा भाखत विहित वेद निकुरम्बा
कुंकुम प्रिये और कचनारा विहित सुमन मम भन श्रुतिसारा
किंकिरात अरु कुब्जक कुरवक प्रिये तासु महिमा को कहि सक
भन कुष्माण्ड कुसुम्भ सकेशर विहित पुष्प मम नाना मुनिवर
धवल पलाश चूत नेपाली विहित पुष्प भाखत श्रुति आली
चित्रक जया तगर अरु दमनक प्रिये तासु महिमा को कहि सक
तिल पुन्नाग पाटला बृहती विहित पुष्प भन श्रुतितति महती
भृंगराज मोकन मन्दारा विहित सुमन मम भन श्रुतिसारा
वक रक्तोत्पल वकहुल नामा विहित पुष्प मम भन श्रुतिग्रामा
शाल्मलि और विजयशण नामा विहित पुष्प मम भन श्रुतिग्रामा

शिखिनी और शिंशपा नामा विहित पुष्प मम भन श्रुतिग्रामा
श्वेत सरोज श्वेत मन्दारा विहित पुष्प मम भन श्रुति सारा
विहित पुष्प गिरि मल्ली भाखत मुनिजन श्रुतिरपि तथा बखानत
विहित पुष्प थलकमल बखाना गिरिकन्ये निगमागम नाना
बिल्व उदुम्बर अपामार्ग दल विहित पत्र तुलसी दूर्वादल

दोहा

भाखौं अविहित सुमन अब, राखौं कछुक न गोइ।
अविहित विहिताभाव थल, विहित शास्त्रबल होइ ॥६६॥

चौपाई

कुटज केतकी जवा निषिद्धा मम पूजन महँ शास्त्र प्रसिद्धा
सर्ज शिरीष विभीतक नामा सुमन निषिद्ध कहत श्रुतिग्रामा
भन वन्धूक माधवी नामा पुष्प निषिद्ध महामुनि ग्रामा
श्वेत विष्णुकान्ता भन मुनिजन अविहित पुष्प निगम आगम गनै
श्रुति यूथिका निषिद्ध पुष्प भन कहौं प्रिये अब पत्र पुष्प गनै
भन करञ्जकर पत्र पुष्प मुनि अविहित धावा पत्र पुष्प पुनि
निम्ब पत्र अरु पुष्प निषिद्धा भाखत आगम निगम प्रसिद्धा
कुन्द पत्र अरु पुष्प निषिद्धा भाखत आगम निगम प्रसिद्धा
भन केतकी पत्र अरु सुमना अविहित मुनिजन पूजित चरना
भन वन्धूक पत्र अरु सुमना अविहित मुनिजन पूजित चरना
भन भण्टिका पत्र अरु सुमना अविहित मुनिजन पूजित चरना
भन मञ्जिष्ठ पत्र अरु सुमना अविहित मुनिजन पूजित चरना

श्वेत पाटला दल अरु सुमना भन अविहित मुनि पूजित चरना
भन माधवी पत्र अरु सुमना अविहित मुनिजन पूजित चरना
भन विभीतिका दल अरु सुमना अविहित मुनिजन पूजित चरना
भन यूथिका पत्र अरु सुमना अविहित मुनिजन पूजित चरना
भन शिरीषकर दल अरु सुमना अविहित मुनिजन पूजित चरना
सित अपराजित दल अरु सुमना भन अविहित मुनि पूजित चरना
सिन्धुवार अरु सर्ज सुमन दल भन अविहित मुनिशास्त्रवचन बल

दोहा

प्रिये नागकेशर प्रभृति, दल अरु सुमन निषिद्ध।
भाखत निगमागम निकर, मुनिजन परम प्रसिद्ध ॥६७॥

सोरठा

प्रिये कहौं अब तोर, विहित और अविहित सुमन।
सुन्दरि पूजन मोर, सहित त्वदर्चन अति फलद ॥७७॥

चौपाई

रक्त कृष्ण अरु श्वेत पुष्प जत भाखत आगम निगम विहित तत
जवा पुष्प करवीर प्रशस्ता भाखत आगम निगम समस्ता
तगर मालती जाती नामा विहित सुमन भाखत श्रुति ग्रामा
सेवन्ती यूथिका अशोका सुमन समर्पक विरहित शोका
श्वेत कृष्ण अपराजित अर्पक लखि दिनमणि सुत होत अदर्पक
वक चम्पक धत्तूर समर्पक लखि दिनमणि सुत होत अदर्पक
वकुल पुष्प श्रीफल दल अर्पक लखि दिनमणि सुत होत अदर्पक
नागेश्वर मल्लिका प्रशस्ता भाखत आगम निगम समस्ता

काञ्ची और झिंटिका नामा विहित सुमन भाखत श्रुतिग्रामा
प्रियंवदा अरु अर्क पुष्प भन विहित सुमन श्रुति धर्मशास्त्र गन
भन बन्धूक वर्वरी नामा विहित पुष्प निगमागमग्रामा
बिल्व पत्र कोमल दूर्वादल तुअ पूजन महँ विहित शास्त्रबल
पारिजात अरु लकुच पुष्प भन सुमन निषिद्ध निगम आगम गन
विहिताविहित अर्क श्रुति भाखत विहिताविहित प्रेम नहि मानत
हृदयंगम सुमनादि यथा रुचि भक्त समर्पत भक्ति भाव शुचि
पुनि विधेय अविधेय पुष्प दल भाखौँ भन जस विप्र वेद बल
छिद्र युक्त पुष्पादि निषिद्धा भाखत आगम निगम प्रसिद्धा
जल असिक्त पुष्पादिक जोऊ भन अविधेय निगम गण सोऊ
प्रिये पुष्प अति उत्कट गन्धा भन अविधेय समस्त निबन्धा
पुष्प गन्ध विरहित अपि जोऊ भन अविधेय निगम गण सोऊ
पुष्प केश कृमि संयुत जोऊ भन अविधेय निगम गण सोऊ
सुमन भूमि थित सुन्दरि जोऊ भन अविधेय निगम गण सोऊ
भन श्रृंगारहार पृथ्वीगत नहि अविधेय निगम आगम जत
मौलसिरी अपि नहि पृथ्वीगत भन अविधेय निगम आगम जत
हठ पुष्पित भन सुमन निषिद्धा आगम निगम पुराण प्रसिद्धा
शीर्ण पुष्प अविधेय बतावत मुनिजन तथा निगम गण गावत
शुष्क वस्त्र धृत सुमन निषिद्धा भाखत आगम निगम प्रसिद्धा
मस्तक वामहस्त धृत जोऊ भाखत सुमन विधेय न सोऊ
वाम हस्त असपृष्ट पुष्प जो भाखत निगमागम निषिद्ध सो

कुत्सित जन असपृष्ट पुष्प जो भाखत निगमागम निषिद्ध सो
अर्ध विकास सुमन महँ यदवधि अर्पण तासु न समुचित तदवधि
सूर्योदय उत्तर करि मज्जन नहि विधेय पुष्पादिक त्रोटन
कथमपि अशुचि व्यक्ति जो कोऊ त्रोटन महँ अधिकृत नहि सोऊ
तैल लिप्त अरु कर्तित केशा कृत मज्जन शुचि इति आदेशा
सुमन कली अविधेय बतावत मुनिजन तथा निगमगण गावत
कवनहुँ व्यक्ति सुमन दलधारी नहि प्रणाम आशिष अधिकारी
तत् प्रयुक्त सुमनादि निषिद्धा भाखत आगम निगम प्रसिद्धा
क्रीत सुमन अविधेय बतावत मुनिजन तथा निगमगण गावत
पुष्प पत्र पर्य्युषित निषिद्धा भाखत आगम निगम प्रसिद्धा
तुलसी बिल्वपत्र धात्री दल कुन्द तमाल अगस्ति पुष्प थल
चम्पक मौलसिरी थल मुनिजन नहि श्रुतिबल पर्य्युषित दोष भन
पुष्प पत्र माली गृह माहीँ पर्य्युषितत्व दोष युत नाहीँ
म्लान अंग असपृष्ट सुमन दल भन अविधेय विप्रगण श्रुतिबल
कृत आघ्राण सुमन भन मुनिजन नहि विधेय निगमादि तथा भन
करि उत्पाटित तरु पुष्पादिक त्रोटन भन निषिद्ध श्रुति आदिक
करि शाखा भञ्जन पुष्पादिक त्रोटन भन निषिद्ध श्रुति आदिक
नहि अपवित्र पात्रथित मुनिजन भन विधेय श्रुति आदि तथा भन
परिधानीय वस्त्र धृत जोऊ सुमनादिक विधेय नहि सोऊ
धृत आक्रण वस्त्र महँ जोऊ सुमनादिक विधेय नहि सोऊ
पुष्पाञ्जलि व्यतिरिक्त अधोमुख सुमनार्पण उपजावत अति दुख

दूर्वादल तुलसीदल श्रीफल दल डंठल युत उचित न श्रुतिबल
कुसमय सुमन निषिद्ध बतावत मुनिजन तथा निगमगण गावत
छिन्न भिन्न अपि कमल तमाला भन अदोष निगमादिक जाला
तुलसीदल दश राति अदोषा सप्त राति पंकज निर्दोषा।
पञ्च राति श्रीफल दल शुद्धा भाखत मुनि मन्वादि प्रबुद्धा
विधि निषेध विधि माला माहीँ भन मुनिजन निगमादिक नाहीँ
विहिताविहित सुमनकृत माला अति प्रशस्त भन वेद विशाला
सुमन विधेय जासु श्रुति गावत दल अपि तासु विधेय सुनावत

दोहा

भाखत भउ जगदम्बिका, प्रणमि जोरि युग हाथ।
तुलसीदल अरु बिल्वदल, महिमा भाषिय नाथ ॥६८॥

सोरठा

कहत भयउ मुसुकाय, करुणा वारिधि नीलगल।
सुनहु प्रिये मन लाय, निज प्रश्नोत्तर जगत हित ॥७८॥

चौपाई

तुलसी वृक्ष समीप निवासा करहिँ सकलसुर इति भन व्यासा
तुलसी अप्रशस्त गणपति कहँ उक्त निगम आगम महँ जहँ तहँ
ब्रह्मा विष्णु समेत महेशा तत् सिञ्चककर हरहिँ कलेशा
पत्र मध्य हरि करहिँ निवासा तसु अग्रिम थल श्रुतिमुख वासा
तासु मूल महँ मोर निवासा सुन्दरि मञ्जरि महँ तुअ वासा

रमा शारदा अरु श्रुतिमाता। बसहिँ मञ्जरी महँ विख्याता
चण्डी शची और सब अमरी तन्मञ्जरि थित अलिवृत कवरी
तुलसी केवल श्रीतारा कहँ अविहित उक्त शास्त्र महँ जहँ तहँ
तुलसी तरु शाखा महँ वासा सकल लोकपतिकर भन व्यासा
विश्वेदेव नवग्रह वसुगन तुलसीदल थित इति मुनिजनभन
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा सिद्ध अप्सरा सुर ऋषि सर्वा
तुलसीदल आश्रय करि निवसहिँ अर्पक तसु दल मम पुर प्रविसहिँ
तुलसी तरु तल तृण उन्मूलक उक्त ब्रह्मवध अघ तन्मूलक
ग्रीष्मकाल शीतल सुगन्ध जल सेचन करि तसु लहत मोक्षफल
ग्रीष्मकाल चन्द्रातप दाता तुलसी ऊपर छत्र प्रदाता
होत समस्त पाप निर्मुक्ता इति सुन्दरि निगमागम उक्ता
अविरत जलधारा सिञ्चक नर तुलसी प्रति वैशाख मास वर
अश्वमेध फल करतल तासू करहिँ इन्द्र अति आदर जासू
पय सेचन तुलसी प्रति करई कबहुँ न श्री तद्गृह परिहरई
गोमय लेपक तुलसी मूला अरु तन्मार्जक गत भवशूला
दूरी कृत तरु तल रज यावत् बसत ब्रह्मपुर वत्सर तावत्
तुलसी विरहित धर्म कर्म जो भन निगमादिक फलविरहित सो
मृत्यु समय मुख शिर श्रुति माहीँ तुलसी जसु तसु यम भय नाहीँ
दूर्वा ० पापपुञ्ज अपहर्त्री अघ अभक्ष्यकृत धात्री हर्त्री
हरीतकी सब रोग प्रहर्त्री तुलसी एतत् त्रय क्षय कर्त्री

दोहा

शिव शंकर पुनि कहत भउ, करुणा वरुणागार ।
बिल्वपत्र महिमा अमित, कहि पावै को पार ॥६९॥

सोरठा

कछु संक्षिप्त प्रकार, कहौं महातम तासु अब ।
अनायास संसार, हमहिं रिझावै जासु बल ॥७९॥

चौपाई

अस कहि श्रीहर भाखन लागे करुणाकर करुणा परि पागे
हमहिं मध्यदल गिरिजे जानहु दक्षिण पत्र चतुर्भुज मानहु
वाम पत्र सुन्दरि विधि जासू भउ अतएव त्रिदल दल तासू
कहत ब्रह्ममय श्रीफल दलको द्वैपायन आदिक मुनिवर जो
श्रीगिरि शिखर समुद्भव श्रीफल श्रीगृह श्री निवसहिं जहँ प्रतिपल
विष्णु प्रीतिकर ब्रह्म प्रीतिकर श्रीफल दल मम परम प्रीतिकर
ब्रह्म विष्णु हम पत्र निवासी शक्ति कदम्ब वृन्त विनिवासी
श्रीफल दल जो हमहिं समर्पत अथवा मुरमर्दन कहँ अर्पत
पद कैवल्य तासु करतलगत भाखत निगम आगमादिक जत
पत्र लक्षमित हमहिं चढ़ावत अभिलाषानुरूप फल पावत
मन्त्र षडक्षर पञ्चाक्षर वा नाम मात्र मम लिखि दलमहँ वा
मलय महीधर चन्दनते जो हमहिं चढ़ावत धन्य धन्य सो
सप्त मास श्रीपति श्रीफल दल हमहिं चढ़ायउ शापि लिंग भल

नाना विध पायउ वरदाना सुख सम्पति अरु सन्तति नाना
शस्त्र अस्त्र पायउ बहु भाँती प्रेम मग्न मम जलधर काँती
उत्तारित दल थित एकत्रित ताते भयउ लिंग मम उत्थित
बिल्वेश्वर नामा भउ तहँ मम यत् पूजक दर्शन अक्षम यम
जिमि तुम अद्रिबालिका प्रिय मम जिमि रुद्राक्ष मालिका प्रिय मम
यथा विभूति विभूषित प्रिय मम तथा बिल्व दल अर्पक प्रिय मम
होत त्रिदल श्रीफल दल बहुधा तदधिक दल अपि होत अबहुधा
त्रिदलाधिक दल लब्ध यथा क्रम फलाधिक्य अपि होत तथा क्रम

दोहा

जगदम्बा अति मुदित मति, सुनि बहु विध उपदेश ।
कही बहुरि पति पद परसि, कहु कस कटत कलेश ॥७०॥

सोरठा

भक्तबच्छल भगवान, प्रिया प्रश्न सुनि कहत भउ ।
श्रद्धा सहित पुरान, कहत सुनत भव भय कटत ॥८०॥
हृदय पुराण हमार, श्रुति सुस्मृति लोचन युगल ।
आगम निगम अपार, कृत पुराण तसु सारमय ॥८१॥
पुण्योदय प्राचीन, होत जासु गिरिकन्यके ।
सो पुराण लवलीन, पावत परमानन्द पद ॥८२॥
पतित पुञ्ज सरदार, कतिपय भउ उद्धृत प्रिये ।
जानत सब संसार, विदित धुन्धकारी चरित ॥८३॥

चौपाई

जगत अन्ध जिमि भानुचन्द्र बिनु अन्ध तथैव पुराण श्रवण बिनु
जगत अन्ध जिमि भानुचन्द्र बिनु अन्ध तथा गुरुदेव दया बिनु
जो पुराणवाचक जग माहीँ प्रिये पूज्यतम तत्सम नाहीँ
होत बोध चन्द्रोदय तबही पिवत पुराण कथा रस जब ही
आविद्यक तम बिनसत जबही होत बोध चन्द्रोदय तबही
जब आविद्यक तिमिर अभावा लुप्त अहंकारादिक भावा
मायामय अहमित्यनुभूती बिनसत विकसत शुद्ध विभूती
अद्वय रस आस्वादन काला विरसी भूत द्वैत जंजाला
पर वैराग्य होत समुपस्थित विषय भावना तब अनुपस्थित
विषम विषय विष वेग तिरोहित मानस संप्रसाद सुख उत्थित
आरब्धावधि जीवन्मुक्ती तदवसान कैवल्य विमुक्ती
भयउ कछुक प्रासंगिक वर्णन पुनि कर्तव्य प्रकृत आकर्णन
भावितार्थ यदि पठित पुराना विस्मृत लौकिक अनुसन्धाना
देवतादि सुस्मरण प्रसादा अपगत चित्तवृत्ति अवसादा
भावित वत्सलतादिक सद्गुण उपजावत प्रेमादि विविध गुण
प्रेम समुद्भव सात्त्विक वृत्ती पुलक अश्रुपातादि प्रवृत्ती
मनोवृत्तिशैथिल्य प्रभावा उपजावत योगज सद्भावा
क्षुधा पिपासा आदि निवृत्ती परमानन्द प्रवाह प्रवृत्ती
चिर प्रयत्न कृत योगज सिद्धी अचिर यत्नकृत भक्ति समृद्धी
चिर प्रयत्न कृत आतम ज्ञाना रीझत अचिर प्रेम भगवाना

कहत सुनत अरु पढ़त पुराना भोगत इहामुत्र सुख नाना
मन्द भाग्य प्रतिबन्धक जहँमा साधक कृपादृष्टि मम तहँमा
नहिं मम भक्त कदापि असद्गति पावत इति निगमागम सम्मति
शब्दोच्चारण मात्र पुण्य फल भन मुनिजन अपहरत पाप मल
भन स्वाध्याय पुण्य निगमागम यत्कृत इष्ट देवता संगम
तप तत्पर फल मूल वारि भुक् वनवासी नाना संयम युक्
एक अपर स्वाध्याय परायन उभय तुल्यफल भन द्वैपायन
जप करि द्विगुण पुण्य फल पावत स्वाध्यायी इत्यपि श्रुति गावत
जो पुराणवक्ता जग धन्या दानपात्र तत्सम नहिं अन्या
अपि पुराण श्रोता बड़भागी फल इच्छुक वा इच्छा त्यागी
इच्छुक जन इच्छित फल पावत इच्छारहित हमहिँ अपनावत
पृथ्वीदान देत वाचक को दश पूर्वापर कुल तारक सो
गो गज अश्वादिक दाता जो अश्वमेध फलभागी जन सो
सुर सन्निधि पुराण वाचक जो दश शत अश्वमेध फल भुक् सो
नहिं मदुक्ति महँ जसु विसवासा सो अलब्ध फल होत हतासा
मम भाषणमहँ जासु सिनेहा सो मम प्रियतम नहिं सन्देहा

छन्द

सुनत अति हर्षित प्रमथगण जयति जय जय धुनि भई ।
करत भउ गलनाद कोऊ कोउ करताली दई ॥
डमरु डिमि डिमि शब्द पुनि पुनि नृत्य तत्पर अप्सरा ।
मधुर सुर गन्धर्व गायउ कियउ असतुति मुनिवरा ॥

ब्रह्म विष्णु महेन्द्र आदिक सबहि समुपस्थित भये ।
प्रणति नति नुति आदि करि करि प्रेम पूरित ह्वै गये ॥
भयउ पूछत बिहँसि करुणासिन्धु प्रभु कुशलादिकम् ।
भयउ पुनि उपदिष्ट कत अध्यात्म विद्या आदिकम् ॥

दोहा

जलधर द्युति पूछत भयउ, रजत द्युतिहिँ शिर नाय ।
प्रभु पुराणवाचन फलहिँ, कहु कृपया समुझाय ॥७१॥

सोरठा

कहत भयउ मुसुकाय, करुणाकर करुणायतन ।
सैनहिँ निकट बुलाय, समासीन करि हस्त गहि ॥८४॥

चौपाई

जो पुराणवाचक जग माहीँ हरे ताहि कछु दुर्लभ नाहीँ
भूतल सकल काम उपभोगी रविमण्डल भेदक जिमि योगी
ब्रह्मलोक गन्ता पुनि सोई जहँ शत कल्प वास तसु होई
निर्वासन मन लहत मुक्ति पद लहत वासना सहित राजपद
दश शत अश्वमेध फलभुक् सो सुरमन्दिर पुराण वाचक जो
हमहिँ यथा प्रिय पुस्तक वाचन तथा न मुरहर साधन किञ्चन
सुनहु हरे इतिहास पुरातन अति हृदयंगम अतिशय पावन
सनत्कुमार नाम मुनिराजा गयउ एकदा जहँ यमराजा
दियउ अर्घ आसन आदिक यम कियउ मान अति आनि पूज्यतम
मुनिवर करत भयउ अभिवादन अरु नाना विध नुति सम्पादन

भयउ परस्पर भाषण नाना उपपादित इतिहास पुराना
भयउ तदा अति अद्भुत घटना सब दिश उत्थित जयजय रटना
रुचिर मनोहर कनक विमाना भउ नभ दृष्ट विपुल परिमाना
मणि किंकिणी जाल परिमण्डित निरखत जाहि धनदमद खण्डित
भ्राजमान जिमि दिनमणिमण्डल यद्वा जिमि आखण्डल कुण्डल
वेदी मणि वैदुर्य विनिर्मित वासरमणि रजनीमणि दुतिजित
आगत पुरुष निरखि यमराजा भयउ ससंभ्रम सहित समाजा
अभ्युत्थानादिक सत्कारा कियउ भानुसुत विधि अनुसारा
निज समीप कर गहि बैठारे स्वागतमस्त्विति वचन उचारे
पुनरपि ताहि कहन अस लागे नम्रीभूत विनय रस पागे
पाइ दरस अति भयउ प्रमोदा कछु दिन मम ढिग लहु आमोदा
सुकृती यहाँ करत सुख भोगा लहत दुष्कृती दुख आभोगा
बसिय जाइ पुनि श्रुतिमुख लोका जहाँ न पञ्च कलेशज शोका
तावत् एक पुरुष पुनि आयउ आभा जासु चतुर्दिश छायउ
निरखि ताहि रविसुत विमान थित भयउ ससंभ्रम सानुग उत्थित
बोले मृदुल विनयमय वचना कियउ विविधविध सत्कृतिरचना
ममढिग रहि पुनि विधि ढिगजाइय निज कृत कर्म सुफल तहँ पाइय
जगदन्तक अपि पूजन तासू कियउ प्रताप विदित जग जासू
उभय पुरुषकर आदर भावा स्वयं कियउ अस विदित प्रभावा
सो लखि भयउ मुनिहिँ अचरज अति पूछत भयउ यमहिँ शंकित मति
नम्रीभूत उभय कर जोरे देव हरिय कछु संशय मोरे

त्रिभुवन वन्दनीय प्रभु आपू अपहृत सावित्री सन्तापू
मृत सावित्री पतिहिँ जिआयउ जगतीतल अतुलित यश छायउ
सकल सुरासुर आदिक जेते तव कराल गल निग्लित तेते
आयउ पुरुष युगल यह जोऊ भउ सम्मान पात्र तव सोऊ
की दृक् पुण्य कियउ प्रभु दोऊ पायउ प्रभुकृत पूजन जोऊ
कहत भयउ रविसुत सत्कर्मा मान्य जन द्वय कृत शुभधर्मा

दोहा

हे कुमार पावन चरित, आपुहिँ कहौँ बुझाय ।
अस कहि यम भाखत भयउ, आनन्दाश्रु बहाय ॥७२॥

सोरठा

पार पावि सक कोउ, नहि पुराण गुणगान कर ।
श्रुति पारंगत जोउ, चाखहिँ सोउ पुराण रस ॥८५॥
जाहि न रुचत पुरान, सो प्राणी अति पातकी ।
ताहि वाम भगवान, विधि हरि हर आदिक सबहि ॥८६॥

चौपाई

करि शुभ धर्म पुरुष जो दोऊ आयउ यहाँ सुनिय मुनि सोऊ
वैदिश नामक नगर प्रसिद्धा धर्म कर्म जहँ श्रुतिमत सिद्धा
धरापाल नामक तहँ राजा सदाचार रत सहित समाजा
औरस सरिस प्रजा परिपालक श्रुति बोधित सुधर्म सञ्चालक
अश्वमेध यागादिक कारक दुष्टदमन दुष्कर्म निवारक
गो द्विज देव वृद्धजन सेवक श्राद्धनिष्ठ गुरुदेव निषेवक

अभ्यागत परिजन परिपोषक पत्नीप्रिय सेवक सन्तोषक
देशकाल व्यय आय विचारक परिहरि स्वारथ पर उपकारक
नीति निपुण निज भूतल शासक चातुर्वर्ण्य धर्म अनुशासक
भयउ एक तहँ चरित कुमारा कथन करौँ अवगति अनुसारा
अस कहि कहन लगे यमराजा धर्म धुरन्धर सुर सिरताजा
एक समय गिरिजा जगदम्बा हर गृहिणी लम्बोदर अम्बा
कछु कारण वश भयउ सकोपा प्रमथोपरि करि दोषारोपा
प्रमथहिँ शाप दियउ तत्काला विस्फुरिताधर लोचन लाला
द्वादश वत्सर होहु जम्बुक तनु भ्रमित भूमितल भुक्त भोग अनु
मम समीप पुनि वास तुम्हारा कथमपि मृषा न वचन हमारा
भ्रमत भयउ जम्बुक तनु जहँ तहँ भयउ न क्वचिदपि शान्ति हृदयमहँ
नदी वितस्ता वेत्रवतीकर संगम जहँ निवसहिँ कत मुनिवर
अनशन करि तहँ तजे पराना करि गिरिजा गिरिजावर ध्याना
दिव्य रूप सो भउ तत्काला गउ विमान चढ़ि जहँ शशिभाला
अस आश्चर्य चरित लखि भूपति धरापाल भउ प्रेम मग्न मति
निर्मायउ शंकर आयतना कियउ पुरारि लिंग असथपना
ब्राह्मणादि भोजन करवायउ दान मान करि सबहिँ जुड़ायउ
पौराणिक ब्राह्मण सन्तोषा उपजायउ तजि धन मद दोषा
बहुरि विनय मय वचन सुनायउ हृदय लालसा सकुचि जनायउ
विदित विप्र सात्त्विक गुण भूषित विषय वासना दोष अदूषित
कबहुँ न शरणागत परिहरहीँ दया द्रवित मति श्रम अपि करहीँ

मधुर पुराण कथा रस पाना करन चहौं मैं तजि अभिमाना
चतुर्वर्ण चतुराश्रम एहू श्रवणोत्सुक तजि विषय सिनेहू
परहित हेतुक विप्र विभूती निज हित हेतुक नहि कछु ऊती
नहि अनवाप्त अवाप्य काम जो स्वात्मनिष्ठ आनन्दधाम जो
कृतकृत्यत्व वृक्षफल भुक् जो कस स्वारथ रस तृष्णा युक् सो
करुणा करिय मनोरथ पूरिय आश्रित जानि न दूर दुराइय
बड़जन कर यह सहज स्वभावा करहिँ दीन प्रति सकरुण भावा
फलद न कर्म दक्षिणा हीना अस भाखहिँ श्रुति शास्त्र प्रवीना
कर्म दक्षिणा कनक निष्क शत देहौँ द्विजवर शास्त्र उक्त जत
अपर वृत्ति अपि अंगीकृत करि कहिय पुराण विप्र वत्सर भरि
सुनि पुराणवाचक तब भाखे गोपनीय अपि गोपि न राखे
जो पुराण वक्ता अरु श्रोता तसु पुराण जगदम्बुधि पोता
इहामुत्र सम्पति सुख पावत जननी उदर बहुरि नहि आवत
धनि धनि मातु पिता कुल तासू उपजत कथा प्रेम उर जासू
अस कहि कियउ कथा आरम्भा विप्रवर्य परिहरि छल दम्भा
मास षट्क जब भयउ अतीता विप्र आयु ह्वै गयउ व्यतीता
काल कवल कवलित ह्वै गयऊ पुण्य प्रताप ताप मिटि गयऊ
काल पुरुषकर गति अवरोधा करि न सकत अपि बड़ बड़ योधा
चर अरु अचर जीव जग जेते काल पुरुषते बचहिँ न तेते
महाकाल करुणा लव यत्प्रति बली काल अपि निर्बल तत्प्रति
देह वियुक्त भयउ जब विप्रा रुचिर विमान पहुँचि गउ क्षिप्रा

प्रभु प्रेरित विमान आरूढ़ा भयउ दिव्य तनु विप्र अमूढ़ा
मम ढिग आइ भयउ सम्मानित होहिँ न कबहुँ भक्त अपमानित
दुर्जन प्रति हम अति विकरालू अरु सज्जन प्रति परम कृपालू
अपर पुरुष इहँमा जो आयउ प्रथम पुरुष तेहि कथा सुनायउ
भयउ भक्ति वाचक प्रति तासू प्राक्तन पुण्योदय भउ जासू
करि वाचकहिँ प्रदक्षिण पुनि पुनि भयउ प्रणत करि त्राहि त्राहि धुनि
स्वर्ण माष मित करि सो दाना दियउ वाचकहिँ करि सम्माना
एतन्मात्र सुकृति बल एहू सत्य लोक गत नहि सन्देहू
कियउ न पुण्य किञ्चिदपि अन्यत् शास्त्रोदित नाना विध यद्यत्
इन दोउनकर पुण्य कथानक करत कथा श्रद्धालु अचानक
षण्मासोपरि निर्गत प्राना अकृत पूर्ति संकल्प विधाना
यद्यपि व्रत विधि भयउ न पूरन भउ तत्पुण्य किञ्चिदपि ऊन न
अंग हानि आदिक जो दोषा गत उपासना काण्ड अदोषा
कर्म काण्ड गत दोष अशेषा भक्ति काण्ड महँ तसु न प्रवेशा
स्वल्प मात्र अपि भक्ति योग जो दूर करत संसार रोग सो
मम भाषण महँ कृत सन्देहा इहामुत्र भरमत धृत देहा
मम भाषण महँ जाहि प्रतीती तत्प्रति मोहि होत अति प्रीती
प्रकृत कथा अब कहौं मुरारे धर्म धुरन्धर रूप हमारे
सर्वज्ञत्व विभूषित यद्यपि लोक हितार्थ श्रवण करु तद्यपि
यथा पुराण कथा प्रिय मोरी तथा न उमा प्रेम रस बोरी
यथा पुराण श्रवण प्रियतम मम तथा न गंगाजल अपि प्रियतम

प्रियतम यथा कथा रस गगरी तथा न प्रियतम काशी नगरी
प्रियतम यथा पुराण हमारा तथा न पुष्पादिक उपचारा
जे जन जानहिँ ब्रह्म अखण्डा नहि किञ्चित्कर तहँ यमदण्डा
जे जन करहिँ पुराण परायन पिवहिँ तदर्थ अमोघ रसायन
होत निवृत्त मोहमय रोगा यथा साधि नाना विध योगा
निगमागम इतिहास पुराना देव प्रीतिकर भन मुनि नाना
दान आदि नाना विध साधन करि न सकत संसृति भय वारन
जे पुराणवाचक अति धन्या लहहिँ अभयदा भक्ति अनन्या
जे वाचक परिपूजक लोका भक्ति भरित ते होहिँ अशोका
दान मान भोजन वाचक प्रति उपजावत मम हरे तृप्ति अति
जे वाचकहिँ करहिँ सन्तुष्टा तदुपरि देव पितर परितुष्टा
हम विधि आपु तासु शुभचिन्तक जासु हृदय वाचक सुख चिन्तक
संयमनीपति भाखन लागे सनत्कुमारहिँ नय रस पागे
आगत अत्र पुरुष द्वय जोऊ कियउ अन्य साधन नहि कोऊ
करि केवल पुराण परिकीर्तन और श्रवण करि भउ गत बन्धन
प्रेम मग्न मुनिवर ह्वै गयऊ पुनि पुनि नति नुति तत्पर भयऊ
यमहिँ पूछि पुनि गउ पितुलोका निगमादिक भावुक गत शोका
विधि हरि हर संगम जल वीची नाकी हृदय वाटिका सीची
गये सवहि पुनि निज निज धामा करि प्रणाम सुमिरत शिव नामा

छन्द

अति पवित्र चरित्र एतत् पढ़हिँ सुनहिँ सुनावहीँ।
पाइ अनपायिनी मम रति प्रमथ पदवी पावहीँ ॥

बसहिँ मम सन्निधि दिवस निशि लहहिँ प्रतिदिन दर्शनम् ।
लहहिँ मम सायुज्य पद लहि चरण रज सुस्पर्शनम् ॥

दोहा

अद्रि सुता अति मुदित भइ, सुनि पुराण गुण गान ।
हृग्भ्रमरी मुख कंज कर, कियउ दरस रस पान ॥७३॥

सोरठा

जगहित प्रश्न विधान, कियउ उमा पुनि परसि पद ।
सत्य वचन गुण गान, करिय कृपा करि अरि मथन ॥८७॥
सुनि शंकर भगवान, कहत भयउ कर गहि मुदित ।
सत्य रूप मम मान, सहज सुखद सुन्दर शुभद ॥८८॥

चौपाई

सत्य वचन भाषी जग जोऊ लहत इन्द्र अर्धासन सोऊ
सत्य एव परमातम जानहु सत्य एव उत्तम तप मानहु
सत्य एव सुन्दरि बड़ यागा सत्यनिष्ठ सुन्दरि बड़भागा
सत्य एव पद परम प्रसिद्धा सुर ऋषि पितर प्रीतिकर सिद्धा
सत्य समाश्रित साधन सब ही फलै सत्य परमादर जब ही
सत्य समाश्रित विद्या नाना सत्य अनन्वित सकल मलाना
सत्य एव सुन्दरि सब दाना मन्त्र सकल मम वचन प्रमाना
सत्य एव व्रतचर्या जानहु सत्यहिँ प्रणव देवि तुम मानहु
मारुत बहै सत्य अवलम्बित तपै तपन अपि सत्यालम्बित
दहै दहन अपि सत्यालम्बित धरणी धरै सत्य अवलम्बित

स्वर्गलोक अपि सत्य प्रतिष्ठित धरै अनन्त धरा तन्निष्ठित
सकल तीर्थ अवगाहन जोऊ फलै सत्य अवलम्बित सोऊ
दश शत अश्वमेध कर्ता जो सत्य सुमन शुचि उपहर्ता जो
उक्त द्वितीय अधिक फलभागी यद्यपि प्रथम अमित धन त्यागी
अधिक सत्यते धर्म न दूजा यागादिक गिरिराज तनूजा
मिथ्या अधिक पाप नहि कोई गायत्री सम मन्त्र न होई
मम सम अन्य देव नहि कोई यह रहस्य जानत जन कोई
हमहिँ हरिहिँ अन्तर नहि जानै नहि विवाद अवसर यहँ आनै
सत्य प्रतिष्ठ होय यदि कोई वाक्य सिद्धि सुन्दरि तसु होई
जन्मारभ्य मरण पर्यन्ता सत्य मात्र भाषी जो सन्ता
ताहि मरण भय कबहुँ न होई यह रहस्य जानत जन कोई

दोहा

सत्य महातम कथन भउ, अति संक्षिप्त प्रकार ।
करि विश्वास विशुद्ध मति, प्रियतम होहिँ हमार ॥७४॥

सोरठा

अस कहि त्रिभुवन नाथ, ध्यान निमीलित नयन भउ ।
उमा जोरि युग हाथ, जय जय धुनि पुनि पुनि कियउ ॥८९
श्रीशंकर भगवान, उन्मीलित लोचन भयउ ।
कियउ प्रिया सम्मान, बिहँसि निरखि तसु वदन शशि ॥९०

चौपाई

सुन्दरि सुनन चहहु अब काहा कहत भयउ अस त्रिभुवन नाहा
सकुचि कहत भइँ गिरिवर कन्या परहित हेतुक त्रिभुवन धन्या
वृक्षारोपण फल कछु भाखिय दासी जानि न मन महँ माखिय
कर गहि प्रभु मृदु वचन सुनायउ प्रिये प्रिये कहि प्रीति जनायउ
वृक्षारोपण फल व्याख्याना करत भयउ जिमि भन मुनिनाना
करत विविध विध तरुआरोपन तदुपरि वासरमणि सुत कोप न
पूर्वापर कुल उद्धारक सो वन वृक्षारोपण कारक जो
आरोपित तरु पुत्र समाना सद्गति प्रापक भन मुनि नाना
जो अपुत्र जगतीतल माहीँ सोउ अपुत्र रोपि तरु नाहीँ
जिमि पुत्रोत्पादन विधि कथमपि तिमि कथमपि वृक्षारोपण अपि
पोषणीय जिमि औरस पुत्रा पोषणीय तिमि पादप पुत्रा
वृक्षारोपक गत सुरलोका लहत स्वर्ग सुख विगलित शोका
किन्नर उरग देव गन्धर्वा यक्ष रक्ष मनुजादिक सर्वा
ऋषि गण और पितृगण जेते प्रिये करहिँ तरुआश्रय तेते
लहहिँ सुमन कृत सुरगण तृप्ती फलकृत लहहिँ पितर परितृप्ती
छायाकृत छायाश्रित तृप्ती पुष्पज फलज पितर परितृप्ती
एक एक पीपर पाकर बट आरोपक ढिग जात न यमभट
दश चिश्वनि तरु आरोपक जो करत न संयमनी दर्शन सो
तीन कपित्थ तीन श्रीफल तरु रोपि तीन आमलकी तरु अरु
पञ्च आम्र आरोपक जो जन लहत न याम्य यातना मुनि भन

उक्त अनुक्त वृक्ष आरोपा उपजावत रवितनय अकोपा
प्रिये ताहि जानहु हतभागा तरुरोपण महँ जाहि न रागा
अल्पायास साध्य साधन अस जे न करहिं हतबुद्धि कौन तस
क्षुद्र जलाशय अपि जो करई सोउ न नरक कुण्ड महँ परई
लघु वृक्षारोपक अपि जोऊ नरक कुण्ड महँ परत न सोऊ
अन्न दान अपि लघु परिमाना करि पावत सुरपति सम्माना
गुरुलघु जिमि अघवृन्द अपरिमित तिमि गुरु लघु सुकर्म अपि अगणित
लघु सुधर्म गुरु पाप विनाशक लघु अधर्म गुरु धर्म विनाशक
लघु अघ जानि अनादर अनुचित सावधानता सब थल समुचित
लघु धर्महुँकर समुचित आदर नास्तिकता पहुँचावत यम घर
चक्षु दोष दूषित जो कोऊ लखत पीतमय दश दिश सोऊ
नास्तिकता दूषित जो कोऊ वस्तु यथाथित लखत न सोऊ
पुण्य पुञ्ज समुदय जब होई होत सुआस्तिक नास्तिक सोई
अस कहि भयउ मौन श्रीशंकर हर करुणा सागर गौरीवर
सुनि गिरिजा अनुपम सुख पावा धन्य धन्य कहि प्रभु यश गावा
पुनि जयजय धुनि भउ चहुँओरा सुनि पेखे प्रभु लोचन कोरा

दोहा

प्रिया विलोकि महेश पुनि, कहत भयउ अब काह ।
सुनन चहहु गिरि कन्यके, सद्गति प्रापक राह ॥७५॥

सोरठा

जगदम्बा हरषाय, भाखत भइँ प्रभु पद परसि ।
कहिय नाथ समुझाय, पूजन पार्थिव लिंगकर ॥९१॥

चौपाई

सुनि विश्वेश्वर अति सुख पाये कहत भये जिमि श्रुतिगण गाये
विपति विदारण सब सुख साधन स्वल्पायास महा भय वारन
मामक पार्थिव लिंग समर्चन जलधारा श्रीफल दल अर्पन
श्रद्धा भक्ति सहित जो कोई करत परम फल पावत सोई
लिंग समर्चन कथमपि करई नहि तथाऽपि संकट महँ परई
ब्राह्म मुहूर्त विहित उत्थाना गुरु प्रणाम सुस्मरण विधाना
तीर्थादिक सुमिरन अपि सम्मत तदुपरि मलोत्सर्ग आदिक जत
तदुपरि मन्त्र सहित असनाना अत्यावश्यक नित्य बखाना
भन मध्याह्न नित्य असनाना प्रातःस्नानहि काम्य बखाना
पुरश्चरण कर्ता जो कोई सो त्रिकाल असनायी होई
गृही जनहिँ सायं असनाना तदतिरिक्त अविधेय बखाना
त्रिलक विधारण करि असनाना भाखत आगम निगम पुराना
पुनरपि नित्यकर्म विधि बोधित कृत कर्तव्य तथा श्रुति घोषित
नित्यकर्म महँ सन्ध्यावन्दन षट् पुरुषीय वेद भन तर्पन
षट् पुरुषीयाधिक जो तर्पन काम्य कर्म नाना मुनिजन भन
गणपत्यादि पञ्चसुर पूजन मुरहर इष्ट देवता अर्चन
पञ्चदेव महँ मुरहर गणना करै कोउ परिहरि गजवदना
पुष्पपात्र महँ पुष्पादिक जो अर्पणीय चतुरानन कहँ सो
वैश्वदेव बलि नित्य श्राद्ध विधि अरु गृहस्थकर अग्निहोत्र विधि
भाखत सर्व कर्म अवसाना पार्थिव शिव पूजन मुनि नाना

पार्थिव शिव पूजन धरि ध्याना समय प्रदोष विशेष बखाना
भाखत रजनीमुखहिँ प्रदोषा निगमागम पुराण अरु कोषा
सायं सन्ध्या प्रारम्भिक छन व्युत्पत्या रजनीमुख मुनि भन
भाखत शुद्ध मृत्तिकानयना मन्त्र * सहित मुनि पूजित चरना
लाइ मृत्तिका राखै रक्षित कहौँ प्रिये पुनि कृत्य विवक्षित
प्रति वासर वा मास मासपर मृदानयन विधि भाखत मुनिवर
असित पक्ष चौदहवीँ तिथि जब मृदानयन विधि भाखत श्रुति तब
कृताचमन विधि अरु कृत न्यासा अर्चनाधिकृत भाखत व्यासा
भाखत माष मात्र जलपाना विप्राचमन विषय मुनि नाना
विप्रेतरहिँ न्यून परिमाना भन जलपान मुनीश्वर नाना
सुन्दरि करौँ न्यास उपदेसा जो उपजावत धर्म विसेसा
करि आवाहन अथवा ध्याना जहँमा शिष्टाचार प्रमाना
कहौँ यजन विधि अब गिरिकन्ये त्रिभुवन तारिणि त्रिभुवन धन्ये
महोदयाख्य वृषभकर अर्चन तदुपरि प्रियतम प्रमथ समर्चन
इति कर्तव्य रूप यह पूजा परिहरि कृति कर्तव्य न दूजा
पुनि स्वकीय पूजन विधि भाखौँ गोपनीय अपि गोपि न राखौँ
रुद्र सूक्त वा सुस्तुति नाना पढ़ि पढ़ि मम सुस्नपन बखाना
पाद्य अर्घ्य आचमन समर्पन भाखत मुनिजन निगमागम गन
नाना द्रव्य समर्पण मन्त्रा श्री शिवाय नम इति भन तन्त्रा
नैवेद्यादि दान महँ श्रुति भन वस्तु लक्ष्य करि जल प्रक्षेपन

---

* सभी मन्त्र ग्रन्थके परिशिष्ट भागमें दिये गये हैं।

पूज्य देवतोपरि पुनि समुचित जल प्रक्षेपण भाखत श्रुतिवित
तदुपरि नीराजन विधि सुन्दरि समुचित नाना सुस्तुति करि करि
आरात्रिक धूपादि दान जब श्री शिवाय नम इति मनु भन तब
आरात्रिक अवसान समय जब कर्म प्रदक्षिण उद्घोषित तब
यजमानाय नमः श्रुति तन्त्रा भन तदुपरि प्रणामकर मन्त्रा
प्रणवोच्चारणपूर्वक मन्त्रा ब्राह्मणादि महँ भन श्रुति तन्त्रा
तदितर महँ प्रणवानुच्चारण भाखत वेद व्यास द्वैपायन
पुनि क्षमस्व इति भन श्रुतितन्त्रा हिमगिरिपुत्रि क्षमापन मन्त्रा
पुनि स्वाध्याय जपादिक कारज भन कर्तव्य अंग मुनि आरज
जप विधान भाखौं अब सुन्दरि आदरणीय सदैव जन्म भरि
गुरु उपदिष्ट मन्त्र मम सन्निधि भन जपनीय सुविज्ञ यथाविधि
जप पूरब मम ध्यान विधाना भन कर्तव्य महामुनि नाना
परिहरि सकल लौकिकी चिन्ता तब कर्तव्य मोर अनुचिन्ता
गुरु उपदिष्ट मन्त्र जप समुचित भाखत महामहा मुनि श्रुतिवित
अति सुस्थिर मानसकृत जापा काटत पाप मिटावत तापा
न्यून न्यून फलदायक दोऊ भन उपांशु अरु वाचिक जोऊ
गुरु देवता मन्त्रगत अक्षर सुमिरत जपचर्या भन मुनिवर
वायु निरोध दृष्टि अवरोधा उपजावत पुनि निर्मल बोधा
इष्ट देवता प्रति जप अपक निरखि होत यमराज अदपक
अष्टमूर्ति पूजन वृद्ध्यर्था अरु सांगार्चन फल सिद्ध्यर्था
अष्टमूर्ति पूजन अक्षत ते अथवा भन मुनिजन चन्दन ते

प्रणव अनुच्चारण उच्चारन अद्विज हेतु अरु द्विज हेतुक भन
द्विज पत्नी अपि कलियुग माहीँ प्रणवोच्चारण अधिकृत नाहीँ
वरुण बीज उच्चारण पुनि पुनि करताली अरु गल्लवादन धुनि
गीत वाद्य नर्तन आदिक जत आचरणीय यथासम्भव तत

दोहा

धृत पुष्पाक्षत पाणि युग, विनिबद्धाञ्जलि होइ।
अर्पणीय करि प्रार्थना, पुष्पाक्षत पुनि सोइ ॥७६॥

चौपाई

पुष्पाक्षत लिंगोपरि अर्पन करि पुनि मम समुचित अभ्यर्थन
वहुरि विसर्जन मन्त्रोच्चारनु करत विसर्जनीय पञ्चानन
करि पूजन पद्धति अनुसारा पावत द्रुत भवसागर पारा
स्वयं न अर्चन करि सक जोई करै विप्र द्वारा अपि सोई
लहि दक्षिणा तुष्ट यदि विप्रा सिद्ध होत मनवाञ्छित क्षिप्रा
श्रद्धा भक्ति सहित पूजक जो जीवन्मुक्ति भुक्ति पावत सो
शापानुग्रह शक्ति लहत सो करत मदर्चन भक्ति सहित जो
मम दर्शन मम पूजक दर्शन कहत तुल्य फल निगमादिक गन
भयउ यथाविधि पूजन वर्णन लहत मनोरथ करि आकर्णन
भयउ अद्रितनया अति मुदिता सुनि पूजन पद्धति श्रुतिउदिता
जो पूजक करिहैँ विसवासा मम पूजन महँ ते प्रिय दासा

दोहा

अस कहि प्रभु करुणानिलय, भक्तवछल भगवान।
कहत भयउ जो भक्त मम, इत उत तसु कल्यान ॥७७॥

सोरठा

जय जय धुनि चहुँ ओर, करत भयउ प्रमथादिगन ।
मुनि जन मानस चोर, हँसि हँसि देखत भउ सबहिं ॥९२॥

छन्द

हर्षनाद गलनाद डमरु धुनि करत भयउ मिलि प्रमथ गना
श्रुति सुस्मृति समुदित नुति तत्पर नारद आदिक विप्रजना
उमा जया विजयादि समन्वित गान करत भउ मुदित मना
हरषि असीस दियउ शिवशंकर निरखि निरन्तर प्रीति घना

दोहा

जगत हितू जगदम्बिका, कर सरसिज युग जोरि ।
कहत भयउ इक लालसा, पूरिय प्रियतम मोरि ॥७८॥

सोरठा

वर्णिय आपुन तत्त्व, भक्तिगम्य तदितर अगम ।
भवत सत्ता सत्त्व, जासु नाम आगम निगम ॥९३॥
नेति नेति कहि जाहि, ज्ञानी जन गावहिं सदा ।
करामलक इव ताहि, नाथ बुझाइय करि कृपा ॥९४॥
श्रुति अपि श्वासारूप, विदित जासु सब शास्त्रमहँ ।
सकल सरूप अरूप, कहिय अनूपम रूप निज ॥९५॥

चौपाई

सुनतहि शंभु नयन जल छाये हर्ष प्रवाह उमगि जनु आये
प्रभु वदनेन्दु विनिर्गत वानी जिमि चन्द्रिका सुधा रस सानी

श्रवण करत भइ गिरिवर कन्या आह्लादित मति त्रिभुवन धन्या
वामदेव आदिक सब सभ्या सुनत भयउ उपदेश अलभ्या
सावधान मति नियम नियत अति श्रवण निरत भउ इन्द्रादिक कति
मदनमथन तब भाखन लागे करुणाकर करुणा परि पागे
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय यत्किञ्चित् सत्तामात्र तदन्य अकिञ्चित्
आब्रह्मादिक तृण पर्यन्ता सत्तामात्र अखण्ड अनन्ता
स्त्री-पुल्लिंग नपुंसक जेते सत्तामात्र रूप मम तेते
उत्तम मध्यम अन्य पुरुष जत सत्तामात्र मदीय रूप तत
देश काल अरु वस्तु सकल जत सत्तामात्र मदीय रूप तत
उतपति थिति हति कारण जोई सत्तामात्र रूप मम सोई
कारण कार्य करण आदिक जत सत्तामात्र मदीय रूप तत
जिमि गुणमहँ अहिमति अबोधकृत तिमि हममहँ संसृति अबोधकृत
बहिरन्तर इन्द्रिय गोचर जत सत्तामात्र मदीय रूप तत
वास्तव रूप इन्द्रियागोचर भाखहिँ श्रुति पारंगत मुनिवर
मद्व्यतिरिक्त वस्तु नहि कोई भासमान भ्रम मूलक सोई
जिमि शशशृंग गगन कुसुमादिक तिमि अलीक भौतिक भूतादिक
स्वप्न समय जिमि सदिव असत्ता प्रिये तथा आविद्यक सत्ता
भासत पीत सकल जग ताको कमला रोग पराभव जाको
भासत सदिव असत् यह ताको माया व्याधि सतावत जाको
अहंकार ममता मति जोई उपजावत दुर्गति अति सोई
यद्यपि माया वस्तु अकिञ्चन श्रुति तथापि भन जनि मृति कारन

मम प्रतिबिम्ब जीव जग एते हमहिँ बिम्ब भन श्रुतिगण जेते
भन मायिक प्रतिबिम्ब ईश इति आविद्यक प्रतिबिम्ब जीव इति
भन समस्त अज्ञानहिँ माया व्यस्त अविद्या वेद बताया
निर्मल गुण माया परसिद्धा मलिनीभूत अविद्या सिद्धा
माया प्रतिबिम्बित सर्वज्ञा तदितर प्रतिबिम्बित अल्पज्ञा
जल घट गत प्रतिबिम्ब अनेका राजत गगन मध्य रवि एका
भग्न कलश प्रतिबिम्ब अनेका बिम्ब रूप वासरमणि एका
भग्न शरीरोपाधि जीव जत मम अभिन्न कैवल्य मुक्तिगत
तमहिँ विदारत रवि परकाशा हरत अबोधहिँ मोर विकाशा
विना भक्ति नहि ज्ञान प्रकाशा विना प्रेम नहि भक्ति विकाशा
विना कर्म नहि उपजत प्रेमा कर्म विविध तीरथ व्रत नेमा
अथवा श्रवणादिक भन साधन ज्ञानोदय महँ नाना मुनिजन
श्रवण मनन अरु निदिध्यास भन ज्ञानोदय साधन द्वैपायन
गुरु मुखते वेदान्ताकर्णन साधन प्रथम कहत द्वैपायन
भन द्वितीय साधन तच्चिन्तन युक्ति प्रमाण सहित द्वैपायन
निदिध्यास भन पुनि पुनि चिन्तन अनवच्छिन्नतया द्वैपायन
साक्षात्कार तदुत्तर काला चरम ज्ञान इति भन श्रुतिमाला
उतपति थिति हतिकालिक सत्ता सो मम रूप अनन्त महत्ता
जो सर्वज्ञ चराचर ज्ञाता सकल जीव जग जसु अज्ञाता
सो मम रूप सदाशिव नामा सच्चित् सुखमय निर्भय धामा
बहिरन्तर सर्वत्र विराजित गगनोपम निर्लिप्त अबाधित

सो मम रूप निरञ्जन रूपा अलख अनामय अगम अरूपा
भक्त हृदय सरसी वर हंसा धृत सुरसरित चन्द्र अवतंसा
निर्गुण सगुण अनाकृति साकृति सोइ ममाकृति दृश्य दृगाकृति
भाखत शैव मोहि शिव नामा कहत विष्णु इति वैष्णवग्रामा
शक्ति उपासक कहत शक्ति इति गाणपत्य साधक गणपति मति
भाखत सौर सूर मम नामा शब्द ब्रह्म भन ब्राह्मणग्रामा
परम ब्रह्म इति श्रुति पारंगत यती वनी अरु ज्ञानवान जत
नाना अधिष्ठान गत एका हुतभुक् दीखत यथा अनेका
अद्वय चिन्मय ब्रह्म अनामय भासत तादृश यादृश आशय
नट अभिनय जिमि नाना रूपा मम अभिनय तिमि मति अनुरूपा
द्वैताद्वैत प्रबल मत दोऊ लहत न दुर्गति साधक कोऊ
द्वैतोपासक प्रेम पिपासू तदितर आत्मरूप जिज्ञासू
लहत अञ्जसा भक्त परम पद करि आयास द्वितीय निरापद
लहत भक्त जन क्रमिक विमुक्ती पावत ज्ञानी सद्यो मुक्ती
भक्ति पथिक प्रेमामृत पायी ज्ञान पथिक भोगत कठिनाई
जानत सुख दुख एक समाना ज्ञान पथिक विगलित अभिमाना
भक्ति रसिक प्रभु शरणापन्ना रक्षक तासु महेश प्रसन्ना
ज्ञानवान जानत जग मिथ्या मानत केवल मोहि अमिथ्या
अहंकार ममता मद हीना धन्य धन्य जन ज्ञान प्रवीना
प्रेम प्रवाह निमग्न भक्त जो देह गेह सुधि बुधि बिसरत सो
गद्गद गल शरीर रोमाञ्चित जिमि सुन्दरि फल पनस कंटकित

हर्ष अश्रु परिपूरित लोचन प्रिये तासु हम भव भय मोचन
शिव शंकर शिव शंकर कहि कहिं प्रेम प्रवाह प्रवाहित रहि रहि
परमानन्द परम सुख लूटत अनायास भव बन्धन छूटत
गिरिजे ज्ञानगम्य थल जोई श्रुति भन भक्ति गम्य थल सोई
केवल साधन मार्ग अनेका साध्य पदारथ सुन्दरि एका
साध्य पदारथ जानहु मोही परम रहस्य सुनावौं तोही
प्रिये देहि पद भक्त न भाखत केवल भक्ति सुधारस चाखत
तदपि ताहि वितरत मम भक्ती भुक्ति विमुक्ति अलौकिक शक्ती
ज्ञानी जन निर्गुण पद लहई भक्त अभीष्ट देव ढिग रहई
पुनरपि पावत सगुण पदारथ यह निगमागम स्वरस यथारथ
अपि सरूप सेवक हित लागी धरौं रूप मैं जन अनुरागी
अगुण सगुण महँ नहि कछु भेदा भेद बुद्धि पावहिं अति खेदा

दोहा

'सावधान मन सुनहु पुनि, गिरिजे तत्त्व विचार ।
निगमादिक निर्मथित पय, उद्धृत घृत इव सार ॥७१॥

सोरठा

भक्तबछल भगवान, अस कहि भाखत भउ बहुरि ।
लहै परम कल्यान, परिशीलन करि जासु जन ॥९६॥

चौपाई

सकल निषेधावधि जो कोई तत्त्व हमार परात्पर सोई
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड निकाया रोम विवर विच जासु समाया
महा महत्त्व मान जो कोई तत्त्व हमार परात्पर सोई
केश अग्र शत शत मित अंशा सूक्ष्म सूक्ष्म तम वस्तु निरंशा
महा महत्तम सूक्ष्म सूक्ष्मतम सोइ अद्रिपति पुत्रि तत्त्व मम
जनि मृति आदि विकार विहीना प्रकृति विकृति सब जासु अधीना
विश्व प्रवाह प्रवाहक जोई तत्त्व हमार परम पद सोई
इदमित्थं कह जाहि न श्रुति अपि वरनंत केवल कहत किञ्चिदपि
जगदाधार जगत्पति जोई तत्त्व हमार परम पद सोई
विधि लक्षण अगम्य परमेशू जहँ तटस्थ लक्षण परवेशू
मत जो अमत अमत मत जोई गिरिवर पुत्रि तत्त्व मम सोई
सकलेहा विरहाकृति जोई जब मन वच वपु क्रिया न होई
बहिरन्तर इन्द्रिय विज्ञाता स्वयं अतीन्द्रिय श्रुति विख्याता
अत्यद्भुत चरित्र जो कोई गिरिवर पुत्रि तत्त्व मम सोई
धावत पद बिनु कर बिनु करई सुनत श्रवण बिनु अनयन लखई
सहज ज्ञान बल क्रिया शक्ति जो गिरिवर तनये मोर तत्त्व सो
पृथक् पृथक् गुण सगुण अगुण जो परमब्रह्म प्रभु विधि हरि हर जो
माया ईश जीव जग जोई गिरिवर पुत्रि तत्त्व मम सोई
बहु विध सिद्धि समाधि विधाता स्वयं सिद्ध केवल पद दाता
स्वयं अकेवल केवल जोई गिरिवर पुत्रि तत्त्व मम सोई

दीनबन्धु जनबन्धु देव जो करुणासागर महादेव जो
अवढर ढरन अनाश्रय आश्रय आशुतोष सब शक्ति समाश्रय
सौन्दर्यादिक गुण आगर जो सस्मित वदन क्षमासागर जो
शंकर साम्ब सदाशिव जोई गिरिवर पुत्रि तत्त्व मम सोई
निर्धन धन अनाथकर नाथा गावत श्रुति तति जसु यशगाथा
आदि शक्ति कर कमल ग्रहीता भूत प्रेत पति धनपति मीता
प्रलय समय महँ ताण्डवकर्ता यदुपति तनु बनि पाण्डव भर्ता
हरि हर तनु पिनाक धनु जोई गिरिवर पुत्रि तत्त्व मम सोई
शेष शारदा नारद आदिक जसु यश गावत जाबालादिक
पशुपति वृषवाहन जो होई गिरिवर पुत्रि तत्त्व मम सोई
जाग्रत सुप्ति मध्य कालीना अवस्थान जहँ वृत्ति विलीना
निरुद्वेग थिति किञ्चित्कालिक मोर तत्त्व भन उपनिषदादिक
विस्मृति संस्मृति मध्य अवस्था विषयालम्बन विरहावस्था
सत्तामात्र स्वरूप अवस्था मोर तत्त्व इति वेद व्यवस्था
अमनस्कत्व दशा निगमादिक मोर तत्त्व भन मुनि व्यासादिक
गंगाधर अनंग मद मोचन पञ्चवदन गिरि सदन त्रिलोचन
उरग हार द्विजराज कलाधर भसित विधूलित गौरीवर हर
सोइ तत्त्व मम गिरिवर कन्ये त्रिभुवन तारिणि त्रिभुवन धन्ये
शेष सहसमुख पार न पावत होत चकित अपि श्रुति गुण गावत
प्रमथादिक गुण गावत प्रमुदित आह्लादित मति अति रोमाञ्चित
सोइ तत्त्व मम गिरिवर कन्ये त्रिभुवन तारिणि त्रिभुवन धन्ये

रुद्रैकादश शत शत रुद्रा यदवतार जो स्वयं अरुद्रा
सोइ तत्त्व मम गिरिवर कन्ये त्रिभुवन तारिणि त्रिभुवन धन्ये
अंशज जासु विष्णु चतुरानन विहरहिं नित मन्दर गिरि कानन
सोइ तत्त्व मम गिरिवर कन्ये त्रिभुवन तारिणि त्रिभुवन धन्ये

दोहा

सुनि अम्बा पुलकित तनू, कहन लगी हरषाय ।
विधि हरि रुद्र प्रकार कस, कहिय नाथ समुझाय ॥८०॥

सोरठा

सुनि सर्वज्ञ महेश, कहत भयउ प्रस्तुत कथा ।
कहत सुनत अकलेश, भेद बुद्धि जाते मिटै ॥९७॥

चौपाई

उतपति थिति हति पुनि पुनि होई आदि अन्त जानत नहि कोई
अंकुर बीज बीज अंकुर जिमि सृष्टि प्रलय सुन्दरि पुनिपुनि तिमि
प्रलय समय महँ देवि भवानी रहत न कोउ चराचर प्रानी
रहौं सदाशिव निर्गुण हम तब विधि हरि रुद्रादिक अपि नहि जब
होत सिसृक्षा मति तब मोही वेद सिसृक्षा मति भन तोही
मदुत्पन्न तब प्रकृत पुरुष द्वय होत प्रिये अस श्रुतिकृत निर्णय
नारायणीति प्रकृति प्रधाना नारायण पूरुष भगवाना
प्रलय वारि विच मम शूलोपरि निद्रित भउ चिरकाल रमा हरि
भउ ब्रह्मा हरि नाभि कमलते अनिर्लिप्त व्यवहृति कश्मल ते
भउँ अवतीर्ण ब्रह्म भालोद्भव रुद्र नाम हम स्वेच्छा संभव

भयउ तथा अवतीर्णा काली आदि शक्ति तुम धृत मुण्डाली
रजो गुणी विधि सृष्टि विधाता सत्त्व गुणी हरि त्रिभुवन पाता
रुद्र तमोगुण युत संहर्ता अगुण तीन गुण विग्रह धर्ता
रजहिं प्रवर्तक श्रुति गण गावत तथा प्रसादक सत्त्व बतावत
तमोगुणहिं अवसादक श्रुति भन भन निर्गुणहिं निवर्तक मुनिजन
उतपति थिति हति वारंवारा सुन्दरि जीव कर्म अनुसारा
त्रिविध कर्मकर जबहिं अभावा होत सभक्तिक ज्ञान प्रभावा
सुन्दरि तब कैवल्य पदोदय होत कहत इति व्यास महोदय
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अवस्था कर्मजनित इति वेद व्यवस्था
त्रिविध कर्म अनुपस्थित जबहीँ पद तुरीय समुपस्थित तबहीँ
पद कैवल्य तुरीय अभिन्ना मोर तत्त्व भन शास्त्र विभिन्ना
जित इन्द्रिय मानस मारुत गति करत तूर्य सुख अनुभव शुचि मति
आ प्रारब्ध तूर्य पद सिद्धा तदवसान कैवल्य प्रसिद्धा
आ प्रारब्ध तूर्य सुख भंगा प्रत्यावृत्त इवाम्बु तरंगा
थिरता तासु समाधि कहावत अमनस्कत्व भाव अपि तद्वत
भन ऐकाग्र्य निरोध समाधी जहँ अनुपस्थित संसृति व्याधी
पवनाभ्यास रहित अपि जोऊ अमनस्कत्व लहत सुख सोऊ
यह रहस्य जानत जन कोई मानस जप निमग्न मन जोई
मनो दृष्टि अरु मारुत समगति भाखत योगी जन निर्मल मति
एक निरोध सकल अवरोधा एक अरोध समस्त अरोधा
निर्वृत्तिक थिति गत अपूर्व सुख लहत कोउ विरहित प्रपञ्च दुख

सोइ तत्त्व मम केवल सत्ता तदितर सकल अतत्त्व असत्ता
न्यस्त भार विश्राम धाम जो सोइ तत्त्व मम ब्रह्म नाम जो
कहत कहत अस शंकर स्वामी ध्यान मग्न भउ अन्तर्यामी
जय जयकार करन सब लागे प्रमथादिक प्रेमामृत पागे
अमरी वृन्द सुमन बरसायउ मधुर गान गन्धर्व सुनायउ
कियउ नृत्य रम्भादिक रामा वीणा बजी कच्छपी नामा
शीतल मन्द सुगन्ध बयारा चलेउ सुखद सुसमय अनुसारा
तावत् चन्द्रोदय ह्वै गयऊ मानहु दिव्य दीप बरि गयऊ
शीतल सुखद सुधा कण बरसे निज करते प्रभु पद युग परसे
इन्द्रादिक पहुँचे तत्काला लै उपहार सुमन मणि माला
हंसोपरि आयउ चतुरानन आयउ मुररिपु खगपति वाहन
सुर मुनि किन्नर गुह्यक सिद्धा गन्धर्वोरग दनुज प्रसिद्धा
प्रभु प्रसाद इच्छुक सब आयउ दरस पाय अतुलित सुख पायउ
करत भयउ वेदोदित नुति सब उन्मीलित लोचन भउ प्रभु तब
सबहिँ यथोचित आसन दियऊ कुशल प्रश्न करि प्रमुदित कियऊ
अति प्रसन्न विधि हरि मुख देखे अभ्यागत इन्द्रादिक पेखे
हरे करहिँ हम शुभ उपदेशा सुनिय सबहि जस श्रुति आदेशा
अस कहि कहत भयउ श्रीशंकर करुणासागर गौरीवर हर
आपु चतुर्मुख अरु हम एहू एक तत्त्व नहि कछु सन्देहू
पावक एक अधिष्ठित जहँ जहँ तदाकार प्रतिभासित तहँ तहँ
निर्गुण हम विधि हरि हर रूपा माया भासित वस्तु अरूपा

हम सब महँ विभेद मति जोई नरकादिक दुख भोगत सोई
हम सब महँ अभेदमति जोई कृपा पात्र हम सबकर सोई
हम सब महँ अभेदमति जोई प्रलय पराभव लहत न सोई
प्रकृति पुरुष महँ नहि कछु भेदा पावत भेद बुद्धि अति खेदा
चन्द्र चन्द्रिका महँ नहि भेदा प्रकृति पुरुष महँ तथा अभेदा
नहि चन्द्रिका चन्द बिनु होई प्रकृति विहीन पुरुष नहि कोई
द्वैत भाव यह यावद् व्यवहृति द्वैताभाव अनीदृश आकृति
अगम अगोचर अलख अनूपा जानि गिरत नहि संसृति कूपा
नर नर महँ नारी नारी महँ नहि विभेद चर अचर वस्तु महँ
वीची बुद्बुद आदिक नाना वास्तव केवल वारि अनाना
नाना भाव मायया कल्पित हरे अनाना भाव अकल्पित
भक्ति ज्ञान बिनु मिलत न सोऊ करै विविध दुष्कर तप कोऊ
मन्त्रौषध प्रयोग शत करई रज्जू अहि बिनु ज्ञान न टरई
विना ज्ञान नहि तत्त्व विकाशा बिनु विश्वास न ज्ञान प्रकाशा
काण्ड त्रितय यद्यपि भन वेदा मिटत न ज्ञान विना भव खेदा
वेदोदित यागादिक धर्मा कर्मकाण्ड भन मुनि सत्कर्मा
नश्वर स्वर्ग सुखद सब कर्मा तीरथ व्रत तप आदिक धर्मा
पुण्यश्लोक सुयश श्रवणादिक अर्चन वन्दन ध्यान जपादिक
भन उपासना शाण्डिल्यादिक क्रम विमुक्ति प्रद जाबालादिक
अथवा देवलोक प्रद एते अथवा कामित कामद एते
यह उपासना काण्ड कहावत नारदादि मुनिवर मन भावत

भन उपासना चारि प्रकारा सुरमर्दन मुनि सनत् कुमारा
भन सम्पदारोप संवर्गा अरु अध्यास नामु मुनि वर्गा
भन उपासना साधक चारी वर्णन जासु करत श्रुति सारी
आर्त और जिज्ञासू नामा अर्थार्थी ज्ञानी अभिरामा
यद्यपि सबहि प्रशंसा भाजन सर्वोत्तम ज्ञानी अति पावन
हम महँ ज्ञानी महँ नहि भेदा ज्ञानी कबहुँ न पावत खेदा
श्रवणादिक साधन तहँ नाना करत जासु निगमादिक गाना
नित्यानित्य विवेक विधाना भन इत उत विराग मुनि नाना
उपरति द्वन्द्व सहन परतीती समाधान आकस्मिक रीती
शम दमादि साधन विधि नाना भाखत आगम निगम पुराना
श्रौत तत्त्वमस्यादि वाक्य जो उपजावत अध्यात्म ज्ञान सो
सोइ ज्ञान अज्ञान निवर्तक परमानन्द प्रवाह प्रवर्तक
सुरहर अद्वैतात्म बोध जो करत पञ्च क्लेशावरोध सो
ज्ञान द्विविध अपरोक्ष परोक्षा करत प्रथम भव बन्धन मोक्षा
ज्ञान काण्ड यश श्रुति गण गावत ज्ञानी ढिग यमराज न आवत
योगी योग करत सुख हेतू सोउ लहत गति खगपतिकेतू
जोऊ सकल साधना हीना सोऊ तरत नाम लवलीना
करत हमार नाम उच्चारण होत तासु भव भीति निवारण
नाम लेत कवनहुँ परकारा सोउ हरे प्रियपात्र हमारा
नाम ग्रहण अघराशि विदारक नाम ग्रहण प्रेतादि निवारक

नाम ग्रहण अगतिक गतिकारक नाम ग्रहण भव अम्बुधि तारक
हम सब महँ काहूकर नामा सन्तत जपत लहत विश्रामा
प्रणमत हमहिँ दीनमति जोई प्रीति पात्र मम मुरहर सोई
अगतिक शरणागत मम जोई प्रीतिपात्र मम मुरहर सोई
कार्तिकेय गणपति नहि तादृश प्रियतम मम सेवक जन यादृश
विमुखबुद्धि हम सबते जोई नहि हतभाग्य तथाविध कोई
कथमपि हम सब कहँ जो सुमिरत सोउ हरे संकट ते उवरत
जगदम्बिका शक्ति हम सबकर तदुपासक हम सबकर प्रियतर
शक्ति विना हम सबहु अशक्ता सकल सिद्धि भाजन तसु भक्ता
विनु गायत्री विप्र अविप्रा तत्प्रसाद कत क्षत्रिय विप्रा
गायत्री प्रसाद भू देवा विप्र करत सुरगण जसु सेवा
हम सब उत्पति थिति हति कारण विप्र प्रसाद शास्त्र निर्धारण
वेदाचार प्रवर्तक भूसुर धारण करहिँ सदैव धर्मधुर
विप्र अविद्य सविद्य कोउ अपि वन्दनीय इति भाखत श्रुतिरपि
सुनि प्रभु वचन दियउ करताली प्रमथादिक अरु सुर मुनि आली
अमरी निकर सुमन बरसायउ साधुसाधु धुनि दश दिश छायउ
नृत्य वाद्यगीतादि भयउ बहु तथा समुत्सव जयधुनि दिशिचहु
नुति नति मुदित करत सब भयऊ नभ विमान संकुल ह्वै गयऊ
प्रभु आयसु लहि सबहि सिधारे जगदम्बा पुनि वचन उचारे
कीदृश हृदयङ्गम रजनीपति समुदित नभ बिच शोभमान अति

दोहा

भासत शशि बिच श्यामता, प्रभु कारण तसु काह ।
कला जासु तव भाल तल, सोहत त्रिभुवन नाह ॥८१॥

सोरठा

भाखे प्रभु मुसुकाय, प्रिया वचन सुनि मुदित अति ।
सुनहु प्रिये मनलाय, समाधान निज पक्ष कर ॥९८॥

चौपाई

राजसूय करि भउ शशि राजा प्रमुदित भयउ समेत समाजा
निज अभीष्ट देव आराधी पायउ द्विजराज्याख्य उपाधी
भयउ विविध विध भोग विलासी शिष्टोचित मर्यादा नासी
प्रिये राजमद सब कहँ होई यह निर्णय जानत सब कोई
सोई मद मालिन्य सरूपा भासित शशि बिच श्यामल रूपा
प्रिये तुम्हार नयन यह हिमकर पायउ परस नील कज्जलकर
सोइ श्यामता शशि बिच सोहत कविजन थाकत उपमा जोहत
कृष्ण वंश उत्पादक हिमकर श्रीकृष्णोपासन महँ तत्पर
जाते ग्राहक ग्राह्य सधर्मा ताते श्यामलता शशि धर्मा
न्याय भृंगगत अत्र निदर्शन एवं प्रश्नोत्तर दिग्दर्शन
पृथ्वी छायादिक कत कारण गिरिजे ज्योतिर्वित् निर्धारण
सुनि गिरिजा अतुलित सुख पावा प्रभु पद पंकज माथ नवावा
कहत भई अति पुलकित गाता शंकर गृहिणी त्रिभुवन माता
सुनि उपदेश विविध विध नाथा भइउँ कृतारथ आजु सनाथा

सुनि शंकर तसु कर गहि लियऊ सुस्मित मुख अवलोकन कियऊ
करि प्रमथादिक ह्व परनामा गउ विश्राम हेतु निज धामा
जननी जगज्जनक अपि दोऊ गउ विश्राम धाम निज सोऊ

छन्द

उमा हर संवाद अनुपम चरित यह जो गाइहैं।
इहामुत्र समस्त सुख लहि परम पद पुनि पाइहैं॥
धर्मशास्त्र रहस्य अवगति करि अबोध नशाइहैं।
जगज्जनता करि सुशिक्षित वेद मत दरसाइहैं॥

श्लोक

यस्यांघ्रि द्वय सेवनाद्रघुपति लंकापनिर्ध्वंसकृत्।
यस्यांघ्रि द्वय सेवनाद्यदुपतिः शाम्बं सुतं लब्धवान्॥
यस्यांघ्रि द्वय सेवनात्कुरुकुलध्वंसश्चकाराजुंनस्।
तं गौरीवरमम्बराम्बर हरं काशीश्वरं संस्मर॥

जटा जूट धारी चिता भू विहारी
गिरीन्द्रात्मजा पाणि पाथोज धारी।
रमावल्लभ प्रेम पात्रं पवित्रं
प्रभुः प्रीयतां प्रीयनां दीनबन्धुः॥
भजेऽहं भवं भावगम्यं भविष्णुं
हरं शंकरं मारुताहार हारम्।
महाताण्डवाडम्बरं नृत्यमानं
महा शक्तिभिर्गीयमानं समन्तात्॥

यस्यस्मरण मात्रेण विघ्नौघः प्रविलीयते
तस्य जन्मप्रदातारं भजेऽहं साम्बमीश्वरम् ।
सकलं निष्कलं वन्देऽनेकमेकं सदाशिवं
चतुर्थं शान्तमीशानं श्रुतयःप्रवदन्ति यम् ॥

इति उपदेशकाण्डं समाप्तम् । शुभमस्तु । श्रीरस्तु ।

* शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु *

अथ कैवल्य काण्डम्प्रारभ्यते

दोहा

श्रीगुरु पद पंकज उमा, उमानाथ पद पद्म ।
प्रणमि कहौं कैवल्य पद, अतुलित सुख शुभ सद्म ॥१॥

सोरठा

जो पद परम निगूढ़, जहाँ न मानस वचन गति ।
विद्याहीन विमूढ़, कथन तासु कस करि सकौं ॥१॥
संशय उदय न होत, तद्यपि मनमहँ तनिक अपि ।
करत विश्व उद्योत, मति विद्योतक सोइ मम ॥२॥
जिमि बालक निर्बन्ध, मातु पिता पूरित करत ।
तिमि मम वचन प्रबन्ध, अवशि पूरिहैं साम्बशिव ॥३॥
अति संक्षिप्त सरूप, सार भाग श्रुति निकर कर ।
लक्षण मति अनुरूप, कहौं तासु सुर भाषया ॥४॥

श्लोक

कैवल्यं केवली भावो ब्रह्ममात्र तया स्थितिः
मिथ्यारोपापवादेन प्रोच्यते निगमेन यत्
आरोपो ब्रह्म निष्ठोयं प्रपञ्चो जागतो मतः
ब्रह्मण्ये वापवादोयं प्रपञ्चाभानमुच्यते

सर्पारोपो यथा रज्जौ जायते भ्रमसंभवः
अपवादश्च तत्रैव तस्या भावस्प्रबोधतः
जायते जगतारोप आत्मन्यज्ञानसंभवः
तस्मिन्नेवापवादोयं विद्यया तदभानतः

छन्द

सुनि पुरञ्जन परम हर्षित भयउ गुरु वचनामृतम् ।
सकल आगम निगम दर्शन विद्वदनुभव अनुसृतम् ॥
काण्ड परिणय रुचिर लीला मधुर उपदेशात्मकम् ।
श्रवण करि पूछत भयउ पुनि मोक्ष कैवल्यात्मकम् ॥

चौपाई

सुनि गुरुवर अतुलित सुख पायउ हर्ष अश्रु नयनन भरि आयउ
भउ सुसमृति पथ केवल भावा जहाँ अकिञ्चित् काल प्रभावा
सच्चित् सुखमय ब्रह्म सरूपा सोइ सदाशिव देव अरूपा
किञ्चन द्वैताद्वैत विहीना कवि लेखनी होत जहँ दीना
भन केवल कैवल्य अभिन्ना मुक्त मुक्तिपद वस्तु न भिन्ना
शिवहिं चतुर्थ सकल श्रुति गावत धाम चतुर्थ तथैव सुनावत
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति न जहँमा बुद्धि वृत्तिकर पहुँच न तहँमा
सोइ ब्रह्मपद शिवपद सोई धाम चतुर्थ कहावत सोई
शान्ति रूप सो जानहु ताता पद निर्वाण सोइ विख्याता
मनोवेग उद्वेग शमन जहँ नहि सम्भव रागादि गमन जहँ
अहंकार ममता जहँ नाहीं अद्वय थिति प्रसिद्ध श्रुति माहीं

जिमि दीपक निर्वाण पवन कृत तिमि प्रपञ्च निर्वाण ज्ञान कृत
भन निर्वाण शान्ति पर्याया अवगत श्रुति रहस्य मुनिराया
जों कैवल्य सोइ अद्वय थिति विदित सोइ निर्वाण शान्ति इति
विस्मृत जगज्ञाल यदवस्था पद कैवल्य विदित तदवस्था
आजीवन पुनि पुनि व्युत्थाना अनुत्थान थिति तनु अवसाना
आजीवन भन जीवन्मुक्ती जीवन अन्त विदेह विमुक्ती
पद कैवल्य विदेह विमुक्ती एकार्थक गावत श्रुति उक्ती
नित्यानन्द प्रवाहाकारा पद कैवल्य सकल सुख सारा
जन्म जन्म करि यत्न अनेका पद पावहिँ यह लब्ध विवेका
जन्म जन्म करि सुकृति अनेका लहै कोइ अध्यात्म विवेका
ईश कलित ब्रह्माण्ड अनेका 'स ऐक्षत' इति वचन विवेका
जीव कलित सौप्तिक संसारा साक्षी तात अत्र जग मारा
जीव वासना वासित सुप्ती विश्व ईश वासित इति उक्ती
वस्तु शून्य जिमि स्वप्न अवस्था शून्य वस्तु तिमि विश्व व्यवस्था
आविद्यकी स्वप्न थिति जैसे भन मायिकी विश्व थिति तैसे
आत्म मात्र सत्ता सब ठामा पद कैवल्य सोइ अभिगमा
त्रैकालिकी महेश्वर सत्ता पद कैवल्य तदन्य असत्ता
ब्रह्म महेश्वर एक पदारथ वेदगम्य यह वस्तु यथारथ
विधि हरि रुद्र महेश्वर जन्या जानत यह रहस्य अजघन्या
आ ज्ञानोदय त्रिभुवन भाना आ प्रबोध जिमि सौप्तिक ताना
यद्यपि दृग्पथ गत सब भाना ज्ञानी जानत स्वप्न समाना

यद्यपि पश्चिम दिगुदित इव रवि तदपि मानत पूर्वोदित कवि
भ्रम मूलक यह त्रिभुवन भाना मरुमरीचि जल वीचि समाना
तृष्णाकुल जिमि मृग गण नाना तृष्णाकुल तिमि मूढ़ अजानां
सकल वासना विरहित मन जब होत मुक्ति कैवल्य लाभ तब
यद्यपि ब्रह्म अभिन्न जीव जत तदपि मायया भ्रमत विषय रत
अघटित घटना पटुतर माया काहि न नाना नाच नचाया
विष्णु विरञ्चि रुद्र सनकादिक देवराज गुरु हिमकर आदिक
माया कामादिक आयुध गहि सबहिँ नचावत अवसर लहि लहि
कामादिकरिपु विजय न जबलगि पद कैवल्य दूर थित तब लगि
रजस्तमोमय कामादिक सब होत पराजित सत्त्व उदय जब
सदाचार सद्गुरु सत्संगति सत्त्व प्रधान देवता अनुरति
सत्त्व उदयकर कारण नाना दिग्दर्शन करि कछुक बखाना
सत्त्व उदयकर वारण कारण सत्त्वाश्रय इति श्रुति निर्धारण
सत्त्व समाश्रय सत्त्व निवारक निगमादिक एतन्निर्धारक
सत्त्वहिँ कहत प्रकाशक वेदा तमोधर्म आलस अरु खेदा
रजोधर्म उद्यम उत्साहा भाखत व्यासादिक मुनि नाहा
ज्ञान विरति प्रद सत्त्वहिँ गावत ताते सत्त्वहिँ सत्त्व दुरावत
एवंविध जब त्रिगुण पराजय होत जीव यह अमर अनामय
त्रिगुण पराजय जबहि पुरञ्जन होत तबहि माया मद गञ्जन
माया मद गञ्जन थिति जोई भन कैवल्य मुक्ति श्रुति सोई
त्रिगुण अभाव अवस्था जोई निर्गुण ब्रह्म सदाशिव सोई

निर्गुण ब्रह्म पुरञ्जन जोई भन कैवल्य मुक्ति मुनि सोई
सत्त्व रजस्तम विरह धाम जो उदासीनता शान्ति नाम सो
उदासीनता शान्ति नाम जो पद कैवल्य विशुद्ध धाम सो
उदासीनता समता नामा एकाथक भाखत मुनि ग्रामा

दोहा

योगार्थक समता विदित, उपनिषदादिक माहिँ ।
समतावस्थित विरल जन, मुक्त बन्ध होइ जाहिँ ॥२॥

सोरठा

समतावस्थित जीव, सुख दुख जानहिँ एक सम ।
तदुपरि श्यामलग्रीव, करहिँ कृपा करुणायतन ॥८॥

चौपाई

समता थिति उत्थित जब ताता होत न रागादिक आघाता
चित्त निरोध यदपि तहँ नाहीँ उद्वेगज दुख नहि मन माहीँ
उद्वेगज दुख यदि अनुपस्थित योगज सुख अञ्जसा उपस्थित
दुःखाभाव मात्र भन मुक्ती जिनहिँ अनवगत उपनिषदुक्ती
ब्रह्म सच्चिदानन्द सरूपा श्रुति प्रसिद्ध तसु खण्डन रूपा
मन वच काय वृत्ति अवरोधा श्वासादिक मारुत गति रोधा
अकथनीय सुख उत्थित जोई जानि न सकत तर्क बल कोई
नहि जहँ लौकिक दुख संस्परसा कैवल्याख्य सोइ सुख सरसा
धर्म मेघ कैवल्य नाम भन हर्ष प्रवर्षण हेतुक मुनिजन
जब निर्वेद होत मन माहीँ रुचि शब्दादि विषय बिच नाहीँ

तुच्छीभूत विषय सुख जबही आविर्भूत आत्मसुख तबहीं
आविर्भूत आत्मसुख जबही बिसरत विषम विषय दुख तबही
बिसरत विषम विषय दुख जबही होत स्वरूपावस्थिति तबही
सच्चित् सुखमय दशा तुरीया अननुभूत जहँ थिति परकीया
स्वानुभूत सुख मात्र प्रवाहा मिटत विश्व अम्बुधि अवगाहा
किमपि वस्तु मन वचन अगोचर वत्स सोइ पुरहर शिव शंकर
सगुण अगुण महँ कछुक न भेदा वस्तु भेद नहि भाखत वेदा
भक्त अनुग्रह कारण एहू सगुण कल्पना नहि सन्देहू
जिमि अदृश्य पावक अरणी महँ विकसत तिमि निर्गुण धरणी महँ
सकल चराचर विग्रह भौतिक विग्रह दिव्य सदैव अभौतिक
पद कैवल्य सदाशिव सोई सर्वेश्वर परमेश्वर जोई
को कहि सकत महेश्वर महिमा जहाँ अकिञ्चित् कर गुरु गरिमा
पद कैवल्य सदाशिव कैसे असमञ्जसता भासत ऐसे
अधिष्ठान अरु अधिष्ठेय जो उभय एकता मानि सकत को
ताते उभय पदार्थ अनेका सहि न सकत अस उक्ति विवेका
वत्स द्वैत दूषित कस नाहीं अस अद्वैत लखहु मन माहीं
अधिष्ठान अरु अधिष्ठेय जहँ रहि न सकत अद्वैत भाव तहँ
लोक निदर्शन युक्त न तहँमा वत्स अलौकिक वर्णन जहँमा
निराधार अरु निराकार महँ थित आधाराधेय भाव कहँ
सकलाधार ब्रह्म पद जोई तदाधार कस कहि सक कोई
जिमि चैतन्य विदित तसु नामा तिमि कैवल्य नाम अभिरामा

भन आनन्द ब्रह्म श्रुति नाना नहि आनन्दित शब्द विधाना
द्वैत गन्ध अपि श्रुति नहि मानत अद्वयगत तिमि मुनि अनुमानत
नहि कैवल्य भाव तहँ कथमपि द्वैतभाव जहँ करत परस अपि
जत व्यवहार और प्रतिभासा जानहु मायिक खेल तमासा
जिमि गन्धर्वनगर मायामय तिमि व्यवहार दृश्य मायामय
मरु मरीचि जल जिमि मिथ्यामय तिमि प्रतिभास दृश्य मिथ्यामय
चन्द्र द्वितय दर्शन जिमि मिथ्या यह ब्रह्माण्ड दृश्य तिमि मिथ्या
स्वप्न दृश्य जिमि वत्स अलीका सकल दृश्य तिमि इति कवि टीका
जगज्जाल जञ्जाल अभावा पद कैवल्य प्रबोध प्रभावा
सच्चित् सुखमय केवल भावा व्यापक ब्रह्म सकल श्रुति गावा
सोइ सदाशिव नाम प्रसिद्धा शश्वत् कल्याणात्मक सिद्धा
जो मृत्युञ्जय नाम प्रसिद्धा कल्याणात्मक तात सुसिद्धा
स्रष्ट रहस्य जानत जन कोई यदुपरि कृपा शांकरी होई
सहधर्मिणी जासु गिरिकन्या आदि शक्ति जगदम्बा धन्या
गणपति षण्मुख बालक जासू इन्द्रादिक अनुचर इव जासू
भृत्य वामदेवादिक जासू को कहि सकत महातम तासू
यद्यपि निर्गुण रूप सदाशिव लीला करहिँ तथापि सगुण इव
भक्त समुद्धारण कारण प्रभु विग्रह धारण करहिँ दिव्य विभु
धरहिँ स्वेच्छया नाना रूपा व्यक्ताव्यक्त सरूप अरूपा
सर्वशक्तिमत्ता जसु गावत श्रुति कथमपि न इयत्ता पावत
ज्ञान क्रिया बल शक्ति प्रसिद्धा नैसर्गिकी विभेद असिद्धा

आपुहिँ शक्तिमान अरु शक्ती शक्ति निमित्त न द्वैत प्रसक्ती
अति आश्चर्य रूप प्रभु रीती जानि सकत जो करत प्रतीती
इच्छा करत सृजत संसारा यथापूर्व नहि लागत बारा
नहि इच्छा इच्छुक महँ भेदा लोक प्रसिद्ध न भाखत वेदा
साधन विरहित साध्य प्रसाधक कोउ न जासु समिच्छा बाधक
अनायास ब्रह्माण्ड बनावत पोषत नाशत श्रुति अस गावत
माया मात्र चरित सब एहू लीला नाटक नहि सन्देहू

दोहा

लीला नाटक सूत्रधर, श्रीशंकर स्वयमेव ।
अन्तर्हित सब दृश्य यह, बहुरि युगान्त स एव ॥३॥

सोरठा

जैवी दशा सुषुप्ति, दशा ऐश्वरी प्रलय थिति ।
जन्म जरा मृति गुप्ति, ब्राह्मी थिति कैवल्य पद ॥८॥

चौपाई

इन्द्रिय मनोवृत्ति जहँ नाहीँ केवल तामस गुण जा माहीँ
दशा सुषुप्ति सोइ श्रुति गावत शास्त्र पुराण तथैव बुझावत
प्रापञ्चिक व्यवहार विरामा थिति युगान्त भाखत मुनि ग्रामा
माया मात्र युक्त यदवस्था सो युगान्त इति वेद व्यवस्था
उपरत जहँ औपाधिक धर्मा यदा अकिञ्चित् कर कृत कर्मा
निरवधि सुख नीरधि यदवस्था ब्राह्मी थिति इति वेद व्यवस्था
यदि सुषुप्ति तम विरहित होई ब्राह्मी थिति जानहु तुम सोई

यदुपरि कृपा शांकरी होई ईदृश अवस्थान लह सोई
सत्त्व गुणोदय थिरतर जासू नहि अलभ्य ईदृक् थिति तासू
वत्स सत्त्व उत्पादन साधन गौरी गौरीवर आराधन
आदि शक्ति त्रिगुणा शिव जाया माया मायी त्रिभुवन राया
उभय चरण सरसीरुह सेवा करि माया विमुक्त नहि केवा
जगदम्बिका प्रसाद प्रभावा सत्त्व गुणोदय सुखमय भावा
मायापति प्रसाद जब ताता दूरीभूत त्रिगुण उत्पाता
निर्गुण थिति ब्राह्मी थिति जोई पद कैवल्य कहत श्रुति सोई
कर्ता कारयिता प्रेरयिता मायी प्रभु माया जसु दयिता
दारु पुत्तली सम सब जीवा सबहिं नचावत श्यामल ग्रीवा
नहि कर्ता अरु भोक्ता जानत आपुहिं निरुपाधिक चिति मानत
लहि विश्राम शान्ति निर्भारा रुद्ध निरन्तर मानस धारा
अकथनीय आनन्द प्रवाहा निरवधि सुख नीरधि अवगाहा
सोइ परम पुरुषारथ नामा पद कैवल्य कहत श्रुति ग्रामा
विद्युदग्नि रवि चन्द्र विकाशक ऋतम्भरा प्रज्ञा परकाशक
चिन्मय चिदाकाश चिद्रूपा सर्व सरूप विरूप अरूपा
करुणा वरुणालय सुखधामा चञ्चच्चन्द्र भाल अभिरामा
मानत जिनहि अगुण विज्ञानी मानत सगुण द्वैत अभिमानी
सेव्य रूप सेवक जन मानत स्वात्म रूप ज्ञानी पहिचानत
लक्ष्य एक जिमि वाण अनेका मार्ग अनेक गम्यथल एका
सकल जलाशय अम्बुधि जैसे सकल साधनाश्रय प्रभु तैसे

यदि अविराम गमनकर कोई अवशि गम्य थल पहुँचत सोई
अगुण सगुण महँ कछुक न अन्तर यदि अभेद भावना निरन्तर
भेदाभाव समाश्रय जोई पद कैवल्य कहत श्रुति सोई
केवलता महँ भेदभाव कस नहि व्यावृत्ति पदार्थ घटत अस
इतर वस्तु व्यावर्तक जोई केवल भाव कहत सब कोई
भेदाभेद एक थल कैसे निशिवासर एकत्रित जैसे
त्रिविध भेद विरहित जो कोई अद्वय चिति केवल थिति सोई
माया ब्रह्म सदाशिव सोई ईश्वर जीव कहावत सोई
विधि हरि रुद्र सुरासुर सोई नाना विध सचराचर सोई
देश काल कृत भेद न जाको वस्तु मात्र कृत भेद न जाको
स्वगत भेद अपि जाको नाहीं पद कैवल्य विदित श्रुति माहीं
केवल केवल भाव जथारथ तदितर सकल अलीक पदारथ
असदपि सदिव मायया भासत ज्ञानोदय अलीक अवभासत
अचला भूमि चला इव ताको भासत मद्य महामद जाको
मद्य महामद व्यपगत जबही अचला अचला भासत तबही
व्यपगत होत अविद्या जबही जगत असत्ता भासत तबही
आदि अन्त अव्यक्त पदारथ मध्य व्यक्त अपि असत जथारथ
प्रलयोत्तर अव्यक्त जगत यह श्रुति सदेव सौम्येति तथा कह
सृष्टि पूर्व अव्यक्त जगत यह श्रुति एकोहं इत्यादिक कह
पिता पुत्र पौत्रादिक जेते दीखत आदि अन्त नहि तेते
अघटित घटना पटुतर माया वैभव अद्भुत जगत बनाया

बिन्दु मात्र जल निर्मित काया ता महँ बुद्धि विकास समाया
ता महँ त्रिगुणमयी कृत लीला वर्णत कविजन मति अति ढीला
लघुतर बीज महा तरु होई यह अचरज देखत सब कोई
फूलत फलत समय अनुसारा समयोचित समस्त व्यवहारा
नियमित अन्धकार उजियारा नियमित रूप सकल संसारा
नहि प्रत्यक्ष कोउ तसु कर्ता भर्ता प्रतिदिन पुनि संहर्ता
कहत प्रकृति कृति पण्डित कोऊ तत्त्व यथार्थ न जानत सोऊ
प्रकृति स्वभाव शब्द पर्याया भन शाब्दिक नाना मुनि राया
रहत निराश्रय प्रकृति न कबही करहिं व्यवस्था अस मुनि सबही
स्वीय भाव इत्यर्थक भावा व्युत्पत्या निष्पन्न स्वभावा
विना स्वभावी वास स्वभावा रहिं न सकत इति नियम प्रभावा
सर्वशक्तिमत्ता जसु गावत मुनिजन अरु श्रुति निकर सुनावत
सर्वशक्ति सेवित शिव जोई मायी माया अधिपति सोई
सहज ज्ञान बल कृति अभिधाना शक्ति त्रितय जसु वेद बखाना
सोइ स्वभावी प्रकृति प्रवर्तक कबहुँ कृपा करि तासु निवर्तक
प्रकृति निवृत्ति अवस्थिति जोई ब्रह्म मात्र निष्क्रिय थिति जोई
केवल सच्चित् सुख थिति जोई पद कैवल्य कहत श्रुति सोई
सर्वं खलु इति वैदिक वानी ब्रह्म केवली भाव बखानी
वस्तु मात्र यदि ब्रह्म अभिन्ना कीदृश वस्तु वत्स तद्भिन्ना
नहि तद्भिन्न वस्तु यदि कोई पद कैवल्य प्रमाणित सोई
इतर भान मायामय मानहु स्वप्न वासनामय सम जानहु

माया मय महँ मिथ्या इति मति   उपजावत मानस विशुद्धि अति
मानस शुद्धि होत जब ताता   त्रिभुवन ब्रह्ममात्र दरसाता
ब्रह्म मात्र दर्शन थिति जोई   पद कैवल्य कहत श्रुति सोई
सुदृढ़ भावना उपजत जबही   भावित वस्तु दृष्टिगत तबही
कामुक जनहिँ कामिनी दर्शन   वत्स पुरञ्जन अत्र निदर्शन
साधक जनहिँ साध्यपद दर्शन   वत्स पुरञ्जन अत्र निदर्शन
योगी जनहिँ परम गुरु दर्शन   वत्स पुरञ्जन अत्र निदर्शन
दृग् दृश्यैकरूपता दर्शन   ज्ञानोदय थिति अत्र निदर्शन
एवंविध ज्ञानोदय थिति जो   भन श्रुति कैवल्यावस्थिति सो
अगम अनाम अधाम असीमा   यद्वर्णन महँ मुनि मति धीमा
बिन्दुमात्र ब्रह्माण्ड समाश्रय   अनाकार अविकार अनाश्रय
जहाँ न भूत भौतिकी बाधा   स्वयंसिद्ध समरस निर्बाधा
अद्भुत रूप अनूपम जोई   नहि तर्कावकाश जहँ कोई

दोहा

प्रति शरीर सर्वत्र थित, जीव ईश खग युग्म ।
व्यवधायक माया विभव, विरहित युग्म अयुग्म ॥४॥
तत्त्वमसीत्यादिक विविध, महावाक्य प्रतिपाद्य ।
अद्वयता थिति सुगति यह, सूक्ष्म बुद्धि सम्पाद्य ॥५॥
तत्त्वम्पद प्रतिपाद्य युग, वाच्य ईश अरु जीव ।
ब्रह्म लक्ष्य इह अनुपहित, निर्मल श्यामलग्रीव ॥६॥

सोरठा

असि पदकृत एकत्व, औपनिषद सिद्धान्त अस।
विरल व्यक्ति यह तत्त्व, जानत शंकर प्रेम बल ॥७॥
अद्वय थिति यह उक्त, उपनिषदादिक ग्रन्थ महँ।
पावत जीवन्मुक्त, पद केवल यह ज्ञान बल ॥८॥

चौपाई

धावक पाचक अरु अध्यापक तार्किक रत्नतत्त्व अनुमापक
परिहरि धर्म विरुद्ध एक जिमि त्यागि वाच्य गुण एक ब्रह्म तिमि
सकल धर्म माया परिकल्पित अद्वय ब्रह्म अमाय अकल्पित
निर्विशेष निर्गुण थिति सोई केवल पद जानत जन कोई
सोइ सदाशिव सोइ ब्रह्मपद द्विपद चतुष्पद अपद निरापद
शिव कल्याण शब्द एकार्थक निःश्रेयस पद विदित तदर्थक
मुक्त्यर्थक निःश्रेयस शब्दा परमानन्द प्रवर्षक अब्दा
नित्य मुक्त अद्वैत सदाशिव मायाँ भासित सगुण देव इव
सर्वदैव कल्याण सरूपा शत्रु दमन थल दारुण रूपा
यदि अनुपम रस अमृत पिपासा सेवनीय शिव परिहरि आसा
यदि प्रेमामृत पान पिपासा सेवनीय शिव परिहरि आसा
इहामुत्र यदि भोग दुराशा सेविय शिव तजि परिजन आशा
उक्तानुक्त सुखेच्छा जाको पूज्य पूज्य पद शंकर ताको
उक्त विविध पूजन परकारा कहौं कछुक निजमति अनुसारा
अन्तरंग बहिरंग भेदकृत भन पूजन द्वैविध्य वेदवित

प्रतिमादिक पूजन बहिरंगा आत्मयजन अभ्यन्तर अंगा
जल पुष्पादि बाह्य उपचारा ध्यान मात्र अन्तर उपहारा
यदि अभ्यन्तर पूजन पटुता वृथा बाह्य पूजन श्रम कटुता
हेतु लोकसंग्रह अपि कोऊ करै बाह्य कृति वृथा न सोऊ
काम्य कर्म अपि सात्त्विक जोई यदि न फलेच्छा पावन होई
सकल भूत महँ शंकर स्वामी घट घट व्यापक अन्तर्यामी
जलगत थलगत अतलादिकगत अन्तरिक्षगत अमरपुरीगत
भुवन चतुर्दशगत त्रिपुरारी एकाकार विविध तनु धारी
ईदृङ्मति जनता हितकारी प्रिय भाषी अरु प्रिय आचारी
तादृश आत्मयजन नहि दूजा तादृश अपर न प्रतिमा पूजा
भयउ कछुक प्रासंगिक वर्णन करहु वत्स पुनि प्रकृताकर्णन
व्यापक चिन्मय एकाकारा निराधार थित सकलाधारा
घट उपहित प्रतिबिम्ब अनेका भग्नोपाधि बिम्ब रवि एका
वपु उपहित चैतन्य अनेका पुनि चैतन्य अनुपहित एका
थूल सूक्ष्म अरु कारण देहा विदित उपाधि न कछु संदेहा
शीर्ण शरीर शरीरी एहू होत ज्ञान बल विगत सिनेहू
निरुपाधिक चैतन्य मात्र जब सिद्ध केवली भाव होत तब
कर्म निबन्धन श्रुति भन देहा क्षीण कर्म जन होत विदेहा
होत कर्मक्षय ज्ञान प्रभावा तबहि उपस्थित केवल भावा
ईश्वरोस्ति इति आस्तिक मति जो कहत परोक्ष ज्ञान श्रुति तति सो
ईश्वरोस्मि इति आस्तिक मति जो भन अपरोक्ष ज्ञान श्रुति तति सो

प्रथम ज्ञान लौकिक सुख साधक ज्ञान द्वितीय जरा मृति बाधक
इन्द्रियादि सञ्चालक जोई तद्विभिन्न चैतन्य न कोई
नहि प्रतिबिम्ब बिम्ब महँ भेदा चिदाभास चिद्रूप अभेदा
जीव ईश थिति माया कल्पित भन तदैक्य थिति ब्रह्म अकल्पित
जीव ईश एकत्व विचारा भन अपरोक्ष ज्ञान श्रुति सारा
अहम्ब्रह्म इति वारंवारा करत विचार मिटत संसारा
जीव निरिन्द्रिय करत न कर्मा अहंकार कृत धर्म अधर्मा
परसत धर्म अधर्म न ताको अहंकार ममता नहि जाको
अप्राणोह्यमना इत्यादिक वचन निराकृत चिति चलनादिक
औपाधिक सब धर्म अधर्मा अचल जीव करि सकत न कर्मा
निज निज विषय निरत इन्द्रिय मन एतादृश मति ज्ञान भूमि भन
निज कृति करत प्राण आदिक इति एतादृश मति ज्ञान भूमि थिति
नाहं कर्ता भोक्ता इति मति उपजत करत करत साधन अति
मनवचकाय क्रियाविरहित चिति निज सरूप इति मति केवल थिति
सच्चित् सुखमय निज अनुभूती सोइ ब्रह्मपद विपुल विभूती
पद कैवल्य सोइ विख्याता पावत कोइ विरल विज्ञाता
नाहमस्मि किञ्चन चिद्भिन्ना ब्रह्म अस्मि प्रत्यक् चिदभिन्ना
सुदृढ़ भावना इत्याकारा करत भावुकहिं ब्रह्माकारा
ब्रह्माकार केवली भावा एकार्थक निगमागम गावा
परिहरि देहेन्द्रिय अभिमाना निरभिमान जन ब्रह्म समाना
निरभिमान थिति निर्मल परचिति एक पदारथ भाखत श्रुति इति

ज्ञान मात्र निर्वृत्तिक थिति जो स्वसंवेद्य पद केवल थिति सो
स्वयंसिद्ध सर्वात्म स्वरूपा सोइ केवली भाव अरूपा
ततोऽन्यदार्तमादि श्रुति बानी दृश्य स्वप्न सम अनृत बखानी
दृश्य अनित्य असत्य असिद्धा क्षणभंगुर श्रुति शास्त्र प्रसिद्धा
केवल दृक्सत्ता अवशिष्टा भन कैवल्य मुक्ति मुनि शिष्टा
सो विशिष्ट अवशिष्ट इष्ट पद सोइ शिष्ट जन कहहिँ निरापद
सोइ सदाशिव शशि अवतंसा मुनिवर–हृदय–सरोवर–हंसा
पद कैवल्य सदाशिव शंकर एक पदारथ साधु शुभंकर
केवल अरु कैवल्य एक कस एक गगनमणि और गगन कस
जाग्रत आदि अवस्था जहँ तहँ चिदाकार उद्घुष्ट तन्त्र महँ
सुखमय थिति कैवल्य प्रसिद्धा सुखमय थायी शिव श्रुति सिद्धा
सुखमय थिति अरु सुखमय थाई नहि अनेकता इनमहँ भाई
यह रहस्य जानत जन सोई जापर कृपा शांकरी होई
यह सन्देह निराकृति ताता प्रथमहिँ भउ न तोहि अज्ञाता
ब्रह्म अस्तिता प्रथम उपस्थित ब्रह्म अस्मिता पुनि समुपस्थित
पुनरपि किमपि अनिर्वचनीयं स्वानुभूति पद अति कमनीयं
ब्रह्म सच्चिदानन्द मात्र जो सुर दुर्लभ पीयूष पात्र जो
जगदम्बिका प्राणपति सोई सचराचरपति पशुपति सोई
केवल पद केवल पद पति सो काशीपति अगतिक गतिमति सो
निर्गुण सगुण निराकृति साकृति करहिँ सोइ भव बन्ध अपाकृति
निर्गुण देव अलभ्य न ताको महादेव पद अनुरति जाको

विदित दुःखमय निर्गुण साधन सुखमय महादेव आराधन
भक्ति विना नहि ज्ञान विकासा नहि बिनु ज्ञान मुक्ति पद आशा
भक्त न ब्रह्मादिक पद इच्छुक भक्त न चतुर्वर्ग फल भिक्षुक
वितरत भक्ति तथापि विमुक्ती अनभिलषित अपि बहु विध भुक्ती
गोपद इव भव सागर ताको प्रेम रसास्वादक हिय जाको
प्रेमाम्बुधि निमग्न मन जाको विसरत तन मन धन जन ताको
गद्गद गल रोमाञ्चित गाता लोल नयन हर्षाश्रु निपाता
सौन्दर्यौदार्यादिक गुणमय सुमिरत प्रभुहिँ रुकत मानस रय
त्रुटित पक्ष खग इव मन जबही निर्वृत्तिक सुख उपजत तबही
सहजानन्द मात्र अनुभूती जहँ अगण्य अणिमादि विभूती
दंश मशक वृश्चिक समुपद्रुत लहत परम सुख यदि अनुपद्रुत
चञ्चल चित्त उपद्रुत लोका रुद्ध मनोगति होत विशोका
मनोरोध कृत प्राण निरोधा प्राणरोध कृत मनो निरोधा
यह प्रसंग जानत जन सोई योगादिक साधन रत जोई
अविमुक्त्यादिक सेवक जोऊ यह रहस्य जानत जन सोऊ
दृष्टि निरोध पवन अवरोधा पवन निरोध मनोगति रोधा
दृष्ट्यादिक त्रयगति अवरोधक करि अभ्यास मनोमल शोधक
उक्त त्रितय महँ इक अवरोधा करत युगल अवशिष्ट निरोधा

दोहा

पर विराग अभ्यास बल, चित्तवृत्ति अवरोध ।
उपजावत सुख सहज पुनि, होत विलक्षण बोध ॥७॥

सोरठा

बिसरि जात संसार, लहि असीम सुख स्वात्मगत ।
भासत परम असार, क्षणभंगुर विष इव विषय ॥९॥

चौपाई

अति प्रिय आत्ममात्र आभासा अति अप्रिय प्रपञ्च नहि भासा
केवल आत्मअवस्थिति एहू पद कैवल्य शिथिल सकलेहू
जिमि अव्यक्त अग्नि अरणीगत घर्षणकृति व्यक्तीकृत धधकत
तथा अनवगत ब्रह्म अखण्डा चिन्मय अवगत भरि ब्रह्मण्डा
होत ज्ञान कृत अवगति एहू चिद् व्यापित सचराचर देहू
करि श्रवणादिक उपजत ज्ञाना आगम निगम पुराण प्रमाना
चिदतिरिक्त यत्किञ्चित् भाना मायाकलित अलीक बखाना
भन चिदेव केवल सद् वस्तू वत्स केवली भाव तदस्तू
निरवधि सुखनीरधि चित्सत्ता ज्ञानी जीव लहत जब तत्ता
यथा बिम्ब प्रतिबिम्ब एकता अपगत औपाधिक अनेकता
तिमि उत्थित जीवेश एकता गत औपाधिक तदतिरेकता
सुखमय ज्ञान मात्रकर भाना पद कैवल्य तदेव बखाना
जलगत सैन्धव पिण्ड यथा जल चिदाभास चिद्गत चिन्निर्मल
विगत अविद्या मल अति निर्मल चिदाभास चिद्रूप ज्ञान बल
सोइ केवली भाव अवस्था अस निगमागम उक्त व्यवस्था
नाना नदी सिन्धु महँ जाई बनत सिन्धु निज नाम बिहाई
चिदाभास स्वाराज्य लहत तव अहं ब्रह्म भावना करत जब

अहंकार ममता परिहरई भेद भावना हृदय न धरई
संसृति बिसरि सुमरि निज रूपा जीव रूप यह होत अरूपा
जब स्वकीय परकीय न कोई उदासीन अरि मित्र न कोई
भासत राजा रंक समाना भासत कञ्चन काच समाना
कठपुतली कामिनी समाना स्वन्न कदन्न निरन्न समाना
सुमनमाल अहिमाल समाना कुसुम सेज पाषाण समाना
चन्द्र किरण रविकिरण समाना निन्दा नुति नति अनति समाना
जहाँ न द्वैत वस्तुकर गन्धा पद कैवल्य सोइ निर्गन्धा
सब मिष्टान्न, इक्षु रस जैसे सकल प्रपञ्च ब्रह्म रस तैसे
सकल पुष्प रसमय मधु जैसे सकल दृश्यमय स्रष्टा तैसे
वस्तु अभिन्न कुसुमरस मधुजिमि एकीभूत दृश्य द्रष्टा तिमि
मृद् विभिन्न मृद्भाण्ड न जैसे कञ्चन भिन्न कटक नहि जैसे
वारि विभिन्न तरङ्ग न जैसे ब्रह्म विभिन्न विश्व नहि तैसे
नाम रूप नाना विध जो जो माया भासित जानहु सो सो
होत ज्ञान भानूदय जबही बिनसत माया भ्रमतम तबही
स्वप्नोपम जानहु यह जगती क्षणभंगुरा सर्वदा असती
ब्रह्म सत्य अरु विश्व असत्या जानत ज्ञानी श्रुति अनुमत्या
ब्रह्म जीव नहि वस्तु अनेका अस प्रतीति लहि आत्म विवेका
इत उत जत तत केवल ब्रह्मा वत्स अलीक पदार्थ अब्रह्मा
भासमान मिथ्या यह सबही रहत न कछुक प्रलय थिति जबही
मनोराज्य विरंचत कत नगरी शक्ति राज्य कृत संसृति सगरी

आत्मराज्य मोक्षामृत गगरी नहि गुरु बिनु दीखत यह डगरी
मनोराज्य जिमि मनःप्रकल्पित शक्ति राज्य तिमि माया कल्पित
एवंविध विवेक उपजत जब स्वप्नोपम प्रपञ्च भासत तब
स्वप्नभान जिमि जीव मनोमय विश्वभान तिमि ईश शक्तिमय
जब हिय उपजत सूक्ष्म विचारा भासत सब संसार असारा
केवल ब्रह्म भान अस जोई पद कैवल्य कहावत सोई

छन्द

सुनि पुरञ्जन परम हर्षित बहुरि अस भाखत भयो ।
होत समसत्ताक कारण कार्य यह मत नहि नयो ॥
कनक भिन्न न होत कुण्डल मृद्भिन्न घटादिकम् ।
नहि अनैक्षव शर्करादिक नहि असूत्र पटादिकम् ॥
ब्रह्म निर्गुण विश्व कारण कार्य विश्व गुणात्मकम् ।
ब्रह्म चिन्मय अरु निरामय विश्व जड़ असुखात्मकम् ॥
उभयगत असमान सत्ताकत्व अस असमञ्जसम् ।
कहिय करुणानिलय गुरुवर यथा होय समञ्जसम् ॥

दोहा

सुनत प्रश्न भउ हृष्ट अति, गुरू निरञ्जन नाम ।
समाधान तत्पर भयउ, सुमिरि शम्भु अभिराम ॥८॥

सोरठा

जासु कृपा लव पाय, होत सविद्य अविद्य जन ।
जो असहाय सहाय, दीनबन्धु सुखसिन्धु प्रभु ॥१०॥

चौपाई

उपादान कारण महँ ताता सम सत्ताक भाव दरसाता
मृत्काञ्चन सूत्रादिक जेते उपादान कारण श्रुत तेते
वत्स निमित्त आदि कारण जहँ विदित न सम सत्ता विधान तहँ
नहि कुलाल दण्डादिक ताता सम सत्ताक वत्स दरसाता
भन विवर्त कारण वेदान्तिक श्रुति अद्वैतवाद सिद्धान्तिक
रज्वादिक विवर्त कारण भन उरगादिक कारजकर मुनिजन
नहि समान सत्ता तहँ ताता कारण अविकृत रूप लखाता
नहि कारजकर सत्ता ताता मिथ्या भान मात्र दरसाता
कारण सत् अरु असत् कार्य जहँ समसत्ताक भाव अघटित तहँ
रज्ज्वज्ञान जनित सर्पादिक उपजावत बिनु बोध भयादिक
रज्जु मात्र थितिज्ञान होत जब भय कम्पादि निवृत्त होत तब
रज्जु मात्र भासत अहि रूपा रज्जु मात्र इदमंश सरूपा
करि दृष्टान्त यथा थिति वर्णन करौं वत्स दार्ष्टान्तिक विवरण
परम ब्रह्म कूटस्थ सरूपा तहँ तदबोधज भव बहु रूपा
भव सत्ता नहि कवनहुँ काला मायामय भव विभव विशाला
जिमि सूर्योदय तिमिर विनाशा तिमि ज्ञानोदय माया नाशा
भवाभाव अवभासत जबही भुवन ब्रह्ममय भासत तबही
भवाभाव कूटस्थ भाव थिति दृढ़ प्रतीति कैवल्य मुक्ति इति
जब प्रारब्ध कर्म अवसाना नहि किञ्चन प्रापञ्चिक भाना
कर्म विपाक अविद्या आशय विरहित थिति तब इति वेदाशय

थूल सूक्ष्म कारण तनु विरहित केवल थिति तव इति भन श्रुतिन्वित
अद्वैतात्मक थिति तव जोई पद कैवल्य कहावत सोई
आविद्यक कलुषित थिति जोई जैवी दशा कहावत सोई
मायिक नित्य मुक्त थिति जोई दशा ऐश्वरी भाषित सोई
अति विशुद्ध चैतन्य अवस्थिति उदासीन थिति केवल पद इति
भन श्रुति मायिक रचना मिथ्या ब्रह्म रूपता तासु अमिथ्या
उरग अबोध प्रकल्पित मिथ्या रज्जु रूपता तासु अमिथ्या
चन्द्र मात्र चन्द्रिका पसारा आत्म मात्र स्वाभिक संसारा
दहन मात्र दाहिका प्रसिद्धा दहन विना दाहिका असिद्धा
अविना भाव प्रमाणित जहँमा एक भाव निर्बाधित तहँमा
माया हेतुक द्वैताशंका उक्त नीति आपित आतंका
पारमार्थिकी सत्ता चिति महँ व्यावहारिकी सत्ता जग महँ
प्रातिभासिकी मरु मरीचि महँ सिद्धान्तित अस निगमागम महँ
भान मात्र प्रापञ्चिक सत्ता जानत ज्ञानी सदा असत्ता
ततोन्यदार्तमादि श्रुति नाना करत प्रपञ्च अभाव बखाना
वत्स प्रपञ्चाभाव प्रमाणित केवल चितिथिति मुनि अनुमानित
तत्प्रतीति तद्धान अवस्था केवल पद इति वेद व्यवस्था
ताद्वैत द्वैत अद्वैता देव सदाशिव त्रिभुवन नेता
यादृश मति तादृश गति पावत ईदृश गान विपश्चित गावत
भूत भक्त पावत भौतिक गति निज सेवक गति श्रीगिरिजापति
कीट भ्रमर चिन्तन करि ताता बन्धत भ्रमर इति जग विख्याता

सगुणसगुणगतिअगुणअगुणगति वितरत इति निगमादिक सम्मति
सगुण भावना करत करत पुनि होतअगुण भावुक श्रुतिगुनिधुनि
सगुण भक्त क्रम मोक्ष पदारथ पावत पुनि कैवल्य यथारथ
सगुण भक्त कैवल्य अनिच्छुक पुनि पुनि भक्ति पदारथ भिक्षुक
तद्यपि केवल पद सो लहई अस पुराण निगमागम कहई
भेद भाव जाके उर नाहीँ फँसै न माया फँसरी माहीँ
भेद भाव विस्मरण प्रभावा होत उदय पुनि केवल भावा
घट घट व्यापक एक सदाशिव जो जानत सो एक सदाशिव
ब्रह्मविदादि वाक्य इह माना निर्विशेष चिति थिति अनुमाना
माया चरित अनूपम ताता यत्कृत भवबन्धन उत्पाता
महादेव शरणागत जोई माया जलधि तरत जन सोई
ज्ञानिहुँ जनकर मन आकर्षित होत मायया परिभव धर्षित
विश्वामित्र वशिष्ठ महामुनि आड़ी बक बनि जूझे पुनि पुनि
इन्द्र चन्द्र सुरगुरु करतूती प्रकटित माया मोह विभूती
करि माया मायापति सेवा पावत मुक्ति पदारथ मेवा
माया मायापति महँ भेदा जो मानत सो पावत खेदा
अन्ध पंगु इव माया ईश्वर जड़ अक्रिय श्रुति विदित निरन्तर
सहकारिता परस्पर तासू अनायास सृष्ट्यादि विलासू
एक पदारथ दुइ इव भासत ज्ञानी जनहिँ ऐक्य अवभासत
एवं योग सांख्य सिद्धान्ता मन कैवल्य जाहि वेदान्ता
अस कहि गुरु गद्गद गल भयऊ प्रेम अश्रु धारा बहि गयऊ

दोहा

शिव अरु शिवा अभिन्न तिमि; जिमि शब्दार्थ अभिन्न ।
दृढ़ प्रतीति अस जासु हिय, सो जन सदा अखिन्न ॥१०॥

सोरठा

तीनिहु समय अखिन्न, शिवा शिवा शिव शिव रटत ।
तदुभय भजन विभिन्न, बीतत जासु न अपि विपल ॥११॥
भउ अर्द्धाङ्ग महेश, वाम अंग धृत गिरिसुता ।
यत्कृत द्वैतज क्लेश, भक्त जननकर दूर कृत ॥१२॥

चौपाई

चिन्मय रूप शिवाशिव जानत निर्मल भक्त भेद नहि मानत
तदुभय विषयक सद्गुण बुद्धी करत प्रेम रस सेचन शुद्धी
सुस्थिर हृदय प्रवृत्ति विवर्जित करत निगूढ़ वासना भर्जित
परमानन्द सिन्धु विनिमग्ना होत बाह्य व्यवहार अलग्ना
व्यवहर्ता संस्कार प्रचोदित निर्वृत्तिक निज लाभ प्रमोदित
बुद्धि प्रसादज सुख जब लहई लौकिक सुख तृण सम सो कहई
कबहूँ नाचत गावत कबहूँ कबहुँ हँसत रोवत पुनि कबहूँ
लोक लाजकर काज न ताको कौपीनाम्बर भावत जाको
धन्य धन्य माता जसु ईदृक् जात पुत्र कुल कमल दिव्यदृक्
साम्ब सदाशिव दिशि दिशि देखत पुण्य पाप तसु यम नहि लेखत
भक्ति अधीन ज्ञान विज्ञाना अस निर्णय निगमादि बखाना
भक्ति पदारथ पावत जोई अद्वैतात्म ज्ञान तसु होई

अनायास पावत पावन गति कथमपि तासु न होत असद्गति
एवंविध पावन गति जोई जहँ स्वकीय परकीय न कोई
एक एव दीखत शिव रूपा सचराचर जग ब्रह्म सरूपा
परमारथ केवल पद सोई प्रभु कृपया पावत जन कोई
अचरज एक सुनहु तुम भाई बनि कृतघ्न हम शिवहिँ भुलाई
पानीसे जो पिण्ड बनावत सुमिरन तासु न मनमहँ आवत
अन्धकूप महँ पोषण करई अन्न पान तहँ अपि मुख परई
अंगोपांग बनायउ तहँमा सिरजन सामग्री नहि जहँमा
दश इन्द्रिय तहँमा निरमायउ ज्ञान कर्म इन्द्रिय कहलायउ
श्रवणादिक ज्ञानेन्द्रिय पञ्चक वागादिक कर्मेन्द्रिय पञ्चक
शब्दादिक बोधक श्रवणादिक वचनादिक साधक वागादिक
शब्दादिक भोगद ज्ञानेन्द्रिय सकल कर्म कारक कर्मेन्द्रिय
भोग कर्म सम्पादन रूपा हम सबकर उपकार सरूपा
हम सब प्रति उपकृति यह जासू ढरहिँ दीन प्रति जो प्रभु आसू
बिसरि ताहि हम भोग विलासी बनि कृतघ्न निज सत्यानासी
जो प्रभु अन्तःकरण बनायउ अन्ध कूप महँ ज्ञान जनायउ
बिसरि ताहि हम भोग विलासी बनि कृतघ्न निज सत्यानासी
कवि कोविद कृतविद्य बनायउ विषय नेह करि ताहि भुलायउ
जब जब भीर परत भक्तनपर तब तब जो प्रभु धावत घर घर
ताहि बिसरि हम विषय भुलाये स्वजन प्रीति रस राशि घुलाये
सुप्रिय वैश्य निदर्शन तहँमा भू विदारि प्रभु निकसे जहँमा

बाणासुर अपि तहाँ निदर्शन ग्रद्रक्षक भउ रोकि सुदर्शन
धरि नाना अवतार महा विभु गो द्विज देवहिँ रक्षत जो प्रभु
ब्रह्म रूप धरि विश्व विधाता विष्णु रूप धरि त्रिभुवन पाता
रुद्र रूप धरि भव संहर्ता व्यवहृति वाहक विश्वम्भर्ता
प्राण अपान आदि निर्माता अन्न विधाता जीवन दाता
ग्रह नक्षत्र आदि निर्माता ऋतु अनुरूप पुष्प फल दाता
सकल भूत भौतिक निर्माता यज्ञ यजन आदिक फलदाता
कहँ लगि करौं दिव्य गुण गाना लहत न अन्त शेष भगवाना
ताहि बिसरि हम विषय भुलाये यत्कृपया सुख सम्पति पाये
लोचन रक्षक पलक बनाये शिशु पोषक पयधर निरमाये
चर्वण हेतु दन्त निर्माये बिसरि ताहि इत उत भरमाये
किमु सदसदिति विवेचन हेतू जीवहिँ बुद्धि दियउ वृषकेतू
तदपि शुभाशुभ अज्ञ मोह वस पिवतदिवसनिशि विषमविषयरस
निज गल निज कर खड्ग प्रहारा करत जीव जग विगत विचारा
दीनदयालु दीन हितकारी दीनबन्धु दुर्गति दुखहारी
ताहि बिसरि जन जहँ तहँ धावत होत हताश परम दुख पावत
धन मदान्ध दुर्जन मुख हेरत करि अपमानित सो मुख फेरत
सुत वनितादि हेतु दिन राती कुत्सित कर्म करत बहु भाँती
मृत्यु समय जब सिरपर आवत जब यमदूत दण्ड गहि धावत
प्रतीकार सूझत नहि कोई रोवत कफ निरुद्ध गल होई
तजि मलमूत्र होत अपवित्रा त्रस्त हृदय निज सुमरि चरित्रा

प्रभु सुमिरन करि सकत न ताता मूर्च्छित सन्निपात उत्पाता
अगणित वृश्चिक दंश व्यथा इव पावत व्यथा बिसरि शंकर शिव
अति आतुर ममता आकर्षित करत निदय रविसुत भट धर्षित
वृथा बितावत जीवन काला बिसरिसदाशिव शिशुशशिभाला
सुत वनितादि न रक्षक कोई रक्षक विषभक्षक प्रभु सोई
विष भक्षण करि सबहिँ बचावत नीलकण्ठ निज नाम धरावत
ताहि बिसरि जन होत मोहवश अनाचार करि पावत दुर्यश
तारण तरण पतितजन पावन बिसरि ताहि जन होत अपावन
कहत कहत गुरु भयउ अधीरा बरसे घन इव नयनन नीरा
प्रेम मग्न भउ मीलित लोचन सुमरि सुमरि भव भवभय मोचन
विस्मृत बहिरन्तर संसारा भउ विलीन मानस सञ्चारा
निराकार अनुभव आकारा भउ सञ्चरित प्रमोद अपारा
सोइ ब्रह्म पद सोइ सदाशिव विश्वव्याप्त चैतन्य गगन इव

दोहा

उन्मीलित लोचन गुरू, शिष्यहिँ निकट बुलाय ।
प्रभुहिँ प्रणमि भाखत भयउ, गूढ़ रहस्य बुझाय ॥१०॥

सोरठा

मोहि विदित भउ आज, केवल पद श्रुतिगदित जो ।
तुच्छीकृत सुरराज, मनोराज अपि लुप्त भउ ॥१३॥
सुधि बुधि गयउ भुलाय, प्रेम पयोदधि मगन मन ।
वागिन्द्रिय सकुचाय, वर्णत वचन अगम्य थिति ॥१४॥

यदि चाहहु निर्वान, अपर नाम कैवल्य जसु ।
भजहु शंभु भगवान, भक्त ज्ञानप्रद विदित जो ॥१५॥
सत्संगति बिनु भक्ति, होत ज्ञान नहि भक्ति बिनु ।
व्यपगत माया शक्ति, कवनहुँ विधि नहि ज्ञानबिनु ॥१६॥
सुनत शिष्य हरषाय, गुरुपद पंकज प्रणत भउ ।
बार बार शिर नाय, सुस्तुति बहुविध करत भउ ॥१७॥

श्लोक

तुभ्यं नमः श्रीगुरवे कृपालवे
मायामय ध्वान्त विनाशहेतवे ।
तरीतुमेतज्जगदम्बुधिं बृहन्
नौकेव यस्यांघ्रि सरोज सेवा ॥
नहीदमित्थन्त्विवति यस्य वर्णनं
वेदोपि कर्तुं क्षमते यथावत् ।
तच्चापि हस्तामलकीकृतं यतस्
तस्मै नमः श्रीगुरवे सदाशिवे ॥
यस्यांघ्रि पद्म द्वय सेवनाद्वयं
जाताः कृतार्था निज रूप लाभतः ।
उत्तीर्ण विस्तीर्ण जगत्पयोधयस्
तस्मै नमः श्रीगुरवे सदाशिवे ॥
नानोपदेशेन स्वशिष्य पंक्तये
प्रकाशकायाद्वय दिव्य पद्धतेः ।

प्रसन्नवक्त्राय च शान्तिमूर्तये
तस्मै नमः श्रीगुरवे सदाशिवे ॥
विनाऽपि योगेन समाधि वाचिना
भक्त्या विनाऽपि प्रतिभाति तत्त्वम् ।
यदीय कारुण्य कटाक्षपाततस्
तस्मै नमः श्रीगुरवे सदाशिवे ॥
गुरु पञ्चकमेतद्धि यः पठेच्छ्रद्धयान्वितः ।
ब्रह्मविद्यां समाप्नोतु तथा यद्वाञ्छितम्भवेत् ॥

चौपाई

सुनिसुस्तुति अतिप्रमुदितगुरुवर भयउ शुभाशिष वितरण तत्पर
प्रकृत कथा पुनि भाखन लागे करुणाकर करुणा परि पागे
बिसरि कछुक तसु सुमिरन काला थित निर्विषया बुद्धि विशाला
क्षोभ वासना आदि विकारा तासु न होत तहाँ सञ्चारा
सत्त्वरजस्तम गुणमय भावा इन सबकर तहँ होत अभावा
निर्गुण सच्चित् सुखमय जोई तहँ प्रकटित तुरीय शिव सोई
तादृश दशा दीर्घकालीना पावत साधक विरल कुलीना
कुलपथ पहुँचत विरल व्यक्ति जो चिर थित इह उद्‌बुद्ध शक्ति सो
चक्र षट्क कुलमार्ग कहावत मूलाधार प्रथम मुनि गावत
स्वाधिष्ठान द्वितीय कहावत मणिपूरक तृतीय मुनि गावत
विदित चतुर्थ अनाहत नामा पञ्चम भन विशुद्धि मुनिग्रामा
अन्तिम आज्ञा चक्र प्रसिद्धा चक्र षट्क अस गावत सिद्धा

इड़ा पिंगला नाड़ी ताता वाम दक्ष थित श्रुति विख्याता
नाम सुषुम्ना मध्यवर्तिनी जो भवबन्धन सूत्र कर्तिनी
प्राणापान समीर प्रसिद्धा ऊर्ध्व अधोगति भाखत सिद्धा
प्राणापान समान गतिक जब सुषुमन अभ्यन्तर प्रविशत तब
पञ्च चक्र भेदन करि जोऊ आज्ञाचक्र मध्यगत सोऊ
तहँ साधक त्रैकालिक ज्ञाता अविमुक्तेश्वर दर्शन दाता
भृकुटी युगल मध्य यह देशा काशी नाम मिटत जहँ क्लेशा
तदुपरि सहस्रार शुभ चक्रा चाहत यत्प्रवेश अपि शक्रा
सिद्धि सदन विज्ञान दिवाकर सुधा वृष्टि जहँ करत सुधाकर
प्रविशत पवन सुषुम्ना कक्षा मनो विहङ्गम त्रुटित स्वपक्षा
तब तुरीय थिति चिरन्तनीया होत महामुनि जन कमनीया
चक्र चक्र प्रति बहु विध नादा उपजावत मानस परसादा
चक्र मध्यगत दीप प्रकासा अनायास विज्ञान विकासा
उक्त चन्द्र पीयूष पिवत जो भन मुनि वत्स कुलीन नाम सो
रसना प्रविशत तालु मध्य जसु भन योगीन्द्र कुलीन नाम तसु
योग मार्ग यह कछुक सुनावा योग शास्त्र चय यादृश गांवा
दिग्दर्शन आगे चलि करिहौं भार शिष्य शिक्षक प्रति धरिहौं
वहाँ न अहंकार अभिमाना नहि ममता बहिरन्तर ज्ञाना
नहि वैषयिक दुःख सुख लेशा नहि आविद्यक पञ्च कलेशा
अचरज इव भासत निज रूपा किञ्चिदकिञ्चित् विगत सरूपा
जहाँ न पुण्य पाप परवेशा जहाँ न महामोह आवेशा

विधि निषेध जहँमा कछु नाहीँ स्वर्ग नरक चिन्तन हिय माहीँ
न्यस्त भार जिमि पथिक वृक्षतल गत श्रम कृत विश्राम प्राप्त फल
तिमि विश्राम लहत जन योगी उपरत मनोवृत्ति सुख भोगी
हिंस्र जन्तु संकुल जंगलते निर्गत सुखी मुक्ति मंगलते
तिमि मृति युत संसृति जंगलते निर्गत युक्त होय मंगलते
चिन्मय मात्र तत्त्व जब जानत माया भासित तदितर मानत
परमानन्द प्रवाह प्रवाहित बहुरि न भव समुद्र अवगाहित
आपुहिँ देह पृथक् करि जानत आत्मैकत्व हृदय महँ मानत
सकल चराचर व्यापक एका पर चिति मानत लब्ध विवेका
देवी देव भेद नहि मानत भेदक भाव असत् करि जानत
सोइ केवली भाव कहत श्रुति नाना मुनिजन जासु करत नुति
गूढ़ चिदात्महिँ दूजो मानत आपुहिँ अपर पदारथ जानत
चित्ता मात्र विशेषण विरहित जासु विभाजक वस्तु न किञ्चित
तीनिहुँ समय अपाय विवर्जित असम्भाव्य कर्माशय अर्जित
तनु बिनु कर्म करै कस कोई बिनु मानस आशय कस होई
अप्राणोह्यमना इत्यादिक वत्स अपाणिपाद इत्यादिक
वैदिक वचन प्रमाणित एहू आत्मा मनोविहीन विदेहू
निर्विशेष चिति निर्विशेष चिति एक वस्तु अनुमान गम्य इति
घटाकाश इति घटाकाश इति घट विनाश आकाश मात्र इति
देवदत्त इति यज्ञदत्त इति विगत देह थिति केवल चिति इति
अस विवेक बल लुप्त अहंकृति अवभासत केवल अद्वय चिति

संस्कार कारित सब कर्मा करत आत्मवित् स्वयं अकर्मा
जब देहावसान समुपस्थित संस्कार घटना अनुपस्थित
चिदाकाश केवल तब रहई पद कैवल्य ताहि श्रुति कहई
शश्वच्छान्ति व्यग्रता रहिता सो कैवल्य मुक्ति रस सरिता
ज्ञानीजन अवगाहक तासू अज्ञानी पहुँचत नहि पासू
अहंकार घन परिहरि ताता संचारी ज्ञानी विख्याता
पर वैराग्य उपस्थित जाको रुचत न विषय भावना ताको
दुखमय भासत सब संसारा क्षणभंगुर अपवित्र असारा
निदरि बहिर्मुखता अन्तर्मुख रहत विरक्त लहत आतम सुख
निर्विषयक केवल चिद्रूपा सोइ केवली भाव अरूपा
जिमि अनुलोम सृष्टि क्रम ताता तथा विलोम प्रलय क्रम ख्याता
ब्रह्म प्रकृति इति महत्तत्त्व इति अहंकार इति पञ्चभूत इति
एवं विध प्रपञ्च निर्माना अधिष्ठान व्यापक भगवाना
बहुरि प्रपञ्च प्रलय विधि भाखौं नहि वक्तव्य गोइ कछु राखौं
पञ्चभूत इति अहंकार इति महत्तत्त्व इति प्रकृति ब्रह्म इति
अधिष्ठान केवल अवशिष्टा कारण ब्रह्म जाहि भन शिष्टा
कार्य ब्रह्म विधि हरि अरु रुद्रा सकल चराचर क्षुद्र अक्षुद्रा
प्रलय दशा महँ विलय सरूपा वत्स सुषुप्ति दशा अनुरूपा
जाग्रदादि महँ पुनरुत्थाना औपाधिक इति लोक प्रमाना
जब कैवल्य मुक्ति समुपस्थित विगत रूप तब विलय उपस्थित
सकल उपाधि भंग तहँ ताता अनुत्थान तसु श्रुति विख्याता

दोहा

जो पावत कैवल्य पद, ब्रह्मरूपता तासु ।
निगमादिक सिद्धान्त अस, मुनिजनजसु जिज्ञासु ॥१७॥

सोरठा

श्रीगुरु सेवा वश्य, ढरहिँ भाग्यवश जासु प्रति ।
सो सुख लहत अवश्य, स्वर्गादिक अपवर्ग अपि ॥१८॥
जो गुरु करुणापात्र, ढरत तासु प्रति आशु शिव ।
यद्यपि परम अपात्र, होत पात्र गुरु सेवया ॥१९॥
नहि सेवा अभिलाख, सद्गुरु कहँ जो जगत हित ।
नहि मनमहँ कछु माख, शिष्यन कर अपराध ते ॥२०॥
केवल श्रद्धा दृष्टि, शिष्यवर्ग प्रति सद्गुरुहिँ ।
गुरु करुणारस वृष्टि, भीजत छीजत कबहुँ नहि ॥२१॥
वत्स शिष्यकर धर्म, यत्कृत होहिँ प्रसन्न गुरु ।
मन वच कायिक कर्म, गुरुप्रसाद हेतुक करहिँ ॥२२॥
सिद्ध्यसिद्धि समबुद्धि, लहत शान्ति संतोष सुख ।
लहत शान्तचित शुद्धि, भव संभावत मानसी ॥२३॥
अन्तःकरण विशुद्धि, उपजावत शुभ भावना ।
आविद्यकी अशुद्धि, व्यपगत अपगत द्वैत भय ॥२४॥
लहि अध्यात्म विवेक, आत्मरूप जानत जगत ।
बिसरत एक अनेक, सोइ दशा कैवल्य पद ॥२५॥

शक्त्युद्‌बोध प्रकार, कहौं तोहि संक्षिप्त क्रम।
कुण्डलिनी सञ्चार, होत जौहि सो धन्यतम ॥२६॥

चौपाई

शक्त्युद्‌बोधक मुद्रादिक ते ऋजु कुण्डलिनी वलयाकृति ते
मूलाधार निर्गता सोई सहस्रार शिव संगम होई
साधक वर अतुलित सुख पावत भूप शिरोमणि शीश नमावत
वागीशा नाचत रसनापर रमा मनोरथ वितरण तत्पर
उमा अष्ट सिद्ध्यादिक वितरत सो भवाब्धि गोपद इव उतरत
शक्ति और शक्तीश्वर संगम पक्षहीन इव मनो विहंगम
जगज्ञाल जंजाल न तहँमा निश्चल मनोविहंगम जहँमा
मोक्षामृत रस पान पिपासू विरल व्यक्ति एतज्जिज्ञासू
साधन क्रम आगे चलि कहिहौं अवसर लहि संशय सब हरिहौं
चित्तवृत्ति अवरोध होत तब शक्ति शक्तिपति ऐक्य होत जब
रहत न मनोजन्य संसारा आविर्भूत ब्रह्म रस सारा
सोइ प्रसिद्ध केवली भावा जहँ विलीन त्रैगुण्य प्रभावा
निज महँ विश्व विश्व महँ निजको देखत ई दश थिति जब द्विजको
जड़ चेतन विभेद नहि जानत सकल चराचर चिन्मय मानत
आपुन सर्वरूपता जानत स्वातिरिक्त अतिरिक्त न मानत
स्वानुभूति थल सलिल गगन जब लहत न कबहुँ द्वैत भय परिभव
इत उत यत्र तत्र सब ठामा भासमान व्यापक शिव नामा
आपुन पूर्णरूपता जानत नहि संयोग वियोगहिं मानत

लाभालाभ सुयश दुर्यश जत पूर्णरूपता ज्ञान अनभिमत
निन्दा नुति अपमान मान जत पूर्णरूपता ज्ञान अनभिमत
बिन्दु बिन्दु ब्रह्माण्ड अनेका भासत सच्चित् सुखमय एका
अहम्ब्रह्म ब्रह्माहमस्मि इति निदरिअस्मिता भासतचितिचिति
एवंविध केवल थिति जोई मत कैवल्य मुक्ति इति सोई
कहत कहत गुरुवर अति हर्षे हर्ष अश्रु लोचन युग वर्षे
गद्गद गल गुरु भाखन लागे परमानन्द प्रेम परि पागे
कहँ लगि कथन करौं मैं ताता पद कैवल्य वेद विख्याता
शेष सहस अपि लहैं न पारा वर्णत पद कैवल्य अपारा
मति लघु वर्णन सिन्धु समाना असम असीम अगाध अमाना
दिग्दर्शन करि कछुक सुनायउँ अति रहस्यथिति पुनिपुनि गायउँ
विशदीकरण हेतु पुनरुक्ती नहि दूषण इति कविजन उक्ती
यदि क्वचिदिह पुनरुक्त्याभासा अनुचित दोषारोप प्रयासा

दोहा

शिष्य पुरञ्जन मुदित मन, सुनि कैवल्य पदार्थ ।
अवगत केवल पद भयउ, भयउ यथार्थ कृतार्थ ॥१२॥

सोरठा

भाखे गुरु मुसुकाय, शिष्यहिँ कौतुक युक्त इव ।
सुमिरि शम्भु उरगाय, केवल पद निजमत कहहु ॥२७॥
सुनतअतिह्लिसकुचाय, कहत भयउ सो पद परसि ।
प्रभु करुणा बल पाय, भाखौं केवल पद सुखद ॥२८॥

शिव अभिन्न गुरुदेव, सेवन परिहरि सकल कृति ।
पद कैवल्य तदेव, मत्सम्मत करुणा निलय ॥२९॥

चौपाई

यज्ञ यजन तीरथ व्रत नेमा परिहरि गुरु पद पंकज प्रेमा
होत न फलद यथारथ ताता मिटत न जरा मृत्यु उत्पाता
जप तप व्रत दानादिक धर्मा पितृ कर्म अरु दैवत कर्मा
गुरु सेवन बिनु फलद न होई यह रहस्य जानत जन कोई
शिष्य वचन सुनि गुरुवर बिहँसे लखत शिष्यमुख लोचन विकसे
शिष्यहिँ कहत भयउ पुनि सोऊ धनि तुम श्रद्धधान अति जोऊ
धन्य धन्य माता पितु तासू गुरु पद पंकज अनुरति जासू
धनि धनि पूर्व अपर कुल तासू गुरु पद पंकज अनुरति जासू
जन्मभूमि अपि धनि धनि तासू गुरु पद पंकज अनुरति जासू
धन्य मित्रजन परिजन तासू गुरु पद पंकज अनुरति जासू
करतल तासु स्वर्ग अपबर्गा दुरित निवर्तक तसु संसर्गा
चिरञ्जीव तुम होहु वत्स मम साम्ब सदाशिव सेवक प्रियतम
वत्स त्वदुक्त विलक्षण लक्षण पद कैवल्य विचार विचक्षण
अब कैवल्य सार मैँ भाखौँ शास्त्रउक्त लक्षण जसु लाखौँ
निष्क्रियता कैवल्य यथारथ सोइ परम पुरुषार्थ यथारथ
इन्द्रिय मन उपराम अवस्था कैवल्येति मुनीन्द्र व्यवस्था
इन्द्रिय मन गति विरह सुषुप्ती इह उपराम न क्रिन्तु प्रसुप्ती
मन इन्द्रिय निद्रामहँ मुद्रित सो समाधि महँ वत्स अमुद्रित

अज्ञानावृत सुख सुषुप्ति महँ स्वानुभूत सुख केवल पद महँ
आदि अन्त निद्रा सुख अनुभव यावदवस्थिति सुख समाधिभव
केवल पद सुख निरवधि काला निर्वापित त्रैतापिक ज्वाला
उक्त समाधि देह थिति यावत् पद कैवल्य सर्वदा शाश्वत
कर्मारब्ध एतदुत्थापक अकर्मण्यता तदनुत्थापक
तम आवृत थिति विदित सुषुप्ती विगतावृति समाधि श्रुति उक्ती
वत्स समाधि केवली भावा एक एव नहि भिन्न स्वभावा
नाम भेद इह सतनु अतनुकृत इह कैवल्य नाम अस्मद्धृत
भक्तिजन्य वा ज्ञानजन्य वा कोटि जन्मकृत पुण्यजन्य वा
ध्यानजन्य गुरु कृपा जन्य वा सोमेशान कटाक्ष जन्य वा
योग जन्य वैराग्य जन्य वा काशी नगरी मरण जन्य वा
नित्यप्राप्त चितिथिति अजन्य वा आविर्भावापेक्ष्य जन्य वा
उक्त केवली भाव समुद्भव असंभाव्य जहँ जनि मृति परिभव
भौतिक वा आध्यात्मिक काशी उभय प्रसाद जन्तु अविनाशी
आध्यात्मिक काशी सुख रूपा चिर दर्शक तसु होत अरूपा
भौतिक विश्वेश्वर त्रिशूल गत आध्यात्मिक भ्रू युगल मध्यगत
साक्षान्मुक्ति जनक निज बोधा उपजावत भक्त्यादि प्रबोधा
परम्परा कारणता उन महँ साक्षात्कारणता प्रबोध महँ
परम्परा कारणकर कारज अन्तःकरण शुद्धि भन आरज
वितरत शुद्धि ज्ञान सद्भावा ग्राहक ग्राह्य समान स्वभावा
अरु साक्षात्कारणकर कारज पद कैवल्य लाभ भन आरज

दोहा

नाथ कृतारथ भयउँ सुनि, कैवल्याख्य विमुक्ति ।
की दृङ्माया रूप गुरु, यत्कृत संसृति भुक्ति ॥१३॥
एवं विध कहि शिष्य पुनि, करि प्रणाम बहु बार ।
पाहि पाहि परिपाहि कहि, भूगत दण्डाकार ॥१४॥

चौपाई

शिष्य वचन सुनि गुरु हरषाये मायारूप बुद्धि महँ लाये
भाखत भयउ सुमिरि जगदीशा जासु भजन करि ईश अनीशा
सुनहु वत्स माया आकारा भाखत मुनिजन विविध प्रकारा
कियउ प्रश्न जगदम्बा ताताँ उत्तर दियउ शम्भु विज्ञाता
माया विषयक प्रश्नहि सुनि हर भयउ तदुत्तर भाषण तत्पर
पृथग्भूत दृग्दृश्य पदारथ यद्गत सत्त्व असत्त्व यथारथ
अपार्थक्य तदुभय कर कर्त्री माया सोइ बुद्धि अपहर्त्री
देहाद्यहंकार पर्यन्ता दृश्य पदारथ भाखत सन्ता
चिद्व्यतिरिक्त पदारथ जेते मिथ्या दृश्य पदारथ तेते
भन चिन्मात्र दृगिति मुनि नाना निगमागम इतिहास पुराना
विसदृश धर्म प्रवाह प्रतीती माया आकृति इति श्रुति गीती
सुख दुख मोह जीव अध्यासा माया चिर संकल्पाभ्यासा
सच्चित् सुख रूपहिँ यह माया अस्त व्यस्त करि नाच नचाया
मायावृत निज वैभव एहू पराधीन इव नहि सन्देहू
काल पुरुष आज्ञावश जाके सो डरपत रविसुत भट ताके

मायापति शरणागत जोई माया दयापात्र जन सोई
जन्म जरा मरणादिक लखिलखि डरत न झगड़त हमहम बकिबकि
गिरिकन्ये माया परभावा अति आश्चर्य अचिन्त्य स्वभावा
जरा जीर्ण तनु तृष्णा नूतन सञ्चय इच्छु मुमूर्षु अद्य तन
पुत्रहिँ सञ्चय शिक्षा भाखत धन जोगाय गुप्त करि राखत
श्राद्ध कार्य महँ व्यय परिमाना अल्प अल्प कहि मरत नदाना
स्वारथ रत शुभ कर्म न करई हाय हाय करि मूरख मरई
चिरञ्जीव आपुहिँ नित मानत शिरपर काल कराल न जानत
धन परिजन ममता आधीना तजि मर्यादा नीति विहीना
निज मुख निज परसंसा भाषी रसना लोलुप रस अभिलाषी
जाति पाँति अनुरोध न राखत ठकुर सुहाती जहँ तहँ भाखत
जीवन काल अमूल्य गँवावत दम्भी निज प्रभुता दरसावत
सञ्चय करि करि भरत खजाना चलत रिक्त कर अन्त नदाना
दीन दरिद्र निरखि मुख फेरत वार वधू मुख हँसि हँसि हेरत
करत क्रूरमति पात्र अनादर नट नर्तक नर्तकी समादर
साधु सन्त कर कर अपमाना पिशुन असज्जन कर सम्माना
हिंसा अभिरुचि परधनअभिरुचि परनारी रुचि व्यसन कलह रुचि
धर्म कर्म महँ सदा अनभिरुचि हित उपदेशक वचन अनभिरुचि
कामादिक अभिभूत दिवसनिशि ध्यानकबहुँनहि मरणसमयदिशि
दिन अनर्थ चिन्तन महँ बीतत निशि कुत्सितकृति अरु निद्रागत
गिरिजे तव मम भजन विहीना नरककुण्ड दुख भोगत दीना

देखि जीव माया परभावा मलिन हृदय विक्षिप्त स्वभावा
असती किमुत सती वा माया निर्णय करि श्रुति तति दरसाया
कार्यकारिता सूचित सत्ता युक्ति उक्ति बल होत असत्ता
स्वप्नकाल कृत रोदन हासा करत विषाद हर्ष परकासा
स्वप्नहिं असत कहत सब कोई जस तसु कार्यकारिता होई
तिमि मायाकृत कार्यकारिता नहि समुचित तसु सत्त्ववादिता
देखि कूट कार्षापण आदिक यहाँ निदर्शन दिग्भ्रम आदिक
जिमि अणु महँ भूधर परवेशा तिमि मम मुख महँ विश्व निवेशा
मम मुख महँ भउ त्रिभुवन दरसन भयउ कृतारथ दशरथ नन्दन
मायामात्र मोर मुख माहीँ लखे अवधपति संशय नाहीँ
कृष्णानन महँ अर्जुन वीरा लखे विश्वमण्डल धरि धीरा
राम कृष्ण जननी अपि दोऊ लखे उभय मुख त्रिभुवन सोऊ
मायारूप निदर्शन नाना गावत आगम निगम पुराना
कहौँ एक प्राक्तन इतिहासा लेखक जासु महामुनि व्यासा

दोहा

एक समय देवर्षि वर, नारद पहुँचे जाय।
सुरमर्दन श्रीपति निकट, जय जय शब्द सुनाय ॥१९॥

सोरठा

दण्डाकार प्रणाम, करि परसत भउ पद कमल।
द्वादशार्ण अभिराम, मन्त्रराज मनमहँ जपत ॥२०॥

दियउ असीस रमेश, बैठारे निज निकट महँ ।
जाते मिटत कलेश, कियउ भक्ति उपदेश बहु ॥३१॥
सुनि मुनिवर हरषाय, भउ पूछत कर जोरि युग ।
कहिय नाथ समुझाय, माया आकृति की हशी ॥३२॥
भाखे हरि मुसुकाय, नहि अलभ्य कछु भक्तिबल ।
माया दरसन पाय, होहु कृतारथ ज्ञान बल ॥३३॥

चौपाई

अस कहि श्रीपति करि प्रस्थाना चढे मुनीन्द्र सहित खग याना
भउ बतकही विविध मारग महँ निरखे विविध लोकथिति जहँतहँ
भारत भूमि गयउ नियराई कर्म निरत जहँ लोग लुगाई
प्रभु उतरे लखि एक सरोवर स्वच्छ सलिल अरु दृश्य मनोहर
अति कमनीय सरोवर शोभा निरखि भयउ नारद मन लोभा
अति विनीत ह्वै विनय सुनायउ सर यह नाथ मोहि अति भायउ
अस कहि हरि मुख देखन लागे रुख लखि हरि बढ़ि आयउ आगे
विहसितमुखमुनिकरगहि लियऊ मज्जनार्थ आयसु पुनि दियऊ
स्वयमपि जल प्रवेश हरि कियऊ उभय निमज्जन तत्पर भयऊ
पहुँचि गयउ श्रीपति निजलोका जहाँ न व्यापत आमय शोका
नारद मुनि उन्मज्जित भयऊ पूर्व वृत्ति विस्मृत ह्वै गयऊ
नारी रूप भयउ तत्काला सौभग निलय मनोहर बाला
अंग अंग प्रति भूषण सोहै निरखि जाहि मुनिजन मन मोहै
पहुँचे आय एक नृप तहँमा चितवत चहुँदिश थित सो जहँमा

नरपति लखि अति अचरज माना कियउ विद्ध हिय मनसिज वाना
सुनन चहौं सुन्दरि तव परिचय तदुपरि करिहौं कृत्य सुनिश्चय
सुनि नरपति भाषण अस वाला उत्तर देत भयउ ततकाला
जगदम्बा अरु जगज्ञनयिता सोइ मोर अम्बिका जनयिता
ब्रह्मदेव वंशज सब लोका हमहुँ तथा नरवर न अलोका
अब लगि अविवाहिता कुमारी संज्ञा नृप कामिनी हमारी
कामबाण पीड़ित नरपाला कर गहि लियउ तासु ततकाला
विधि बोधित पुनि भयउ विवाहा कियउ विविध उत्सव नरनाहा
भयउ नगर भरि घर घर उत्सव भयउ अयाचक याचक तहँ सब
मान समेत दान तहँ पायउ द्विजगण जय जयकार सुनायउ
विरुदावली पढ़त बन्दीजन पायउ मनवाञ्छित बहुविध धन
नट नर्तक नर्तकी गवैया वीणा आदि वाद्य बजवैया
लब्ध मनोरथ भयउ कृतारथ नहि अलभ्य कछु लभ्य पदारथ
निशि दिन मंगल मोद प्रवाहा विस्मृत राज काज नरनाहा
मास दिवस अस उत्सव भयऊ आगत जन निजनिज गृह गयऊ
राजभार मन्त्रीकहँ दियऊ काम केलि नृप मन निज दियऊ
वन उपवन गिरि कानन माहीं विहरत नृप निशिवासर जाहीं
कबहुँ न नृप कोषादि निरीक्षण करहिँ हस्ति हय स्यन्दन वीक्षण
सीमा थिति बल लखत न कोई तस्करादि भय जहँ तहँ होई
राज समाज भयउ भयव्याकुल कुशल नाहि सब संकट संकुल
जनता बीच दीनता छाई मबहु अराजकता थिति आई

पत्नी रुचि रखि रखि सब काजा करहिँ विवश अनुचर इव राजा

दोहा

एक दिवस आयसु बिना, गयउ नृपति आखेट ।
कोपभवन गत कामिनी, परिहरि प्रियतम भेंट ॥१६॥

सोरठा

कामअन्ध नरपाल, दासी निकरहिँ कहत भउ ।
कहहु कहहु तत्काल, कहाँ स्वामिनी कामिनी ॥३४॥

चौपाई

दासिन कहत भयउ करजोरी प्रभु सो प्रणय कोप रस बोरी
हम सबकर कछु कहा न मानत प्रणयकोप वश तृण सम जानत
आपुहि नाथ कहिय कछु जाई हम सबकर प्रभु कछु न बसाई
सुनि विमना भउ धरणीपाला कोप भवन गमने तत्काला
वस्त्रावृत मुख कछुक न कहई अश्रु धार नयनन ते बहई
कोप शमन हेतुक बहु बारा नरपति अनुनय वचन उचारा
कहु प्राणेशि कोपकर कारण पण करि प्राण करौं तसु वारण
कहहु काहि नृप रंक बनाऊँ कासु नाम धनपती धराऊँ
कहहु प्रिये अपराधी नामा पठवौं तुरत ताहि यमधामा
सुन्दरि प्राणदण्ड अधिकारी यदि अब्राह्मण तुअ अपकारी
मम अपराध भयउ यदि कोई करहु दण्ड जो समुचित होई
बाहुपाश कसु बाँधहु नाहीं लोचन बाण तजहु कस नाहीं
गिरौं दण्ड इव भूतल माहीं प्रतीकार कछु सूझत नाहीं

कहत कहत अस गउ ढिग ताके प्रिया कोप शंकित हिय जाके
पाद परसि विनती अति कियऊ काम विवश जन परिचय दियऊ
दम्पति भाव पराभव कटुता विरल जनहिँ तसु अनुभव पटुता
दियउ हटाय मुखावृति अम्बर करि करि प्रेम प्रकाशाडम्बर
करत भई सो बाँकी चितवन कामबाण परिपीड़ित मन मन
नाथ मोहि तजि विरमे कहँमा राउर विरह असह भउ लहमा
किमु हिमकर किमु चण्ड दिवाकर जानि न जाय विरह महँ प्रियवर
सुमन माल किमु अहिवर विषधर जानि न जाय विरह महँ प्रियवर
चन्दन कर्दम किमु अति शीतल किमु अत्युष्ण काचद्रव खलबल
किमु सुखशय्या किमु कण्टकथल जानि न सकौँ विकल विरहानल
सुनि नृपवर तसु कर गहिलियऊ विहँसि विविध आश्वासन दियऊ
मोर दशा अपि ईदृश वामा जारत विरहानल उद्दामा
भउ अस प्रेमालाप परस्पर भयउ उभय मनसिज मद मन्थर
एवं बीतत भउ बहु वत्सर भउ सन्तति संकुल नरपति घर
भोग विलास मग्न मन नरवर दुर्लभ राजकाज कर अवसर
सूर्यास्तमन उदयकर ज्ञाना रहा न नृपहिँ विलास भुलाना
रतिनायक निज दखल जमायउ प्रजा अरक्षित अति दुख पायउ
जानि सुअवसर कियउ चढ़ाई शत्रु नृपति बझि गयउ लड़ाई
सेना चतुरंगिणी विशाला घेरा डालि दियउ तत्काला
गज तुरंग स्यन्दन धुनि घोरा व्यापेउ चहुँ दिस अतिहि कठोरा
गजी गजीते हयी हयीते भिरत भयउ पुनि रथी रथीते

पैदल दल तरंग इव धायउ शूर वीर घमसान मचायउ
धरु. धरु मारु मारु उच्चरहीं तिष्ठ तिष्ठ कहि घनरव करहीं
भयउ तुमुल संग्राम भयानक साधु साधु बोले दलनायक
खड्ग शूल तोमर अरु प्रासा ऋष्टि शक्ति गहि करि विजयासा
भिरे उभय दल लै लै नामा बजो दुंदुभी शंख ललामा
झनत्कार शस्त्राहति जन्या सुनि अधीर भउ भीरु जघन्या

दोहा

सेनानायक कहत भउ, धरहु वीरवर धीर ।
मारहु मरहु न डरहु अब, भंगुर सकल शरीर ॥१७॥

चौपाई

शूर वीर भुज फड़कन लागे गहि गहि आयुध धायउ आगे
मारंत मरत कटत अरु काटत झपटि बाज इव डपटत डाँटत
उभय चमू डटि गयी परस्पर हटत कोउ नहि पीछे तिलभर
बन्दी वृन्द कड़क्खा पढ़ि पढ़ि जोश बढ़ावत गजवर चढ़ि चढ़ि
भयउ तुमुल संगर दुइ दण्डा समुपस्थित जिमि प्रलय प्रचण्डा
शोणित सरिता भीषण बहि गउ आहत निहत हजारन भँसि गउ
शत्रु यूथ तब दै ललकारा द्रुत गति कियउ प्रचण्ड प्रहारा
हाहाकार भयउ रण भूपर विमुख भयउ तब प्रमुख वीरवर
भजी चमू तजि निज मर्यादा पायउ महाराज अवसादा
राजकुमारहिँ पठये तहँमा भागत रहे यूथपति जहँमा

राजकुँवर करि रथ आरोहण गउ जहँ विचलित भउ योधागण
क्रुद्ध कुँवर तब भाखन लागे समर धुरन्धर रण रस पागे
जीवन मरण दैवकर हाथा रहत सुथिर जग कीरति गाथा
समर छोड़ि जो पीठ दिखावत नरक दण्ड सो बहु विध पावत
तनु परिहरत समर महँ जोई ब्रह्मलोक सुख पावत सोई
जीते सुयश मरे सुर लोका जहाँ समर हत होत अशोका
धैरज धरहु फिरहु अब भाई जीवित मृत इव अपयश पाई
इष्ट देव गुरुदेव दुहाई करौं आजु घमसान लड़ाई
फिरी वाहिनी सुनि अस बयना निरखि कुमारहिं लोहित नयना
व्यूह बनाय दियउ ललकीरा करत भयउ दिव्यास्त्र प्रहारा
मारि गिरायउ अगणित योधा कुँवर वीरवर करि अति क्रोधा
रुण्ड मुण्डमय धरणी भयऊ शत्रु चमू विचलित ह्वै गयऊ
कियउ शंख धुनि राजकुमारा भयउ व्याप्त नभ जय जयकारा
बढ़ि आयउ तब अपरु कुमारा सुनि निज दल महँ हाहाकारा
राजकुमार दोउ बलवन्ता शराछन्न नभ कियउ तुरन्ता
भयउ प्राणपण रण घमसाना शोणित नदी बही मैदाना
डिगत न उभय वीरवर कैसे एकतान योगी मन जैसे
सोभत उभय वीरवर कैसे रण रत राम दशानन जैसे
होत न क्षण अपि रण विश्रामा भयउ समान समर दुइ यामा
कृति अरु प्रतिकृति भयउ परस्पर विजय पराजय भउ अति दुष्कर
अस्त्र शस्त्र जर्जरित शरीरा रण मद मत्त दोउ रणधीरा

रथ विहीन शस्त्रास्त्र विहीना मल्लयुद्ध रत भयउ अदीना
दाव पेच करि विविध प्रकारा भट अरु प्रतिभट कोउ न हारा
भयउ श्रान्त जब राजकुमारा पाइ सुअवसर अपर कुमारा
दियउ पछारि ताहि धरणी पर मुष्टि प्रहार कियउ छातीपर
वज्राघात सरिस बहु वारा कसेउ कमानी अपर कुमारा
प्राण पवन तब कियउ पयाना विजय दुंदुभी बाजी नाना
तब अवशिष्ट कुमर सब आये सबहिँ शत्रु परलोक पठाये
क्रोधाकुल आपहु नृप आयउ दिव्य अस्त्र पढ़ि मन्त्र चलायउ
शत्रु महीपति तानि शरासन कियउ दिव्य अस्त्रनकर वारन
कृति प्रतिकृति तत्पर दुहु वीरा गैरिक गिरि इव रक्त शरीरा
रिपु नृप पशुपति अस्त्र चलायउ तेहि छन अशकुन विविध लखायउ
भई कम्पमाना तब धरणी जिमि गजराज प्रकम्पित तरणी
उल्का पतन भयउ तहँ नाना रुधिर वृष्टि जलवृष्टि समाना
कोल कमठ दिग्गज गण डोले तजि समाधि मुनि लोचन खोले
करि नरपाल मरण क्षण ज्ञाना कियउ अभीष्ट देवता ध्याना
भउ चतुरंग सैन्य जरि छारा कियउ नागरिक हाहाकारा
धावन रानिहिँ खबर जनायउ सुनत कामिनी मूर्छा पायउ
कतिपय दण्ड अतीत भयउ जब भई विगत मूर्छा रानी तब
करत भई तब विविध विलापा पाइ असह्य विरह सन्तापा
भूतल पटकत पुनि पुनि माथा पति सुत सम्पति रहित अनाथा
राजगुरू समझायउ आई तब विचार क्षमता कछु पाई

तब कामिनी चिता रचवायउ पति सहगमन धर्म हिय लायउ
करन लगी जब चिता प्रवेशा पहुँचे तव तहँ त्वरित रमेशा
नहि नहि कहत विप्र तनुधारी भक्तबछल दुर्दश दुखहारी
अयि सुन्दरि धन जन वहु भाँती उदासीन अरु मित्र अराती
माया भासित विविध सरूपा वस्तु यथार्थ अनाम अरूपा
आतम रूप सकल घट व्यापी तहँ दुर्मति दम्पति मति थापी
विरहाविरह असम्भव तासू भाखत श्रुति व्यापकता जासू
जन्म जन्म वहु विध परिवारा अहंकार ममता व्यवहारा
रहत न अपरजन्म तसु कछु स्मृति पुनिपुनि विद्यमानथिति विस्मृति
आत्मरूपकर विस्मृति संसृति आत्म अविस्मृति उक्त असंसृति
हर्ष शोक आदिक जत वृत्ती जानहु माया कलित प्रवृत्ती
तजहु शोक करि आत्म विवेका आत्म तत्त्व नहि देवि अनेका
इन्द्रिय शब्दादिक विज्ञापक अन्तःकरण तदिन्द्रिय ज्ञापक
अन्तःकरण प्रवर्तक जोई आत्मरूप जानहु तुम सोई
नित्य लब्ध यह आत्म सरूपा सच्चित् सुखमय निर्मल रूपा
नहि अपाय सम्भव तसु कबहूँ प्रलय काल अपि आवै जबहूँ
तहाँ अकिञ्चितकर असि धारा वह्नि पवन अरु जल आसारा
जन्म जरा मरणादि विकारा तासु असम्भव करहु विचारा
जो चिद्रूप अकाश सरूपा तहँ बाधा भय की दश रूपा
सोवत निजमृति लखिजिमिरोवत जागतनिजदुख लखि सुख खोवत
लोकाचार करहु करि स्नाना देहु सबहिँ तिलअञ्जलि दाना

सद्गुपदेश सुनि पाइ प्रबोधा भयउ प्रचण्ड शोक अवरोधा
मज्जन हेतु सरोवर गयऊ करि मज्जन नारद पुनि भयऊ
आयउ स्मृति महँ सकल उदन्ता कियउ दण्डवत् प्रभुहिं तुरन्ता

दोहा

भयउ चतुर्भुज रूप तब, मुरहर द्विभुज शरीर ।
मुनि कर गहि हँसि कहत भउ, होहु न विप्र अधीर ॥१८॥

सोरठा

माया रूप अनूप, वत्स तोहि अवगत भयउ ।
कहँ मायामय भूप, कहँ वह नारी रूप तव ॥३५॥
दम्पति भाव प्रभाव, भोग विलास अनेक विध ।
रसमय रति अनुभाव, मायामय अनुभूत भउ ॥३६॥
स्वम्पति सन्तति चित्र, भउ भासित वास्तव सरिस ।
एवं रूप विचित्र, माया रचित प्रपञ्च यह ॥३७॥
जो मम शरणापन्न, ताहि न व्यापत मोह यह ।
होत न कबहूँ खिन्न, हर्ष विषाद विमुक्त मति ॥३८॥

चौपाई

त्राहि त्राहि नारद मुनि भाखे पुनि पुनि शिर चरणनपर राखे
सुस्तुति कियउ जोरि कर दोऊ अद्भुत चरित चकित मति सोऊ
त्राहित्राहि कहिपुनिपुनि प्रणमत प्रेम अश्रु धारा नहि विरमत
जय जयकार कियउ बहु बारा हृदय गुहा महँ भउ उजियारा

सुमिरत भयउ कोटिशत जन्मा भयउ द्विजन्मा अन्तिम जन्मा
शूद्र जन्म महँ ब्राह्मण सेवा करि पायउ प्रभु पद रति मेवा
पायउ सो प्रभु दरस हृदय महँ भयउ प्रतीति हेतु घटना तहँ
दरस हेतु करि परम तपस्या भउ चतुरानन तनय नमस्या,
हँसि हँसि हरि नारद मुख पेखे मुनि निज जन्म सफल करि लेखे
कहेउ मुनीश सकल संसारा माया रचित अगम्य अपारा
जापर कृपा होत प्रभु केरी पावत पार होत नहि देरी
बोले सुरऋषि कर गहि श्रीपति होत ज्ञानबल माया अवगति
जनि अचरज मानहु हिय नारद मम सेवक तुम ज्ञान विशारद

दोहा

माया विजय न ज्ञान बिनु, ज्ञान लाभ बिनु भक्ति।
होत न वत्स कदाचिदपि, भक्ति विघ्न आसक्ति ॥१९॥

सोरठा

मायामय भव सिन्धु, गुरुवर प्रेम जहाज सम।
हम भक्तनकर बन्धु, अनुकूलानिल सम तहाँ ॥३९॥
सुनि नारद शिर नाय, प्रेम अम्बुनिधि मग्न मन।
मुरहर होहु सहाय, अस कहि सुस्तुति करत भउ ॥४०॥

श्लोक

भजामि नारायणमादि देवं
कायाधवोद्धारण लब्धकीर्तिम्।

समुद्धरन्तं गजराजमार्तं
कारुण्य पूर्णायत पद्म नेत्रम् ॥
जनार्दनं स्वाग्रज शत्रु शत्रुं
त्रिविक्रमं वामन मूर्ति रूपम् ।
युगे युगे धर्मधुरं वहन्तं
कृतावतारं स्वजनावनार्थम् ॥
ब्रह्मात्मना विश्वमिदं सृजन्तं
रुद्रात्मनैतत् प्रविलोपयन्तम् ।
हर्यात्मना नूतन नीरदात्मना
ब्रह्माण्डमेतत् परिपालयन्तम् ॥
एकाकृतिं त्वामवयन्ति साधवस्-
तं त्वा नतोस्म्यद्वय चित्स्वरूपम् ।
अवाङ्मनो गोचरमात्मरूपं
प्रकाशमानं प्रकृतेः परस्तात् ॥
अकिञ्चनं किञ्चनवस्तुरूपं
न किञ्चनं यस्य जनैरलभ्यम् ।
सर्वस्वरूपं परमात्मरूपं
त्वामन्तरा वस्तु तरां न वाच्यम् ॥
दीनानुकम्पिन् भगवन् मुरारे
त्वन्माययया पातितमन्धकूपे ।

दीनं समुत्तारय दीनबन्धो
क्षमस्व दुर्बुद्धिकृतापराधान् ॥
किं वर्णनीयं मम भागधेयं
यत्त्वां पुरस्तादवलोकयामि ।
इन्द्रादयो देव तपश्चरन्ति
यद्दर्शनार्थं दितिजेन्द्र भीताः ॥
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोस्तु विष्णो तव पार्श्वतश्च ।
श्रीमन् सनाथी कृयतामनाथः
संसारलिप्तः करुणाकटाक्षैः ॥
यः पठेदष्टकं त्वेतत् श्रद्धया शरणागतः ।
माया बन्धनमस्याशु दूरीकुरु जगत्पते ॥

दोहा

कहत भयउ मुसुकाय हरि, होइ मगन हर प्रेम ।
बँधत न माया पाश ते, जेहि शिव सेवा नेम ॥२०॥

सोरठा

जे जन यह इतिहास, सुनिहैँ और सुनाइहैँ ।
करि श्रद्धा बिसवास, माया पहुँच न तासु ढिग ॥४१॥

चौपाई

पुनि खगयान गयउ निज लोका ब्रह्मलोक गउ विप्र अशोका
समाचार सब पितुहिँ सुनायउ सुनि चतुरानन अति सुख पायउ

विष्णु प्रभाव कथन बहु कियऊ सदुपदेश नाना विध दियऊ
सुनि इतिहास हिमाचल कन्या भयउ मुदित मन त्रिभुवन धन्या
श्रीजगदम्बा अरु वृषकेतू करहिं चरित सब जगहित हेतू
ऋद्धि सिद्धि दासी इव जासू को कहि सकत महातम तासू

दोहा

कहत भयउ गुरु शिष्य प्रति, सुनहु चरित पुनि एक ।
माया परिचायक विमल, यत्कृत होत विवेक ॥२१॥

सोरठा

जसु माया आकार, अवगत शब्द प्रमाण बल ।
तसु नाना परकार, भासत मिथ्या जगत यह ॥४२॥
अविद्यादि दुखमूल, तत्कृत व्यपगत पञ्चविध ।
जन्म जरा मृति शूल, ताहि न परसत ज्ञानबल ॥४३॥

छन्द

विगत होत विषाद मानस सत्त्वजनित प्रसाद ते
द्वैत भय अवसाद व्यपगत मुक्त मद उन्माद ते
सुमरि थिति अज्ञानकालिक ऐन्द्रजालिक थिति यथा
हँसत पुनि पुनि जानि जगती बाल पैशाचिक प्रथा

चौपाई

उत्तरपाद नाम शुचि देशा तहाँ एक रमणीय प्रदेशा
तत्अन्तर्गत बन अति सुन्दर जसु सुषमा लखि चकित पुरन्दर
फूलत फलत वृक्ष जहँ नाना करत विहग जहँ कलरव गाना

शीतल मन्द सुगन्ध समीरा विविध सरोवर निर्मल नीरा
किन्नर विद्याधरु गन्धर्वा करहिँ विहार अप्सरा सर्वा
स्वर्ण सरिस तरुवर तहँ राजत निरखि जाहि सुरतरु अपि लाजत
हरिश्चन्द्र वंशज तहँ राजा लवण नाम जहँ सुखी समाजा
धर्म निरत परजा परिपालक महा वीरवर रिपु कुल घालक
जासु प्रताप शत्रु सन्तापक दुर्जन दलन साधुजन थापक
जासु प्रसाद प्रसादित परिजन गुरुजन मुनिजन अभ्यागत जन
गृहलक्ष्मी आदिक सब लक्ष्मी जहँ निवसहिँ नहि कतहुँ अलक्ष्मी
अति उदार परदार पराङ्मुख नहि विधेयविधिविषयअवाङ्मुख
जासु सुयश धवलित सब जगती जासु भारती कबहुँ न असती
इक दिन सिंहासन आसीना नरपति गायक गावत, गाना
नाचत भई नर्तकी नाना सरस मधुर धुनि वाद्य विधाना
चामर युगल युगल दिशि डोलत देश वारता मन्त्री बोलत
ऐतिहासिकी कथा अनेका पण्डित कृत सत् असत् विवेका
बाजीगर आयउ इक तहँमा राज सभा आडम्बर जहँमा
लखु कौतुक नरपाल हमारा अस कहि खोलत भयउ पिटारा
मोर पंख सो तुरत निकारा भ्रामित करन लगा बहु बारा
देखत भयउ नृपति वह रचना विस्मयवश मुख आव न वचना
महा मायिकी घटना यादृश दृश्य विविध नृप देखे तादृश
तावत् माण्डलीक नृप दूता पहुँचे तहँ जिमि मायिक भूता
उच्चैःश्रवा वंश उत्पन्ना हय यह द्रुत गति विधि सम्पन्ना

माण्डलीक नृप दियउ उपायन करु अंगीकृत विविध गुणायन
जानि विलक्षण हय नृप सोई पठये प्रभु पहँ आनत होई
होइय हयारूढ़ महराजू लखैं अनूपम छवि सब आजू
भउ मूर्छित नृप हयहिं विलोकी नहि भवितव्य कोउ सक रोकी
भयवश नृपहिं न कोउ जगावत कवनहुँ अंग न नृपति हिलावत
दुइ मुहूर्त अति मूर्छित राजा भउ विस्मित लखि सकल समाजा
भय संशय समुद्र महँ सबही भयउ निमग्न सभ्य जन तबही
करत भयउ तहँ सब अनुमाना नृप चिन्तावश चेत भुलाना
दुइ मुहूर्त बीतत जब भयऊ चेतन संहित नृपति ह्वै गयऊ
आसन पतित होन नृप लागे कर गहि लियउ सचिव बढ़ि आगे
व्याकुल मति पूछे महराजा को तुम कस यह सभा समाजा
कौन नगर यह को असु अधिपति सुनत वचन जन भयउ चकितअति

दोहा

सुनि विवेक मति सचिव तब, कहत भयउ कर जोरि ।
नाथ दशा अस भयउ कस, निरखि मोरि मति भोरि ॥२२॥

सोरठा

निर्मल हृदय सदैव, राउ भयउ कस मोह वश ।
करत काह कब दैव, जानि न सक जन कबहुँ कोउ ॥४४॥

चौपाई

मोह विवश होवै व्यसनी जन नाथ सुकृति जन अति निर्मल मन
राउ महामति परम उदारा नहि समुचित अस मोह तुम्हारा

सावधान होइय अब नाथा करिय हमहिँ अवलोकि सनाथा
सावधान जब भउ नरपाला व्यपगत मोह भयउ तत्काला
सुमरि दशा निज अति मन माखे वाजीगरहिँ देखि नृप भाखे
अरे दुष्ट तुम का करि दियऊ छन महँ ज्ञान ध्यान हरि लियऊ
मरु मरीचि मृग धावत दीना तथा भयउँ मैं मोह अधीना
अकथनीय परमातम माया छन महँ अचरज चरित लखाया
नहि अचरज साधारण जन भ्रम ज्ञानवान अपि भये भ्रान्त हम
सभासदहिँ भाखत भउ नरपति यथा दृष्ट भउ कल्पित भ्रम अति
वाजीगर यह जानहु शम्बर छन महँ हमहिँ बनायउ वनचर
छन महँ नाना देश भ्रमायउ द्वादश वत्सर छनहिँ बनायउ
छन महँ सृष्टि करत विधि जैसे भ्रम प्रपञ्च सिरजा यह तैसे
मोरपंख यह जबहिँ घुमायउ रवि कर इव सो हमहिँ लखायउ
दूत एक लायउ हय तहँमा हयारूढ़ हम भे तिहि लहमा
सो हय हमहिँ दूर लै गयऊ मायामय घटना यह भयऊ
दूर गमन जिमि मनोराज्यकृत दूर गमन तिमि उक्त अश्वकृत
रहा यथाथित मम यह देहू भासित चल इव नहि सन्देहू
प्रलय समय इव दग्ध भूमि जहँ हमहिँ गयउ लै उक्त अश्व तहँ

दोहा

महा भयंकर देश महँ, सो हय पहुँचा जाय।
अति निर्जन वन महँ गयउ, हेरत हिय हहराय ॥२३॥

करि न सकौं संकट कथन, सुनहु सचिव मतिमान ।
अति आकुल व्याकुल हृदय, मानहु निकसत प्रान ॥२४॥

सोरठा

तृण विहीन तरु हीन, केवल कंटकमय गहन ।
निरखि भयउँ अति दीन, रहा न प्राणी मात्र तहँ ॥४५॥

चौपाई

अस्ताचल सूरज चलि गयऊ अन्धकार मय दश दिश भयऊ
हमहिं कल्प सम भउ सो राती युग समान छन थिति दरसाती
कथमपि नीरव निशा बिताई भूतल थित निद्रा नहि आई
श्रुति गोचर विहंग रव भयऊ दृग्पथ तरु वल्ली परि गयऊ
पहुँचे उदयाचल सूरज जब किये पयान तहाँ ते हम तब
अन्न पान विरहित लखि भूमी भटके इत उत पुनि पुनि घूमी
दीखा एक जम्बु तरु तहँमा कछु विश्राम किये हम जहँमा
प्रलय समय जिमि वटतरु शरणा भउ मृकण्ड सुत पूजित चरणा
परिहरि हमहिं गयउ सो बाजी भयउ अदृष्ट ओट तरु राजी
भई निशा पुनि अति विकराला अकथनीय भय संकुल काला
अन्न पान विरहित अति दीना होन लगी मारुत गति छीना
रजनी भई कल्प सम ताता कथमपि कथमपि भयउ प्रभाता
क्षुधा पिपासाकुल आतुर अति पुनिपुनि भटकत भयउ मन्दगति
रहा अर्ध प्रहरावधि दिवसा भयउ प्राण मम संकट विवशा
तदा एक नारी तहँ देखेउँ भइ आशा निज भाग्य सुलेखेउँ

जम्बू रस ओदन भरि थाली कर धरि जात रही सो काली
सम्मुख तासु भयउँ हम कैसे रजनी सम्मुख हिमकर जैसे
कहे ताहि हम भोजन देहू जीवन दान पुण्य अब लेहू
बोली तब सो कुत्सित नारी अहौँ नीच चण्डाल कुमारी
नाना भूषण भूषित वेशा भासत आपु महान नरेशा
पितु हेतुक भोजन यह जानहु सो कस देउँ तुमहिँ अनुमानहु
बनि अवधूत पिता मम भूपा बसत मसान अतिहि कुरूपा
यदि मम भर्ता होहु महीपति अर्पित करौँ अन्न प्रमुदित मति
सत्य वचन हम करब विवाहा भउ असह्य जठरानल दाहा
अस कहि तहाँ अशन मैँ कियऊँ विधिवश तासु ग्रहण करि लियऊ
मनहिँ अन्नमय भन निगमागम कुत्सित भोजी कुत्सित मन हम
राजकीय थिति गई भुलाई काल कठिन गति रोकि न जाई
गई लिवाय मोहि पितु पासा प्रकट कियउ वैवाहिक आसा
हमहिँ लिवाय गयउ पुनि निजघर लखि सो थल काँपेउ हिय थरथर
अस्थि मांस अरु शोणित संकुल चर्मराशि लखि भउ मन आकुल
पुनि निज जननी ढिग लै गयऊ समाचार सब भाखत भयऊ
शुभ परिणय वासर जब आयउ निज परिजन चण्डाल बुलायउ
रीति कुलोचित करि चण्डाला कन्या दान कियउ शुभ काला
दान दहेज कुलोचित दियऊ दिवस सात उत्सव सो कियऊ
भे चण्डालन कर सरदारा तहँ हम पृथक बनाय अगारा
गर्भवती सो भइ चण्डाली जनैमी कन्या कज्जल काली

वत्सर तीनि बीति जब गयऊ पुत्र एक पुनि जनमत भयऊ
समय पाय बाढ़ेउ परिवारा मोह जाल कर भउ विस्तारा
भयउ तीनि दौहित्र हमारा तीनि पौत्र आदिक परिवारा
यथा जाल महँ बझत विहंगा बझे हमहुँ तस लहि तसु संगा

दोहा

काल कुटिल गति अति प्रबल, रोकि सकत नहि कोइ ।
राज भाव परिहरि भयउँ, घृणित धर्म निज खोइ ॥२८॥

सोरठा

अकथनीय मम कष्ट, सुनत सुनावत शोकप्रद ।
भयउँ सबहि विधि भ्रष्ट, मोह विवश माया जनित ॥४६॥

चौपाई

इन्धन तोड़ि लादि शिर ऊपर भटके सहि आतप असह्यतर
नग्नचरण कण्टक वन भटके हिंस्र जन्तु लखि जहँ तहँ हटके
रुधिर आर्द्रतर वस्त्र पुराना भउ दुर्भाग्य कलित उपधाना
कुक्कुट प्रभृति मांस आहारा भयउ रुधिर तसु पान हमारा
जाल बिछाय विहग वध कर्ता कच्छप मीन प्रभृति संहर्ता
ग्रीषम काल ग्रीष्म दुख भोगी शीतल समय शीत उपभोगी
कियउँ विविध विध नीच कुकर्मा सम्पति मांस अस्थि अरु चर्मा
कलह परस्पर कियउँ दिवस निशि भटकेउँ हिंसा हेतुक चहुँ दिशि
सहत क्लेश कत भउ कृश गाता जरा श्वेत कच विगलित दाँता

वास मसान मांस आहारा कुत्सित वैतालिक आचारा
एवं विध बहु काल बितायउँ कबहुँ शान्ति सन्तोष न पायउँ
यद्यपि जरा पिशाची पहुँची तदपि न तृष्णा तरुणी सकुची
तृष्णा क्षुद्र नदी इव बाढ़ी धन परिजन विषयक रति गाढ़ी
भयउ अवर्षण जनित अकाला प्रजा विकल आतप विकराला
अन्न पान बिनु भई दुखारी क्षुधा तृषातुर जनता सारी
वन तरु लता दग्ध ह्वै गयऊ तजि गृह जन देशान्तर गयऊ
लागे होन उपद्रव नाना धन परिजन कर कौन ठिकाना
चर अरु अचर मृतक कत भयऊ प्रलय काल मानहु नियरयऊ
नहि उत्थान शक्ति जन माहीँ कथमपि उठत भूमि गिरि जाहीँ
परिजन सहित गये हम तहँमा भउ अवगत सुभिक्ष थिति जहँमा
तहाँ जाय पुनि अन्न विहीना इत उत भटकत भे अति दीना
मनुज मनुजकर भक्षण करई अन्नहीन परिजन परिहरई
पुत्र कनिष्ठ निकट मम आयउ पुनि पुनि आरत वचन सुनायउ
देहु मांस पितु भोजन करिहौँ न तरु अन्न बिनु तनु परिहरिहौँ
अहै न मांस कहे हम जबही रोवत हिचकत कह सो तबही
जहाँ तहाँ ते लावहु अन्ना हे पितु निकसत प्राण निरन्ना
मांस मोर भक्षण सुत करहू असह बुभुक्षा दुख परिहरहू
गृहिजन कर यह मोह पुरञ्जन प्राणहुँते अति प्रिय सन्तति जन
पुत्र कलत्र आदि जत भावा ममता भाजन मोह प्रभावा
जिमि विश्राम वृक्ष तल नाना टिकत पथिक कत छन परिमाना

बिछुरत पुनि तसु संगम नाहीँ तिमि मृत जनकर लखु हियमाहीँ
मैँ मैँ करत मोह मद माता मोर मोर कहि जोरत नाता
मिलत न पुनि यह भंगुर देहा नहि यह परिजन जहँ अति नेहा
प्राण रहित तन मृतक कहावत परसत होत अशुचि श्रुति गावत
मृत्युञ्जय पद पंकज सुमिरत लहत अमरपद विषय अनभिरत
भयउ कछुक प्रासंगिक वर्णन पुनि कर्तव्य प्रकृत आकर्णन
भाखत भयउ बहुरि सो राजा श्रवणोत्सुक सब सभ्य समाजा
देहु मांस निज इति सुत वचना कियउँ विमूढ़ चिताकर रचना
अग्नि प्रवेश कियउँ तहँ जबही कम्पित इहाँ भयउ तन तबही
तब कछु सावधानता आई कम्पित हमहिँ गहे तुम भाई
पुनि अत्रत्य दृश्य सब देखे सभ्य समाज तुमहिँ हम पेखे
अद्भुत दृश्य दृष्ट अस भयऊ अघटित विषय घटित ह्वै गयऊ
यह अघटित घटना पटुता जो अवगत भयउ हमहिँ कटुता सो
मार्कण्डेय नाम मुनिराया जिमि माया वैभव लखि पाया
हमहुँ तथा लखि मायिक रचना भाखहिँ विश्व मृषा इति वचना

दोहा

भयउ सभा प्रकृतिस्थ जब, मायिक अन्तर्द्धान ।
लखि माया यह सभ्य जन, विस्मय सिन्धु समान ॥२६॥

सोरठा

गउ पुनि ताहि प्रदेश, संदल सानुचर लवण नृप ।
भोगे जहाँ कलेश, बनि चण्डालीपति विवश ॥४७॥

चौपाई

जो थिति मूर्छा महँ नृप देखी तद्वत् तहाँ जाइ पुनि पेखी
भउ अकालकर तव जस भाना तादृश अबहुँ ज्ञान नहि आना
कानन सोइ नगर पुनि सोई जनता सोइ भेद नहि कोई
रोदन करत विविध विध तहँमा पत्नी-मातु लखी तिहि लहमा
पूछे नृप तसु रोदन कारण कहत भई सो करि निर्धारण
भउ दुर्भिक्ष समय अति भीषण पीड़ित व्याकुल नरनारी गण
मम पुत्री जामाता मोरा क्षुधा विष्ट धाये इक ओरा
दौहित्रादि गयउ तसु साथा हम इहँ विपदा ग्रस्त अनाथा
काल कलित सब भउ दुख पाई दीखत मोहि न कोउ सहाई
शोक विवश सुधि बुधि बिसराई असह आधि अब नहि सहि जाई
वत्स विहीना धेनु दुधारी जिमि व्याकुल तिमि दशा हमारी
सुनि विस्मयापन्न ह्वै राजा निरखत भउ निज अनुग समाजा
देखत सुनत रहेउ ठकि सोऊ भासित भउ थिति ऋत इव दोऊ
नृप नारिहिँ बहु धीरज दीन्हा अरु कछु दिन निवास तहँ कीन्हा
बहु धन देइ कियउ प्रस्थाना पहुँचे अनुग सहित स्वस्थाना

दोहा

सुनत शिष्य विस्मित अतिहि, पूछत भउ कर जोरि ।
अतिशय अद्भुत चरित यह, संदिग्धा मति मोरि ॥२७॥

सोरठा

अचिरकाल चिरकाल, मूर्छा अरु वनवास कर ।
एक व्यक्ति इक काल, भउ कस वनचर अरु नृपति ॥४८॥

चौपाई

स्वप्न दशा गुरु भई सत्य कस शिष्य पुरञ्जन पूछत भउ अस
भाखत भउ सुनि गुरु सर्वज्ञा शिव कृपया निर्मल जसु प्रज्ञा
यथा वासनामयी स्वप्न थिति तथा अविद्यामयी विश्व थिति
बुद्धि विपर्यय यथा स्वप्न गत बुद्धि विपर्यय तथा मोह गत
मूर्छा उत्तर काल मृत्यु थिति भाखत निगमागम पुराण इति
श्रुति मत यथा वासना ताता जाग्रत स्वप्न भान दरसाता
द्विविध वासना आविर्भावा निज कल्पित पर कल्पित भावा
अबलहिं प्रबल वासना व्यापत ऐन्द्रजालिकी थिति भरमावत
अग्नि अनभिज्ञ विज्ञ इव भाखत पर संकल्प प्रभाव लखावत
विस्मृत आत्मतत्त्व अज्ञानी सदिव असत् देखत अभिमानी
असतहिं सदिव अविद्या करई सदपि असत् इव कबहुँ न फुरई
जिमि विपरीत मद्यपी पेखत जिमि विपरीत भ्रान्त जन देखत
तिमि विपरीत लखत अज्ञानी अहमिति मति नित लहत गलानी
मायाकृत संकल्प प्रभावा लवणहिं तादृश दृश्य दिखावा
इतर व्यक्तिगत तादृश घटना लवणहिं भासित भउ जस अपना
यादृश मति तादृश गति लहई निगमागम सम्मति अस अहई
राजसूय मख कारक जोई द्वादश वर्ष दुखी अति होई

राजसूय करि लवण महीपति पायउ तादृश संकल्पित गति
एतद्विषय निदर्शन राजा हरिश्चन्द्र पाण्डव महराजा
जानि लवण भावी दुख एहू अमरावतिपति सहित सनेहू
शाम्बरिकहिँ द्रुत तहाँ पठावा सो नृप हिय संकल्प उठावा
ताते भयउ चरित यह ताता नहि मानहु अचरज यहि बाता
माया रचित चतुर्दश लोका आपुहिँ भूलि लहत जन शोका
भासत दृश्य स्वप्न इव एहू माया मात्र न कछु सन्देहू

दोहा

अपर कथानक सुनहु पुनि, माया रूप अनूप ।
माया परिचय लहत जन, परत न पुनि भवकूप ॥४८॥

सोरठा

हरि सन मार्कण्डेय, कियउ एकदा यह विनय ।
जय जय जय जगदीश, लखन चहउँ माया विभव ॥४९॥

चौपाई

नदी पुष्पभद्राकर तीरा मुनिवर तेजोदीप्त शरीरा
सन्ध्या समय एक दिन ताता समासीन भउ सुस्थिर गाता
चलेउ तहाँ तब चंड प्रभञ्जन कियउ तुरत मुनि नयन निमीलन
चहुदिश धूलीमय ह्वै गयऊ मेघाच्छन्न गगन तल भयऊ
वृष्टि भयंकर मूशल धारा बाढ़ी नदी न सूझ किनारा
चतुर्णव एकार्णव भयऊ समय युगान्त प्रतिम ह्वै गयऊ
तीनिहु भुवन मग्न भउ जलमहँ एकाकी उबरे सो मुनि तहँ

जड़ अरु अन्ध सरिस सो मुनिवर विवश बहे जल महँ व्याकुलतर
क्षुधा पिपासा पीड़ित प्रतिपल मरणासन्न भयउ अति निर्बल
मकर तिमिंगिल आदि उपद्रुत प्रति पल पवन वीचिरय विद्रुत
अन्धकारमय दश दिश दीखे है अति त्रस्त मुनीश्वर चीखे
महावर्त आकर्षित कबहूँ घोर तरंग विताड़ित कबहूँ
जलचर भक्ष्यमाण भउ कबहूँ विभ्रम अयथा कृत दिश सबहूँ
नहि आकाश भूमिकर ज्ञाना परिश्रान्त निज कर्म भुलाना
शोक मोह मुनिवरहिँ सतावा व्याधि पराभव बहु विध पावा
कबहिँ मरहिँ अरु जीवहिँ कबहीँ मायाकृत कारज यह सबही
कोटि कोटि वत्सर गउ बीती माया कल्पित अद्भुत रीती
प्रवहत-विवश एकदा सोऊ निरखे तरु वट संज्ञक जोऊ
फल-पल्लव-छाया-परिशोभित तदुपरि शिशु लखि भयउ विमोहित
निद्रित पर्णपुटक महँ शिशु सो निज प्रकाश तमराशि ग्रसत जो
नील जलद रुचि कमल विलोचन अति सुन्दर मनसिज मद मोचन
कर अंगुलि धृत पद अंगुठ सो मुख धरि चाटत थित युग युग जो
चकित मुनीश विलोकि अतुलछवि भासमान जिमि सहसाधिक रवि
दरस पाइ तसु लहि विश्रामा भउ मुनिवर परिपूरित कामा
पूछन हेतु कछुक मुनि राया पहुँचे तासु निकट कृश काया
तहँमा शिशु प्रश्वास वेगवस उदर मध्य तसु गये मशक अस
भीतर उदर लखे मुनि राया यथापूर्व ब्रह्माण्ड निकाया
सकल भूत भौतिक तहँ देखे स्वर्ग मर्त्य पातालहुँ पेखे

द्वीप खण्ड अरु खण्ड विभागा यथापूर्व लखि अचरज लागा
देश प्रदेश ग्राम नगरादिक यथापूर्व वर्णाश्रम आदिक
निज आश्रम अपि देखे तहँमा कियउ तपस्या मुनिवर जहँमा
हिम गिरि पुष्पवहा जसु नामा लखी निम्नगा अति अभिरामा
निज आश्रम समीप मुनि आये यथापूर्व सब दृश्य लखाये
तर्क वितर्क करत मुनि भयऊ माया लखि विवेक बल गयऊ
पुनि प्रश्वास तजा शिशु जबही प्रलय पयोधि पतित मुनि तबही
वट वृक्षोपरि पर्ण पुटक महँ पेखि पुनः शिशु विस्मय मुनि कहँ
शिशु सन्निध पहुँचे मुनिराया कछु प्रष्टव्य हृदय महँ आया
प्रेमालिंगन इच्छुक मुनि जब अन्तर्हित शिशु होत भयउ तब
अन्तर्हित अपि प्रलय पयोदधि दीखा अस माया विभवोदधि
निजआश्रमथित मुनि पुनि भयऊ जगदसदितिमति दृढ़ ह्वै गयऊ

दोहा

प्रभु संस्तुति पुनि पुनि कियउ, मार्कण्डेय मुनीश ।
पावत प्रभु अनुकम्पया, माया पार अनीश ॥२९॥

सोरठा

सुनि गिरिजा इतिहास, माया परिचायक विविध ।
भाखी करि मृदु हास, राउर लीला जगत यह ॥५०॥
राउर भजन प्रताप, जानत जन मायिक जगत ।
मिटत त्रिविध सन्ताप, मानत प्रभुहीं ज्ञान घन ॥५१॥

होत असत्ता बुद्धि, दृढ़तर माया विषयिणी ।
अहंकार दुर्बुद्धि, बिनसत संसृति बीज तब ॥९२॥
भइउँ कृतारथ नाथ, प्रभु वचनामृत पान करि ।
केवल पद तसु हाथ, पावत माया ज्ञान जो ॥९३॥

चौपाई

शिष्य पुरञ्जनहीँ हरखाई भाखे गुरु शिव पद शिर नाई
माया जलधि तरत जन जोई लह कैवल्य पदारथ सोई
शब्द कलश घट जिमि पर्याया तिमि माया अज्ञान कहाया
अस निगमागम सबहि बताया अरु गायउ नाना मुनिराया
पाइ ज्ञान बिनसै अज्ञाना यह सब कहँ प्रतच्छ परमाना
नहि कैवल्य ज्ञान बिनु संभव गुरु करुणा बिनु ज्ञान असंभव
जन्म अनेक यत्न करि नाना विरल व्यक्ति पावत अस ज्ञाना
रज्जु भान रज्ज्वहि कर वारक ब्रह्म भान संसार निवारक
आतम रूप ब्रह्म पहिचानै आतम रूप चराचर जानै
चिदतिरिक्त मायामय जानै सोइ ज्ञान निगमादि बखानै
जहाँ न द्वैत द्वन्द्वकर लेशा जहाँ न जनि मृति आदि प्रवेशा
पशुपाशीय जहाँ नहि बन्धा सोइ ज्ञान तद्विरहित अन्धा
घृणा तथा लज्जा अरु त्रासा शोक जुगुप्सा पञ्चम पासा
वंश शील अरु जाति प्रसिद्धा अष्ट पाश भन पण्डित वृद्धा
पाशबद्ध संसारी जीवा रहितपाश प्रभु श्यामलग्रीवा

प्रभु अनुकम्पा भाजन जेवा पावहिँ ज्ञान पदारथ मेवा
तिन कहँ पाश मुक्त तुम जानहु शिव अभिन्न तिनकहँ तुम मानहु
पाश जुगुप्सा निन्दा अर्थक करत मानसहिँ मलिन निरर्थक
घृणा त्रपा अरु शोक समाकुल संसारी जन आकुल व्याकुल
कुल अभिमान मत्त इव करई कबहुँ न विज्ञ शील परिहरई
शील अनिच्छित कारज कारक सहसा तासु न कोउ निवारक
मादक द्रव्य जाति अभिमाना करि विक्षिप्त हरत जो ज्ञाना
अन्तःकरण अशुद्धि जहाँ लौं इहँमा अन्तर्भूत तहाँ लौं
पाशवद्ध पशु इव सब प्रानी पाशजन्य सब क्षोभ गलानी
जब अध्यात्म ज्ञान जन पावै पाश आपुहीँ दूर दुरावै
गुणमय पाश निबन्धन कारण अगुण ज्ञान तसु करत निवारण
चर अरु अचर वस्तु जग नाना वस्तु सच्चिदानन्द अनाना
पाश बन्धकर तहाँ न अवसर बन्धन तो अज्ञान पुरस्सर
ज्ञान पाइ अज्ञान दुराई बिनु बूझे गुण उरग न जाई
कोटि कर्म करि थाकै कोई नहि अज्ञान निवारण होई
रज्ज्वहि भ्रम बिनसै नहि तद्यपि दण्डाघात आदि कृत यद्यपि
अस पुनि भाखत भउ शशिभाला सुनहु सुथिर चित गिरिवर बाला

दोहा

ज्ञान सरूप विचार अब, करौँ शास्त्र अनुसार ।
आगमादि गावत यथा, औपनिषद मत सार ॥३०॥

सोरठा

अद्वय चेतन भाव, अजर अमर सुखरूप शुचि ।
तासु अचिन्त्य प्रभाव, माया शक्ति अलौकिकी ॥५४॥
अनायास संसार, विरचत पालत अरु हरत ।
अनुपम अपरम्पार, सोइ ब्रह्म पद सोइ शिव ॥५५॥
सोइ ईश अरु जीव, नाम अवस्था भेद ते ।
विधि हरि श्यामलग्रीव, सोइ कहावत लीलया ॥५६॥
दिनपतिगणपतिआदि, देवी देवादिक सकल ।
यक्ष रक्ष उरगादि, कीट पतंगादिक सकल ॥५७॥
चर अरु अचर सरूप, भूत और भौतिक सकल ।
निज इच्छा अनुरूप, भासत सोइ अनेकधा ॥५८॥
स्वप्नावस्थ यथैव, भासत जीव अनेकधा ।
मायावस्थ तथैव, भासत ईश अनेक विध ॥५९॥
अनृत स्वप्नगत भान, आत्ममात्र ऋतवस्तु जिमि ।
मिथ्या मायिक भान, आत्ममात्र सद्वस्तु तिमि ॥६०॥
मनोमात्र संसार, मनोविलय थिति आत्मचिति ।
जन्म जरादि विकार, औपाधिक नहि आत्मगत ॥६१॥
गुणमय सब व्यवहार, निर्गुण निर्व्यवहार चिति ।
निष्कल सकलाधार, निराधार चिद्रूप सो ॥६२॥
कामादिक रिपु जाहि, परसत कवनिहुँ भाँति नहि ।
भाखतश्रुति तति ताहि, ब्रह्म सच्चिदानन्द तनु ॥६३॥

अद्वय थिति महँ देवि, अहंकार ममकार कस।
तुअ मम चरणन सेवि, दुर्लभ अद्वय बोध नहि ॥६४॥

छन्द

"नेह नाना अस्ति किञ्चन" आदि श्रुति वचनावली
अद्वयत्व प्रमापिका प्रति पक्ष मत खण्डन थली
मायिकी नानात्व घटना महा बन्धन कारणम्
स्वप्न भान अनेक जैसे अनृत इति निर्धारणम्

चौपाई

जाग्रत थिति महँ स्वप्न असत्ता ज्ञात होत केवल चिति सत्ता
ज्ञान दशा महँ जगत असत्ता ज्ञात होत केवल चिति सत्ता
चिति अतिरिक्त भान सबमिथ्या केवल चेतन भाव अमिथ्या
सर्वात्मत्व एकता बुद्धी करत निरस्त विभेद अशुद्धी
अहं ब्रह्म अस्मीति विचारा मेटत संसारित्व विकारा
निज ब्रह्मत्व विचार प्रसादा मिटत अहंकृतमय अवसादा
ब्रह्म मात्र सत्ता सब ठामा तहँ कस अहंकार इति नामा
ब्रह्म सच्चिदानन्द सरूपा तहँ कस कल्पित दुख बहुरूपा
तसु कस नरकादिक भय होई निराकार निरुपाधिक जोई
तसु कस जनिमृति आदिक भीती अजर अमर भन जिहि श्रुतिगीती
तसु कस भूत भौतिकाघाता जसु नभहूँ ते सूक्षम गाता
छेदन दाहादिक कस तासू अपरमाणुता भन श्रुति जासू
लाभ अलाभ मान अपमाना कस तसु जो अमूर्त भगवाना

कामादिक सम्पर्क न तासू नित्य तृप्तता भन श्रुति जासू
अपयश सुयश न सम्भव तहँमा क्रिया मात्रकर पहुँच न जहँमा
जीव ईश अरु ब्रह्म अभेदा निर्विशेष चितिगत कस भेदा
सकल विशेषण माया भासित ज्ञानी जनहिँ अनृत अवभासित
लहि एवं विध विमल विचारा व्यपगत दुखमय संसृति भारा
व्यपगत ताप त्रितय कृत दाहा निरवधि सुख नीरधि अवगाहा
कर्ता कारयिता परमेशू कठपुतली इव जीव अनीशू
हम कर्ता इति बुद्धि अविद्या रहत न जब हिय विकसत विद्या
सत्त्वरजस्तम तीन प्रकृति गुण तत्कृत कर्म अकृति थिति निर्गुण
भोक्ता हम इति बुद्धि अविद्या भोगाभाव भान थिति विद्या
औपाधिकी कर्तृता आदिक तथा भोक्तृता भन निगमादिक
उदित प्रबोध भानु जब ई दृक कर्म भोग अवसर तब की दृक
कर्मभोग बिनु देह न होई केवल चिति सदेह कस सोई
परसत यथा न धूली पवनहिँ यथा न परसत ग्रहगण गगनहिँ
नहि चिद्वस्तु देह सम्बद्धा अहमिति अभिमति जीव निबद्धा
अहं ब्रह्म इति अनुसन्धाना करत करत करगत निर्वाना
ब्रह्मरूपता विकसत जबही सहजानन्द शान्ति सुख तबही
करि देहाभिमान यह प्रानी भोगत देह धर्म अज्ञानी
घटीचक्र इव भ्रमत निरन्तर नहि विश्राम लेश लव अवसर
आपुहिँ देह पृथक जब जानत कर्तव्यता भार नहि मानत
उपजत शान्ति मिटत उद्वेगा मिटत अहंकृति उत्थित वेगा

अहंकार उद्वेग निरासा करत शान्ति सन्तोष विकासा
जिमिदरिद्रनिधिलहिअतिप्रमुदित तिमि लहि आत्मज्ञान आनन्दित
पाइ परसमनि पूरित कामा ज्ञान पाइ निस्पृह निष्कामा
पावत आत्यन्तिक विश्रामा स्वयंतृप्त तुच्छीकृत कामा
उक्त अवस्थिति परिचय जोई आतमज्ञान कहावत सोई
नाहमस्मि अरु नमे इमे इति दृढ़ परतीति विशुद्ध ज्ञान थिति
नाहं कर्ता भोक्ता इति मति जानहु उमे विशुद्ध ज्ञान थिति
अद्वय अभय अनामय पर चिति इति परतीति विशुद्ध ज्ञान थिति
अद्वय चिति विवेक जब विकसत अज्ञानोत्थित द्वय भय विनसत
नाम रूप आदिक नाना मति मिटत होत निर्मल अद्वय थिति
एतादृश परिशुद्ध अवस्था नासत संसृतिकृत दुरवस्था
निराकार निर्गुण निरुपाधी पहुँचत तहँ न आधि अरु व्याधी
मायामय प्रापञ्चिक भेदा उपजावत नाना विध खेदा
अद्वय थिति विज्ञान प्रसादा मेटत प्रापञ्चिक अवसादा
ब्रह्म भिन्न यत्किञ्चिद् वस्तू जानहु प्रिये सदैव अवस्तू

दोहा

आत्मतत्त्व द्रष्टा कथित, दृश्य प्रपञ्च पसार ।
उभय बीच पार्थक्य मति, दृढ़ता विमल विचार ॥३१॥

सोरठा

ज्ञानी जनहिँ प्रतीति, उपजत ई दृक् पुण्य फल ।
यह रहस्य श्रुति गीति, गावत कोऊ विरल जन ॥६५॥

चौपाई

तीनिहुँ काल अनृत संसारा । ऋत केवल परचिति सुखसारा
मन वच लोचन गोचर जेते । प्रिये अनृत मायामय तेते
भेदक सकल विशेषण मिथ्या । निर्विशेष चिति मात्र अमिथ्या
तहँ कस भेद भावकर अवसर । तहँ कस खेदाभाव अनवसर
एवंविध प्रबोध जब उपगत । हृद्गत ग्रन्थि अञ्जसा अपगत
संशय होत छिन्न सब तासू । हृदय ग्रन्थि दृढ़ अपगत जासू
क्षीण होत सब कर्म कलापा । जब जानत जन आपुहिँ आपा
निराकार निर्मल सुखरूपा । श्रुति उद्घोषित आत्म सरूपा
मनोवृत्ति उत्थित सुख दुःखा । मनोवृत्ति जित होत अदुःखा
मनोवृत्ति जब होत निरुद्धा । तब अवशिष्ट आत्म थिति शुद्धा
मानस वृत्ति निरोध अवस्था । परिचय होत मिटत दुरवस्था
सकलै विकार विवर्जित रूपा । सदा एक रस आत्म सरूपा
शान्ति सदन संसृति भय भञ्जन । आतम रूप सदैव निरञ्जन
औपाधिक नाना विध धर्मा । आत्म तत्त्व निर्गुण निर्धर्मा
प्रकृति गुणोत्थित संसृति एहू । अहंकार कृत नहि सन्देहू
अद्वय तत्त्व अहंकृति वर्जित । प्रकटत कर्मवासना भर्जित
जब प्रकटत अद्वय सुखरूपा । सूझत दुखमय संसृति कूपा
निर्वासनिक बुद्धि तब विकसत । दुखमय विषय वासना बिनसत
निर्वासनिक पवित्र अवस्था । ज्ञान दशा इति वेद व्यवस्था
जननी जनक धन्यतम तासू । निर्वासनिक अवस्था जासू

प्रिये वासना संसृति जानहु निर्वासना मोक्ष थिति मानहु
प्रिये वासना दृढ़तर जोऊ गुरुवर कृपया बिनसत सोऊ
श्रुति आचार्यवान् इति बानी गुरु बिनु ज्ञानासिद्ध बखानी
बिनु गुरु दया असम्भव ज्ञाना बिना ज्ञान संसृति भ्रम नाना
आतम ज्ञान जन्य निर्वाना तदितर मोक्ष मार्ग नहि आना

छन्द

हम संसारी हम व्यापारी आचारी हम ई दृग् बुद्धी।
जानहु गिरिबालिके अविद्या संसृति कारण हृदयाशुद्धी॥
सच्चित् सुखमय ब्रह्मरूप हम नित्यमुक्त हम ई दृग् बुद्धी।
गिरिवर कन्ये जानहु विद्या ज्ञान नामिका हृदय विशुद्धी॥

दोहा

ज्ञान पदारथ लहत जन, व्यपगत जग जंजाल।
महाकाल हौं मम शरण, कबहुँ न कवलित काल॥२॥

सोरठा

पुनरपि ज्ञान विचार, गिरि नन्दिनि भाखौं विशद।
निराकार आकार, ज्ञानगम्य निर्विषय थिति॥६॥

चौपाई

चिति सरूप निर्विषयाकारा सच्चित् सुखमय जगदाधारा
सर्वं खलु इति वैदिक उक्ती उदाहरण तहँ रूपक शुक्ती
मन वच लोचन गोचर जेते ब्रह्मरूप तुम जानहु तेते
वास्तव रूप निराकृति जानहु मायाकल्पित साकृति मानहु
एवंविध विवेक अभिधाना ज्ञान पदारथ भन मुनि नाना

सर्वात्मैक्य वस्तु जन जानत   द्वैतभाव मायामय मानत
तुम हम वह यह भेद निवृत्ती   एकाकार विकास प्रवृत्ती
न्यस्तभार निर्व्यग्र निरन्तर   शान्ति रसास्वादन अभ्यन्तर
अयथावत् लौकिक व्यवहारा   बालोन्मत्त सरिस आचारा
प्रारब्धानुसार सञ्चारा   प्रारब्धानुसार आचारा
प्रारब्धानुसार सब भोगा   चिन्मय चिदाभास संयोगा
घटाकाश अरु महाकाश इव   एक पदारथ जीव और शिव
घट परिकल्पित गगन विभेदा   औपाधिक चैतन्य विभेदा
नहि समाधिगत भेद प्रतिष्ठा   योग प्रसाद लभ्य यह निष्ठा
एतादृशी अवस्था जोई   प्रिये ज्ञान थिति जानहु सोई
इन्द्रियादि निज निज कृतिकारी   नहि मम उपकारी अपकारी
सदा एकरस सच्चित् सुखमय   हमहिं न परसत माया आमय
धर्माधर्म लेप नहि कथमपि   करत विघ्न यद्यपि मानस कपि
इन्द्रिय मानस बुद्धि पृथक् थित   हम निर्माय अनामय परचित
कर्म अकर्म विकर्म विभेदा   हमहिं न देत तनिक अपि खेदा
नहि सुषुप्तिगत नहि समाधिगत   परसत हमहिं उपाधि धर्म जत
परसत धूली नभहिं न जैसे   परसत हमहिं प्रपञ्च न तैसे
गगन असंग निराकृति जैसे   हमहुँ असंग निराकृति तैसे
अहंकारवश विषय विषादा   अज्ञानी पावत अवसादा
अहंकारकर अवसर कहँमा   एकात्मत्व ज्ञान थिति जहँमा
एतादृश विवेक अभिधाना   ज्ञान पदारथ भन मुनि नाना

ईश्वर प्रेरित प्रकृति कलित कृति उपजावत हिय शान्ति बुद्धि इति
भावी गति अन्यथा न होई कोटि यत्न करि थाकै कोई
एवं विध विचार परकासा करत व्यग्रता चिन्ता नासा
उदासीन मति व्यथा विहीना सुख दुख समरस कबहुँ न दीन्ना
हानि लाभ यश अपयश जेते निज कृति परिणति मानत तेते
ई दृक् रूपा बुद्धि अवस्था ज्ञानदशा इति वेद व्यवस्था
कहँ लगि करौं ज्ञान व्याख्याना आत्मरूप परिचय इति ज्ञाना
नित्य शुद्ध चैतन्य ब्रह्म जो श्रुति उद्घोषित आत्मरूप सो
निराकार अरु सर्वाकारा आत्मरूप इति वेद विचारा
सर्वाकार मायया कल्पित निराकार सर्वदा अकल्पित
नाम रूप प्राकृतिक विधाना नाम रूप विरहित भगवाना
अनवच्छिन्न अभिन्न अनन्ता आत्मरूप इति भाखहिं सन्ता
आत्मरूप निर्विषय अवस्था केवल चिति इति वेद व्यवस्था
इन्द्रियादि सञ्चालक जोई आत्मरूप श्रुति घोषित सोई
सर्वशक्ति सर्वेश्वर साक्षी स्व-स्वरूप सम्पन्न असाक्षी
यह रहस्य जानत जन सोई योगारूढ़ शान्त मति जोई
आत्मरूप वर्णन दिग्दर्शन कियउँ कछुक जसु ज्ञापक दर्शन
आत्मरूप वर्णन परिशीलन गिरिवरनन्दिनि संसृति कीलन

दोहा

उत्सुक मन गिरिकन्यका, पूछत भइ करु जोरि।
साधन ज्ञान पदार्थकर, कहु प्राणेश बहोरि ॥३३॥

सोरठा

विदित नाथ सर्वज्ञ, कारुणीक करुणानिलय ।
जानि विश्व अल्पज्ञ, करि करुणा वर्णन करिय ॥६७॥

चौपाई

बिहँसि सदाशिव भाखन लागे करुणाकर करुणा परि पागे
साधन बहु विध वेद बतावत कहत कोउ तसु पार न पावत
साधन सारभाग कछु भाखौं निगमागम मर्यादा राखौं
गुरु विश्वास जासु हिय माहीं ज्ञान सिद्धि तसु दुर्लभ नाहीं
गुरु बिनु ज्ञान होत नहि तबहूँ बहु साधन तत्परता जबहूँ
गुरु उपदिष्ट मार्ग आरूढ़ा जानत आत्म तत्त्व अति गूढ़ा
गुरुवर आश्रय आदिम साधन तदनन्तर उपास्य आराधन
गुरु देवता प्रसाद प्रसाधन गिरिनन्दिनि सर्वोपरि साधन
तदनन्तर षड्विध सम्पत्ती शम दम अरु उपरति प्रतिपत्ती
सहनशीलता समाधान पुनि अन्तिम साधन श्रद्धा भन मुनि
मुख्य विवेक विरति अभिधाना ज्ञान प्रसाधन वेद बखाना
नित्य और नैमित्तिक कर्मा प्रायश्चित्त विधायक धर्मा
सकाम तथा फल इच्छा वर्जित सात्त्विक कर्म कर्म अघ भर्जित
बुद्धि शुद्धि करि मेटहिं खेदा इनहिं ज्ञान साधन भन वेदा
जप स्वाध्याय देवता अर्चन हृदय विशोधक पितर समर्चन
तीरथ व्रत तप संयम नाना हृदय विशोधक वेद बखाना
शोधित हृदय होत जब साधक हटत काम क्रोधादिक बाधक

उपजत श्रवणादिक अधिकारा आत्म प्रकाशक शुद्ध विचारा
श्रवण मनन अरु निदिध्यसन भन साधन आत्म प्रकाशक मुनिजन
आत्म प्रकाशन ज्ञान अभिन्ना शब्द भेदकृत भासत भिन्ना
गुरु मुख वेद वाक्य आकर्णन श्रुति श्रवणाभिधान साधन भन
युक्ति सहित श्रुत वस्तु विचारा संशय दूरीकरण प्रकारा
साधन मनन कहत निगमागम उपकारक तहँ विज्ञ समागम
संसारिता प्रतीति निरासा ब्रह्मात्मत्व प्रतीति विकासा
उक्त विकास प्रवाही करणा निदिध्यसन भन पूजित चरणा
तैल धार इव प्रत्यय धारा चिर थित अनवच्छिन्नाकारा
आत्मतत्त्व साक्षात्कृति कारक संसारित्व पराभव वारक
आत्मतत्त्व साक्षात्कृति ज्ञाना एक वस्तु भाखत मुनि नाना
स्वाराज्याधिपता कर प्रापक ज्ञान अतीन्द्रिय आत्म प्रमापक
गुरुवर कृपया ज्ञान पदारथ पावत यह सिद्धान्त यथारथ
ज्ञानी जनहिं हमहिं नहिं भेदा ब्रह्म विदित श्रुति विदित अभेदा
पुण्य पुञ्ज समुदय जब होई ज्ञान पदारथ पावत कोई
नहि अवशिष्ट लभ्य कछु ताको ज्ञान पदारथ हृदिगत जाको
कहत कहत भउ प्रभु मीलित दृक् ध्यावत किमपि अतीदृक् ईदृक्

दोहा

जगदम्बा कृत कृत्यता, पाइ परम हरषाय ।
सविनय पूछत भइ बहुरि, प्रभुपद युग शिर नाय ॥३४॥

सोरठा

प्रभु वचनामृत पान, करत पिपासा बढ़त पुनि ।
विरति सरूप बखान, सुनन चहौं कीजिय कृपा ॥६८॥
धिरति और अभ्यास, मनो निरोधक श्रुति विदित ।
मनोजन्य अध्यास, मिटत न मनोनिरोध बिनु ॥६९॥

चौपाई

प्रिया वचन सुनि प्रभु हरषाये जय जय धुनि प्रमथादि सुनाये
भाखत भयउ अमिय इव बानी सर्वाधिपति सर्व विज्ञानी
अति उत्कृष्ट प्रश्न तुअ एहू शान्ति सुखावह नहि सन्देहू
विरति महातम मुनिजन गावत निगमागम इतिहास सुनावत
करौं कछुक संक्षिप्त प्रकारा विरति कथन श्रुति मत अनुसारा
विषम विषय विष अति दुखदायी सकल अनर्थ मूल श्रुति गायी
विषयासक्ति बद्ध सब कोई करत अकृत्य अन्ध इव होई
सुत वनिता धन सम्पति जेते क्षणभंगुर शोकावह तेते
निज हित हेतु हितू सब कोई निष्कारण हित शंकर जोई
दीन दयालु दीन दुखहारी निष्कारण हित हर त्रिपुरारी
अर्जन रक्षण व्यय अवसर जब अरु विनाश अवसर आगत जब
देत सर्वदा विषय पराभव मोह अन्ध मानत नहि परिभव
ईर्ष्या द्वेष काम क्रोधादिक कृत कलहादि लब्ध क्षोभादिक
संकटपूर्ण होत यह जीवा विषयी विस्मृत श्यामल ग्रीवा
करत कामवश कुकृति अनेका उपजत कबहुँ न हृदय विवेका

राज समाज दण्ड बहु भाँती दारिद दहन दग्ध दिन राती
दुसह गलानि पाइ अपमाना अहमिति मति तद्यपि अभिमाना
इत अपयश कत संकट भोगा उत यमराज दण्ड आभोगा
सुत कलत्र आदिक परिवारा पालत कथमपि सहि दुखभारा
तसु प्रसन्नता हेतु विमूढ़ा करत अनेक कुकर्म निगूढ़ा
तदपि बन्धु बान्धव स्वारथरत करत ताहि अपमानित सन्तत
महामोह अन्धीकृत एहू अजर अमर मानत निज देहू
काल कराल अचानक आवत करत घात कछु देर न लावत
मूढ़ जीव यौवन अभिमानी निलज कुकर्मी गुरुअपमानी
अहंकार मद मत्त प्रमत्ता परदारा अनुरत उन्मत्ता
सहधर्मिणी सती अपमाना करत बिसरि यमदण्ड विधाना
पर सर्वस्व हरत करि छल बल देव पितर तजि उदरम्भरि खल
करत बन्धु-बान्धवहिँ उपेक्षा दुर्जन प्रिय दुर्व्यसन अपेक्षा
जरठ भाव जब पावत पापी परिजन अपमानित अनुतापी
जराजीर्ण अरु व्याधि वशीकृत रोवत अन्धीकृत वधिरीकृत
देही देह सिनेही गेही निशिदिन पोसत पालत तेही
चन्दन चर्चित करत कलेवर पहिरत नाना भूषण अम्बर
मैँ मैँ मोर मोर भन जाको पीवर करत हिंसया जाको
करत काल कवलित जब ताको होत मृतक संज्ञा तब ताको
विट कृमि भस्म अन्यतम रूपा होत शीर्ण यह घृणित सरूपा
मैँ मैँ करत मोह मद माता सुत वनितासे मानत नाता

प्राण पखेरू निकसत जबही प्रेत नाम सब राखत तबही
पुनर्मिलन संभव नहि तबहूँ कल्प कोटि शत बीतत जबहूँ
जरा पिशाची परसत जाको लुप्त होत इन्द्रिय बल ताको
श्रवण वधिर अरु लोचन अन्धा वर्धमान निशिवासर धन्धा
जरठ श्वान इव बलिभुक् सोई सुत वनितादि अनादृत होई
रुग्न पियत कटु तिक्त कषाया कहत शुग्न कटि निकट अपाया
गलित दन्त सित केश अशोभा तदपि न घटत वैषयिक लोभा
प्राणोत्क्रमण समय जब शिरपर कास श्वास घर्घरित कण्ठ स्वर
इन्द्रियमन निजनिजबलविरहित करि न सकत रक्षण परिजन हित
अंग सन्धि तब क्रम क्रम टूटत तदपि देह ममता नहि छूटत
शत शत वृश्चिक दंशन इव तब व्यथित अश्रुधारा उमड़त तब
मल अरु मूत्र लिप्त अति दीना अनुतापित हिय संज्ञा हीना
जब यमदूत दण्ड गहि धावत त्रस्त विवश मुख वचन न आवत
एवंविध दुख पावत मूढ़ा बिसरि आत्मचिति हृदय निगूढ़ा
अन्धकूप इव गर्भ प्रदेशा तहँ पावत नरकाधिक क्लेशा
शैशव थिति अपि दुखमय जानहु तहँ शिशु अतिशय परिभव मानहु
ज्ञान विहीन दीन दुख भोगी परवश पुनि पुनि नाना रोगी
पकड़न चहत भुजंगम कर ते गिरन चहत पर्यङ्क उपर ते
क्षुधा तृषातुर रोदन तत्पर जोहत जननी मान्त्रिक घर घर
एवंविध दुख पावत बालक होत काल गल गिलित अचानक
गर्भवास अरु मृति पर्यन्ता यह अनीश दुख लहत अनन्ता

विषय दोष दर्शन अस असिवर काटत विषय कामना दृढ़ तर
विषय कामना छेदत जोई विरति नाम भाखत श्रुति सोई
विषय जिहासा अपि वा पुनिपुनि भाखत विरति नाम नाना मुनि
दुखमय भासत सकल पदारथ सोइ विरति अभिधान यथारथ
घृणित पदारथ महँ मति जैसी यावद्विषय मात्र महँ तैसी
सोइ विरति वैराग्य नाम तसु अरु विराग निर्वेद नाम तसु
भउ इहँमा दिग्दर्शन केवल विस्तर भिया लेखनी निर्बल

दोहा

अब गिरिजे अभ्यासकर, अति संक्षिप्त बखान ।
करौं जीव यत्कृत लहत, इहामुत्र कल्यान ॥३५॥

सोरठा

अस कहि त्रिभुवननाथ, कहत भयउ अभ्यासक्रम ।
होत अनाथ सनाथ, यत् करुणा लवलेश ते ॥७०॥

चौपाई

वारंवार होत जहँ कारज तहँ अभ्यास नाम भन आरज
मनो निरोध योग अभ्यासा करत मुमुक्षु जाहि जिज्ञासा
नाना भाँति योग विख्याता योग द्वितय तहँ सेवहिं ज्ञाता
राजयोग हठयोग नाम सो उत्तमतम तहँ राजयोग जो
हठयोगहिं निःश्रेणी जानहु राजयोगकर निश्चय मानहु
निर्विकल्प जो विदित समाधी सोई राजयोग निरुपाधी
तत् साधन महँ अपि तच्छब्दा जिमि धनादि महँ जीवन शब्दा

तत् साधन प्रकार कछु भाखौं गोपनीय कछु गोइ न राखौं
अजपा जप अविमुक्त निषेवन तत्साधन नाना मुनिजन भन
अजपा आत्ममन्त्र कर नामा जीव करत जसु जप अविरामा
प्रति श्वासा प्रश्वासा महँ जसु होत जाप अजपा संज्ञा तसु
सहज अनायासहि जप जाको अजपा मन्त्र कहत मुनि ताको
हंसः हंसः पुनि पुनि जापा जो जानत तसु व्यपगत पापा
हंसः जपक्रम सोहं बनई सोई क्रमिक प्रणव मनु बनई
जपत जपत जन प्रणव नाम मनु शब्द विलय थिति सच्चित् सुखतनु
करि षट्चक्र विभेदन जप बल होत मुक्त जन पहुँचि सहस दल
एतद्विषयक विस्तृत वर्णन योगाचार्य रचित पद्धति भन
विश्वेश्वर अविमुक्त धाम जो श्रुति प्रसिद्ध अविमुक्त नाम सो
भृकुटी युगल मध्य यह देसा जासु निषेवण हरत कलेसा
मनसा दृष्ट्या तसु अवलोकन भन अविमुक्त निषेवण मुनिजन
समासीन अरु ऋजु तन होई अभ्यसनीय वेद मत सोई
अपि भन उमे कण्ठ करि अवनत अभ्यासीय विधान हठी जत
चिर अविमुक्त निषेवण योगा शक्ति प्रबोधक भन मुनि लोगा
चक्र विभेद नाद उत्पत्ती ज्ञान उदय यदि जागत शक्ती
सच्चित् सुखमय थिति तसु होई जो अविमुक्त निषेवक होई
मिताहार अरु हिंसा वर्जन भन यह अत्यावश्यक मुनिजन
दृढ़ीभूत अभ्यास होत जब पूर्व सरिस नहि नियम नियम तब
एतद्विषयक विस्तृत वर्णन योगाचार्य रचित पद्धति भन

दोहा

सुनि अम्बा अति मुदित मन, पूछत भइ सकुचाय ।
जे निर्बोध मनुष्य जग, उन कहँ कवन उपाय ॥ ३६॥

चौपाई

नहि अल्पज्ञ ज्ञान अधिकारी कहु कस राजयोग अधिकारी
कस तसु भवसागर निस्तारा भक्तबछल करुणा आगारा
बिहँसि शंभु तब भाखत भयऊ भक्ति पदारथ महँ मन गयऊ
जेते जीव अज्ञ संसारी भक्ति भाव महँ सब अधिकारी
भक्ति महातम को कहि सकई वर्णत शेष शारदा थकई
अज्ञ अधन अरु अबल अनारी सोउ भक्ति मारग अधिकारी
सकल धर्म तजि मम शरणागत भाव अनन्य जासु हिय जागत
पाप पुञ्ज ते मुक्त करौं इमि होत मुक्त अहि कञ्चुक ते जिमि
एक आस विश्वास हमारा योगक्षेम तसु मम सिर सारा
करत प्रेम जिमि गृही स्वजन सन करत भक्त तिमि प्रेम मोहि सन
मम भजनामृत पावि तृप्त नित जिमि ज्ञानामृत पावि आत्मवित
मोर भजन तजि त्रिभुवन राजा चहत न मोर भक्त सिरताजा
सब घट व्यापित मानत मोही शत्रु मित्र मति कबहुँ न ओही
सम निन्दा नतिनुति यश अपयश यथालाभ सन्तुष्ट भाववश
परहित रत निजहित अनपेक्षक सुप्रसन्न दुर्जन समुपेक्षक
श्रवण तथा कीर्तन अरु सुमिरन पदसेवन अर्चन अरु वन्दन
यह षड्विध बहिरंग भक्तिकर अन्तरंग साधन भन मुनिवर

दास्य सख्य अरु आत्मनिवेदन करत भक्त भवबन्धन छेदन
एतद्विषयक विस्तृत वर्णन नारदादिकृत भक्ति सूत्र भन

दोहा

गिरिकन्या शिर नाय पुनि, परसि नाथ पद पद्म ।
पूछत भइ कर जोरि युग, कारुण्यामृत सद्म ॥३७॥

चौपाई

करि न सकत जो षड्विध भक्ती जाहि विषयगत अति आसक्ती
कहु प्रभु तसु निस्तार उपाया करुणासागर त्रिभुवन राया
कहत भयउ तब बिहँसि सदाशिव जपत अहर्निश जो जन शिवशिव
अपि व्यवहार व्यस्त मति जबहूँ मोर नाम जप तत्पर तबहूँ
मायापाश फँसत नहि सोऊ जानत नाम महातम जोऊ
निज उपास्य देव नाम जप जानहु गिरिबालिके परम तप
तासु नाम जप निरत दिवस निशि बहुरत कबहुँ न मातु उदर दिशि
पाप पुञ्ज इन्धन दावानल इष्ट नाम वा ममैव प्रतिपल
स्नान दान आदिक यत् कर्मा करत मदर्पित जो सत्कर्मा
गिरिजे सोउ परमगति भागी जिमि विरक्त धन परिजन त्यागी

दोहा

गद्गद गल भाखत भयउ, गुरुवर करुणा सद्म ।
अब अवशिष्ट न कथन कछु, कहौँ छाड़ि छल छद्म ॥३८॥

सोरठा

नाम शिवायन ग्रन्थ, प्रभु कृपया सम्पन्न भउ ।
निःश्रेयसकर पन्थ, पढ़ि कहि सुनि भव भय कटत ॥७१॥

दोहा

साम्ब सदाशिव करुणया, भउ समाप्त यह ग्रन्थ ।
यथा शक्ति भउ कथित यह, सकल सुखावह पन्थ ॥३९॥

सोरठा

गुरुवर चरण सरोज, शिष्य सदा सेवत भयउ ।
विजित अजेय मनोज, भउ नैष्ठिक प्रथमाश्रमी ॥७२॥

दोहा

मात्रा अक्षर न्यूनता, यत्काचित् इहँ नाथ ।
होय पूर्ण तव करुणया, प्रभु अनाथकर नाथ ॥४०॥

श्लोक

यस्मादिदं जगदुपैति तथास्तमेति
यस्मिन् वसत्यपि च रक्षितमस्ति येन ।
तं श्रीसदाशिवमुमा सहितं नमामि
त्रस्तश्च कालकलनाच्छरणं व्रजामि ॥
यस्य तृतीयनयनानलदग्धगात्रो
जातो यदीयकृपया यदुनाथपुत्रः ।
प्रद्युम्न नाम लसितः किल शम्बरारिः
पश्यत्वसौ झटिति मां करुणा कटाक्षैः ॥
याऽनादि शक्तिर्जगतामधीशा
शिवा मणिद्वीप निवासिनी या ।
सा येन सार्धं कुरुते विहारं
पश्यत्वसौ मां करुणाकटाक्षैः ॥

रामोपि यस्याङ्घ्रिसरोज युग्मं
निषेव्य शत्रुं न्यहनद्दशास्यम् ।
पीत्वा विषं योहि ररक्ष देवान्
पश्यत्वसौ मां करुणाकटाक्षैः ॥
कृष्णोपि यस्याङ्घ्रिसरोज युग्मं
निषेव्य शाम्बाख्यमवाप पुत्रम् ।
भौमादि रक्षांसि जघान चापि
पश्यत्वसौ मां करुणाकटाक्षैः ॥
संसेव्य यस्याङ्घ्रिसरोज युग्मं
संसार सिन्धुं प्रतरन्ति सन्तः ।
विज्ञानिनो ब्रह्मपदं लभन्ते
पश्यत्वसौ मां करुणाकटाक्षैः ॥
दीनं विहीनं बलबुद्धिवित्तैरनन्यगत्या शरणागतञ्च ।
त्रायस्व त्रायस्व मुहुर्लपन्तं प्रपातु दीनोद्धरण प्रतिज्ञः ॥

इति श्री शिवायने कैवल्य काण्डं समाप्तम् ।

अनन्तानन्त श्रीमत् पूज्यपाद गुरुवर कृपया अनन्तानन्त
श्रीमत् साम्ब सदाशिव कृपया च शिवायन नामालंकृत
ग्रन्थोयं समाप्तम् ।

श्रीरस्तु । शुभमस्तु । शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु । इतिशम् ।



